चित्रमय बाल कोश

- 5000 से अधिक शब्द
- 1500 से अधिक चित्र
- भारत सरकार द्वारा मान्य शब्दावली व वर्तनी

भोलानाथ तिवारी

मुकुल प्रियदर्शिनी
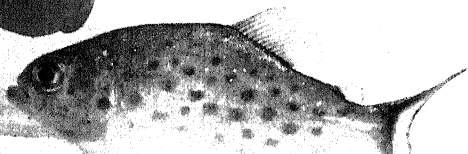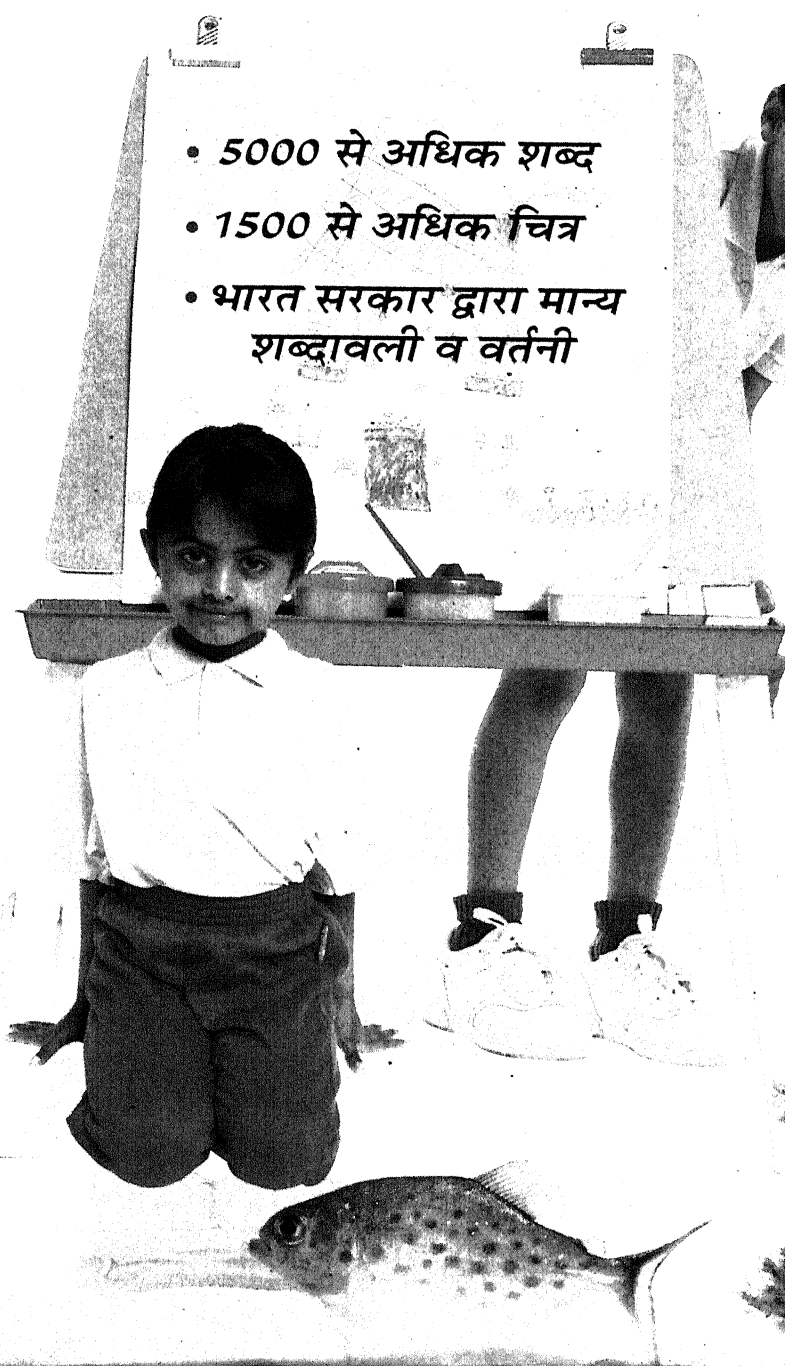
चित्रमय
बाल कोश

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दावली पर आधारित एकमात्र शब्दकोश
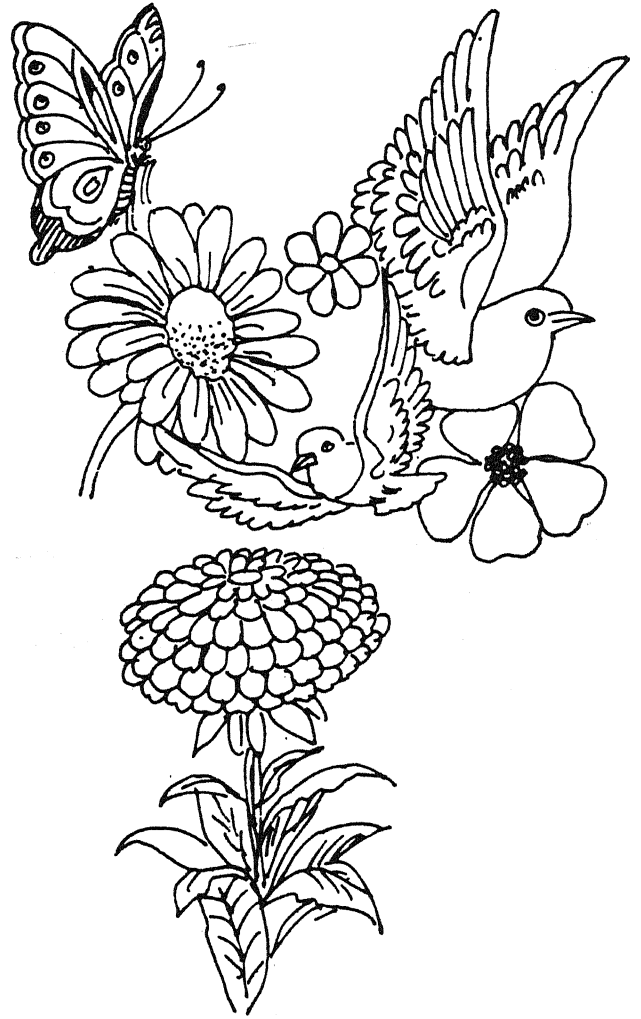
ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली

चित्रमय बाल कोश

भोलानाथ तिवारी
मुकुल प्रियदर्शिनी
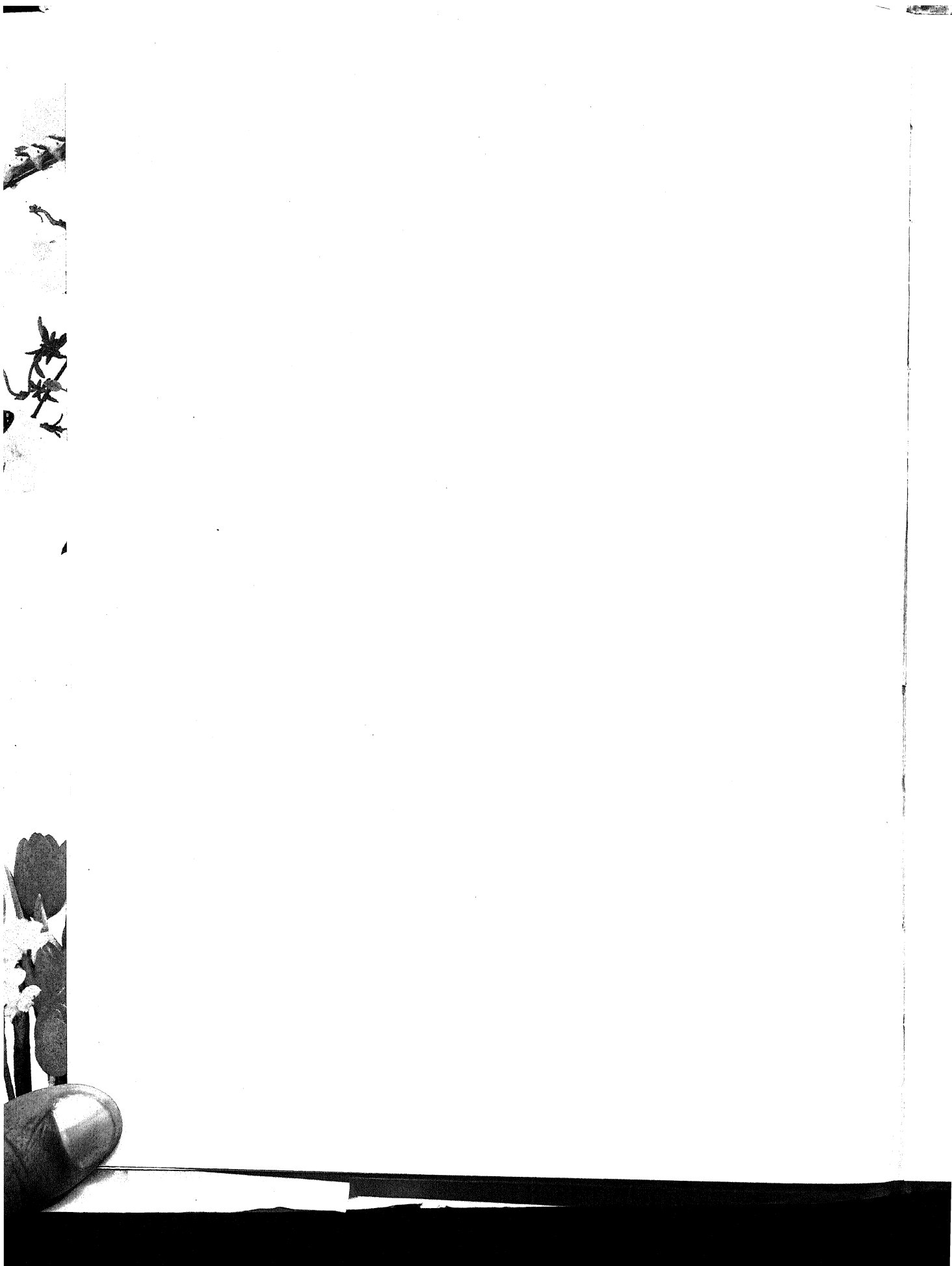
कोश में प्रयुक्त संकेताक्षर

पु०	–	पुल्लिंग
स्त्री०	–	स्त्रीलिंग
सर्व०	–	सर्वनाम
क्रि०	–	क्रिया
वि०	–	विशेषण
क्रि०वि०	–	क्रिया विशेषण
अ०	–	अव्यय
प्रत्य०	–	प्रत्यय
मु०	–	मुहावरा
लो०	–	लोकोक्ति
दे०	–	देखिए
(दे०)	–	देशज
प्र०	–	प्रयोग
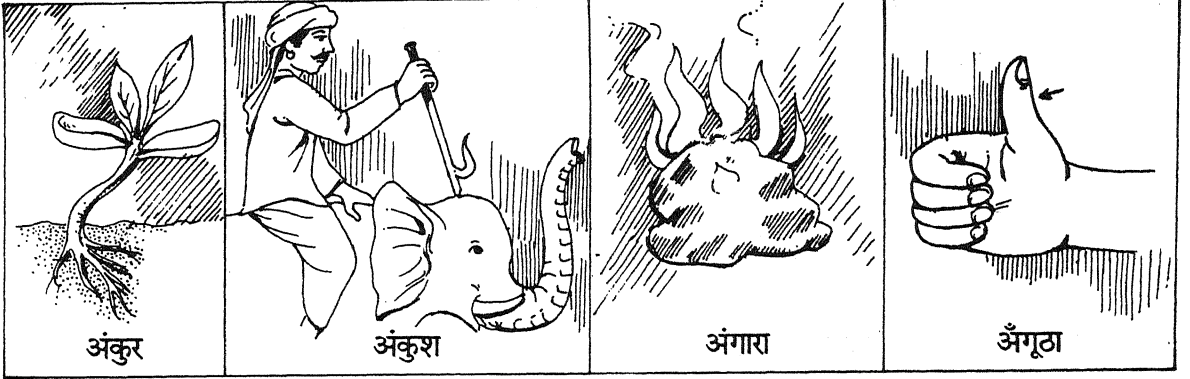
अ – 1. देवनागरी वर्णमाला का पहला अक्षर तथा पहला स्वर। 2. क्रम-संख्या रूप में नंबर एक के लिए प्रयुक्त किया जानेवाला अक्षर; जैसे – अ ब स द। 3. 'अभाव' या 'नहीं' अर्थ का उपसर्ग; जैसे – अन्याय, अधर्म।

अंक – पु॰ 1. संख्या; जैसे – 1, 2, 3,। 2. नंबर। प्र॰ श्याम को अंग्रेज़ी में 69 अंक मिले हैं। 3. नाटक का एक भाग। *प्र॰* इस नाटक में तीन अंक हैं। 4. गोद। *मु॰ अंक भरना* – गले लगाना, लिपटाना।

अंकगणित – पु॰ संख्याओं को जोड़ने-घटाने तथा गुणा-भाग आदि करने की विद्या। प्र॰ अंकगणित में पूरे अंक भी मिल सकते हैं।

अंकुर – पु॰ बीज से निकला हुआ पौधे का प्रारंभिक रूप, अँखुआ।

अंकुरण – पु॰ अंकुरित होना, अंकुर निकलना, अँखुआ फूटना।

अंकुश – पु॰ 1. रोक, नियंत्रण। प्र॰ बच्चे पर किसी का अंकुश अवश्य रहना चाहिए। 2. लोहे का काँटा या एक उपकरण जिससे हाथी को वश में किया जाता है, गजबाँक। प्र॰ अंकुश के बिना हाथी को वश में रखना कठिन है। मु॰ *अंकुश लगाना* – रोक लगाना, नियंत्रण रखना। प्र॰ तुम्हारा बेटा बिगड़ रहा है, उस पर अंकुश लगाओ।

अंग – पु॰ 1. शरीर के भाग, अवयव; जैसे – हाथ, पाँव, कान आदि। 2. भाग, हिस्सा। प्र॰ हरिजन भी समाज के अंग हैं।

अंग-प्रत्यंग – पु॰ एक-एक अंग, अंग-अंग। प्र॰ उन्होंने उस मज़दूर को इतना मारा है कि बेचारे का अंग-प्रत्यंग दुख रहा है।

अंगसंचालन – पु॰ अंगों को हिलाना-डुलाना। प्र॰ उस लड़के को ऐसी चोट लगी है कि वह अंगसंचालन भी नहीं कर सकता।

अंगारा – 1. पु॰ दहकता हुआ कंडा या कोयला। 2. *वि॰* लाल। मु॰ *अंगारा होना* – लाल होना, चेहरा तमतमा जाना। प्र॰ मारे क्रोध के वह अंगारा हो रहा है।

अँगूठा, अंगूठा – पु॰ हाथ या पैर की पहली और सबसे मोटी उँगली। मु॰ *अँगूठा दिखाना* – साफ़ इनकार करना। प्र॰ मैंने मोहन की बहुत सहायता की पर जब मुझे ज़रूरत पड़ी तो उसने अँगूठा दिखा दिया। *अँगूठा चाटना* – खुशामद करना। प्र॰ क्यों

उसका अँगूठा चाटते फिरते हो, वह तो तुम्हारा काम करने से रहा।

अँगोछा – पु० शरीर पोंछने का एक कपड़ा, गमछा।

अंचल – पु० आँचल, पल्ला, छोर, साड़ी का पल्लू।

अंजन – पु० सुरमा, काजल। प्र० अंजन लगाने से आँखें सुंदर तो लगती ही हैं, नीरोग भी रहती हैं।

अंजर-पंजर – पु० ढाँचा, हड्डी-पसली, ठठरी। *मु० अंजर-पंजर ढीला हो जाना* – थक जाना। प्र० 1. दिन-भर मेहनत का काम करते-करते अंजर-पंजर ढीले हो गए। 2. तुम इस साइकल को कभी ठीक नहीं कराते क्या? देखो तो इसके अंजर-पंजर ढीले हो गए हैं।

अंजलि – पु० दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ गड्ढा, अँजुरी, अंजली।

अंजीर – पु० गूलर जैसा मीठा एक फल या उसका पेड़। प्र० अंजीर (फल) पेट के लिए गुणकारी होता है।

अँटना – *क्रि०* 1. समाना, किसी चीज़ के भीतर पूरा आना। प्र० इस बोरी में बीस किलो आटा अँटता है। 2. छोटा न पड़ना, ठीक आना। प्र० यह जूता हिमांशु को अँट जाना चाहिए।

अंडबंड –1. पु० बेतुकी बात, बेसिर-पैर की बात। 2. *वि०* बेकार की, निरर्थक। प्र० मेरे सामने अंडबंड बातें मत बको।

अंडाकार (अंडा + आकार) – *वि०* अंडे के समान आकारवाला, अंडे के आकार का। प्र० पृथ्वी, सूर्य के चारों ओर अंडाकार रास्ते पर घूमती है।

अंत – पु० 1. आख़िर, ख़ात्मा, समाप्ति। (*विलोम* – प्रारंभ)। प्र० जैसे-तैसे इस दुख का अंत तो हुआ। 2. किनारा, छोर। प्र० रस्सी के अंत में गाँठ लगा दो नहीं तो रस्सी उधड़ जाएगी। 3. नतीजा, परिणाम। *लो० अंत भले का भला* – भले व्यक्ति का अंत भी भला होता है। *अंत भला सो भला* – यदि किसी काम को करने में बीच-बीच में गड़बड़ियाँ और परेशानियाँ आएँ लेकिन अंत में वह ठीक हो जाए तो समझो कि सब ठीक हो गया।

अंतकाल – पु० 1. मृत्युकाल, आख़िरी वक़्त, अंतिम घड़ी, मरने का समय। 2. मृत्यु, मौत।

अंततः – *अ०* आख़िरकार, अंत में, अंत में जाकर।

अंतरंग – *वि०* जिगरी, दिली; जैसे – अंतरंग मित्र।

अंतरतम – पु० 1. हृदय का सबसे भीतरी भाग। 2. किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग।

अंचल अंजलि अंजीर अंतकाल
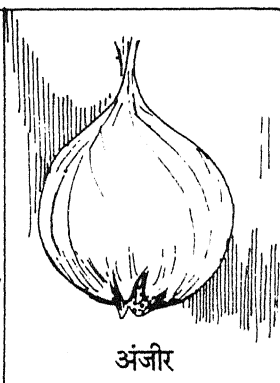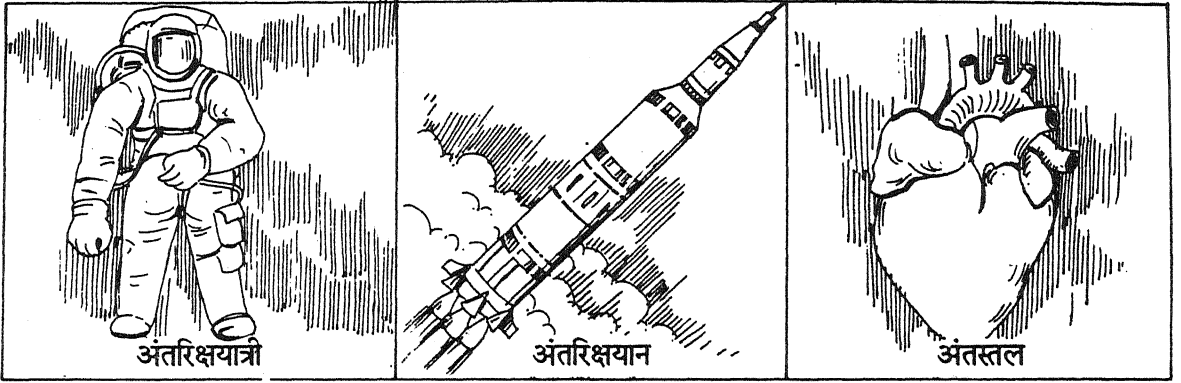
अंतरिक्ष – *पु॰* पृथ्वी, दूसरे ग्रहों और तारों के बीच की ख़ाली जगह या दूरी – आकाश, वायुमंडल।

अंतरिक्षयात्री – *पु॰* जो लोग रॉकिट तथा स्पेस शटल आदि से अंतरिक्ष की यात्रा करते हैं।

अंतरिक्षयान – *पु॰* स्पेस शटल या रॉकिट आदि वे यान जिनसे अंतरिक्ष की यात्रा की जाती है।

अंतरीप – *पु॰* पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो, रास। *प्र॰* कन्याकुमारी अंतरीप है।

अंतर्गत – *अ॰* भीतर, अंदर।

अंतर्देशीय – 1. *वि॰* देश के भीतरी भाग या भागों से संबंध रखनेवाला; जैसे – अंतर्देशीय व्यापार। 2. *पु॰* पत्र लिखने के लिए डाकख़ानों में बिकनेवाला निश्चित आकार का काग़ज़, जिस पर टिकट छपा होता है, अंतर्देशीय पत्र।

अंतर्राष्ट्रीय – एक से अधिक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला, दो या अधिक राष्ट्रों के बीच का, विश्वव्यापी; जैसे – अंतर्राष्ट्रीय व्यापार।

अंतस्तल – *पु॰* मन, हृदय, दिल।

अंतिम – *वि॰* अंत का, आख़िरी, सबसे पीछे का, पिछला।

अंत्याक्षरी (अंत्य + अक्षरी) – *स्त्री॰* प्रायः विद्यार्थियों में प्रचलित छंद सुनाने की वह प्रतियोगिता जिसमें एक पक्ष (के व्यक्ति या व्यक्तियों) द्वारा सुनाए गए छंद के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला छंद दूसरे पक्ष को सुनाना पड़ता है। *प्र॰* अंत्याक्षरी में मेरी कक्षा जीत गई।

अंदेशा – *पु॰* खटका, संदेह, आशंका, शुबहा। *प्र॰* मुझे इस बात का पूरा अंदेशा है कि वे लोग अब रुपए नहीं देंगे।

अंधकारमय – अंधकार से भरा हुआ, अँधेरा, अंधकारयुक्त। *प्र॰* अंधकारमय रात में कड़कती बिजली रात को और भी डरावनी बना रही थी।

अंधविश्वास – *पु॰* बिना परीक्षण किए बनाई गई मान्यता या धारणा, बिना सोचा-समझा विश्वास, वहम, बिना सोचे-समझे किसी बात को मान लेना, निराधार विश्वास। *प्र॰* सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, यह एक अंधविश्वास है।

अंधाधुंध – *अ॰* 1. बिना सोचे-विचारे। *प्र॰* पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ बरसाईं। 2. बहुत तेज़ी से। *प्र॰* अजीब हाल है, लोग अंधाधुंध उस ओर भागे जा रहे हैं।

अंधापन – *पु॰* अंधा होना, न दीखना।

अंधेर – पु० अन्याय, गड़बड़। प्र० भला वह न्यायालय है? वहाँ तो बड़ा अंधेर है; जिधर देखो घूसखोरी, भाई-भतीजावाद और जातिवाद का बोलबाला है।

अंबर – पु० आकाश, आसमान।

अंश – पु० 1. भाग, खंड, टुकड़ा, हिस्सा। 2. किसी भिन्न संख्या की लकीर के ऊपर का अंक; जैसे – (भिन्न $^1/_2$ में 1 अंश तथा 2 हर है)। 3. ज्यामिति में कोण मापने की इकाई जो वृत्त की परिधि का 360वाँ भाग होती है।

अकर्मक – *वि०* व्याकरण में वह क्रिया जिसका कोई कर्म न हो; जैसे – जाना, हँसना, उठना। (*विलोम* – सकर्मक) दे० सकर्मक।

अकलदाढ़ – *स्त्री०* अक़्ल का दाँत, जवान होने पर जबड़े के भीतर निकलनेवाले मोटे-चौड़े दाँत, चौभड़।

अकसर – *अ०* अधिकतर, बहुधा, प्रायः। प्र० वह अकसर बीमार रहता है।

अकस्मात् – *अ०* एकाएक, एकदम, अचानक, सहसा, बिना पूर्व सूचना के। प्र० सुरेश कल अकस्मात् मेरे घर आ टपका।

अकार्बनिक (इनऑर्गेनिक) – *वि०* आमतौर पर उन सभी रासायनिक पदार्थों को अकार्बनिक कहते हैं, जिनमें कार्बन (एक तत्त्व) न हो। दे० कार्बन।

अकेलापन –पु० अकेला होने की स्थिति या भाव, एकांत, तनहाई।

अक्रिय – *वि०* काहिल, जो कुछ न करे, निष्क्रिय; जैसे – *अक्रिय गैस* – नाइट्रोजन से बनी वह गैस जिसका उपयोग जलाने में नहीं होता।

अक़्ल – *स्त्री०* समझ, बुद्धि। पु० अक़्ल से काम लेना चाहिए। मु० *अक़्ल का घास चरने जाना*–अक़्ल का काम न करना, बेवक़ूफ़ी का काम करना। *अक़्ल मोटी होना* – बुद्धू होना। *लो० अक़्ल बड़ी या भैंस* – अक़्ल ताक़त से बलवान् होती है।

अक्ष –पु० वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है, धुरी।

अक्षर –पु० (लेटर) हर्फ़, वर्ण, स्वर या व्यंजन; जैसे– अ, इ, ई, उ, च, छ, ज, झ आदि।

अक्षांश –पु० भूगोल में पृथ्वी पर पूरब से पश्चिम को

अंश | अक्ष | अक्षांश
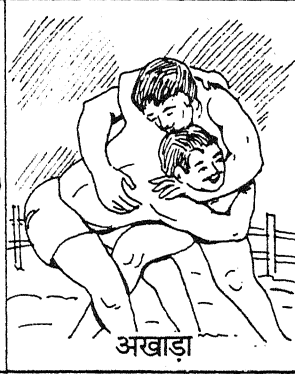
अक्स | अखरोट | अखाड़ा | अगाड़ी

जाती हुई समान अंतरवाली कल्पित रेखाएँ जो यह बताती हैं कि कौन-सा भाग भूमध्य रेखा के कितना दक्षिण में है और कौन-सा कितना उत्तर में।

अक्स – *पु०* छाया परछाईं।

अखंड – *वि०* 1. पूरा, पूर्ण, अखंडित। 2. जो लगातार हो; जैसे – अखंड पाठ, अखंड कीर्तन।

अख़रोट –*पु०* एक प्रसिद्ध मेवा जिसके ऊपर कड़ा खोल होता है और भीतर गिरी। यह पहाड़ों पर होता है तथा इसका पेड़ काफ़ी ऊँचा होता है।

अखाड़ा –*पु०* 1. कुश्ती लड़ने का (प्राय: 10-12 हाथ लंबा-चौड़ा) चौकोर मैदान। 2. साधुओं की मंडली या उनका मठ।

अखिल –*वि०* समूचा, पूरा, सारा, संपूर्ण, समग्र।

अखिलेश्वर (अखिल + ईश्वर) – *पु०* पूरे (अखिल) विश्व (जगत्) का स्वामी, भगवान्, ईश्वर।

अगणनीय (अ + गणनीय) –*वि०* बहुत अधिक, असंख्य, इतना अधिक कि उसकी गणना करना कठिन हो। *प्र०* उसके अपराध तो अगणनीय हैं।

अगरबत्ती – *स्त्री०* पूजा-पाठ में या यों ही सुगंध के लिए जलाई जानेवाली विशेष प्रकार की बत्ती। *प्र०* 1. कमरे में बदबू है, दरवाज़ा और खिड़कियाँ खोल दो तथा अगरबत्ती जला दो। 2. अगरबत्ती से पूजा भी करते हैं।

अगल-बगल –*वि०* इधर-उधर, दोनों ओर, आस-पास। *प्र०* अगल-बगल देखकर सड़क पार करनी चाहिए।

अगला –*वि०* 1. आगे का, सामने का। (*विलोम* – पिछला); जैसे – अगली पंक्ति। 2. आगामी, आनेवाला। *प्र०* अगले सोमवार से हमारी परीक्षा होगी।

अगवानी – *स्त्री०* स्वागत। *प्र०* बारात आ पहुँची है, अगवानी के लिए तैयार हो जाओ।

अगाड़ी – *स्त्री०* 1. आगे, सामने। 2. भविष्य में, आइंदा। 3. जानवर के अगले पैरों या गर्दन में बाँधी जानेवाली रस्सी।

अगाध – *वि०* बहुत अधिक, अथाह। *प्र०* 1. उसको तुमसे अगाध प्रेम है। 2. समुद्र में अगाध जल है।

अग्नि –*स्त्री०* आग।

अग्निकांड –पु० आग लगना, आग लगने की घटना। प्र० उस अग्निकांड में करोड़ों की संपत्ति जलकर राख हो गई।

अग्निशमन –पु० आग बुझाना।

अग्निशमन केंद्र –पु० आग बुझाने का केंद्र।

अग्रिम (अग्र + इम)– पु० पेशगी, ऐडवांस।

अचंभा –पु० अचरज, आश्चर्य, ताज्जुब, हैरानी।

अचंभित (अचंभा + इत) – वि० आश्चर्य से चकित, हैरान।

अचरज –पु० आश्चर्य, हैरानी, अचंभा। प्र० अचरज होता है इस मदारी के खेल पर।

अचल (अ + चल) – वि० जो चले न, अडिग, अटल, एक जगह पर स्थित। प्र० मकान और ज़मीन अचल संपत्ति हैं।

अचूक (अ + चूक) – वि० जो न चूके, जो अपना प्रभाव अवश्य दिखाए, व्यर्थ न जानेवाला, सटीक, निश्चित। प्र० 1. अर्जुन के तीर का निशाना अचूक होता था। 2. उस वैद्य की दवाएँ अचूक होती हैं।

अचेत (अ + चेत) – वि० 1. जिसे होश न हो, बेहोश। प्र० इस दुर्घटना के बाद वह अचेत हो गया था। 2. असावधान। प्र० ऐसे अचेत रहोगे, तो पूरा घर लुट जाएगा।

अछूत (अ + छूत) – 1. वि० अस्पृश्य, जो छूने योग्य न हो। 2. पु० भंगी, डोम आदि कुछ जातियों के लोग जिन्हें न छूने की परंपरा रही है, हरिजन। प्र० अब समाज में कोई भी अछूत नहीं है।

अजगर –पु० एक प्रकार का सुस्त साँप जो बहुत लंबा और बहुत मोटा होता है।

अजनबी –वि० जो परिचित न हो, अज्ञात, अपरिचित। प्र० अजनबी व्यक्ति से मित्रता समझ-बूझकर करनी चाहिए।

अजवाइन –स्त्री० एक पौधा, उसके बीज जो मसाले और दवा के काम आते हैं।

अजातशत्रु (अ + जात (पैदा) + शत्रु) – वि० जिसका कोई भी शत्रु पैदा न हुआ हो, शत्रुहीन, बिना दुश्मन का। प्र० डा० राजेंद्र प्रसाद अजातशत्रु थे।

अज़ान – स्त्री० नमाज़ के लिए मुल्ला (मुअज़्ज़न) द्वारा मस्जिद में दी गई पुकार। प्र० सवेरे-सवेरे अज़ान देनेवाले को मुअज़्ज़न कहते हैं।

अग्निशमन केंद्र

अजगर
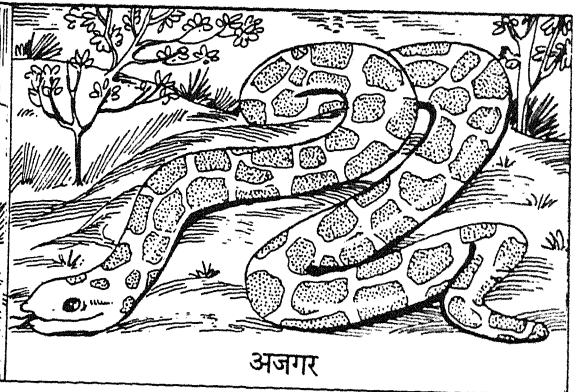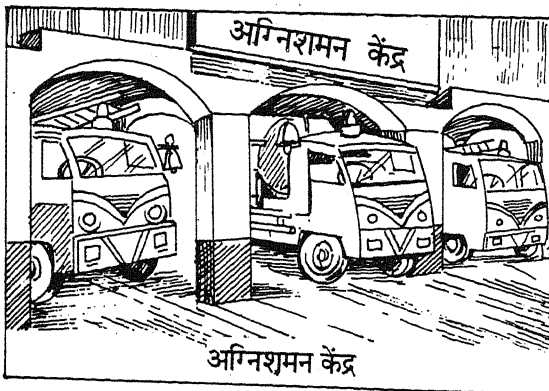
अजायबघर –पु० संग्रहालय, म्यूज़ियम, वह स्थान जहाँ अद्‌भुत और ऐतिहासिक चीज़ों का संग्रह हो।

अजीब – वि० अनोखा, अद्‌भुत, विचित्र। प्र० तुम अजीब आदमी हो, कल शाम को आने को कह गए थे और आज शाम को आए हो।

अज्ञात –वि० जिसके बारे में कोई जानकारी न हो, जिसका अता-पता न हो, अनजान, अपरिचित।

अज्ञातवास (अ + ज्ञात + वास) –पु० ऐसी जगह का निवास जिसे कोई जान न सके, लुक-छिपकर रहना, गुप्तवास। प्र० पांडवों ने विराट के यहाँ अज्ञातवास किया था।

अज्ञान –पु० ज्ञान की कमी, नासमझी, मूर्खता, बेवकूफ़ी।

अज्ञानी –वि० जिसे ज्ञान न हो, नासमझ, ज्ञानहीन, मूर्ख, बेवकूफ़।

अज्ञेय –वि० जिसे जाना न जा सके, जो समझ में न आ सके।

अटकल –स्त्री० अंदाज़, अनुमान। प्र० अटकल लगाने से काम नहीं चलेगा, इस विषय पर कुछ पढ़कर आओ।

अटकाना –क्रि० बाधा डालना, देर लगाना, फँसाना, अड़ाना, उलझाना, रोकना, अड़ंगा लगाना। प्र० पता नहीं उसे तुमसे क्या दुश्मनी है, वह तुम्हारा हर काम कहीं-न-कहीं अटका देता है।

अटपटा – वि० बेढंगा, अजीब, ऊटपटांग, उलटा-सीधा, बिना सिर-पैर का। प्र० 1. अटपटे आदमी से मेरी नहीं पटती। 2. यह काम तो बहुत अटपटा है, मुझसे नहीं होगा।

अटल (अ + टल) –वि० जो अपने स्थान से टले नहीं, स्थिर, पक्का, दृढ़। प्र० मेरा ईश्वर पर अटल विश्वास है।

अटूट (अ + टूट) –वि० न टूटनेवाला, जो टूट न सके; जैसे – अटूट संबंध।

अटैची – स्त्री० संदूक, छोटा बक्स, ब्रीफ़केस।

अठकोना (आठ + कोना) – वि० जिसके आठ कोने हों। प्र० हवन के लिए वेदी अठकोनी बनाइए।

अड़ंगा – पु० जान-बूझकर पैदा की गई बाधा, अड़चन, रुकावट, टाँग अड़ाना। प्र० तुम तो मेरे हर काम में कोई-न-कोई अड़ंगा लगा देते हो।

अड़चन – स्त्री० बाधा विघ्न, रुकावट। प्र० अब सारी अड़चनें दूर हो गई हैं, एक-दो दिन में काम हो

ही जाएगा।

अड़ियल – *वि॰* 1. (चलते-चलते) अड़ जानेवाला, रुक जानेवाला, जिसे अड़ जाने की आदत हो। *प्र॰* यह घोड़ा तो अड़ियल है, चाबुक की मार भी उसे चला नहीं पाती। 2. हठी, ज़िद्दी।

अड्डा –*पु॰* 1. मिलने या इकट्ठा होने की जगह; जैसे –जुआरियों का अड्डा। 2. ताँगों, स्कूटरों, बसों, हवाई जहाज़ों आदि के रुकने और रवाना होने की जगह; जैसे –बस अड्डा, हवाई अड्डा।

अणु –*पु॰* इतना छोटा कण (टुकड़ा) कि उसके दो टुकड़े नहीं किए जा सकें। *प्र॰* गुरुजी के ज्ञान की तुलना में मेरा ज्ञान अणु के बराबर भी नहीं है।

अणुशक्ति – अणु के विस्फोट से उत्पन्न शक्ति जो युद्ध और शांति दोनों ही प्रकार के कामों में प्रयोग की जा सकती है।

अतः – *अ॰* इसलिए, इस वजह से, इस कारण। *प्र॰* वह बहुत पढ़ता है अतः सभी शिक्षक उससे प्रसन्न हैं।

अतएव – *अ॰* इसीलिए, इसलिए, इसी वास्ते, इस वास्ते, इसी वजह से। *प्र॰* तुमने प्रथम स्थान प्राप्त किया है, अतएव तुम्हें पुरस्कार मिलना ही चाहिए।

अति – 1. *वि॰* ज़्यादा, बहुत; जैसे–अति सुंदर, अति कुरूप। 2. *स्त्री॰* ज़्यादती, अधिकता। *प्र॰* अति कभी नहीं करनी चाहिए, रावण अति करने के कारण ही मारा गया।

अतिथि – *पु॰* पाहुना, मेहमान। *प्र॰* कल घर पर अचानक इतने अतिथि आ गए कि उनके स्वागत में बड़ी परेशानी हुई।

अतिथिसत्कार – *पु॰* अतिथि का स्वागत, मेहमानदारी। *प्र॰* अतिथिसत्कार हमारा कर्तव्य है।

अतिरिक्त – 1. *अ॰* अलावा, सिवा, छोड़कर। *प्र॰* तुम्हारे अतिरिक्त वहाँ सभी आए थे। 2. *वि॰* ज़रूरत से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक। *प्र॰* अतिरिक्त सामान लौटा दूँगा।

अतीत – *पु॰* भूतकाल, बीता हुआ समय, गुज़रा हुआ ज़माना। *प्र॰* अतीत की बातें अब भला कहाँ याद हैं!

अत्यंत (अति + अंत) – *वि॰* हद से ज़्यादा, बहुत अधिक; जैसे – अत्यंत सुंदर, अत्यंत सीधा, अत्यंत मिलनसार।

अत्यधिक (अति + अधिक) – *वि॰* बहुत ज़्यादा; जैसे – अत्यधिक धनी, अत्यधिक ईमानदार।

अड्डा अतिथि अतिथिसत्कार
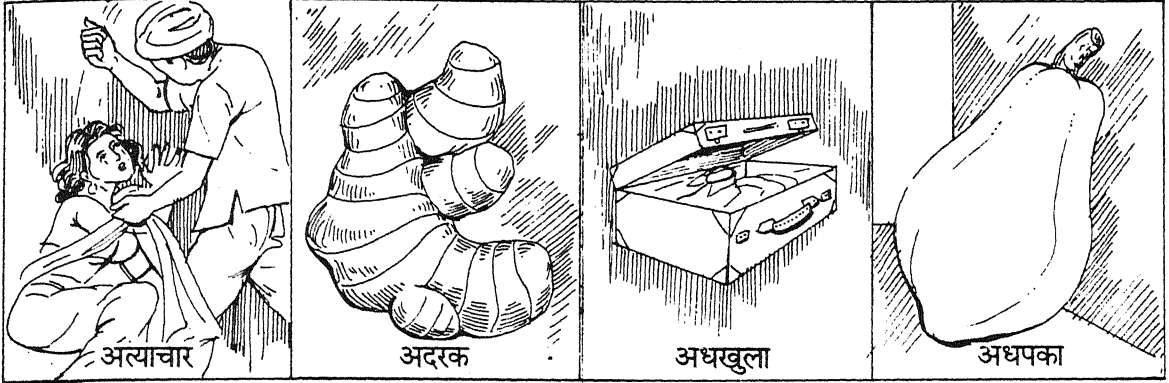
अत्याचार (अति + आचार) – *पु०* किसी को सताना या दुख देना, अन्याय, ज़ुल्म। *प्र०* रावण के अत्याचार से देवता भी परेशान थे।

अत्याचारी – *वि०* अत्याचार करनेवाला, अन्यायी, ज़ुल्मी, ज़ालिम। *प्र०* कंस इतना अत्याचारी था कि उसने अपनी बहिन देवकी के अनेक बच्चों को जन्म लेते ही मरवा दिया।

अथक (अ + थक) – *वि०* जो थकता न हो, हार नहीं माननेवाला, बहुत अधिक परिश्रमी। *प्र०* तुम्हारे अथक परिश्रम से ही यह काम पूरा हो सका है।

अथवा – *अ०* या, चाहे यह चाहे वह। *प्र०* 1. प्रश्न 'क' अथवा 'ख' का उत्तर दीजिए। 2. गाजर अथवा शलजम भेज दीजिए।

अथाह (अ + थाह) – *वि०* जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा, अगाध। *प्र०* 1. ऐसा कम ही होता है कि जिसका ज्ञान अथाह हो उसका धन भी अथाह हो। 2. समुद्र तो अथाह होता ही है, यह नदी भी अथाह है।

अदरक – *पु०* एक पौधे की गाँठदार जड़ जो दवा, चटनी, अचार आदि के रूप में खाई जाती है, कच्ची सोंठ।

अदा – *वि०* चुकता। **अदा करना** – *क्रि०* चुकाना, चुकता करना, दे देना, बेबाक कर देना। *प्र०* उसके पैसे अदा कर दो, आज बहुत नाराज़ हो रहा था।

अदालत – *स्त्री०* न्यायालय, कचहरी, कोर्ट। *प्र०* इस झगड़े का अदालत में जो फ़ैसला होगा वह हमें मानना ही पड़ेगा।

अदृश्य (अ + दृश्य) – *वि०* जो दिखाई न दे, लुप्त, ग़ायब। *प्र०* मन एक अदृश्य चीज़ है।

अद्‌भुत – *वि०* विचित्र, अनोखा, अजीब। *प्र०* उस विद्यार्थी में अद्‌भुत प्रतिभा है।

अधखिला (आधा + खिला) – *वि०* आधा खिला हुआ, जो पूरी तरह न खिला हो। *प्र०* अधखिला फूल भी अच्छा लगता है।

अधखुला (आधा + खुला) – *वि०* आधा खुला हुआ, थोड़ा खुला हुआ। *प्र०* बिल्ली अधखुले दरवाज़े से अंदर घुस गई।

अधपका (आधा + पका) – *वि०* थोड़ा कच्चा, थोड़ा पका हुआ। *प्र०* अधपका पपीता अच्छा नहीं लगता।

अधमरा (आधा + मरा) – *वि०* आधा मरा हुआ, जो मरने ही वाला हो, मरणासन्न, मृतप्राय। *प्र०* चोर

की ऐसी पिटाई हुई कि वह अधमरा हो गया।

अधर – पु० 1. नीचे का होंठ। 2. होंठ, ओठ। 3. आसमान। 4. निराधार, अथपर। प्र० कोई भी चीज़ अधर में लटकी नहीं रह सकती, वह या तो ऊपर ही अटकी रहेगी या ज़मीन पर गिरेगी।

अधर्म (अ + धर्म) – पु० जो धर्म न हो, पाप, बुरा काम। प्र० ग़रीब को सताना अधर्म है।

अधर्मी (अ + धर्म + ई) – *वि०* पापी, धर्म के विपरीत चलनेवाला, बुरे काम करनेवाला।

अधिक – *वि०* 1. (तुलना में) ज़्यादा, बहुत। प्र० यह स्थान उस स्थान से अधिक सुंदर है। 2. फ़ालतू, अतिरिक्त। प्र० सब्ज़ी में नमक अधिक है।

अधिककोण – पु० (रेखागणित में) वह कोण जो समकोण से बड़ा हो, 90 अंश से बड़ा और 180 अंश से छोटा कोण।

अधिकतम – *वि०* सबसे ज़्यादा या अधिक; जैसे – अधिकतम तापमान, अधिकतम प्राप्तांक।

अधिकतर – *वि०* 1. बहुधा, प्रायः, ज़्यादातर। प्र० 1. वह तो अधिकतर समय पढ़ने में लगाता है। 2. अब तो अधिकतर लोग आ चुके हैं, सभा शुरू की जाए। 2. एक की तुलना में दूसरे का अधिक होना। प्र० भारत के अधिकतर लोग गाँवों में रहते हैं।

अधिकता – *स्त्री०* अधिक होना, ज़्यादा होना, बहुतायत। प्र० काम की अधिकता से उसे खाने की भी फ़ुरसत नहीं मिली।

अधिकांश (अधिक + अंश) – *वि०* आधे से अधिक, ज़्यादा, अधिकतर। प्र० 1. अधिकांश लोग भले होते हैं। 2. बाढ़ से उस क्षेत्र का अधिकांश भाग पानी में डूब गया है।

अधिकाधिक (अधिक + अधिक) – *वि०* अधिक से अधिक, ज़्यादा से ज़्यादा। प्र० दिनोंदिन वह अधिकाधिक मोटा होता जा रहा है।

अधिकार – पु० 1. वह शक्ति जो पद, स्थान, योग्यता, सदस्यता आदि के कारण प्राप्त होती है। प्र० प्रत्येक व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान पाने का अधिकार है। 2. हक़। 3. क़ब्ज़ा। प्र० जिस चीज़ का कोई दावेदार न हो उस पर सरकार का अधिकार होता है।

अधिकारी – पु० 1. अफ़सर। प्र० विद्यालय का प्राचार्य भी एक अधिकारी ही होता है। 2. मालिक। प्र० मैं उस पूरी संपत्ति का अधिकारी हूँ। 3. किसी

अधर | अधिककोण | अधिकारी

अधिवेशन अधीन अध्ययनशील अध्यापिका
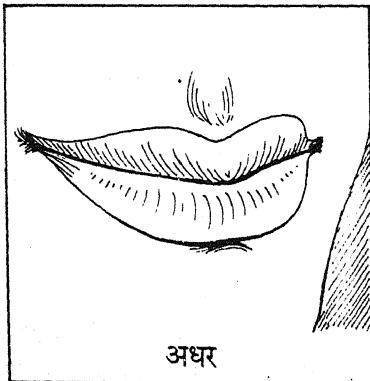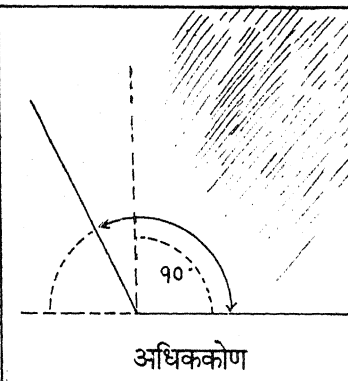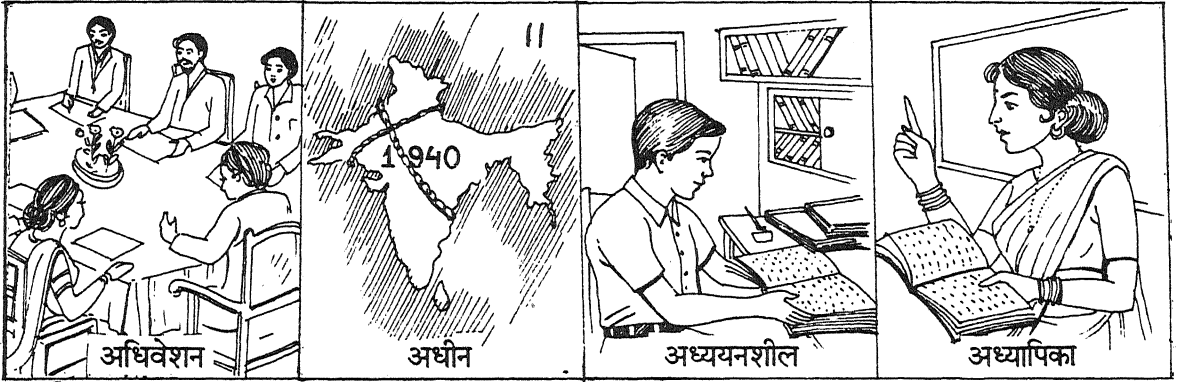
विषय का पूरा जानकार। *प्र०* हमारे गुरुजी संस्कृत के अधिकारी विद्वान् हैं। 4. हक़दार। *प्र०* उन्हें जो सम्मान मिला है, उसके वे निश्चय ही अधिकारी हैं।

अधिवेशन – *पु०* बैठक, सम्मेलन, सभा। *प्र०* पार्टी का वार्षिक अधिवेशन होनेवाला है।

अधीन – *क्रि०* मातहत, किसी के शासन या अधिकार में। *प्र०* 1. मैं किसी के अधीन नहीं हूँ, जब जैसा चाहूँगा करूँगा। 2. एक समय था जब विश्व का बहुत बड़ा भाग यूरोपीय लोगों के अधीन था।

अधीनता – *स्त्री०* 1. किसी के वश में होना। 2. पराधीनता, परतंत्रता, परवशता, गुलामी; जैसे – भारतीयों को अंग्रेज़ों की अधीनता किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं थी।

अधीर (अ + धीर) – *वि०* जिसने धीरज छोड़ दिया हो, धैर्यहीन, बेचैन, उतावला, बेसब्र। *प्र०* इतने अधीर क्यों हो रहे हो, तुम्हारी बारी भी जल्दी आएगी।

अध्यक्ष – *पु०* सभापति, मुखिया, ज़िम्मेदार, प्रधान।

अध्ययन – *पु०* 1. पढ़ाई, किसी पुस्तक आदि को गहराई से पढ़ना। *प्र०* अभी तो मैं इस पुस्तक का अध्ययन कर रहा हूँ, जो कुछ कहना है बाद में कहूँगा। 2. किसी विषय या समस्या आदि को गहराई से समझना, उसके पक्ष-विपक्ष पर विचार करना। *प्र०* इस समस्या के अध्ययन के कई पहलू हैं।

अध्ययनकक्ष – *पु०* पढ़ने का कमरा। *प्र०* वह इस समय अपने अध्ययनकक्ष में पढ़ रहा है।

अध्ययनशील – *वि०* रुचि के साथ अध्ययन करनेवाला, अध्ययन में परिश्रम करनेवाला। *प्र०* यह छात्र अध्ययनशील है इसीलिए प्रतिवर्ष कक्षा में प्रथम आता है।

अध्यापन – *पु०* पढ़ाने का काम, पढ़ाना, शिक्षण।

अध्यापिका – *स्त्री०* पढ़ानेवाली, शिक्षिका, लेडी टीचर।

अध्याय – *पु०* किसी पुस्तक का एक खंड या भाग।

अनंत, अनन्त (अन् + अंत) – *वि०* जिसका अंत न हो, जिसका पार न हो, असीम, बिना ओर-छोर का। *प्र०* उसके गुण अनंत हैं, किस-किसके बारे में बताऊँ?

अनगिनत (अन + गिनती) – *वि०* जो गिना न जा सके, अगणित, बेहिसाब, बेशुमार। *प्र०* 1. सिर पर

अनगिनत बाल हैं। 2. आसमान में जो तारे हैं, वे अनगिनत हैं।

अनजाने – *क्रि॰ वि॰* अनजान में, न जानने के कारण। *प्र॰* भाई, माफ़ करना, मैंने तुम्हें अनजाने ऐसा-वैसा कह दिया।

अनन्नास – *पु॰* एक छोटा पौधा जिसका फल कड़े छिलकेवाला, रसीला और खट्मिट्ठा होता है, पाइनऐपल।

अनपका – *वि॰* जो पका न हो। *प्र॰* यह आम अभी अनपका है।

अनपढ़ (अन + पढ़) – *वि॰* अपढ़, अशिक्षित, निरक्षर, जो पढ़ा-लिखा न हो। *प्र॰* वह अनपढ़ होकर भी बड़ा चतुर है।

अनमना (अन + मन) – *वि॰* उदास, खिन्न, उखड़ा-उखड़ा। *प्र॰* पता नहीं क्या कष्ट है, कुछ समय से वे बहुत अनमने हैं।

अनमेल (अन + मेल) – *वि॰* बेमेल, असमान, बेढंगा। *प्र॰* यह तो अनमेल विवाह है, क्योंकि दूल्हन सोलह वर्ष की और दूल्हा पैंतालीस का है।

अनमोल (अन + मोल) – *वि॰* अमूल्य, बहुत मूल्यवान्, बहुमूल्य। *प्र॰* संतों के उपदेश अनमोल होते हैं।

अनशन (अन् + अशन) – *पु॰* 1. भोजन न करना, उपवास, एक प्रकार का व्रत। 2. अपनी बात मनवाने के लिए या किसी चीज़ के विरोध में खाना छोड़ देना, भूख हड़ताल। *प्र॰* 1. गांधीजी ने कई बार अनशन किए। 2. मज़दूर अपनी बात मनवाने के लिए मिल के गेट पर अनशन कर रहे हैं।

अनसुनी (अन + सुनी) – *वि॰* न सुनी हुई, ऐसी बात जिसके बारे में आम आदमी भी कुछ न जानता हो। *प्र॰* अनदेखी और अनसुनी बात पर विश्वास करना अनुचित है।

अनाड़ी, अनारी – 1. *वि॰* किसी काम को भलीभाँति न जानकर भी उसे करनेवाला, जो कुशल या निपुण न हो, नादान। *प्र॰* अनाड़ी आदमी से कुछ आशा करोगे तो निराशा ही हाथ लगेगी। 2. *पु॰* अकुशल व्यक्ति, अनिपुण आदमी। *प्र॰* भला वह अनाड़ी यह काम कर सकेगा?

अनाथ (अ + नाथ) – *वि॰* जिसका कोई सहारा न हो, बेसहारा; जैसे – अनाथ बालक।

अनाथालय (अनाथ + आलय = घर) – *पु॰* अनाथाश्रम, यतीमख़ाना, वह जगह जहाँ अनाथ बच्चों का पालन-पोषण होता हो। *प्र॰* उसके परिवार के सभी लोग दंगे में मारे गए, अब तो बेचारा अनाथालय में पल रहा है।

अनन्नास अनपढ़ अनशन
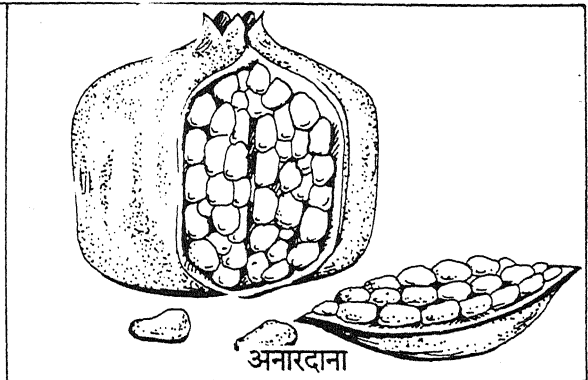
अनामिका

अनारदाना

अनाथाश्रम (अनाथ + आश्रम) – पु० दे० अनाथालय।

अनादर (अन् + आदर) – पु० अपमान, निरादर, बेइज़्ज़ती।

अनादि (अन् + आदि) – *वि०* जिसका आदि या आरंभ न हुआ हो, जिसकी शुरुआत किसी ने नहीं की हो, प्राकृतिक। *प्र०* भगवान् अनादि है, ऐसा बहुत लोगों का विश्वास है।

अनामिका – 1. *स्त्री०* सबसे छोटी उँगली के पास की उँगली। 2. *वि०* जिसका कोई नाम न हो।

अनारदाना – पु० खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना, जो चटनी, चूरन आदि बनाने के काम आता है।

अनावश्यक (अन् + आवश्यक) – *वि०* जो ज़रूरी या आवश्यक न हो, ग़ैरज़रूरी, व्यर्थ का, बेकार का। *प्र०* आवश्यक काम करें, ऐसे अनावश्यक कामों में अपना समय बर्बाद न करें।

अनावृष्टि – *स्त्री०* वर्षा का अभाव, सूखा, पानी न बरसना। *प्र०* 1. अनावृष्टि के कारण इस वर्ष अकाल पड़ सकता है। 2. अनावृष्टि के कारण सारी फ़सल बर्बाद हो गई।

अनियंत्रित (अ + नियंत्रित) – *वि०* जिस पर कोई नियंत्रण न हो, स्वच्छंद, बेक़ाबू, मनमाना। *प्र०* अनियंत्रित बच्चे प्रायः बिगड़ जाते हैं।

अनिवार्य – *वि०* जिसका निवारण न हो सके, जिसे टाला न जा सके, बहुत ज़रूरी, अत्यंत आवश्यक। *प्र०* यह काम अनिवार्य है, इसके बिना बात नहीं बनेगी।

अनिश्चित (अ + निश्चित) – *वि०* जिसका निश्चय न हुआ हो, जो तै न हुआ हो। *प्र०* अभी सब कुछ अनिश्चित है, देखो मैं परीक्षा दे भी पाता हूँ या नहीं।

अनिष्ट (अन् + इष्ट) – पु० अमंगल, हानि, अहित, बुराई। *प्र०* भगवान् न करे किसी का अनिष्ट हो।

अनुकरण – पु० नक़ल, किसी की देखादेखी कुछ करना। *प्र०* 1. आदमी अनुकरण से बहुत कुछ सीख सकता है। 2. बंदर की अनुकरण की आदत होती है।

अनुकूल – *वि०* जो अपने पक्ष में हो, मुआफ़िक, सहायक, मेल खानेवाला। (*विलोम* – प्रतिकूल)। *प्र०* इस साल अनुकूल वर्षा होने के कारण फ़सल अच्छी रही।

अनुचित (अन् + उचित) – *वि०* जो उचित न हो,

बुरा, ग़लत, बेजा, नामुनासिब, ग़ैरवाज़िब। प्र० बड़ों से अशिष्ट व्यवहार अनुचित है।

अनुच्छेद – पु० कुछ वाक्यों का समूह, पैरा, पैराग्राफ़। प्र० किन्हीं भी दो अनुच्छेदों का अर्थ लिखिए।

अनुत्तीर्ण (अन् + उत्तीर्ण) – *वि०* फ़ेल, जो उत्तीर्ण न हुआ हो, जो पास न हुआ हो, असफल। प्र० परिश्रम से न पढ़ने के कारण मोहन परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया।

अनुदान – पु० किसी कार्य के लिए किसी संस्था अथवा सरकार आदि से मिलनेवाला धन, ग्रांट। प्र० सरकार इस काम के लिए आजकल अनुदान दे रही है।

अनुपम (अन् + उपमा) – *वि०* जिसकी उपमा न हो, बेजोड़, अद्वितीय, सर्वोत्तम, सबसे अच्छा। प्र० इस प्रतियोगिता में उसका चित्र अनुपम है।

अनुपयोगी (अन् + उपयोगी) – *वि०* बेकार, व्यर्थ, उपयोगरहित, जिसका कोई उपयोग न हो, जिसका कोई फ़ायदा न हो। प्र० यह कार्य अनुपयोगी है, इसलिए इसे तुरंत छोड़ देना चाहिए।

अनुपस्थित (अन् + उपस्थित) – *वि०* जो उपस्थित न हो, ग़ैरहाज़िर। प्र० परीक्षा समीप है, कक्षा से इतना अनुपस्थित न रहा करो।

अनुभव – पु० 1. तजुरबा, किसी काम को स्वयं करने से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान। प्र० वैसे तो वह छात्र योग्य है, किंतु उसमें अभी अनुभव की कमी है। 2. एहसास। प्र० ऐसा अनुभव होता है जैसे तुम जन्म-जन्म के अपने हो।

अनुभवी – *वि०* अनुभववाला, तजुरबेकार। प्र० वह इस विषय में अनुभवी व्यक्ति है, उसी से पूछ देखो, मेरा तो कोई अनुभव नहीं है।

अनुभूति – *स्त्री०* अनुभव, बोध, महसूस करने का भाव। प्र० सुख-दुख की अनुभूति पेड़-पौधों तक को होती है।

अनुमति – *स्त्री०* इजाज़त, स्वीकृति। प्र० अध्यापक ने बच्चे को कक्षा के बाहर जाने की अनुमति नहीं दी।

अनुमान – पु० अंदाज़, अंदाज़ा, अटकल। प्र० मेरा अनुमान है कि कल वह अवश्य आएगा।

अनुयायी – *वि०* किसी मत या सिद्धांत आदि को माननेवाला, किसी के पीछे चलनेवाला, अनुगामी। प्र० वह बौद्ध धर्म का अनुयायी है।

अनुमति अनुयायी
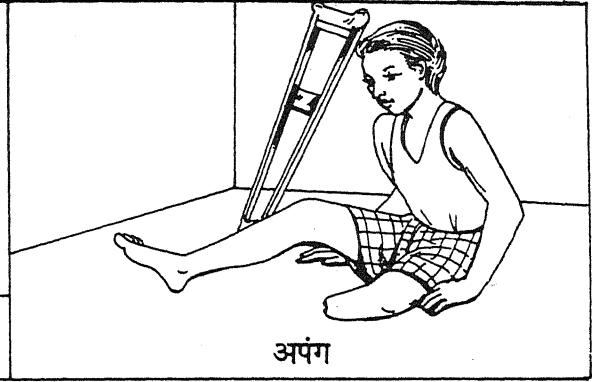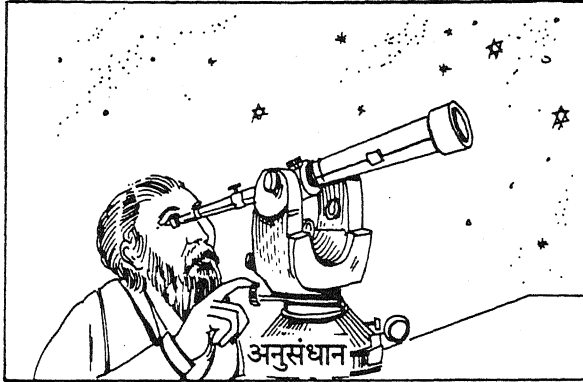
अनुरूप – *वि०* उपयुक्त। *प्र०* आदमी को अपने पद-प्रतिष्ठा के अनुरूप ही आचरण करना चाहिए। (*विलोम* – प्रतिरूप)।

अनुरोध – *पु०* विनयपूर्वक आग्रह, निवेदन, प्रार्थना। *प्र०* आपसे मेरा अनुरोध है कि कल आप मेरे घर अवश्य पधारें।

अनुवाद – *पु०* एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना, तर्जुमा। *प्र०* प्रेमचंद की कहानियों के अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में हो चुके हैं।

अनुवादक – *पु०* अनुवाद करनेवाला, उल्थाकार, तर्जुमा करनेवाला।

अनुशासन – *पु०* नियमानुसार आचरण, डिसिप्लिन। *प्र०* 1. बिना अनुशासन के कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता। 2: विद्यार्थियों में अनुशासन बहुत आवश्यक है।

अनुसंधान – *पु०* शोध, खोज, रिसर्च। *प्र०* हमारे वैज्ञानिक भी अनेक क्षेत्रों में अनुसंधान कर रहे हैं।

अनुसूचित जाति – *स्त्री०* कुछ ज़ातियाँ जो सरकार द्वारा सूचीबद्ध हैं, हरिजन, शेड्यूल्ड कास्ट।

अनूठा – *वि०* 1. अनोखा, अद्‍भुत। 2. बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया।

अनेक (अन् + एक) – *वि०* कई, एक से ज़्यादा, बहुत से।

अनैच्छिक (अन् + ऐच्छिक) – *वि०* वह काम जो इच्छा न होने पर भी किया जाता है, अनिवार्य। *प्र०* एक प्रकार की मांसपेशियाँ अनैच्छिक होती हैं जो हमारी इच्छा से काम नहीं करतीं।

अनोखापन – *पु०* निरालापन, विचित्रता, अनूठापन। *प्र०* यही तो बंदर का अनोखापन है कि वह आदमी की नक़ल कर लेता है।

अन्न – *पु०* अनाज, ग़ल्ला।

अन्य – *वि०* कोई दूसरा, और, भिन्न, ग़ैर।

अन्यथा – *अ०* नहीं तो, ऐसा न होने पर, वरना। *प्र०* आज स्कूल में जो काम मिला है उसे अवश्य कर लें, अन्यथा अध्यापक दंड देंगे।

अन्याय – *पु०* 1. वह कार्य जो न्याय के विरुद्ध हो, बेइंसाफ़ी। 2. ज़ुल्म, अत्याचार।

अन्यायी (अ + न्याय + ई) – *वि०* न्याय के विरुद्ध काम करनेवाला, ज़ालिम। *प्र०* अन्यायी शासन बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता।

अपंग (अप + अंग) – *वि०* अंगहीन, विकलांग,

लूला-लँगड़ा। प्र० अपंग लोगों की सहायता के लिए सरकार ने अनेक नियम बनाए हैं।

अपच (अ + पच) – पु० खाना न पचना, बदहज़मी। प्र० हाज़मे की कोई दवा दे दो, उसे अपच हो गया है।

अपद्रव्य – पु० बुरी चीज़, नुक़सान करनेवाली वस्तु। प्र० शरीर के अंदर ऑक्सीजन चीनी को जलाकर ऊर्जा और अपद्रव्य उत्पन्न करती है, यह अपद्रव्य फेफड़ों से बाहर आती साँस के साथ निकलता है।

अपनापन (अपना + पन) – पु० आत्मीयता, अपनापा, अपना होने की स्थिति या भाव। प्र० जब भी मैं उनसे मिला हूँ वे बहुत ही अपनापन दिखाते हैं।

अपमान (अप + मान) – पु० अनादर, बेइज़्ज़ती। (*विलोम* – सम्मान)।

अपयश (अप + यश) – पु० बुराई, बदनामी, कलंक। (*विलोम* – यश)।

अपराध – पु० 1. जुर्म, क़ानून का उल्लंघन करने का कार्य, ऐसा काम जिसके लिए क़ानून द्वारा सज़ा दी जा सकती हो। प्र० डाका, चोरी, हत्या आदि अपराध हैं। 2. क़सूर, दोष, ग़लती। प्र० सारा अपराध तुम्हारा है, क्योंकि तुमने क़ानून का ध्यान नहीं रखा।

अपराह्न (अपर + अह्न) – पु० दोपहर के बाद का समय, दिन का तीसरा पहर। प्र० कल अपराह्न में हम लोग फिर मिलेंगे।

अपरिचित (अ + परिचित) – *वि०* अजनबी, जिससे परिचय या जान-पहचान न हो; जैसे– अपरिचित विषय, अपरिचित व्यक्ति, अपरिचित जगह।

अपरिमित (अ + परिमित) – *वि०* 1. बहुत अधिक, अगणित, अत्यधिक। 2. (गणित में) असीमित, अनंत, इनफ़ाइनाइट। प्र० समुच्चय (सेट) परिमित (फ़ाइनाइट) भी होते हैं अपरिमित भी।

अपशकुन (अप + शकुन) – पु० कोई ऐसी घटना जो भविष्य में कुछ बुरा होने की सूचना दे, अशुभ लक्षण, असगुन। प्र० बिल्ली का रास्ता काटना अपशकुन माना जाता है।

अपार (अ + पार) – *वि०* जिसका पार न हो, बहुत ज़्यादा, बहुत अधिक, असीम, अनंत।

अपितु – *अ०* बल्कि। प्र० वे न केवल आएँगे अपितु भाषण भी देंगे।

अपराध   अपशकुन
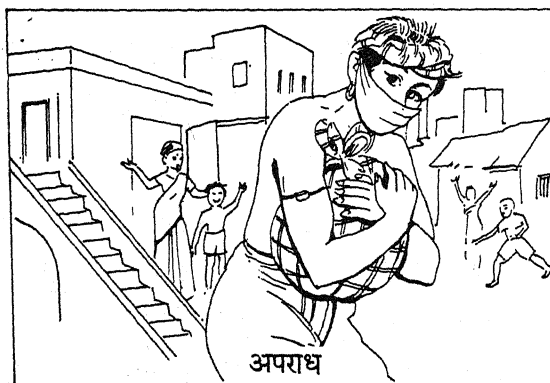
अपील – *स्त्री०* 1. विचार या पुनर्विचार के लिए प्रार्थना। *प्र०* निचली अदालत में तो वह हार गया है, परंतु आगे (उच्च न्यायालय में) अपील अवश्य करेगा। 2. निवेदन, प्रार्थना, दरख़्वास्त। *प्र०* उन्होंने चंदा देने के लिए लोगों से अपील की है।

अपूर्ण (अ + पूर्ण) – *वि०* जो पूरा न हो, अधूरा। *प्र०* अभी तो वह कार्य अपूर्ण है लेकिन उसे शीघ्र पूरा कर लूँगा।

अपेक्षा – 1. *अ०* बनिस्बत, तुलना में। *प्र०* उसकी अपेक्षा यह कपड़ा अच्छा है। 2. *स्त्री०* आवश्यकता, ज़रूरत। *प्र०* उस वस्तु की हमें भी अपेक्षा

अपेक्षित – *वि०* आवश्यक, ज़रूरी, जिसकी अपेक्षा हो। *प्र०* इस कोर्स में परीक्षा देने के लिए पचहत्तर प्रतिशत हाज़िरी अपेक्षित है। 2. उस मीटिंग में तुम्हारी उपस्थिति भी अपेक्षित है।

अप्रत्यक्ष (अ + प्रति + अक्ष) – *वि०* जो प्रत्यक्ष न हो, जो दिखाई न दे, परोक्ष, छिपा, गुप्त। (*विलोम* – प्रत्यक्ष)। *प्र०* यह बात होगी तो अवश्य, किंतु अभी तक अप्रत्यक्ष है।

अप्रसन्न (अ + प्रसन्न) – *वि०* 1. नाराज़, नाखुश। *प्र०* आजकल वे तुमसे अप्रसन्न हैं। 2. उदास, दुखी, खिन्न। *प्र०* इन दिनों वे कुछ अप्रसन्न दिख रहे हैं।

अप्रिय (अ + प्रिय) – *वि०* 1. जो प्रिय न हो, जो पसंद न किया जाए। 2. बुरा, ख़राब। *प्र०* कल नगर में शांति रही और कोई अप्रिय घटना नहीं घटी।

अफ़वाह – *स्त्री०* उड़ती ख़बर, ऐसी ख़बर जो फैल तो गई हो, पर जिसका कोई पुष्ट आधार न हो, ग़लत या झूठी ख़बर। *प्र०* अफ़वाहों पर विश्वास मत करो, उनसे अनर्थ हो सकता है।

अबरक – *पु०* एक खनिज द्रव्य जिसकी तहें चमकती हैं, अभ्रक।

अबला (अ + बल + आ) – *स्त्री०* औरत, स्त्री।

अबाबील – *स्त्री०* एक छोटी काले रंग की चिड़िया जो खँडहरों में घोंसला बनाकर रहती है।

अब्बा – *पु०* पिता, बाप। *प्र०* लगता है कि अब्बाजान कुछ नाराज़ हैं।

अभक्ष्य (अ + भक्ष्य) – *वि०* न खाने योग्य, अखाद्य। *प्र०* क्या भक्ष्य है और क्या अभक्ष्य, इसका ध्यान रखना चाहिए।

अभयारण्य (अभय + अरण्य) – *पु०* ऐसा सुरक्षित वन जिसमें जानवर शिकारियों आदि से निडर होकर

रह सकें। प्र० भारत में कई स्थानों पर अभयारण्य बनाए गए हैं; जैसे – उत्तर प्रदेश में 'कार्बेट पार्क' तथा मध्य प्रदेश में 'कान्हा' आदि।

अभाज्य – *वि०* 1. ऐसी संख्या जो किसी भी संख्या से न कटे या जिसको किसी भी संख्या से पूरा-पूरा भाग न दिया जा सके; जैसे – 3, 5, 7, 11 आदि। 2. जिसके टुकड़े न हो सकें।

अभाव – *पु०* कमी, ग़ैर-मौजूदगी। *प्र०* वर्षा के अभाव में फसल अच्छी नहीं हुई।

अभिकर्ता – *पु०* कारक, एजेंट, करनेवाला। *प्र०* मिट्टी हवा और पानी से कटती है, ये मिट्टी के काट के अभिकर्ता होते हैं।

अभिनंदन – *पु०* सम्मान, प्रशंसापूर्ण स्वागत। *प्र०* आज नेताजी का साठवाँ जन्मदिन है, लोग उनका अभिनंदन करनेवाले हैं।

अभिनय – *पु०* फ़िल्म या नाटक आदि में किसी पात्र का पार्ट अदा करना, ऐक्टिंग। *प्र०* कुछ ही पात्र अच्छा अभिनय कर पाते हैं।

अभिनेता – *पु०* फिल्मों या नाटक आदि में अभिनय करनेवाला, ऐक्टर।

अभिनेत्री – *स्त्री०* फ़िल्मों या नाटक में अभिनय करनेवाली स्त्री, ऐक्ट्रेस।

अभिभावक – *पु०* संरक्षक, गार्जियन। *प्र०* उसके परिवार में सभी का देहांत हो चुका है, अब तो उसके मामाजी ही उसके अभिभावक हैं।

अभिमान – *पु०* अपने को दूसरों से बढ़कर समझना, घमंड, गर्व, अहं, अहंकार।

अभिमानी – *वि०* घमंडी, अहंकारी, अपने को बहुत बड़ा समझनेवाला। *प्र०* अभिमानी व्यक्ति कभी-न-कभी मुँह की अवश्य खाता है।

अभियंता – *पु०* इंजीनियर।

अभिलाषा – *स्त्री०* इच्छा, चाह, कामना, तमन्ना।

अभिवादन – *पु०* प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते। *प्र०* छोटे बड़ों का अभिवादन करते हैं।

अभीष्ट (अभि + इष्ट) – *वि०* चाहा हुआ, इच्छित, मनचाहा। *प्र०* तुम चिंता न करो, तुम्हारा अभीष्ट अवश्य पूरा हो जाएगा। (*विलोम* – अनिष्ट)।

अभ्यास – *पु०* 1. किसी काम को बार-बार करके सीखना, मश्क़, प्रैक्टिस। *प्र०* अभ्यास से क्या नहीं सीखा जा सकता ? 2. आदत, बान। *प्र०* शीला को देर तक जगने और देर से उठने का अभ्यास है।

अभिनंदन अभिवादन
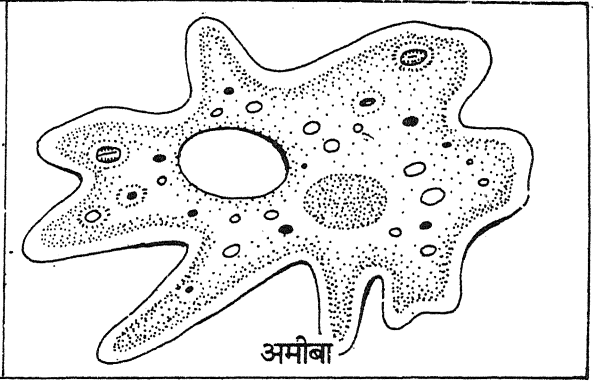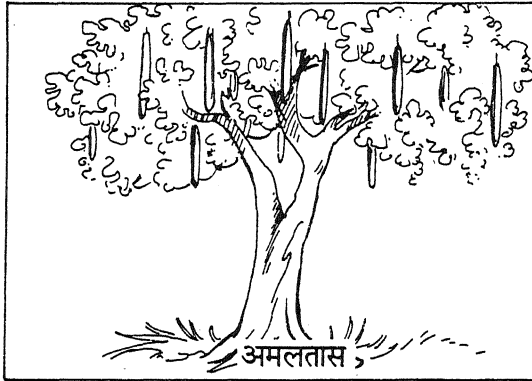
अभ्रक – पु० दे० अबरक।

अमचुर, अमचूर – पु० कच्चे आम के सुखाए हुए टुकड़े।

अमर (अ+मर) –1. *वि०* जो कभी न मरे, चिरजीवी। 2. पु० देवता।

अमरस (आम+रस)–पु० 1. पके आम का रस। 2. अमावट, पके आम का सुखाया हुआ रस।

अमल –पु० 1. कार्य रूप देना, पालन, व्यवहार। *प्र०* उसकी सीख पर अमल करोगे तो तुम्हें लाभ-ही-लाभ होगा। 2. आदत, लत।

अमलतास –पु० लंबी गोल फलियोंवाला एक पेड़ जिसके फल-फूल दवा के काम आते हैं।

अमावट –*स्त्री०* आमपापड़, पके आम का सुखाया हुआ रस।

अमावस्या –*स्त्री०* कृष्ण पक्ष का अंतिम दिन जब चाँद दिखाई नहीं पड़ता, अमावस, अमा।

अमीबा –पु० एक-कोशीय प्राणी जिसका स्वरूप बदलता रहता है तथा जो खुर्दबीन के बिना नहीं दीखता, निगोदिया।

अमुक –*सर्व०* फ़लाँ, फ़लाना, कोई व्यक्ति या वस्तु जिसके संबंध में बात की जा रही हो; जैसे – अमुक व्यक्ति, अमुक वस्तु, अमुक स्थान, अमुक पुस्तकें।

अमूल्य –*वि०* 1. क़ीमती, मूल्यवान, बहुमूल्य। *प्र०* उसके ख़ज़ाने में बहुत-सी अमूल्य चीज़ें हैं। 2. बहुत बढ़िया, बहुत अच्छा। *प्र०* उसके अमूल्य सुझाव से ही यह समस्या सुलझ सकी है।

अमृत –पु० 1. एक काल्पनिक पेय जिसे पीने से व्यक्ति कभी मरता नहीं, सुधा। (*विलोम*–विष)। 2. बहुत स्वादिष्ट वस्तु।

अमोनियम सल्फ़ेट – पु० एक प्रकार का लवण।

अमोनिया – *स्त्री०* एक गैस।

अमोल – *वि०* अनमोल।

अम्माँ – *स्त्री०* माता, माँ, मम्मी।

अम्ल –पु० 1. खटाई। 2. तेज़ाब, ऐसिड।

अयस्क – पु० धातुओं का कच्चा रूप। *प्र०* लोहा, ताँबा, चाँदी, सोना, अल्युमीनियम आदि धातुएँ अपने-अपने अयस्क रूप में पृथ्वी के भीतर पाई जाती हैं।

अयोग्य – *वि०* नालायक़, जिसमें योग्यता न हो,

निकम्मा, बेकार। प्र० अयोग्य व्यक्ति जीवन में सफल हो सकते हैं यदि वे योग्य व्यक्तियों से कुछ सीखें।

अयोध्या – पु० अवध की एक नगरी जो सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी। प्र० राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे।

अरगल, अर्गला – पु० किवाड़ या दरवाज़े को बंद करने के लिए अंदर लगाई जानेवाली लकड़ी, वेंडा, चटकनी। प्र० रात को सोने के पहले अरगल लगा लेना चाहिए।

अरथी – *स्त्री०* बाँस या बल्लियों से बनी सीढ़ी जैसी एक वस्तु जिस पर मृत व्यक्ति को लिटाकर ले जाते हैं, टिकठी।

अरना – पु० जंगली भैंसा, अरना भैंसा।

अरसा – पु० ज़्यादा समय, बहुत देर। प्र० वे अरसे से नहीं आए।

अरुचि – *स्त्री०* अच्छा न लगना, घृणा, नफ़रत। प्र० मुझे गंदी चीज़ों से अरुचि है।

अरुचिकर (अ + रुचि + कर) – *वि०* जो रुचिकर न हो, जो मन को न भाए, जो अच्छा न लगे, नापसंद; जैसे – अरुचिकर भोजन।

अर्क़ – पु० सार, निचोड़।

अर्थात् – *अ०* यानी, मतलब यह है कि, अर्थ यह है कि। प्र० अयोध्या-नरेश अर्थात् महाराज दशरथ की तीन रानियाँ थीं।

अर्द्धचंद्र – पु० दे० अर्धचंद्र।

अर्द्धव्यास – पु० दे० अर्धव्यास।

अर्ध – *वि०* आधा।

अर्धचंद्र – पु० 1. आधा चंद्रमा, चाँद का आधा भाग, अष्टमी का चंद्रमा जो आधा दिखता है। 2. शिरोरेखा पर लगाया जानेवाला चिह्न; जैसे – ऑफिस में 'आ' पर।

अर्धरात्रि – *स्त्री०* आधी रात का समय, रात के बारह बजे का समय।

अर्धविराम – पु० सेमिकोलन, वह विराम चिह्न जहाँ वाक्य पढ़ते हुए अल्पविराम से ज़्यादा और पूर्ण विराम से कम समय के लिए रुकते हैं। इसका चिह्न ; है।

अर्धवृत्ताकार – *वि०* आधे वृत्त के आकार का। प्र० अष्टमी का चंद्रमा अर्धवृत्ताकार होता है।

अर्धव्यास – पु० रेखागणित में केंद्र से परिधि तक की दूरी।
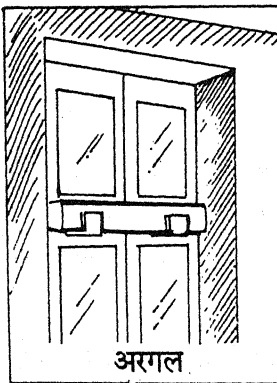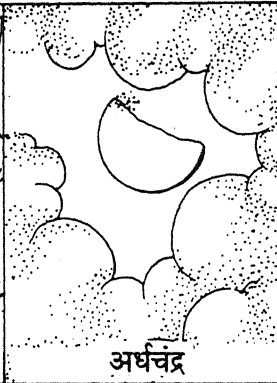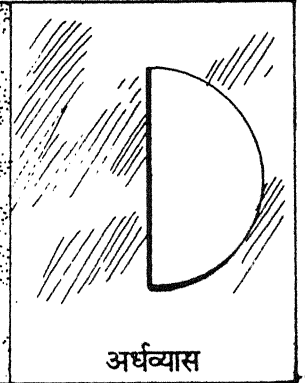
अलबम अलसी अलाव

अर्पण – *पु०* सौंपना, देना, दान करना, भेंट करना। *प्र०* सैकड़ों नेताओं ने अपना सर्वस्व अर्पण करके देश को स्वतंत्र कराया।

अर्पित – *वि०* अर्पण किया हुआ, सौंपा गया, दिया गया। *प्र०* भगतसिंह ने देश के लिए अपने प्राण अर्पित कर दिए।

अलकोहल – *पु०* एक कार्बनिक रासायनिक पदार्थ, मद्यसार।

अलख – 1. *वि०* जो दिखाई न पड़े, अदृश्य, अगोचर। 2. *पु०* परमात्मा, ईश्वर। *मु० अलख जगाना* – अलख-अलख पुकारकर भगवान् को याद करना।

अलबम – *पु०* फ़ोटो रखने की पुस्तिका।

अलबेला – *वि०* बाँका, सुंदर, अनूठा।

अलसी – *स्त्री०* एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है और खली बनती है, तीसी।

अलार्म – *पु०* 1. निश्चित समय पर बजनेवाली घंटी (घड़ी में), अलार्म घड़ी। *प्र०* घड़ी में तीन बजे सुबह का अलार्म लगा दो। 2. ख़तरे की घंटी। *प्र०* डाकुओं के आते ही बैंक में अलार्म बज उठा।

अलाव – *पु०* हाथ सेंकने या तापने के लिए जलाई हुई आग। *प्र०* सर्दियों में शाम होते ही गाँवों में अलाव जल जाते हैं और लोग उसके इर्द-गिर्द बैठकर तरह-तरह की बातें करते हैं।

अल्प – *वि०* कम, थोड़ा। (*विलोम* – अधिक, बहुत ज़्यादा)। *प्र०* अल्प ज्ञान ख़तरनाक होता है।

अल्पना – *स्त्री०* फ़र्श पर रंगों से बनाए जानेवाले बेल-बूटे, रँगोली।

अल्पविराम – *पु०* वह विराम जहाँ पूरा वाक्य पढ़ते हुए अर्धविराम से भी कम समय के लिए रुकते हैं, कॉमा, इसे , रूप में लिखते हैं।

अल्यूमीनियम – *पु०* एक बहुत हल्की सफ़ेद धातु।

अल्लाह – *पु०* खुदा, परमात्मा, भगवान्।

अवकाश – *पु०* ख़ाली समय, फ़ुरसत, छुट्टी। *प्र०* 1. गर्मी का अवकाश होनेवाला है, शिमला चलेंगे। 2. अवकाश हो तो कल शाम को मेरे घर आ जाना।

अवतार – *पु०* देवता या ईश्वर का मनुष्य के रूप में जन्म। *प्र०* राम और कृष्ण भगवान् के अवतार माने जाते हैं।

अवधि – *स्त्री॰* मीयाद, समय-सीमा। *प्र॰* परीक्षा की अवधि तीन घंटे होती है।

अवयव – *पु॰* अंग, भाग, हिस्सा, अंश। *प्र॰* हाथ, पैर हमारे शरीर के मुख्य अवयव हैं।

अवरोही – *वि॰* 1. नीचे आनेवाला, ऊपर से नीचे-चलनेवाला। *प्र॰* 50, 40, 34, 25, 5 अवरोही क्रम की संख्याएँ हैं (गणित)। 2. संगीत में वह स्वर जो नीचे आता है। *प्र॰* संगीत में आरोही और अवरोही स्वर होते हैं।

अवलोकन – *पु॰* देखना, निहारना, निरीक्षण, दृष्टिपात।

अवशेष – *वि॰* बचा हुआ, बाक़ी, शेष।

अवशोषण – *पु॰* चूसना, शोषण, शोषण करने की क्रिया। *प्र॰* भोजन अँतड़ियों में जाता है जहाँ उसके पौष्टिक अंश का अवशोषण होता है।

अवसर – *पु॰* मौक़ा। *प्र॰* उस संबंध में बात करने का अभी अवसर नहीं आया है।

अवस्था – *स्त्री॰* 1. स्थिति, दशा, हालत। *प्र॰* उनकी अवस्था ख़राब है। 2. आयु, उम्र। *प्र॰* पिताजी की अवस्था सत्तर से ऊपर है।

अवहेलना – *स्त्री॰* ध्यान न देना, तिरस्कार। *प्र॰* बड़ों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।

अविचल – *वि॰* जो विचलित न हो, अचल, स्थिर, अटल।

अविरल – *वि॰* जो विरल न हो, सघन, घना।

अशांत, अशान्त (अ + शांत) – *वि॰* जो शांत न हो, बेचैन, परेशान। *प्र॰* अशांत मन से पढ़ाई नहीं होती।

अशुद्ध (अ + शुद्ध) – *वि॰* 1. अपवित्र, मैला, गंदा। *प्र॰* अशुद्ध जल को साफ़ करनेवाला यंत्र फ़िल्टर कहलाता है। 2. जो शुद्ध या सही न हो, ग़लत। *प्र॰* आपका यह वाक्य अशुद्ध है, इसे ठीक कीजिए।

अशुद्धि (अ + शुद्धि) – *स्त्री॰* ग़लती, अशुद्धता, मैल, गंदगी। *प्र॰* 1. उसकी भाषा में अशुद्धियाँ नहीं मिलीं। 2. तुम्हारे उच्चारण में अशुद्धियाँ बहुत होती हैं।

अशुभ (अ + शुभ) – *वि॰* जो शुभ न हो, अमंगलकारी। *प्र॰* 1. ऐसी अशुभ बात मुँह से मत निकालो। 2. कहते हैं बिल्ली का रास्ता काट जाना अशुभ है।

अशोकचक्र – *पु॰* सम्राट् अशोक की लाट पर बना

अवलोकन | अशुद्ध | अशोकचक्र
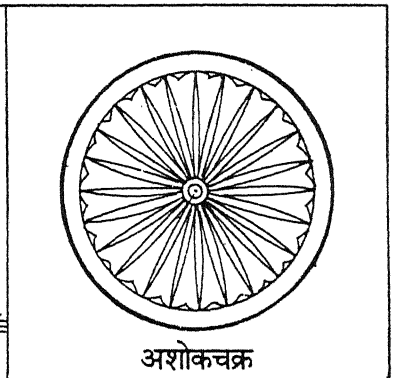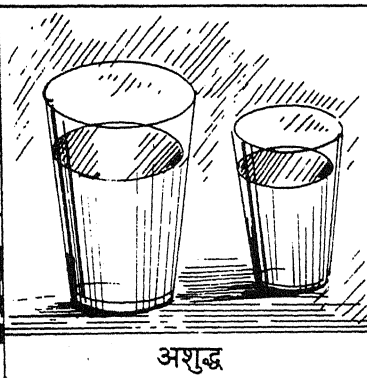
अश्रु

अश्वमेध

चक्र जिसके आधार पर भारतीय झंडे पर भी चक्र बनाया गया है।

अश्रु – *पु॰* आँसू।

अश्वमेध – *पु॰* पुराने ज़माने में किया जानेवाला एक यज्ञ। राजा अपने घोड़े के सिर पर जयपत्र बाँधकर उसे चारों ओर घूमने के लिए छोड़ देता था। जो उस घोड़े को पकड़ ले उसे अश्वमेध करनेवाले राजा से युद्ध करना पड़ता था। *प्र॰* महाराज रामचंद्रजी का अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़ा गया घोड़ा लव और कुश ने रोका था।

अष्टमी– *स्त्री॰* शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि, आठवें क्रम पर आनेवाली कोई भी चीज़।

असंख्य (अ + संख्या) – *वि॰* जिसकी गिनती न हो सके, अनगिनत, अगणित, बेशुमार। *प्र॰* द्वितीय विश्वयुद्ध में असंख्य लोग मारे गए।

असंभव (अ + संभव) – *वि॰* जो संभव न हो, न होनेवाला या न हो सकनेवाला, नामुमकिन। *प्र॰* मनुष्य के लिए दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है।

असत्य (अ + सत्य) – *वि॰* जो सत्य न हो, झूठ, मिथ्या, ग़लत। *प्र॰* अपने अध्यापक से असत्य नहीं बोलना चाहिए।

असफल (अ + सफल) – *वि॰* 1. नाकामयाब, विफल। *प्र॰* दौड़कर बस पकड़ने की उसकी कोशिश असफल रही। 2. फ़ेल, अनुत्तीर्ण। *प्र॰* ठीक से न पढ़ने के कारण वह परीक्षा में असफल हो गया।

असफलता (अ + सफलता) – *स्त्री॰* सफल न होना, नाकामयाबी, विफलता। *प्र॰* परिश्रम करो वरना परीक्षा में असफलता ही हाथ लगेगी।

असमर्थ (अ + समर्थ) – *वि॰* जो समर्थ न हो, कमज़ोर, अशक्त। *प्र॰* अब वे इतने वृद्ध हो गए हैं कि कुछ भी करने में असमर्थ हैं।

असहाय (अ + सहाय) – *वि॰* जिसका कोई सहायक न हो, जिसकी मदद करनेवाला कोई न हो, बेसहारा, निराश्रय।

असह्य (अ + सह्य) – *वि॰* जिसे बर्दाश्त न किया जा सके, न सहने योग्य। *प्र॰* वह असह्य दर्द से छटपटा रहा है।

असाधारण (अ + साधारण) – *वि॰* जो साधारण न हो, विशेष, ख़ास, विशिष्ट। *प्र॰* वह विद्यार्थी असाधारण परिश्रमी है।

असाध्य (अ + साध्य) – *वि०* जिसे सिद्ध करना संभव न हो, जिसका इलाज न हो, अच्छा न होनेवाला, बेक़ाबू। *प्र०* विज्ञान के इस युग में अब कोई भी रोग असाध्य नहीं रह गया है।

असावधान (अ + सावधान) – *वि०* जो सावधान न हो, बेख़बर, लापरवाह। *प्र०* यात्रा में असावधान मत होना, उस तरफ़ ठग और गठकटे बहुत होते हैं।

असावधानी (अ + सावधानी) – *स्त्री०* सावधानी का अभाव, लापरवाही, ग़फलत, बेख़बरी। *प्र०* अधिकतर दुर्घटनाएँ असावधानी के कारण ही होती हैं।

असीम (अ + सीमा) – *वि०* जिसकी सीमा न हो, बेहद, अगाध, अपार। *प्र०* मेरे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण पिताजी को असीम प्रसन्नता हुई।

असुविधा (अ + सुविधा) – *स्त्री०* सुविधा का अभाव, दिक़्क़त, परेशानी, कठिनाई। *प्र०* ग़रीबों को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

असुविधाजनक (अ + सुविधाजनक) – *वि०* जिसमें असुविधा हो, सुविधारहित, जिसमें सुविधा न हो। *प्र०* यह जगह तो बड़ी असुविधाजनक है।

असेंबली – *स्त्री०* विधान सभा, लेजिस्लेटिव असेंबली।

अस्त – *वि०* छिपा हुआ, डूबा हुआ (सूर्य आदि)। *प्र०* सूर्य अस्त हो रहा है, अँधेरा होनेवाला है, चलो चलें। (*विलोम* – उदित)।

अस्तबल – *पु०* तबेला, घोड़ों को रखने की जगह, अश्वशाला।

अस्तर – *पु०* सिले कपड़े या जूते के भीतर का कपड़ा; जैसे – रजाई का अस्तर, कोट का अस्तर, जैकिट का अस्तर।

अस्तित्व – *पु०* सत्ता, हस्ती, रहना, होने की स्थिति। *प्र०* भूत-प्रेत कोई चीज़ नहीं है, केवल अंधविश्वासी ही उनके अस्तित्व में विश्वास रखते हैं।

अस्तित्वहीन (अस्तित्व + हीन) – *वि०* जिसका अस्तित्व न हो, जो हो ही नहीं।

अस्त्र – *पु०* हथियार (जिन्हें फेंककर मारते हैं); जैसे– बाण। *प्र०* अर्जुन ने अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा गुरु द्रोणाचार्य से पाई थी।

अस्त्र-शस्त्र – *पु०* हथियार, फेंककर मारे जानेवाले बाण आदि हथियार (अस्त्र) तथा बिना फेंके मारे जानेवाले तलवार आदि हथियार (शस्त्र)।
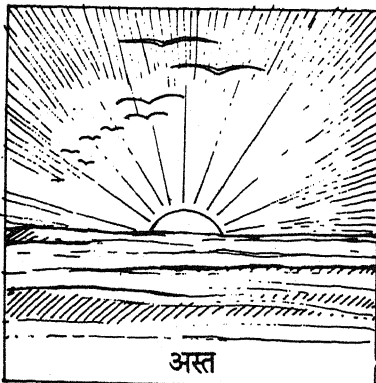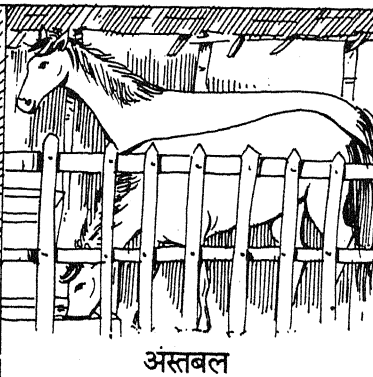
अस्त | अस्तबल | अस्त्र-शस्त्र
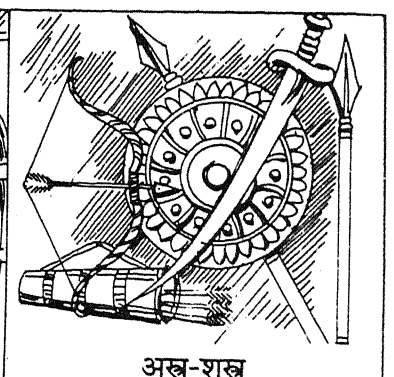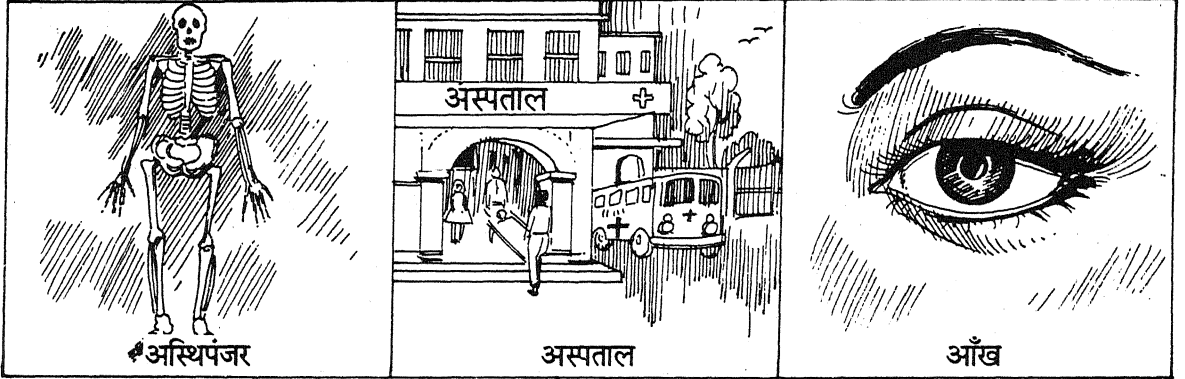
अस्थिपंजर | अस्पताल | आँख

अस्थायी (अ + स्थायी) –*वि०* जो स्थायी न हो, जो हमेशा न रहे, जो अधिक देर तक न टिके। प्र० मोहन को नौकरी तो मिल गई है पर वह अस्थायी है।

अस्थि – *स्त्री०* हड्डी।

अस्थिपंजर – *पु०* हड्डियों का ढाँचा, अस्थिकंकाल। प्र० उसका सारा मांस बीमारी में सूख गया है, अब तो वह केवल अस्थिपंजर है।

अस्थिभंग – *पु०* हड्डी का टूट जाना, फ्रेक्चर।

अस्पताल – *पु०* मरीज़ों के इलाज की जगह, चिकित्सालय।

अस्वस्थ (अ + स्वस्थ) – *वि०* जो स्वस्थ न हो, बीमार, रोगी।

अहं, अहंकार – *पु०* अभिमान, घमंड, गर्व, ग़ुरूर। प्र० अपने बल का अहंकार करके रावण बर्बाद हो गया।

अहंकारी – *वि०* अभिमानी, घमंडी।

अहिंसक (अ + हिंसक) – *वि०* जो जीवों को न मारे, हिंसा न करनेवाला, किसी को न दुखानेवाला। प्र० बहुत से जानवर भी अहिंसक होते हैं।

अहिंसा (अ + हिंसा) – *स्त्री०* किसी को न मारना, किसी को न सताना, किसी को दुख न देना। प्र० गांधीजी अहिंसा में विश्वास रखते थे।

आ – देवनागरी वर्णमाला का दूसरा अक्षर तथा दूसरा स्वर।

आँकड़ा – *पु०* किसी विषय के तथ्यों की जानकारी देनेवाली संख्याएँ, अंक, डाटा। प्र० जनसंख्या के आँकड़ों से किसी देश की जनता के बारे में अनेक बातों का पता चलता है।

आँकना – *क्रि०* अनुमान लगाना, अंदाज़ा लगाना। प्र० 1988 में भारत की जनसंख्या 80 करोड़ आँकी गई थी।

आँख – *स्त्री०* नेत्र, देखने का अंग। *मु० आँख आना* – आँखों में सूजन होना, आँखें लाल होना तथा उनसे कीचड़ निकलना। *आँख ऊपर न उठाना* – शर्मिंदा होना। *आँख उठाकर न देखना* – बहुत अधिक शर्मिंदा होना। *आँखों का तारा* – बहुत प्यारा। प्र० इकलौता बेटा माँ की आँखों का तारा होता है। *आँखों की पुतली* – बहुत प्यारा। *आँख दिखाना* – नाराज़ होकर घूरना। *आँख मूँदकर कूद पड़ना* – बिना सोचे-समझे कोई ख़तरे का काम करने

लगना। *आँख लगना* – हल्की नींद आ जाना। *आँखें खुल जाना* – सावधान हो जाना। *आँखें चुराना* – कतराना, किसी के सामने आने से बचना। *आँखों पर परदा पड़ना* – सामने की चीज़ न देखना, स्पष्ट ख़तरे से सावधान न होना। प्र० बाप की आँखों पर परदा पड़ा है, बेटा बिगड़ता जा रहा है फिर भी वह कुछ भी नहीं बोलता। *आँखों में धूल झोंकना* – धोखा देना, चकमा देना। प्र० ठग आँखों में धूल झोंककर सारा सामान लेकर चलता बना। *लो० आँख ओट पहाड़ ओट* – आँखों से ओझल होने पर आदमी को लोग प्रायः भूल जाते हैं। *आँख के अंधे नाम नयनसुख* – नाम के अनुरूप गुण आदि न होना।

आँच – स्त्री० आग की लपट, आग की गर्मी। *मु० आँच आना* – नुकसान होना। प्र० प्राण जाएँ पर इज़्ज़त पर आँच नहीं आए, वीरों का धर्म यही होता है।

आँचल – पु० साड़ी या ओढ़नी आदि का वह भाग जो सामने सिर या छाती पर रहता है, अंचल, पल्ला, पल्लू। मु० *आँचल पसारना* – भीख माँगना। प्र० माँ ने आँचल पसारकर अपने बेटे के प्राणों की भीख माँगी।

आँत – स्त्री० पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदामार्ग तक होती है, और जिससे होकर मल बाहर निकलता है, अंतड़ी। मु० *आँतें कुलकुलाना या कुलबुलाना* – बहुत भूख लगना। प्र० मारे भूख के आँतें कुलबुला रही हैं।

आंत्र-ज्वर – पु० आँतों से संबंधित बुख़ार जो काफ़ी कष्टदायक होता है।

आंत्रशोथ – पु० आँतों की सूजन की बीमारी।

आंदोलन – पु० किसी माँग की प्राप्ति के लिए मिलकर की जानेवाली कार्रवाई। प्र० महात्मा गांधी ने देश की स्वतंत्रता के लिए आंदोलन चलाया था।

आँवला – पु० एक कसैला फल जो अचार, चटनी, मुरब्बे, दवा आदि के काम आता है।

आँवाँ – पु० विशेष प्रकार के गड्ढे में बनी हुई भट्ठी जिसमें मिट्टी के बरतन पकाए जाते हैं। मु० *आँवाँ का आँवाँ बिगड़ना* – किसी परिवार या गाँव आदि के सभी लोगों का किसी दृष्टि से ख़राब हो जाना या बिगड़ जाना। प्र० उस परिवार की तो बस न पूछो, सभी चोरी करते हैं, आँवाँ का आँवाँ बिगड़ गया है।

आँसू – पु० बहुत दुख या बहुत अधिक ख़ुशी के कारण आँख से निकलनेवाला पानी, अश्रु। प्र० वह

आँत आंदोलन आँवला

बुढ़िया पहले तो अपने बेटे के खो जाने के कारण आँसू बहाती रही फिर जब बेटा मिल गया तो मारे ख़ुशी के आँसू बहाने लगी। *मु॰ आँसू बहाना* – बहुत दुखी होना। *प्र॰* जो होना था हो गया, अब क्या पूरी ज़िंदगी आँसू बहाते रहोगे ?

आइंदा – *वि॰* भविष्य में, आगे आनेवाले समय में। *प्र॰* आइंदा भूलकर भी इधर न आना, यहाँ तो ऐसे ही उलटे-सीधे लोग रहते हैं।

आइसक्रीम – *स्त्री॰* चीनी और क्रीम मिलाकर बनाई गई बर्फ़, मलाई बर्फ़।

आकर्षक – *वि॰* मोहक, लुभावना, सुंदर, जो अपने रूप-गुण से दूसरों को अपनी ओर खींच ले। *प्र॰* यह दृश्य बहुत आकर्षक है। (*विलोम* – विकर्षक)।

आकर्षण – *पु॰* किसी को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति, खिंचाव, खींच लेने की शक्ति। (*विलोम*– विकर्षण)।

आकार – *पु॰* 1. आकृति, रूप। *प्र॰* अंडे के आकार की वस्तु को अंडाकार कहते हैं। 2. लंबाई-चौड़ाई, साइज़। *प्र॰* उसका आकार बहुत बड़ा था।

आकारहीन – *वि॰* जिसका कोई आकार न हो। *प्र॰* द्रव पदार्थ आकारहीन होते हैं। जिस बर्तन में रखे जाएँ उसी के आकार के दिखने लगते हैं।

आकाश – *पु॰* पृथ्वी के ऊपर दिखाई देनेवाला वह गोल विस्तार जिसमें सूर्य-चंद्र आदि चमकते हैं, आसमान, गगन। *मु॰ आकाश-पाताल एक करना*– बहुत भाग-दौड़ करना, बहुत कोशिश करना। *प्र॰* उसने आकाश-पाताल एक करके आख़िर अपना काम बना ही लिया। *आकाश-पाताल का अंतर* – बहुत ज़यादा फ़र्क, आसमान-ज़मीन का फ़र्क। *प्र॰* अरे भाई, उन दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है, दोनों को समान अंक नहीं मिल सकते।

आकाशवाणी – *स्त्री॰* 1. आकाश से आनेवाली आवाज़, देववाणी। *प्र॰* कंस को आकाशवाणी हुई कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसको मारेगा। 2. आल इंडिया रेडियो, भारत में रेडियो-कार्यक्रम प्रसारित करनेवाले संगठन का नाम। *प्र॰* आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र से इस समय गीत आ रहे हैं।

आकृति – *स्त्री॰* 1. रचना, बनावट। *प्र॰* इस कार की आकृति अच्छी है। 2. रूप, सूरत-शक्ल। *प्र॰* उस पागल की तो आकृति भी कुछ अजीब-सी है।

आक्रमण – *पु॰* चढ़ाई, हमला। *प्र॰* दूसरे देश पर

आक्रमण करना भारत की नीति नहीं है।

आक्रमणकारी –*पु०* आक्रमण करनेवाला। *प्र०* जो भी आक्रमणकारी भारत की ओर बढ़ेगा, मुँह की खाएगा।

ऑक्सीजन –*पु०* एक प्रकार की वायु या गैस जो प्राणियों के जीवन के लिए बहुत ज़रूरी है, प्राणवायु।

आख़िरकार –*अ०* अंत में, अंततः। *प्र०* आख़िरकार मुझे चोट लग ही गई।

आग – *स्त्री०* अग्नि, ज्वाला। *मु० आग-बबूला होना*– बहुत गुस्सा होना। *प्र०* चोर की शैतानी देखकर सिपाही आग-बबूला हो गया और उसने चोर की बुरी तरह धुनाई की। *आग भड़क उठना* – किसी दबी बात का उभड़ जाना। *आग में कूदना* – ख़तरा मोल लेना, जानबूझकर संकट में पड़ना। *प्र०* तुम बहादुर तो हो पर ऐसी आग में क्यों कूदते हो जिससे किसी का भी लाभ न हो। *आग-पानी का बैर* – बहुत अधिक बैर। *प्र०* इन दोनों में आग-पानी का बैर है, तुम सुलह नहीं करा सकते।

आगमन –*पु०* अवाई, आना, पहुँचना। *प्र०* मैं अपने मित्र के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आगा-पीछा –*पु०* 1. शुरू और अंत। 2. फल, नतीजा। *प्र०* जो भी करो उसका आगा-पीछा सोचकर करो। 3. पसोपेश, असमंजस। *मु० आगा-पीछा करना* – हिचकना, हिचकिचाना। *प्र०* पहले तो करने की स्वीकृति दे दी, जब करने का समय आया तो आगा-पीछा कर रहे हो।

आगामी –*वि०* अगला, आनेवाला। *प्र०* आगामी सोमवार को अवकाश है।

आगे –*अ०* 1. आगे चलकर, भविष्य में। *प्र०* आगे क्या घटना घटेगी, कौन बता सकता है। 2. पीछे का उलटा, सामने, सम्मुख। *प्र०* उस रात जंगल में घुसते ही देखा तो आगे एक शेर खड़ा था।

आग्रह –*पु०* 1. अनुरोध, बार-बार कहना, बल देकर कहना। *प्र०* मेरा आपसे आग्रह है कि मेरे बेटे की शादी में आप अवश्य पधारें। 2. हठ, ज़िद। *प्र०* उसके आग्रह के आगे मेरी एक न चली।

आघात –*पु०* धक्का, शॉक। *प्र०* 1. परीक्षा में फ़ेल हो जाने के कारण उसे बड़ा आघात लगा है। 2. बेटे की क़ैद का आघात वह बूढ़ा सह न सका और भगवान् को प्यारा हो गया।

आचरण –*पु०* चरित्र, चाल-चलन। *प्र०* छात्रों को अपने आचरण का ध्यान रखना चाहिए।

आग | आगमन | आगे
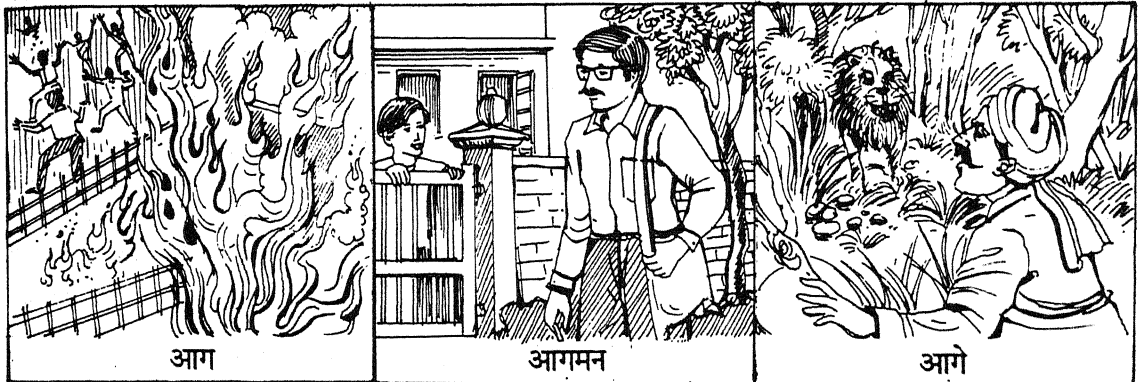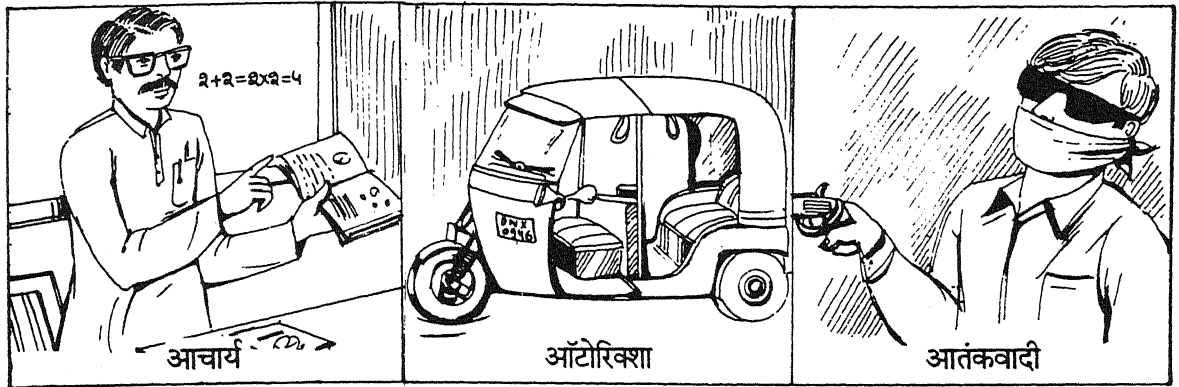
आचार – पु० 1. चाल-चलन, आचरण, चरित्र। 2. शील, अच्छा स्वभाव। प्र० उस लड़के का आचार-विचार अच्छा है। 3. सदाचार। प्र० वह लड़का बहुत आचारवान है।

आचार्य – पु० 1. प्रोफ़ेसर। प्र० डॉ० मिश्र विश्वविद्यालय में आचार्य और विभाग के अध्यक्ष हैं। 2. गुरु। प्र० मेरे आचार्यजी आ रहे हैं। 3. बहुत अच्छा जानकार, विद्वान्। प्र० पंडितजी संस्कृत के आचार्य हैं।

आजन्म – अ० जीवन-भर, जन्म-भर, ज़िंदगी-भर, ताज़िंदगी। प्र० इस कृपा के लिए मैं आपका आजन्म आभारी रहूँगा।

आज़माना – क्रि० जाँच करना, परीक्षा के तौर पर प्रयोग करना। प्र० इस दवा से मुझे तो बहुत लाभ हुआ था, चाहें तो आप भी आज़मा लें।

आजीवन – अ० ज़िंदगी-भर, पूरे जीवन-भर। प्र० 1. तुम्हारा उपकार मैं भूल नहीं सकता, इसके लिए आजीवन ऋणी रहूँगा। 2. उस ख़ूनी को आजीवन क़ैद की सज़ा हुई है।

आजीविका – स्त्री० रोज़ी, काम-धंधा, रोज़ी-रोटी के साधन। प्र० भारत में अनेक शिक्षित युवक आजीविका की तलाश में हैं।

आज्ञाकारी – वि० आज्ञा का पालन करनेवाला, हुक्म माननेवाला, आज्ञापालक। प्र० तुम्हारे बेटे बहुत आज्ञाकारी हैं।

आज्ञापालक – पु० आज्ञा का पालन करनेवाला, आज्ञाकारी, हुक्म माननेवाला।

ऑटोमैटिक – वि० अपने आप चलनेवाला, स्वचालित। प्र० यह मशीन ऑटोमैटिक है।

ऑटोरिक्शा – पु० मोटर से चलनेवाली ऐसी सवारी जिसमें तीन पहिए होते हैं, तिपहिया स्कूटर, थ्रीह्वीलर। प्र० मुझे जल्दी पहुँचना है इसलिए ऑटोरिक्शा से जाऊँगा।

आडंबर – पु० दिखावा, बनावट, ऊपरी तड़क-भड़क, ढोंग। प्र० उसे आडंबर की आदत है जिससे लोग उसे पसंद नहीं करते।

आड़ा – वि० पड़ा, तिरछा। प्र० यह लाइन कुछ आड़ी है, इसे सीधी कर लो। (*विलोम* – सीधा)।

आतंक – पु० भय, डर, दहशत। प्र० उस जंगल में शेरों का बहुत आतंक है, लोग शाम होते ही वहाँ जाना बंद कर देते हैं।

आतंकवादी – पु० दहशत फैलानेवाला, भय फैलाकर अपना काम बनानेवाला, टेररिस्ट।

प्र॰ आजकल बहुत-से देशों में आतंकवादियों ने आतंक मचा रखा है।

आतंकित –*वि॰* भयभीत, डरा हुआ, सहमा हुआ। प्र॰ लोग सेना के शहर में घुस जाने से बहुत आतंकित हैं।

आतिशबाज़ी – *स्त्री॰* बारूद से बने पटाख़े, फुलझड़ी, हवाई, अनार आदि। प्र॰ 1. दीपावली पर लोग आतिशबाज़ी छोड़ते हैं। 2. कुछ स्थानों पर शादी-ब्याह में भी आतिशबाज़ी छोड़ते हैं।

आत्म – *वि॰* अपना; जैसे – आत्मकथा, आत्मपरिचय, आत्मप्रशंसा, आत्महत्या।

आत्मकथा – *स्त्री॰* किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं लिखी गई अपनी जीवनी, आत्मचरित।

आत्मनिर्भर – *वि॰* जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, जो किसी दूसरे के सहारे न हो, स्वावलंबी। प्र॰ गांधीजी का कहना था कि हमारे गाँवों को आत्मनिर्भर होना चाहिए।

आत्मबलिदान – पु॰ किसी अच्छे काम के लिए अपने आपको पूरी तरह लगा देना।

आत्मरक्षा – *स्त्री॰* अपनी रक्षा, अपना बचाव। प्र॰ महिलाओं में आत्मरक्षा की हिम्मत होनी चाहिए।

आत्मविश्वास – पु॰ अपने ऊपर विश्वास, अपनी शक्ति या बुद्धि पर विश्वास, अपने पर भरोसा। प्र॰ उसने आत्मविश्वास के साथ कहा कि परीक्षा में अवश्य प्रथम आएगा।

आत्मसमर्पण – पु॰ अपने आपको पुलिस को या किसी को सौंप देना, हथियार डाल देना। प्र॰ कल पाँच आतंकवादियों ने पुलिस के सामने आत्म-समर्पण किया।

आत्मसम्मान – पु॰ अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान, आत्मगौरव। प्र॰ प्रत्येक व्यक्ति में आत्मसम्मान होना चाहिए।

आत्महत्या – *स्त्री॰* अपने आपको मार डालना, अपने हाथों अपना वध, खुदकुशी।

आत्मा – *स्त्री॰* 1. जीव, जीवात्मा, प्राणियों के भीतर का चेतन तत्त्व। 2. जी, चित्त, मन। प्र॰ इस घटना से मेरी आत्मा को बड़ा दुख हुआ है।

आदरणीय – *वि॰* आदर योग्य, सम्मान के लायक़। प्र॰ 1. माता, पिता और गुरु आदरणीय होते हैं। 2. आदरणीय पिताजी! (पत्र के प्रारंभ में संबोधन)।

आदर-सत्कार – पु॰ आदर-सम्मान, आवभगत,

आतिशबाज़ी आत्मरक्षा आत्मसमर्पण

आदिवासी
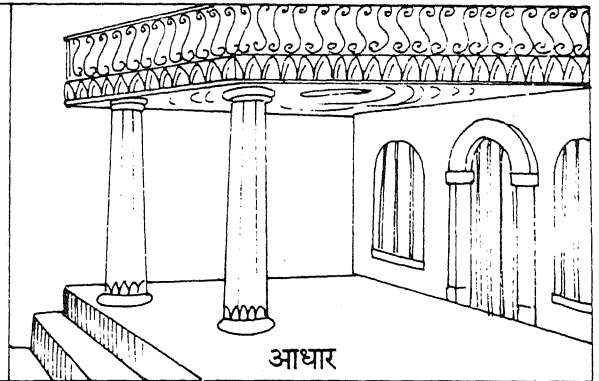
आधार

सेवा-सत्कार। *प्र०* अतिथि का आदर-सत्कार करना चाहिए।

आदर्श – *पु०* 1. अनुकरण करने योग्य, वह जिसके विचार, गुण, कार्य, विशेषताएँ आदि अपनाने लायक़ हों। *प्र०* 1. मेरे अध्यापक आदर्श व्यक्ति हैं। 2. यह इस ज़िले का आदर्श गाँव है। 2. सिद्धांत, विचार या व्यक्ति आदि। *प्र०* जीवन में तुम्हारा आदर्श क्या है?

आदान-प्रदान – *क्रि०* लेन-देन, अदला-बदली, किसी से कुछ लेना और उसे बदले में कुछ देना। *प्र०* भारत और सोवियत संघ के बीच अनेक चीज़ों का आदान-प्रदान हो रहा है।

आदि –1. *पु०* (क) शुरू, आरंभ, प्रारंभ। *प्र०* यह नाटक आदि से अंत तक रोचक है। (ख) *वि०* पहला, प्रारंभिक। *प्र०* आदिमानव जंगलों में रहता था। 2. *अ०* वग़ैरह, इत्यादि। *प्र०* सोवियत संघ, अमरीका, जापान, जर्मनी आदि देश भारत से अधिक विकसित हैं।

आदिमानव – *पु०* इस पृथ्वी पर पैदा होनेवाला पहला आदमी, प्रारंभिक मनुष्य।

आदिवासी – *पु०* किसी जगह के मूल निवासी। *प्र०* मध्य प्रदेश तथा बिहार में अब भी बहुत से आदिवासी रहते हैं।

आदेश – *पु०* हुक्म, आज्ञा। *प्र०* गुरुजनों का आदेश मानना चाहिए।

आधार – *पु०* सहारा, अवलंब, आश्रय, जिस पर कोई चीज़ टिकी हो। *प्र०* 1. बूढ़ी माँ के जीवन का आधार उसका इकलौता बेटा ही है। 2. छत का आधार दीवार या खंभे होते हैं।

आधुनिक – *वि०* आजकल का, वर्तमान समय का, नये ज़माने का, नया; जैसे – आधुनिक जीवन, आधुनिक साहित्य, आधुनिक कपड़े-लत्ते, आधुनिक विचार। (*विलोम* – प्राचीन)।

आनंद – *पु०* खुशी, प्रसन्नता, मज़ा, मनचाही चीज़ पाने या मनचाहा हो जाने पर मन में होनेवाला सुखद अनुभव। *प्र०* 1. उस दिन नाव की सैर में बड़ा आनंद आया। 2. आशा है तुम घर पर आनंद से होगे।

आनंदित (आनंद + इत) – *वि०* खुश। *प्र०* चिड़ियाघर में जाकर बच्चे बहुत आनंदित हुए।

आन – *स्त्री०* इज़्ज़त, सम्मान, मर्यादा। *प्र०* सच्चा बहादुर अपनी आन के लिए मर मिटता है पर पीछे

नहीं हटता।

आनाकानी – स्त्री॰ टाल-मटोल, हीला-हवाला। प्र॰ वह पढ़ने में आनाकानी नहीं करता।

आपत्ति – स्त्री॰ 1. मुसीबत, दुख, संकट। प्र॰ उन पर आजकल आपत्ति पड़ी है। 2. एतराज़। प्र॰ उनके ऐसा करने पर मुझे आपत्ति है।

आपदा – स्त्री॰ मुसीबत, दुख, संकट। प्र॰ आपदाओं से घबराना नहीं चाहिए।

आपबीती – स्त्री॰ अपने ऊपर बीती हुई बात, अपनी कहानी, अपना अनुभव। प्र॰ तुम अब आपबीती सुनाओ, तुम्हारे अनुभव तो तरह-तरह के हैं।

ऑपरेटर – पु॰ यंत्रचालक, मशीन चलानेवाला।

ऑपरेशन – पु॰ 1. चीरा, घाव आदि की चीर-फाड़, जर्राही, शल्यचिकित्सा। प्र॰ 1. दिल का ऑपरेशन मुश्किल काम है। 2. यंत्रचालन, मशीन चलाना, ऑपरेटर का काम।

आपा – पु॰ 1. होश-हवाश, सुध-बुध। प्र॰ वे इस समय आपे में नहीं हैं। 2. घमंड, अहंकार। प्र॰ मन का आपा खोकर सबका आदर करो।

आपातकाल – पु॰ मुसीबत की घड़ी, संकट का समय। प्र॰ जब भी कोई बड़ा संकट आता है, सरकार को आपातकाल की घोषणा करनी पड़ती है।

आपातकालीन – *वि॰* संकट के समय का, संकट की घड़ी का। प्र॰ आपातकालीन स्थिति आने पर सरकार को कभी-कभी नागरिकों के अधिकारों में कटौती करनी पड़ती है।

आफ़त – स्त्री॰ मुसीबत, विपत्ति। प्र॰ पूरे परिवार की बीमारी के कारण ऐसी आफ़त आई हुई है, कि कुछ कहे नहीं बनता।

आबहवा – स्त्री॰ जलवायु। प्र॰ 1. पहाड़ी जगहों की आबहवा अच्छी होती है। 2. डॉक्टर ने बीमार से कहा कि वह आबहवा बदलने के लिए नैनीताल या मसूरी चला जाए।

आबादी – स्त्री॰ 1. बसावट, बस्ती। प्र॰ पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में आबादी बहुत घनी है। 2. जनसंख्या, मर्दुमशुमारी। प्र॰ 1. एशिया के सभी देशों की आबादी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। 2. इस समय अपने देश की आबादी लगभग अस्सी करोड़ है।

आभा – स्त्री॰ चमक। प्र॰ टीम के जीतने पर खिलाड़ियों के चेहरे पर प्रसन्नता की आभा साफ़ दीख रही थी।

ऑपरेटर ऑपरेशन आभा

आभूषण आमाशय
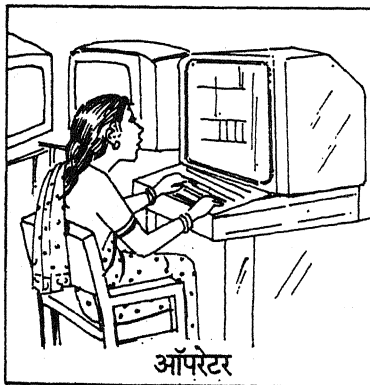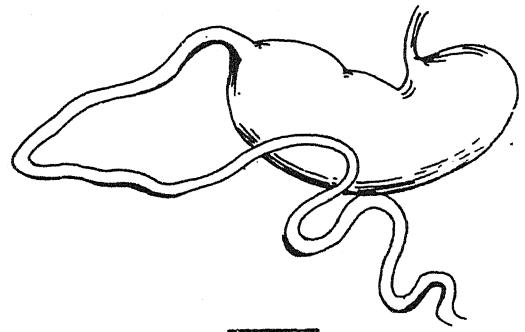
आभार –पु० एहसान, उपकार (मानना)। प्र० हम लोग इतने दिनों बाद भी तुम लोगों का उतना ही आभार मानते हैं।

आभारी – पु० आभार माननेवाला, एहसान माननेवाला, एहसानमंद, कृतज्ञ। प्र० हम लोग हमेशा आपके आभारी रहेंगे।

आभास –पु० 1. झूठा ज्ञान; जैसे – रस्सी में साँप का आभास होना। 2. इशारा, संकेत, छाप, झलक। प्र० मुझे दो दिन पहले ही इन घटनाओं का आभास हो गया था।

आभूषण –पु० ज़ेवर, गहना। प्र० शादी में आभूषणों पर लोग बहुत रुपए बर्बाद करते हैं।

आमरण – अ० मरते दम तक, मरने के समय तक; जैसे – आमरण भूख हड़ताल, आमरण अनशन।

आमाशय –पु० पेट के भीतर की थैली जिसमें खाना पचता है।

आय –स्त्री० आमदनी, कमाई। (*विलोम* – व्यय)।

आयकर –पु० आमदनी पर सरकार द्वारा लिया जानेवाला कर, इनकम टैक्स।

आयत –पु० (रेखागणित में) वह चतुर्भुज जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ बराबर होती हैं तथा कोण समकोण होते हैं।

आयतन –पु० कोई चीज़ जो जगह घेरती है उस जगह का नाप।

आयात –पु० दूसरे स्थानों या विदेशों से माल मँगाना। प्र० भारत पेट्रोलियम तथा कुछ अन्य तेल आयात करता है। (*विलोम* – निर्यात)।

आयाम –पु० 1. फैलाव, विस्तार। 2. नियमित करना, नियमन, नियंत्रण, रोक; जैसे – प्राणायाम (प्राण अर्थात् हवा रोकना तथा उसका नियमन करना)।

आयु –स्त्री० उम्र, अवस्था, वय, जीवन की अवधि। प्र० आयु बढ़ने के साथ अनुभव भी बढ़ता है।

आयोजन –पु० प्रबंध, व्यवस्था, तैयारी। प्र० इतने बड़े भोज के लिए बहुत बड़ा आयोजन करना पड़ेगा।

आयोजित –वि० जिसका आयोजन किया गया हो। प्र० वहाँ एक सभा आयोजित की जा रही है।

आयोडिन –पु० एक मूल तत्त्व जो द्रव रूप में होता है। प्र० शरीर में आयोडिन की कमी से कुछ बीमारियाँ हो जाती हैं।

आरंभिक –*वि॰* आरंभ का, शुरू का। *प्र॰* फ़िल्म का आरंभिक भाग अच्छा नहीं है पर बाद का हिस्सा ठीक है।

आरक्षण –*पु॰* किसी के लिए सुरक्षित होना या करना, रिज़र्वेशन। *प्र॰* 1. पुस्तकालय में वह पुस्तक नहीं मिली, कोई ले गया है, पर आरक्षण करा दिया है, कुछ दिनों में मिल जाएगी। 2. कल शाम को बनारस जाना है, बर्थ का तो नहीं पर सीट का आरक्षण हो गया है।

आरक्षित –*वि॰* सुरक्षित किया हुआ, रिज़र्व्ड। *प्र॰* यह सीट तो आरक्षित है, चलो दूसरी पर चलते हैं।

आर-पार –*अ॰* एक ओर से दूसरी ओर तक, एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक। *प्र॰* इतने ज़ोर का धक्का लगा कि एक कील हथेली के आर-पार चली गई।

आरा –*पु॰* लकड़ी चीरने के लिए लोहे का बना दाँतेदार औज़ार। *प्र॰* 1. आरे से लकड़ी चीरते हैं। 2. आरा मशीन पर लकड़ी चिरवानी है।

आरामतलब –*वि॰* आराम चाहनेवाला, मेहनत से जी चुरानेवाला। *प्र॰* बहुत आरामतलब होना अच्छा नहीं होता, आदमी को कुछ काम-धाम करते रहना चाहिए।

आरामदेह –*वि॰* आराम देनेवाला, जो आराम दे। *प्र॰* यह कुर्सी बड़ी आरामदेह है।

आरोही –*वि॰* ऊपर जानेवाला या चढ़नेवाला, (गणित) कई संख्याओं में सबसे छोटी, फिर उससे बड़ी – इस तरह अंत में सबसे बड़ी संख्या लिखना; जैसे – 1, 4, 6, 7, 8, 11, 15 आदि आरोही संख्याएँ हैं। (*विलोम* – अवरोही)।

ऑर्डर –*पु॰* 1. हुक्म, आज्ञा, आदेश। 2. माल बनाने का आदेश, फ़रमाइश। 3. माल खरीदने का आदेश।

आर्थिक – *वि॰* रुपए-पैसे से संबंधित। *प्र॰* अब उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है।

आर्द्र – *वि॰* भीगा हुआ, नम, गीला, तर।

आर्द्रता – *वि॰* जिसमें नमी हो, गीलापन। *प्र॰* इस लकड़ी में अभी आर्द्रता है। इसे पूरी तरह सूख जाने दो तब इससे सामान बनवाएँगे।

आर्य – पु॰ 1. भारत की एक प्राचीन जाति। *प्र॰* आर्य मूलतः भारत के ही हैं या बाहर से आए हैं, इसे लेकर मतभेद है। 2. श्रेष्ठ पुरुष। (*विलोम* – अनार्य)।

आर्यपुत्र – पु॰ पुराने ज़माने में पति के लिए प्रयुक्त

आला आलूचा आवरण आवर्धक लेंस
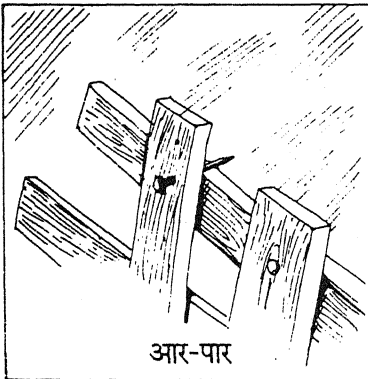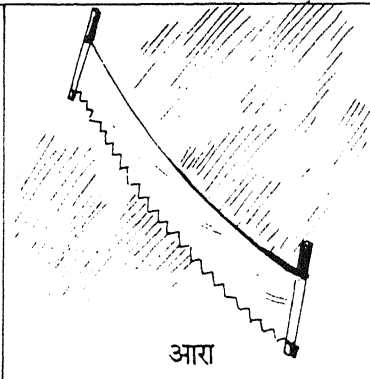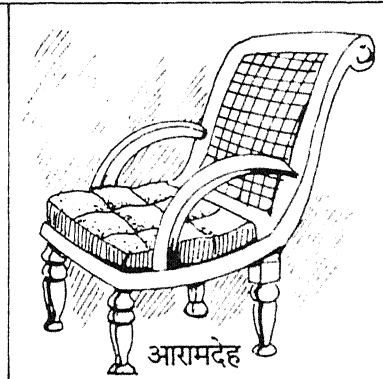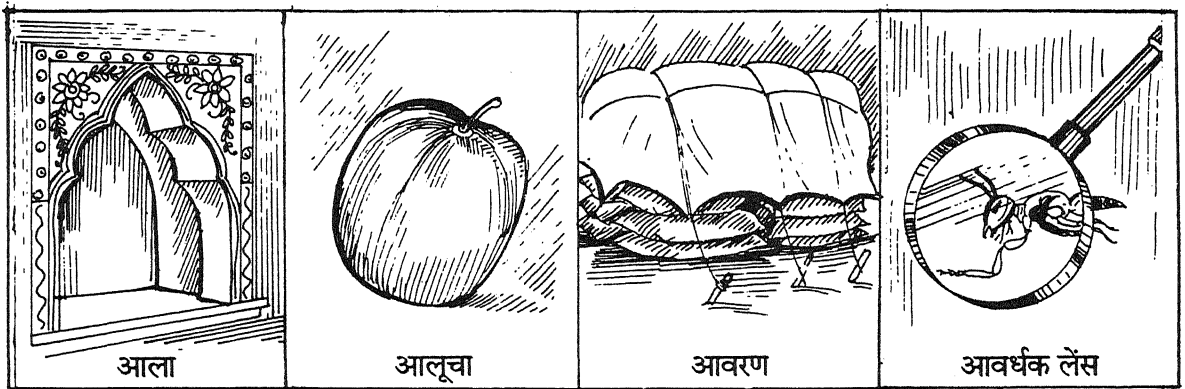
शब्द। प्र० 1. आर्यपुत्र आ रहे हैं। 2. (यह संबोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता था) आर्यपुत्र! आपसे मुझे एक बात कहनी है।

आर्यसमाज – पु० स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रवर्तित एक धार्मिक संस्था, जो वेदों और वैदिक धर्म के प्रचार और उसी के अनुसार जीवन बिताने पर बल देती है।

आलंब – पु० सहारा, भरोसा। प्र० मुझे आपका बड़ा आलंब है।

आला – 1. पु० दीवाल में चीज़ें रखने के लिए बनाया जानेवाला गड्ढानुमा स्थान, ताक, तारवा। 2. *वि०* उमदा, बढ़िया, अच्छा। प्र० 1. यह आपने बड़ी आला दर्जे की चीज़ ख़रीदी है। 2. मेरा चना बना है आला, इसको खाए मोटा लाला, चना ज़ोर गरम। 3. बड़े (लोग)। प्र० यह चीज़ इतनी अच्छी और सस्ती है कि आला और अदना सभी इसे ख़रीदना चाहेंगे।

आलीशान – *वि०* शानवाला, शानदार, भव्य। प्र० क्या आलीशान इमारत ख़रीदी है!

आलूचा – पु० लाल रंग का एक खट-मिट्ठा फल और उसका पेड़।

आलूबुख़ारा – पु० आलूचे का सुखाया हुआ फल।

आल्हा – पु० एक वीरगाथा जिसमें आल्हा और उसके भाई ऊदल की वीरता का वर्णन है। प्र० भारत के बहुत से गाँवों में आज भी आल्हा गाया जाता है।

आवभगत – *स्त्री०* स्वागत-सत्कार, ख़ातिरदारी। प्र० 1. कोई भी उनके घर चला जाए वे पूरे मन से उसकी आवभगत करते हैं। 2. ससुराल में दामाद की बड़ी आवभगत होती है।

आवरण – पु० पर्दा।

आवर्धक – *वि०* बढ़ानेवाला, बड़ा करनेवाला; जैसे– आवर्धक लेंस।

आवर्धक लेंस – पु० मैग्निफ़ाइंग ग्लास, किसी चीज़ को बड़ा करके दिखानेवाला शीशा।

आवर्धित – *वि०* किसी वस्तु का बड़ा किया हुआ रूप। प्र० आवर्धक लेंस द्वारा किसी भी वस्तु को आवर्धित रूप में देखा जा सकता है।

आवश्यक – *वि०* जिसके बिना काम न चल सके, ज़रूरी। प्र० जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन बहुत आवश्यक है।

आवश्यकता – *स्त्री०* ज़रूरत। *प्र०* मुझे एक क़लम की आवश्यकता है।

आवास – *पु०* रहने की जगह, रहने का स्थान, मकान। *प्र०* बड़े नगरों में आवास की समस्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

आवासीय – *पु०* ऐसे स्कूल, संस्था आदि स्थान जहाँ पढ़ने या कार्य करने के साथ-साथ रहने की भी व्यवस्था हो।

आविष्कार – *पु०* ऐसी चीज़ बनाना या ऐसी विधि की खोज करना जिसकी जानकारी पहले न रही हो, ईजाद। *प्र०* फ़ाउंटेनपेन का आविष्कार वाटरमैन ने किया था तथा टेलिफ़ोन का ग्राहम बेल ने।

आविष्कारक – *पु०* आविष्कार करनेवाला, पहले-पहले बनानेवाला। *प्र०* थर्मामीटर के आविष्कारक फ़ारेनहाइट थे।

आशय – *पु०* अर्थ, मतलब, तात्पर्य, अभिप्राय। *प्र०* 1. ऐसा कहने से तुम्हारा क्या आशय है, मैं नहीं समझ पाया। 2. बिना आशय समझे किसी शब्द का प्रयोग मत करो।

आशीर्वाद, आशीष – *स्त्री०* अपने से छोटे के प्रति कल्याण की कामना, माँग, कामना, आशीष। *प्र०* पिता ने पुत्र को आशीर्वाद दिया कि तुम प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास करो।

आश्चर्यचकित – *वि०* आश्चर्य से चकित, हैरान, दंग। *प्र०* अच्छे जादूगर के खेल देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

आश्चर्यजनक – *वि०* आश्चर्य का जनक, आश्चर्य पैदा करनेवाला, अचरज में डालनेवाला। *प्र०* यह घटना बड़ी आश्चर्यजनक है।

आश्रम – *पु०* ऋषि-मुनियों या साधु-संतों के रहने का स्थान। *प्र०* सीता वाल्मीकि के आश्रम में भी रहीं।

आश्रय – *पु०* शरण, पनाह। *प्र०* आपके अलावा उस बेचारे को कोई भी आश्रय नहीं दे सकता।

आश्रित – *वि०* 1. अधीन। *प्र०* मैं किसी का आश्रित नहीं रह सकता। 2. किसी अन्य के सहारे जीनेवाला, परावलंबी। *प्र०* चारपाई पर पड़ा बूढ़ा अपने परिवार पर ही आश्रित होता है।

आश्विन – *पु०* हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष का सातवाँ महीना जो भादों और कार्तिक के बीच में पड़ता है, क्वार।

आषाढ़ – *पु०* भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष का

आवास आविष्कार आश्रम
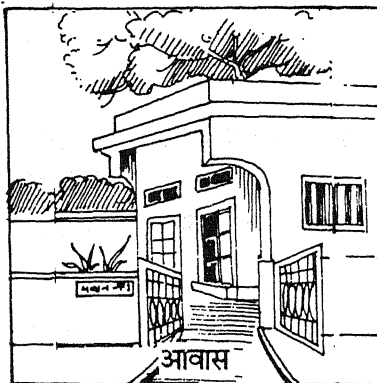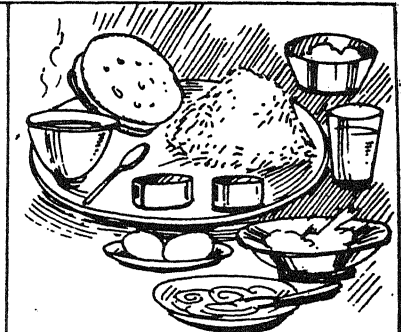
आसन | आस्तीन | आहार

चौथा महीना जो जेठ और सावन के बीच में आता है।

आसन –*पु॰* 1. वह वस्तु जिस पर या जिसे बिछाकर बैठते हैं, आसनी। *प्र॰* संध्या-गायत्री या पूजा-पाठ आसन पर बैठकर करते हैं। 2. बैठने का स्थान, सीट। *प्र॰* अध्यक्षजी से प्रार्थना है कि अब वे अपना आसन ग्रहण करें। 3. बैठने का विशेष ढंग, बैठने की विशेष मुद्रा। *प्र॰* योगासन करनेवाले इन आसनों में बैठते हैं: मयूर आसन, सर्प आसन, सिद्धासन आदि।

आसमान – *पु॰* 1. आकाश, गगन। *लो॰ आसमान का थूका मुँह पर पड़ता है* – बड़ों पर दोष लगानेवाला स्वयं दोषी बन जाता है। बिना सोचे-समझे बड़ों पर आरोप नहीं लगाना चाहिए। *मु॰ आसमान पर चढ़ाना* – बहुत तारीफ़ करके किसी को घमंड से भर देना या बर्बाद कर देना। *प्र॰* खुशामदी लोगों ने उस नेता को ऐसा आसमान पर चढ़ा दिया है कि वह अब किसी की बात ही नहीं सुनता। *आसमान पर दिमाग़ होना* – बहुत घमंड करना। *प्र॰* नए धनी का दिमाग़ आसमांन पर होता है। *आसमान सिर पर उठा लेना* – बहुत चीखना-चिल्लाना। *प्र॰* कोई खास बात भी नहीं हुई और तुम हो कि आसमान सिर पर उठा लिया।

आसरा –*पु॰* 1. भरोसा, सहारा, अवलंबन। *प्र॰* 1. उस बुढ़िया के परिवार के सभी लोग मर गए, अब तो उसे पास-पड़ोस का ही आसरा है। 2. भगवान् न करे, बुढ़ापे में किसी का आसरा लेना पड़े।

आसवन –*पु॰* भाप बनाकर उसे एकत्र और ठंडा करके पानी में बदलना। *प्र॰* आसवन पानी को स्वच्छ करने की अच्छी विधि है।

आस्तीन –*स्त्री॰* सिले कपड़ों की बाँह, सिले कपड़े का वह भाग जो बाँहों को ढकता है। *मु॰ आस्तीन का साँप* – छिपा दुश्मन, ऊपर से बहुत नज़दीकी दिखनेवाला जो भीतर से दुश्मन हो। *प्र॰* उस आदमी से होशियार रहो, वह आगे चलकर आस्तीन का साँप साबित होगा।

आहत –*वि॰* घायल, चोट खाया हुआ, ज़ख्मी। *प्र॰* दुर्घटना होने पर आहत व्यक्ति को तुरंत अस्पताल पहुँचाना चाहिए।

आहार –*पु॰* खाने की चीज़ें, खाना, भोजन। *प्र॰* आदमी की तंदुरुस्ती उसके आहार पर भी निर्भर करती है।

आहिस्ता – *अ॰* धीरे-से, धीमे। *प्र॰* आहिस्ता बोलो, माताजी थकी-माँदी सोई हैं, जग जाएँगी।

आह्वान – पु॰ पुकार, बुलावा। प्र॰ गांधीजी के आह्वान पर सैकड़ों लोग आंदोलन में शामिल हो गए।

★

इ – देवनागरी वर्णमाला का तीसरा अक्षर और स्वरों में तीसरा स्वर।

इंज़ाइम – पु॰ वह पदार्थ जो खाना पचाने में मदद करता है।

इंतज़ार – पु॰ राह देखना, प्रतीक्षा। प्र॰ कल मैं आपके आने का इंतज़ार करता रहा, आप आए ही नहीं।

इंद्रजाल – पु॰ जादू, जादूगरी, बाज़ीगरी, तिलस्म। प्र॰ वह इंद्रजाल जानता है इसीलिए तरह-तरह के अचरज भरे खेल दिखाता है।

इंद्रधनुष – पु॰ वर्षा के बाद कभी-कभी आसमान में दिखाई देनेवाला सतरंगा अर्धवृत्त।

इंद्रिय – स्त्री॰ शरीर के वे अंग जिनके द्वारा बाहरी दुनिया की चीज़ों का ज्ञान होता है तथा तरह-तरह के कर्म किए जाते हैं [ज्ञान करानेवाली इंद्रियों को **ज्ञानेंद्रिय** (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) और कर्म करनेवाली इंद्रियों को **कर्मेंद्रिय** (हाथ, पैर, वाणी, लिंग, गुदा) कहते हैं]।

इंद्री – स्त्री॰ दे॰ इंद्रिय।

इंफ़्लूएंज़ा – पु॰ एक प्रकार की बीमारी, नज़ला, ज़ुकाम, फ़्लू।

इंसान – पु॰ मनुष्य, आदमी।

इंसानियत – स्त्री॰ आदमियत, मनुष्यता, मानवता। प्र॰ वह इतना निर्दय है कि उसमें इंसानियत है ही नहीं।

इंसाफ़ – पु॰ न्याय, फ़ैसला, निर्णय।

इकतल्ला – दे॰ एकतल्ला।

इकलौता – वि॰ अकेला, एकमात्र। प्र॰ यह मेरा इकलौता बेटा है।

इकहरा – वि॰ 1. छरहरा, पतला-दुबला; जैसे – इकहरा बदन। 2. एक परत का, जो दुहरा न हो। प्र॰ इकहरे कपड़े से दूध छानते हैं। 3. एक लड़ी का; जैसे – इकहरा हार।

इकाई – स्त्री॰ 1. अपने आपमें एक पूर्ण सत्ता, एकांश, यूनिट। प्र॰ 1. इस दफ़्तर में कई इकाइयाँ हैं। 2. समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति है। 2. (गणित) किसी संख्या का अंतिम अंक; जैसे – 12 में 2, 524 में 4, 9607 में 7।
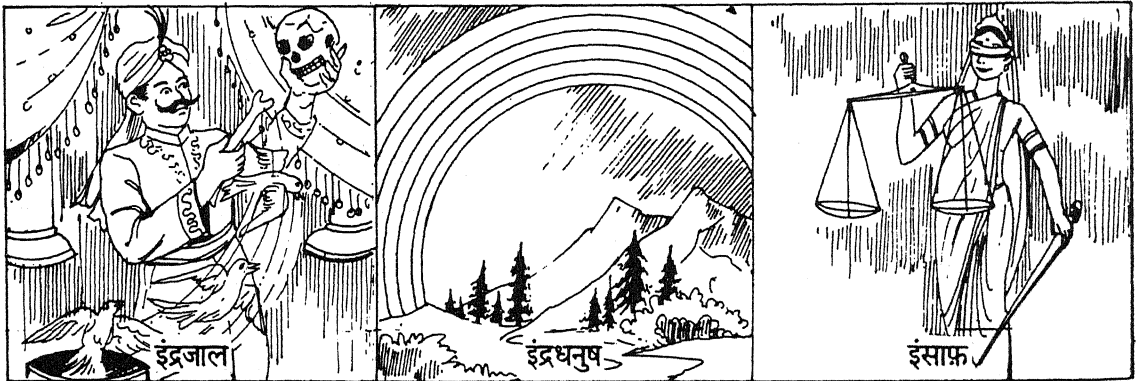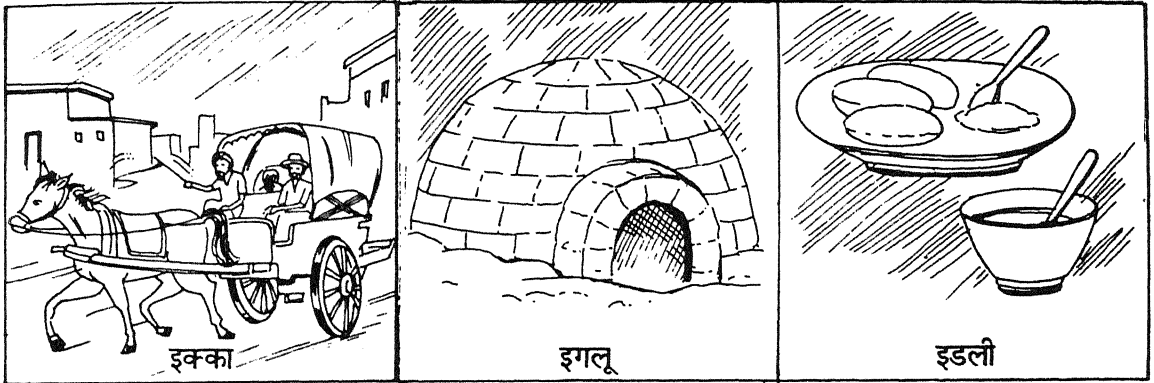
इकारांत – *वि०* जिसके अंत में 'इ' स्वर हो। *प्र०* कवि, यदि, शक्ति आदि शब्द इकारांत हैं।

इक्का – *पु०* 1. ताश का पत्ता जिसपर एक ईंट या एक पान या एक चिड़ी या एक हुक्म बना होता है। 2. दो पहियोंवाली घोड़ागाड़ी।

इक्का-दुक्का – *वि०* शायद ही कोई, कोई-कोई ही। *प्र०* गाँवों में पहले इक्की-दुक्की बसें ही चलती थीं।

इगलू, इग्लू – *पु०* बहुत ठंडे प्रदेशों में बर्फ़ से बने मकान। *प्र०* बहुत ठंडे प्रदेशों में लोग इगलू में रहते हैं।

इच्छानुसार (इच्छा + अनुसार) – *क्रि० वि०* इच्छा के अनुसार, जितनी इच्छा हो उतना ही, जैसी इच्छा हो वैसा ही। *प्र०* आप अपनी इच्छानुसार थोड़ा-बहुत खा लीजिए।

इच्छुक – *वि०* इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला, ख़्वाहिशमंद। *प्र०* वे तुमसे मिलने के लिए बहुत इच्छुक हैं।

इजाज़त – *स्त्री०* अनुमति, मंजूरी, आज्ञा। *प्र०* बिना इजाज़त वहाँ जाना मना है।

इज़्ज़त – *स्त्री०* आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा। *प्र०* पूरे भारत में गांधीजी की बहुत इज़्ज़त होती थी।

इठलाना – *क्रि०* गर्व करना, इतराना, नख़रे करना। *प्र०* वह पैसेवाला हो गया तो इठलाने लगा।

इडली – *स्त्री०* दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध खाना जो चावल तथा उड़द से बनता है।

इतना – *वि०* इस संख्या मात्रा का, इस विस्तार का, इस नाप का, इस तौल का। *प्र०* 1. इतनी रोटियाँ मुझसे नहीं खाई जाएँगी। 2. वह इतना शरारती है कि कुछ पूछो नहीं।

इतराना – *क्रि०* घमंड करना, इठलाना, नख़रे करना। *प्र०* वह थोड़ा पढ़-लिख क्या लिया, इतराने लगा है।

इतिहास – *पु०* बीती हुई घटनाओं तथा उनसे संबंधित व्यक्तियों और उनके कार्यों का क्रम से वर्णन या विवरण।

इत्यादि – *अ०* आदि, वग़ैरह, इसी तरह के और भी। *प्र०* 1. गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस इत्यादि ने देश के लिए बड़ा संघर्ष किया। 2. मैंने कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास इत्यादि अनेक कवियों की रचनाएँ पढ़ी हैं।

इत्र – *पु०* सुगंधित फूल आदि से निकाला हुआ रस, अतर, सेंट। *प्र०* कुछ लोग इत्र के शौकीन होते हैं।

इत्रदान – पु॰ इत्र रखने का डिब्बा।

इत्रफ़रोश – पु॰ इत्र बेचनेवाला, गंधी।

इधर – अ॰ 1. इस तरफ़, इस ओर। प्र॰ इधर मत देखो। 2. यहाँ, इस जगह। प्र॰ इधर बैठो। 3. पिछले कुछ दिनों में, पिछले दिनों। प्र॰ दो महीने पहले तो दिखे थे, पर इधर नहीं मिले।

इधर-उधर – अ॰ 1. यहाँ-वहाँ। प्र॰ इधर-उधर मत बैठो, अपनी जगह पर बैठो। 2. जहाँ-तहाँ। प्र॰ इधर-उधर कूड़ा मत बिखेरो। 3. आस-पास, अगल-बगल, सब ओर। प्र॰ तुम्हारे मकान के इधर-उधर झाड़-झंखाड़ बहुत हैं।

इन – सर्व॰ 'इस' सर्वनाम का बहुवचन का रूप। प्र॰ 1. इन पुस्तकों की क़ीमत बताओ। 2. इन लोगों से मिल लो, तुम्हारा काम बन जाएगा।

इनफ़्लुएंज़ा – दे॰ इंफ़्लुएंज़ा।

इनसान – दे॰ इंसान।

इनसेट – अंतरिक्ष में छोड़ा गया उपग्रह। प्र॰ दूरदर्शन अपने कार्यक्रम इनसेट से दिखाता है।

इने-गिने – वि॰ कुछ, थोड़े, बहुत कम। प्र॰ इने-गिने लोग ही इस बात के बारे में जानते हैं।

इन्हीं (इन+ही) – 'इन' का बलसूचक रूप। प्र॰ इन्हीं चीज़ों से काम चला लो, अब और कुछ मिलने की आशा नहीं।

इबादत – स्त्री॰ पूजा, उपासना।

इमरती – स्त्री॰ एक प्रसिद्ध मिठाई।

इमली – स्त्री॰ एक खट्टी फली जो पकने पर खट-मिट्ठी हो जाती है और चटनी, चाट आदि में पड़ती है, इसका पेड़।

इमामबाड़ा – पु॰ वह अहाता जिसमें ताज़िए दफ़नाए जाते हैं।

इमारत – स्त्री॰ बड़ा मकान।

इमारती – वि॰ इमारत बनाने के काम आनेवाला; जैसे – इमारती लकड़ी, इमारती सामान।

इम्तहान, इम्तिहान – पु॰ परीक्षा।

इरादा – पु॰ 1. विचार, संकल्प, इच्छा। प्र॰ मेरा इरादा है कि यह मकान तोड़कर दूसरा बनवा लूँ। 2. नीयत। प्र॰ उसका इरादा अच्छा नहीं लगता, ज़रा उससे होशियार रहना।

इर्द-गिर्द – अ॰ आस-पास, इधर-उधर, अगल-बगल, चारों ओर। प्र॰ उनके बंगले के

इत्रदान | इनसेट | इबादत | इमली

इलायची इश्तहार इष्ट इस्तरी
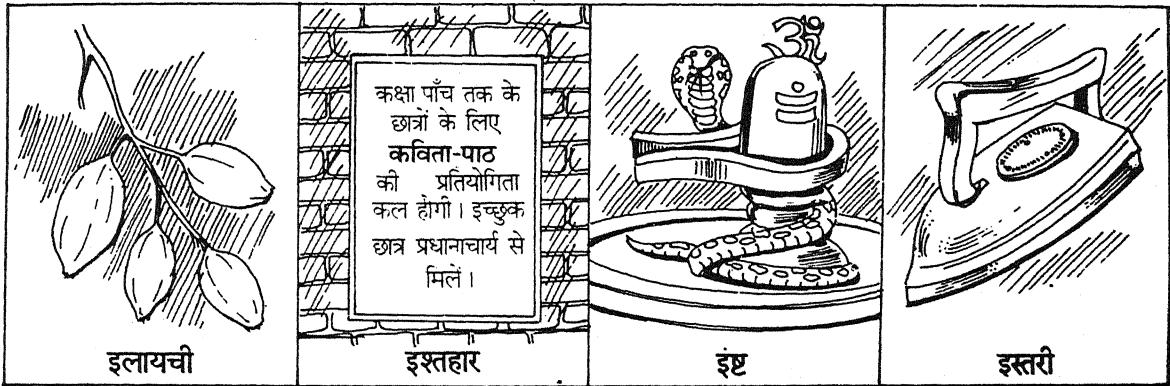
ईर्द-गिर्द बहुत से पेड़-पौधे लगे हैं।

इलाक़ा – *पु०* क्षेत्र। *प्र०* 1. उस इलाक़े में ईख खूब होती है। 2. वह सारा इलाक़ा उजड़ गया है।

इलाज – *पु०* 1. चिकित्सा। *प्र०* रोग इलाज से ही ठीक होगा। 2. दवा, ओषधि। *प्र०* इस रोग का इलाज क्या है? 3. तरकीब, उपाय। *प्र०* तुम्हें ठीक रास्ते पर लाने का इलाज मैं जानता हूँ।

इलायची – *स्त्री०* एक सुगंधित फल, जिसके सूखे बीज मसाले, दवा तथा खाने में काम आते हैं।

इल्ली – *स्त्री०* उड़नेवाले कीड़ों के बच्चों का अंडे से निकलने के बाद का रूप।

इश्तहार – *पु०* दीवारों आदि पर चिपकाए जानेवाले विज्ञापन। *प्र०* इस दीवार पर इश्तहार लगाना सख़्त मना है।

इष्ट – *वि०* 1. पूजित, जो पूजे जाते हों। *प्र०* उसके इष्टदेव हनुमानजी हैं। 2. चाहा हुआ, जिसे पाने की इच्छा हो। *प्र०* समाज-सेवा ही मेरा इष्ट है। 3. प्रिय, चहेता। *प्र०* कृपया हमारे यहाँ इष्ट-मित्रों के साथ किसी दिन पधारें।

इस – *सर्व०* 'यह' का एक रूप जो ने (इसने), को (इसको), से (इससे), का (इसका), में (इसमें), पर (इस पर) के साथ तथा विशेषण रूप में संज्ञा के पहले (जैसे – इस लड़के ने मेरी बड़ी सहायता की) आता है।

इसलिए – *अ०* इस वास्ते। *प्र०* वह बीमार है, इसलिए स्कूल नहीं जा सकेगा।

इसे – *सर्व०* इसको। *प्र०* कृपया इसे पानी पिला दें।

इस्तरी – *स्त्री०* पीतल या लोहे का वह उपकरण जिसमें जलते कोयले रखकर या बिजली से, धुले या सिले कपड़े की सिलवटें दूर की जाती हैं और तह बैठाई जाती है, लोहा। *प्र०* इस्तरी गर्म हो गई है, कपड़ों पर प्रेस कर लो।

इस्तीफ़ा – *पु०* अपने काम या पद से अलग होने की सूचना का पत्र, त्यागपत्र। *प्र०* नेताजी ने संस्था के अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।

इस्तेमाल – *पु०* प्रयोग, काम में लाना, व्यवहार। *प्र०* इस दवा के इस्तेमाल से तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।

इस्त्री – *दे०* इस्तरी।

इस्पात – *पु०* लोहे को साफ़ करके और उसमें कुछ और धातुएँ मिलाकर बनाया गया बढ़िया प्रकार का लोहा, स्टील। *प्र०* अपने देश में इस्पात के कई कारख़ाने हैं।

ई – देवनागरी वर्णमाला का चौथा अक्षर तथा चौथा स्वर।

ईकारांत – *वि०* जिसके अंत में 'ई' स्वर हो। *प्र०* हाथी, गाड़ी, मिट्टी आदि शब्दों के अंत में 'ई' स्वर है, इन्हें ईकारांत शब्द कहते हैं।

ईद – *स्त्री०* मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार। ईद दो तरह की होती है: ईदुलफ़ित्र (जिसे प्रायः मीठी ईद कहते हैं) तथा ईदुज़्ज़ुहा (जिसे प्रायः बक़रीद कहते हैं)।

ईदगाह – *स्त्री०* ईद के दिन एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने की जगह।

ईदुज़्ज़ुहा – *पु०* मुसलमानों का एक त्योहार, बक़रीद (दे० ईद)।

ईदुलफ़ित्र – *पु०* मुसलमानों का एक त्योहार जो रोज़ा समाप्त होने पर मनाया जाता है, ईद, मीठी ईद।

ईमान – *पु०* सचाई, सच्चरित्रता, खरापन। *प्र०* अभी मुझमें ईमान है, मैं ग़लत काम नहीं कर सकता। 2. नीयत। *प्र०* इतने थोड़े से रुपयों के लिए अपना ईमान मत ख़राब करो। 3. ईश्वर पर विश्वास। *प्र०* मैं धर्म-ईमान की क़सम खाकर कहता हूँ, मैंने तुम्हारा पेड़ नहीं काटा। *मु० ईमान ठिकाने न रहना, ईमान डिगना, ईमान बिगड़ना* – बेईमानी करना, धर्म-ईमान से हट जाना।

ईमानदार – *वि०* लेन-देन में खरा, सचाई बरतनेवाला, जो किसीको धोखा न दे या किसीसे बेईमानी न करे, नेकनीयत। (*विलोम* – बेईमान)।

ईमानदारी – *स्त्री०* सचाई, किसी को धोखा न देना, खरापन, लेन-देन में बेईमानी न करना।

★

उ – देवनागरी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर तथा स्वरों में पाँचवाँ स्वर।

उऋण – *वि०* ऋण से मुक्त। *प्र०* भाई साहब ने मेरा इतना बड़ा काम किया है कि मैं कभी उनसे उऋण नहीं हो सकता।

उकडूँ – *पु०* घुटने मोड़कर बैठने का एक ढंग, जिसमें दोनों तलवे ज़मीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एड़ियों से लगे रहते हैं। *प्र०* उकडूँ बैठकर इसे काटो, उसमें सुविधा रहेगी।

उकताना – *क्रि०* 1. ऊबना। *प्र०* तुम तो बड़ी जल्दी उकता जाते हो, ऐसे कहीं काम होता है? 2. जल्दी मचाना। *प्र०* उकताओ नहीं, नहीं तो जल्दी में हाथ कट जाएगा।

ईद ईदगाह उकडूँ

उकाब उगालदान उघड़ना
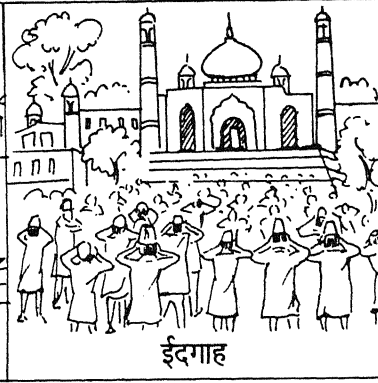
उकसाना – *क्रि०* 1. (दीपक की बत्ती) आगे सरकाना, आगे करना। 2. किसी काम को करने के लिए भड़काना, सिखाना या प्रेरित करना। *प्र०* उस बदमाश को उकसाओ नहीं, नहीं तो वह बहुत बुरा कर बैठेगा।

उकाब – *पु०* गरुड़, बड़ी जाति का एक गिद्ध।

उखाड़-पछाड़ – *स्त्री०* दूसरों को गिराकर खुद ऊपर उठने (उन्नति करने) की कोशिश। *प्र०* नए सदस्य से सावधान रहना, वह उखाड़-पछाड़ में बड़ा माहिर है, पता नहीं कब वह पार्टी में किसी अच्छे पद पर पहुँच जाए।

उगलदान – *पु०* दे० उगालदान।

उगलना – *क्रि०* 1. उलटी करना। *प्र०* डॉक्टर साहब, पता नहीं इसको क्या हो गया है, जो कुछ भी खाता है, दो-चार मिनट बाद उगल देता है। 2. मुँह में लेकर बाहर निकालना। *प्र०* दवा का अजीब स्वाद था, मैंने मुँह में लेते ही उगल दी। 3. मन की बात कह देना, सब कुछ बता देना। *प्र०* पहले तो चोर ना-ना कहता रहा किंतु जब पुलिस ने उसकी पिटाई शुरू की तो उसने सब कुछ उगल दिया।

उगाना – *क्रि०* जमाना, उपजाना। *प्र०* मैंने अपने बगीचे में कई तरह के पौधे उगाए हैं।

उगालदान – *पु०* वह बरतन जिसमें थूक, खँखार, पान आदि थूकते हैं, पीकदान, उगलदान।

उगाहना – *क्रि०* वसूल करना, इकट्ठा करना, कई लोगों से या सभी से थोड़ा-थोड़ा करके इकट्ठा करना; जैसे – लगान उगाहना, कर उगाहना, चंदा उगाहना।

उग्र – *वि०* तेज़, क्रोधी। *प्र०* नए अध्यापक का स्वभाव कुछ उग्र है।

उघड़ना – *क्रि०* परदा हटना, खुलना। *प्र०* तेज़ हवा के कारण दूल्हन का घूँघट सबके सामने उघड़ गया। 2. भेद खुलना, भंडा फूटना। *प्र०* सोचो ज़रा, एक-न-एक दिन सब कुछ उघड़ेगा और तब तुम्हारी कितनी बेइज़्ज़ती होगी।

उचकना – *क्रि०* 1. किसी चीज़ को देखने या पाने के लिए पंजों के बल ऊपर को उठना, कूदना, उछलना। *प्र०* चहारदीवारी के पीछे से लड़कियाँ उचक-उचककर बारात देख रही हैं।

उचक्का – *पु०* दूसरे की चीज़ छीनकर या उठाकर भाग जानेवाला, उठाईगीर। *प्र०* वह कोई चोर-उचक्का नहीं है जो चीज़ें लेकर भाग जाएगा,

वह एक शरीफ़ आदमी है।

उचित – *वि०* जैसा होना चाहिए वैसा, नीति या आदर्शों के अनुकूल, जैसा शोभा दे वैसा, ठीक, मुनासिब, वाजिब। *प्र०* 1. उचित काम करो, अनुचित नहीं। 2. उचित बात कहो, अनुचित नहीं। 3. उचित समय देखकर मैं बात करूँगा, अभी नहीं। (*विलोम* – अनुचित)।

उच्च – *वि०* 1. ऊँचा। *प्र०* पर्वत के उच्च शिखर पर जमी हुई बर्फ़ सुंदर लगती है। 2. बड़ा। *प्र०* इतने उच्च पद पर पहुँचकर भी तुम चोरी कर रहे हो।

उच्चतम – *वि०* 1. सबसे ऊँचा। *प्र०* पर्वत की यह उच्चतम चोटी है। 2. सबसे बड़ा, सर्वोच्च। *प्र०* देश का सबसे बड़ा न्यायालय दिल्ली में है जिसे 'उच्चतम न्यायालय' या 'सर्वोच्च न्यायालय' (सुप्रीम कोर्ट) कहते हैं।

उच्चारण – *पु०* ध्वनियों या शब्दों को बोलना। *प्र०* तुम्हारा उच्चारण ठीक नहीं है, तुम श को स, फ़ को फ और ज़ को ज कहते हो।

उछालना – *क्रि०* ऊपर की ओर फेंकना। *प्र०* 1. बच्चे को ऐसे मत उछालो, गिर जाएगा। 2. हम गेंद उछालें, देखें कौन ज़्यादा ऊँचा उछालता है।

उजड़ना – *क्रि.* नष्ट या बर्बाद होना; जैसे – घोंसला उजड़ना, घर उजड़ना, गाँव उजड़ना, शहर उजड़ना। (*विलोम* – बसना)। *प्र०* बाढ़ में गाँव के गाँव उजड़ गए।

उजड्ड – *वि०* असभ्य, गँवार, अशिष्ट, उद्‌दंड, ढीठ।

उज़बक – *वि०* मूर्ख, बेवकूफ़।

उजाड़ना – *क्रि०* तोड़-फोड़ देना, बर्बाद करना, नष्ट-भ्रष्ट करना। *प्र०* 1. बाहर से हमला करनेवालों ने भारत के कई शहरों को बुरी तरह उजाड़ दिया था। 2. नील गायों ने रात को मेरा नया बग़ीचा उजाड़ दिया।

उज्ज्वल – *वि०* 1. चमकदार, चमकीला; जैसे – उज्ज्वल ललाट। 2. साफ़, स्वच्छ, निर्मल। 3. सफ़ेद; जैसे – उज्ज्वल वस्त्र।

उठना – *क्रि०* 1. जागना। *प्र०* बेटे, दिन निकल आया, अब उठ जाओ। 2. ऊपर को निकलना या जाना। *प्र०* जंगल में धुआँ उठ रहा है, लगता है कहीं आग लगी है।

उठाना – *क्रि०* 1. नीचे से ऊपर करना, पड़ी हुई चीज़ को खड़ी करना। *प्र०* बच्चा दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ा

उच्च | उछालना | उजड़ना | उठना
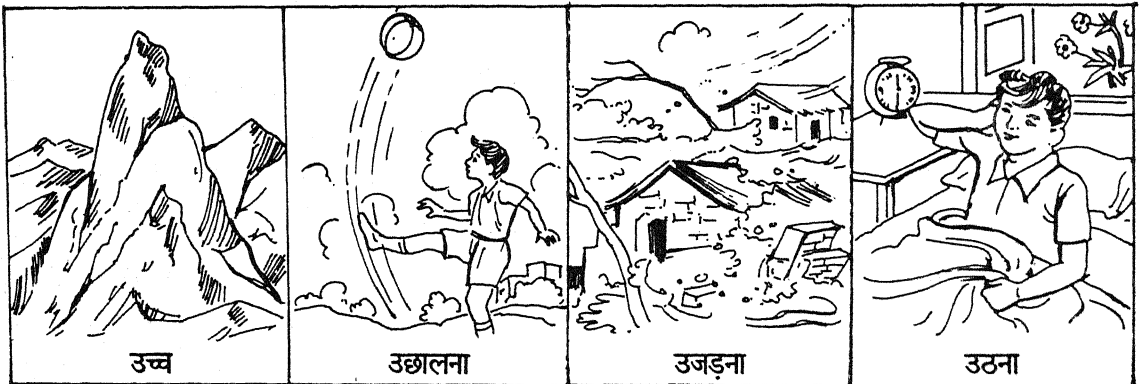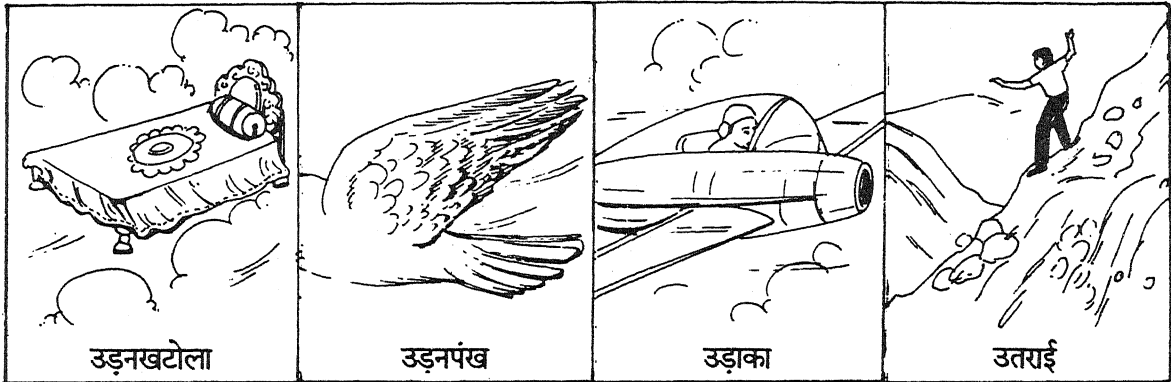
है, उठा दो। 2. जगाना। प्र० राम बहुत सो चुका है, अब उसे उठा देना चाहिए।

उड़नखटोला – पु० छोटी खाट जो उड़ती है तथा जिस पर बैठकर आते-जाते हैं (यह एक कल्पना है, सचाई नहीं जिसका ज़िक्र बच्चों की कहानियों में आता है), कल्पित विमान।

उड़नपंख – पु० चिड़ियों के वे पंख जो उड़ने के काम आते हैं (उनके अलावा चिड़ियों के और भी छोटे-छोटे पंख होते हैं, जो गरमाने का काम करते हैं, उड़ने का नहीं)।

उड़ना – *क्रि०* **वायुमंडल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक हवा में तैरते हुए जाना ; जैसे – पतंग उड़ती है, चिड़ियाँ उड़ती हैं, हवाई जहाज़ उड़ता है।**

उड़ाऊ – *वि०* पैसे उड़ानेवाला, बहुत ज़्यादा ख़र्च करनेवाला, पैसे बर्बाद करनेवाला। प्र० उसके बेटे और पति दोनों उड़ाऊ हैं, बेचारी कर्ज़ माँगती-माँगती परेशान रहती है।

उड़ाका – पु० हवाई जहाज़ उड़ानेवाला, वायुयान-चालक, पाइलेट।

उड़ाना – *क्रि०* 1. उड़ने की क्रिया कराना, उड़ने के लिए प्रवृत्त करना ; जैसे – धूल उड़ाना, पतंग उड़ाना, जहाज़ उड़ाना, गुब्बारा उड़ाना, अफ़वाह उड़ाना। प्र० कुछ लोगों ने यों ही अफ़वाह उड़ा दी कि कुछ लोग आए हैं जो बच्चों को चुरा ले जाते हैं। *मु० पैसा उड़ाना* – पैसा बर्बाद करना। प्र० इतना पैसा मत उड़ाओ, नहीं तो आगे चलकर पछताना पड़ेगा।

उतना – *वि०* उस आकार का, उस वज़न का, उस मात्रा का, उस नाप का, उस संख्या का। प्र० 1. उतना बड़ा लोहा तुम्हें मिला कहाँ? 2. उतने रुपए तुमने एक महीने में कमाए कैसे? 3. उतने दुख सहकर मैंने वे दिन काटे। 4. उतना समय तुमने व्यर्थ में गँवाया।

उतराई – *स्त्री०* 1. ऊपर से नीचे आने की क्रिया। प्र० चढ़ाई में ज़्यादा समय लगता है और उतराई में कम। 2. नाव से नदी पार करने की क्रिया या किराया। प्र० इस घाट पर उतराई क्या लेते हैं? 3. उतार, ढलान। प्र० यहाँ उतराई बहुत है।

उतार-चढ़ाव – पु० 1. कभी ऊपर उठना, कभी नीचे गिरना। प्र० जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। 2. हानि-लाभ, कभी घाटा कभी फ़ायदा होना, कभी सस्ता कभी महँगा होना, कभी तेज़ी कभी मंदी होना। प्र० व्यापार में उतार-चढ़ाव तो लगा ही रहता है।

उतारू – *वि०* कोई काम करने पर तुला हुआ, तैयार, उद्यत, आमादा। *प्र०* वह आदमी तो मरने-मारने पर उतारू है।

उतावला – *वि०* जिसे धैर्य न हो, जल्दबाज़, कुछ भी करने में जल्दी करनेवाला, बेसब्र। *प्र०* इतने उतावले क्यों हो रहे हो, तुम्हारी बारी भी आएगी ही।

उत्तम – *वि०* सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ। *प्र०* यह उत्तम बीज है।

उत्तर – *पु०* जवाब, किसी के प्रश्न के समाधान के लिए कही गई बात। *प्र०* छात्र अपने अध्यापक के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके। (*विलोम* – प्रश्न)। 2. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। *प्र०* हवा उत्तर दिशा से चल रही है। (*विलोम* – दक्षिण)।

उत्तरदायित्व – *पु०* ज़िम्मेदारी, जवाबदेही, जवाबदारी, दायित्व। *प्र०* इसका उत्तरदायित्व तुम पर है, मुझ पर नहीं।

उत्तरपुस्तिका – *स्त्री०* 1. कॉपी, नोटबुक। *प्र०* यह प्रश्न अपनी उत्तरपुस्तिका में लिख लीजिए। 2. परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिखने की कॉपी।

उत्तर-पूर्व मानसून – *पु०* जाड़े के दिनों में हिंद महासागर से उठकर चलनेवाली हवाएँ, चूँकि ये उत्तर-पूर्व दिशा से चलती हैं इसलिए इनको उत्तर-पूर्व मानसून कहते हैं।

उत्तरी गोलार्ध – *पु०* पृथ्वी का विषुवत् रेखा से उत्तर का भाग।

उत्तरी ध्रुव – *पु०* वह ध्रुव जो पृथ्वी के उत्तरी भाग में स्थित है। *प्र०* उत्तरी ध्रुव पर वर्ष के अधिकांश समय बर्फ़ जमी रहती है। (*विलोम* – दक्षिणी ध्रुव)।

उत्तीर्ण – *वि०* जो किसी परीक्षा में सफल घोषित किया गया हो, पास। *प्र०* हमारी कक्षा में 20 में से 15 बच्चे उत्तीर्ण हुए। (*विलोम* – अनुत्तीर्ण)।

उत्तेजित – *वि०* जोश में, भड़का हुआ, उत्तेजना से भरा हुआ। *प्र०* पुलिस द्वारा गोली चलाए जाने से भीड़ बहुत उत्तेजित हो गई।

उत्तोलक – *पु०* 1. उठानेवाला। 2. ढक्कन खोलने के लिए इस्तेमाल किया जानेवाला चम्मच या चाकू। 3. कील उखाड़ने के लिए प्रयुक्त होनेवाली पंजेदार हथौड़ी।

उत्पत्ति – *स्त्री०* पैदाइश, जन्म। *प्र०* वैज्ञानिक मानते हैं कि जीवों की उत्पत्ति पानी से हुई है।

उत्पन्न – *वि०* पैदा हुआ, जनमा हुआ, उपजा हुआ। *प्र०* 1. ज़मीन से अनाज उत्पन्न होता है। 2. उसके

उत्तरपुस्तिका उत्तेजित उत्तोलक

उत्पादन उत्सव उदर

घर बेटी उत्पन्न हुई है। 3. गंदगी से कीड़े उत्पन्न होते हैं।

उत्पादन – पु० 1. पैदा करना, बनाना, नई वस्तु उत्पन्न करना। 2. कारख़ाने में बनाई गई वस्तु। प्र० हमारे कारख़ानों के उत्पादन अब विदेशों में जाने लगे हैं। 3. पैदावार। प्र० इस वर्ष गेहूँ का उत्पादन अच्छा हुआ है।

उत्सव – पु० जलसा, समारोह; जैसे – विवाहोत्सव, जन्मोत्सव, मंगलोत्सव, वसंतोत्सव।

उत्साह – पु० हौसला, उमंग, जोश। प्र० स्वतंत्रता पाने के लिए 1930 से 1947 तक जनता में बड़ा उत्साह था।

उत्साहपूर्वक – *वि०* उत्साह से भरकर, उत्साह के साथ। प्र० हमारी टीम ने उत्साहपूर्वक खेलकर विरोधी टीम को चार गोल से पीट दिया।

उत्साही – *वि०* जिसमें उत्साह हो, जोशवाला। प्र० 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उत्साही विद्यार्थियों ने बहुत काम किया।

उत्सुक – *वि०* कोई बात तुरंत जानने या कोई कार्य तुरंत करने के लिए उतावला, तत्पर, व्यग्र। प्र० वह अपने इंटरव्यू का परिणाम जानने के लिए बहुत उत्सुक है।

उत्सुकता – *स्त्री०* उत्सुक होने की स्थिति या भाव। प्र० वे लोग तुम्हारे आने का उत्सुकता से इंतज़ार कर रहे हैं।

उथल-पुथल – *स्त्री०* उलट-पुलट, अव्यवस्था, हलचल। प्र० अचानक हमले से वहाँ उथल-पुथल मच गई।

उथला – *वि०* 1. कम गहरा, छिछला, सतही। प्र० यहाँ जल उथला है, नदी यहीं से पार करना ठीक रहेगा। 2. कम ज्ञान और बुद्धि का, जो गंभीर न हो। प्र० वह व्यक्ति तो बड़ा ही उथला है, भला वह तुम लोगों की इस पुस्तक के लिखने में क्या मदद करेगा ?

उदय – पु० उगना, निकलना, प्रकट होना, ऊपर उठना या आना; जैसे – चंद्रमा का उदय होना अर्थात् चंद्रोदय (चंद्र + उदय), सूर्य का उदय होना अर्थात् सूर्योदय (सूर्य + उदय)। (*विलोम* – अस्त)।

उदर – पु० पेट, जठर। प्र० मरीज़ के उदर में दर्द है।

उदार – *वि०* 1. जो दूसरों की सहायता खुले दिल से करे। प्र० कहा जाता है कि शंकरजी बहुत उदार हैं।

2. खुले विचारोंवाला। प्र० गांधीजी बहुत उदार थे, उनमें कट्टरपन बिल्कुल नहीं था। 3. दयालु, कृपालु।

उदाहरण –पु० किसी बात को समझाने के लिए दी गई मिसाल, दृष्टांत। प्र० सर्वनाम उसे कहते हैं जो किसी संज्ञा के स्थान पर आए, उदाहरण है मैं, तू, वह।

उद्घाटन –पु० किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा किसी सम्मेलन, समारोह, परियोजना आदि का शुभारंभ। प्र० प्रधान मंत्री ने देश में कई नई परियोजनाओं का उद्घाटन किया है।

उद्दीपन –पु० उत्तेजित करना, उभारना, जगाना, उद्दीप्त करना। प्र० पूरे जीवन में हम पर तरह-तरह के उद्दीपनों का आक्रमण होता रहता है।

उद्देश्य –पु० वह बात जिसे ध्यान में रखकर कोई काम किया जाए, लक्ष्य, ध्येय। प्र० विदेश जाने का मेरा उद्देश्य है ज्ञान प्राप्त करना। 2. मतलब, तात्पर्य, अर्थ। प्र० तुम्हारे इस वाक्य का उद्देश्य क्या है ? 3. कारण। प्र० वहाँ जाने का उद्देश्य है अपने विरोधियों से दूर जाना।

उद्धार –पु० 1. दुर्दशा, चिंता, कष्ट आदि से छुटकारा दिलाना। प्र० गांधीजी और विनोबा भावे ने अनेक दलितों का उद्धार किया। 2. बचाना। प्र० आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए कई लोगों का उद्धार किया गया।

उद्धारक –वि० उद्धार करनेवाला, बचानेवाला, छुटकारा दिलानेवाला। प्र० स्वामी दयानंद सरस्वती अछूतों के उद्धारक थे।

उद्यम –पु० 1. प्रयत्न, मेहनत, परिश्रम। प्र० आगे बढ़ने के लिए उद्यम करना पड़ेगा। 2. कारख़ाने इत्यादि लगाकर कोई उत्पादन करना, उद्योग-धंधा। प्र० नए उद्यम लगाने से देश आगे बढ़ेगा।

उद्यान –पु० उपवन, बग़ीचा, बाग़। प्र० देखो इस उद्यान में कितने अच्छे-अच्छे फूल खिले हैं।

उद्योग –पु० 1. कोशिश, प्रयत्न। प्र० जीवन में सफलता पाने के लिए उद्योग करना पड़ेगा। 2. उद्योग-धंधा, इंडस्ट्री। प्र० नए उद्योगों से विदेशी मुद्रा न केवल बचेगी, बल्कि बाहर से आएगी भी।

उद्योग-धंधा – पु० उत्पादन करने का कार-बार, इंडस्ट्री।

उद्योगपति – पु० बड़ा उद्योग करनेवाला, बड़े कल-कारख़ानों का मालिक, इंडस्ट्रियलिस्ट।

उद्घाटन उद्यान उद्योग
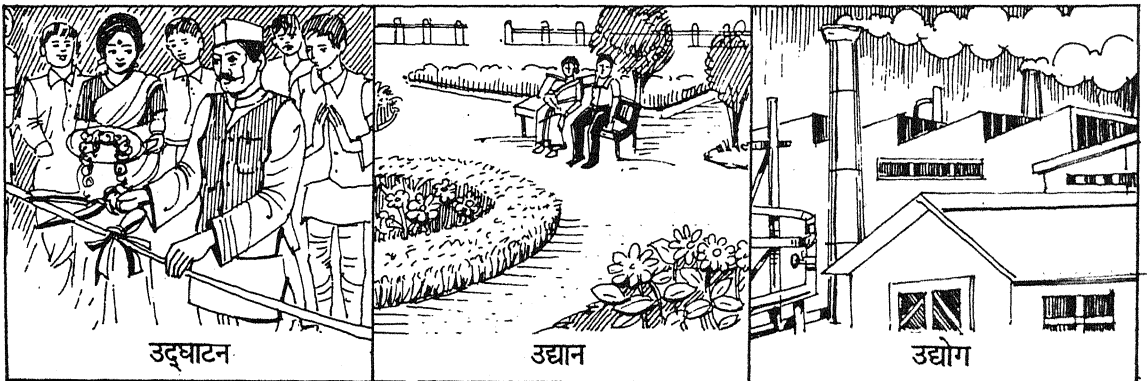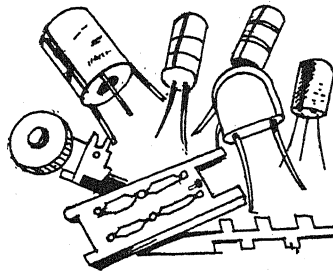
उधेड़ना

उपकरण
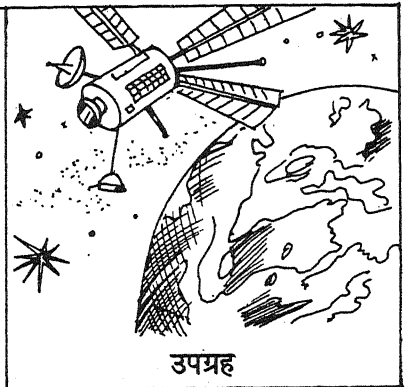
उपग्रह

उधेड़ना – *क्रि०* सिलाई या बुनाई खोलना, टाँका खोलना। *प्र०* मेरा यह स्वेटर उधेड़ दो, ठीक नहीं है।

उन – *सर्व०* 'उस' का बहुवचन तथा आदर का रूप [इसके बाद या तो कोई संज्ञा शब्द आता है (उन लड़कों को बुलाओ) या को, से, का, पर, में (उनसे, उन पर, उनमें) आदि]।

उन्नत – *वि०* 1. ऊँचा, ऊपर उठा हुआ; जैसे – उन्नत ललाट। 2. सुधरा हुआ; जैसे – उन्नत क़िस्म के बीज। 3. जिसकी उन्नति हो चुकी हो, विकसित; जैसे – उन्नत देश।

उन्नति – *वि० स्त्री०* तरक़्क़ी, प्रगति, बढ़ोत्तरी। *प्र०* जापान की उन्नति का रहस्य वहाँ के लोगों का अत्यंत परिश्रमी होना है।

उन्नतिशील – *वि०* उन्नति करनेवाला, आगे बढ़नेवाला, तरक़्क़ी करनेवाला, प्रगतिशील। *प्र०* भारत एक उन्नतिशील देश है।।

उन्मूलन – *पु०* जड़ से मिटा देना, पूरी तरह समाप्त कर देना। *प्र०* भारत में निरक्षरता के उन्मूलन के लिए जितना प्रयत्न होना चाहिए उतना अभी हुआ नहीं है।

उपकरण – *पु०* 1. यंत्र, मशीन, कल। *प्र०* इसमें काम में आनेवाले सभी उपकरण देश में ही बने हैं। 2. साधन, साज़-सामान। *प्र०* विज्ञान में प्रयोग के काम आनेवाले सारे उपकरण प्रयोगशाला में होने चाहिए।

उपकार – *पु०* 1. ऐसा काम जिससे किसी का हित हो, भलाई, नेकी। *प्र०* वह सबका उपकार करना चाहता है। 2. एहसान। *प्र०* मेरे ऊपर आपके बड़े उपकार हैं।

उपकारी – *वि०* उपकार करनेवाला, दूसरों का हित करनेवाला।

उपग्रह – *पु०* वह छोटा ग्रह जो किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है। *प्र०* चाँद पृथ्वी का उपग्रह है।

उपचार – *पु०* दवा, इलाज़, चिकित्सा, उपाय, निदान। *प्र०* घायल व्यक्ति को उपचार के लिए अस्पताल में दाखिल कराना चाहिए।

उपदेश – *पु०* सीख, नसीहत, अच्छी सलाह।

उपदेशक – *पु०* उपदेश देनेवाला, सीख देनेवाला, भलाई की या अच्छी बात बतानेवाला।

उपद्रव – *पु०* उत्पात, गड़बड़, दंगा, झगड़ा, फ़साद, अशांति। *प्र०* और सभी लोग शांति चाहते हैं, किंतु कुछ लोगों ने उपद्रव मचा रखा है।

उपमा – *स्त्री॰* समता, तुलना। *प्र॰* तुम्हारी और उसकी क्या उपमा, तुम तो बहुत अच्छे हो।

उपयुक्त – *वि॰* उचित, ठीक, जैसा होना चाहिए वैसा, वाजिब; जैसे – उपयुक्त राय, उपयुक्त बात, उपयुक्त आदमी।

उपयोग – *पु॰* प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लेना। *प्र॰* उपयोग करते रहने से चीज़ें ठीक रहती हैं।

उपयोगी (उपयोग + ई) – *वि॰* लाभकारी, फ़ायदेमंद, काम का। *प्र॰* यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

उपरांत – *अ॰* बाद, बाद में, पश्चात्, पीछे। *प्र॰* कई दिनों के उपरांत आज धूप निकली है।

उपराष्ट्रपति – *पु॰* राष्ट्रपति के ठीक नीचे का पदाधिकारी, वाइसप्रेसिडेंट।

उपरोक्त – *वि॰* ऊपर कहा हुआ, जिसकी चर्चा पहले की गई हो, उपर्युक्त। *प्र॰* उपरोक्त पुस्तक विद्यार्थियों के बड़े काम की है।

उपर्युक्त – *वि॰* उपरोक्त, ऊपर कही हुई। *प्र॰* उपर्युक्त सलाह पर अमल करो तो तुम्हें बहुत लाभ होगा।

उपलक्ष्य – *पु॰* लिए, निमित्त, प्रसंग, संदर्भ। *प्र॰* गांधीजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में यह सभा हो रही है।

उपलब्ध – *वि॰* जो मिल सकता हो, प्राप्त। *प्र॰* पहले तो ऐसी मशीन भारत में उपलब्ध नहीं थी पर अब है।

उपला – *पु॰* गोंइठा, कंडा, ईंधन के रूप में जलाने के लिए सुखाया गया गोबर का लोंदा। *प्र॰* उपले पाथे जाते हैं।

उपवन – *पु॰* 1. बग़ीचा, बाग़। 2. पार्क।

उपवास – *पु॰* 1. भोजन न करना, निराहार रहना। *प्र॰* सप्ताह में एक दिन उपवास करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। 2. व्रत, किसी विशेष दिन या तिथियों पर भोजन न करना। *प्र॰* 1. आज सोमवार का उपवास है। 2. कल एकादशी का उपवास होगा।

उपसर्ग – *पु॰* व्याकरण में शब्द के पहले जुड़नेवाला वह अंश जिससे मिलकर शब्द का अर्थ बदल जाता है। [उदाहरण के लिए प्रहार (मारना), संहार (नाश करना) तथा आहार (भोजन) में 'प्र,' 'सं', 'आ' उपसर्ग हैं। 'हार' में जुड़कर इन तीनों ने 'हार' के तीन अर्थ कर दिए हैं]।

उपलक्ष्य | उपला | उपवन
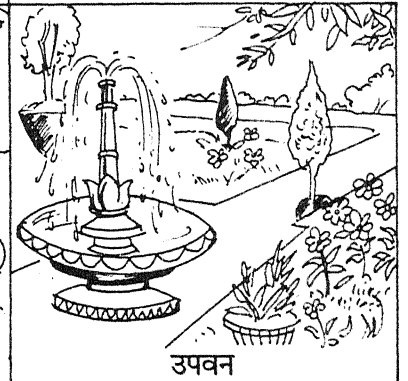
उपस्थित – *वि०* हाज़िर, मौजूद। *प्र०* 1. आज सभा में काफ़ी लोग उपस्थित थे। 2. अच्छे बच्चे कक्षा में सदा उपस्थित रहते हैं।

उपस्थिति – *स्त्री०* उपस्थित होने की स्थिति, हाज़िरी, मौजूदगी, विद्यमानता। *प्र०* 1. मोहन, जाओ, उपस्थिति-रजिस्टर लाओ। 2. आज बहुत दिनों बाद कक्षा में पूरी उपस्थिति है, एक भी विद्यार्थी अनुपस्थित नहीं है।

उपहार – *पु०* आदर या प्रेम-भाव से किसी को दी जानेवाली वस्तु, भेंट, प्रेज़ेंट। *प्र०* जन्मदिन पर या शादी-विवाह में लोग तरह-तरह के उपहार देते हैं।

उपाधि – *स्त्री०* 1. पद, पदवी, ख़िताब, नाम के साथ जोड़ा जानेवाला प्रतिष्ठासूचक पद। 2. कोई बड़ी परीक्षा पास कर लेने पर प्राप्त होनेवाला योग्यतासूचक पद; जैसे – बी०ए०, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी०लिट्० आदि।

उफ़ – 1. *स्त्री०* आह, हाय। *प्र०* वह बहुत हिम्मती है, उसके इतने बड़े फोड़े का ऑपरेशन डॉक्टर ने बिना बेहोश किए किया पर उसने उफ़ तक नहीं की। 2. *अ०* अफ़सोस या पछतावा का भाव देनेवाला शब्द। *प्र०* उफ़, तुम्हारा साथ देकर मैंने कितनी बड़ी गलती की है।

उबकाई – *स्त्री०* वह ख़राबी जिससे मिचली, मतली, उल्टी आदि करने की इच्छा होती है। *प्र०* पता नहीं कैसा खाना था, खाकर मुझे तो उबकाई आ रही है।

उबटन – *पु०* शरीर पर मलने के लिए पिसी हुई सरसों, तिल, चिरौंजी आदि का लेप। *प्र०* बच्चे को उबटन लगा दो।

उबाऊ – *वि०* उबानेवाली, ऊब पैदा करनेवाली। *प्र०* 1. यह पुस्तक बड़ी उबाऊ है। 2. कोई उबाऊ फ़िल्म हो तो मैं नहीं देखूँगा।

उबाना – *क्रि०* ऊबने का कारण बनना, ऊब पैदा करना। *प्र०* बेकार की बातों से उसे क्यों उबा रहे हो?

उबारना – *क्रि०* किसी को परेशानी से छुटकारा दिलाना, किसी की मुसीबत दूर करना, किसी का उद्धार करना। *प्र०* मैं बहुत ही संकट में फँसा हूँ, कुछ मदद करके तुम मुझे उबार सकते हो।

उबालना – *क्रि०* 1. किसी तरल पदार्थ को आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह खौलने लगे, खौलाना। *प्र०* दूध उबाल दो। 2. पानी में डालकर किसी चीज़ को पकाना। *प्र०* आलू उबाल दो।

उबासी – *स्त्री०* नींद आने या ऊब होने या थकान से मुँह खोलकर ली जानेवाली लंबी साँस, जम्हाई। *प्र०* उबासी ले रहे हो, सो जाओ।

उभयचर – *वि॰* जल और स्थल दोनों जगह रह सकनेवाला (प्राणी)। *प्र॰* मेढक उभयचर प्राणी है।

उभयनिष्ठ – *वि॰* जो दो में शामिल हो या दो से संबंधित हो; जैसे – रेखागणित में उभयनिष्ठ रेखा या गणित में उभयनिष्ठ गुणक आदि।

उमंग – *स्त्री॰* उत्साह, उल्लास, मन में उत्साह की लहर। *प्र॰* 1. होली की उमंग लोगों में एक मस्ती भर देती है। 2. लोग उमंग के साथ नाच-गा रहे हैं।

उमड़ना – *क्रि॰* किसी तरल पदार्थ का ऊपर उठकर फैल जाना, नदी आदि का भरकर या किनारों को लाँघकर बहना। *प्र॰* बरसाती नदी थोड़ी बारिश से भी उमड़ पड़ती है। 2. बहुत अधिक लोगों का टूट पड़ना। *प्र॰* गांधीजी के दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी।

उमस – *स्त्री॰* वह गरमी जो हवा न चलने के कारण होती है तथा जिसमें घुटन होती है। (इसमें पसीना नहीं सूखता, इसीलिए इसे 'चिपचिपी गरमी' भी कहते हैं)। *प्र॰* आज बड़ी उमस है, लगता है पानी बरसेगा।

उमेठना – *क्रि॰* ऐंठना, मरोड़ना। *प्र॰* अध्यापक ने आज उसके कान उमेठे, क्योंकि वह कक्षा में शैतानी कर रहा था।

उमदा, उम्दा – *वि॰* अच्छा, बढ़िया; जैसे – उमदा घर, उमदा आदमी, उमदा तस्वीर , उमदा पुलाव।

उम्मीदवार – *पु॰* 1. उम्मीद करनेवाला, आशा करने-वाला। 2. किसी चुनाव में खड़ा व्यक्ति, प्रत्याशी, कैंडिडेट। *प्र॰* अध्यक्ष पद के लिए मोहन भी उम्मीदवार है। 3. किसी नौकरी के लिए आवेदक। *प्र॰* ख़ाली जगहें तो केवल दो हैं और उम्मीदवार पचास से ऊपर हैं।

उरोस्थि (उरः+अस्थि) – *स्त्री॰* छाती की हड्डी जिससे पसलियाँ जुड़ी होती हैं।

उर्दू – *स्त्री॰* हिंदी या हिंदुस्तानी का वह रूप जिसमें अरबी-फ़ारसी शब्द अधिक होते हैं। यह फ़ारसी लिपि में लिखी जाती है। (यह भी भारत की एक राष्ट्रीय भाषा है)।

उर्वरक – *पु॰* खाद, रासायनिक खाद। *प्र॰* आजकल खेत में उर्वरक डालना ज़रूरी हो गया है, बिना उसके अच्छी पैदावार नहीं होती।

उर्स – *पु॰* किसी मुसलमान संत की मृत्यु-तिथि पर मनाया जानेवाला समारोह। *प्र॰* कल हज़रत निज़ामुद्दीन का उर्स है।

उलझन – *स्त्री॰* गुत्थी, कठिनाई। *प्र॰* इस काम में

उभयचर | उमेठना | उम्मीदवार | उरोस्थि

उलझना उल्टा-पुल्टा उल्लास
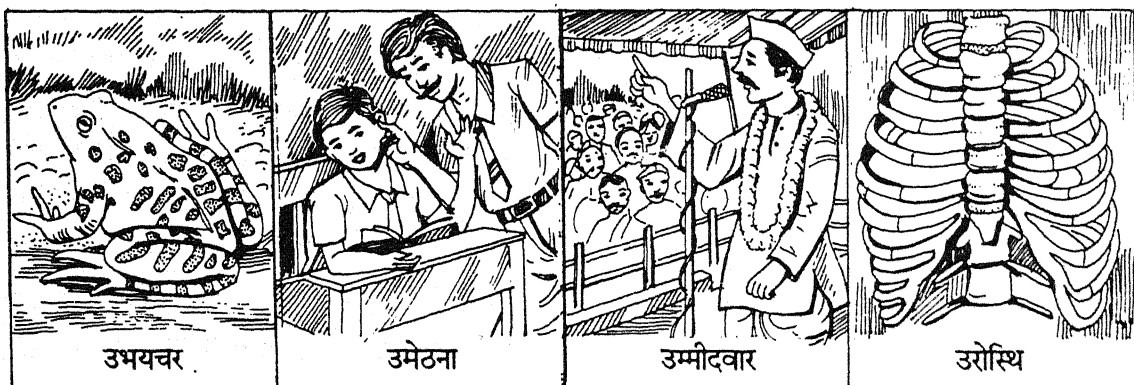
एक उलझन है, इसीलिए मैं उसमें हाथ डालने से डर रहा हूँ।

उलझना – *क्रि॰* 1. तागा, डोरी, रस्सी आदि का एक-में-एक गुँथ जाना। *प्र॰* धागा सम्हालकर खोलो, उलझ जाएगा। 2. तकरार करना, झगड़ा करना। *प्र॰* क्यों बेकार में उस मूर्ख से उलझते हो।

उलट-फेर – *पु॰* उलट-पुलट, तब्दीली, परिवर्तन। *प्र॰* अब उस दफ़्तर में काफ़ी उलट-फेर हो गया है।

उलटा-पुलटा – *वि॰* दे॰ उल्टा-पुल्टा।

उलटा-सीधा – *वि॰* दे॰ उल्टा-सीधा।

उलटे – *अ॰* दे॰ उल्टे।

उलाहना – *पु॰* शिकायत। *प्र॰* पड़ोसी उलाहना दे रहे थे, तुम्हारे बेटे ने शायद उनके साथ कोई शैतानी की थी।

उल्टा – *वि॰* 1. जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो गया हो, औंधा। *प्र॰* बरतन उल्टा रखा हुआ है। 2. विपरीत, प्रतिकूल, विरोधी। *प्र॰* तुम्हारा हर काम उल्टा होता है। 3. सीधा का विरोधी, जो सीधा न हो। *प्र॰* तुम्हारी उल्टी चाल मुझे पसंद नहीं आती। (*विलोम* – सीधा)।

उल्टा-पुल्टा – *वि॰* ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर, इधर का उधर, बेतरतीब, गड़बड़। *प्र॰* सामान ठीक से रखा था, तुमने उल्टा-पुल्टा कर दिया।

उल्टा-सीधा – *वि॰* ग़लत-सलत, ग़लत। *प्र॰* उल्टा-सीधा ही काम करना हो तो न करो, यही बेहतर है।

उल्टे – *अ॰* जो होना चाहिए उसके विपरीत या ख़िलाफ। *प्र॰* मैंने तो तुम्हारी इतनी सहायता की है और उल्टे तुम मेरी टाँग खींच रहे हो।

उल्लास – *पु॰* ख़ुशी, आनंद। *प्र॰* होली उल्लास का त्योहार है।

उल्लेख – *पु॰* चर्चा, ज़िक्र। *प्र॰* 1. कल तुम्हारे अध्यापक तुम्हारा उल्लेख कर रहे थे। 2. उस निबंध में तुमने कई बातों का उल्लेख किया है।

उषा – *स्त्री॰* भोर, प्रभात, सवेरा, सूर्य निकलने के ठीक पहले का समय।

उष्ण – *वि॰* गर्म। *प्र॰* 1. सर्दियों में उष्ण जल से स्नान करते हैं। 2. पृथ्वी के कुछ प्रदेश उष्ण होते हैं और कुछ ठंडे।

उष्णता – स्त्री० गर्मी, ताप। प्र० थर्मामीटर से हवा की उष्णता भी नापी जाती है और शरीर की भी।

उसाँस – स्त्री० गहरी साँस, जो मन की उदासी की सूचक होती है, लंबी साँस।

उसारा – पु० बरामदा, ओसारा, दालान, खम्हिया।

उसूल – पु० 1. सिद्धांत। प्र० आदमी को अपने उसूलों पर चलना चाहिए। 2. नियम। प्र० हिसाब के हर सवाल को हल करने का एक उसूल होता है।

उस्तरा – पु० बाल बनाने का औज़ार, छुरा, रेज़र।

उस्ताद – पु० 1. शिक्षक, गुरु, अध्यापक। 2. किसी कला, हुनर या विषय का अच्छा जानकार, माहिर।

★

ऊ – देवनागरी वर्णमाला का छठा अक्षर तथा स्वरों में छठा स्वर।

ऊँघना – क्रि० बैठे-बैठे नींद में झूमना, झपकी लेना। प्र० तुम ऊँघ रहे हो, जाओ, सो जाओ।

ऊँचा – वि० 1. ऊपर की ओर उठा हुआ, उच्च। प्र० हिमालय बहुत ऊँचा पहाड़ है। 2. ज़ोर का, तेज़। प्र० 1. बहुत ऊँचे स्वर में मत बोलो। 2. अस्पताल में बहुत ऊँची आवाज़ में नहीं बोलना चाहिए, मरीज़ों के आराम में बाधा पड़ती है। 3. अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ। प्र० सादा जीवन और ऊँचे विचार ही अच्छे होते हैं।

ऊँचा-नीचा – वि० जो बराबर या समतल न हो, ऊबड़-खाबड़, असमतल। प्र० वह ज़मीन ऊँची-नीची है, बराबर करके ही उसमें कुछ बोया जा सकता है।

ऊँटवान – पु० ऊँट चलानेवाला, ऊँट हाँकनेवाला।

ऊँहूँ – अ० उत्तर में इनकार के लिए प्रयुक्त शब्द, नहीं, हर्गिज़ नहीं। प्र० ऊँहूँ, मैं नहीं जा रहा हूँ।

ऊख – पु० गन्ना, ईख।

ऊखल – पु० काठ या पत्थर का गहरा बरतन जिसमें धान आदि की भूसी अलग करने के लिए कूटते हैं, ओखली, काँड़ी।

ऊटपटाँग – वि० बेतुका, बेढंगा, अजीब, बेसिर-पैर का। प्र० तुम हर काम ऊटपटाँग करते हो, यहाँ तक कि ऊटपटाँग बोलते भी हो।

ऊतक – पु० शरीर में सैलों का समूह। प्र० प्रोटीन टूटे-फूटे ऊतकों की मरम्मत भी करता है।

ऊदबिलाव – पु० नेवले से मिलता-जुलता एक जंतु जो ज़मीन पर भी रह सकता है और पानी में भी।
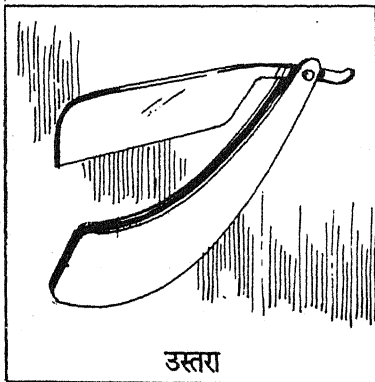
उस्तरा ऊँघना ऊदबिलाव
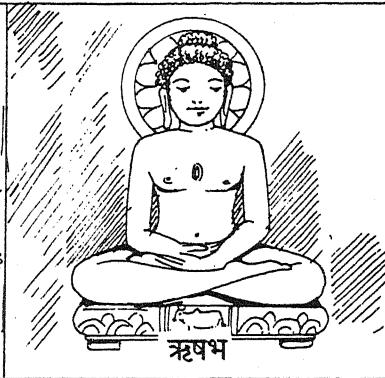
ऊपरी – *वि०* 1. ऊपर का; जैसे – ऊपरी आमदनी, ऊपरी मंज़िल। 2. जो वास्तविक नहीं हो, जो असली नहीं हो, बाहरी, दिखावटी। *प्र०* 1. तुम ऊपरी मन से ये बातें कह रहे हो। 2. तुम्हारा यह प्रेम ऊपरी है।

ऊब – *स्त्री०* उकताहट, किसी बात या चीज़ से मन का उचटना। *प्र०* उसकी बातें सुनकर मुझे ऊब होती है।

ऊबड़-खाबड़ – *वि०* जो समतल न हो, ऊँचा-नीचा। *प्र०* यह मैदान तो बड़ा ऊबड़-खाबड़ है, यहाँ खेल का मज़ा नहीं आएगा।

ऊबना – *क्रि०* उचटना, उकताना, उकताहट होना, मन उचटना। *प्र०* एक ही खाना रोज़ खाते-खाते मैं तो ऊब गया।

ऊर्जा – *स्त्री०* बल, शक्ति। *प्र०* काम करने के लिए शरीर में ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

ऊर्ध्वमुखी – *वि०* 1. जिसका मुँह ऊपर की ओर हो। 2. ऊपर की दिशा का। *प्र०* पानी में गिलास को दबाओ तो आसानी से गिलास भीतर नहीं जाएगा, जैसे कोई रोक रहा है। प्रत्येक द्रव पदार्थ ऊपर की ओर भी दबाव डालता है, जिसे ऊर्ध्वमुखी दबाव या बल कहते हैं।

ऊष्मा – *स्त्री०* गर्मी, ताप। *प्र०* सूर्य हमें ऊष्मा देता है।

ऋ

– देवनागरी वर्णमाला का सातवाँ अक्षर और स्वरों में सातवाँ स्वर।

ऋचा – *स्त्री०* वेदमंत्र, वेद का एक अंश।

ऋणी – *पु०* 1. जिसने ऋण लिया हो, क़र्ज़दार, रिनियाँ, देनदार। 2. एहसानमंद, आभारी। *प्र०* आपने मेरे लिए जो किया उसके लिए मैं आपका बहुत ऋणी हूँ।

ऋतुराज – *पु०* ऋतुओं का राजा, वसंत।

ऋद्धि-सिद्धि – *स्त्री०* धन की अधिकता, संपन्नता, समृद्धि और सफलता।

ऋषभ, ऋषभनाथ – *पु०* जैनों के पहले तीर्थंकर।

ए

– देवनागरी वर्णमाला का आठवाँ अक्षर और स्वरों में आठवाँ स्वर।

एंज़ाइम – दे० इंज़ाइम।

एंबुलेंस – *स्त्री०* रोगियों को लाने-ले जाने की गाड़ी।

एकजुट – *वि०* जो एक साथ हों, मिले हुए, आपस में मेल खानेवाले। *प्र०* आजकल उस गाँव के सभी लोग एकजुट हैं, कोई उनका कुछ नहीं कर सकता।

एकटक – *अ०* बिना पलक गिराए या झपकाए, लगातार। *प्र०* एकटक मत देखो, आँखें दुखने लगेंगी।

एकता – *स्त्री०* मेल। *प्र०* उन चारों भाइयों में बड़ी एकता है।

एकत्र – *अ०* एक जगह इकट्ठे, एक स्थान पर, इकट्ठा। *प्र०* 1. इस समय सभी लोग एकत्र हैं, जो कुछ कहना है, कह दो। 2. तमाशा देखने के लिए भीड़ एकत्र हो गई है।

एकत्रित – *वि०* 1. एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ। *प्र०* लोगों को एकत्रित करो, मैं अभी आता हूँ। 2. इकट्ठा हुआ, एकत्र हुआ, एक जगह जमा। *प्र०* एकत्रित भीड़ नारे लगा रही है।

एकदम – *अ०* 1. फ़ौरन, तुरंत, इकदम, बिना किसी देरी के। *प्र०* तार पाते ही एकदम चले आओ। 2. सर्वथा, बिल्कुल, सरासर। *प्र०* तुम्हारी बात एकदम ग़लत है।

एकबारगी – *अ०* एकाएक, अकस्मात्। *प्र०* इतने ज़्यादा लोग एकबारगी आ गए कि मैं कुछ भी नहीं कर पाया।

एकमत – *वि०* एक मत के, एक या समान राय रखनेवाले, एक विचारवाले। *प्र०* सभी लोग इस बात पर एकमत होंगे कि बिना परिश्रम किए खेती नहीं हो सकती।

एकमात्र – *वि०* केवल एक, एक ही, अकेला, और कोई नहीं; जैसे – एकमात्र मित्र, एकमात्र शत्रु, एकमात्र बेटा।

एकलौता – *वि०* दे० इकलौता।

एकवचन – *पु०* (व्याकरण में) एक का वाचक, एक का भाव देनेवाला। *प्र०* 'किताब' एकवचन है और 'किताबें' उसका बहुवचन।

एक-सा – *वि०* 1. समतल, सपाट, हमवार। *प्र०* यहाँ धरातल एक-सा नहीं है। 2. एक-जैसा। *प्र०* वे दोनों एक-से नहीं हैं।

एकहरा – *वि०* दे० इकहरा।

एकांत – 1. *वि०* जहाँ कोई दूसरा न हो। *प्र०* एकांत स्थान पर बात करेंगे। 2. *पु०* एकांत स्थान। *प्र०* वे दोनों एकांत में बातें कर रहे हैं।

एकांश – *पु०* इकाई, यूनिट। *प्र०* 1. इस पुस्तक में तीन एकांश हैं। 2. इस कार्यालय में कई एकांश हैं।

एका – *पु०* एकता, मेल। *प्र०* लोगों में जब तक एका

एकटक | एकता | एकत्र

एक्स-रे | एटलस | एयरकंडीशनर
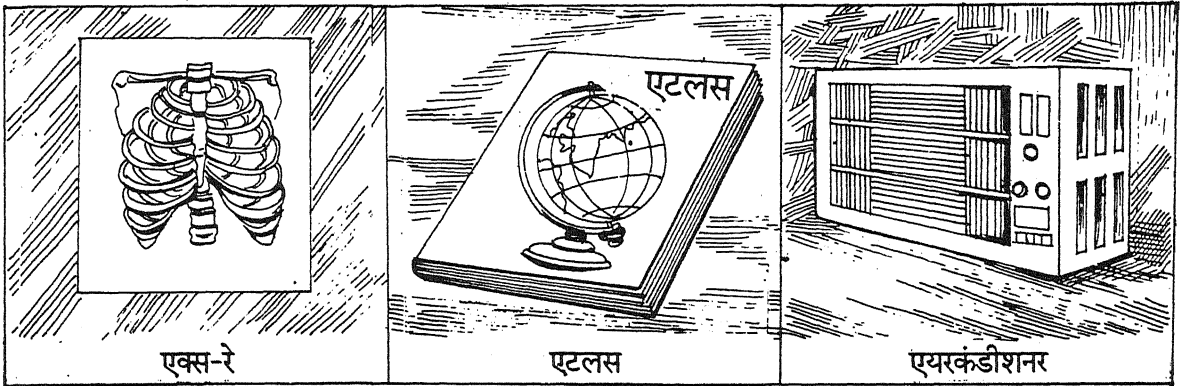
नहीं होगा, तब तक वे अपने गाँव को आगे नहीं बढ़ा सकते।

एकाएक – *अ०* इकबारगी, अचानक, एकदम, सहसा, अकस्मात्। *प्र०* वह साइकल चलाता-चलाता एकाएक बेहोश होकर गिर पड़ा।

एकाध (एक+आधा) – *वि०* एक-दो, इक्का-दुक्का, बिरला। *प्र०* मैं एकाध रोटी ही खाऊँगा, बहुत भूख नहीं है।

एक्सप्रेस – *वि०* तेज़ चलनेवाला, तेज़ी से आने-जाने-वाला; जैसे – एक्सप्रेस गाड़ी, एक्सप्रेस पत्र, एक्सप्रेस तार।

एक्स-रे – *पु०* बिजली की विशेष प्रकार की किरणें जिनकी सहायता से शरीर के भीतर के अंगों का चित्र लिया जा सकता है।

एजेंट – *पु०* किसी की ओर से काम करनेवाला, अभिकर्ता, प्रतिनिधि; जैसे – पार्टी एजेंट, बीमा एजेंट, बिक्री एजेंट।

एजेंसी – *स्त्री०* 1. वह स्थान जहाँ कमीशन पर माल बेचा जाए। 2. एजेंट का पद।

एटम – *पु०* दे० ऐटम।

एटमी – *स्त्री०* अणुशक्ति से संबंधित। *प्र०* उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ के पास नरोरा क़स्बा है जहाँ एटमी शक्ति से बिजली पैदा की जाएगी।

एटलस – *पु०* नक़्शों की किताब।

एतबार – *पु०* भरोसा, विश्वास। *प्र०* तुम्हें पूरा एतबार हो तभी उस आदमी को अपने साथ ले जाओ।

एयरकंडीशनर – *पु०* वातानुकूलन करनेवाली मशीन। *प्र०* गर्मी के मौसम में लोग पंखे, कूलर और एयरकंडीशनर का प्रयोग करते हैं।

एलान – *पु०* सार्वजनिक घोषणा, मुनादी। *प्र०* यह एलान कर दिया गया है कि रात में आठ बजे के बाद कोई अपने घर से न निकले।

एल्फ़ाल्फ़ा – *पु०* एक घास जो पशुओं के चारे के काम आती है।

एल्युमिनियम – *स्त्री०* सफेद रंग की एक बहुत हल्की धातु।

एवं – *अ०* और, तथा, इसी तरह, ऐसा ही। *प्र०* वहाँ बहुत-से कवि एवं लेखक इकट्ठे हुए हैं।

एशियाई – *वि०* 1. एशिया का; जैसे– एशियाई लोग, एशियाई देश। 2. एशिया से संबंधित;

जैसे – एशियाई मामलों के विशेषज्ञ। 3. एशिया के देशों का; जैसे – एशियाई खेल।

एसिड – *पु०* तेज़ाब, अम्ल।

एस्किमो, एस्कीमो – *पु०* उत्तरी ध्रुव में रहनेवाली एक जाति।

एहसान – *पु०* 1. ऋण, आभार। *प्र०* आपने मेरी सहायता अनेक बार की है, आपका मेरे ऊपर बहुत एहसान है। 2. उपकार, भलाई। *प्र०* आपने इतना एहसान किया है कि मैं भूल नहीं सकता।

एहसानमंद – *वि०* उपकार माननेवाला, आभारी, ऋणी। *प्र०* मैं आपका बहुत एहसानमंद हूँ जो आपने मेरे बेटे की नौकरी लगा दी।

एहसास – *पु०* अनुभव, अनुभूति, तजुर्बा, महसूस करना। *प्र०* आज कुछ गर्मी का एहसास हुआ है।

★

ऐ

– देवनागरी वर्णमाला का नवाँ अक्षर और स्वरों में नवाँ स्वर।

ऐं – *अ०* 1. एक शब्द जिसका प्रयोग किसी बात के ठीक से न सुनाई देने पर फिर से कहने के लिए होता है। *प्र०* ऐं! क्या कहा तुमने? 2. एक आश्चर्यसूचक शब्द। *प्र०* ऐं! वह मर गया!

ऐंठ – *स्त्री०* घमंड, अकड़, गर्व। *प्र०* 1. वह लड़का गाँव के मुखिया का बेटा होने के कारण बड़ी ऐंठ दिखाता है। 2. उस बदमाश की इतनी दुर्दशा हो गई, फिर भी उसकी ऐंठ नहीं गई।

ऐंठन – *स्त्री०* घुमाव, लपेट, मरोड़। *प्र०* इस रस्सी में अभी ऐंठन है, ठीक कर लो।

ऐंठना – *क्रि०* 1. उमेठना। *प्र०* उन्होंने मेरा कान ऐंठ दिया। 2. मरोड़ना। *प्र०* हाथ मत ऐंठो, टूट जाएगा। 3. टेढ़ा हो जाना, बल पड़ना। *प्र०* सूखकर यह लकड़ी ऐंठ जाएगी। 4. अकड़ना। *प्र०* थोड़े पैसे हो गए तो वह ऐंठा फिरता है।

ऐंठू – *वि०* अकड़बाज़, घमंडी। *प्र०* तुम्हारी कक्षा का मॉनीटर बड़ा ऐंठू है।

ऐकिक-नियम – *पु०* गणित का एक नियम (अनेक वस्तुओं का मूल्य दिया हो तो कुल मूल्य को वस्तुओं की संख्या से भाग देकर एक वस्तु का मूल्य मालूम कर सकते हैं, फिर अधिक वस्तुओं का मूल्य जानने के लिए एक वस्तु के मूल्य को वस्तुओं की संख्या से गुणा करते हैं। इस नियम को ऐकिक-नियम कहते हैं)।

ऐच्छिक – *वि०* 1. विकल्पवाला, ऐसा विषय जिसे चाहे लें और चाहे न लें। *प्र०* ऊँची कक्षाओं में सभी

एस्किमो | ऐंठन | ऐंठना

ऐनक ओंकार ओक
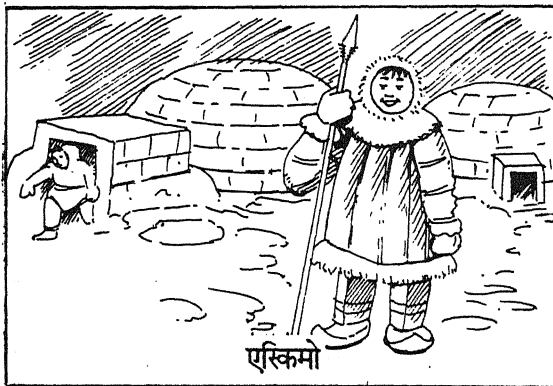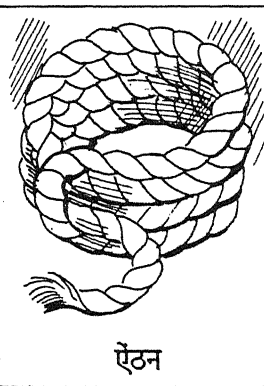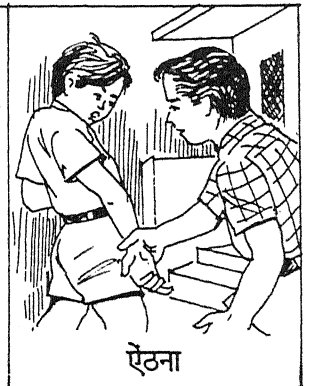
विषय अनिवार्य नहीं होते, कुछ ऐच्छिक भी होते हैं। 2. जो इच्छा से किया गया हो। *प्र०* क्रिया के आधार पर मांसपेशियाँ दो प्रकार की होती हैं: ऐच्छिक, अनैच्छिक।

ऐटम – परमाणु, अणु, पदार्थों का छोटे-से-छोटा कण जो और कणों में विभाजित न हो सके; जैसे – ऐटम बम।

ऐतिहासिक – *वि०* 1. इतिहास से संबंध रखनेवाला, इतिहास-विषयक, इतिहास-संबंधी; जैसे – ऐतिहासिक नगर, ऐतिहासिक स्थान, ऐतिहासिक कहानी। 2. जिसका इतिहास में स्थान हो; जैसे – ऐतिहासिक व्यक्ति।

ऐनक – *स्त्री०* चश्मा, उपनेत्र।

ऐब – *पु०* बुराई, दोष, खोट। *प्र०* तुममें कई ऐब हैं, उन्हें दूर करने की कोशिश करो।

★

ओ

– देवनागरी वर्णमाला का दसवाँ अक्षर और स्वरों में दसवाँ स्वर।

ओंकार – *पु०* ओम्, ओ३म् (परमात्मा का सूचक शब्द)।

ओक – *पु०* पानी पीने के लिए उँगलियों को सटाकर एक हथेली या दोनों हथेलियों से बनाया गया गड्ढा, (एक हाथ का ओक) चिरुवा, दोनों हाथों की अँजुरी, अंजली।

ओखली – *स्त्री०* ऊखल, उलूखल, वह पात्र या गड्ढा जिसमें रखकर धान, गेहूँ, जौ आदि कूटते हैं। *लो० ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर* – जब एक मुसीबत झेलने की ठान ली तो उससे संबद्ध बातों से क्या डरना?

ओछा – *वि०* जिसमें गंभीरता न हो, छोटा, छिछोरा; जैसे – ओछी बात, ओछा व्यक्ति।

ओछापन – *पु०* नीचता, हल्कापन, छिछोरापन, क्षुद्रता, कमीनापन।

ओज – *पु०* 1. तेज, प्रताप, कांति, चमक। *प्र०* उनके चेहरे पर बहुत ओज है। 2. शक्ति, बल। *प्र०* 1. उसकी वाणी में बड़ा ओज है। 2. उनकी कविता में बड़ा ओज है। 3. जोश। 4. प्रभाव, असर।

ओजस्वी – *वि०* 1. ओज से भरा हुआ, ओजपूर्ण, तेजस्वी; जैसे – ओजस्वी व्यक्तित्व। 2. जोशीला; जैसे – ओजस्वी भाषण।

ओझल – *वि०* जो आँख के सामने न हो, ओट में,

आड़ में, छिपा हुआ। *प्र०* देखते-ही-देखते सूरज आँखों से ओझल हो गया।

ओट – 1. *स्त्री०* आड़, परदा, जिससे सामने की वस्तु दिखाई न दे, जिसके पीछे छिपा जा सके। *प्र०* चोर शायद दीवार की ओट में छिप गया है। 2. *पु०* एक अनाज।

ओटना – *क्रि०* 1. कपास को चरखी में दबाकर रुई और बिनौलों को अलग करना। 2. अपनी ही बात बार-बार कहते जाना, अपनी बात बार-बार दुहराना। *प्र०* भाई, ज़रा मेरी भी सुनोगे या अपनी ही ओटते जाओगे। *लो० आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास* – आना एक काम से, करने लगना दूसरा, परमार्थ के काम से आना और स्वार्थ का काम करने लगना।

ओडिसी – *स्त्री०* उड़ीसा का एक प्रसिद्ध नृत्य।

ओढ़नी – *स्त्री०* चुनरी, चूनड़ी, चुन्नी, दुपट्टा, स्त्रियों के ओढ़ने की छोटी-सी चादर।

ओणंम – *पु०* केरल प्रदेश के निवासियों का प्रमुख त्योहार।

ओपोसम – *पु०* पेड़ों पर रहनेवाला एक जानवर।

ओम् – *पु०* ब्रह्म का वाचक शब्द, ओंकार, ओ३म् प्रणव, ॐ।

ओर-छोर – *पु०* 1. छोर, किनारा, आदि और अंत। *प्र०* यह धागा ऐसा उलझा है कि इसके ओर-छोर का पता नहीं चल रहा है। 2. अंत, सीमा। *प्र०* तुम्हारी बातों का कोई ओर-छोर भी है या यों ही चलती रहेंगी।

ओला – *पु०* जमे हुए जल कण या बर्फ़ के छोटे-छोटे गोले जो कभी-कभी पानी के साथ बरसते हैं।

ओवन – *पु०* तंदूर, भट्ठी।

ओवरकोट – *पु०* कोट के ऊपर पहनने का लंबा कोट जिसे तेज़ सर्दी से बचने के लिए पहनते हैं।

ओवरसियर, ओवरसीयर – *पु०* इमारत आदि के काम की देख-भाल या निरीक्षण करनेवाला, जूनियर इंजीनियर।

ओहदा – *पु०* पद, स्थान, जगह। *प्र०* आजकल तुम्हारे पिताजी किस ओहदे पर हैं?

★

औ

– देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर और स्वरों में ग्यारहवाँ स्वर।

औंधा – *वि०* उल्टा, जिसका मुँह नीचे की ओर हो; जैसे – औंधा घड़ा।

ओढ़नी ओणम ओवरकोट

औज़ार | औषध | कंकरीट | कंकाल
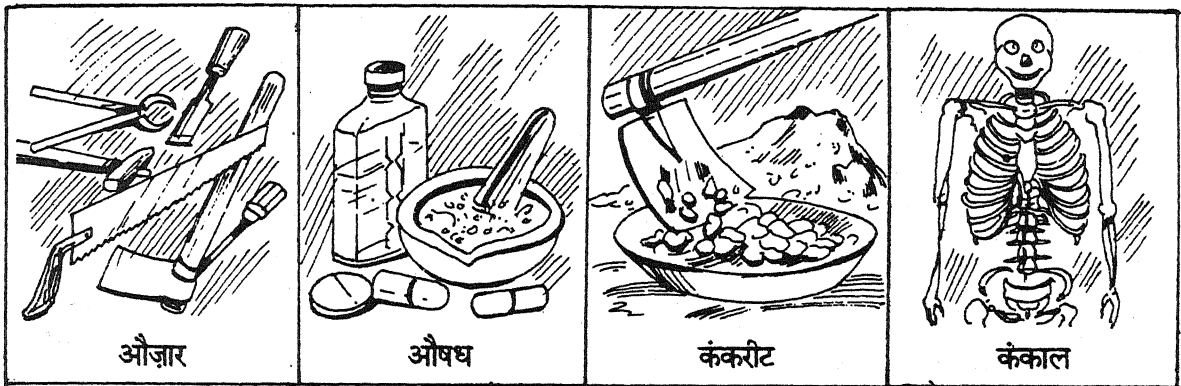
औज़ार – *पु०* कोई काम करने का साधन, वे उपकरण या काम करने में सहायक वस्तुएँ जिनसे सुनार, लुहार, बढ़ई, मोची, मिस्त्री आदि कारीगर अपना काम करते हैं; जैसे – हथौड़ा, आरी, बसूला, सूजा, बसूली आदि।

औद्योगिक – *वि०* 1. उद्योग का, उद्योग से संबंधित। *प्र०* भारत का औद्योगिक विकास धीरे-धीरे हो रहा है। 2. जहाँ उद्योग-धंधे फैले हुए हों। *प्र०* कानपुर एक औद्योगिक नगर है।

और – 1. *अ०* दो शब्दों और वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द, एवं, व, तथा; जैसे – राम और मोहन, तुम और वे, अब चलेंगे और सोएँगे। 2. *क्रि०वि०* अलग, दूसरा। *प्र०* तुम अपना इंतज़ाम पहले से कर लो, मोहन की बात और है, वह तो मिनटों में सब कर लेगा। 3. *वि०* ज़्यादा, अतिरिक्त। *प्र०* उसको और रुपए समझ-बूझकर देना, वह रुपए लेकर लौटाता नहीं।

औलाद – *स्त्री०* संतान, बेटा-बेटी, बाल-बच्चे।

औषध, औषधि – *स्त्री०* दवाई, दवा, जड़ी-बूटी।

औषधालय – *पु०* दवाख़ाना, अस्पताल, वह स्थान जहाँ दवाएँ मिलती, बिकती और बनती हैं।

औसत – 1. *वि०* बीच का, सामान्य, साधारण, मामूली। *प्र०* भारत में औसत आदमी की आमदनी जापान, अमरीका आदि के आदमियों से बहुत कम है। 2. *पु०* समष्टि [कई संख्याओं (जैसे 5, 7, 8, 12, 18) के जोड़ को उन संख्याओं की संख्या (यहाँ संख्याएँ 5 हैं) से यदि भाग दें तो जो भागफल (50 ÷ 5 = 10) होता है वही उन संख्याओं का औसत होता है। यहाँ औसत 10 है]।

क – देवनागरी वर्णमाला तथा कवर्ग का पहला व्यंजन।

कंकरीट – *स्त्री०* रोड़ी, सीमेंट आदि से बना मसाला जिससे सड़क, छत आदि बनाए जाते हैं।

कंकाल – *पु०* शरीर की हड्डियों का ढाँचा, अस्थिपंजर, ठटरी। *प्र०* 1. अरे, तुम इतने दुबले हो गए हो कि नर-कंकाल नज़र आते हो। 2. मानव कंकाल की सहायता से डॉक्टरी के विद्यार्थियों को पूरे शरीर का ज्ञान कराया जाता है।

कंकाल-तंत्र – *पु०* हड्डियों का ढाँचा जो हमारे शरीर को आकार देता है तथा उसे थामे रहता है। हमारे

इस शरीर में कंकाल-तंत्र के अलावा पाचन-तंत्र, श्वसन-तंत्र, पेशी-तंत्र आदि कई तंत्र हैं।

कंगारू – पु० आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी आदि में पाया जानेवाला एक जानवर जिसके पेट पर एक थैली होती है जिसमें वह अपने बच्चों को रखता है।

कंगाल – *वि०* निर्धन, दरिद्र, जिसके पास कुछ न हो।

कंगूरा – पु० क़िले की दीवार में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बने हुए ऊँचे नुकीले बुर्ज़ जिनके पीछे खड़े होकर सिपाही हथियार चलाते थे। अब ऐसे कंगूरे मंदिर आदि में भी बनने लगे हैं।

कंचन – पु० सोना, स्वर्ण, धतूरा।

कंजूस – *वि०* मक्खीचूस, कृपण, सूम। *प्र०* वह लाला बड़ा कंजूस है। उसके पास बहुत पैसा है पर न तो वह किसी को कुछ देना चाहता है न अपने ऊपर ही ख़र्च करना चाहता है।

कंटक – पु० 1. काँटा। 2. बाधा, रुकावट।

कँटीला – *वि०* काँटेदार, जिसमें काँटे हों। *प्र०* 1. नागफनी कँटीली होती है। 2. बाग़ के चारों ओर कँटीले तार लगा दो नहीं तो मवेशी पौधों को खा जाएँगे।

कंट्रोलटावर – पु० हवाई अड्डों पर बना ऊँचा टावर जो जहाज़ों के उतरने और उड़ने को नियंत्रित करता है और रेडियो द्वारा सहायता करता है।

कंठ – पु० 1. गला। *प्र०* कंठ सूख रहा है, पानी पिला दो। 2. सुर, आवाज़। *प्र०* कोयल का कंठ बड़ा मधुर होता है।

कंठस्थ – *वि०* ज़बानी याद। *प्र०* यह कविता कंठस्थ कर लो।

कंठास्थि – *स्त्री०* गले की हड्डी।

कंठी – *स्त्री०* छोटे-छोटे मनकों की माला, छोटी गुरियों का कंठा।

कंडक्टर – पु० बस में टिकट बेचनेवाला।

कंडी – *स्त्री०* छोटा कंडा, गोहरी, उपली, गोइंठी।

कंडील – *स्त्री०* मिट्टी, अबरक या कागज़ का बना लैंप जिसमें मोमबत्ती या दीया जलाकर रखते हैं। प्रायः सजावट के लिए दीपावली के अवसर पर इसे छत से लटकाते हैं।

कंद – पु० 1. वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे की हो; जैसे – सूरन, सकरकंदी इत्यादि। गाँठदार जड़ जिसे खाते हैं; जैसे – शकरकंद, ज़िमीकंद (सुरन) आदि। 2. शकरकंद।
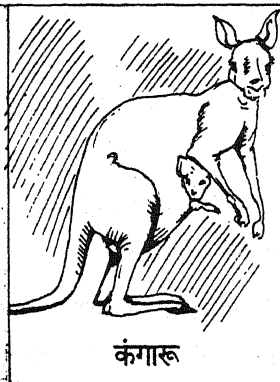
कंगारू | कंगूरा | कंट्रोलटावर | कंद

कंधा | कंपाउंडर | कंप्यूटर | ककड़ी
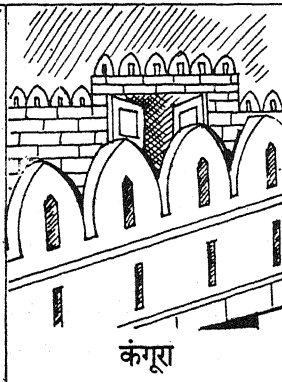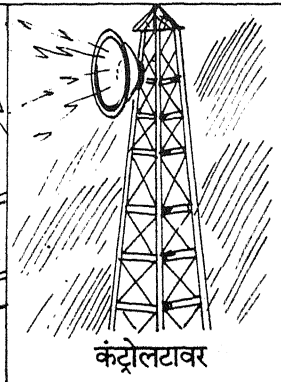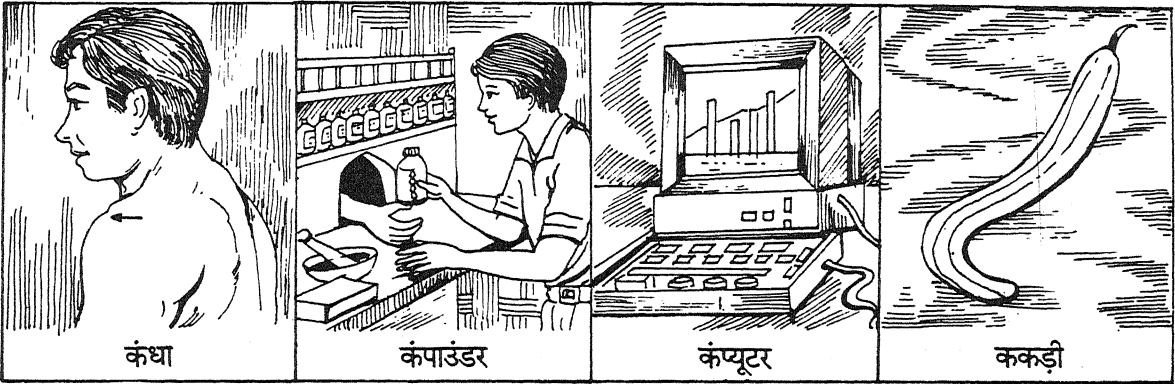
कंदमूल – पु॰ एक पौधे की गूदेदार जड़ जिसे भूनकर, उबालकर या यों ही खाते हैं।

कंदील – *स्त्री॰* दे॰ कंडील।

कंधा – पु॰ बाँह और गर्दन के बीच का भाग, स्कंध। मु॰ *कंधे से कंधा छिलना* – बहुत अधिक भीड़ होना। प्र॰ उस मेले में तो कंधे से कंधा छिल रहा था। *कंधे से कंधा मिलाना* – पूरा सहयोग करना। प्र॰ तुम काम शुरू तो करो, लोग कंधे से कंधा मिलाकर तुम्हारी पूरी सहायता करेंगे।

कँपकँपी – *स्त्री॰* थरथराहट, कंपन, थरथरी। प्र॰ 1. बड़ी सर्दी है, कँपकँपी हो रही है। 2. मलेरिया बुख़ार है। इसमें कँपकँपी होती ही है। 3. उस जंगल में अकस्मात् अपने पास शेर देखकर उसे कँपकँपी होने लगी। मु॰ *कँपकँपी छूटना* – कँपकँपी होना। प्र॰ सामने खड़े शेर को देखकर तो मेरी कँपकँपी छूट गई।

कंपन – पु॰ काँपना, कँपकँपी, थरथराहट, थरथरी।

कंपनी – *स्त्री॰* 1. संयुक्त धन से व्यापार करनेवाले व्यक्तियों का समूह। 2. जत्था। 3. नाटक या व्यापार आदि करनेवालों का समूह; जैसे – नाटक कंपनी, व्यापारिक कंपनी। 4. सेना की एक टुकड़ी। प्र॰ दंगे को दबाने के लिए सेना की दो कंपनियाँ भेजी गई हैं।

कंपाउंडर – पु॰ डॉक्टर का वह सहायक जो दवाएँ बनाने, मिलाने और देने आदि का काम करता है।

कंपोस्ट – पु॰ एक प्रकार की खाद जो गोबर, हरी पत्तियों आदि को ज़मीन के नीचे दबाकर बनाई जाती है।

कंप्यूटर – तरह-तरह का काम करने की मशीन, संगणक यंत्र।

ककड़ी – *स्त्री॰* एक प्रसिद्ध पतला-लंबा धारीदार फल। मु॰ *ककड़ी-खीरा समझना* – तुच्छ समझना। प्र॰ उसको ककड़ी-खीरा मत समझो, इस गाँव में वह बड़ी हस्ती है।

ककहरा – पु॰ क से ह तक की वर्णमाला। प्र॰ कौन कहता था कि वह पढ़-लिख लेता है, वह तो अभी ककहरा सीख रहा है।

कक्ष – पु॰ कमरा।

कक्षा – *स्त्री॰* 1. क्लास, श्रेणी, दर्जा। 2. ग्रहों के घूमने का मार्ग। प्र॰ पृथ्वी अपनी कक्षा में घूमती है।

कगार – पु॰ 1. ऊँचा किनारा। 2. नदी के किनारे का टीला।

कचरा – पु० 1. कूड़ा-करकट, कतवार। 2. कंकर-पत्थर और मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े जो अनाजों में मिलते हैं। 3. एक विशेष बेल का फल।

कचहरी – स्त्री० 1. न्यायालय, अदालत। 2. दरबार। प्र० उसके यहाँ तो कचहरी लगी है, बड़ी भीड़ है।

कचूमर – पु० 1. किसी चीज़ का वह रूप जो उसे कुचल देने से बन जाता है, पूरी तरह कुचली हुई चीज़। 2. भुर्ता, चोखा। *मु० कचूमर निकालना* – 1. लापरवाही से इस्तेमाल करके किसी चीज़ को ढीली-ढाली या तहस-नहस कर देना। प्र० तुमने मेरी साइकल का कचूमर निकाल दिया। 2. अधमरा कर देना, शरीर के किसी अंग को या पूरे शरीर को कुचल देना, मार-मारकर अंग-भंग कर देना। प्र० सिपाहियों ने मार-मारकर उसका कचूमर निकाल दिया।

कचौड़ी – स्त्री० एक प्रकार की पूड़ी जिसके भीतर उड़द, आलू आदि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा – वि० 1. फल या भोजन जो पका न हो। (*विलोम* – पका)। 2. जो आग में न पका हो; जैसे – कच्चा घड़ा। 3. कमज़ोर। प्र० यह लड़का हिसाब में अभी क़च्चा है। 4. अस्थायी, कुछ समय की, टेंपरेरी। प्र० नौकरी तो लग गई पर अभी कच्ची है। देखें कब पक्की होती है।

कच्छप – पु० कछुआ।

कछार – पु० समुद्र या नदी के किनारे की नीची और तर भूमि।

कछोटा, कछौटा – पु० धोती ऐसे पहनना जिसमें वह जाँघ तक ही रहे, कछनी।

कजरी – स्त्री० दे० कजली।

कजली – स्त्री० 1. एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है। 2. एक बरसाती त्योहार, सावन में मनाया जानेवाला एक त्योहार, इस त्योहार के अवसर पर गाया जानेवाला गीत। 3. काली गाय।

कटखना – वि० 1. काट खानेवाला। प्र० यह कुत्ता कटखना है। 2. जो काट खाने को दौड़े, क्रोधी, चिड़चिड़ा, बात-बात पर लड़ने-झगड़नेवाला। प्र० ना बाबा ना, उस कटखने के पास मैं नहीं जाऊँगा।

कटघरा – पु० दे० कठघरा।

कटड़ा – पु० दे० कटरा।

क़टपीस – पु० (कपड़े के थान में काफ़ी भाग बिक जाने पर बचा हुआ) छोटा टुकड़ा, टुकड़ा, पीस।

कचहरी कच्छप कछोटा

कटरा | कटार | कठपुतली | कठफोड़वा
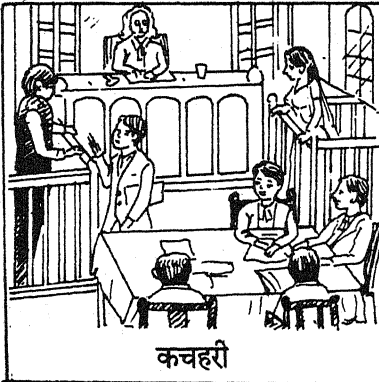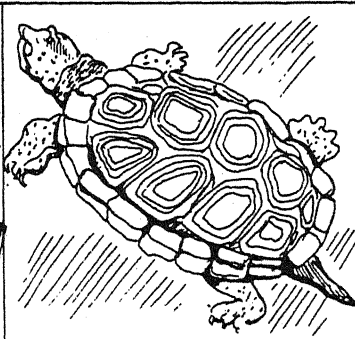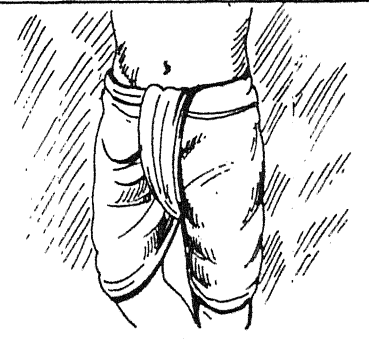
प्र० मेरे पास एक कटपीस है, इससे तुम्हारा ब्लाउज़ बन जाएगा।

कटरा – *पु०* 1. भैंस का नर बच्चा। 2. छोटा बाज़ार।

कटहल – *पु०* एक बड़े आकार का फल जिसका छिलका दानेदार और कड़ा होता है।

कटाई – *स्त्री०* 1. काटने का काम। *प्र०* कटाई हो रही है। 2. काटने की मज़दूरी। *प्र०* खेत की कटाई कितनी दी?

कटा-फटा – *वि०* जो कट-फट गया हो। *प्र०* यह कहाँ से कटा-फटा काग़ज़ उठा लाए? लाना ही था तो अच्छा लाते।

कटार, कटारी – *स्त्री०* 1. दोनों ओर धारवाला एक हथियार। 2. छोटी तलवार।

कटाव – *पु०* नदी-नाले द्वारा भूमि का काटा जाना। *प्र०* कटाव के कारण काफ़ी मिट्टी बह जाती है।

कटावदार – *वि०* जिसका किनारा सीधा न हो, जिसके किनारों को काटकर झालर जैसा बना दिया गया हो; जैसे – कटावदार कपड़ा।

कटोरदान – *पु०* ढक्कनदार कटोरानुमा एक बरतन जिसमें भोजन रखते हैं, टिफ़िन बाक्स, टिफ़िन।

कट्टर – *वि०* अपने मत, धर्म या विश्वास आदि में तनिक भी ढील न देनेवाला; जैसे – कट्टर आतंकवादी, कट्टर मुसलमान, कट्टर हिंदू।

कट्टरपंथी – *पु०* अपने पंथ (मत, विश्वास) का कट्टरता से पालन करनेवाला, कट्टरवादी।

कट्टरवादी – दे० कट्टरपंथी।

कट्टा – 1. *पु०* बोरा, बैग। 2. *वि०* तगड़ा, मोटा-ताज़ा। (यह केवल हट्टा-कट्टा शब्द में आता है)।

कठघरा – *पु०* 1. काठ का जंगलेदार घेरा। *प्र०* कचहरी में इजलास में बयान देने के लिए कठघरा बना होता है। 2. पिंजरा।

कठपुतली – *स्त्री०* 1. काठ या कपड़े आदि की गुड़िया जिसे तार या धागे आदि की सहायतक से नचाते हैं। 2. दूसरे के इशारों पर कठपुतली की तरह नाचने और चलनेवाला। *प्र०* मोहन तो कठपुतली है, राम के कहे के अनुसार ही चलता है।

कठफोड़वा, कठफोड़ा – *पु०* पेड़ों में अपनी लंबी चोंच से छेद करनेवाली ख़ाकी रंग की चिड़िया।

कठिनाई – *स्त्री०* कठिन होने की स्थिति या भाव, मुश्किल, मुश्किलाहट, दिक़्क़त।

कठोर – *वि॰* 1. बेरहम, निष्ठुर, निर्दय। *प्र॰* उसका दिल बड़ा कठोर है। 2. सख़्त, कड़ा। *प्र॰* उस देश के कई नियम बहुत कठोर हैं। (*विलोम* – कोमल)।

कठोरता – *स्त्री॰* 1. कड़ाई, सख़्ती। 2. बेरहमी, निर्दयता।

कठोरहृदय – *वि॰* बेरहम, निष्ठुर, निर्दय।

कठौता – *पु॰* काठ से बना हुआ चौड़े मुँह का बड़ा बरतन।

कड़क – *स्त्री॰* 1. बादल से गिरनेवाली बिजली की तेज़ आवाज़। *प्र॰* बरसात में कभी-कभी बिजली कड़क के साथ मकान, पेड़ या आदमी आदि पर गिरती है। 2. तेज़। *प्र॰* मास्टर साहब की बड़ी कड़क आवाज़ है।

कड़कड़ाना – *अ॰* 1. कड़कड़ शब्द करना। 2. 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। *प्र॰* उस मकान पर अभी-अभी बिजली कड़कड़ाकर गिरी है।

कड़कड़ाहट – *स्त्री॰* कड़कने की ध्वनि। *प्र॰* बिजली की कड़कड़ाहट से वह सारा क्षेत्र गूँज उठा।

कड़कना – *क्रि॰* 1. कड़क (दे॰) की आवाज़ करना। *प्र॰* बड़े ज़ोर से बिजली कड़क रही है, बाहर मत निकलो। 2. बिजली की तरह तेज़ आवाज़ में बोलना। *प्र॰* थानेदार कड़ककर बोले, भाग जाओ यहाँ से।

कड़वा – *वि॰* 1. एक विशेष प्रकार का बहुत बुरा स्वाद, कटु। *प्र॰* खीरा कड़वा है। 2. तेज़, तीता, तीखा, चरपरा। *प्र॰* मिर्च बड़ी कड़वी है। 3. जो अच्छा न लगे। *प्र॰* उन्होंने बड़ी कड़वी बात कह डाली।

कड़वा तेल – *पु॰* सरसों का तेल।

कड़वाहट – *स्त्री॰* कड़वा होना, कटुता।

कड़ा – 1. *पु॰* (क) स्त्रियों के हाथ या पाँव में पहना जानेवाला एक गहना, पछुवा, वलय। (ख) पुरुषों, विशेषतः सिखों द्वारा हाथ में पहना जानेवाला बड़ा छल्ला। 2. *वि॰* सख़्त, कठोर। *प्र॰* 1. यह लकड़ी बहुत कड़ी है। 2. वहाँ के नियम बड़े कड़े हैं।

कड़ाई – *स्त्री॰* सख़्ती, कठोरता। *प्र॰* 1. नए थानेदार ने बड़ी कड़ाई की है, मजाल क्या कि इलाक़े में कोई वारदात हो जाए। 2. नए प्रिंसिपल कड़ाई से स्कूल के नियमों का स्वयं पालन करते हैं और छात्रों से भी करवाते हैं।

कड़ाका – *पु॰* 1. किसी चीज़ के टूटने की तेज़ आवाज़। 2. कड़क की तेज़ आवाज़।

कठौता | कड़कना | कड़ा | कड़ाका

कड़ाह   कढ़ाई   कताई
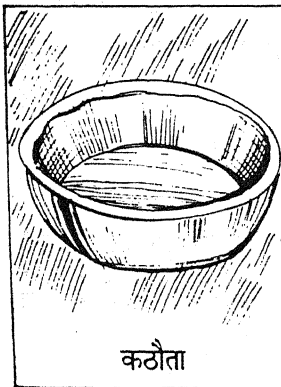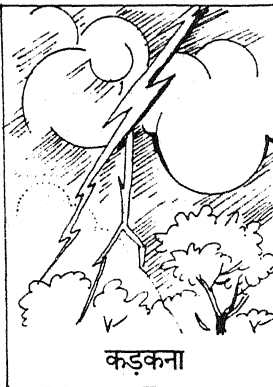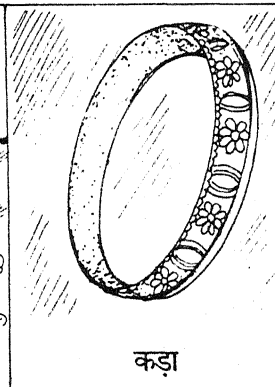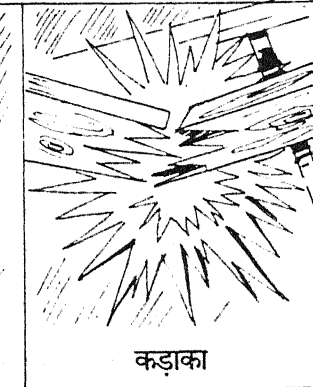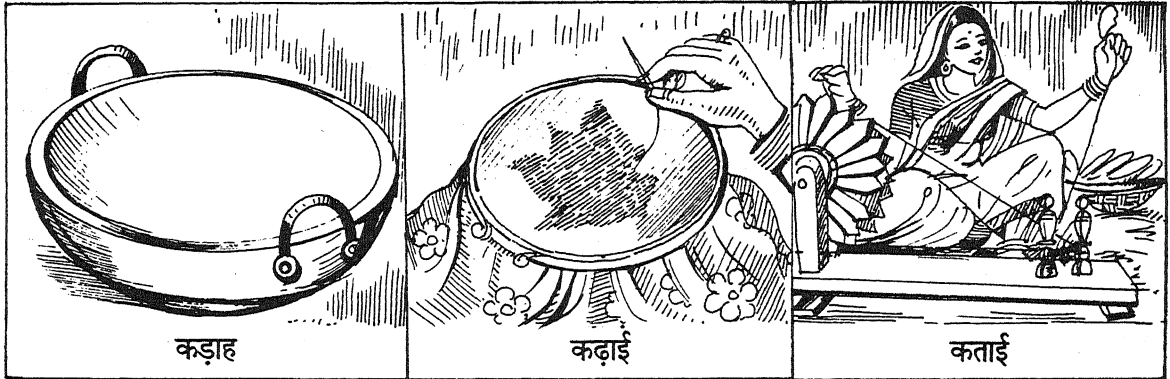
कड़ाके का – बहुत ज़्यादा, तेज़। *प्र०* आजकल कड़ाके की सर्दी पड़ रही है।

कड़ाह, कड़ाहा – पु० बहुत बड़ी और बहुत खुले मुँह की चपटी कड़ाही जिसमें ईख के रस को पकाकर गुड़ आदि या और चीज़ें बनाते हैं।

कड़ी – *स्त्री०* 1. मोटी-लंबी मज़बूत लकड़ी जो छत को सम्हालने के लिए दो दीवारों पर रखी जाती है, घरन, नीभ। 2. जंजीर का एक छल्ला जो दूसरे से जुड़ा होता है। 3. किसी बड़ी चीज़ का एक टुकड़ा; जैसे – गीत की कड़ी, बातों की कड़ी। 4. 'कड़ा' का स्त्रीलिंग रूप।

कडुवा – *वि०* दे० कड़वा।

कढ़ाई – *स्त्री०* 1. सूई-तागे से कपड़ों पर कसीदा काढ़ने या बेल-बूटे बनाने का काम। 2. कढ़ाई करने की मज़दूरी।

कढ़ी – *स्त्री०* बेसन, दही, नमक और पानी मिलाकर पकाई गई लपसी जैसी खाने की एक चीज़।

कण – पु० किसी चीज़ का छोटे-से-छोटा टुकड़ा, ज़र्रा; जैसे – धूल का कण, बालू का कण।

कणिका – *स्त्री०* 1. छोटा कण, ज़र्रा। 2. अत्यंत छोटा भाग, कार्पसल्स। *प्र०* लाल तथा श्वेत दोनों रुधिर 'कणिकाएँ' अस्थि-मज्जा में ही बनती हैं।

कतरन – *स्त्री०* कपड़े, काग़ज़ आदि के वे छोटे-छोटे टुकड़े जो काटने के बाद बच जाते हैं; जैसे – काग़ज़ की क़तरन, कपड़े की कतरन।

कतरना – *क्रि०* कपड़े, काग़ज़ आदि को कैंची से या सुपारी को सरौते से काटना।

कतरनी – *स्त्री०* बाल, कपड़े आदि काटने का एक औज़ार, कैंची।

क़तरा – पु० बूँद, जैसे पानी का क़तरा, ख़ून का क़तरा।

कताई – *स्त्री०* 1. कातने का काम। 2. कातने की मज़दूरी।

क़तार – *स्त्री०* पंक्ति, पाँत, लाइन। *प्र०* एक क़तार में खड़े हो जाओ, बारी-बारी से सबको मिठाई मिलेगी।

कत्थई – *वि०* कत्थे-जैसा रंगवाला, गहरा लाल।

कत्थक – पु० 1. एक जाति जिसका काम गाना, बजाना और नाचना होता है। 2. एक शास्त्रीय नाच।

कत्था – पु० खैर (के पेड़) की लकड़ियों को उबालकर निकाला और सुखाया हुआ गाढ़ा अर्क़ या उसका सूखा पाउडर रूप जो पान में खाया जाता है, खैर।

क़त्ल – पु० जान से मार डालना, हत्या, ख़ून। प्र० उस बदमाश ने अपने दोस्त का ही क़त्ल कर दिया।

कथकली – स्त्री० केरल का एक नृत्य।

कथन – पु० कहना, कही हुई बात, उक्ति। प्र० तुम्हारा यह कथन सही नहीं है कि उसके दोस्त ने चोरी नहीं की।

कथरी – स्त्री० फटे-पुराने चिथड़ों से जोड़-जोड़कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी।

कथा – पु० 1. धार्मिक कहानी; जैसे – महाभारत की कथा, रामायण की कथा, सत्यनारायण की कथा। 2. कहानी, क़िस्सा।

कथा-वार्त्ता – स्त्री० पुराण आदि की कथाओं की चर्चा। प्र० आज मोहन के घर कथा-वार्त्ता होनेवाली है, आओ हम भी चलें।

कदंब – पु० एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसमें गोल पीले ख़ुशबूदार फूल निकलते हैं। प्र० कहा जाता है कि कृष्ण कदंब के पेड़ पर बाँसुरी बजाया करते थे।

क़द – पु० (मनुष्य के) शरीर की ऊँचाई। प्र० उस लड़के का क़द काफ़ी अच्छा है।

क़दम – पु० डग, चलने में दोनों पाँवों के बीच का अंतर। प्र० वह लंबे-लंबे क़दम बढ़ाता जा रहा है।

कद्दू – पु० 1. सीताफल, कोहड़ा, कुम्हड़ा। 2. घिया, लौकी।

कद्दूकश– पु० फल या सब्ज़ियों आदि के लच्छे निकालने का एक उपकरण।

क़द्र– स्त्री० इज़्ज़त, सम्मान, आदर। प्र० वह आदमी इतना अच्छा है पर तुम लोग उसकी क़द्र करना नहीं जानते।

कनक– पु० सोना।

कनकटा– वि० कटे हुए कानवाला; जैसे– कनकटा कुत्ता।

कनकौवा– पु० बड़ी पतंग, गुड्डी।

कनखजूरा– पु० भूरे या लाल रंग का कई पैरोंवाला एक ज़हरीला कीड़ा, गोजर।

कनपेड़ा– पु० एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिलटी निकल आती है।

कनस्तर – पु० टीन का बना चौकोर बरतन जिसमें अनाज, आटा, घी, तेल आदि रखा जाता है, टिन, टीन, पीपा।

क़नात– स्त्री० मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं। प्र० आज वहाँ भोज है, लोग क़नात लगा रहे हैं।

कनिष्ठिका– स्त्री० हाथ की किनारे की सबसे पतली और छोटी उँगली, कानी अँगुली।

कनेक्शन– पु० लगाव, संबंध।

कनेर– पु० एक छोटा पेड़ जिसमें लाल, पीले या सफ़ेद रंग के सुंदर फूल लगते हैं।

कदंब | कद्दूकश | कनकौवा

कपाल कपोत कफ़ क़बीला
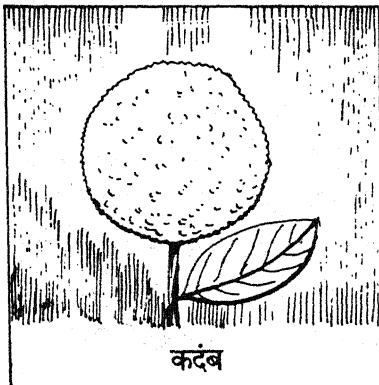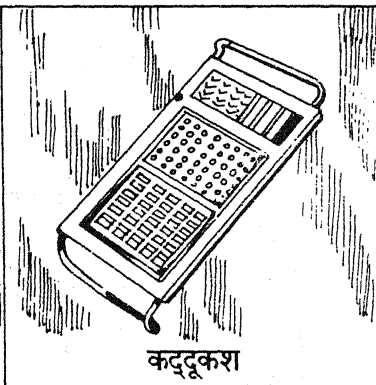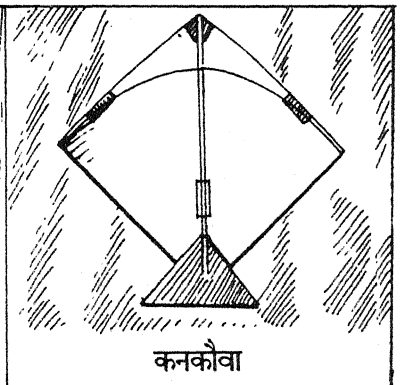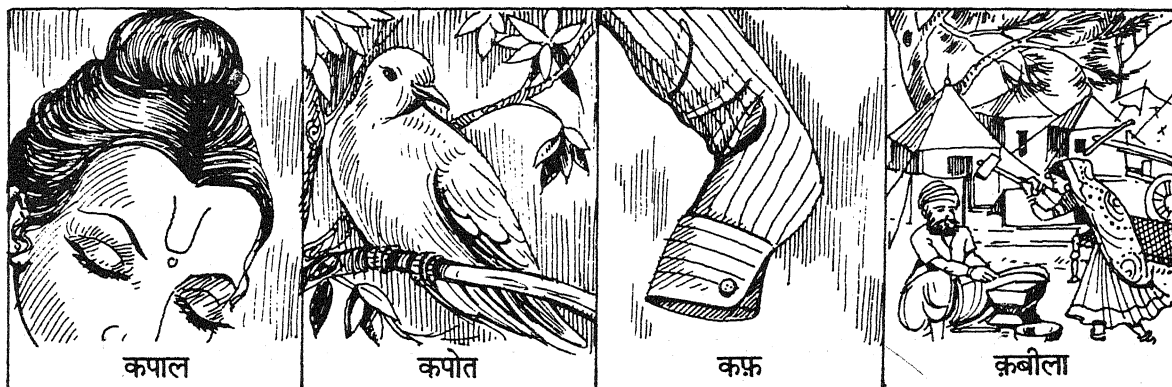
कन्नी– *स्त्री०* 1. कोर, किनारा, हाशिया। 2. पतंग का किनारा। *मु० कन्नी काटना* –बचना, बचकर निकलना। *प्र०* मुझसे कन्नी काटकर कहाँ जाओगे ?

कन्या– *स्त्री०* 1. क्वारी लड़की, अविवाहिता लड़की। *प्र०* इस कन्या की शादी करनी है। 2. लड़की, पुत्री। *प्र०* यह मेरे मित्र की कन्या है।

कपट– *पु०* छल, धोखा, ऊपर से कुछ और तथा मन में कुछ और होना।

कपटी– *वि०* कपट करनेवाला, धोखेबाज़, छल करनेवाला।

कपड़ा-लत्ता – *पु०* कपड़े, पोशाक।

कपाल– *पु०* माथा, मस्तक, ललाट।

कपास– *स्त्री०* 1. वह पौधा जिसके फल (डोंडे) से रुई निकलती है। 2. रुई।

कपूत– *पु०* कुपुत्र, नालायक़ बेटा, अयोग्य पुत्र (*विलोम*– सपूत)।

कपूर– *पु०* सफ़ेद रंग का एक सुगंधित पदार्थ।

कपोत– *पु०* कबूतर।

कप्तान– *पु०* 1. जल-स्थल सेना का एक अफ़सर। 2. दल-नायक, टीम का मुखिया। 3. पुलिस का एक अफ़सर, पुलिस सुपरिंटेंडेंट।

कफ़–1. *पु०* वह गाढ़ी, लसीली चीज़ जो खाँसने से बाहर आती है, बलग़म। 2. *स्त्री०* कमीज़ या बुशशर्ट की बाँह की कलाई पर रहनेवाली पट्टी।

कबड्डी– *स्त्री०* दो दलों के बीच खेला जानेवाला एक खेल जिसमें एक दल के खिलाड़ी को एक ही साँस में दूसरे दल के खिलाड़ियों में से किसी एक को छूकर आना पड़ता है, बरगत्ता।

कबरा – *वि०* चितकबरा, रंग-बिरंगे धब्बोंवाला; जैसे – कबरा कुत्ता, कबरी बिल्ली।

कबाड़– *पु०* काम में न आनेवाली चीज़ें, बेकार की चीज़ें, रद्दी, अंगड़-खंगड़। *प्र०* यहाँ इतना कबाड़ क्यों इकट्ठा कर रखा है ?

कबाड़ी– *पु०* कबाड़ या रद्दी चीज़ें ख़रीदने और बेचनेवाला।

क़बीला– *पु०* 1. जंगली जातियों का कोई एक वर्ग जो किसी एक व्यक्ति को अपना सरकार मानता हो। 2. जाति।

क़बूल– *पु०* मंजूर, स्वीकार। *प्र०* आपकी सारी शर्तें मुझे क़बूल हैं।

क़ब्ज़– *स्त्री०* पाख़ाने का साफ़ न होना।

क़ब्ज़ा – *पु०* 1. अधिकार। *प्र०* उस ज़मीन पर उन लोगों का क़ब्ज़ा है। 2. लोहे या पीतल की दो पट्टियों की चीज़ जो दरवाज़े या खिड़की के पल्ले में लगाई जाती है।

क़ब्ज़ियत – *स्त्री॰* पाख़ाने का साफ़ न आना, क़ब्ज़।

क़ब्र– *स्त्री॰* मुर्दा गाड़ने का गड्ढा।

क़ब्रगाह– *स्त्री॰* क़ब्रिस्तान, वह स्थान जहाँ क़ब्रें हों।

क़ब्रिस्तान– *पु॰* वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं, क़ब्रगाह।

कभी-कभी– *अ॰* किसी-किसी समय, जब-तब, यदा-कदा, कभी। *प्र॰* मोहन, कभी-कभी आ जाया करो।

कमंडलु– *पु॰* संन्यासियों का जलपात्र जो धातु, मिट्टी, तुमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है।

कमंद– *स्त्री॰* फंदेदार रस्सी जिससे मकान आदि पर चढ़ते हैं, रस्सियों की सीढ़ी।

कमची– *स्त्री॰* 1. पतली लचीली टहनी या बाँस की तीली जिससे टोकरी आदि बनाते हैं। 2. पतली लचकदार छड़ी।

कमज़ोर– *वि॰* 1. कमज़ोर या कम ताक़तवाला, जिसमें शक्ति कम हो। *प्र॰* यह मरीज़ अभी कमज़ोर है, इसे अभी मेहनत या काम न करने दो। 2. किसी विषय में कम ज्ञान या कम अभ्यासवाला। *प्र॰* गणित में यह विद्यार्थी कुछ कमज़ोर है।

कमज़ोरी– *स्त्री॰* निर्बलता, दुर्बलता। *प्र॰* कमज़ोरी के कारण वह ठीक से चल नहीं पाता।

कमठी– *स्त्री॰* बाँस या लकड़ी आदि की पतली खपच्ची जो फ्रैक्चर आदि होने पर बाँधी जाती है।

कमर– *स्त्री॰* शरीर के बीच का भाग जो पेट और पीठ के नीचे चूतड़ के ऊपर होता है, कटि। *मु॰ कमर झुकना* –बुड्ढा हो जाना। *कमर तोड़ना* – बिना ताक़त के कर देना, शक्तिहीन कर देना, पस्तहिम्मत कर देना, बेसहारा बना देना। *प्र॰* 1. बेटे की मौत ने उसकी कमर तोड़ दी। 2. वह बुढ़िया अपने पति के बिस्तर पर पड़े होने के बावजूद, सब कुछ सम्हाल रही थी, पर अब पति की मौत ने तो उसकी कमर ही तोड़ दी।

कमल– *पु॰* एक प्रसिद्ध फूल जो स्थिर पानी में पैदा होता है।

कमांडर– *पु॰* 1. सेनापति। 2. सेना की किसी टुकड़ी का अफ़सर। 3. कंपनी कमांडर।

कमाई– *स्त्री॰* आमदनी, कमाया हुआ रुपया-पैसा। *प्र॰* इस धंधे में अच्छी कमाई है।

कमाऊ– *वि॰* कमानेवाला, कमासुत। *प्र॰* उनका बेटा बड़ा कमाऊ है।

कमान– *स्त्री॰* 1. धनुष। 2. फ़ौज की एक इकाई;
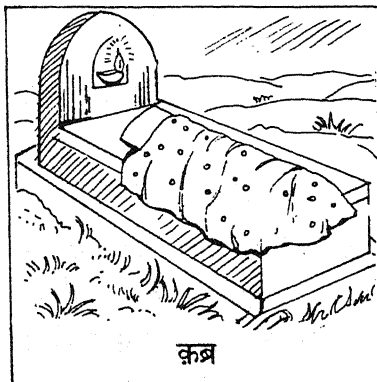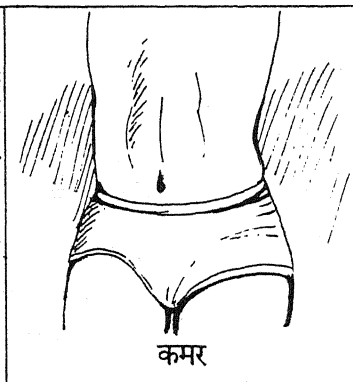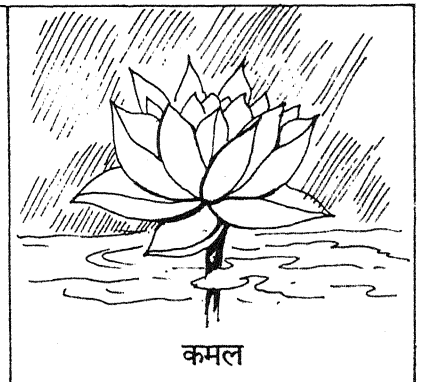
क़ब्र | कमर | कमल
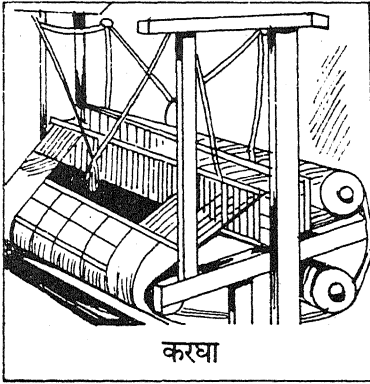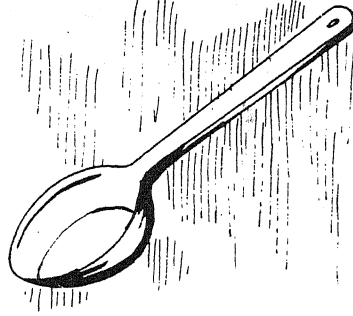
करघा करछी करतब

जैसे – पश्चिमी कमान, दक्षिणी कमान। 3. हुक्म, आज्ञा।

कमाना– *क्रि॰* कामकाज करके रुपए-पैसे पैदा करना, व्यापार या नौकरी करके धन कमाना।

कमानी– *स्त्री॰* 1. चश्मे की डंडी। 2. छतरी की तीली। 3. स्प्रिंग।

कमानीदार–*वि॰* कोई चीज़ जिसमें कमानी लगी हो, स्प्रिंगदार। *प्र॰* कमानीदार तराजू की सहायता से भी वज़न लिया जाता है।

कमाल– *पु॰* आश्चर्यजनक कार्य, अनोखा या अचरजवाला काम, सराहनीय काम। *प्र॰* लड़ाई में तो उस सिपाही ने कमाल कर दिया, इसीलिए उसको तरक्की मिल गई है।

कमिशनर – *पु॰* कमिशनरी (दे॰) का सबसे बड़ा अफ़सर, आयुक्त; जैसे – पुलिस कमिशनर, आयकर कमिशनर।

कमिशनरी – *स्त्री॰* कई ज़िलों का एक समूह, कमिशनर के मातहत इलाक़ा।

कमीना– *वि॰* छोटा, नीच, ओछा, क्षुद्र, खोटा।

कमीशन–*पु॰* बेचने पर मिलनेवाला धन, दलाली।

कमेंटरी– *स्त्री॰* किसी खेल या समारोह आदि का आँखों-देखा हाल। *प्र॰* रेडियो पर खेलों के मैच, कलकत्ते की काली-पूजा, मथुरा की जन्माष्टमी तथा रामलीला आदि की कमेंटरी आती हैं।

कमेटी– *स्त्री॰* किसी खास काम के लिए कुछ चुने हुए आदमियों का समूह, समिति। *प्र॰* दशहरा का इंतज़ाम करने के लिए एक कमेटी बनाई गई है।

कम्प्यूटर– दे॰ कंप्यूटर।

कम्यूनिस्ट – *पु॰* कम्यूनिज़्म का अनुयायी, मार्क्सवादी, साम्यवादी।

कर –*पु॰* 1. टैक्स, महसूल; जैसे – बिक्रीकर, आयकर, संपत्तिकर। 2. हाथ।

करघा –*पु॰* कपड़ा बुनने का उपकरण या यंत्र। *प्र॰* करघे पहले तो केवल हाथ से चलते थे अब बिजली से भी चलते हैं।

करछी –*स्त्री॰* बड़ी डाँड़ी या बड़ा चम्मच जिससे दाल आदि चलाते या निकालते हैं, करछुल।

करतब –*पु॰* 1. ऐसा कार्य जो अचरज में डाल दे। *प्र॰* उस मदारी के करतब देखकर आश्चर्य होता था। 2. बुरे कार्य, करतूत। *प्र॰* तुम्हारे करतब ही ऐसे हैं कि तुम्हें डंडे लगाए जाएँ।

करतूत –*स्त्री॰* 1. शरारत, शैतानी। 2. चालाकी,

चालबाज़ी। 3. ग़लत काम, करतूत। *प्र०* तुम्हारी करतूत ही ऐसी है कि लोग तुम्हारी निंदा करें।

करनी – *स्त्री०* किया हुआ काम, कर्म, काम। *प्र०* तुम्हारी करनी तुम्हारे आगे आएगी। 2. दीवार जोड़ने में ईंटों पर गारा आदि लगाने का औज़ार, कनन।

करफ़्यू – दे० कर्फ़्यू।

करम – *पु०* 1. कर्म, काम, करनी। 2. भाग्य, तक़दीर। *प्र०* मेरे तो करम ही ख़राब हैं। *मु० करम फूटना* – दुर्भाग्य होना, बदक़िस्मती होना। *प्र०* मेरे तो करम ही फूट गए जो ऐसे आदमी से शादी हुई।

करवट – *स्त्री०* दाईं या बाईं ओर लेटना। *मु० करवट बदलना* – दाईं ओर से बदलकर बाईं ओर लेटना या बाईं ओर से बदलकर दाईं ओर लेटना। *प्र०* बच्चे को काफ़ी कष्ट है, रात-भर करवट बदलता रहा, सो नहीं सका।

करारा – *वि०* 1. आँच पर इतना तला या सेंका हुआ कि कुर-कुर की आवाज़ करे, कुरकुरा; जैसे – करारे पापड़, करारे बिस्कुट। 2. ज़बरदस्त, ज़ोरदार, तेज़; जैसे – करारा उत्तर, करारा जवाब, करारा तमाचा।

कराह – *पु०* तकलीफ़ के कारण मुँह से निकलनेवाली आवाज़। *प्र०* उसकी कराह सुनकर मैं जाग उठा।

कराहना – *क्रि०* दर्द के कारण आह-आह करना। *प्र०* उस कमरे में कोई कराह रहा है क्या?

क़रीब – 1. *अ०* निकट, नज़दीक, पास। *प्र०* नदी मेरे घर के क़रीब ही है। 2. *वि०* लगभग। *प्र०* करीब पचास आदमी इधर ही आ रहे हैं।

क़रीब-क़रीब – *अ०* लगभग, प्रायः। *प्र०* मैंने कोर्स की तैयारी तो क़रीब-क़रीब कर डाली है।

करुणा – *स्त्री०* दया। *प्र०* उस ग़रीब की हालत देखकर लोग करुणा से भर गए।

करेंट – *पु०* धारा, प्रवाह। *प्र०* बिजली का करेंट लगने से उस लड़के की मौत हो गई।

करेला – *स्त्री०* दे० करैला।

करैला – *पु०* सब्ज़ी के काम आनेवाला एक हरा लंबोतरा फल जो लता में लगता है। *लो० एक तो करैला दूजे नीम चढ़ा* – बुरा आदमी यदि बुरे की संगत में पड़ जाए तो और भी बुरा हो जाता है।
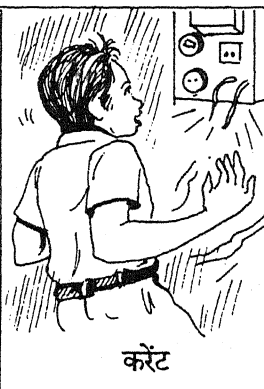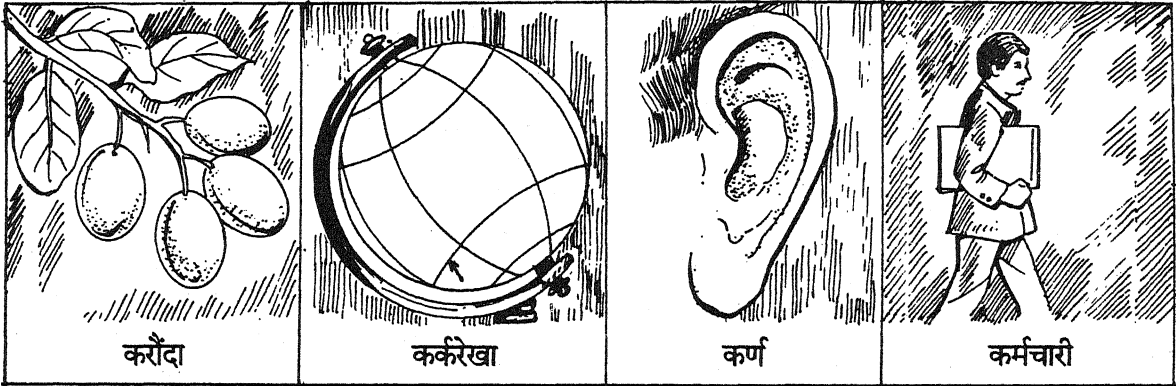
करौंदा | कर्करेखा | कर्ण | कर्मचारी

करोड़– *वि॰* सौ लाख, 1,00,00,000।

करोड़पति –*वि॰* वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों, बहुत धनी।

करौंदा – चटनी, अचार आदि के काम आनेवाला लाल-सफ़ेद रंग का एक खट्टा फल या उसका काँटेदार झाड़।

कर्करेखा –*स्त्री॰* वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में मानी गई है।

कर्कश –*वि॰* कड़ा, कठोर, अप्रिय; जैसे – कर्कश स्वर, कर्कश आवाज़।

क़र्ज़– *पु॰* ऋण, उधार।

क़र्ज़दार– *पु॰* क़र्ज़ लेनेवाला, जिसने क़र्ज़ लिया हो, ऋणी, क़र्ज़ख़ोर।

कर्ण–*पु॰* 1. कान। 2. कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहादुर और दानी था।

कर्णपटल– *पु॰* कान का पर्दा। *प्र॰* लकड़ी या आलपिन से कान को नहीं खुजलाना चाहिए नहीं तो कर्णपटल फट जाता है।

कर्तव्य– *पु॰* फ़र्ज़, ऐसा कार्य जिसे करना समाज, धर्म, नीति और ज़िम्मेदारी की दृष्टि से आवश्यक हो।

कर्ता– *पु॰* 1. काम को करनेवाला; जैसे – कार्यकर्ता। 2. (व्याकरण में) क्रिया को करनेवाला; जैसे – 'मोहन दौड़ता है' वाक्य में 'मोहन' कर्ता है। 3. संसार को रचने या बनानेवाला, ईश्वर। *प्र॰* मेरे मन कछु और है कर्ता के मन और।

कर्ता-धर्ता– *पु॰* वह जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो, सर्वे-सर्वा, सब कुछ करनेवाला। *प्र॰* इस समारोह के कर्ता-धर्ता तो ये लोग हैं।

कर्फ़्यू– *पु॰* दंगा-फ़साद के समय लोगों को घर से बाहर न निकलने का आदेश। *प्र॰* आज तो उस पूरे क्षेत्र में कर्फ़्यू लगा दिया गया है।

कर्म– *पु॰* 1. काम, कार्य। *प्र॰* प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म का फल मिलता है। 2. भाग्य, तक़दीर। *प्र॰* क्या कहें, लगता है कि कर्म में यही लिखा है। 3. (व्याकरण में) वाक्य का वह शब्द जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े; जैसे – 'राम पेड़ काटता है' वाक्य में 'काटना' क्रिया का प्रभाव 'पेड़' कर्म पर पड़ रहा है। पेड़ ही काटा जा रहा है।

कर्मचारी– *पु॰* किसी दफ़्तर या फ़ैक्टरी आदि में तनख़्वाह लेकर काम करनेवाला। *प्र॰* तुम्हारे कार्यालय में कुल कितने कर्मचारी हैं?

कर्मठ– *वि॰* काम में जुटा रहनेवाला, परिश्रम और लगन से काम करनेवाला, कर्मनिष्ठ, परिश्रमी। *प्र॰* तुम्हारे पिताजी तो बड़े कर्मठ हैं, कभी मैंने उन्हें हाथ-पर-हाथ धरे बैठे नहीं देखा।

कर्मवीर– *पु॰* काम करने में जुटा रहनेवाला, काम करते रहने की दृष्टि से वीर, कर्मनिष्ठ, कर्मठ। *प्र॰* इस दुनिया में कर्मवीर कम होते हैं ज़्यादा लोग बातवीर होते हैं।

कर्मशाला– *पु॰* दे॰ कार्यशाला।

कलंक– *पु॰* धब्बा, दाग, लांछन। 2. बदनामी, अपयश।

कलंकित– *वि॰* जिसे कलंक लगा हो, बदनाम।

क़लई– *स्त्री॰* 1. राँगे का मुलम्मा। *प्र॰* पतीले और गिलास में क़लई करानी है। 2. घर में चूने की पुताई, रंग-रोग़न। 3. बाहरी तड़क-भड़क। 4. रहस्य, भेद। *मु॰ क़लई खुलना*– भेद खुलना। *प्र॰* ऐसा मत करो, नहीं तो तुम्हारी क़लई खुल जाएगी।

कलकल– *पु॰* नदी या झरने के बहाव की मधुर ध्वनि। *प्र॰* नदियों की कलकल ध्वनि संगीत का आनंद देती है।

कल-कारख़ाना– *पु॰* ऐसे उद्योग-धंधे जो मशीनों से चलते हैं, मशीनी उद्योग। *प्र॰* फ़रीदाबाद में कल-कारख़ानों की भरमार है।

कलक्टर– *प्र॰* ज़िले का सबसे बड़ा अफ़सर, ज़िलाधीश।

कलगी– *स्त्री॰* 1. पगड़ी या ताज़ में लगाया जानेवाला शुतुरमुर्ग आदि चिड़ियों का सुंदर पंख। 2. कुछ चिड़ियों के सिर की ताज़नुमा चोटी; जैसे – मोर की कलगी, मुर्ग़े की कलगी। 3. इमारत का शिखर।

कलफ़– *पु॰* कड़ापन लाने के लिए कपड़ों में लगनेवाली माँड़ी। *प्र॰* बिना कलफ़ के कपड़ों की तह जल्दी ख़राब हो जाती है।

क़लम– *स्त्री॰* 1. जिससे लिखते हैं, पेन, लेखनी। 2. पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह लगाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिए काटी जाए। 3. पुरुष की कनपटी के पास उस्तरे या ब्लेड से कटे बाल।

क़लमकारी– *स्त्री॰* क़लम से किया हुआ काम, क़लम से बनाए हुए बेल-बूटे, एक प्रकार की चित्रकला। *प्र॰* आंध्र प्रदेश में कालाहस्ती की क़लमकारी चित्रकला प्रसिद्ध है।

कर्मठ | कलगी | क़लम | क़लमकारी
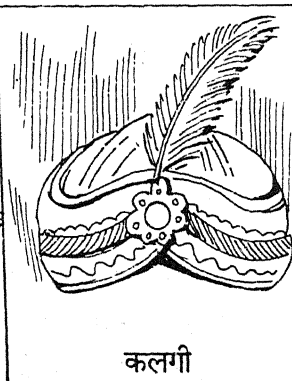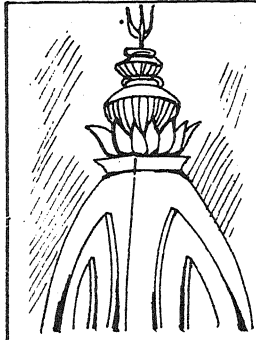
कलमा– *पु०* 1. वाक्य। 2. वह वाक्य जो इस्लाम धर्म का मुख्य मंत्र है –'ला इलाह इल्लिलाह मुहम्मद उर रसूलिल्लाह।' *मु० कलमा पढ़ना* – इस्लाम धर्म अपनाना, मुसलमान बनना।

क़लमी– *वि०* क़लम काटकर लगाया हुआ पौधा या पेड़; जैसे – क़लमी गुलाब, क़लमी आम।

कलश– *पु०* 1. गगरा, घड़ा। 2. मंदिर का शिखर। *प्र०* उस मंदिर का कलश सोने का है।

कलसा– *पु०* धातु का घड़ा।

कला– *स्त्री०* 1. ऐसा कार्य जिसे करने में विशेष कौशल और प्रतिभा की ज़रूरत हो, वह कौशल, आर्ट; जैसे – चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्यकला, संगीत कला, अभिनय कला आदि। 2. हुनर, क्रैफ़्ट, कारीगरी; जैसे – बढ़ई, सुनार या लुहार की कला।

कलाई– *स्त्री०* पहुँचा, गट्टा, हथेली के जोड़ के ऊपर, हथेली और पहुँचे के बीच का भाग; जैसे – कलाई घड़ी। *प्र०* आज रक्षाबंधन है, मोहन की कलाई राखियों से भरी हुई है।

कलाकार– किसी भी कला का माहिर, आर्टिस्ट। *प्र०* मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतकार, अभिनय करनेवाला तथा कवि, ये सभी कलाकार हैं।

कलाकृति– *स्त्री०* कला की कोई भी कृति, कोई भी कलामयी रचना।

कला-कौशल– *पु०* दस्तकारी, कारीगरी।

कलियुग– *पु०* हिंदू धर्म में कल्पित चार युगों में से आख़िरी जो आजकल चल रहा है, वर्तमान युग।

कली– *स्त्री०* अनखिला फूल, कलिका, गुंचा।

कलेंडर– *पु०* वह काग़ज़ जिस पर तारीख़ और दिन दिए होते हैं, तिथिपत्र।

कलेजा– *पु०* 1. हृदय, दिल। 2. जिगर, यकृत। *मु० कलेजा कड़ा करना* –किसी भी धक्के या परेशानी के लिए हिम्मत बटोरना, साहस बटोरना। *प्र०* अब मैंने कलेजा कड़ा कर लिया है, जो भी होगा देखा जाएगा। *कलेजा मुँह को आना* –घबराना, बहुत ज़यादा घबराहट होना, बेचैन हो जाना। *प्र०* सुना है पिताजी बीमार हैं। उनकी ख़बर लेने भाई साहब गए थे, अब वे आनेवाले हैं, मेरा कलेजा तो मुँह को आ रहा है। *कलेजे से लगाना* – छाती से लगाना, गले से लगाना। *प्र०* खोए हुए बेटे को पाकर माँ ने दौड़कर उसे कलेजे से लगा लिया।

कलेवा– *पु०* सवेरे का जलपान, नाश्ता, कलेऊ।

कलैंडर– *पु०* दे० कलेंडर।

कलोल– पु॰ खिलवाड़, क्रीड़ा। प्र॰ रंग-बिरंगे पंखोंवाले पक्षी करें कलोल।

कल्पना– स्त्री॰ 1. बिना किसी ठोस आधार के मानी हुई बात या वस्तु। प्र॰ यह आपकी कल्पना है, सचाई नहीं। 2. एक आंतरिक शक्ति जो मन में नए-नए विचार, नई-नई बातें पैदा करती है। प्र॰ उनकी कल्पना-शक्ति बड़ी उर्वर (उपजाऊ) है।

कल्पित– वि॰ 1. जिसकी कल्पना कर ली गई हो, जो सचाई न हो, माना हुआ। प्र॰ 1. आपका भय कल्पित है; वे ऐसा नहीं करेंगे। 2. इस नाटक के सारे पात्र कल्पित हैं।

कल्याण– पु॰ भलाई, भला, उपकार, मंगल। प्र॰ 1. विश्व-कल्याण के लिए स्वामीजी यज्ञ करा रहे हैं। 2. यदि तुम मेरा यह काम करा दो तो मेरा बड़ा कल्याण हो।

कल्लर– वि॰ ऊसर, बंजर, रेहवाली। प्र॰ वह ज़मीन तो कल्लर है।

कल्ला– पु॰ 1. अंकुर, अँखुआ। प्र॰ अब इसमें कल्ला फूट रहा है। 2. हाल की निकली हुई कोमल पत्ती या टहनी।

कवच– पु॰ युद्ध के समय हथियार के वार से शरीर को बचाने के लिए लोहे के तारों से बना एक पहनावा।

कवयित्री – स्त्री॰ कविता करनेवाली स्त्री।

कवर– पु॰ पुस्तक के ऊपर चढ़ाया हुआ काग़ज़, आवरण।

कवर्ग– पु॰ क, ख, ग, घ, ङ अर्थात् क से शुरू होनेवाले व्यंजनों का वर्ग या समूह।

क़वायद– स्त्री॰ सेना या पुलिस के सिपाहियों की युद्धकाल की ड्रिल और परेड।

क़व्वाली– स्त्री॰ 1. एक प्रकार का सामूहिक गायन। प्र॰ आज वहाँ क़व्वाली होगी। 2. सामूहिक रूप से गाई जानेवाली विशेष प्रकार की रचना या कविता। प्र॰ उस शायर ने कुछ बड़ी अच्छी क़व्वालियाँ लिखी हैं।

कशीदा– पु॰ कपड़े पर सूई-धागे से बनाए गए बेल-बूटे आदि। प्र॰ वह लड़की बहुत अच्छे कशीदे काढ़ती है।

कशीदाकारी– स्त्री॰ कशीदा काढ़ने या बनाने की कला।

कशेरुक– पु॰ 1. रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड। 2. रीढ़
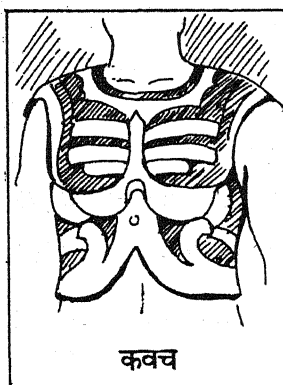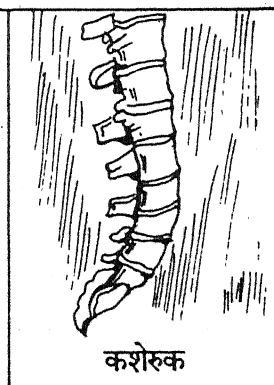
कवच | क़वायद | क़व्वाली | कशेरुक
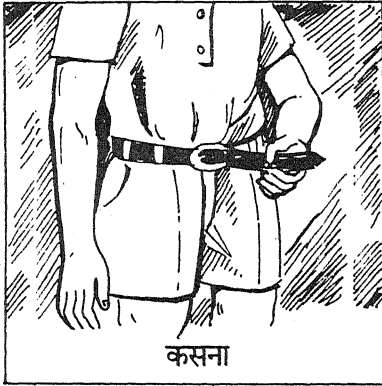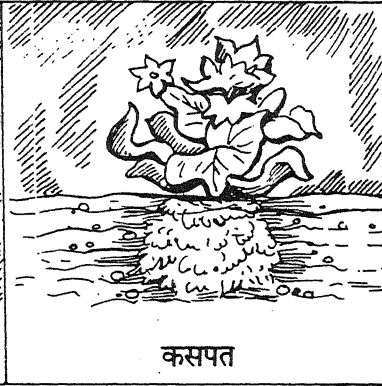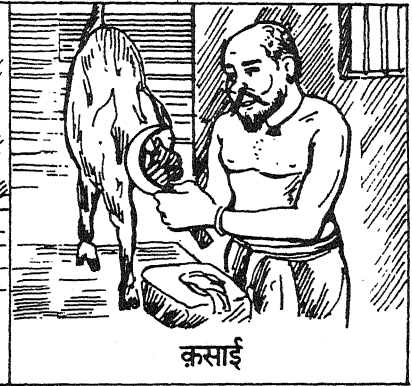
कसना | कसपत | क़साई

की छोटी-छोटी हड्डियाँ। प्र० रीढ़ में कई छोटी-छोटी हड्डियाँ होती हैं, जिन्हें कशेरुक कहते हैं।

कश्ती– *स्त्री०* दे० किश्ती।

कष्ट–*पु०* 1. पीड़ा, तकलीफ़। *प्र०* इस बीमारी से उसे बड़ा कष्ट है। 2. मुसीबत, परेशानी। *प्र०* पैसे की कमी से उसे बड़ा कष्ट है।

कष्टदायक– *वि०* कष्ट देनेवाला, तकलीफ़देह; जैसे – कष्टदायक रोग, कष्टदायक परिस्थिति, कष्टदायक स्थिति।

कसना– *क्रि०* 1. बंधन को मज़बूत करने या थोड़े में सामान को करने या चारपाई आदि को कड़ा करने के लिए डोरी आदि को खींचना; जैसे–चारपाई कसना, निवाड़ कसना, पेटी कसना, (कोई भी) बंधन कसना। 2. परखना, जाँचना। *प्र०* 1. सोने और चाँदी को (कसौटी पर) कसकर परखते हैं। 2. सोने को (कसौटी पर) कसकर देख लो।

कसपत– *पु०* एक पौधा जो पानी पर तैरता है।

क़सबा– दे० क़स्बा।

क़सम– *स्त्री०* शपथ, सौगंध।

कसर – *स्त्री०* कमी, न्यूनता, अपूर्णता। *प्र०* 1. काम पूरा नहीं हो पाया, अभी कुछ कसर है। 2.पाल के पकने में कुछ कसर है।

क़साई – *क्रि०* 1. बधिक, पशुओं को मारकर उनका गोश्त बेचनेवाला। 2. *वि०* बिना दया का, निष्ठुर, निर्दय, बेरहम। *प्र०* वह आदमी तो कसाई है, अपनी पत्नी को ऐसे पीट रहा था जैसे किसी जानवर को पीट रहा हो।

क़साईख़ाना – *पु०* बूचड़ख़ाना, पशुओं का वध करने की जगह।

कसार – *पु०* 1. चीनी मिला हुआ भुना हुआ आटा या सूजी, पँजीरी। 2. ऐसे आटे या सूजी का लड्डू।

कसाव – *पु०* 1. कसावट, कसने का भाव या क्रिया। 2. कसैलापन।

क़सीदा – *पु०* उर्दू या फ़ारसी में किसी की प्रशंसा में लिखी हुई कविता।

क़सूर – *पु०* दोष, अपराध, ग़लती। *प्र०* उस लड़के ने बहुत बड़ा क़सूर किया है, मास्टरजी उसे ज़रूर पीटेंगे।

क़सूरवार – *पु०*, *वि०* क़सूर करनेवाला। *प्र०* क़सूरवार वह नहीं है, मैं हूँ।

कसैला – *वि०* कसैले स्वादवाला, सुपारी (कसैली),

आँवला तथा हरड़ आदि के स्वादवाला। *प्र०* हरड़ का स्वाद कसैला होता है।

कसौटी – *स्त्री०* 1. सोना-चाँदी को घिसकर परखने का एक प्रकार का काला पत्थर, निकष। *प्र०* इस सोने में खोट है या यह असली है, इस बात का ठीक-ठीक पता कसौटी पर ही चल सकता है। 2. परखने का आधार, परीक्षा लेने का आधार। *प्र०* विपत्ति ही मित्रता की कसौटी है।

कस्तूरी – *स्त्री०* विशेष प्रकार के मृग की नाभि से निकलनेवाला प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य।

क़स्बा – *पु०* साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती, बड़ा गाँव, जहाँ सड़कें और दूकानें आदि हों, छोटा शहर।

क़हवा – *पु०* कॉफ़ी।

कहाकही – *स्त्री०* कहासुनी, वाद-विवाद। *प्र०* उन दोनों में बेकार में कहाकही हो गई।

कहानीकार – *पु०* कहानी लिखनेवाला।

कहावत – *स्त्री०* लोगों में प्रचलित कोई उक्ति। लोकोक्ति; जैसे – *जहाँ चाह वहाँ राह* – इसका अर्थ है यदि मनुष्य दिल से कुछ करना चाहता है तो किसी-न-किसी प्रकार उसे करने का रास्ता निकल ही आता है।

कहासुनी – *स्त्री०* कहाकही, वाद-विवाद, तकरार। *प्र०* छोटी-छोटी बातों पर बेवकूफ़ लोग कहासुनी करने लगते हैं।

कहीं-कहीं – *अ०* कुछ स्थानों पर, जहाँ-तहाँ, किसी-किसी जगह। *प्र०* कहीं-कहीं यह रोग फैल भी रहा है।

काँगड़ी – *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसे जाड़े में कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।

कांग्रेस – *पु०* 1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस। *प्र०* कांग्रेस की सीट पर वे चुने गए हैं। 2. सम्मेलन, समागम; जैसे – साइंस कांग्रेस। 3. संस्था। 4. अमरीकी संसद।

कांग्रेसी – 1. *वि०* कांग्रेस का। *प्र०* देश में वर्षों से कांग्रेसी सरकार रही है। 2. *पु०* कांग्रेस का सदस्य, कांग्रेस में विश्वासवाला। *प्र०* वह कांग्रेसी है।

काँच – *पु०* शीशा।

काँजी – गन्ने के रस में राई-नमक मिलाकर, पानी में काली गाजर और राई डालकर या माँड, राई, सिरके आदि को मिलाकर बनाया गया एक खट्टा पाचक पेय।

क़स्बा | काँगड़ी | काँच
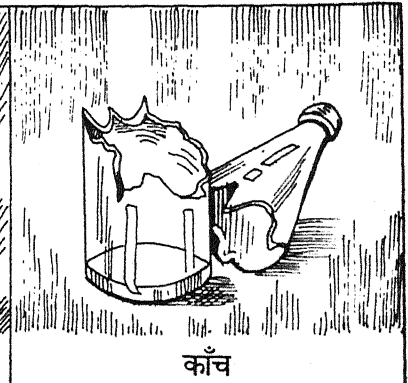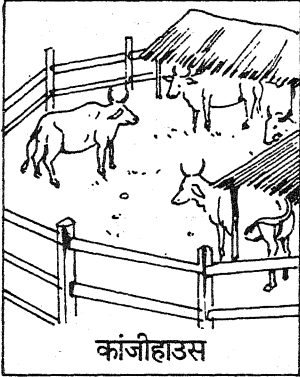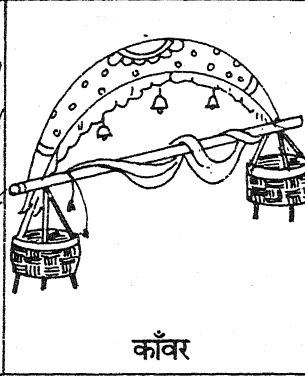
कांजीहाउस, कांजीहौस – *पु॰* मवेशीख़ाना, वह सरकारी बाड़ा जिसमें दूसरे के खेत आदि में चरनेवाले या लावारिस चौपाए बंद किए जाते हैं।

कँटेदार – *वि॰* कँटीला, काँटोंवाला। *प्र॰* 1. मोहन ने अपने बाग़ में चारों ओर कँटेदार तार लगा रखे हैं। 2. बबूल, करौंदा आदि कँटेदार होते हैं।

कांड – *पु॰* 1. कोई दुर्घटना; जैसे – हत्याकांड, अग्निकांड। 2. किसी ग्रंथ का खंड। *प्र॰* रामचरितमानस का पहला कांड बालकांड है।

कांति – *स्त्री॰* तेज, चमक, आभा। *प्र॰* इस उम्र में भी गुरुजी के चेहरे पर अद्‌भुत कांति है।

काँव-काँव – *स्त्री॰* 1. कौवे की आवाज़। 2. बेकार की चख़-चख़, व्यर्थ का शोर। *प्र॰* यह क्या काँव-काँव मचा रखी है?

काँवर – *स्त्री॰* फटे बाँस की बड़ी-सी लचीली पट्टी, जिसे कंधे पर रखकर, दोनों सिरों पर सामान लटकाकर ढोते हैं, बहँगी।

काँसा – *पु॰* जस्ते और ताँबे को मिलाकर बनाई गई एक धातु, कसकुट, कांस्य।

कांस्टेबल – *पु॰* पुलिस का सिपाही।

का – संबंध दिखाने का चिह्न; जैसे – राम का बेटा, मोहन की बेटी, उसका लड़का, उसके नौकर।

काइयाँ – *वि॰* धूर्त, चालाक।

काई – *स्त्री॰* 1. न बहनेवाले पानी की सतह पर जमनेवाली वनस्पति। *प्र॰* इस तालाब में नहाएँ कहाँ, चारों तरफ तो काई फैली हुई है। 2. मिट्टी या पत्थर आदि पर जमे बारीक हरे रेशे। *प्र॰* यहाँ काई जमी है, देखना फिसल न जाना। 3. पीतल-ताँबे आदि पर जमी हरी मैल।

काका – *पु॰* पिता का छोटा भाई, चाचा।

काकी – *स्त्री॰* माँ से छोटी, चाची।

काग – *पु॰* 1. कौआ। 2. शीशियों तथा बोतलों में लगाई जानेवाली डाट, काक।

काग़ज़ – *पु॰* सन, बाँस, चीथड़े आदि की लुगदी से बनाई हुई वस्तु जो लिखने तथा छापने आदि के काम आती है, पेपर।

कागा – *पु॰* कौआ।

काछ – *पु॰* धोती का छोर जिसे जाँघों के बीच में ले जाकर पीछे खोंसते हैं, लाँग।

काजल – *पु॰* दीए के धुएँ की कालिख़ जो आँख में सुरमे की तरह लगाई जाती है, अंजन।

क़ाज़ी – *पु॰* 1. इस्लाम के नियमों के अनुसार निर्णय करनेवाला न्यायाधीश। 2. मुसलमानों की शादी करानेवाला।

काजू – *पु॰* एक सफ़ेद मेवा।

काट – *स्त्री॰* 1. काटना, काटने की क्रिया। 2. काटने का ढंग। *प्र॰* इस कुर्ते का काट अच्छा है।

काट-छाँट – *स्त्री॰* काटना-छाँटना; जैसे – पौधों की काट-छाँट, दाड़ी-मूँछ की काट-छाँट।

काठी – *स्त्री॰* 1. ज़ीन जिसके नीचे काठ होता है। *प्र॰* घोड़े पर काठी कस दो, मुझे अभी जाना है। 2. देह की गठन। *प्र॰* उसकी कद-काठी अच्छी है।

काढ़ना – *क्रि॰* 1. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर निकालना। 2. कशीदाकारी करना, कपड़े आदि पर धागे से बेल-बूटे बनाना।

काढ़ा – *पु॰* ओषधियों या जड़ी-बूटियों को उबालकर निकाला हुआ अर्क़। *प्र॰* पहले लोग कई बीमारियों के लिए तरह-तरह के काढ़े पीते थे, अब तो केवल ज़ुकाम आदि के लिए ही काढ़ा पीया जाता है।

कातना – *क्रि॰* 1. रुई, रेशम और ऊन आदि को बटकर धागा बनाना। 2. चरखा चलाना। *प्र॰* गांधीजी प्रतिदिन चरखा कातते थे।

कातिक – *पु॰* हिंदू परंपरा का आठवाँ महीना जो क्वार के बाद आता है।

कान – *पु॰* सुनने का अंग, कर्ण। *मु॰ कान काटना* — किसी से आगे बढ़ जाना। *प्र॰* मोहन ने राम से ही यह सीखा था, लेकिन अपनी लगन और परिश्रम से वह इतना आगे बढ़ गया कि अब राम के कान काटता है। *कान का कच्चा* – बहुत जल्दी लोगों की बात का विश्वास कर लेनेवाला। *प्र॰* तुम कान के कच्चे हो, कभी धोखा खाओगे। *कान खड़े होना* — चौकन्ना होना, सचेत होना। *प्र॰* पहले तो वे कुछ ध्यान ही नहीं देते थे पर जब मैंने उन्हें पूरी बात बतलाई तो उनके भी कान खड़े हो गए।

काना – *वि॰* 1. जिसकी एक आँख बेकार हो, एक आँखवाला। 2. जिसकी आँखें तो दोनों हों पर एक से दिखाई न पड़े।

कानाफूसी – *स्त्री॰* ऐसे धीरे-धीरे बात करना कि कोई तीसरा सुन न सके। *प्र॰* यह यहाँ क्या कानाफूसी हो रही है? कोई गुप्त बात है क्या?

कानी उँगली – *स्त्री॰* पाँचों उँगलियों में सबसे छोटी उँगली।

क़ानून – *पु॰* राजनियम, नियम, विधान, आईन। *प्र॰* प्रत्येक देश के क़ानून अलग-अलग होते हैं।
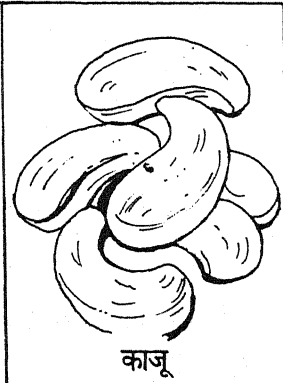
काजू काठी कातना काना
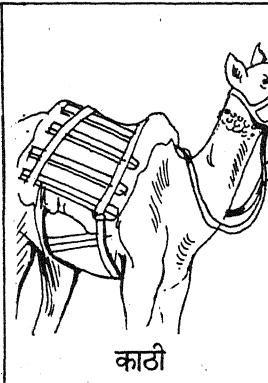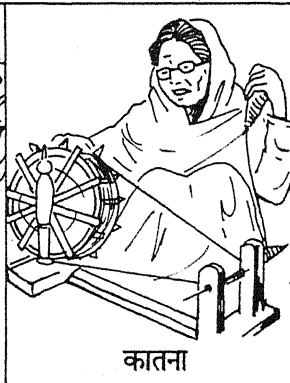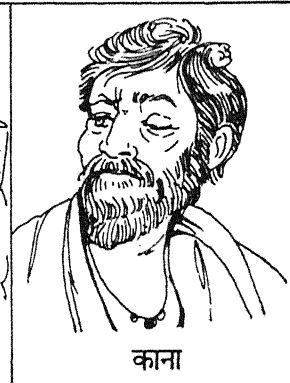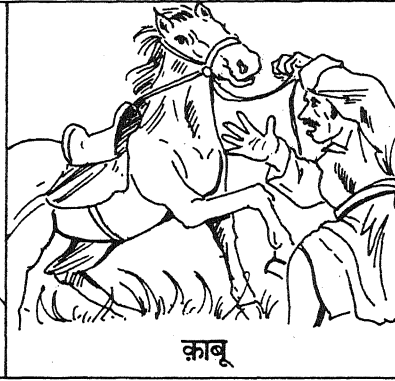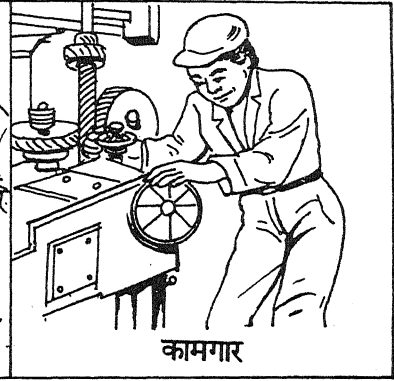
काबुली क़ाबू कामगार

कॉपी – *स्त्री०* 1. कोरे काग़ज़ों की लिखने की पुस्तिका, अभ्यास-पुस्तिका। 2. नक़्ल। *प्र०* परीक्षा में कॉपी करना बुरी बात है। 3. प्रतिलिपि। *प्र०* इस काग़ज़ की तीन कॉपियाँ करा लो।

काफ़िला – *पु०* 1. सौदागरों या मुसाफ़िरों का दल, कारवाँ। *प्र०* पुराने ज़माने में सौदागरों के काफ़िले एक देश से दूसरे देश में माल ले जाया करते थे। 2. पहियों पर बने चलते-फिरते घर।

काफ़ी – *वि०* जितना आवश्यक हो उतना, पर्याप्त। *प्र०* इतने कपड़े तुम्हारे लिए काफ़ी हैं, और लेकर क्या करोगे?

कॉफ़ी – *स्त्री०* चाय की तरह की पीने की एक चीज़, क़हवा।

काबुली – 1. *वि०* काबुल का; जैसे – काबुली चना, काबुली मेवे। 2. *पु०* काबुल का रहनेवाला व्यक्ति, अफ़ग़ान।

क़ाबू – *पु०* वश, अधिकार, ज़ोर, नियंत्रण। *प्र०* 1. उस घोड़े को क़ाबू करना कठिन है। 2. जब पुलिस कुछ नहीं कर पाई तो दंगों पर क़ाबू पाने के लिए सेना बुलानी पड़ी।

काम– *पु०* 1. जो किया जाए, कर्म, कार्य, काम-काज। 2. रोज़गार, व्यवसाय, धंधा। *प्र०* आजकल काम कुछ मंदा चल रहा है। *लो० काम को काम सिखाता है* – काम करने से ही काम आता है। *मु० काम आना* – मारा जाना। *प्र०* मेरे ताऊजी लड़ाई में काम आए। *काम तमाम करना* – मार डालना, ख़त्म कर देना। *प्र०* डाकुओं ने कल डाका तो डाला ही, कई लोगों का काम भी तमाम कर दिया।

काम-काज – *पु०* काम, कार्य। *प्र०* मोहन ख़ाली नहीं है, कुछ काम-काज में लगा है।

कामगार – *पु०* मज़दूर, श्रमिक।

कामचलाऊ – *वि०* जिससे काम चल सके, जो बहुत अच्छा तो न हो पर जिससे किसी तरह काम निकल जाए, जैसे-तैसे काम चलाने लायक़। *प्र०* मशीन मैंने खरीद तो ली पर बस कामचलाऊ ही है।

कामचोर – *वि०* जो काम से जी चुराए, आलसी।

काम-धाम – *पु०* काम-काज, काम-धंधा, धंधा।

कामधेनु – *स्त्री०* हिंदू पुराणों के अनुसार एक ऐसी गाय जो मनुष्य के मन की सारी इच्छाएँ पूरी कर देती है।

कामयाब – *वि०* 1. सफ़ल। *प्र०* वह अपने उद्देश्य में कामयाब हो गया। 2. उत्तीर्ण, पास। *प्र०* मोहन इम्तहान में कामयाब हो गया।

कामयाबी– *स्त्री॰* सफलता।

कॉमा – *पु॰* एक विराम चिह्न, अल्पविराम; यह ऐसा (,) लिखा जाता है। कॉमा इस बात का संकेत देता है कि इस स्थान पर बहुत थोड़ी देर तक रुकना है।

क़ायदा – *पु॰* 1. तरीक़ा, ढंग, नियम, विधान। 2. उर्दू की पहली किताब।

क़ायम – *वि॰* स्थिर, टिका हुआ। *प्र॰* मोहन अपने वायदे पर अब भी क़ायम है।

कायस्थ– *पु॰* एक जाति।

कायांतरित शैल – *पु॰* वे चट्टानें जो ताप और दाब से बदल गई हों।

काया– *स्त्री॰* शरीर, देह, जिस्म, तन।

कायापलट – *पु॰* पूरी तरह बदल जाना, बहुत बड़ा परिवर्तन। *मु॰ कायापलट करना* – 1. पूरी तरह बदल देना, बहुत बड़ा परिवर्तन करना। 2. शरीर या रूप को दूसरे शरीर या रूप में बदलना। *काया-पलट होना* – पूरी तरह बदल जाना, बहुत बड़ा परिवर्तन होना।

कार– *स्त्री॰* मोटर, मोटरगाड़ी।

कारक – 1. *वि॰* करनेवाला; जैसे – हानिकारक। 2. *पु॰* व्याकरण में संज्ञा और सर्वनाम का वह रूप जिसके द्वारा वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है। कर्ता, कर्म आदि कारक हैं।

कारख़ाना – *पु॰* वह स्थान जहाँ मशीनों और औज़ारों से बड़े पैमाने पर चीज़ें बनाई जाती हैं।

कारटून – *पु॰* ऐसा चित्र जिसमें किसी की शक्ल की झलक हो पर जिसमें कुछ अंगों को, घटा-बढ़ाकर उसे मज़ाकवाला बना दिया गया हो, व्यंग्य-चित्र।

कारण – *पु॰* वजह। *प्र॰* वर्षा न होने के कारण किसान की फसल सूख गई।

कारतूस – *पु॰* गोली-बारूद से भरा एक खोल या नली, जिसे बंदूक, पिस्तौल आदि में भरकर चलाते हैं।

कारपेट – *पु॰* क़ालीन, गलीचा।

कारपोरेशन – *पु॰* निगम, महानगर पालिका, बड़े शहरों की व्यवस्था करनेवाली संस्था।

कारबन – *पु॰* 1. हीरे, कोयले तथा पेट्रोल आदि में पाया जानेवाला एक तत्त्व। 2. कारबन पेपर (दे॰)।

कारबन पेपर – *पु॰* काली, नीली या लाल स्याही लगा एक पतला काग़ज़ जिसे प्रतिलिपि के लिए

कार | कारटून | कारतूस | कारपेट

कार्क
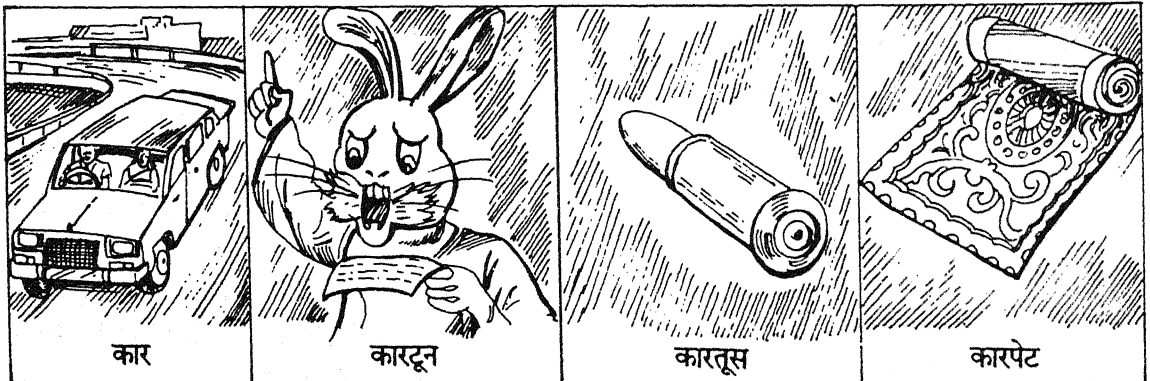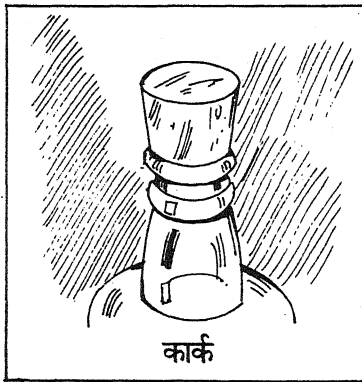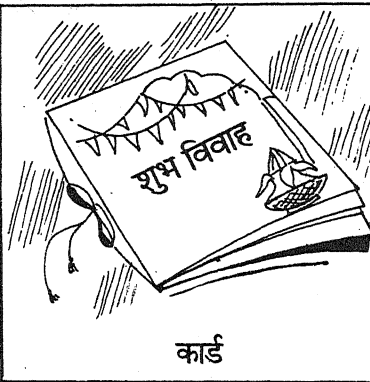
कार्ड

कार्यक्रम

टाइपराइटर पर टाइप करने या हाथ से लिखने में काम लाते हैं।

कारबार – पु० व्यापार, रोज़गार, व्यवसाय। प्र० नीलू बाबू का कारबार अब काफ़ी बढ़ गया है।

कारागार – पु० जेल, बंदीगृह।

कारावास – पु० जेल, जेलख़ाना, कारागार।

कारीगर – पु० हाथ का काम करने में कुशल व्यक्ति, शिल्पी।

कारोबार – पु० दे० कारबार।

कार्क – पु० 1. काग, डाट। 2. एक बहुत हल्की लकड़ी।

कार्ड – पु० 1. मोटे काग़ज़ का टुकड़ा; जैसे – शादी का कार्ड, बधाई कार्ड, पोस्टकार्ड। 2. पोस्टकार्ड। प्र० 1. मोहन के यहाँ से एक कार्ड आया है, जवाब देना है। 2. इस खिड़की पर कार्ड, लिफ़ाफ़ा, अंतर्देशीय आदि बिकते हैं।

कार्डबोर्ड – पु० गत्ता, दफ़्ती। प्र० कार्डबोर्ड के इस डिब्बे में टेलिविज़न सेट है।

कार्तिक – पु० क्वार के बाद तथा अगहन के पहले पड़नेवाला भारतीय परंपरा का आठवाँ महीना, कातिक।

कार्बन – पु० दे० कारबन।

कार्बन टेट्राक्लोराइड – स्त्री० दाग़ मिटाने का एक बहुत अच्छा मसाला।

कार्बन पेपर – पु० दे० कारबन पेपर।

कार्य – पु० जो किया जाए, काम। प्र० पिताजी एक कार्य से इलाहाबाद गए हैं।

कार्यकर्ता – पु० काम करनेवाला; जैसे – पार्टी के कार्यकर्ता।

कार्यकलाप – पु० कामों का समूह, बहुत-से काम। प्र० उनके कार्यकलाप की काफ़ी सराहना हो रही है।

कार्यकुशल – वि० कार्य करने में कुशल, काम करने में होशियार। प्र० मोहन बड़ा कार्यकुशल है।

कार्यकुशलता – वि० कार्य करने में कुशलता, कार्य-पटुता, काम करने में होशियारी। प्र० इसके लिए बहुत कार्यकुशलता की ज़रूरत है।

कार्यक्रम – पु० प्रोग्राम, कार्यों का क्रम, यह विवरण कि किसी व्यक्ति के काम, जलसे या समारोह आदि के अलग-अलग भाग किस क्रम से होंगे। प्र० 1. तुम्हारा कल का कार्यक्रम क्या है? 2. जलसे का कार्यक्रम कार्ड पर छपा है।

कार्य-विधि– पु॰ काम करने की विधि, तरीक़ा या ढंग। प्र॰ तुम्हारी कार्य-विधि ठीक नहीं है।

कार्यशाला – स्त्री॰ पढ़ने-लिखने या किसी अथवा किन्हीं विषयों पर विचार-विमर्श के लिए विशेष लोगों की बैठक, वर्कशॉप।

कार्यालय – पु॰ दफ़्तर, आफ़िस, वह स्थान जो किसी दफ़्तर, संस्था या संगठन आदि के नियमित कार्य के लिए हो।

कार्रवाई – स्त्री॰ काम, कार्य, कार्यवाही, किसी उद्देश्य से किया जानेवाला नियमित काम, सिलसिलेवार काम। प्र॰ जो छात्र परीक्षा में नक़ल करते पकड़े जाएँगे, उनके ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई की जाएगी।

काल – पु॰ 1. समय, जमाना; जैसे – जन्मकाल, मृत्युकाल, वर्तमान काल, भूतकाल, आधुनिक काल। 2. अंतिम समय, मृत्यु, मौत। प्र॰ इस संसार में जो भी पैदा होता है, एक दिन काल के गाल में समा जाता है।

कालपुरुष – पु॰ 1. ईश्वर का विराट् रूप। 2. काल, काल रूप में ईश्वर। 3. आकाश में दीखनेवाले तारासमूहों में से एक। प्र॰ आकाश में रात को सप्तर्षि (सप्त ऋषि) और कालपुरुष आदि तारासमूह दिखाई पड़ते हैं।

कॉलम – पु॰ अख़बार, पत्रिका, पुस्तक आदि के पन्ने पर खड़ी रेखा या ख़ाली जगह से बनाया गया खंड, स्तंभ। प्र॰ इस पत्रिका में प्रत्येक पृष्ठ पर दो कॉलम हैं।

कालर – पु॰ 1. कोट, कमीज़ और कुर्ते आदि में गले पर लगी हुई इकहरी या दुहरी पट्टी। प्र॰ यह कुर्ता कालरवाला है। 2. कालर के नीचे रहनेवाली हड्डियाँ।

कालरदार – पु॰ कालरवाला; जैसे – कालरदार कमीज़, कालरदार बुशशर्ट, कालरदार कुर्ता।

कालांतर – पु॰ दूसरा समय, समयांतर। *मु॰ कालांतर में* - कुछ समय बाद। प्र॰ पंडितजी छत से गिर पड़े थे और कालांतर में उनका देहांत हो गया।

कालाकलूटा – वि॰ बहुत काला।

कालापानी – पु॰ 1. आजीवन क़ैद की सज़ा। 2. अंडमान टापू जहाँ अंग्रेजों के ज़माने में आजीवन क़ैद का दंड पानेवाले भेजे जाते थे।

कालिख – स्त्री॰ 1. धुएँ से जमा पाउडर। प्र॰ लैंप के शीशे पर कालिख जम गई है, साफ़ कर दो। *मु॰ कालिख पुतना या लगना* – बदनाम होना।

कार्यालय | कालर | कालाकलूटा

कॉलिज काश्तकार किक
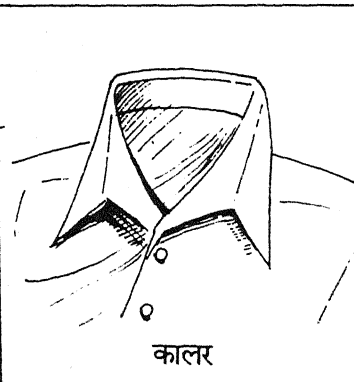
कालिख पोतना या लगाना – बदनाम करना। प्र० तुमने अपने इस कुकर्म से हम सब के नाम पर कालिख पोत दी।

कॉलिज, कॉलेज – पु० महाविद्यालय, वह विद्यालय जिसमें कहीं-कहीं बारहवीं कक्षा के बाद की पढ़ाई तथा कहीं-कहीं इंटर, बी० ए०, एम० ए० की पढ़ाई होती है।

कालिमा – स्त्री० 1. कालापन। (*विलोम* – सफ़ेदी)। 2. अंधकार; जैसे – रात की कालिमा। 3. कलंक, दोष।

काली खाँसी – स्त्री० एक प्रकार की बहुत बुरी खाँसी।

क़ालीन – पु० रुई या ऊन के मोटे धागे से बना बहुत मोटा बिछावन, जिसमें बेलबूटे आदि बने होते हैं, गलीचा।

कालीमिर्च – स्त्री० काले रंग का गोल और तीता या कड़वा दाना, जो मसाले के रूप में काम में लाया जाता है। प्र० काली मिर्च अधिक होने के कारण सब्ज़ी बहुत तेज़ हो गई है।

कॉलेज – पु० दे० कॉलिज।

कॉलोनी, कालोनी – स्त्री० बस्ती, मुहल्ला। प्र० हर शहर में अब नई-नई कॉलोनियाँ बस गई हैं।

काव्य – पु० कविता, शायरी, छंदबद्ध रचना।

काश्त – स्त्री० खेती; जैसे – गेहूँ की काश्त, जौ की काश्त।

काश्तकार – पु० खेतिहर, किसान, खेती करने-वाला।

काष्ठ – पु० सूखी लकड़ी, काठ।

काष्ठफल (नट्स) – पु० काजू, अख़रोट, नारियल की गिरी आदि मेवे।

काष्ठीय – वि० काठ का, लकड़ी का, काठ का बना हुआ।

कास्मास – पु० सफ़ेद या गुलाबी रंग के फूलोंवाला एक पौधा।

किंकर्तव्यविमूढ़ – वि० जिसे यह न समझ आए कि वह क्या करे और क्या न करे, हक्का-बक्का, भौंचक्का, घबराया हुआ।

किंतु – अ० लेकिन, परंतु, बल्कि, मगर।

किक – स्त्री० ठोकर। प्र० मोहन ने इतनी तेज़ किक मारी कि फुटबॉल फील्ड से बहुत बाहर जाकर गिरी।

किचकिच – *स्त्री०* व्यर्थ का झगड़ा, बेकार का वाद-विवाद। *प्र०* इस घर की किचकिच से मैं तो तंग आ गया।

किन – *सर्व०* 'किस' का बहुवचन।

किनकी – *स्त्री०* किसी अनाज आदि का टूटा हुआ दाना, छोटा दाना।

किनारा – *पु०* 1. (नदी या जलाशय या समुद्र का) तट, तीर। 2. छोर, सिरा। *प्र०* कपड़े का यह किनारा पकड़ो।

किनारी – *स्त्री०* साड़ी आदि के किनारे की पट्टी, सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ों के किनारे लगाते हैं।

किरकिरा – *वि०* जिसमें रेत, कंकर, मिट्टी आदि के बारीक कण हों, रेतवाला। *प्र०* पालक ठीक से धोया नहीं था क्या, साग किरकिरा है।

किरण, किरन – *स्त्री०* रोशनी की वे बहुत सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में, सूरज, चाँद और दीये आदि से फूटती हैं, किरन; जैसे – सूर्य की किरणें।

किरमिच – *पु०* एक तरह का टाट या मोटा कपड़ा जिससे जूते, बैग आदि बनते हैं, कैनवस।

किराना – *पु०* पंसारी की दूकान से मिलनेवाली नमक, मसाला, हल्दी, तेल, दाल आदि चीज़ें। *प्र०* मोहन ने किराने की दूकान खोल ली है।

क़िरासन – *पु०* मिट्टी का तेल, केरोसिन।

किलकारी – *स्त्री०* बच्चों के मुँह से ख़ुशी के वक़्त निकलनेवाली आवाज, हर्षध्वनि। *मु० किलकारी मारना* – हर्ष-ध्वनि करना। *प्र०* बच्चे किलकारी मारते हुए खेल रहे हैं।

क़िला – *पु०* लड़ाई के समय रक्षा के लिए बनाई गई बड़ी और मज़बूत इमारत, गढ़, दुर्ग। *प्र०* पुराने ज़माने में राजे-महाराजे अपने-अपने क़िले बनवाते थे ताकि दुश्मन आसानी से उन पर हमला न कर सके।

क़िलेदार – *पु०* क़िले का प्रधान अधिकारी, गढ़पति।

क़िलेबंदी – *स्त्री०* किसी स्थान की रक्षा के लिए चहारदीवारी तथा खाई आदि के द्वारा सुरक्षित बनाने की व्यवस्था, सुरक्षा का ज़बरदस्त इंतज़ाम, सेना द्वारा की जानेवाली घेराबंदी।

किलोमीटर – *पु०* स्थान की दूरी या लंबाई-चौड़ाई नापने की एक हज़ार मीटर की एक नाप।

किलोलीटर – *पु०* तरल पदार्थों को नापने का एक हज़ार लीटर का पैमाना।

किनारा | किराना | क़िला
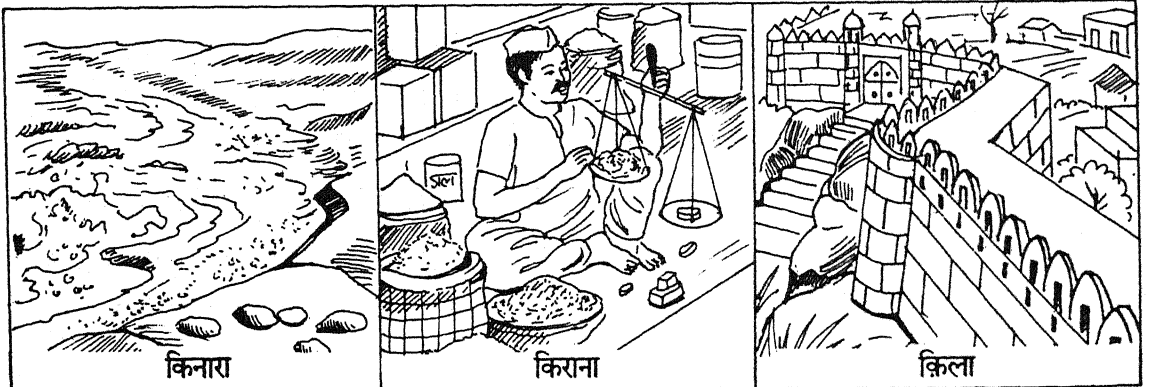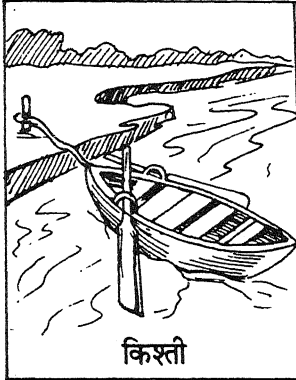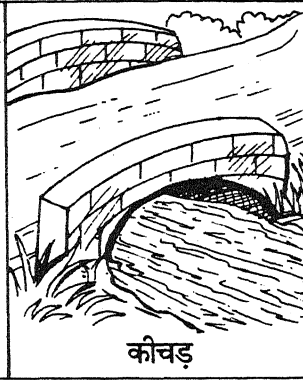
क़िल्लत – *स्त्री॰* कमी, तंगी। *प्र॰* आजकल बाज़ार में डालडा घी की क़िल्लत है।

किवी – *स्त्री॰* न उड़ सकनेवाला एक पक्षी।

किशमिश – *स्त्री॰* सुखाया हुआ छोटा अंगूर जिसमें बीज नहीं होते।

किशलय – *पु॰* दे॰ किसलय।

किशोर – *पु॰* ग्यारह-बारह से सोलह-सत्रह वर्ष तक की उम्र का बालक।

किश्ती – *स्त्री॰* नाव, डोंगी।

किस – *सर्व॰* कौन का वह रूप जो ने, को, से, का, में, पर के पहले आता है; जैसे – किसने, किसका, किसमें आदि।

किसलय – *पु॰* कोंपल, नया पत्ता, नया निकला हुआ पत्ता, कल्ला।

क़िस्त – *स्त्री॰* कर्ज़ या दी जानेवाली रकम के निश्चित समय पर दिए जानेवाले बराबर-बराबर हिस्से; जैसे – पहली क़िस्त, आख़िरी क़िस्त।

क़िस्म – *स्त्री॰* प्रकार, भेद, तरह। *प्र॰* 1. भैंस की कई क़िस्में होती हैं। 2. यह गेहूँ किस क़िस्म का है?

क़िस्मत – *स्त्री॰* भाग्य, नसीब, तक़दीर; जैसे – बदक़िस्मत, ख़ुशक़िस्मत।

की – *क्रि॰* 'करना' क्रिया का भूतकाल का रूप। *प्र॰* मैंने कल उनसे ख़ूब बातें कीं।

कीकर – *पु॰* बबूल। *प्र॰* कीकर काँटेदार पेड़ होता है।

कीचड़ – *पु॰* 1. पानी मिली मिट्टी, कीच, पंक। 2. आँख का सफ़ेद मल। *प्र॰* कई दिन से मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी आँखों में कीचड़ हो जाता है, कोई दवा डालो।

कीट – *पु॰* रेंगने या उड़नेवाला छोटा कीड़ा।

कीटनाशक (कीट + नाश + क) – *पु॰, वि॰* कीड़ों-मकोड़ों और कीटाणुओं का नाश करनेवाली दवा। *प्र॰* 1. कीटनाशकों का बहुत प्रयोग अच्छा नहीं होता (*सं॰*)। 2. कीटनाशक दवाओं के ठीक प्रयोग से खेती-बाड़ी अच्छी होती है (*वि॰*)।

कीट-पतंग – *पु॰* कीड़ा-मकोड़ा।

कीटरोधी – *वि॰* 1. कीड़ों की रोक-थाम करनेवाला; जैसे – कीटरोधी दवा। 2. ऐसा पात्र या बर्तन जिसमें कीड़े न पैदा हों या न पड़ें। *प्र॰* सूखे बीज कीटरोधी डिब्बों में रखे जाते हैं।

कीटाणु – *पु॰* बहुत छोटे और बारीक कीड़े जो

अनेक रोगों के कारण माने जाते हैं। प्र० कीटाणुओं को ख़ुर्दबीन से ही देखा जा सकता है, यों नहीं।

कीटाणुनाशक – *पु०, वि०* कीटाणुओं का नाश करनेवाला, या नाश करनेवाली दवा। प्र० घाव को कीटाणुनाशक या कीटाणुनाशक दवा से साफ़ करना चाहिए।

कीड़ा – *पु०* उड़ने या रेंगनेवाला बहुत छोटा जीव, कीट।

कीड़ा-मकोड़ा, कीड़ा-मकौड़ा – *पु०* कीट-पतंग, छोटे-बड़े कीड़े। प्र० यहाँ कीड़े-मकोड़े बहुत हैं।

कीप – *पु०* वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में लगाकर द्रव पदार्थ उड़ेलते हैं, कुप्पी।

क़ीमती – *वि०* अधिक दाम का, मूल्यवान्, महँगा, बहुमूल्य। प्र० आजकल क़ीमती जेवर केवल शादी-ब्याह में ही पहनते हैं।

कीर्तन – *पु०* कई लोगों द्वारा एक साथ भजन गाना। प्र० आज हमारे यहाँ रात में कीर्तन है, अवश्य आइएगा। **अखंड कीर्तन** – चौबीस घंटे का बिना रुके कीर्तन।

कीर्ति – *स्त्री०* यश, प्रसिद्धि, नाम। प्र० महात्मा गांधी की कीर्ति बहुत जल्दी देश के कोने-कोने में फैल गई।

कीर्तिमान – *पु०* रिकार्ड, आदर्श। प्र० तुम्हारे भाई ने लंबी कूद में कीर्तिमान स्थापित किया है।

कीर्तिशाली – *वि०* कीर्तिवाला, यशवाला, यशस्वी।

कीलक संधि – *स्त्री०* रीढ़ की हड्डी के पहले और दूसरे कशेरुक के बीच के जोड़ की तरह का जोड़ जो अन्य चल संधियों (जैसे कब्ज़ा संधि, कंदुक-खल्लिका संधि, सर्पी संधि) की तुलना में कम चल होता है।

कीली – *स्त्री०* किसी चक्र के बीच में पड़ी कील। प्र० कुम्हार का चाक अपनी कीली पर घूमता है।

कुँअर – *पु०* 1. राजपुत्र, राजकुमार, राजकुँअर। 2. लड़का, बालक।

कुँआरा – *वि०* बिन ब्याहा, जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित।

कुँआरी – *स्त्री०* अनब्याही, बिनब्याही, अविवाहिता।

कुंकुम – *पु०* लाल रोली, लाल चूरा।

कुंजी – *स्त्री०* 1. जिससे ताला खुलता है, चाबी, चाभी, ताली। 2. किसी पुस्तक के पूरे या मुख्य अंशों की व्याख्या या अर्थ की पुस्तक, 'की'।

कीप | कीर्तन | कीली | कुंजी
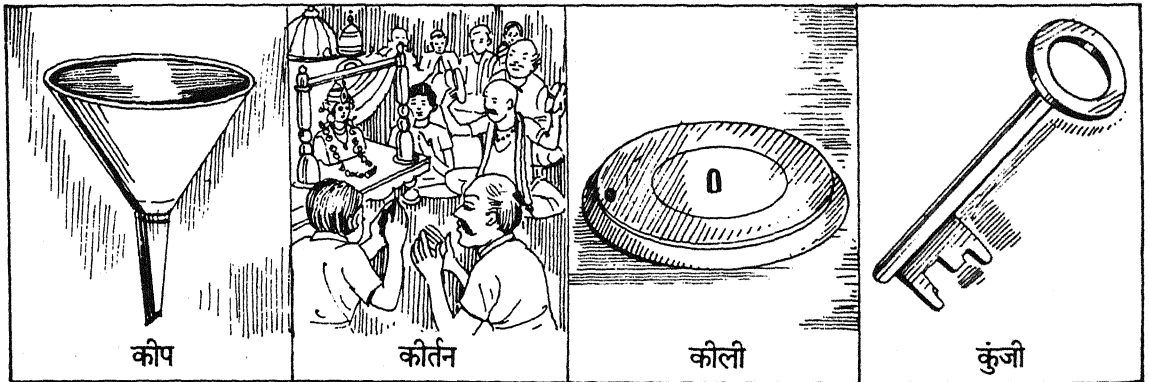
कुंड – *पु॰* 1. हवन करने का गड्ढा या पात्र-विशेष, हवनकुंड। 2. छोटा तालाब। 3. पानी एकत्र करने का बर्तन या गड्ढा या ईंटों का पक्का हौज़। 4. नदी का वह भाग जहाँ गहराई अधिक होती है।

कुंडल – *पु॰* 1. कान का एक गहना। 2. कुंडली, अपने को गोलाई में लपेटकर साँप के बैठने से बननेवाला गोला। *मु॰ कुंडल मारना* – साँप का अपने को लपेटकर घेरा रूप में बैठना। *प्र॰* साँप कुंडल मारकर बैठता है।

कुंडली – *स्त्री॰* 1. साँप के अपने को लपेटकर बैठने पर बना घेरा, कुंडल। 2. जन्मकुंडली, किसी के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति दिखानेवाला बारह ख़ानों का चतुर्भुज, या इस चतुर्भुज के साथ उसका शुभ-अशुभ फल।

कुंडा – *पु॰* 1. मिट्टी या धातु का चौड़े मुँह का बड़ा और गहरा बरतन, बड़ा मटका। 2. दरवाज़े की चौखट में ठोंका हुआ कोंढ़ा (जिसमें साँकल फँसाते और ताला लगाते हैं)।

कुंदरू – *पु॰* एक सब्ज़ी।

कुंदा – *पु॰* 1. लकड़ी का मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा। 2. बंदूक का वह भाग जो लकड़ी का होता है।

कुंभ – *पु॰* 1. मिट्टी का घड़ा। 2. हिंदुओं का एक पर्व जो हर बारहवें वर्ष पड़ता है।

कुँवर – *पु॰* 1. राजपुत्र, राजकुँवर, राजकुमार। 2. लड़का, बालक।

कुकुरखाँसी – *स्त्री॰* एक बहुत बुरी खाँसी जिसमें कफ़ नहीं गिरता और खाँसते-खाँसते उल्टी हो जाती है, काली खाँसी।

कुकुरमुत्ता – *पु॰* छतरी की तरह का एक पौधा, मेढक का छत्ता। इसकी कुछ अच्छी जातियों की सब्ज़ी बनती है, मशरूम।

कुचलना – *क्रि॰* 1. किसी भारी चीज़ से दब जाना। *प्र॰* मेरा पैर पत्थर के गमले से कुचल गया। 2. दबा देना, रौंद देना, मसल देना। *प्र॰* उसने अपने जूते से मेरा पैर कुचल दिया। 3. दबा देना, रौंद देना; जैसे – दुश्मन को कुचलना, विद्रोह को कुचलना।

कुचालक – *वि॰* जिससे होकर बिजली न पास हो; जैसे – लकड़ी, प्लास्टिक, रबर।

कुचीपुड़ी – *स्त्री॰* आंध्र प्रदेश का प्रसिद्ध नृत्य।

कुछ – 1. *सर्व॰* कोई चीज़, कोई बात, कोई काम। *प्र॰*1. माँ! कुछ खाने को दे दो, बड़ी भूख लगी है। 2. मोहन ने कुछ कहा है क्या? 3. यदि आदमी ने

कुछ करके नहीं दिखाया तो जीवन बेकार है। 4. गुस्से में कुछ कर न लेना। 2. *वि॰* (संख्या, मात्रा आदि में) थोड़ा। *प्र॰* मेरी तो पाकिट कट गई थी, वह तो रमेश ने कुछ रुपए दे दिए नहीं तो मेरा आना भी मुश्किल था।

कुछेक – *वि॰* कुछ थोड़े-से। *प्र॰* सभा में कुछेक लोग आए थे।

कुटाई – *स्त्री॰* 1. कूटने का काम। 2. कूटने की मज़दूरी। 3. पिटाई, मारना। *प्र॰* पुलिस ने इतनी कुटाई की कि चोर मर गया।

कुटीर – *स्त्री॰* घास-फूँस से बनी झोपड़ी। **कुटीर उद्योग** – *पु॰* बहुत छोटे पैमाने पर लगाए जाने-वाले उद्योग-धंधे, कॉटेज इंडस्ट्री।

कुटुंब – *पु॰* परिवार, ख़ानदान।

कुटुंबी – *पु॰* 1. परिवारवाला। 2. एक परिवार के लोग।

कुढ़ना – *क्रि॰* मन-ही-मन चिढ़ना, अंदर-ही-अंदर जलना, भीतर-ही-भीतर दुखी होना। *प्र॰* बात-बात पर क्यों कुढ़ते हो? यह तो अच्छी बात नहीं है।

कुतरना – *क्रि॰* दाँतों से छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में काटना। *प्र॰* चूहा कागज़, कपड़े, रोटी कुतरता है।

कुतुबमीनार – *स्त्री॰* दिल्ली की एक प्रसिद्ध मीनार जो अपनी ऊँचाई के लिए मशहूर है।

कुतूहल – *पु॰* उत्सुकता, जानने या देखने की तीव्र इच्छा, कौतूहल। *प्र॰* बच्चे हर चीज़ कुतूहल से देखते हैं।

कुदकना – *क्रि॰* थोड़ी-थोड़ी दूर कूदना, छोटी-छोटी कुदान मारना; जैसे – बच्चों का कुदकना, चिड़ियों का कुदकना।

कुदरत – *स्त्री॰* 1. प्राकृतिक चीज़ें, नदी, पहाड़ आदि, प्रकृति। 2. स्वभाव, प्रकृति।

कुदरती – *वि॰* प्राकृतिक, स्वाभाविक। *प्र॰* 1. क़ुदरती तौर पर वह ऐसा ही है। 2. क़ुदरती तथा कृत्रिम धागों से कपड़े बनते हैं।

कुदाल – *स्त्री॰* मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औज़ार। *प्र॰* ईख की गुड़ाई कुदाल से की जाती है।

कुनकुना – *वि॰* थोड़ा गरम, कुछ गरम, हल्का गरम, गुनगुना। *प्र॰* थोड़ा कुनकुना पानी लाओ।

कुनबा – *पु॰* परिवार, ख़ानदान, कुटुंब।

कुप्पा – *पु॰* चमड़े का एक गोल बरतन जिसमें तेल आदि रखते हैं। *मु॰ कुप्पा होना* – बहुत ख़ुश होना।

कुटाई | कुतरना | कुतुबमीनार | कुदाल
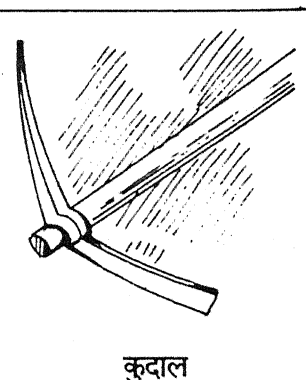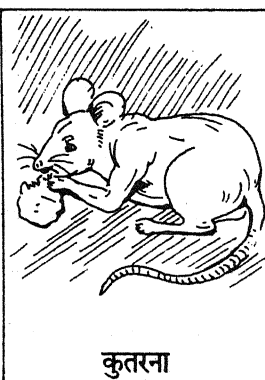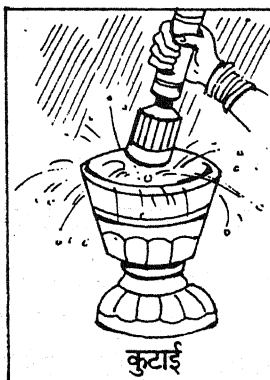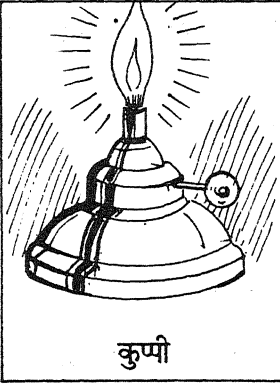
कुप्पी | कुबड़ा | कुमुदनी | कुरेदना
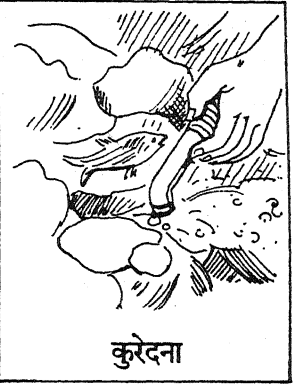
कुप्पी – *स्त्री॰* 1. कीप। 2. छोटा कुप्पा (दे॰)। 3. धातु का दावात जैसा दिया जिसमें मिट्टी का तेल डालते हैं। 4. मशीन, साइकल, दरवाज़ों आदि में तेल देने का एक छोटा नालीदार डिब्बा।

कुबड़ा – 1. *पु॰* (क) ऐसा व्यक्ति जिसकी पीठ झुकी या टेढ़ी हो। (ख) ऐसा व्यक्ति जिसकी पीठ पर कूबड़ हो। 2. *वि॰* झुकी पीठवाला, कूबड़-वाला।

कुबेर – *पु॰* धन के देवता।

कुमार – *वि॰* 1. बिनब्याहा, क्वारा, अविवाहित। 2. लड़का, बेटा। 3. राजकुमार।

कुमुदनी – *स्त्री॰* कमलिनी, कोई पानी में होनेवाला एक फूल जो प्रायः रात में खिलता है।

कुम्हलाना – *क्रि॰* मुरझाना। *प्र॰* 1. पानी की कमी से यह पौधा कुम्हला गया है। 2. धूप में आने से बच्चे का मुँह कुम्हला गया है।

कुरकुरा – *वि॰* खरा, कड़ा, करारा, खाने पर कुरकुर की आवाज़ करनेवाला। *प्र॰* यह बिस्कुट कुरकुरा है।

कुरबान – *पु॰* दे॰ क़ुर्बान।

कुरबानी – *स्त्री॰* दे॰ क़ुर्बानी।

कुरीति – *स्त्री॰* बुरी रीति, बुरा चलन, कुप्रथा, बुराई। *प्र॰* दहेज लेने और देने की कुरीति पता नहीं हमारे समाज से कब जाएगी।

कुरूप – *वि॰* बुरी शक्ल का, भद्दा, बदसूरत, बेडौल, बेढंगा।

कुरूपता – *स्त्री॰* बदसूरती।

कुरेदना – *क्रि॰* खुरचना, खरोचना, करोदना।

क़ुर्बान – *वि॰* निछावर, बलिहारी, न्यौछावर, बलिदान, त्याग। *प्र॰* भगतसिंह ने देश की आज़ादी के लिए अपनी जान क़ुर्बान कर दी।

क़ुर्बानी – *स्त्री॰* 1. क़ुर्बान होना, बलिदान, त्याग। *प्र॰* शहीदों ने देश के लिए अपनी जान की क़ुर्बानी की। 2. जानवरों को मारना, पशुबलि। *प्र॰* ईद पर क़ुर्बानी की जाती है।

कुल – 1. *पु॰* ख़ानदान, वंश, घराना। *प्र॰* वह अच्छे कुल का है, उस पर भरोसा रखो। 2. *वि॰* सब, सारा, समस्त। *प्र॰* तुम्हारे घर में कुल कितने लोग हैं?

कुलचा – *पु॰* दे॰ कुल्चा।

कुलफ़ा – *पु॰* दे॰ कुल्फ़ा।

कुलफ़ी – *स्त्री॰* दे॰ कुल्फ़ी।

कुलबुलाना – *क्रि०* 1. इधर-उधर रेंगना, कीड़ों का हिलना-डुलना। 2. व्याकुल होना, आकुल होना। *प्र०* भूख के मारे मेरी तो आँतें कुलबुला रही हैं।

कुलाँच – *स्त्री०* छलाँग, उछाल, चौकड़ी। *प्र०* शेर को देखकर हिरन कुलाँचें भरता हुआ भाग गया।

कुल्चा – पु० ख़मीरी पूड़ी।

कुल्फ़ा – पु० एक साग।

कुल्फ़ी – *स्त्री०* नली जैसे साँचे में मलाईदार गाढ़े दूध तथा चीनी से जमाकर बनाई गई खाने की एक ठंडी चीज़, आइसक्रीम, मलाईबर्फ़।

कुल्हड़ – पु० पुरवा, भरुका, चुक्कड़, मिट्टी का छोटा पात्र।

कुल्हाड़ी – *स्त्री०* लकड़ी तथा पेड़ आदि काटने का उपकरण, टाँगी, कुठार।

कुश – पु० 1. रामचन्द्रजी के एक पुत्र। 2. एक तरह की घास जिसका प्रयोग आसन बनाने, धार्मिक पूजा तथा यज्ञ आदि में होता है, कुशा।

कुशल – *वि०* होशियार, निपुण, प्रवीण, दक्ष। *प्र०* तुम्हारा बेटा तो सभी कामों में बड़ा कुशल है।

कुशलता – *स्त्री०* ख़ैरियत, कुशल-क्षेम, कल्याण। *प्र०* हम लोग सकुशल हैं, अपनी कुशलता का समाचार दें।

कुशल-मंगल – पु० ख़ैरियत, कुशल-क्षेम, सब कुछ ठीक-ठाक।

कुशा – पु० दे० कुश।

कुष्ठ – पु० एक रोग, कोढ़।

कुसंग – पु० बुरों का संग, बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना, ख़राब संग-साथ, बुरी संगत। *प्र०* वह लड़का बहुत अच्छा था, लेकिन अब कुसंग में पड़ गया है।

कुसुम – पु० फूल, पुष्प।

कुहकना – *क्रि०* कोयल आदि का मीठी आवाज़ में बोलना। *प्र०* बाग़ में कोयल कुहक रही है।

कुहनी – *स्त्री०* हाथ और बाँह के बीच का जोड़, केहुनी।

कुहराम – पु० हाहाकार, बहुत सारे लोगों का एक साथ रोना-पीटना। *प्र०* लगता है पड़ोसी के घर कोई मर गया है, कुहराम मचा हुआ है।

कुहुक – *स्त्री०* चिड़ियों की मधुर बोली, कूजन, कोयल की कूक।

कुलाँच कुल्हड़ कुल्हाड़ी कुहनी
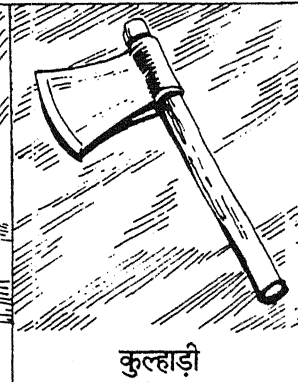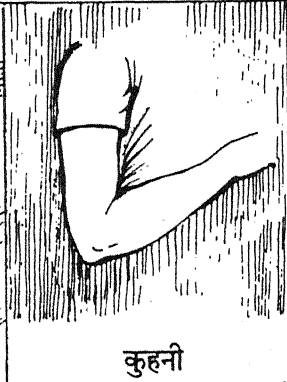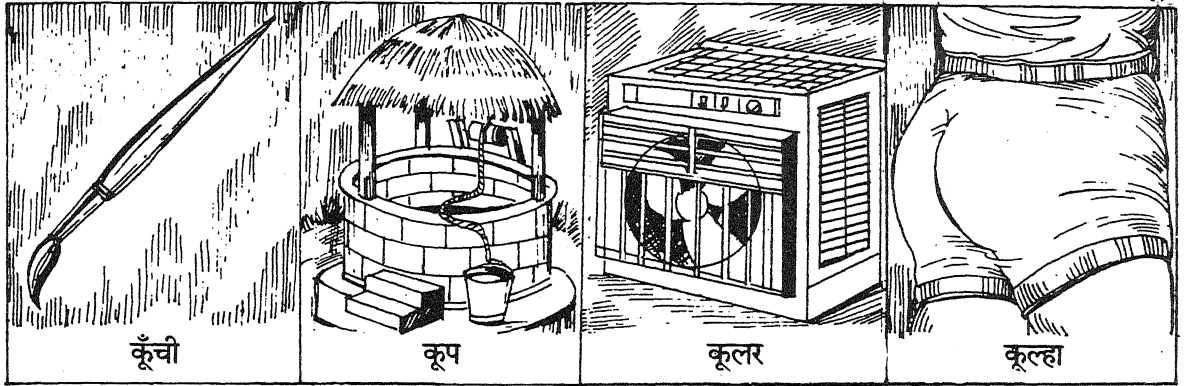
कुहुकना – *क्रि॰* चिड़ियों का मधुर स्वर में बोलना, कूजना, कोयल का कूकना। *प्र॰* कोयल का कुहुकना सबको अच्छा लगता है।

कुहू-कुहू – *स्त्री॰* कोयल के बोलने की आवाज़।

कूँची – *स्त्री॰* 1. चित्र बनाने का बुरुश। 2. छोटा कूँचा, छोटी झाड़ू।

कूक – *स्त्री॰* 1. कोयल की बोली। 2. सुरीली आवाज़।

कूकना – *क्रि॰* कोयल का बोलना।

कूच – *पु॰* चल देना, रवानगी, प्रस्थान, जाना। *प्र॰* वह काफ़िला यहाँ से तो कूच कर गया, अगले पड़ाव पर होगा।

कूचा – *पु॰* गली, सँकरा रास्ता। *प्र॰* दिल्ली में बहुत से कूचे हैं; जैसे – कूचा पातीराम, कूचा रहमान, कूचा सेठ आदि।

कूड़ा – *पु॰* 1. सड़ी-गली या रद्दी चीज़ें, कतवार, कचरा, कूड़ा-करकट। *प्र॰* तुमने झाड़ू क्या लगाया, यहाँ तो कूड़ा पड़ा है। 2. बेकार चीज़। *प्र॰* यह साइकल लेकर मैं क्या करूँगा, यह तो कूड़ा है।

कूड़ेदान – *पु॰* कूड़ा डालने का डिब्बा।

कूद – *स्त्री॰* कूदने की क्रिया, कूदना; जैसे – ऊँची कूद, लंबी कूद।

कूद-फाँद – *स्त्री॰* उछल-कूद।

कूप – *पु॰* कुआँ।

कूपन – *पु॰* 1. ख़रीदने के पहले दाम देकर लिया गया पुर्ज़ा या पर्ची जिसे दिखाकर चीज़ें ली जा सकती हैं। 2. रेज़गारी न होने पर दूकानदारों द्वारा बाक़ी पैसों के लिए दिया गया टोकेन या पुर्ज़ी।

कूबड़ – *पु॰* कूब, पीठ पर हड्डी का बेडौल उभार।

कूलर – *पु॰* गर्मियों में कमरे को ठंडा करने का बिजली से चलनेवाला एक उपकरण।

कूल्हा – *पु॰* कमर से नीचे दोनों ओर का उभरा हुआ भाग।

कृतघ्न – *वि॰* अपने साथ किए हुए उपकार को न माननेवाला या उसे भूल जानेवाला, अकृतज्ञ, एहसानफरामोश। (*विलोम* – कृतज्ञ)।

कृतज्ञ – *वि॰* अपने साथ किए हुए उपकार को माननेवाला, एहसानमंद।

कृतज्ञता – *स्त्री॰* किए का उपकार मानना। *प्र॰* 1. मुझसे वे मिले थे और उन्होंने अपने प्रति

किए गए उपकार के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। 2. हिलेरी ने एवरेस्ट पर पहुँचने पर भगवान् के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

कृत्रिम – *वि॰* जो असली न हो, नक़ली, बनावटी, जो स्वाभाविक न हो। *(विलोम* – स्वाभाविक); जैसे – कृत्रिम व्यवहार, कृत्रिम रेशे, कृत्रिम हँसी।

कृपण – *वि॰* कंजूस, मक्खीचूस, सूम।

कृपणता – *स्त्री॰* कंजूसी, सूमपना।

कृपया – *अ॰* कृपा करके, मेहरबानी करके। *प्र॰* कृपया अपनी सीट पर बैठिए।

कृपाण – *पु॰* 1. कटार, छोटी तलवार। 2. सिखों द्वारा रखी जानेवाली विशेष प्रकार की कटार।

कृपालु –*वि॰* कृपा करनेवाला, दयालु, मेहरबान।

कृमि –*पु॰, स्त्री॰* छोटा कीड़ा। *प्र॰* 1. इस पानी में कृमि हैं। 2. उसके पेट में कृमि हैं।

कृषक – *पु॰* किसान, खेती करनेवाला, खेतिहर।

कृषि – *स्त्री॰* किसानी, खेती, काश्त, खेतीबारी।

कृषि-प्रधान – *वि॰* जहाँ पर खेती ही लोगों का मुख्य व्यवसाय हो। *प्र॰* भारत एक कृषि-प्रधान देश है।

केंचुली – *स्त्री॰* केंचुल, जाड़े में अपने-आप सूखकर गिर जानेवाली साँप के शरीर की झिल्ली।

केंद्र – *पु॰* 1. प्रधान या मुख्य स्थान। 2. केंद्रीय सरकार। 3. वृत्त के बीच का बिंदु, केंद्रबिंदु।

केंद्रशासित – *वि॰* केंद्रीय सरकार के अधिकार में। *प्र॰* भारत में कई केंद्रशासित प्रदेश हैं; जैसे – पांडीचेरी, अंडमान नीकोबार।

केंद्रीय – *वि॰* केंद्र से संबंध रखनेवाला, केंद्र का; जैसे – केंद्रीय शासन, केंद्रीय विद्यालय, केंद्रीय सरकार।

केक – *स्त्री॰* विशेष प्रकार की एक विलायती रोटी। *प्र॰* अब भारत में भी बहुत से लोग जन्मदिन के अवसर पर केक काटते हैं।

केतली– *स्त्री॰* चाय बनाने का एक टोंटीदार बरतन।

केब – *पु॰* बड़े-बड़े ट्रकों का अगला भाग जिसमें इंजन और ड्राइवर की सीट होती है।

केबल, केबिल – *पु॰* 1. रबर आदि चढ़ा तार जो संदेश भेजने के लिए ज़मीन के नीचे या समुद्र में लगाया जाता है। 2. ऐसे तार के द्वारा भेजा गया संदेश।
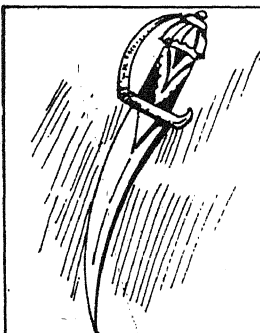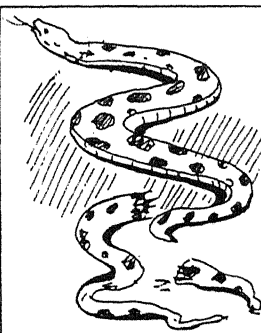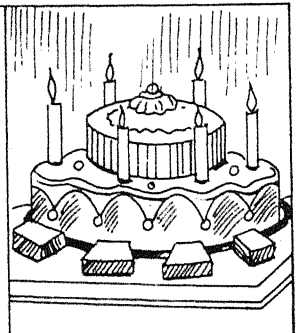
कृपाण कृषक केंचुली केक
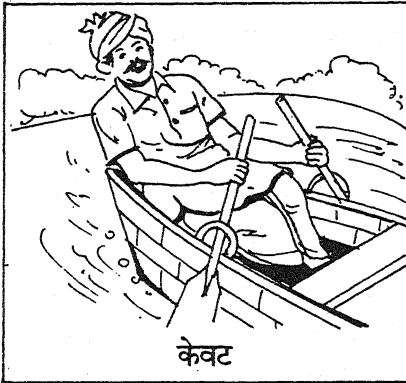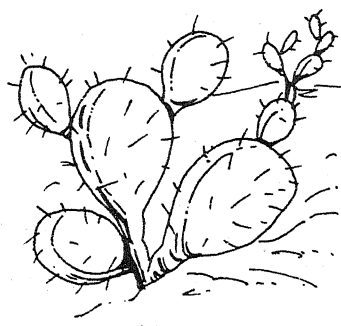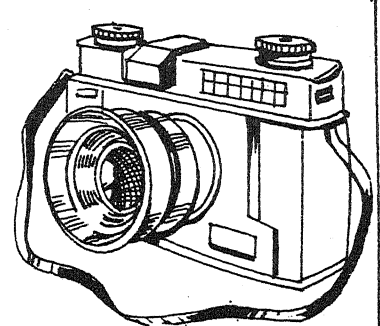
केवट | कैक्टस | कैमरा

केरमबोर्ड – दे० कैरमबोर्ड।

केरोसीन – पु० मिट्टी का तेल।

केवट – पु० नाव चलानेवाला, मल्लाह, नाविक।

केवल – *वि०* सिर्फ़, मात्र। *प्र०* केवल सौ रुपयों से काम नहीं चलेगा।

केश – पु० सिर का बाल।

केस – पु० छोटा डिब्बा, छोटा बक्स; जैसे – घड़ी का केस, चश्मे का केस, अँगूठी का केस, गहनों के सैट का केस आदि।

केसर – पु० एक ख़ास पौधे के फूल के बीच का खुशबूदार, बालों जैसा पतला पीला रेशा जो दवा, सुगंध और खाने के काम आता है, ज़ाफ़रान।

केसरिया – *वि०* पीला, केसर के रंग का, ज़र्द।

केसरी – *स्त्री०* एक दाल जो हानिकारक होती है। इसे मिलावट करनेवाले अरहर की दाल में मिलाते हैं, खेसारी।

कैंटीन – *स्त्री०* ऐसी जगह जहाँ लोग चाय-नाश्ता आदि करते हैं; जैसे – स्कूल की कैंटीन, दफ़्तर की कैंटीन।

कैंप – पु० पड़ाव; जैसे – सेना का कैंप, स्काउटों का कैंप।

कैंपाकोला – पु० एक ठंडा पेय पदार्थ।

कैंसर – पु० तेज़ी से फैलनेवाला एक भयंकर रोग।

कै – *स्त्री०* उल्टी।

कैक्टस – पु० नागफनी, एक काँटेदार पौधा।

क़ैद – *स्त्री०* जेल, कारावास। *प्र०* उसे तीन वर्ष की क़ैद हुई है।

क़ैदख़ाना – पु० कारागार, बंदीगृह, जहाँ क़ैदी रखे जाते हैं, जेलख़ाना।

क़ैदी – पु० वह जिसे क़ैद की सज़ा दी गई हो, बंदी।

कैनवस – पु० बैग, टेंट, पाल आदि के काम आनेवाला एक प्रकार का मोटा मज़बूत कपड़ा।

कैमरा – पु० फोटो खींचने का उपकरण।

कैमरिक – पु० एक प्रकार का सूती कपड़ा।

कैमिब्रक – पु० एक प्रकार का सूती कपड़ा।

कैरम, कैरमबोर्ड – पु० गोटियों से लकड़ी के बोर्ड पर खेला जानेवाला एक खेल।

कैलेंडर – पु० वह पत्र या पत्रसमूह जिसमें तारीख़, दिन और कभी-कभी तिथियाँ दी रहती हैं।

कैल्शियम – पु० एक खनिज जो शरीर में दाँतों और

हड्डियों के लिए ज़रूरी होता है। प्र० कैल्शियम की कमी से दाँत कमज़ोर हो जाते हैं।

कैसावा – पु० एक पौधा, जिसकी गाँठें शकरकंद जैसी होती हैं, जिनसे रोटी के लिए आटा बनता है।

कोंपल – *स्त्री०* नई और मुलायम पत्ती, कल्ला। *प्र०* पतझड़ के बाद वसंत ऋतु में पौधों में नई-नई कोंपलें आती हैं।

कोई – *सर्व०* ऐसा व्यक्ति या वस्तु जिसके बारे में जानकारी न हो। *प्र०* 1. कोई आ रहा है। 2. कोई कपड़ा दे दो।

कोकिल, कोकिला – *स्त्री०* कोयल।

कोकून – पु० रेशम के कीड़े का खोल।

कोको – पु० चाय की तरह का एक पेय पदार्थ।

कोकोन – पु० रेशम का कीड़ा।

कोंचवान – पु० घोड़ागाड़ी चलानेवाला।

कोट – पु० 1. एक प्रसिद्ध पहनावा। 2. क़िला, गढ़, दुर्ग।

कोटर – पु० पेड़ के तने का खोखला भाग जिसमें चिड़ियाँ अपना घोंसला बनाती हैं।

कोटा – पु० किसी को देने या किसी से लेने के लिए निर्धारित अंश; जैसे – राशन का कोटा, दूध का कोटा।

कोटि – 1. *स्त्री०* वर्ग, श्रेणी, दरजा, स्तर। *प्र०* प्रेमचंद की कहानियाँ उच्च कोटि की हैं। 2. *वि०* करोड़। *प्र०* शहीदों को कोटि-कोटि प्रणाम।

कोटिपूरक कोण – पु० दो ऐसे कोण जिनका योग एक समकोण (90 अंश) के बराबर हो (कंप्लिमेंटरी ऐंगील्स)। इनमें प्रत्येक कोण को कोटिपूरक कहते हैं।

कोड़ी – *स्त्री०* बीस का समूह, बीसी।

कोण – पु० दो रेखाओं के मिलने पर उनके बीच का कोना।

कोणमापक – पु० कोण को नापने का एक उपकरण, चाँदा, प्रोटेक्टर।

कोतवाल – पु० पुलिस का एक बड़ा कर्मचारी जो नगर पुलिस का प्रधान होता है।

कोदों, कोदो – पु० एक मोटा अनाज।

कोना – पु० वह स्थान जहाँ दो किनारे या छोर मिलते हैं; जैसे – कमरे का कोना।

कोप – पु० गुस्सा, क्रोध।
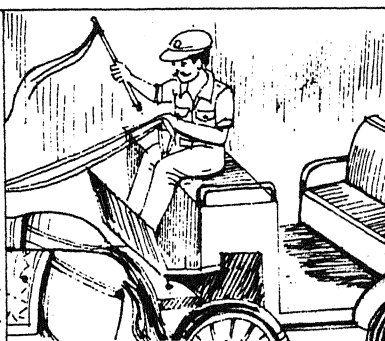
कोकिला | कोचवान | कोणमापक
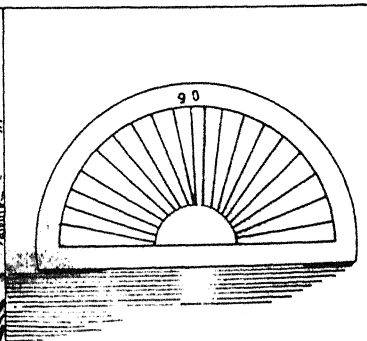
कोल्हू | कोष | कौंधना
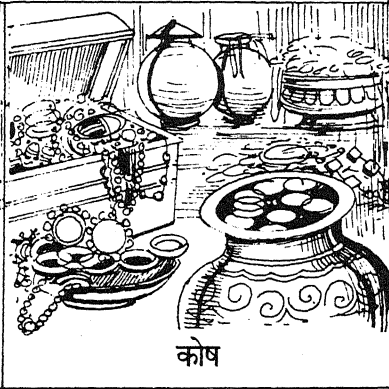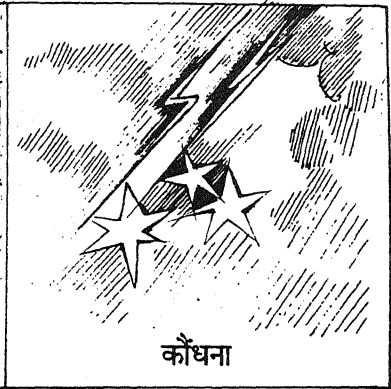
कोफ़्ता – पु॰ कद्दूकश की गई सब्ज़ी या बारीक कटे मांस की पकौड़ी।

कोमल – *वि॰* 1. नरम, मुलायम। *प्र॰* नई-नई पत्तियाँ बड़ी कोमल होती हैं। 2. सुकुमार। *प्र॰* वह बड़े कोमल स्वभाव का है।

कोमलता – *स्त्री॰* 1. मुलायमियत, मृदुलता, नरमी। 2. सुकुमारता।

कोयल – *स्त्री॰* बहुत मीठी आवाज़वाली काले रंग की एक चिड़िया, कोकिल, कोकिला।

कोया – पु॰ 1. कटहल के गूदेदार बीजकोश। 2. आँख का कोना। 3. आँख का डेला।

कोर – *स्त्री॰* किनारा, सिरा, हाशिया।

कोरा – *वि॰* नया, अछूता। इसका प्रयोग कई प्रसंगों में होता है: 1. जो भिगोया न गया हो; जैसे – कोरा कपड़ा। 2. ख़ाली, अनलिखा; जैसे – कोरा काग़ज़। 3. जो बरता न गया हो, जिसका प्रयोग न हुआ हो; जैसे – कोरी हँड़िया। 4. जिसे अनुभव न हो। *प्र॰* यह आदमी तो इस काम में कोरा है।

कोलतार – पु॰ अलकतरा, तारकोल। *प्र॰* सड़क पर कोलतार मिली गिट्टी बिछ रही है।

कोलिअस – पु॰ रंग-बिरंगे पत्रोंवाला एक पौधा।

कोल्हू – पु॰ तेल निकालने का एक यंत्र।

कोश – पु॰ वह ग्रंथ जिसमें शब्दों के अर्थ आदि होते हैं।

कोशिश – *स्त्री॰* कुछ करने के लिए जुट जाना, यत्न, प्रयत्न, चेष्टा।

कोष – पु॰ ख़ज़ाना।

कोष्ठक – ब्रैकिट। *प्र॰* कोष्ठक कई प्रकार के होते हैं; जैसे – ( ), { } तथा [ ]।

कोस – पु॰ दूरी की एक पुरानी नाप जो पहले 4000 या 8000 हाथ की किंतु अब केवल 7040 हाथ, अर्थात् लगभग दो मील मानी जाती है। *मु॰ कोसों* दूर *या काले कोसों* दूर – बहुत दूर।

कोसना – *क्रि॰* शाप के रूप में गालियाँ देना। *प्र॰* बुढ़िया अपनी ज़मीन हड़प लेने के लिए मुखिया को कोस रही थी।

कोस्मोस – पु॰ दे॰ कास्मास।

कौंध – *स्त्री॰* तेज़ रोशनी; जैसे – बिजली की कौंध।

कौंधना – *क्रि॰* तेज़ चमकना। *प्र॰* बिजली कौंध रही है, बाहर मत जाओ।

कौतूहल – देखने या जानने की उत्सुकता।

कौन – 1. *सर्व०* एक प्रश्नवाचक सर्वनाम। *प्र०* तुम कौन हो? 2. *वि०* कौन-सी। *प्र०* इस दूकान में कौन-सी चीज़ तुम्हें पसंद है?

कौरव – *पु०* राजा कुरु के वंशज, धृतराष्ट्र के पुत्र। *प्र०* दुर्योधन कौरवों में सबसे बड़े थे।

कौशल – *पु०* कुशलता, निपुणता, चातुरी, दक्षता।

क्या – *सर्व०* 1. एक प्रश्नवाचक सर्वनाम, कौन-सी चीज़ या बात। *प्र०* 1. क्या लोगे ? संतरे या केले? 2. क्या कह रहे थे ? 2. तारीफ़ के लिए कहा गया शब्द, प्रशंसासूचक शब्द। *प्र०* 1. भई वाह ! यह भी क्या चीज़ है! 2. तुम्हारी भी क्या बात है!

क्याक – *पु०* ग्रीनलैंड की एक ख़ास तरह की नाव।

क्यू – *पु०* क़तार, पंक्ति, लाइन। *प्र०* 1. ऐसे भगदड़ से काम नहीं चलेगा, क्यू बनाओ और बारी-बारी से लेने जाओ। 2. क्यू में खड़े हो जाओ। बारी-बारी से आओ।

क्यों – *अ०* किस कारण, किसलिए, किस वास्ते। *प्र०* 1. क्यों आए? 2. क्यों मारा?

क्रम – *पु०* चीज़ों, व्यक्तियों या कामों का आपस में आगे-पीछे होना, तरतीब, सिलसिला। *प्र०* 1. इन्हें किस क्रम में रखें? 2. क्रम से भीतर आओ।

क्रमशः – *अ०* क्रम से, तरतीबवार, एक-एक करके। *प्र०* क्रमशः सभी लोग भीतर गए। 2. धीरे-धीरे, आहिस्ता-आहिस्ता। *प्र०* क्रमशः सब ठीक हो जाएगा, घबराइए नहीं।

क्रमसंख्या – *स्त्री०* व्यक्तियों या वस्तुओं का क्रम बतानेवाली संख्या; जैसे – पहला, आठवाँ, दसवाँ, बीसवाँ, इस पंक्ति का तीसवाँ विद्यार्थी, उस लाइन का चालीसवाँ सिपाही, इस ख़ाने की पचासवीं पुस्तक।

क्रमांक – *पु०* रोल नंबर। *प्र०* परीक्षा में मेरा क्रमांक 20 है।

क्रमागत – *वि०* क्रम से चलता हुआ, क्रम से आने-वाला; जैसे – क्रमागत संख्याएँ।

क्रय – *पु०* ख़रीद, ख़रीदना।

क्रय-मूल्य – *पु०* किसी वस्तु को ख़रीदने का मूल्य।

क्रय-विक्रय – *पु०* ख़रीदना-बेचना, ख़रीद-फ़रोख़्त। *प्र०* बाज़ार में क्रय-विक्रय होता है।

क्रांति – *स्त्री०* 1. बहुत बड़ा परिवर्तन। *प्र०* पहिए के आविष्कार ने यातायात में क्रांति ला दी। 2. सशस्त्र विद्रोह। *प्र०* बहुत से देशों में क्रांति से स्वतंत्रता मिली।

कौशल | क्यू | क्रय | क्रांति
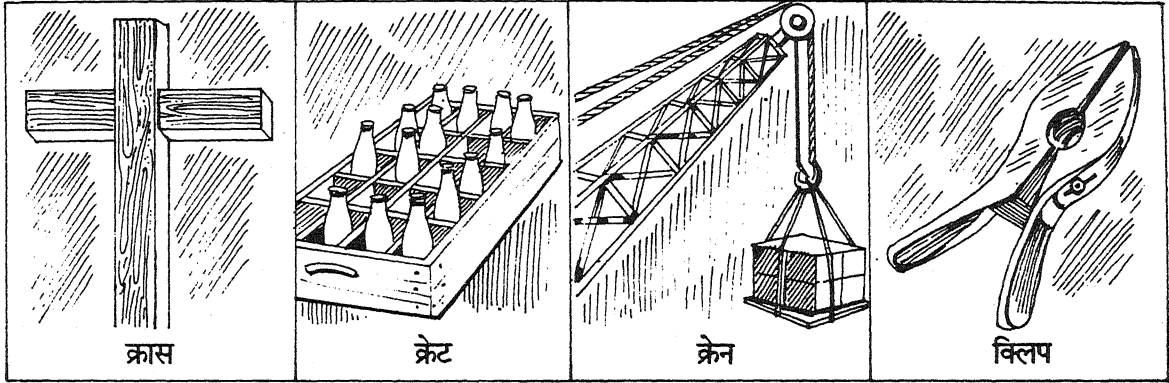
क्रास– पु॰ 1. × निशान। प्र॰ नीचे लिखे शब्दों में जो स्त्रीलिंग हैं उन पर क्रास लगाओ। 2. सलीब, ईसाइयों का पवित्र चिह्न †। प्र॰ ईसा मसीह क्रास पर कीलों से ठोंक दिए गए।

क्रिया– *स्त्री॰* 1. कोई काम करना। प्र॰ ऊपर उठो, फिर बैठो और इस क्रिया को बार-बार करो। 2. (व्याकरण में) वह शब्द जिससे कुछ करने या होने का बोध हो; जैसे – चलना, पढ़ना, लिखना, देखना आदि। 'राम घर गया' वाक्य में 'गया' क्रिया है।

क्रिया-विशेषण– पु॰ वह शब्द जो किसी क्रिया की विशेषता बताए; जैसे – 'राम तेज़ दौड़ता है' वाक्य में 'तेज़' क्रिया-विशेषण है। ऐसे ही 'तेज़ी से' 'धीरे-धीरे', 'ज़ोर-ज़ोर से' आदि क्रिया-विशेषण हैं।

क्रिसमस– पु॰ ईसाइयों का प्रसिद्ध त्योहार।

क्रिस्टल– पु॰ शीरे, शक्कर आदि का रवादार टुकड़ा, रवा।

क्रीड़ा– *स्त्री॰* खेल, खेल-कूद, आनंदपूर्ण खेल; जैसे – जलक्रीड़ा। प्र॰ पक्षी जलक्रीड़ा कर रहे हैं।

क्रूर– *वि॰* निर्दय, निष्ठुर, कठोर, ज़ालिम।

क्रेट– पु॰ बोतल आदि रखने का खाँचा; जैसे – दूध की बोतलों का क्रेट; कैंपाकोला का क्रेट।

क्रेन– *स्त्री॰* भारी चीज़ उठाने या इधर-से-उधर रखने, लादने या लाने-ले जाने की बड़ी बाँहवाली मशीन।

क्रोधित– *वि॰* गुस्से में, क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधी– *वि॰* क्रोध करनेवाला, गुस्सा करनेवाला, गुस्सैल।

क्लब– पु॰ तरह-तरह के या सभी प्रकार के खेल खेलने के लिए बनी संस्था; जैसे – क्रिकेट क्लब, फुटबॉल क्लब।

क्लास– पु॰ 1. कक्षा। प्र॰ मैं चौथी क्लास का विद्यार्थी हूँ। 2. श्रेणी, दर्जा। प्र॰ साहब फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में सफ़र करते हैं।

क्लिप– *स्त्री॰* काग़ज़, बाल या कपड़े आदि दबाने की कमानीदार चिमटी; जैसे – काग़ज़ की क्लिप, बाल-क्लिप।

क्लोरीन– *स्त्री॰* एक तत्त्व जिससे पानी साफ़ करते हैं।

क्लोरोफ़िल– *स्त्री॰* पत्तियों की कोशिकाओं में पाई जानेवाली एक चीज़ जिसके कारण पत्तियाँ पौधे के लिए खुराक बना पाती हैं। प्र॰ अधिकतर पौधों में क्लोरोफ़िल होता है।

क्वार्टर– *पु०* रेलवे, स्कूल, कॉलेज आदि के कर्मचारियों के लिए बनवाए गए घर।

क्विंटल– *पु०* सौ किलो वज़न, कुंतल। *प्र०* यह सामान दस क्विंटल है।

क्षण– *पु०* पल, लमहा, निमिष, समय का बहुत छोटा हिस्सा। *प्र०* तुम महीने की बात करते हो, एक क्षण में न जाने क्या हो सकता है।

क्षत्राणी– *स्त्री०* क्षत्रिय स्त्री।

क्षत्रिय– *पु०* 1. हिंदू धर्म के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। *प्र०* राणा प्रताप क्षत्रिय थे। 2. क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति। *प्र०* क्षत्रिय प्राणों की बाज़ी लगाकर भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करता है।

क्षमता– *स्त्री०* 1. योग्यता, शक्ति, कोई काम करने की शारीरिक या मानसिक शक्ति। *प्र०* उस व्यक्ति में बहुत क्षमता है। 2. अपने अंदर समा लेने की जगह, धारिता। *प्र०* इस डिब्बे की क्षमता क्या है ?

क्षमा – *स्त्री०* अपराध करनेवाले या अपने को कष्ट पहुँचानेवाले को दंड या कष्ट न देना या उससे बदला न लेना, माफ़, माफ़ी। *प्र०* भगवान् उसे क्षमा कर दें, उसने भूल से ऐसा किया है।

क्षय – *पु०* 1. तपेदिक, टी०बी० (एक रोग)। 2. नाश, सर्वनाश। *प्र०* यदि ऐसे पाप बढ़ते रहे तो एक दिन विश्व का क्षय हो जाएगा। 3. सड़न; जैसे – क्षयग्रस्त दाँत।

क्षयग्रस्त– *वि०* 1. जिसे तपेदिक हो गई हो, जिसे टी०बी० हो; जैसे –क्षयग्रस्त मरीज़। 2. जिसमें सड़न हो; जैसे – क्षयग्रस्त दाँत।

क्षितिज– *पु०* वह जगह जहाँ धरती और आसमान मिले हुए दिखाई पड़ते हैं।

क्षेत्र– *पु०* इलाक़ा, अंचल।

क्षेत्रफल– *पु०* किसी क्षेत्र के विस्तार की नाप जो लंबाई और चौड़ाई को गुणा करके जानी जाती है, रक़बा। *प्र०* नए बने कमरे का क्षेत्रफल 132 (12 × 11) वर्गफीट है।

ख

–देवनागरी वर्णमाला का दूसरा व्यंजन।

खँगालना – *क्रि०* 1. बिना माँजे हल्का-सा धोना। *प्र०* ये बरतन माँज लिए गए हैं, इन्हें खँगालकर रख दो। 2. पानी में डुबाकर निकाल लेना। *प्र०* ये कपड़े धुल चुके हैं, एक बार खँगालकर सूखने को डाल दो।
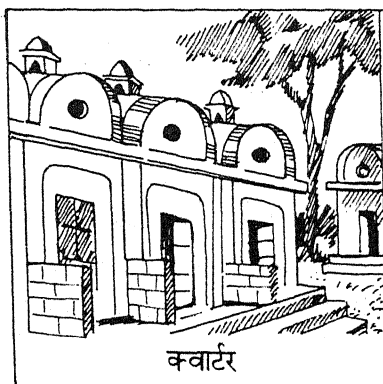
क्वार्टर | क्षत्रिय | खँगालना
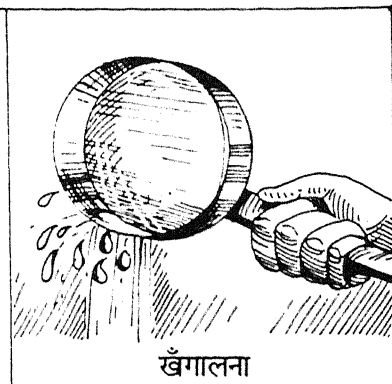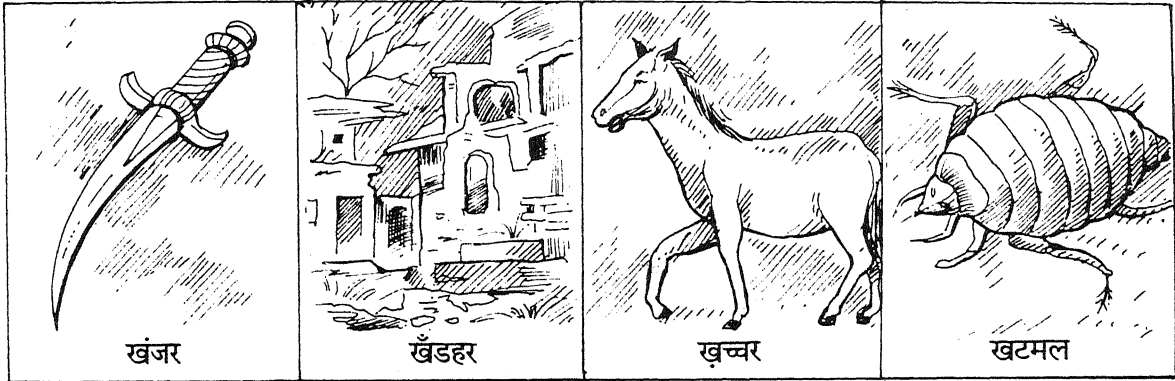
खंजर– पु० कटार, दुधारी छोटी तलवार।

खंड– पु० 1. भाग, हिस्सा। प्र० 1. यह पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित हुई है। 2. मकान का एक खंड टूट गया है। 2. टुकड़ा।

खँडसारी– स्त्री० कच्ची चीनी, शक्कर (यह सफ़ेद नहीं होती)।

खँडहर– पु० किसी टूटे-फूटे या गिरे हुए मकान के बचे हुए हिस्से। प्र० कभी वह इमारत बड़ी शानदार थी पर अब तो खँडहर हो गई है।

खंडित– वि० टूटा हुआ, जिसके टुकड़े कर दिए गए हों या हो गए हों। प्र० वह खंडित भवन अब भी अपनी पुरानी शान की झलक दिखा रहा है।

ख़ंदक– स्त्री० गहरा गड्ढा, खाई। प्र० बस एक ख़ंदक में गिर गई।

खगोल– पु० 1. आकाशमंडल। 2. खगोलविद्या।

खगोलीय– वि० खगोल के, आकाशमंडल के। प्र० सूर्य, चंद्रमा, तारे और पृथ्वी आदि खगोलीय पिंड हैं।

खचाखच– अ० बहुत, पूरी तरह, ठसाठस। प्र० उस दिन प्रधानमंत्री का भाषण सुनने के लिए हॉल खचाखच भरा था।

ख़च्चर– पु० घोड़े और गदहे के संयोग से उत्पन्न घोड़े से छोटा और गदहे से बड़ा एक जानवर जो सामान आदि ढोने के काम आता है।

ख़ज़ांची– पु० रुपए का लेन-देन करनेवाला, ख़ज़ाने का अधिकारी, कैशियर, रोकड़िया, कोषाध्यक्ष।

ख़ज़ाना– पु० 1. कोष, सरकारी ख़ज़ाना, ट्रेज़री। 2. गड़ा हुआ काफ़ी धन। प्र० खुदाई में गड़ा हुआ ख़ज़ाना मिला है।

खटकना– क्रि० ठीक न लगना, बुरा लगना, अखरना, किसी बात का चुभना। प्र० मुझे यह बात खटक रही है।

खटका– पु० 1. अंदेशा, आशंका, डर, भय। प्र० मुझे इस बात का खटका है कि वह कह तो गया है पर करेगा कुछ नहीं। 2. 'खट' या 'खट-खट' की आवाज़। प्र० ज़रा-सा खटका होते ही कुत्ता जग जाता है।

खटपट– स्त्री० अनबन, झगड़ा, मनमुटाव। प्र० उन दोनों में कुछ खटपट है।

खटमल– पु० एक कीड़ा जो गंदी खाट, बिस्तर आदि में पैदा हो जाता है, खटकीड़ा, उँडुस, उडुस, पिस्सू।

खटास – स्त्री० हल्का खट्टापन। प्र० बासी दाल और सब्ज़ियों में खटास आ जाती है।

खड़कना – *क्रि॰* 1. खड़-खड़ की आवाज़ होना। *प्र॰* कहीं कुछ खड़क रहा है। 2. (प्रायः सूखे) पत्तों के आपस में टकराने से विशेष तरह की आवाज़ होना। *प्र॰* पत्ता खड़का और मैं सरका।

खड़खड़ाना – *क्रि॰* खड़-खड़ करना। *प्र॰* आँधी में दरवाज़े और खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगते हैं।

खड़खड़ाहट – *स्त्री॰* खड़-खड़ की आवाज़, खड़खड़ाने की आवाज़।

खड़ा –*वि॰* 1. ऊपर की तरफ़ उठा हुआ; जैसे – खड़ी रेखा, खड़ा आदमी, खड़ा पेड़। 2. स्थिर, रुका हुआ; जैसे – खड़ी बस, खड़ी रेलगाड़ी। 3. चुनाव में उम्मीदवार। *प्र॰* चुनाव में मेरे पिताजी भी खड़े हैं।

खड़ाऊँ– *स्त्री॰* 1. काठ की बनी खूँटीदार चप्पल, चरणपादुका, काष्ठपादुका। 2. काठ की बनी पट्टीदार चप्पल, चटपटिया, चटपटी, चट्टी।

खड्ग– *पु॰* एक प्रकार की तलवार, खाँड़ा।

खड्ड– *पु॰* गहरा और बड़ा गड्ढा। *प्र॰* कल कश्मीर में एक बस खड्ड में गिर गई।

खड्ढा– *पु॰* गड्ढा।

ख़त– *पु॰* पत्र, चिट्ठी। *प्र॰* वालिद का ख़त आया था।

ख़तरनाक– *वि॰* जिसमें ख़तरा हो, जोखिमवाला, जोखिम भरा। *प्र॰* यह कुत्ता बड़ा ख़तरनाक है, पंद्रह आदमियों को काट चुका है।

ख़त्म– *वि॰* 1. समाप्त। *प्र॰* मेरा इम्तहान ख़त्म हो गया। 2. बर्बाद, नष्ट। *प्र॰* भयंकर भूकंप में सब कुछ ख़त्म हो गया।

खदान– *स्त्री॰* वह स्थान जहाँ से खोदकर धातु, कोयला आदि खनिज पदार्थ निकाले जाते हैं, खान; जैसे – कोयले की खदान।

खनक– *स्त्री॰* धातु या शीशे की चीज़ों के धीरे से टकराने की आवाज़, बजने की ध्वनि; जैसे – चूड़ी की खनक, ज़ेवर की खनक, सिक्कों की खनक।

खनन– *पु॰* खोदना, खुदाई करना। *प्र॰* उस पुराने टीले पर खनन-कार्य हो रहा है।

खनिज– *वि॰* खान खोदकर निकाली जानेवाली वस्तुएँ; जैसे – कोयला, लोहा, चाँदी, सोना आदि।

खनिज नमक– *पु॰* सामान्य नमक से अलग पत्थर रूप में मिलनेवाला नमक।

खपच्ची– *स्त्री॰* बाँस की पतली फट्टी। *प्र॰* हड्डी टूट जाने पर उसके ऊपर तथा नीचे एक-एक खपच्ची बाँध देनी चाहिए।

खपत– *स्त्री॰* खप जाना, ख़र्च होना। *प्र॰* ऐसे सामान की यहाँ काफ़ी खपत है।
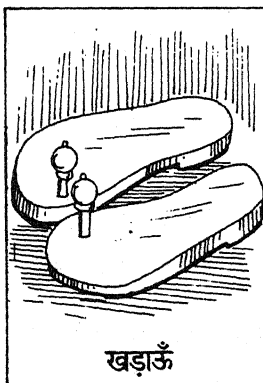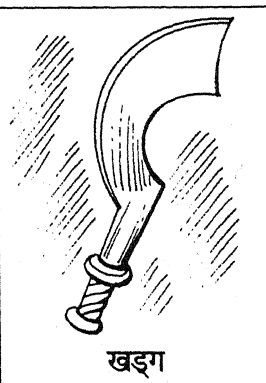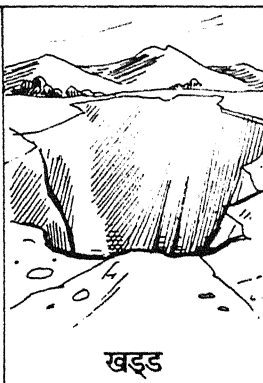
खड़ाऊँ | खड्ग | खड्ड | खदान
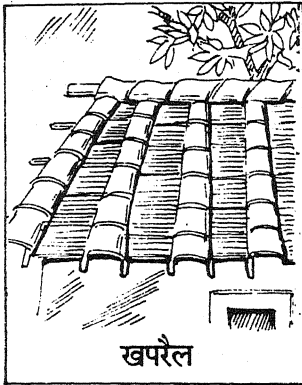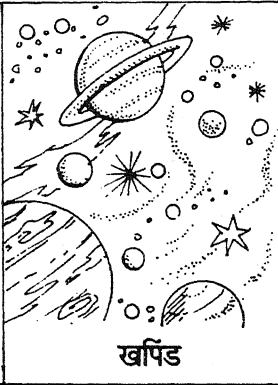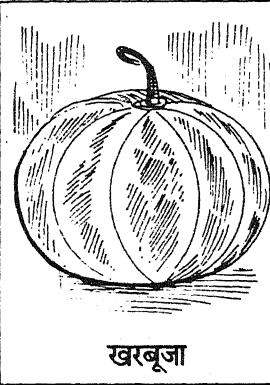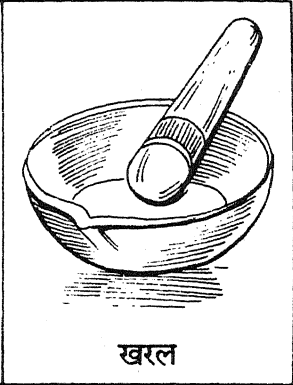
खपरैल | खपिंड | खरबूजा | खरल

खपरैल– *स्त्री०* मिट्टी के खपड़े से छाई हुई छत। *प्र०* 1. गाँवों में मकान प्रायः खपरैल के होते हैं। 2. खपरैलवाले मकान पक्के मकान से ठंडे होते हैं।

खपाना– *क्रि०* ख़र्च करना, लगाना। *प्र०* यह बचा सामान भी इस दावत में खपा दो। *मु० दिमाग़ खपाना, सिर खपाना* –माथापच्ची करना, किसी काम में बहुत ज़्यादा दिमाग़ लगाना। *प्र०* इस व्यर्थ की समस्या में क्यों अपना दिमाग़ खपा रहे हो?

खपिंड (ख = आकाश + पिंड)–*पु०* आसमान में दिखनेवाले तारे, ग्रह आदि पिंड। *प्र०* रात में दिखनेवाले खपिंड केवल तारे ही नहीं हैं, ग्रह भी हैं जो लगातार रोशनी फेंकते हैं पर चमकते नहीं।

ख़बर– *स्त्री०* 1. समाचार, हाल, हालचाल। *प्र०* वहाँ की ख़बर क्या है? 2. सूचना। *प्र०* पुलिस को ख़बर है कि डाकुओं का गिरोह उसी जंगल में छिपा है। 3. जानकारी। *प्र०* इस संबंध में मुझे कोई ख़बर नहीं है।

ख़बरदार– *वि०* 1. होशियार, सावधान। *प्र०* ख़बरदार! इधर पैर मत बढ़ाना नहीं तो गोली मार दूँगा। 2. सजग, सचेत, चौकन्ना। *प्र०* उस घटना के बाद वे काफ़ी ख़बरदार हो गए हैं।

ख़मीर – *पु०* 1. गुँधे हुए आटे की सड़ाँध जिसके कारण आटा थोड़ा फूल जाता है और थोड़ा खट्टा हो जाता है। *प्र०* ख़मीरवाले आटे की रोटी हल्की होती है। 2. ख़मीरी पाउडर, बेकिंग पाउडर।

ख़याल– *पु०* दे० ख़्याल।

खरपतवार– *पु०* घास-पात, घास-फूँस (जो खेत में उग आता है तथा जिसे नष्ट करने के लिए या तो दवा डाली जाती है या उखाड़कर फेंका जाता है)।

खरबूजा– *पु०* गर्मियों में होनेवाला ककड़ी की जाति का एक मशहूर मीठा गोल फल।

खरल – *पु०* पत्थर या लोहे का बरतन जिसमें दवाएँ तथा मसाले आदि कूटे जाते हैं, खल।

खरा – *वि०* 1. जिसमें कोई खोट न हो, ख़ालिस, विशुद्ध; जैसे – खरा सोना। (*विलोम* – खोटा)। 2. जो सच्ची-सीधी बात करे, लाग-लपेट की बात न करनेवाला, जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी न हो; जैसे – खरा आदमी। 3. कड़ा सेंका हुआ, करारा; जैसे – खरा पापड़, खरी रोटी। 4. नक़द। *प्र०* खरी मजूरी चोखा काम।

खरा-खोटा – *वि०* भला-बुरा, खोटा, बुरा; जैसे – खरा-खोटा माल। **खरी-खोटी** – कड़वी लगनेवाली बात। *प्र०* क्यों उसके यहाँ जाते हो, वह

तुम्हें जब देखो खरी-खोटी सुनाता रहता है।

ख़राद – पु॰ लकड़ी तथा धातु को चिकनी बनाने का औज़ार या मशीन। प्र॰ लकड़ी तथा धातु को ख़राद पर चिकना बनाते हैं।

ख़रादना – *क्रि॰* लकड़ी तथा धातु को ख़राद पर चिकना करना।

ख़रीद – *स्त्री॰* ख़रीदना, ख़रीदने की क्रिया या भाव, क्रय। प्र॰ चलो बाज़ार चलें, कुछ ख़रीद-फ़रोख़्त करनी है।

ख़रीदारी – *स्त्री॰* ख़रीदना, ख़रीद, ख़रीदने की क्रिया। प्र॰ आज मुझे कुछ ख़रीदारी करनी है।

ख़रीफ़ – *स्त्री॰* असाढ़-सावन में बोई और क्वार-कातिक में काटी जानेवाली फ़सल; जैसे – ज्वार, बाजरा, धान आदि।

खरोंच – *स्त्री॰* चमड़ी में खरोंच लगने का चिह्न, चमड़ी का छिल जाना। प्र॰ जाने कैसे खरोंच लग गई।

खरोंचना – *क्रि॰* खुरचना, छीलना। प्र॰ भोलू और विक्रम में झगड़ा हुआ और विक्रम ने भोलू का मुँह खरोंच लिया।

ख़र्चीला – *वि॰* 1. ज़्यादा ख़र्चवाला, जिसमें बहुत अधिक ख़र्च हो। प्र॰ 1. यह शादी बहुत ख़र्चीली पड़ेगी। 2. हमारे समाज में हर समारोह दिनोंदिन ख़र्चीला होता जा रहा है। 2. ज़्यादा ख़र्च करनेवाला। प्र॰ तुम्हारा भाई बड़ा ख़र्चीला है।

खर्राटा – पु॰ सोते समय नाक से निकलनेवाली खर्र-खर्र की आवाज़।

खल – 1. पु॰ (क) खली। (ख) खरल, दवा-मसाला आदि कूटने का बरतन। 2. *वि॰* दुष्ट, पाज़ी। प्र॰ वह आदमी खल है।

खलना – *क्रि॰* अच्छा न लगना, बुरा लगना, अखरना, खटकना, चुभना। प्र॰ 1. मेरा वहाँ जाना उसे ज़रूर खलेगा। 2. मेरी हर बात तुम्हें खलती क्यों है?

खलबली – *स्त्री॰* 1. बेचैनी, घबराहट, व्याकुलता। प्र॰ इतनी-सी बात पर तुम्हें इतनी खलबली क्यों है? 2. हलचल। प्र॰ बम फटने से पूरे बाज़ार में खलबली मच गई।

खली – *स्त्री॰* तेलहन से तेल निकाल लेने के बाद बचा हुआ अंश, तेलहन की सीठी, खल।

ख़सम – पु॰ पति, शौहर।

खसरा – पु॰ 1. पटवारी की एक बही जिसमें गाँव के हर खेत का नंबर, रकबा और काश्तकार (किसान)

ख़राद | खरोंच | खर्राटा | खलबली

खसोटना खाई खाड़ी खाता
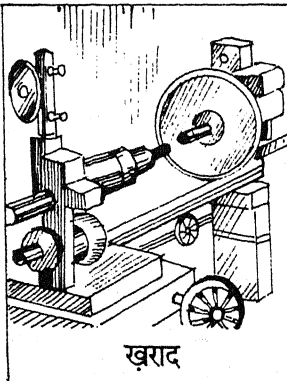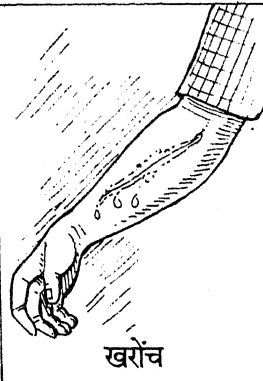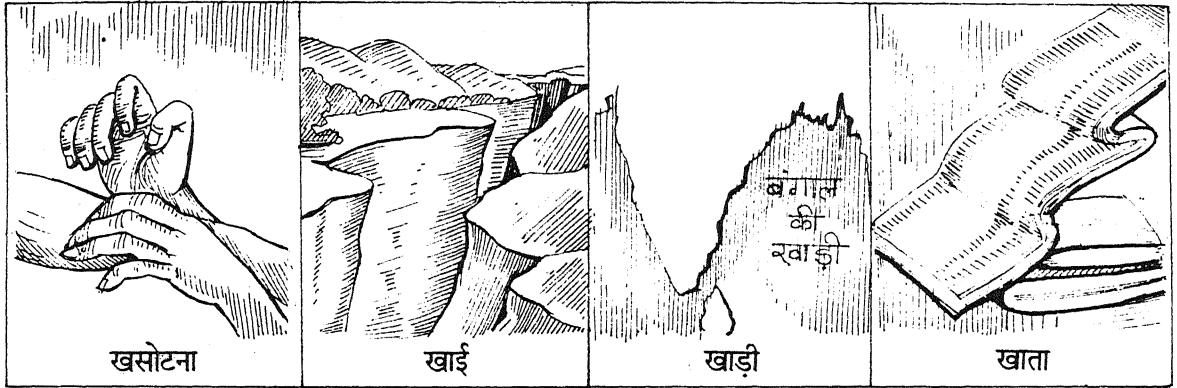
का नाम आदि लिखा होता है। 2. एक तरह की खुजली। 3. छूत का एक रोग जिसमें शरीर में दाने निकल आते हैं तथा खुजली होती है, मीजल्स।

खसोटना – *क्रि॰* किसी चीज़ को ज़बरदस्ती लेना, छीनना। यह शब्द प्रायः नोचना या लूटना के साथ आता है। *प्र॰* 1. नोच-खसोटकर पैसे कमाना भी क्या कमाना है। 2. उस बदमाश ने तो उस क्षेत्र में बड़ी लूट-खसोट मचा रखी है।

ख़स्ता – *वि॰* ज़रा-सा भी दबने से टूट जाने या चूर-चूर हो जानेवाला। *प्र॰* 1. ख़स्ते करारे पापड़ ले लो। 2. कचौड़ी बड़ी ख़स्ता बनी है।

ख़ांदान – *पु॰* दे॰ ख़ानदान।

खाई – *स्त्री॰* 1. लंबा और गहरा गड्ढा जो रक्षा के लिए क़िले के चारों ओर या लड़ाई में खोदा जाता है, ख़ंदक। 2. अंतर, दूरी। *प्र॰* उन दोनों के बीच खाई बढ़ती ही जा रही है।

खाऊ – *वि॰* 1. पेटू, बहुत खानेवाला। 2. घूस लेने-वाला। *प्र॰* इस दफ़्तर के कई कर्मचारी इतने खाऊ हैं कि बिना पैसे लिए कोई काम नहीं करते।

ख़ाक – *स्त्री॰* 1. राख। *प्र॰* सारा सामान जलकर ख़ाक हो गया। 2. धूल, मिट्टी। *प्र॰* जो जगह कल तक इतनी हरी-भरी थी, वहाँ आज ख़ाक उड़ रही है। 3. कुछ नहीं। *प्र॰* 1. वह ख़ाक पढ़ता है। 2. वह क्या ख़ाक पढ़ता है, आता-जाता तो कुछ भी नहीं।

ख़ाका – *पु॰* रेखाओं का ढाँचा, रूपरेखा, नक़्शा; जैसे – संसार का ख़ाका, भारत का ख़ाका, मकान का ख़ाका।

ख़ाकी – फ़ौजी वर्दी के रंग का, मटमैला; जैसे – ख़ाकी काग़ज़, ख़ाकी कपड़ा।

खाज – *स्त्री॰* चमड़ी का एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है, खारिश, खुजली।

खाड़ी – *स्त्री॰* तीन ओर ज़मीन से घिरा समुद्र का हिस्सा, खलीज, आखात; जैसे – बंगाल की खाड़ी।

ख़ातमा – *पु॰* दे॰ ख़ात्मा।

खाता – *पु॰* 1. किसी बैंक में किसी व्यक्ति या संस्था का हिसाब-किताब, एकाउंट। *प्र॰* मेरा खाता स्टेट बैंक में है। 2. बही, बही-खाता, हिसाब-किताब रखने की बही।

ख़ातिर – 1. *स्त्री॰* (क) आवभगत, आदर-सत्कार, ख़ातिरदारी। *प्र॰* नवाब साहब ने हम लोगों की ख़ूब ख़ातिर की। (ख) पिटाई। *प्र॰* पुलिस ने चोर की ख़ूब ख़ातिर की। 2. *अ॰* वास्ते, के लिए। *प्र॰* दोस्त की ख़ातिर रशीद ने क्या-क्या परेशानियाँ नहीं उठाईं।

ख़ातिरदारी – *स्त्री०* आवभगत, आदर-सत्कार। *प्र०* कोई भी पहुँच जाए वे खूब ख़ातिरदारी करते हैं।

ख़ात्मा – *पु०* अंत, समाप्ति, मृत्यु।

खादर – *वि०* नदी के आस-पास की नीची भूमि, कछार। (*विलोम* – बाँगर)।

खादी – *स्त्री०* हाथ से काते हुए सूत का हाथ या बिजली के करघे पर बना कपड़ा, खद्दर।

खादीभंडार – *पु०* खादी की दूकान, खादी या खद्दर मिलने की जगह।

खाद्य – 1. *वि०* खाने योग्य, खाने लायक; जैसे – खाद्य-सामग्री। 2. *पु०* खाने की वस्तु, खुराक़, भोजन। *प्र०* आजादी के पहले हर साल भारत खाद्य-समस्या का सामना करता था, पर अब ऐसा नहीं है।

खाद्यपदार्थ, खाद्यसामग्री – *पु०* खाने की चीज़ें, खाने की वस्तुएँ। *प्र०* अपने देश में अब खाद्यपदार्थों की कमी नहीं है।

खाद्यान्न – *पु०* (खाने के काम आनेवाला) अन्न, अनाज, ग़ल्ला। *प्र०* अब देश खाद्यान्नों के मामले में किसी का मुँहताज नहीं है।

खान – *स्त्री०* 1. वह स्थान जहाँ से धातु, कोयला आदि खोदकर निकाले जाते हैं, खदान। 2. खाने की क्रिया, भोजन। *प्र०* उन लोगों का खान-पान हम लोगों जैसा ही है। इस अर्थ में यह 'पान' के साथ ही आता है। 3. भंडार। *प्र०* पंजाब तो गेहूँ की खान है।

ख़ानदान – *पु०* घराना, कुल, वंश, ख़ांदान। *प्र०* उनका ख़ानदान कहीं बाहर से आकर यहाँ बसा है।

ख़ाना – *पु०* 1. छोटे-छोटे घर, भाग, खंड। *प्र०* आलमारी में पाँच ख़ाने हैं। 2. घर, मकान; जैसे – जेलख़ाना, बर्फख़ाना, डाकख़ाना, दवाख़ाना, मुर्गीख़ाना, शराबख़ाना।

ख़ानाबदोश – *वि०* जो स्थायी रूप से किसी एक जगह न रहे, जिसका स्थायी घर-बार न हो, घुमंतू। *प्र०* भारत में कई ख़ानाबदोश जातियाँ हैं।

ख़ामोश – *वि०* चुप, मौन। *प्र०* मैंने जब पिताजी से यह बात पूछी तो ख़ामोश हो गए।

ख़ामोशी – *स्त्री०* चुप्पी, मौन। *मु० ख़ामोशी छाना* – सबका चुप या मौन हो जाना। *प्र०* दूल्हे के पिता का हार्ट फ़ेल होते ही पूरी बारात में ख़ामोशी छा गई।

खाल – *स्त्री०* (आदमी या पशु की) चमड़ी, चमड़ा, त्वचा। *प्र०* गाय-बैल की खाल से जूते आदि बनते हैं। *मु० खाल उधेड़ना* – बहुत मारना। *प्र०* अगर
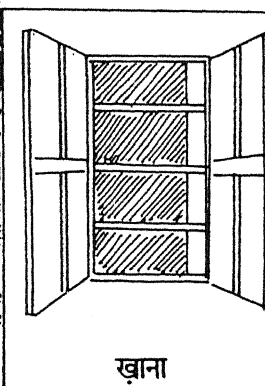
खादर | खाद्यान्न | ख़ाना | ख़ानाबदोश
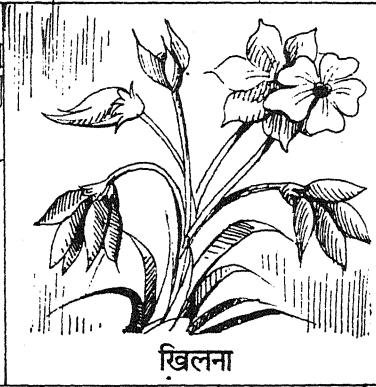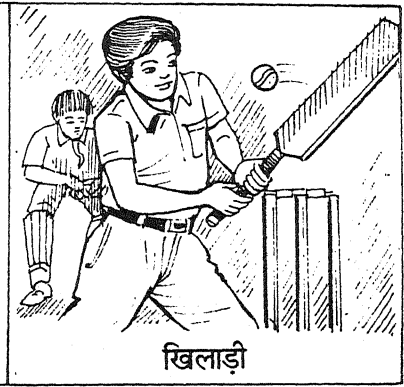
खिझाना खिलना खिलाड़ी

फिर ऐसी शैतानी की तो खाल उधेड़ दूँगा।

ख़ालिस – *वि॰* जिसमें कोई खोट या मिलावट न हो, विशुद्ध, शुद्ध। *प्र॰* यह दूध बिल्कुल ख़ालिस है।

ख़ास – *वि॰* जो आम न हो, जो साधारण न हो, विशेष, विशिष्ट। *प्र॰* मैं किसी ख़ास काम से बाज़ार जा रहा हूँ। (*विलोम* – आम)।

ख़ासा – *वि॰* काफ़ी अच्छा, बढ़िया, अच्छा-ख़ासा। *प्र॰* 1. उन्होंने ख़ासा इंतज़ाम कर रखा था। 2. वह अच्छा-ख़ासा नवयुवक है।

खिंचाव – *पु॰* 1. खींचे जाने का भाव, तनाव। 2. आकर्षण। *प्र॰* उस व्यक्ति में पता नहीं क्या खिंचाव है कि लोग उसे देखते ही, उसके हो जाते हैं।

खिझाना – *क्रि॰* चिढ़ाना। *प्र॰* बंदर को मत खिझाओ नहीं तो काट खाएगा।

खिलखिलाना – *क्रि॰* खिल-खिल आवाज़ करके हँसना, ज़ोर से हँसना, खुलकर हँसना, क़हक़हा लगाना। *प्र॰* ज़रा-ज़रा-सी बात पर खिलखिलाकर हँसने की उसकी आदत है।

खिलना – *क्रि॰* 1. कली का फूलना, कली का फूल हो जाना। 2. प्रसन्न होना, खुश होना। *प्र॰* माँ बहुत दिनों से विदेश गए अपने लड़के से मिलकर खिल उठी। 3. सुंदर लगना। *प्र॰* इस कपड़े में तुम ख़ूब खिलते हो।

खिलवाड़ी – *वि॰* खेल-कूद में रहनेवाला, जिसका खेल-कूद में मन लगे। *प्र॰* यह लड़का तो इतना खिलवाड़ी है कि पढ़ने में जी ही नहीं लगाता।

खिलाड़ी – *पु॰* 1. खेलनेवाला। 2. किसी खास खेल में अच्छा, कोई खास अच्छा खेलनेवाला। *प्र॰* वह फुटबाल का खिलाड़ी है, क्रिकेट का नहीं।

खिलाना – *क्रि॰* 1. प्रेरणा देना। *प्र॰* हम फूल के पौधे लगा सकते हैं किंतु फूल खिला नहीं सकते, वह तो समय आने पर अपने आप खिलेगा। 2. रिश्वत देना। *प्र॰* बिना कुछ खिलाए, इस दफ़्तर में काम नहीं होने का।

खिल्ली – *स्त्री॰* हँसी, मज़ाक, दिल्लगी। *मु॰ खिल्ली उड़ाना* – हँसी उड़ाना, मज़ाक उड़ाना, लिहाड़ी लेना। *प्र॰* उस बेचारे की सभी लोग खिल्ली उड़ाते हैं, पर उसे पता नहीं चलता।

खिसकना – *क्रि॰* 1. धीरे-धीरे हटना, सरकना। *प्र॰* तुम थोड़ा उधर खिसक जाओ। 2. चुपके से चल देना या चला जाना, चुपचाप चले जाना। *प्र॰* क्यों भाई, हम लोग बैठे ही रहे और तुम खिसक गए।

खिसियाना – *क्रि॰* 1. खीझना। *प्र॰* ज़रा-ज़रा-सी बात पर तुम खिसिया क्यों जाते हो? 2. अपनी

गलती या असफलता के कारण झेंपना। प्र० बच्चा अपने झूठ का पता चल जाने पर खिसिया गया। 3. लजा जाना। 4. बेवकूफ़ बनकर झेंपना और खीझना।

खींचतान – *स्त्री०* खींचा-खींची, खींचातानी, तनातनी। प्र० मोहन और राम में बँटवारा तो हो गया है लेकिन एक खेत को लेकर खींचतान चल रही है।

खींचातानी – *स्त्री०* दे० खींचतान।

खीज – *स्त्री०* दे० खीझ।

खीजना – *क्रि०* दे० खीझना।

खीझ – *स्त्री०* झुँझलाहट, कुढ़न, गुस्सा। प्र० तुम्हारी सारी खीझ मेरे ही ऊपर क्यों है? शैतानी तो इन सभी ने की है।

खीझना – *क्रि०* नाराज़ होना, झुँझलाना, क्रोधित होना, प्र० बार-बार सवाल ग़लत होने पर अध्यापक ने खीझकर कहा कि अब फिर गलती हुई तो थप्पड़ खाओगे।

खील – *स्त्री०* 1. भूनकर छिलका उतारा हुआ धान, लावा। 2. फोड़े-मुँहासे आदि में मवाद के बीच का कील जैसा हिस्सा। प्र० खील निकल गई, अब फोड़ा ठीक हो जाएगा।

खुजली – *स्त्री०* 1. चमड़ी का एक रोग जिसमें खुजलाने की बड़ी इच्छा होती है और खुजलाने से या ऐसे भी शरीर पर दाने निकल आते हैं, खाज, ख़ारिश। 2. खुजलाहट, सुरसुरी।

खुदरा – *वि०* फुटकर, थोड़ा-थोड़ा, थोड़ी-थोड़ी मात्रा का, थोड़ी मात्रा का। (*विलोम* – थोक)।

खुदाई – *स्त्री०* 1. खोदने का काम। प्र० वहाँ खुदाई हो रही है। 2. खोदने की मज़दूरी। प्र० इस कुएँ की खुदाई कितनी होगी?

खुरंट, खुरंड – पु० सूखते हुए घाव पर जमनेवाली पपड़ी।

खुर – पु० गाय, बैल, भैंस, घोड़ा, बकरी आदि चौपायों के पैर का निचला कड़ा भाग।

खुरचना – *क्रि०* जमी या चिपकी हुई चीज़ को छीलकर अलग करना, कुरेदना।

ख़ुराक़ – *स्त्री०* 1. भोजन, खाना, खाना-पीना। प्र० आप बहुत कमज़ोर हो गए हैं, ज़रा अच्छी ख़ुराक़ लीजिए। 2. दवा की वह मात्रा जो एक बार में ली जाए। प्र० इस पाउडर की चार ख़ुराक़ बना लीजिए और दिन-भर में चार बार पानी से लीजिए।

ख़ुर्दबीन – *स्त्री०* छोटी-छोटी वस्तुओं को बड़ा दिखानेवाला यंत्र, सूक्ष्मदर्शी यंत्र, माइक्रोस्कोप।

खुलना – *क्रि०* 1. रोज़ का काम शुरू होना; जैसे-

खुदाई खुर ख़ुर्दबीन
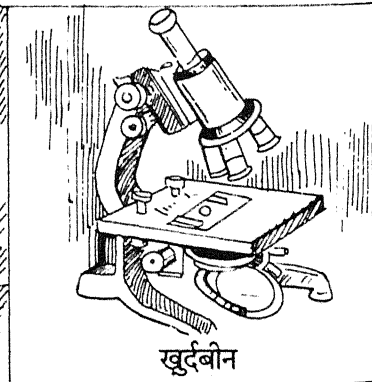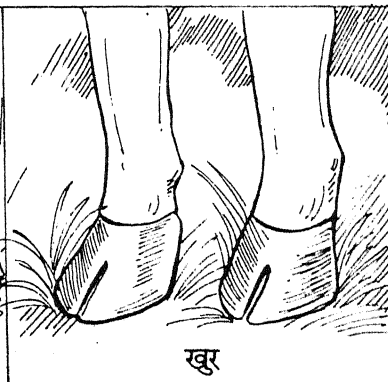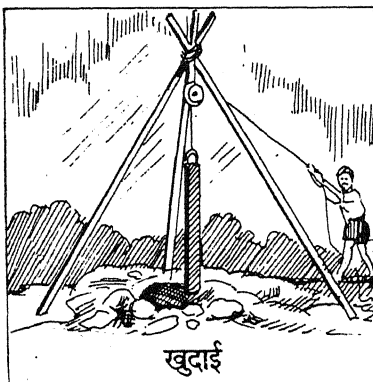
स्कूल खुलना, दफ़्तर खुलना, दूकान खुलना। 2. बंद न रहना या होना; जैसे – दरवाज़ा खुलना, ताला खुलना, खिड़की खुलना, फाटक खुलना। 3. बँधी हुई चीज़ का अलग होना; जैसे – रस्सी खुलना, गठरी खुलना, बंडल खुलना। 4. छिपी बात का सामने आना; जैसे – भेद खुलना, राज खुलना, रहस्य खुलना। 5. ढकी हुई चीज़ का अनढकी हो जाना; जैसे – परदा खुलना। 6. शुरू होना। *प्र०* अब उनकी एक नई दूकान भी खुल रही है।

खुल्लमखुल्ला – *अ०* खुले तौर पर, खुले आम, सबके सामने। *प्र०* उन्होंने खुल्लमखुल्ला मेरा साथ दिया।

खुशक़िस्मत – *वि०* जिसकी क़िस्मत अच्छी हो, क़िस्मतवाला, भाग्यवान्। (*विलोम* – बदक़िस्मत)।

खुशखबरी – *स्त्री०* ऐसी ख़बर जिसको सुनकर खुशी हो, अच्छी ख़बर, शुभ समाचार, शुभ सूचना।

खुशनसीब – *वि०* खुशक़िस्मत, भाग्यशाली, भाग्यवान्। (*विलोम* – बदनसीब)।

खुशमिज़ाज – *वि०* हमेशा खुश रहनेवाला, हँसमुख।

खुशहाल – *वि०* रुपए-पैसे से सुखी, खाता-पीता, जिसके घर में कोई कमी न हो, संपन्न। *प्र०* वे लोग कोई भिखमंगे नहीं हैं, खुशहाल हैं।

खुशहाली – *स्त्री०* सुख-समृद्धि, संपन्नता। *प्र०* नेहरू जी देश की खुशहाली के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते थे।

खुशामद – *स्त्री०* चापलूसी। *प्र०* 1. परिश्रम करो, खुशामद से काम नहीं चलेगा। 2. आजकल बहुत से लोग खुशामद से सब कुछ पा लेते हैं।

खुशामदी – *वि०* खुशामद करनेवाला, किसी की झूठी बड़ाई करनेवाला, चापलूसी करनेवाला, चापलूस। **खुशामदी टट्टू** – ऐसा आदमी जिसकी आदत खुशामद करने की हो, ऐसा व्यक्ति जिसने खुशामद करना अपना पेशा बना लिया हो।

खुशी– *स्त्री०* प्रसन्नता, हर्ष। *प्र०* परीक्षा में अच्छे नंबर आने से उसे बहुत खुशी है। *मु०* *खुशी का ठिकाना न रहना* – बहुत ज़्यादा खुश होना। *प्र०* परीक्षा में प्रथम आने पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। *खुशी से झूम उठना, खुशी से नाच उठना, खुशी से पाँव जमीन पर न पड़ना, खुशी से फूल उठना, खुशी से फूले न समाना* – बहुत ज़्यादा खुश होना। *प्र०* बहुत दिनों की बेकारी के बाद बहुत अच्छी नौकरी पाकर वह खुशी से झूम उठा।

खुश्क– *वि०* सूखा हुआ, रूखा, सूखा। *प्र०* उस बूढ़े व्यक्ति की चमड़ी बिल्कुल खुश्क हो गई है। दो और उदाहरण हैं – खुश्क मौसम, खुश्क ज़मीन।

ख़ुश्की– *स्त्री॰* सूखापन, शुष्कता, रूखापन। *प्र॰* आजकल के मौसम में ख़ुश्की है।

ख़ूँख़ार– *वि॰* 1. ख़ून पीनेवाला, हिंसक, ख़ूनी, मार डालनेवाला। *प्र॰* कल दो ख़ूँख़ार आतंकवादियों को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया। 2. भयंकर, भयावना, डरावना। *प्र॰* शराब के नशे में वह डाकू बहुत ख़ूँख़ार दीख रहा था।

ख़ून – *पु॰* 1. लहू, रक्त, रुधिर। *प्र॰* उसका ख़ून ख़राब है, इसीलिए उसे बार-बार चमड़ी के रोग हो जाते हैं। *मु॰ ख़ून उबलना, ख़ून खौलना* – बहुत ज़्यादा गुस्सा होना, गुस्से से लाल होना। *प्र॰* सब कुछ कह लो पर गाली न देना, गाली सुनकर मेरा ख़ून खौल उठता है। *ख़ून का प्यासा* – ख़ून कर देने को आतुर होना। *प्र॰* वह तुम्हारे ख़ून का प्यासा हो रहा है, इस समय उसके सामने न जाना। *ख़ून के घूँट पीना* – अपने क्रोध को दबाना। *प्र॰* मैं उस समय ख़ून के घूँट पीकर रह गया, दूसरा होता तो ज़रूर मार डालता। *ख़ून सूखना*– बहुत ज़्यादा डर जाना। *प्र॰* सामने खड़े शेर को देखकर मेरा तो ख़ून सूख गया। 2. क़त्ल, हत्या। *प्र॰* कल किसी ने उसका ख़ून कर दिया।

ख़ूनख़राबा – *पु॰*मार-काट। *प्र॰* इन दिनों पंजाब में आतंकवादी ख़ूब ख़ूनख़राबा कर रहे हैं।

ख़ूब– 1. *अ॰* बहुत ज़्यादा, बहुत अधिक। *प्र॰* इस वर्ष आम ख़ूब फले हैं। 2. *वि॰* अच्छा, बढ़िया। *प्र॰* क्या ख़ूब शक्ल पाई है!

ख़ूबसूरत– *वि॰* सुंदर, रूपवान्।

ख़ूबसूरती– *स्त्री॰* सुंदरता।

ख़ूबानी– *स्त्री॰* एक फल, ज़र्दालू।

ख़ूबी– *स्त्री॰* ख़ास बात, गुण, विशेषता, अच्छाई। *प्र॰* नेहरूजी में कई ख़ूबियाँ थीं।

खेती-बाड़ी– *स्त्री॰* 1. कृषि-कार्य, किसानी।2. खेती और बाग़-बग़ीचे लगाना।

खेद – *पु॰* अफ़सोस, दुख, रंज। *प्र॰* इस बात का मुझे खेद है कि इस वर्ष मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता।

ख़ेमा – *पु॰* डेरा, तंबू, शिविर।

खेलकूद – *स्त्री॰* खेल, क्रीड़ा, स्पोर्ट।

खेस – *पु॰* ओढ़ने के काम आनेवाली मोटे सूत की बनी मोटी और खुरदरी चादर।

खेसारी – *स्त्री॰* मटर की जाति की एक दाल या दलहन जो हानिकारक होता है। दे॰ केसरी।

ख़ैर – 1. *स्त्री॰* कुशल, ख़ैरियत, कुशल-क्षेम, ठीक-ठाक। *प्र॰* कहो भाई, उनके यहाँ सब ख़ैर तो हैं। 2. *अ॰* (क) कुछ भी हो, कुछ भी चिंता नहीं।

ख़ूँख़ार | ख़ूबानी | ख़ेमा
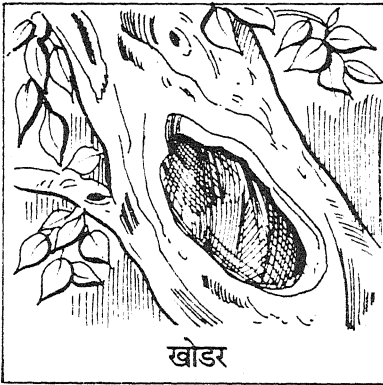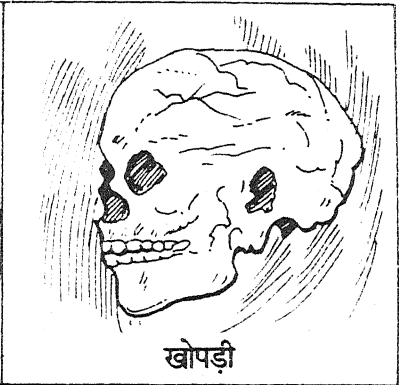
प्र॰ ख़ैर, वह प्रथम तो आ गया न? (ख) अच्छा। प्र॰ ख़ैर, अब आगे की बात कहो।

ख़ैरात – *स्त्री॰* दान। प्र॰ यह चीज़ ख़ैरात में मिली है।

ख़ैरियत – *स्त्री॰* 1. कुशल, ख़ैर। प्र॰ वहाँ सब ख़ैरियत तो है? 2. भलाई, कल्याण। प्र॰ उनकी ख़ैरियत के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।

खोंचा – पु॰ दे॰ खोमचा।

खो-खो – पु॰ एक भारतीय खेल जिसमें किसी भी खिलाड़ी को 'खो' कहकर उठाते हैं और वह किसी भी खिलाड़ी को छूकर आउट करता है।

खोजबीन – *स्त्री॰* गहराई और ध्यान से की गई खोज, ढूँढ़ने का काम। प्र॰ चोरी के मामले में पुलिस ख़ोजबीन कर रही है।

खोट – *स्त्री॰* 1. बुराई, ख़राबी, दोष, ऐब। प्र॰ उस लड़के में कोई खोट है। तुम्हारा उससे दोस्ती करना ठीक नहीं। 2. छल, कपट। प्र॰ उसके मन में तुम्हारे लिए खोट है, उससे सम्हलकर रहना। 3. किसी अच्छी चीज़ में किसी बुरी चीज़ की मिलावट। प्र॰ यह सोना खरा नहीं है इसमें कुछ खोट है।

खोडर – पु॰ पेड़ के तने या किसी मोटी डाली में बना छेद या खोखला भाग। प्र॰ कठफोड़वा पेड़ को काटकर खोडर बनाता है जिसे वह घोंसले के रूप में इस्तेमाल करता है।

खोदना – *क्रि॰* 1. किसी सतह की मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना; जैसे – गड्ढा खोदना, कुआँ खोदना, खान खोदना। 2. कुरेदकर नक्काशी करना या मूर्ति बनाना, उकेरना। प्र॰ लकड़ी या पत्थर में खोदकर बहुत सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ देश-विदेश में बनाई जाती रही हैं। 3. खोदकर निकालना, खुर्पी आदि से जड़ बाहर करना; जैसे – घास खोदना। *मु॰ खोद-खोदकर पूछना* – गहराई से पूछताछ करना, किसी मामले को जानने के लिए प्रश्न पर प्रश्न करके गहराई से पूछताछ करना। प्र॰ पुलिस उन लोगों से खोद-खोदकर पूछ रही है जिनपर शुबहा है।

खोना – *क्रि॰* 1. ग़ायब हो जाना, गुम हो जाना, न मिलना; जैसे – रुपए खोना, कपड़े खोना, किताब खोना। 2. गँवाना, कहीं भूल जाना, लापरवाही से गँवा देना। प्र॰ मोहन बहुत भुलक्कड़ है, जब देखो कुछ-न-कुछ खोता रहता है। 3. किसी चीज़ के बिना हो जाना, बर्बाद करना, बिगाड़ना, ख़राब करना; जैसे – अपनी इज़्ज़त बिगाड़ना।

खोपड़ी – *स्त्री॰* सिर का बालों और चमड़ी के नीचे का हड्डीवाला भाग। प्र॰ दुर्घटना में उसकी खोपड़ी बुरी तरह से पिस गई। *मु॰ खोपड़ी खा जाना,*

खोपड़ी चाट जाना – बेकार की बातें करके या बेकार के सवाल पूछ-पूछकर उबा देना। *प्र०* वह तो आधा पागल है, जब भी आता है बकवास करके खोपड़ी चाट जाता है।

खोमचा – *पु०* बड़ा थाल जिसमें चाटवाला चाट की चीज़ें रखे रहता है और चाट बनाकर बेचता है।

खोलना – *क्रि०* 1. बंद न रहने देना, रोज़ का काम शुरू करना; जैसे – दफ़्तर खोलना, सुबह दूकान खोलना। 2. बँधी हुई चीज़ को अलग करना; जैसे– बंडल खोलना, रस्सी खोलना। 3. छिपाने या ढकनेवाली चीज़ हटाना; जैसे – दरवाज़ा खोलना, संदूक खोलना। 4. छिपी चीज़ को सामने करना; जैसे – बात खोलना, रहस्य खोलना, राज़ खोलना। 5. नया काम शुरू करना; जैसे – नई दूकान खोलना, नई फ़ैक्टरी खोलना।

खोली - *स्त्री०* 1. गिलाफ़। *प्र०* तकिए की खोली फट गई है, दूसरी सिलानी है। 2. छोटी कोठरी। *प्र०* बंबई में काफ़ी लोग खोलियों में रहते हैं।

खोह – *स्त्री०* गुफा, कंदरा। *प्र०* उस पहाड़ की एक खोह में एक लाख रुपए के नोट मिले हैं।

ख़ौफ़ – *पु०* डर, भय। *प्र०* जब मैं हूँ तो तुम्हें किस बात का ख़ौफ़ है?

खौलना – *क्रि०* गर्म होना, उबलना; जैसे – दूध खौलना। *मु० ख़ून खौलना* – बहुत नाराज़ होना, क्रोधित होना। *प्र०* भाई के क़त्ल की बात सुनकर उसका ख़ून खौल उठा।

ख़्याल – *पु०* 1. विचार, राय, मत। *प्र०* मेरे ख़्याल से कल तक वह आ जाएगा। 2. याद, स्मरण। *प्र०* सच मानो, मुझे बिल्कुल ही ख़्याल नहीं रहा कि तुम्हारे साथ कहीं जाना है। 3. ध्यान। *प्र०* मुझे तो बाहर जाना पड़ रहा है, तुम माताजी का ख़्याल रखना। 4. कल्पना। यह आपका ख़्याल है, सचाई नहीं। *मु० ख़्याल से उतरना* – भूल जाना, याद न रहना। *प्र०* यह बात तो बिल्कुल ही मेरे ख़्याल से उतर गई थी।

★

ग

– देवनागरी वर्णमाला का तीसरा व्यंजन।

गंजा – *वि०* जिसे गंज रोग हो, जिसके सिर के बाल झड़ गए हों, जिसके सिर पर बाल न हों।

गंजी – *स्त्री०* 1. बनियायन। 2. शकरकंद।

गँडासा – *पु०* चौपायों के चारे के लिए कुट्टी काटने का हथियार।

गँडेरी – *स्त्री०* छिली हुई ईख (गन्ने) के छोटे-छोटे टुकड़े जो चूसे जाते हैं।

खोमचा | खोली | खोह
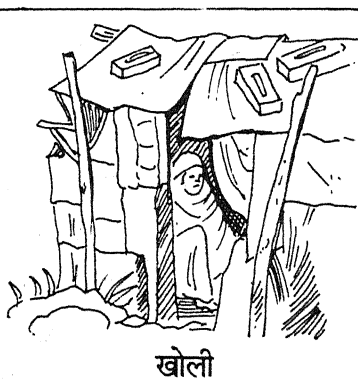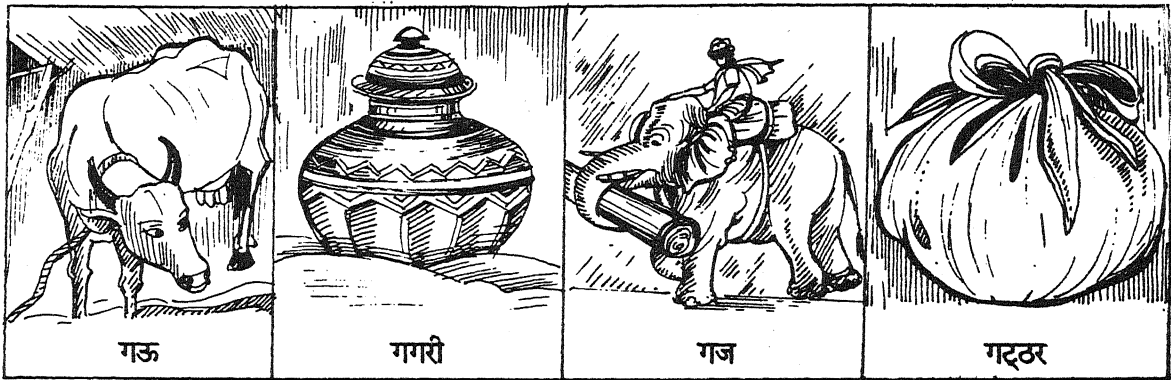
गंतव्य – *वि॰* जहाँ जाना या पहुँचना हो, मज़िल। *प्र॰* विकास के रास्ते पर भारत का गंतव्य अभी काफ़ी दूर है।

गँदला – *वि॰* (मुख्यतः पानी के साथ प्रयुक्त) गंदा, मटमैला, कीचड़ मिला; जैसे – गँदला पानी।

गंदा – *वि॰* 1. मैला, मैल भरा; जैसे – गंदा हाथ, गंदा कपड़ा, गंदा रास्ता। 2. गँदला, कीचड़ भरा; जैसे – गंदा पानी। 3. बुरा, जो साफ़ न हो; जैसे – गंदी लिखावट। 4. ख़राब; जैसे – गंदी आदत। 5. फूहड़, जो सभ्य लोगों के बीच न किया जा सके; जैसे – गंदी बात।

गंध – *स्त्री॰* 1. बू, महक, जो ख़ुशबू या बदबू न हो। *प्र॰* यह फूल सुंदर है पर इसमें कोई गंध नहीं है। 2. सुगंध, अच्छी महक। *प्र॰* देशी गुलाब में गंध होती है। 3. दुर्गंध। 4. गंदगी (हरियाणा तथा आसपास)। *प्र॰* वहाँ बहुत गंध है, साफ़ करवा लो।

गंधक – *स्त्री॰* जलनेवाला एक पीला खनिज पदार्थ।

गंभीर – *वि॰* 1. गहरा, अथाह, जिसकी थाह जल्दी न मिले; जैसे – गंभीर विद्वान, गंभीर ज्ञान। 2. शांत, धीरजवाला, जिसकी हास्य-विनोद में रुचि न हो; जैसे – गंभीर व्यक्ति, गंभीर आदमी। 3. भारी, घोर; जैसे – गंभीर संकट। 4. चिंतावाली, चिंताजनक; जैसे – गंभीर स्थिति, गंभीर बात।

गऊ – 1. *स्त्री॰* गाय; जैसे – गऊ का दूध। 2. *वि॰* सीधा, सरल। *प्र॰* वह तो गऊ आदमी है, वह ऐसा नहीं कर सकता।

गगन – *पु॰* आकाश, आसमान।

गगरा – *पु॰* धातु का घड़ा, कलश।

गगरी – *स्त्री॰* मिट्टी का बना छोटा घड़ा।

गज – *पु॰* हाथी।

गज़ – *पु॰* 1. तीन फ़ीट या छत्तीस इंच की एक नाप; जैसे – तीन गज़ कपड़ा। 2. कपड़ा, ज़मीन आदि नापने के काम आनेवाला तीन फ़ीट लंबा लोहे, लकड़ी या कपड़े का पैमाना।

गज़क – *पु॰* गुड़ या चीनी और तिल से बननेवाली एक मिठाई।

ग़ज़ल – *स्त्री॰* एक ख़ास छंद में उर्दू-हिंदी की विशेष प्रकार की कविता।

गट्ठर – *पु॰* बड़ी गठरी, बड़ा बंडल। *प्र॰* धोबी कपड़ों का गट्ठर ले गया।

गट्ठा – *पु॰* बड़ी गठरी, गट्ठर; जैसे – लकड़ी का गट्ठा, घास का गट्ठा।

गठन – *स्त्री०* बनावट; जैसे – शरीर की गठन।

गठीला – *वि०* गठा हुआ, कसा हुआ, सुडौल; जैसे – गठीला बदन।

गड़ना – *क्रि०* धँसना, चुभना। *प्र०* कल मेरे पैर में काँटा गड़ गया। *मु०* *ज़मीन में गड़ जाना* – बहुत शर्मिंदा होना। *प्र०* मैं जब भी तुम्हें यह करते देखता हूँ, ज़मीन में गड़ जाता हूँ। *गड़े मुर्दे उखाड़ना* – पुरानी बातों को सामने लाना, कहना या उभारना। *प्र०* उन बातों को अब जाने दो। गड़े मुर्दे उखाड़ने का क्या लाभ ?

गड़बड़ – *स्त्री०* 1. दंगा, फ़साद, झगड़ा। *प्र०* शहर में मत जाओ वहाँ कुछ गड़बड़ है। 2. गोलमाल। *प्र०* उसके बैंक में चार हज़ार रुपयों की गड़बड़ कर रखी है। 3. जो ठीक न हो, ख़राब। *प्र०* पिताजी की तबियत गड़बड़ है।

गड़बड़ी – *स्त्री०* दे० गड़बड़।

गढ़ – *पु०* 1. क़िला, दुर्ग। *प्र०* राजस्थान में बहुत से गढ़ हैं। 2. अड्डा। *प्र०* चंबल घाटी डाकुओं का गढ़ है।

गढ़ना –*क्रि०* 1. बनाना, काट-छाँटकर कोई आकार देना; जैसे – मूर्ति गढ़ना, ज़ेवर गढ़ना। 2. बात बनाना, किसी बात की यों ही कल्पना कर लेना; जैसे – बात गढ़ना, कहानी गढ़ना। *प्र०* वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, तुमने यों ही कहानी गढ़ ली है।

गढ़ाई– *स्त्री०* 1. गढ़ने का काम, गढ़ने की क्रिया। *प्र०*1. भोलू का बेटा सुनार की दूकान पर गढ़ाई का काम करता है। 2. इस कड़े की गढ़ाई मुझे पसंद नहीं आई। 2. गढ़ने की मज़दूरी। *प्र०* इस कुंडल की गढ़ाई कितनी लोगे ?

गणगौर– *पु०* राजस्थान का प्रसिद्ध त्योहार।

गणतंत्र– *पु०* वह शासन-प्रणाली जिसमें शासन-कार्य जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों से चलता है। *प्र०* भारत एक गणतंत्र है। **गणतंत्र दिवस** – *पु०* 1. 26 जनवरी को मनाया जानेवाला राष्ट्रीय त्योहार। 2. किसी देश के गणतंत्र बनाए जाने का दिन।

गणना– *स्त्री०* गिनना, गिनती। *प्र०* 1. मतदान समाप्त हो गया है कल मतगणना होगी। 2. हर दस साल बाद अपने देश में जनगणना होती है। 3. गांधीजी की गणना महापुरुषों में होती है। 4. इन वस्तुओं की गणना करो।

गणराज्य– *पु०* दे० गणतंत्र।

गणित– *पु०* हिसाब, जोड़ने, घटाने और गुणा-भाग आदि की विद्या, मैथेमैटिक्स, मैथ्स। *प्र०* 1. मोहन गणित में कक्षा में सबसे अच्छा है। 2. रेखागणित, अंकगणित, बीजगणित आदि गणित में ही आते हैं।

गणेशचतुर्थी– *स्त्री०* किसी भी महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी (विशेषतः भादों और माघ की) के दिन
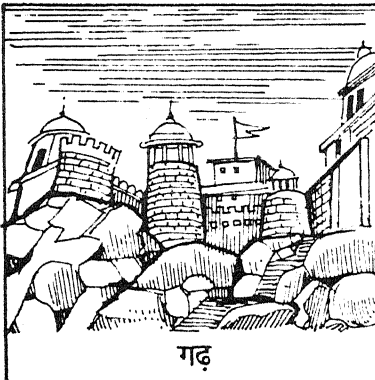
गढ़ | गणतंत्र दिवस | गणेशचतुर्थी
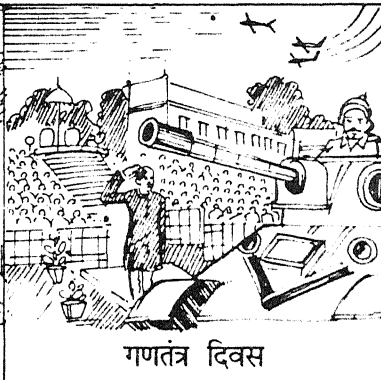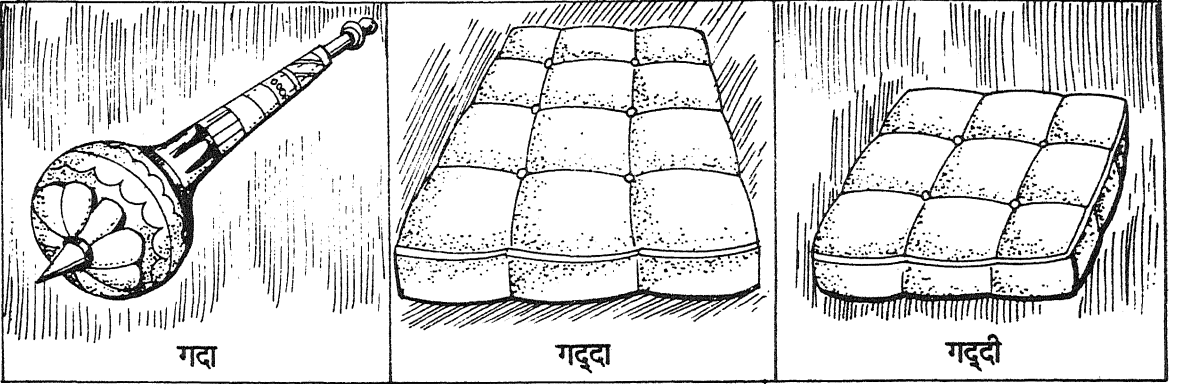
का त्योहार जब व्रत रखते हैं और गणेशजी की पूजा करते हैं।

गत–1. *वि०* गया हुआ, बीता हुआ, पिछला, जो बीत गया हो। *प्र०* गत वर्ष अच्छी उपज हुई थी। 2. *स्त्री०* बुरी दशा, ख़राब हालत। *मु० गत बनाना* – 1. बहुत मारना। *प्र०* आने दो उसे, उसकी ऐसी गत बनाऊँगा कि याद करेगा। 2. दुर्दशा करना। *प्र०* पिछले वर्ष होली में गाँववालों ने मुकेश की ख़ूब गत बनाई।

गति– *स्त्री०* चाल, रफ़्तार। *प्र०* हवाई जहाज़ तीव्र गति से उड़ता है।

गतिज ऊर्जा– *स्त्री०* गति से मिलनेवाली ऊर्जा। *प्र०* ऊर्जा (एनर्जी) कई प्रकार की होती है; जैसे – ताप ऊर्जा, विद्युत् ऊर्जा, गतिज ऊर्जा और प्रकाश ऊर्जा आदि।

गतिविधि– *स्त्री०* हरकत, कार्य-कलाप, रंग-ढंग। *प्र०* सरकार विरोधी पक्ष के कई नेताओं की गतिविधि पर नज़र रखती है।

गतिशील– *वि०* 1. गतिवाला, चलनेवाला। *प्र०* ऊर्जा से मशीन गतिशील होती है। 2. उन्नति करनेवाला, आगे बढ़नेवाला। *प्र०* अब पिछड़े हुए सभी देश गतिशील हो गए हैं।

गतिशीलता– *स्त्री०* आगे बढ़ना, प्रगतिशीलता। *प्र०* सभी देशों में गतिशीलता बराबर नहीं होती।

गत्ता– *पु०* (पुस्तकों की जिल्दें तथा डिब्बे बनाने के काम आनेवाली) दफ़्ती, बहुत मोटा काग़ज़।

गदा– *स्त्री०* पुराने ज़माने का एक हथियार, जिसमें एक डंडे के एक सिरे पर बड़ा-सा लट्टू लगा होता है; हनुमानजी की मूर्ति में उनके कंधे पर गदा होती है।

गद्दा– *पु०* रुई या फ़ोम से भरा मोटा बिछौना, तोशक।

ग़द्दार– *पु०* अपने देश या अपने पक्ष को हानि पहुँचानेवाला, देशद्रोही। *प्र०* जयचंद और मीरज़ाफर देश के ग़द्दार थे।

ग़द्दारी– *स्त्री०* अपने देश या अपनी संस्था को हानि पहुँचाना या उसे धोखा देना, देशद्रोह। *प्र०* जयचंद और मीर क़ासिम ने अपने-अपने समय में देश से ग़द्दारी की थी।

गद्दी– *स्त्री०* दूकान पर बैठने का या कुर्सी पर रखने का छोटा गद्दा।

गद्दीदार– *वि०* गद्दीवाला, जिसमें गद्दी हो; जैसे – गद्दीदार कुर्सी। *प्र०* ऊँट के पैर रेत में नहीं धँसते, क्योंकि वे गद्दीदार होते हैं।

गद्य– *पु०* जिसमें कविता की तरह छंद का प्रयोग न हो। (*विलोम* – पद्य)। *प्र०* नाटक, कहानी, उपन्यास आदि गद्य में लिखे जाते हैं।

गधा– पु॰ 1. घोड़े से छोटा, बोझ ढोनेवाला एक मशहूर जानवर, गदह, खर। 2. बेवकूफ़, मूर्ख, जिसे अक़्ल न हो। प्र॰ मैं गधा नहीं हूँ जो तुम्हारी इन बातों को न समझ सकूँ।

गनपाउडर– बारूद।

गन्ना – पु॰ ईख, ऊख।

गप– 1. पु॰ (क) गपकने या निगलने की ध्वनि। (ख) गपकना, निगलना। 2. स्त्री॰ (क) झूठी बात, मनगढ़ंत बात। प्र॰ यह तुम गप हाँक रहे हो, ऐसा हो नहीं सकता। (ख) गपशप।

गपोड़िया– वि॰ दे॰ गपोड़ी।

गपोड़ी– वि॰ गप्पी, गप मारनेवाला, मनगढ़ंत बातें करनेवाला, गपोड़िया।

गप्प– स्त्री॰ गप, मनगढ़ंत बात, झूठी बात।

गप्प मछली– स्त्री॰ एक मछली जो अंडे न देकर बच्चे देती है।

गप्पी– वि॰ गप हाँकनेवाला, गप मारनेवाला, गपोड़ी।

गम-बूट– पु॰ बरसात में या पानीवाले खेत में अपने जूते सूखे रखने के लिए जूते के ऊपर पहना जानेवाला रबर का घुटने तक का जूता।

गमला– पु॰ फूल-पौधे लगाने के लिए बना मिट्टी का बरतन।

गरज– स्त्री॰ ज़ोर की आवाज़, तेज़ ध्वनि, कड़कने की आवाज़। प्र॰ शेर और बादल की गरज बड़े ज़ोर की होती है।

ग़रज़– स्त्री॰ मतलब, चाह, ज़रूरत। प्र॰ 1. ग़रज़ बावली होती है। 2. आदमी अपनी ग़रज़ से सब कुछ करता है।

गरजना– क्रि॰ ज़ोर की आवाज़ करना, कड़कना; जैसे – शेर का गरजना, बादल का गरजना। प्र॰ मास्टर साहब जब भी नाराज़ होते हैं, गरजने लगते हैं।

गरदन– स्त्री॰ दे॰ ग़र्दन।

गरबा– पु॰ एक तरह का गुजराती नाच।

गरमागरमी– स्त्री॰ 1. क्रोध, ताव, गुस्सा। प्र॰ गरमागरमी में आदमी ठीक नहीं सोच पाता। 2. बकझक, रकझक, कहासुनी, तकरार। प्र॰ कल दोनों भाइयों में बात-बात में गरमागरमी हो गई।

गरमाहट– स्त्री॰ गर्मी, उष्णता। प्र॰ हम जाड़ों में धूप की गरमाहट का आनंद लेते हैं।

ग़रारा – पु॰ 1. कुल्ला, कुल्ली। प्र॰ गला ख़राब है तो गर्म पानी से ग़रारे कर लो। 2. औरतों का एक प्रकार का ढीला घेरदार पाजामा।

गरारी – स्त्री॰ पुली, घिन्नी, चरखी।
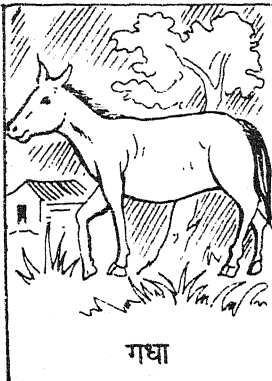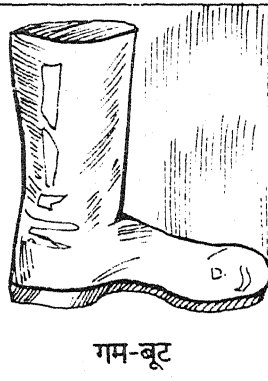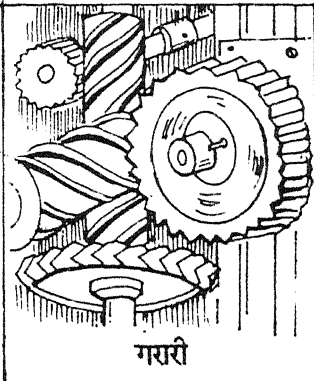
गधा | गम-बूट | गरबा | गरारी

गरुड़ गर्जना गला

गरी – स्त्री० नारियल या बादाम जैसे फलों के भीतर का गूदेदार भाग, गिरी, मींगी। प्र० बादाम की गरी भिगो-पीसकर नियमित लो, आँखों के लिए बहुत लाभ होगा।

ग़रीब – *वि०* निर्धन, धनहीन। *(विलोम* – अमीर)।

ग़रीबी – स्त्री० निर्धनता, धनहीनता। *(विलोम* – अमीरी)।

गरुड़ – पु० एक पक्षी जो विष्णुजी का वाहन माना गया है।

गर्जना – स्त्री० 1. गरजना, गर्जन, ज़ोर की आवाज़, कड़कना। 2. ललकार। प्र० रावण की ओर के राक्षसों की गर्जना सुनकर बंदर उन पर किटकिटाते हुए टूट पड़े।

गर्त – पु० गड्ढा। प्र० चंद्रमा में गर्त हैं, जो धब्बे-जैसे दीखते हैं।

गर्दन – स्त्री० वह अंग जो सिर और धड़ को जोड़ता है, गरदन, गला, ग्रीवा। प्र० नाराज़ होकर सरदार ने दुश्मन की गर्दन तलवार से उड़ा दी।

गर्भाशय (गर्भ+आशय) – पु० स्त्रियों के पेट की वह जगह जहाँ बच्चा जन्म से पहले पलता है।

गर्म – *वि०* जलता हुआ, जिसमें ताप हो। प्र० यह दूध गर्म है, छूना मत।

गर्मी – स्त्री० 1. गर्मी का मौसम, ग्रीष्म ऋतु, गर्मी के दिन। प्र० गर्मी में धूप बहुत तेज़ होती है। 2. ताप, उष्णता। प्र० आज बहुत गर्मी है, कूलर चला लो। 3. क्रोध, गुस्सा। प्र० इतनी गर्मी किसे दिखा रहे हो? मैं तुम्हारी गर्मी बर्दाश्त नहीं करूँगा, सोच लो। 4. सुज़ाक, आतशक, ख़ून ख़राब हो जाने का एक रोग। प्र० अगर डॉक्टर ने बताया है कि तुम्हें गर्मी है तो ठीक से दवा करो। 5. घमंड। प्र० न तो तुम्हारे पास धन दौलत ज़्यादा है न बल-बुद्धि, फिर इतनी गर्मी क्यों है? हेकड़ी छोड़कर शांति से बात करो।

गर्व–पु० घमंड। प्र० हमें अपने देश पर गर्व है।

ग़लत– *वि०* जो ठीक न हो, जो सही न हो, अशुद्ध; जैसे – ग़लत भाषा, ग़लत उत्तर, ग़लत काम। *(विलोम* – सही)।

ग़लती – स्त्री० भूल, त्रुटि, अशुद्धि, चूक। प्र० 1. मुझसे ग़लती हो गई कि मैंने उनका ठीक से आदर-सत्कार नहीं किया। 2. अब तुम बड़े हुए, वर्तनी (स्पेलिंग) की ग़लती तुमको नहीं करनी चाहिए।

गलफड़ा– पु० पानी में रहनेवाले जीवों का वह अंग जिससे वे पानी में साँस लेते हैं।

गला– पु० सिर को धड़ से जोड़नेवाले अंग का भीतरी भाग, कंठ। प्र० मेरा गला ख़राब हो गया है, मुझे

गर्म पानी का ग़रारा करना चाहिए। मु० *गला घोटना* – गला दबाकर मार डालना। *गला छुड़ाना* – जी छुड़ाना, प्राण छुड़ाना, पीछा छुड़ाना। प्र० वह बदमाश तो मेरे पीछे ही पड़ गया था, बड़ी मुश्किल से मैंने अपना गला छुड़ाया। *गला बैठना* – बोला न जाना, गला बहुत ज़्यादा ख़राब होना। प्र० मेरा गला बैठ गया है, मैं बोल नहीं सकता। *गला भर आना* – दुख या सुख के तीव्र भावों से बोल न पाना, गला रुँध जाना। प्र० बिदाई के समय मेरा गला भर आया और मैं कुछ नहीं बोल सका।

गलाना– क्रि० पिघलाना। प्र० धातुओं को गलाकर तरह-तरह का आकार देते हैं।

गली-कूचा– पु० गली, कूचा, खोरी। प्र० फेरीवाला क़स्बे के गली-कूचों में फेरी लगाकर सामान बेचता है।

गलीचा– पु० सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ बिछौना, क़ालीन। प्र० भारत में मिर्ज़ापुर के गलीचे प्रसिद्ध हैं।

ग़ल्ला– पु० अनाज, अन्न। प्र० भारत ग़ल्ले के मामले में अब आत्मनिर्भर है।

गवाह– पु० वह व्यक्ति जो घटना के समय वहाँ रहा हो, जिसने घटना को देखा हो, साक्षी। प्र० कोई गवाह नहीं मिला, लगता है कि मुक़दमा हार जाऊँगा।

गवाही– स्त्री० किसी घटना के विषय में ऐसे आदमी का बयान जिसने घटना स्वयं देखी हो, गवाह का बयान। प्र० ख़बरदार! यदि किसी ने मेरे ख़िलाफ गवाही दी तो मैं देख लूँगा।

गवेषक– वि० खोज करनेवाला, खोजी।

गवैया– पु० जो गाता हो, गानेवाला, गायक।

गहना– पु० आभूषण, ज़ेवर।

गहरा– वि० 1. जिसकी सतह आसपास के स्थान से नीची हो; नीचे तक गया हुआ; जैसे – गहरा गड्ढा, गहरी नदी, गहरा ज़ख़्म। 2. गंभीर; जैसे – गहरा ज्ञान।

गहराई – स्त्री० 1. गहरापन। प्र० यहाँ नदी की गहराई बहुत ज़्यादा है। 2. गंभीरता; जैसे – भावों की गहराई, व्यक्ति की गहराई।

गाँठगोभी – स्त्री० एक तरह की शलगम-जैसी गोभी जिसमें जड़ से कुछ ऊपर गाँठ होती है।

गाँठना – क्रि० 1. सीना, सीकर जोड़ना; जैसे – जूता गाँठना। 2. मिलाना, जोड़ना; जैसे – दोस्ती गाँठना। मु० *मतलब गाँठना* – काम निकालना, स्वार्थ सिद्ध करना। प्र० अच्छा तो अपना मतलब गाँठने के लिए वह दोस्त बना था?

गलीचा गवैया गहना

गाड़ना गाड़िया लुहार गायिका गार्ड
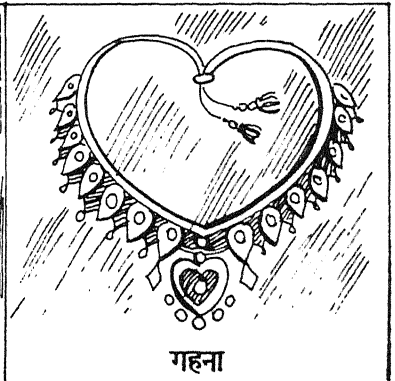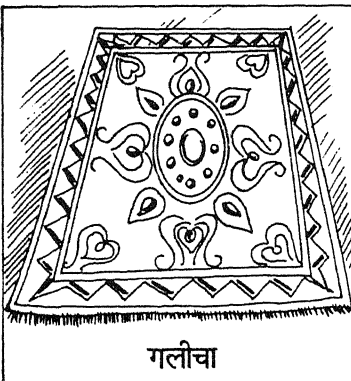
गागर – *स्त्री॰* घड़ा, कलसा। *मु॰ गागर में सागर भरना* – कम शब्दों में बहुत कुछ कहना। *प्र॰* कबीर, रहीम, बिहारी आदि बहुत से कवियों ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

गाड़ना – *क्रि॰* 1. गड्ढा खोदकर उसमें किसी चीज़ को रखकर मिट्टी से ढकना, दफ़न करना; जैसे – लाश गाड़ना, मुर्दा गाड़ना। 2. गड्ढा खोदकर उसमें छिपाना; जैसे – धन गाड़ना। 3. ज़मीन में धँसाना; जैसे – खूँटा गाड़ना, झंडा गाड़ना।

गाड़िया लुहार – *पु॰* एक ख़ानाबदोश क़बीला जो गाड़ियों पर अपना पूरा घरबार रखते हैं और जगह-जगह सड़क के किनारे अपनी गाड़ी रोककर, अपना अड्डा जमाकर लोहे की चीज़ें बनाते और बेचते हैं।

गाढ़ा – 1. *वि॰* (क) जो पतला न हो। *प्र॰* यह दूध गाढ़ा है क्योंकि इसमें पानी नहीं मिलाया गया है। (*विलोम* – पतला)। (ख) जिसके सूत आपस में मिले हों, घना, मोटा; जैसे – गाढ़ा कपड़ा। 2. *सं॰* संकट; जैसे – गाढ़े का साथी। *मु॰ गाढ़े की कमाई, गाढ़े पसीने की कमाई* – कड़ी मेहनत से कमाया हुआ धन। *प्र॰* यह पूरी जायदाद मेरे गाढ़े पसीने की कमाई से बनाई गई है।

गाद – *स्त्री॰* तरल पदार्थों के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज़, तलछट।

गान – *पु॰* गाना, गीत, राष्ट्रगान।

गायक – *पु॰* गवैया, गानेवाला। *प्र॰* तानसेन और बैजू बावरा बादशाह अकबर के ज़माने में मशहूर गायक थे।

गायन – *पु॰* गाना, गीत गाना। *प्र॰* गायन तथा वादन (बाजा बजाना) संगीत के अंग हैं।

ग़ायब – *वि॰* जो आँखों के सामने न हो, लापता, लुप्त, गुम। *प्र॰* साँप अभी-अभी तो इसी कमरे में था, पता नहीं अब कहाँ ग़ायब हो गया।

गायिका – *स्त्री॰* गानेवाली।

गारंटी – *स्त्री॰* 1. ख़राब न होने या न बिगड़ने की ज़िम्मेदारी। *प्र॰* इस रेडियो की गारंटी दो साल है। 2. ज़मानत। *प्र॰* भोलू को एक हज़ार रुपए मैं दे तो दूँगा पर किसी को गारंटी लेनी होगी कि एक साल में यह लौटा देगा।

गारा – *पु॰* मिट्टी का लेप जिससे ईंटें जोड़ी जाती हैं।

गार्ड – *पु॰* 1. रक्षक; जैसे – बॉडीगार्ड। 2. पहरेदार, चौकीदार। *प्र॰* चोरी के समय गार्ड कहाँ था? 3. देख-रेख के लिए रेलगाड़ी के साथ चलनेवाला एक रेलवे कर्मचारी। *प्र॰* गार्ड के हरी झंडी दिखाने पर ही ट्रेन चलती है।

गाली-गलौज – *स्त्री०*, **गाली-गुफ्ता** –*पु०*, **गाली-गुफ्तार** – *स्त्री०* एक-दूसरे को गाली देना। *प्र०* यहाँ तुम लोग गाली-गलौज कर रहे हो।

गिचपिच – *वि०* जो साफ़-साफ़ न लिखा गया हो, जो ठीक से पढ़ा न जा सके, घिचपिच, अस्पष्ट। *प्र०* गिचपिच क्यों लिखते हो, साफ़-साफ़ लिखा करो।

गिट्टी – *स्त्री०* ईंट-पत्थर के छोटे-छोटे तोड़े हुए टुकड़े जो छत आदि बनाने के काम आते हैं, रोड़ी।

गिड़गिड़ाना – *क्रि०* दीन-हीन होकर प्रार्थना करना, चिरौरी करना। *प्र०* वह अपने अफ़सर से अपनी ग़लती माफ़ करने के लिए गिड़गिड़ा रहा है।

गिद्दा – पु० पंजाब, जम्मू, हिमाचल का एक प्रसिद्ध महिला-नृत्य।

गिरगिट – पु० छिपकली से मिलता-जुलता एक जंतु जो अपने रंग बदल सकता है।

गिरजा, गिरजाघर – पु० ईसाइयों का मंदिर, ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर, ईसाइयों का उपासना गृह, चर्च।

गिरावट – *स्त्री०* गिराव, नीचे आना, पतन। *प्र०* 1. इन दिनों अनाज की क़ीमतों में कुछ गिरावट आई है। 2. लोगों के चरित्र में गिरावट आती जा रही है।

गिरि – पु० पहाड़, पर्वत; जैसे – नीलगिरि, धौलागिरि, हिमगिरि।

गिरी – *स्त्री०* बादाम आदि के भीतर का गूदा, गरी, मींगी; जैसे – बादाम की गिरी, मूँगफली की गिरी।

गिरीदार – *वि०* गिरीवाला, जिसके भीतर गिरी हो; जैसे – गिरीदार फल।

गिरोह – पु० दल, गुट; जैसे – चोरों का गिरोह, डाकुओं का गिरोह, आतंकवादियों का गिरोह।

गिलटी – *स्त्री०* दे० गिल्टी।

गिलाफ़ – पु० कपड़े का सिला हुआ वह थैला जो गद्दे, तकिए आदि पर चढ़ाया जाता है, खोल, खोली। *प्र०* तकिए का गिलाफ़ गंदा हो गया है।

गिल्टी – *स्त्री०* शरीर में कहीं भी निकल आनेवाली गाँठ, गाँठनुमा सूजन। *प्र०* प्लेग की बीमारी में गिल्टी निकल आती है।

गिल्ली – *स्त्री०* गुल्ली। *प्र०* वे लोग गिल्ली-डंडा खेल रहे हैं।

गीध– पु० चील से बड़ा एक मांसाहारी पक्षी, गिद्ध।

गुंजन– पु० भौंरे का भनभनाना। *प्र०* वसंत ऋतु में भौंरे गुंजन करने लगते हैं।

गुंजाइश– *स्त्री०* 1. ख़ाली जगह। *प्र०* इस कमरे में तो गुंजाइश नहीं लगती, इस बच्चे को किसी और कमरे में सुला दो। 2. सुविधा। *प्र०* यदि गुंजाइश हो तो कुछ रुपयों की और सहायता कर दो। 3. संभावना। *प्र०* 1. उनके आने की अब कोई

गिद्दा | गिरगिट | गिरजा | गीध
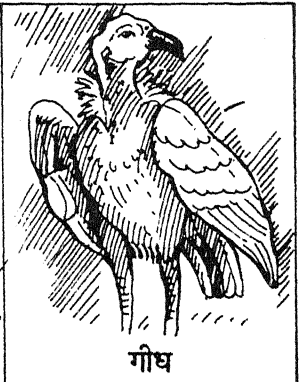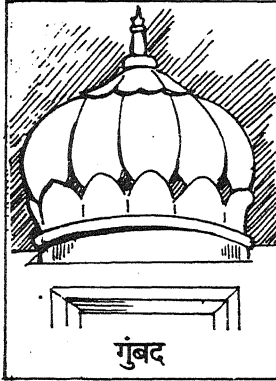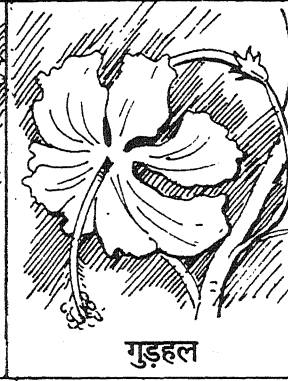
गुंजाइश नहीं है। 2. डॉक्टर कह रहे थे कि मोहन के ठीक हो जाने की अब भी गुंजाइश है।

गुंबद– *पु॰* इमारतों के ऊपर की गोल ऊँची छत जिसमें आवाज़ गूँजती है, गुंबज। *प्र॰* 1. मस्जिद का गुंबद दूर से दीख रहा है। 2. कर्नाटक में बीजापुर का गोल गुंबद दुनिया के सबसे बड़े गुंबदों में माना जाता है।

गुच्छेदार– *वि॰* गुच्छेवाला। *प्र॰* कई पौधों में गुच्छेदार फूल आते हैं।

गुज़रना– *क्रि॰* 1. बीतना; जैसे – वक़्त गुज़रना, ज़िंदगी गुज़रना, उम्र गुज़रना, दिन गुज़रना। 2. किसी स्थान से होकर निकलना। *प्र॰* जब मैं सुबह उस जगह से गुज़रा था तो वहाँ कुछ भी नहीं था। 3. मर जाना। *प्र॰* कल मोहन के दादाजी गुज़र गए।

गुज़र-बसर– *पु॰* गुज़ारा, निबाह, निर्वाह। *प्र॰* बेचारी बीमार बुढ़िया किसी तरह गुज़र-बसर कर रही है।

गुज़ारना– *क्रि॰* काटना, बिताना। *प्र॰* क्या पता, कल कैसे दिन गुज़ारने पड़ें?

गुज़ारा– *पु॰* निर्वाह, जीवन-निर्वाह। *प्र॰* महँगाई के कारण बड़ी कठिनाई से गुज़ारा हो पा रहा है।

गुटका– *पु॰* 1. छोटी पुस्तक, जेबी किताब। *प्र॰* मेरे पास गुटका रामायण है। 2. लकड़ी का चौकोर टुकड़ा।

गुटरगूँ– *स्त्री॰* कबूतर की बोली।

गुड़हल– *पु॰* लाल रंग का एक फूल या उसका पेड़, अड़हुल, जपा।

गुड़िया– *स्त्री॰* छोटी लड़कियों के खेलने की कपड़े या लकड़ी आदि की बनी पुतली। *मु॰ गुड़ियों का खेल* – आसान काम। *प्र॰* तुम्हें इसके लिए परिश्रम करना पड़ेगा, यह गुड़ियों का खेल नहीं है।

गुड्डा – *पु॰* कपड़े या लकड़ी का बना खेलने का पुतला, गुड़िया का पुल्लिंग।

गुड्डी– *स्त्री॰* 1. पतंग, कनकौवा। 2. गुड़िया; जैसे– गुड्डा-गुड्डी का ब्याह।

गुणक– *पु॰* गणित में वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा किया गया हो; जैसे – $4 \times 6 = 24$ में 6 गुणक है।

गुणकारक, गुणकारी – *वि॰* लाभदायक, फ़ायदेमंद। *प्र॰* यह दवा बहुत गुणकारी है।

गुणगान– *पु॰* बखान, गुणों का वर्णन। *प्र॰* गांधीजी का गुणगान करते हम भारतीय गर्व का अनुभव करते हैं।

गुणधर्म– *पु॰* प्रकृति, धर्म, स्वभाव। *प्र॰* द्रव्य के

गुणधर्म में उसका रंग, स्वाद, गंध, घुलनशीलता या अघुलनशीलता आदि बातें आती हैं।

गुणन– *पु०* गुणा करना।

गुणनफल – *पु०* गुणा करने से प्राप्त होनेवाली संख्या; जैसे – 4×6 का गुणनफल 24 है।

गुणवान्– *वि०* जिसमें गुण हों, गुणवाला, गुणी। *प्र०* मोहन का भाई बड़ा गुणी है। वह क्रिकेट और बैडमिंटन का बहुत अच्छा खिलाड़ी भी है और गाता भी बहुत अच्छा है। इसके साथ ही पढ़ने में भी बहुत तेज़ है।

गुणा– *पु०* गणित में जोड़ने की एक रीति जिससे कोई संख्या कई बार जोड़ने की बजाय एक बार में ही उतनी गुनी बढ़ा ली जाती है; जैसे – 2 गुणा 3, अर्थात् 2 को 3 बार जोड़ना अर्थात् 2+2+2= 2×3=6।

गुणी– *वि०* गुणवाला, गुणवान्।

गुण्य– *पु०* वह संख्या जिसमें गुणा करें; जैसे – 6×4= 24 में 6 गुण्य है और 4 गुणक।

गुत्थमगुत्था– *पु०* आपस में हाथापाई करते हुए एक-में-एक गुथ जाना। *प्र०* पहले तो उन दोनों में कहा-सुनी हो रही थी, लेकिन थोड़ी ही देर में वे गुत्थमगुत्था हो गए।

गुदगुदी– *स्त्री०* गुदगुदाने (दे०) से होनेवाला अनुभव – गुदगुदाने से गुदगुदी का अनुभव होता है।

गुदड़ी – *स्त्री०* फटे-पुराने कपड़ों को सिलकर बनाया हुआ बिछौना या ओढ़ना, कथरी, कंथा। *मु० गुदड़ी का लाल* – साधारण घर में पैदा हुआ असाधारण व्यक्ति। *प्र०* प्रसिद्ध कहानी लेखक प्रेमचंद गुदड़ी के लाल थे।

गुनगुना – *वि०* थोड़ा गरम, हल्का गरम, नीम कुनकुना। *प्र०* सर्दियों में बहुत से लोग गुनगुना पानी पीते हैं।

गुनगुनाना – *क्रि०* बहुत धीमे स्वर में गाना। *प्र०* अरे भाई, गुनगुना क्यों रहे हो? ज़रा ज़ोर से गाओ।

गुना – *वि०* संख्यावाचक शब्दों के अंत में लगकर संज्ञा शब्द की संख्या या मात्रा में उतनी बार का अर्थ देनेवाला; जैसे – तिगुना, चौगुना। शब्दांश (प्रत्यय); जैसे – दोगुना, तीनगुना, तिगुना, चारगुना, चौगुना आदि।

गुनाह – *पु०* 1. पाप। 2. अपराध, क़ुसूर।

गुनिया (सेटस्क्वायर)– *पु०* रेखागणित में काम आनेवाला एक औज़ार जो तिकोना होता है।

गुपचुप – *अ०* 1. धीरे-धीरे। *प्र०* तुम लोग गुपचुप क्या बात कर रहे हो? 2. चुपचाप, चुपके से। *प्र०* बताकर जाया करो, गुपचुप चला जाना ठीक नहीं।

गुत्थमगुत्था | गुदगुदी | गुनिया
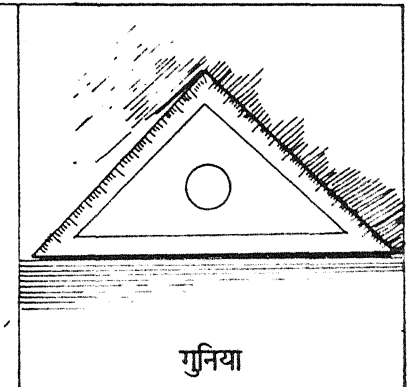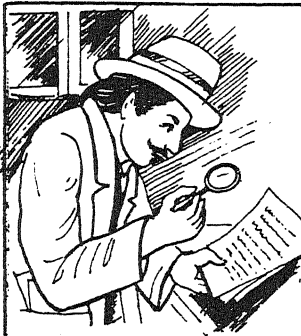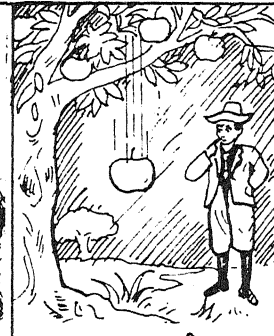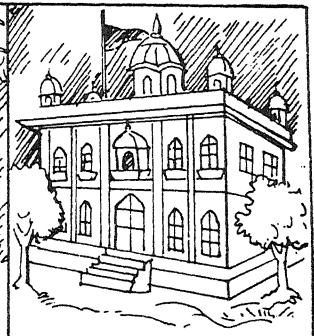
गुप्त – *वि०* 1. जिसे छिपाकर रखा गया हो, छिपाया हुआ; जैसे – गुप्त ख़ज़ाना। 2. जिसे छिपाकर दे; जैसे – गुप्त दान। 3. छिपा, जिसे लोग न जानते हों, (*विलोम* – प्रकट); जैसे – गुप्त संबंध, गुप्त पत्र। 4. वैश्य लोगों का एक वर्ग जो अपने नाम के साथ गुप्त लिखता है; जैसे – मैथिलीशरण गुप्त।

गुप्तचर – *पु०* छिपे तौर पर अज्ञात तथ्यों अथवा रहस्यों का पता लगानेवाला, जासूस। *प्र०* पाकिस्तान के कई गुप्तचर पिछले वर्ष कश्मीर में पकड़े गए।

गुम – *वि०* ग़ायब, खोया हुआ, जो खो गया हो। *प्र०* 1. डॉक्टर साहब का छोटा लड़का कहीं गुम हो गया है। 2. मेरा सौ रुपए का नोट कहीं गुम हो गया।

गुमनाम – *वि०* 1. जो मशहूर न हो। *प्र०* शास्त्रीजी विद्वान् हैं पर अभी तक गुमनाम हैं। 2. बिना नाम का। *प्र०* एक गुमनाम पत्र मेरे पास आया है।

गुमसुम – *अ०* 1. चुप, चुपचाप। *प्र०* ऐसे गुमसुम बैठने से काम नहीं चलेगा, कुछ तो बताओ कि क्या हुआ है? 2. उदास, दुखी। *प्र०* इन दिनों वह गुमसुम रहता है, बोलता भी बहुत कम है।

गुर – *पु०* 1. उपाय, तरीक़ा। *प्र०* उस आदमी को अपने काम निकालने के सारे गुर आते हैं, इसीलिए वह बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ता जा रहा है। 2. सूत्र, फ़ारमूला। *प्र०* इतना जोड़ने, घटाने और गुणा-भाग करने की आवश्यकता नहीं। इसका एक गुर है जिससे ऐसे सवाल आसानी से हल हो जाते हैं।

गुरदा – *पु०* दे० गुर्दा।

गुरिल्ला – *पु०* अफ़्रीका आदि के जंगलों में पाया जानेवाला एक बलवान्, हिंस्र वनमानुस।

गुरुत्व – *पु०* 1. (भार के कारण) आकर्षण, खिंचाव। 2. आकर्षण शक्ति। *प्र०* चंद्रमा का गुरुत्व चंद्रमा की ओरवाले पृथ्वी के भाग में ज्वार पैदा करता है।

गुरुत्वाकर्षण – *पु०* (भार के कारण) आकर्षण-शक्ति। *प्र०* विश्व के सारे आकाशीय पिंड (जैसे – सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी आदि) गुरुत्वाकर्षण से एक दूसरे से जुड़े हैं।

गुरुद्वारा – *पु०* सिखों का मंदिर।

गुरुपर्व – *पु०* सिख गुरुओं के जन्म-दिन पर (मुख्यतः गुरुनानक जयंती के अवसर पर) मनाया जानेवाला पर्व।

गुरुभाई – *पु०* एक ही गुरु से शिक्षा-दीक्षा पाने के कारण आपस में भाई। *प्र०* मोहन मेरा गुरुभाई है।

गुरुमुखी – *स्त्री०* पंजाबी भाषा की लिपि। *प्र०* पंजाबी गुरुमुखी में लिखते हैं।

गुरुवार – पु० बृहस्पतिवार।

गुरुस – पु० दे० गुर्स।

गुर्दा – पु० खून साफ़ करके बचे हुए द्रव को पेशाब की थैली में भेज देनेवाले कलेजे के पास के दो अंग, किडनी।

गुर्राना – *क्रि०* 1. डराने या ग़ुस्सा दिखाने के लिए गुर्र-गुर्र की आवाज़ करना। *प्र०* कुत्ते, बिल्ली अपना ग़ुस्सा दिखाने या डराने के लिए गुर्राते हैं। 2. ग़ुस्से में कर्कश आवाज़ में बोलना। *प्र०* तुम मेरे ऊपर क्यों गुर्रा रहे हो, ग़लती तो मोहन की है।

गुर्स – पु० 12 दर्जन या 144 वस्तुओं के समूह का नाम। *प्र०* मेरे लिए दो गुर्स पेंसिल भेज दो।

गुलगुला – 1. *वि०* मुलायम, नरम; जैसे – गुलगुला बदन। 2. पु० मीठी पकौड़ी, आटा और चीनी या गुड़ के घोल को घी या तेल में तलकर बनाया हुआ एक खाद्य-पदार्थ।

गुलज़ार – 1. *वि०* (क) हरा-भरा। (ख) चहल-पहलवाला, रौनक़दार। *प्र०* वह जगह बड़ी गुलज़ार है। 2. पु० बाग़, बग़ीचा, बग़ीची।

गुलदस्ता – पु० फूलों का गुच्छा। *प्र०* बच्चों को गुलदस्ता बनाना सिखाया जाता है।

गुलदान – पु० वह पात्र जिसमें गुलदस्ता रखा जाए, फूलदान।

गुलमुहर – पु० दे० गुलमोहर।

गुलमेहँदी – *स्त्री०* एक सुगंधरहित फूल और उसका पौधा, गुलहज़ारा।

गुलमोहर – पु० लाल, पीले, सफ़ेद फूलोंवाला एक पेड़।

गुलाब – पु० एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल और उसका काँटेदार पौधा।

गुलाबजामुन – पु० खोये से बनी एक प्रसिद्ध मिठाई, जो जामुन की शक्ल की या गोल होती है।

गुलाम – पु० 1. जो पूरी तरह किसी के अधीन हो, पराधीन। (*विलोम* – आज़ाद)। *प्र०* भारत पहले गुलाम था। 2. ख़रीदा गया या जीता गया दास या नौकर।

गुलामी – *स्त्री०* पराधीनता, दासता। (*विलोम* – आज़ादी)।

गुलाल – पु० एक प्रकार का लाल चूर्ण, जिसे होली में लोगों के मुँह पर मलते हैं।

गुलूबंद – पु० गला और कान पर जाड़े में लपेटने का सूती, ऊनी या रेशमी पट्टीनुमा कपड़ा, मफ़लर।

गुलेल – पु० रबर के फीते और लकड़ी से बना चिड़ियों को मारने का एक उपकरण।

गुल्लक – *स्त्री०*, पु० पैसा जमा करने का मिट्टी या धातु का एक डिब्बा।
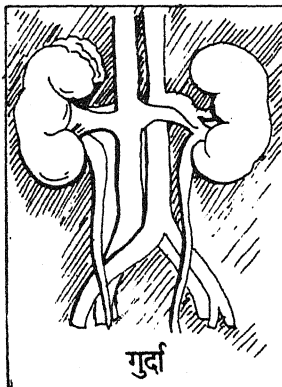
गुर्दा | गुलदान | गुलेल | गुल्लक
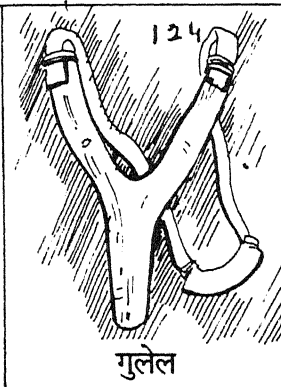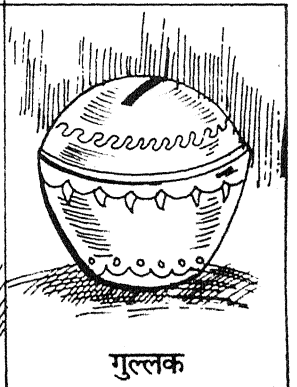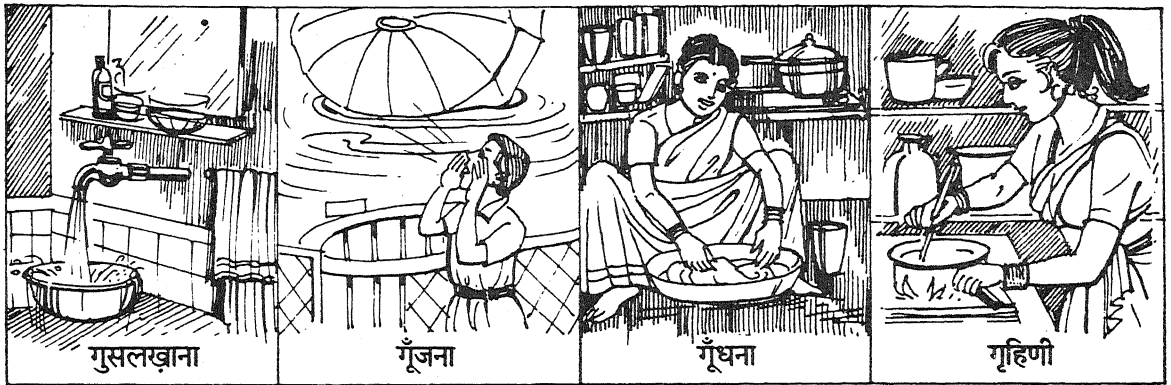
गुल्ली – *स्त्री॰* डंडे से खेलने के काम आनेवाला लकड़ी का दोनों सिरों पर नोकदार टुकड़ा, गिल्ली। *प्र॰* वह गुल्ली-डंडा खेल रहा है।

गुल्ली-डंडा – *पु॰* एक खेल जो गुल्ली और डंडे से खेला जाता है, गिल्ली-डंडा।

गुसलख़ाना – *पु॰* नहाने का स्थान, स्नानघर।

गुस्सा – *पु॰* क्रोध, रोष, कोप।

गुस्सैल (गुस्सा+ऐल) – *वि॰* अधिक गुस्सा करनेवाला, क्रोधी; जैसे – गुस्सैल आदमी।

गुहार – *स्त्री॰* रक्षा या सहायता के लिए पुकार। *प्र॰* उस लड़की के गुहार लगाते ही हम लोग दौड़ पड़े।

गूँज – *स्त्री॰* आवाज़ का किसी ठोस चीज़ से टकराने से वैसी ही आवाज़ दुबारा होना, टकराकर लौटी हुई आवाज़, प्रतिध्वनि। *प्र॰* उस गुफा में गूँज देर तक होती है।

गूँजना – *क्रि॰* 1. ध्वनि का किसी ठोस चीज़ से टकराकर लौटना, ध्वनि के टकराने से दुबारा वैसी ही आवाज़ होना, प्रतिध्वनि होना, गूँज होना। *प्र॰* उस गुफा में आवाज़ देर तक गूँजती है। 2. भौंरों का मधुर ध्वनि करना। *प्र॰* फुलवारी में भौंरे गूँज रहे हैं।

गूँथना – *क्रि॰* 1. मनका, फूल आदि धागे में पिरोना, लड़ी बनाना। *प्र॰* इन फूलों से एक माला गूँथ दो। 2. बालों को दो भागों में करके उनको ज़ंजीर की तरह बनाना; जैसे – बाल गूँथना, चोटी गूँथना।

गूँधना – *क्रि॰* आटे में पानी डालकर उसे हाथों से मसलना, माँड़ना, सानना; जैसे – आटा गूँधना, मैदा गूँधना।

गूदड़ – *पु॰* 1. चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा। *प्र॰* तो क्या यह गूदड़ पहनकर चलोगे? 2. गुदड़ी, कथरी। *प्र॰* वह भिखारी गूदड़ बिछाता और ओढ़ता है।

गृह – *पु॰* घर, निवासस्थान, मकान।

गृहकार्य – *पु॰* घर का काम-काज। *प्र॰* उनकी बेटी गृहकार्य में कुशल है।

गृहवाटिका – *स्त्री॰* घर से लगी हुई बग़ीची या खेत जिसमें नीबू-जैसे छोटे पेड़ लगाते हैं तथा सब्जियाँ उगाते हैं।

गृहिणी – *स्त्री॰* घरवाली, विवाहिता स्त्री जो अपना घर चलाती है।

गेंडा – *पु॰* दे॰ गैंडा।

गेंद-गड्ढा संधि – *स्त्री॰* हड्डियों का ऐसा जोड़ जो गड्ढे में रखी गेंद की तरह चारों ओर घुमाया जा सकता है।

गेंदबाज़ – पु० क्रिकेट में गेंद फेंकनेवाला, बॉलर।

गेंदा – पु० एक पौधा और उसका फूल जो पीले रंग का होता है।

गेरुआ – वि० जिसका रंग गेरू-जैसा हो, जोगिया। प्र० साधु-संन्यासी गेरुए रंग का कपड़ा पहनते हैं।

गेरू – पु०, स्त्री० खानों से निकलनेवाली एक तरह की लाल मिट्टी जो रँगने और दवा के काम आती है।

गेहुँआ – वि० गेहूँ के रंग-जैसा, गेहूँ के रंग का, बादामी। प्र० मोहन का रंग गेहुँआ है।

गैंडा – पु० भैंसे की शक्ल का एक जंगली जानवर जिसकी नाक पर एक या दो सींग होते हैं और जिसकी खाल बहुत सख़्त होती है।

गैमक्सीन – पु० कीड़ों के मारने का एक पाउडर।

ग़ैरसरकारी – वि० जो सरकारी न हो। प्र० यह संस्था ग़ैरसरकारी है।

ग़ैरहाज़िर – वि० जो हाज़िर न हो, जो मौजूद न हो, अनुपस्थित। प्र० कृष्णकांत आज कक्षा में ग़ैरहाज़िर था।

ग़ैरहाज़िरी – स्त्री० मौजूद न होना, अनुपस्थिति। प्र० तुम स्कूल नहीं जाओगे तो तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी लगेगी ही।

गैलन – पु० तरल पदार्थ नापने की लगभग साढ़े चार लीटर की एक नाप। प्र० मेरे पिताजी की कार एक गैलन पेट्रोल में चालीस किलोमीटर चलती है।

गैस – किसी भी पदार्थ का हवा-जैसा रूप; जैसे – पेट की गैस, ज़हरीली गैस, जलाने की गैस, ऑक्सीजन गैस आदि।

गैससिलिंडर – पु० गैस का सिलिंडर (जिसमें रसोई गैस तथा ऑक्सीजन गैस आदि भरते हैं)।

गैसीय – वि० 1. गैसवाला। प्र० भाप पानी का गैसीय रूप है। 2. गैस का। 3. गैस-संबंधी, गैस-विषयक।

गोंड – पु० भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जानेवाली एक आदिवासी जाति।

गोंद – पु० कुछ पेड़ों से मिलनेवाला एक चिपचिपा लसदार रस जो काग़ज़ आदि चिपकाने के काम आता है, गम।

गोंददानी – स्त्री० गोंद रखने की शीशी।

गोट – 1. स्त्री० कपड़े के किनारे लगाई जानेवाली पट्टी, मगज़ी, किनारा। 2. पु० (क) दे० गोटा। (ख) खेलने की गोटी। (ग) कैरम की काली-सफ़ेद गोटी जिन्हें स्ट्राइकर से मारकर छेदों में डालते हैं।

गेंदा | गैंडा | गैससिलिंडर | गोंड
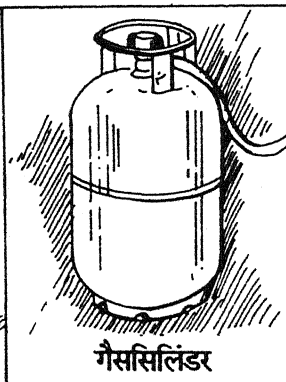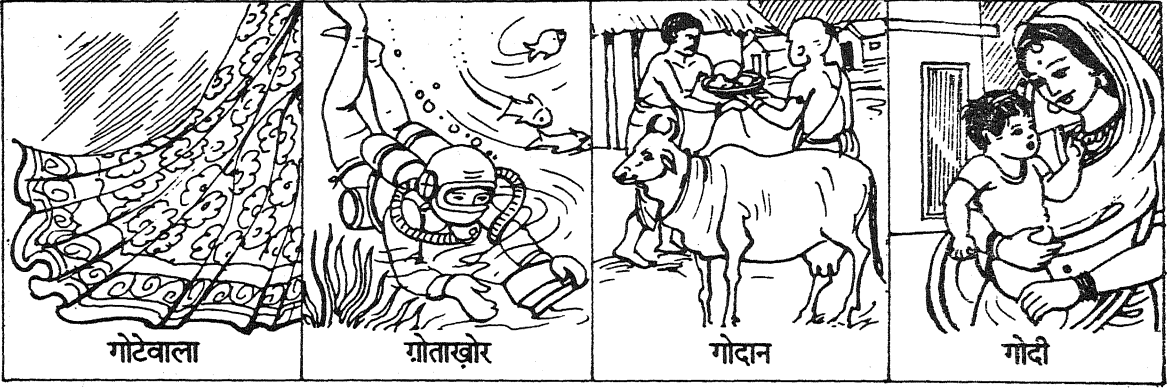
गोटा – *पु॰* सोने और चाँदी के तारों या अन्य चीज़ों के सुनहले-रुपहले तारों से बुना हुआ फ़ीता या लेस।

गोटी – *स्त्री॰* लकड़ी, पत्थर आदि का बना अलग-अलग शक्लों का गोट जो लूडो, चौपड़, कैरम आदि कई प्रकार के खेलों में काम आता है।

गोटेवाला – 1. *वि॰* जिसमें गोटा लगा हो; जैसे – गोटेवाला कपड़ा। 2. *पु॰* गोटा बेचनेवाला।

गोड़ना – *क्रि॰* मिट्टी को भुरभुरी करने के लिए खुर्पी या कुदाल आदि से खोदना, कोड़ना, गुड़ाई करना। *प्र॰* पहले खेत को अच्छी तरह गोड़ लो फिर बीज बोएँगे।

ग़ोता – *पु॰* डुबकी, डुब्बी; जैसे – झील में ग़ोता लगाना, नदी में ग़ोता मारना।

ग़ोताख़ोर – *पु॰* डुबकी लगाकर पानी के भीतर गिरी हुई चीज़ों को निकालनेवाला।

गोदान – *पु॰* गाय का दान, ब्राह्मण को किया गया गाय का दान। *प्र॰* हिंदुओं में विवाह, कथा, लोगों के मृत्युसंस्कार आदि में गोदान करने की परंपरा है।

गोदाम – *पु॰* व्यापार आदि के लिए सामान रखने का बड़ा भंडार। *प्र॰* व्यापारी या बड़े दूकानदार अपना थोक माल गोदाम में रखते हैं।

गोदी – *स्त्री॰* 1. गोद, अंक। 2. बंदरगाह में माल उतारने और लादने का स्थान, डॉक।

गोबरगणेश – *वि॰* मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ़, घोंघाबसंत, जिसे कुछ न आता-जाता हो।

गोबरगैस – *स्त्री॰* गोबर को पानी में सड़ाने से निकलनेवाली गैस जो ज़्यादातर चूल्हे में जलाने तथा रोशनी करने के काम आती है।

गोरा – *वि॰* 1. जिसकी चमड़ी साफ़ हो। (*विलोम* – काला) । 2. *पु॰* अंग्रेज़। *प्र॰* भारत में पहले गोरों का राज्य था।

गोरा-चिट्टा – *वि॰* बहुत गोरा, एकदम गोरा। *प्र॰* वह लड़का गोरा है, बल्कि गोरा-चिट्टा है।

गोरिल्ला – *पु॰* दे॰ गुरिल्ला।

गोल – 1. *वि॰* गेंद-जैसा, वृत्त-जैसा, वृत्ताकार; जैसे – गोल पहिया, गोल मेज़, गोल घेरा, गोल चक्कर। 2. *पु॰* हॉकी, फुटबॉल आदि बहुत से खेलों में मैदान के दोनों सिरों पर बना लोहे या लकड़ी का जाल लगा ढाँचा, जिसमें गेंद मारने की दोनों पक्ष कोशिश करते हैं। इस ढाँचे में एक बार गेंद मारने से एक गोल होता है। ऐसे ही दो बार गेंद मारने से दो गोल होते हैं। इस तरह इस गेंद मारने को भी गोल कहते हैं।

गोलकीपर – *पु॰* दे॰ गोलची।

गोलगप्पा – *पु॰* तेल या घी में तली हुई महीन और करारी फुलकी, पुचका, पानी का बताशा।

गोलची – पु॰ हॉकी और फुटबॉल आदि खेलों में गोल में खड़े रहकर गोल बचाने की कोशिश करनेवाला खिलाड़ी, गोलकीपर।

गोलपोस्ट – पु॰ 1. अर्जेंटीना के पेटो नाम के खेल के मैदान में दोनों सिरों पर बना लोहे की छड़ का घेरा जिसमें जीत के लिए गेंद फेंकते हैं। 2. गोल पर गड़ा डंडा। प्र॰ गेंद गोलपोस्ट से टकराकर लौट आई और इस तरह गोल नहीं हो सका।

गोलमटोल– वि॰ 1. जिसका कोई साफ़ अर्थ न निकले, अस्पष्ट, गोल-मोल; जैसे – गोलमटोल उत्तर। 2. मोटा, स्थूल। (*विलोम* – पतला)। प्र॰ केशव, तुम खाते बहुत हो, पर कसरत नहीं करते, न खेलते हो, इसीलिए गोलमटोल हो रहे हो।

गोलमोल– जिसका कोई साफ़ अर्थ न निकले, अस्पष्ट, गोलमटोल; जैसे – गोलमटोल जवाब।

गोला – पु॰ 1. सूत, रेशम, ऊन, रस्सी आदि से बनाई गई पिंडी; जैसे – ऊन का गोला, सूत का गोला, मिट्टी का गोला, लोहे का गोला। 2. तोप या हाथ से फेंका जानेवाला बारूद-भरा पिंड; जैसे – तोप का गोला, हथगोला। 3. नारियल की गिरी, गरीगोला। 4. अनाज तथा किराने की मंडी।

गोलाकार – वि॰ जिसका आकार गोल हो, गोल, गोलाईवाला; जैसे – गोलाकार गुंबद।

गोलार्द्ध, गोलार्ध – पु॰ विषवत् रेखा से उत्तर और दक्षिण में पृथ्वी के माने गए दो भाग – उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध।

गोलाबारी – स्त्री॰ तोपों या हवाई जहाज़ से बम बरसाना।

गोली – स्त्री॰ 1. बंदूक से चलाया जानेवाला गोला, लंबोतरा छोटा पिंड, बुलेट। 2. छोटी गोलाकार वस्तु; जैसे – खेलने की गोली (कंचा), नींद की गोली, दवा की गोली। 3. गोलची, गोलकीपर।

गोलीबारी – स्त्री॰ बंदूक से गोली बरसाना।

गोशाला – स्त्री॰ गायों को रखने और उनका पालन-पोषण करने की जगह (विशेषतः अनाथ गायों का)।

गोश्त – पु॰ मांस।

गोह – स्त्री॰ छिपकली की जाति का नेवले-जैसा एक ज़हरीला जंतु जो अपने चार पैरों से दीवाल पर चिपक जाता है तो जल्दी छोड़ता नहीं। प्र॰ शिवाजी की प्रसिद्ध गोह यशवंत की सहायता से नानाजी ने सिंहगढ़ का क़िला जीत लिया था।

गौ – स्त्री॰ गाय, गऊ।

गौण – वि॰ जो प्रधान न हो। प्र॰ 1. उस संस्था में रामसिंह ही प्रधान व्यक्ति हैं, और सब लोग गौण

गोलची | गोलार्ध | गोलाबारी | गोह
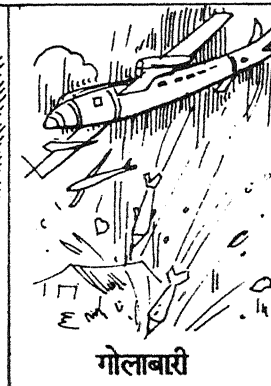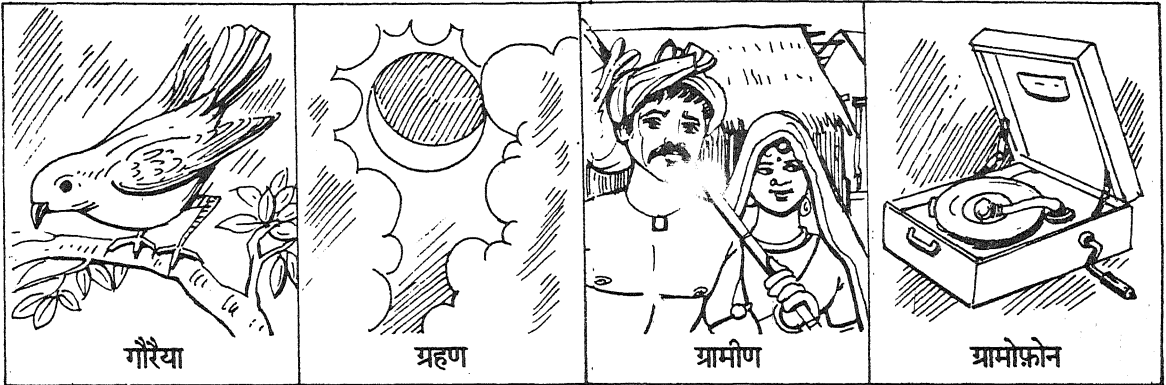
हैं। 2. प्रधान बात तो यह है और अन्य गौण बातें बहुत-सी हैं।

ग़ौर – *पु॰* विचार, ख़्याल। *प्र॰* इस बात पर ग़ौर करना तो तुम्हें भी पता चल जाएगा।

गौरव – *पु॰* 1. इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, सम्मान। *प्र॰* यह बड़े गौरव की बात है कि इतने बड़े महासागर का नाम हमारे देश के नाम (हिंद) के आधार पर रखा गया है – हिंद महासागर। 2. महानता। *प्र॰* व्यक्ति का गौरव इसमें है कि वह अपने को बड़ा न समझे तथा औरों की इज़्ज़त करे।

गौरवशाली – *वि॰* गौरववाला, गौरवयुक्त। *प्र॰* 1. हमारा इतिहास बहुत गौरवशाली रहा है। 2. हम गौरवशाली हैं कि बुद्ध और गांधी हमारे देश के थे।

गौरैया – *स्त्री॰* घरों में रहनेवाली एक छोटी चिड़िया जो भूरे रंग की होती है।

गौशाला – *पु॰* दे॰ गोशाला।

ग्नेसिस – *स्त्री॰* अबरक की परत।

ग्रंथ – *पु॰* 1. पुस्तक, किताब। *प्र॰* मैथिलीशरण गुप्त ने कई ग्रंथों की रचना की। 2. बड़ी पुस्तक। *प्र॰* महाभारत हमारा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

ग्रह – *पु॰* आकाश के वे पिंड जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं; जैसे– पृथ्वी, बुध, बृहस्पति आदि।

ग्रहण – *पु॰* 1. लेना, पकड़ना, स्वीकार करना; जैसे – पाणिग्रहण (=हाथ पकड़ना, विवाह), शपथग्रहण, उपहार ग्रहण करना, दान ग्रहण करना। 2. सूर्य या चंद्रमा या किसी अन्य ज्योति-पिंड के सामने किसी दूसरे पिंड के आ जाने से उसके प्रकाश में रुकावट आ जाना; जैसे – सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण।

ग्रहणी– *स्त्री॰* पेट का एक अंग जिसमें पित्तरस और अग्न्याश्य रस आपस में मिलकर पाचन-क्रिया में सहायता करते हैं।

ग्रहपथ– *पु॰* वह पथ जिस पर ग्रह चलते हैं। प्रत्येक ग्रह के अपने-अपने अलग-अलग पथ होते हैं।

ग्राम– *पु॰* 1. गाँव। 2. किलोग्राम का हज़ारवाँ हिस्सा।

ग्रामपंचायत – *स्त्री॰* गाँव के झगड़े सुलझाने, स्वास्थ्य-सफ़ाई आदि का प्रबंध करने तथा गाँवों का विकास करने के लिए चुने गए पंचों का मंडल।

ग्रामसेवक– *पु॰* गाँवों की व्यवस्था और विकास में सहायता करनेवाला एक सरकारी कर्मचारी।

ग्रामीण– *वि॰* 1. गाँव का; जैसे – ग्रामीण जीवन, ग्रामीण व्यक्ति। 2. गाँव से संबंधित; जैसे – ग्रामीण समस्याएँ।

ग्रामोफ़ोन– *पु॰* रिकार्ड बजानेवाला एक यंत्र।

ग्राम्य– *वि०* गाँव का, ग्रामीण, देहाती; जैसे – ग्राम्य जीवन।

ग्राहक– पु० 1. मोल लेनेवाला, ख़रीदनेवाला, ग्राहक, ख़रीदार।

ग्रिड– पु० 1. विश्व के नक़्शे में अक्षांश और देशांतर रेखाओं का जाल जिनकी सहायता से किसी शहर आदि की ठीक स्थिति बताना आसान होता है। 2. बड़े क्षेत्र में बिजली पहुँचाने की व्यवस्था; जैसे – उत्तरी ग्रिड, दक्षिणी ग्रिड आदि।

ग्रीज़, ग्रीस– *स्त्री०* एक बहुत गाढ़ी चिपचिपी चिकनाईयुक्त चीज़ जिसे इंजन के पहिए आदि में लगाते हैं।

ग्रीवा– *स्त्री०* गर्दन।

ग्रीष्म – *स्त्री०* गर्मी की ऋतु, गर्मी का मौसम।

ग्रीष्मकालीन– *वि०* ग्रीष्म ऋतु का; जैसे– ग्रीष्मकालीन अवकाश, ग्रीष्मकालीन वर्षा, ग्रीष्मकालीन फल।

ग्रीष्म ऋतु– *स्त्री०* गरमी की ऋतु, गर्मी का मौसम।

ग्रुप– पु० दल, समूह, वर्ग। प्र० उस स्कूल में अच्छे विद्यार्थियों का एक ग्रुप है जो स्कूल में शांति-व्यवस्था बनाए रखने में मदद करता है।

ग्रेनाइट– पु० एक तरह की खुरदरी कड़ी भूरी चट्टान।

ग्रेवल– पु० कंकड़।

ग्रैजुएट – पु० बी०ए० पास, स्नातक। प्र० आजकल बहुत से ग्रैजुएट नौकरी के लिए घूम रहे हैं।

ग्लाइडर– पु० बिना इंजन का हवाई जहाज़।

ग्लानि– *स्त्री०* कोई कार्य कर लेने या कुछ कह देने के बाद उसे अनुचित समझकर दुखी होने का पछतावा-भरा भाव, दुख-भरा गहरा पछतावा। प्र० उस छात्र को मैंने स्कूल से निकाल तो दिया पर जब पता चला कि उसका कोई दोष नहीं था तो मुझे बड़ी ग्लानि हुई।

ग्लास– पु० 1. गिलास। 2. शीशा, काँच।

ग्लेशियर– पु० बर्फ़ के बड़े-बड़े टुकड़ोंवाली जलधारा।

ग्लोब– पु० एक गेंद-जैसी चीज़ जिस पर दुनिया का नक़्शा बना होता है।

घ

– देवनागरी वर्णमाला का कवर्ग का चौथा व्यंजन।

घंटा – पु० 1. बड़ी घंटी (दे०); जैसे – मंदिर का घंटा। 2. धातु का एक चपटा गोल टुकड़ा जिसे मुँगरी से मारकर बजाते हैं, घड़ियाल;जैसे – स्कूल का घंटा, दफ़्तर का घंटा। 3. घंटे का बजना। प्र० मैंने घंटा सुना था। 4. साठ मिनट का समय।
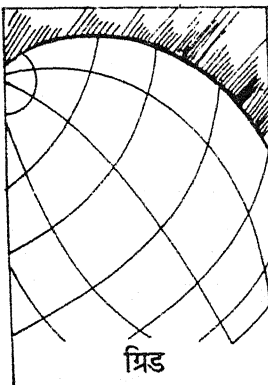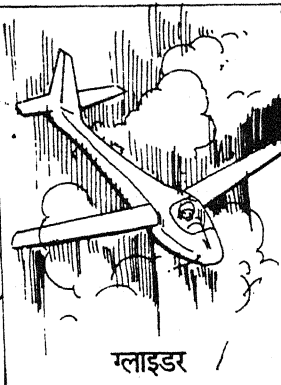
ग्रिड | ग्लाइडर | ग्लेशियर | ग्लोब
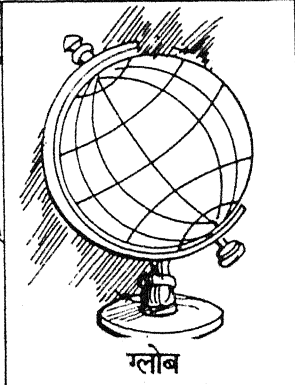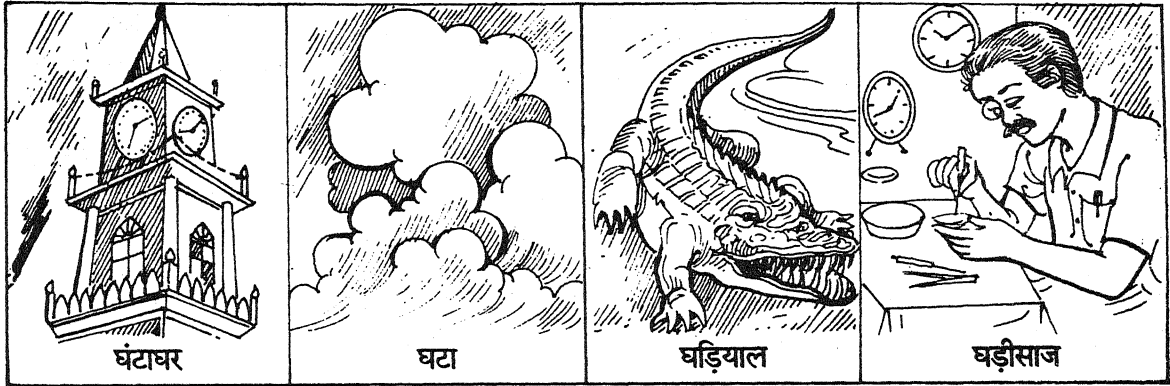
घंटाघर – *पु॰* चारों ओर चार बड़ी घड़ियोंवाली मीनार जिसे दूर से ही देखा जा सकता है तथा दूर से ही जिसका घंटा सुना जा सकता है।

घंटीनुमा – *वि॰* घंटी-जैसा, घंटी के आकार का। *प्र॰* नाख़ और बब्बूगोशा घंटीनुमा होते हैं।

घटना – 1. *क्रि॰* (क) कम होना। *प्र॰* अब यमुना का पानी घट रहा है। (ख) होना, वारदात होना, कुछ हो जाना। *प्र॰* कल वहाँ जो कुछ घटा, बताना कठिन है। 2. *स्त्री॰* वारदात, कुछ हो जाना। *प्र॰* परसों चार-पाँच बहुत दुखद घटनाएँ घटीं।

घटा – *स्त्री॰* घने काले बादलों का समूह, छाए हुए बादल, उमड़ते हुए बादल। *प्र॰* कई बार घटा घिरने के बावजूद पानी नहीं बरसा।

घटाटोप – *पु॰* घने काले बादलों की ऐसी घटा जो चारों ओर से घेरे हो, घने काले दूर-दूर तक फैले बादलों का समूह।

घटाना – *क्रि॰* कम करना, निकालना। *प्र॰* 1. दस में से पाँच घटाने से पाँच बचेगा। 2. अब घर का ख़र्च घटाना पड़ेगा, पैसों की कमी है।

घटिया – *वि॰* ख़राब, बुरा, निम्न स्तर का; जैसे – घटिया आदमी, घटिया मकान, घटिया खाना। (*विलोम* – बढ़िया)।

घट्ठा – *पु॰* लगातार रगड़ आदि लगने से शरीर के किसी भाग पर बननेवाला सख़्त निशान। *प्र॰* 1. सख़्त चमड़े के जूते पहनने से पैर पर घट्ठा पड़ जाता है। 2. दिन-भर मशीन का हैंडिल पकड़े-पकड़े हाथ में घट्ठा पड़ गया है।

घड़ा – *पु॰* पानी रखने का मिट्टी या धातु का बरतन, गगरा, कलश। *मु॰ घड़ों पानी पड़ना* – बहुत लज्जित होना। *प्र॰* अपने बेटे को ऐसा करते देख मेरे ऊपर घड़ों पानी पड़ गया।

घड़ियाल – *पु॰* 1. बड़ा घंटा। 2. मगरमच्छ की तरह का पानी का एक जंतु।

घड़ी – *स्त्री॰* 1. समय बतानेवाला यंत्र। 2. क्षण, समय। *प्र॰* इस घड़ी मैं तो ख़ाली नहीं हूँ। **घड़ी-भर** – *अ॰* थोड़ी देर, कुछ देर। *प्र॰* घड़ी-भर रुको, मैं अभी आया।

घड़ीसाज़ – *पु॰* घड़ी बनानेवाला, घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घन – *पु॰* 1. बादल। 2. बड़ा हथौड़ा। 3. किसी संख्या से उसी संख्या को दो बार गुणा करने से प्राप्त संख्या; जैसे – $2\times2\times2=8$; इसमें दो का घनफल आठ है। 4. बराबर-बराबर छह वर्गाकार सतहोंवाली कोई भी ठोस वस्तु।

घनघोर – *वि॰* 1. बहुत घना; जैसे – घनघोर बादल, घनघोर घटा। 2. बहुत अधिक, बहुत ज़्यादा;

जैसे – घनघोर वर्षा, घनघोर मूर्ख। 3. भयानक, भयंकर, भीषण; जैसे – घनघोर लड़ाई, घनघोर युद्ध।

घनचक्कर – *वि॰* मूर्ख, बेवकूफ़, जड़बुद्धि। *प्र॰* उस घनचक्कर को क्यों बुला लिया, वह तो और भी काम बिगाड़ देगा।

घनत्व – *पु॰* घनापन, घना होना, घना होने का भाव। *प्र॰* रुई की तुलना में लोहे का घनत्व ज़्यादा है (अर्थात् लोहा रुई से ज़्यादा घना होता है)।

घनत्वशील – *वि॰* घनत्ववाला। *प्र॰* लोहे के समान घनत्वशील पदार्थ को भी उसका आकार बदलकर पानी में तैराया जा सकता है।

घनाभ – *पु॰* बराबर मोटाई, चौड़ाई, लंबाईवाले पिंड-सा, घनाकार वस्तु-जैसा।

घनिष्ठ – *वि॰* अत्यंत निकट का, बहुत गहरा, आत्मीय। *प्र॰* 1. अतुल मेरा घनिष्ठ मित्र है। 2. अतुल के और मेरे बीच घनिष्ठ संबंध है।

घनीकरण (घन + ई + करण) – *पु॰* घना करना। *प्र॰* भाप के जल में बदलने को घनीकरण कहते हैं।

घनीभूत – *वि॰* घना, जो घना हो गया हो। *प्र॰* पानी घनीभूत होकर बर्फ़ बन जाता है।

घपला – *पु॰* हेराफेरी, गड़बड़,. गोलमाल। *प्र॰* चंदे के हिसाब में लोगों ने कुछ घपला कर रखा है।

घबराना – *क्रि॰* 1. बेचैन होना, परेशान होना, व्याकुल होना। *प्र॰* 1. यात्रा लंबी है, पर घबराने की कोई बात नहीं, ठीक ही रहेगी। 2. पेट में गैस के कारण मेरा जी घबरा रहा है। 2. जल्दी मचाना, उतावली दिखाना। *प्र॰* मुझे घबराओ नहीं, धीरे-धीरे सब कर दूँगा।

घबराहट – *स्त्री॰* बेचैनी, व्याकुलता। *प्र॰* पेट में गैस के कारण बड़ी घबराहट हो रही है।

घमासान – *वि॰* भीषण, भयंकर, विकट; जैसे – घमासान युद्ध।

घमौरी – *स्त्री॰* पसीने के कारण गर्मी के मौसम में शरीर पर निकलनेवाले छोटे-छोटे दाने, अम्हौरी, अँभोरी, अँधौरी।

घरबार – *पु॰* गृहस्थी, घर का सारा सामान, घर का माल-असबाब।

घरवाला – *पु॰* पति, शौहर। *प्र॰* शीला लोगों के कपड़े धोती है और उसका घरवाला मेहनत-मज़दूरी करता है।

घरेलू – *वि॰* 1. घर से संबंधित; जैसे – घरेलू मामला। 2. ज़्यादातर घर में ही रहनेवाला; जैसे – घरेलू लड़की। 3. घर का; जैसे – घरेलू नौकर।

घरेलू उद्योग – *पु॰* घर में किया जा सकनेवाला उद्योग-धंधा। *प्र॰* जापान में घरेलू उद्योग बहुत

घनत्व | घबराहट | घमासान | घमौरी
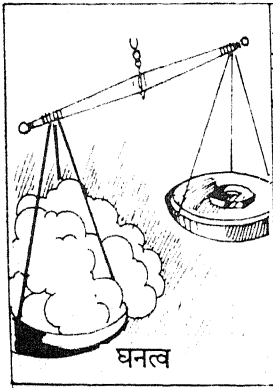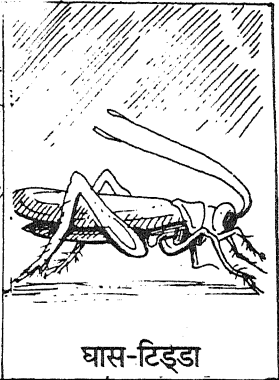
घरौंदा घाघरा घाटी घास-टिड्डा

ज़्यादा हैं। लोग प्रायः घर के एक भाग में रहते हैं और दूसरे भाग में छोटी मशीनें आदि लगाकर उद्योग-धंधा करते हैं।

घरौंदा – पु० रेत या मिट्टी का घर जिसे बच्चे खेलने के लिए बनाते हैं।

घर्षण – पु० रगड़, घिस्सा। *प्र०* दो पत्थरों के घर्षण से आग पैदा हो सकती है।

घसीट – *स्त्री०* तेज़ी से लिखे गए एक-में-एक मिले हुए अक्षर। *प्र०* यह लिखाई घसीट है, इसे पढ़ना आसान नहीं है।

घसीटना – *क्रि०* 1. किसी चीज़ को इस तरह खींचना कि वह जमीन से रगड़ खाती हुई खिंचे। 2. घसीट रूप में लिखना। *प्र०* साफ़-साफ़ लिखो, घसीटो नहीं।

घाघरा – पु० कमर के नीचे पहनने का स्त्रियों का चुन्नटदार और घेरदार पहनावा, लहँगा।

घाटी – *स्त्री०* 1. पहाड़ों से घिरा मैदान। *प्र०* पहाड़ी लोग घाटियों में खेती करते हैं या बाग़ लगाते हैं। 2. दो पहाड़ों के बीच का रास्ता, पास, दर्रा।

घातक – *वि०* जिसके कारण मौत हो सकती हो; जैसे –घातक हमला, घातक प्रहार, घातक बीमारी।

घास-टिड्डा – पु० ऐसा टिड्डा जो घासों पर होता है।

घास-पात – पु० घास-फूँस, खर-पतवार। *प्र०* खेत से घास-पात निकाल देना चाहिए।

घास-फूँस – पु० घास, घास-पात; जैसे – घास-फूँस का घर, घास-फूँस की झोंपड़ी।

घिग्घी – *स्त्री०* डर या रुलाई के कारण बोल न पाने की स्थिति, हिचकी, सुबकी। *मु० घिग्घी बँधना* – डर या रुलाई के मारे गले से आवाज़ न निकलना। *प्र०* 1. सिपाही को देखते ही चोर की घिग्घी बँध गई। 2. रोते-रोते खोए बच्चे की घिग्घी बँध गई थी और वह अपना अता-पता न बता सका।

घिचपिच – 1. *स्त्री०* थोड़ी जगह में बहुत-सारी चीज़ें या लोगों का बेतरतीब जमाव। *प्र०* यहाँ तो बहुत घिचपिच है, मैं कहीं और सोऊँगा। 2. *वि०* पास-पास लिखा हुआ और बहुत गंदा। *प्र०* घिचपिच मत लिखो, साफ़-साफ़, सुंदर-सुंदर लिखो।

घिन – *स्त्री०* नफ़रत, किसी गंदी वस्तु से पैदा होने-वाले अरुचि, घृणा। *प्र०* यह स्थान तो बहुत ही गंदा है, मुझे घिन आ रही है।

घिया – पु० एक बेल और उसका फल, लौकी।

घिरना – *क्रि०* 1. चारों ओर से घेरा जाना, घेरे में आना। *प्र०* जापान की सेना दुश्मनों की सेना से घिर गई। 2. उमड़ना, घुमड़ना। *प्र०* आसमान में बादल घिर आए हैं।

घिरनी – *स्त्री०* कुएँ से पानी खींचने या रस्सी बटने की गरारी, चरखी। *प्र०* घिरनी से रस्सी बटना या कुएँ से पानी निकालना आसान होता है।

घिसाई – *स्त्री०* 1. घिसना, घिसने की क्रिया। *प्र०* फ़र्श की घिसाई हो रही है। 2. घिसने की मज़दूरी। *प्र०* आजकल घिसाई बहुत महँगी हो गई है।

घिसाव – *पु०* रगड़, छीज। *प्र०* मिट्टी चट्टानों के तोड़फोड़ तथा घिसाव से बनी है।

घीया – *पु०* दे० घिया।

घुटन – *स्त्री०* साँस घुटने जैसा महसूस होना। *प्र०* यह कमरा बहुत दिनों से बंद रहा होगा, इसीलिए इसमें घुटन हो रही है।

घुट्टी – *स्त्री०* छोटे बच्चों का पेट ठीक रखने के लिए पिलाई जानेवाली मीठी दवा।

घुड़कना – *क्रि०* डाँटकर बोलना, डपटकर बोलना, डाँटना, धमकाना। *प्र०* मैं कुछ कहना तो चाहता था पर पिताजी ने घुड़ककर बैठा दिया।

घुड़की – *स्त्री०* डाँट, धमकी, डपट। *प्र०* थानेदार की घुड़की से ही चोर थर-थर काँपने लगा।

घुड़साल – *स्त्री०* घोड़े की रहने की जगह, अस्तबल, अश्वशाला।

घुन – *पु०* एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लग जाता है। *मु०* *घुन लगना* – भीतर-ही-भीतर किसी का छीजना या कमज़ोर होना; जैसे – लकड़ी में घुन लगना, अनाज में घुन लगना, आदमी को घुन लगना।

घुमड़ना – *क्रि०* बादलों का इधर-उधर से आकर छा जाना, घटा घिरना।

घुमाना – *क्रि०* 1. टहलाना, सैर कराना। *प्र०* मरीज़ को रोज़ घुमा दिया करो। 2. दिखाना। *प्र०* मैं दिल्ली में पहली बार आया हूँ, ज़रा मुझे दिल्ली घुमा दो। 3. गोलाई में चलाना; जैसे – लाठी घुमाना।

घुमाव – *पु०* 1. चक्कर। *प्र०* तुम्हें इधर से घुमाव पड़ेगा, सीधे रास्ते क्यों नहीं जाते? 2. मोड़। *प्र०* आगे सड़क में घुमाव है, उसी के बग़ल में वह दूकान है।

घुमावदार – *वि०* 1. जिसमें घुमाव हो, घुमाववाला,
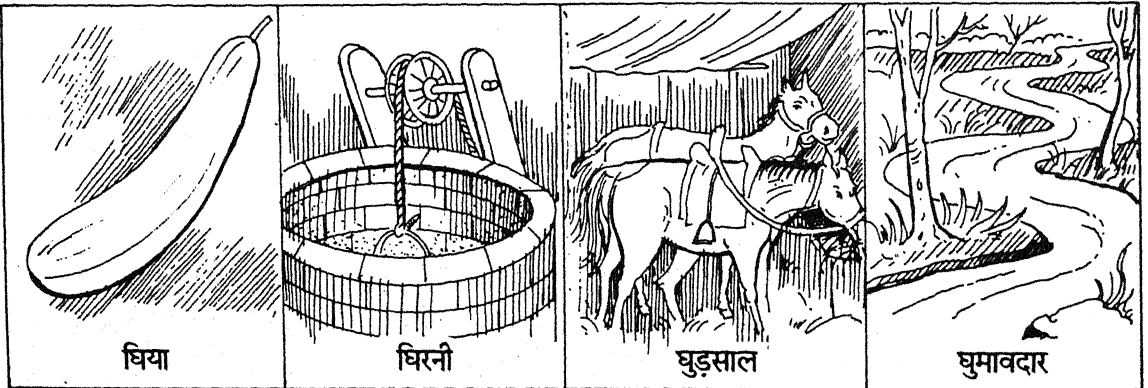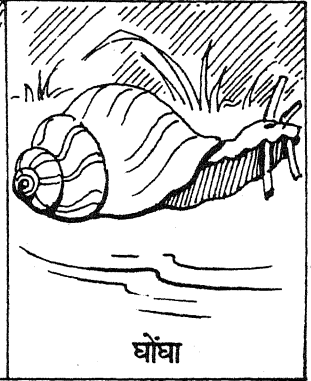
चक्करदार। *प्र०* यह रास्ता बहुत घुमावदार है। 2. घुमा-फिराकर की गई, लाग-लपेटवाली। *प्र०* उसकी बातें घुमावदार होती हैं; साफ़, सीधी बात करना वह जानता ही नहीं।

घुलनशील – *वि०* घुल जानेवाला। *प्र०* नमक और चीनी पानी में घुलनशील हैं।

घुलना – *क्रि०* 1. किसी ठोस वस्तु का गलना। *प्र०* नमक पानी में घुल जाता है। 2. छीजना, कमज़ोर होना, क्षीण होना। *प्र०* शुगर की बीमारी से मोहन के पिता का शरीर घुलता जा रहा है।

घूँट – *पु०* जल या किसी पेय पदार्थ की वह मात्रा जो एक बार में गले के नीचे उतारी जा सके; जैसे – एक घूँट दूध, एक घूँट पानी। *मु० ख़ून का घूँट पीना* – भारी गुस्से को पी जाना।

घूमना – *क्रि०* 1. इधर-उधर चलना या टहलना, सैर करना, सैर-सपाटा करना। *प्र०* मैं रोज़ सुबह घूमने जाता हूँ। 2. चक्कर काटना। *प्र०* लट्टू घूमता है। 3. देखना। *प्र०* वे बनारस से घूमने के लिए दिल्ली आए हैं।

घूमर – *पु०* राजस्थान का एक प्रसिद्ध नृत्य।

घूरा – *पु०* कूड़ा-करकट, कूड़े-करकट का ढेर।

घूस – *स्त्री०* 1. किसी को कोई अनुचित या ग़लत काम करने के बदले दिया गया धन या कोई वस्तु, रिश्वत। 2. चूहे से काफ़ी बड़ा चूहे जैसा ही एक जंतु।

घूसख़ोर – *वि०* घूस खानेवाला, घूस लेनेवाला।

घृणा – *स्त्री०* नफ़रत।

घृणित – *वि०* घृणा के योग्य; जैसे – घृणित आदमी।

घृत – *पु०* घी।

घेर – *पु०* घेरा, फैलाव; जैसे – कुर्ते का घेर, सलवार का घेर।

घेरदार – *वि०* बड़े घेरेवाला; जैसे – घेरदार सलवार, घेरदार कुर्ता।

घेवर – *पु०* मैदे, घी और चीनी से बनी हुई विशेष प्रकार की मिठाई।

घोंघा – *पु०* शंख की तरह का उससे छोटा एक कीड़ा।

घोंचू – *वि०* मूर्ख, बेवकूफ़, घोंघाबसंत।

घोटना – *क्रि०* 1. बारीक करने के लिए बार-बार घिसना या रगड़ना या पीसना; जैसे – भाँग घोंटना,

दवा घोंटना। 2. याद करना, रटना, रट्टा लगाना; जैसे – वर्तनी (स्पेलिंग) घोटना, प्रश्न का उत्तर घोटना।

घोड़ा – *पु॰* 1. एक चौपाया जो गधे से बड़ा होता है और सवारी आदि के काम आता है, पशु। 2. बंदूक, तमंचे का खटका जिसे दबाने से वह दगता है। 3. शतरंज का एक मोहरा।

घोर – *वि॰* 1. भयंकर, भयानक; जैसे – घोर युद्ध। 2. बड़ा, बहुत बड़ा; जैसे – घोर अपराध, घोर पाप। 3. घना; जैसे – घोर जंगल।

घोल – *पु॰* जो पानी, मिट्टी का तेल या अन्य तरल पदार्थों में घोलकर बनाया गया हो; जैसे – दवाओं का घोल, रसायनों का घोल, चूने का घोल।

घोलक – *वि॰* वह तरल पदार्थ जिसमें अन्य चीज़ें डालकर घोल तैयार करते हैं, विलायक। *प्र॰* पानी अच्छा घोलक है, उसमें अनेक प्रकार की चीज़ें आसानी से घुल जाती हैं।

घोलना – *क्रि॰* किसी चीज़ को पानी आदि तरल पदार्थों में इस तरह मिलाना कि वह घुल जाय; जैसे – पानी में दवा घोलना, दूध में चीनी घोलना।

घोषणा-पत्र – *पु॰* ऐसा पत्र या काग़ज़ जिस पर कोई सार्वजनिक घोषणा लिखी गई हो। *प्र॰* संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने सन् 1948 में मानव-अधिकारों के एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

घोषित – *वि॰* जिसकी घोषणा कर दी गई हो, जिसकी सार्वजनिक सूचना दे दी गई हो। *प्र॰* 1. पाँचवीं का परीक्षा-फल घोषित कर दिया गया है। 2. क्रिकेट की टीम के खिलाड़ियों के नाम घोषित कर दिए गए हैं।

घ्राण – *पु॰* 1. सूँघना। *प्र॰* नाक को घ्राण-इंद्रिय भी कहते हैं। 2. सूँघने की शक्ति। 3. नाक।

घ्राणेंद्रिय (घ्राण+इंद्रिय) – *स्त्री॰* नाक। *प्र॰* नाक घ्राणेंद्रिय है, अर्थात् यह वह इंद्रिय है जो सूँघने (घ्राण) का काम करती है।

च

– देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का पहला व्यंजन।

चंगुल – *पु॰* 1. पंजा। *प्र॰* चिड़िया अपने चंगुल में कुछ लिए हुए है। 2. पकड़, गिरफ़्त। *प्र॰* वह आदमी तो बड़ा ज़ालिम है, उसके चंगुल से निकलना कठिन है। *मु॰ चंगुल में फँसना* – पकड़
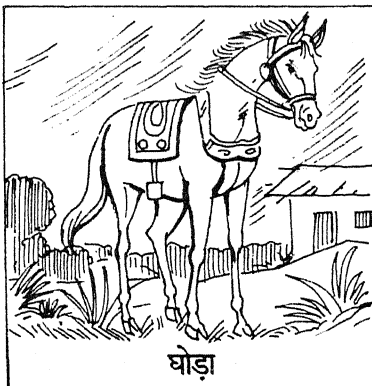
घोड़ा | घ्राण | चंगुल
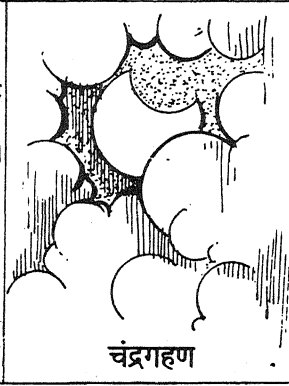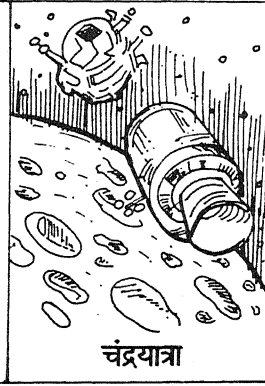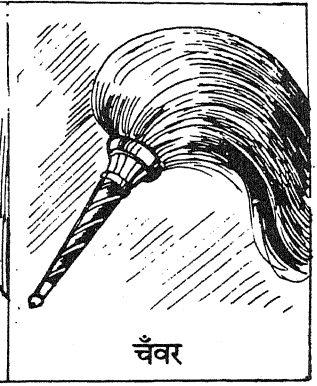
या गिरफ़्त में आना। *प्र०* अरे भाई मोहन, तुम इन गुंडों के चंगुल में कैसे फँस गए?

चंट – *वि०* चालाक, सयाना, धूर्त। *प्र०* यह लड़का बहुत चंट है, इससे सँभलकर रहना।

चंडाल – *पु०* दे० चांडाल।

चंडी – *स्त्री०* 1. दुर्गा, चंडिका; चंडी दुर्गा का वह रूप है जिसने महिषासुर नाम के राक्षस को मार डाला था। 2. कर्कशा और दुष्ट स्त्री, क्रोधी और झगड़ालू स्त्री। *प्र०* क्या यह तुम्हारे घर भी आती है? यह तो चंडी है।

चंद – *वि०* कुछ, थोड़े से, दो-चार। *प्र०* घबराओ नहीं, चंद दिनों में सब कुछ ठीक हो जाएगा।

चंद्रकला –*स्त्री०* चंद्रमा की किरण या उसका प्रकाश।

चंद्रग्रहण – *पु०* चंद्रमा को लगनेवाला ग्रहण। पुराणों के अनुसार एक समय आता है जब राहु और केतु चंद्रमा को ग्रस लेते हैं, इसी को चंद्रग्रहण कहते हैं। अब यह नहीं मानते। नए विचारों के अनुसार पृथ्वी जब चंद्रमा और सूर्य के बीच आ जाती है तो उसकी छाया चंद्रमा पर पड़ती है और यही चंद्रग्रहण है।

चंद्रयात्रा – *स्त्री०* चंद्रमा तक पहुँचने और वहाँ चंद्रमा को देखने के लिए की जानेवाली यात्रा।

चंपत – *वि०* ग़ायब, लुप्त, रफ़ूचक्कर। *प्र०* मैं अभी-अभी भीतर गया था, इतने में जाने कौन मेरा सारा सामान लेकर चंपत हो गया।

चँवर – *पु०* सुरा गाय की पूँछ के बालों का हैंडिल लगा गुच्छा। *प्र०* चँवर देव-मूर्तियों के ऊपर डुलाया जाता है।

चकत्ता – *पु०* गोल दाग़, ददोरा, दिदोरा, धब्बा। *प्र०* डॉक्टर ने न जाने कैसी दवा दे दी, मेरे पूरे शरीर पर चकत्ते उभर आए हैं।

चकनाचूर – *वि०* जो टूटकर चूर-चूर हो गया हो। *प्र०* खिड़की का शीशा तेज़ हवा से ज़मीन पर गिरा और चकनाचूर हो गया।

चकमक – *पु०* एक कड़ा पत्थर जिस पर चोट करने पर बहुत जल्दी आग निकलती है। *प्र०* पुराने ज़माने में लोग चकमक से ही आग पैदा करते थे।

चकराना – *क्रि०* 1. सिर का घूमना, चक्कर आना, चक्कर खाना। *प्र०* 1. कुछ ऐसा रोग हो गया है कि मेरा सिर चकराता रहता है। 2. पता नहीं उस शर्बत में क्या था, जब से मैंने पिया मेरा सिर चकरा रहा है। 2. हैरान हो जाना, दंग रह जाना। *प्र०* उस धूर्त की चालाकी-भरी बातें सुनकर मेरा तो सिर चकरा गया।

चकला – *पु॰* रोटी बेलने का लकड़ी या पत्थर का गोल पाटा।

चकवा – *पु॰* एक पक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि रात के समय वह अपनी मादा (चकवी) से अलग हो जाता है।

चकाचक – *वि॰* 1. खाकर पूरी तरह संतुष्ट। *प्र॰* बस चकाचक हो गया, अब कुछ नहीं चाहिए। 2. चमचमाता, चमकता, साफ़-सुथरा; जैसे – चकाचक बरतन, चकाचक फ़र्श, चकाचक कपड़े। 3. पूरी तरह, भरपूर, लबालब। *प्र॰* इस बरतन को घी से चकाचक भर दो।

चकाचौंध – *स्त्री॰* आँखें चौंधिया देनेवाली चमक, बहुत तेज़ रोशनी। *प्र॰* वहाँ उन लोगों ने रोशनी का इतना ज़्यादा इंतज़ाम कर रखा था कि चकाचौंध के कारण आँखें ठहर नहीं पा रही थीं।

चकित – *वि॰* हैरान, आश्चर्य में पड़ा हुआ, आश्चर्यचकित, दंग, विस्मित। *प्र॰* जादूगर के कारनामों को देखकर लोग चकित हो गए।

चकोतरा – *पु॰* एक तरह का बड़ा नीबू।

चक्कर – *पु॰* 1. फेरा, फेरी; जैसे – चक्कर लगाना। *प्र॰* पृथ्वी सूर्य का चककर लगाती है। 2. घेरा। *प्र॰* इस पार्क का चककर एक किलोमीटर से ज़्यादा है। 3. फेर, हैरानी, परेशानी। *प्र॰* तुम कैसे इस चक्कर में पड़ गए? 4. घुमटा, सिर घूमना। *प्र॰* पान में ज़र्दा होने से मेरा सिर चक्कर खा रहा है। *मु॰ चक्कर काटना, चक्कर लगाना* – बार-बार आना-जाना। *प्र॰* सुबह से ही पुलिस इस मुहल्ले का चक्कर काट रही है, कोई ख़ास बात अवश्य है।

चक्का –*पु॰* पहिया। *मु॰ चक्का जाम करना* – किसी सवारी को सड़क पर न चलने देना।

चक्र – *पु॰* 1. पहिया। 2. गोल घेरा, गोलाकार आकृति। *प्र॰* हमारे राष्ट्रीय झंडे पर अशोक चक्र है।

चक्रव्यूह – *पु॰* प्राचीन काल की विशेष प्रकार की ऐसी सैनिक मोर्चाबंदी जिसमें प्रवेश करनेवाला सैनिक फँस जाता था और उसके लिए बाहर निकलना कठिन हो जाता था। *प्र॰* महाभारत काल में अभिमन्यु चक्रव्यूह में ही मारा गया था।

चखना – *क्रि॰* स्वाद लेना, स्वाद लेने के लिए थोड़ा-सा खाना। *प्र॰* चखकर बताओ कि खीर में चीनी ठीक है क्या?

चट – 1. *अ॰* जल्दी से, झट, तुरंत, फ़ौरन। *प्र॰* चट अपना काम कर डालो, फिर घूमने जाना। 2. *वि॰* चाट-पोंछकर खाया हुआ, समाप्त, नष्ट।
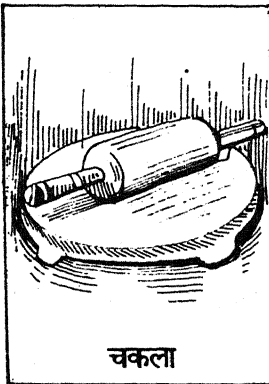
चकला | चकवा | चकाचौंध | चक्रव्यूह
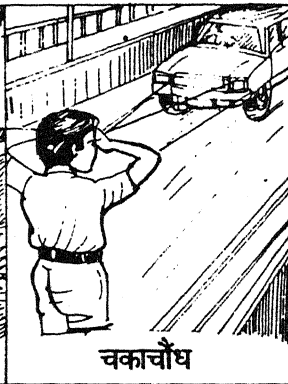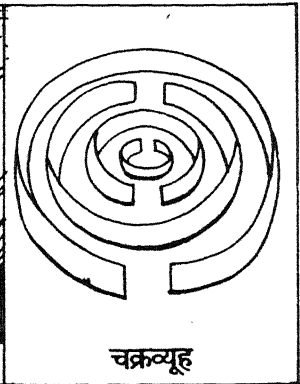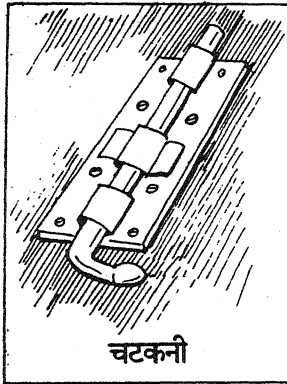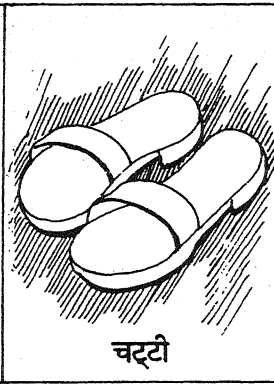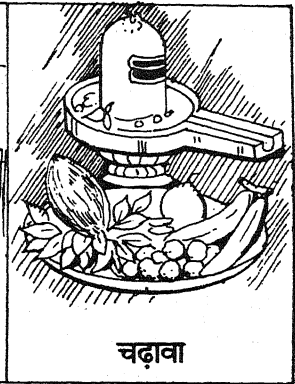
प्र० 1. मोहन सारी मिठाई चट कर गया। 2. दीमकों ने सारे काग़ज़ चट कर डाले।

चटक – *वि०* चटकीला, भड़कीला। *प्र०* इस कपड़े का रंग ज़्यादा चटक है।

चटकदार – *वि०* चटकीला, भड़कीला। *प्र०* यह साड़ी चटकदार है।

चटकना – *क्रि०* 1. चट-चट की आवाज़ करके टूटना या फटना। *प्र०* जलाते समय सूखी लकड़ी चटकती है। 2. दरार पड़ना, तरेड़ पड़ना, तड़कना। *प्र०* नया शीशा न जाने कैसे तड़क गया है। 3. कली खिलना। *प्र०* सुबह के वक़्त कलियाँ चटकती हैं।

चटकनी – *स्त्री०* किवाड़ बंद करने की कुंडी, सिटकिनी।

चटखनी – *स्त्री०* चटकनी, सिटकिनी।

चटपट – *अ०* झटपट, जल्दी, शीघ्र, तुरंत। *प्र०* चटपट अपना काम कर डालो, घूमने चलना है।

चटपटा – *वि०* मिर्च-मसालेदार, मज़ेदार, चटपटा; जैसे – चटपटी चटनी, चटपटी सब्ज़ी, चटपटी दाल।

चटोरापन – *पु०* चटोरपन, चटोरा होने की आदत, स्वादलोलुपता। *प्र०* तुम बीमार हो मगर तुम्हारा चटोरापन नहीं गया।

चट्टी – *स्त्री०* 1. एड़ी की तरफ़ खुली हुई लकड़ी की चटपटी, स्लीपर। 2. यात्रियों के ठहरने की जगह, पड़ाव। *प्र०* बदरीनाथ के रास्ते में कई चट्टियाँ हैं।

चढ़ाई – *स्त्री०* 1. चढ़ने की क्रिया। *प्र०* ज़्यादा चढ़ाई में साँस फूल जाती है। 2. ऊँचा होता जानेवाला पहाड़ या भूमि। *प्र०* इस रास्ते में कई जगह काफ़ी चढ़ाई है। 3. चढ़ने की ऊँचाई। *प्र०* इस पहाड़ की चढ़ाई दस हज़ार फ़ीट के लगभग है। 4. हमला, आक्रमण। *प्र०* समय-समय पर बहुत-से विदेशियों ने भारत पर चढ़ाई की।

चढ़ाना – *क्रि०* 1. ऊपर करना, ऊपर ले जाना, ऊपर खींचना। *प्र०* यह मेज़ ऊपर चढ़ानी है। 2. चढ़ने में मदद करना। *प्र०* 1. इस लता को पेड़ पर चढ़ा दो। 2. बच्चे को हाथी पर चढ़ा दो। 3. भक्ति-भाव से भेंट करना। *प्र०* इन मिठाइयों को पहले भगवान् को चढ़ा दो फिर हम लोग प्रसाद लेंगे।

चढ़ावा – *पु०* पूजा में देवता को चढ़ाई जानेवाली चीज़ें। *प्र०* इस मंदिर में प्रतिदिन हज़ारों रुपए का चढ़ावा चढ़ता है।

चतुर – *वि०* 1. कुशल, प्रवीण, दक्ष, होशियार, बुद्धिमान। *प्र०* आपका बेटा सभी कामों में बहुत चतुर है। 2. चालाक, होशियार, धूर्त। *प्र०* तुम समझते हो कि मोहन सीधा है, अरे वह बहुत चतुर है, उस पर ज़रूरत से ज़्यादा विश्वास मत करना।

चतुराई – *स्त्री०* चतुरता, होशियारी। *प्र०* अपने दोस्त को बड़ी चतुराई से मूर्ख बनाकर उसने अपना काम बना लिया।

चतुर्थ – *वि०* चौथा।

चतुर्थी – *स्त्री०* किसी महीने के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की चौथी तिथि, चौथ। *प्र०* असाढ़ कृष्ण चतुर्थी को विवाह है।

चतुर्भुज – *पु०* 1. रेखागणित में चार भुजाओं से बननेवाला आकार । 2. चार भुजाओंवाले भगवान्, विष्णु।

चपटा – *वि०* जो ऊँचा उठा या उभरा हुआ न हो, दबा या बैठा हुआ। *प्र०* 1. यह डिब्बा दबने से चपटा हो गया है। 2. कुछ लोगों की नाक चपटी होती है।

चपत – *स्त्री०* 1. तमाचा, थप्पड़। 2. नुकसान, हानि। *प्र०* तुमने नाहक मुझे इतने रुपयों की चपत लगवा दी।

चपेट – *स्त्री०* 1. किसी विपत्ति का शिकार हो जाना, फँसाव, लपेट। *प्र०* बाढ़ की चपेट में आकर दो गाँव बह गए। 2. धक्का। *प्र०* पहले तो हाथी ने अपनी सूँड़ से शेर को ऐसी चपेट मारी कि वह दूर जा गिरा पर फिर शेर उठकर हाथी पर टूट पड़ा।

चप्पा – *पु०* 1. मिट्टी का बड़ा टुकड़ा, बड़ा ढेला। *प्र०* इस खेत में बहुत चप्पे हैं। 2. थोड़ी जगह, छोटी जगह, थोड़ा-सा स्थान। *मु०* *चप्पा-चप्पा खोज या छान मारना* – हर थोड़ी-थोड़ी दूर पर देख डालना। *प्र०* बच्चे के लिए घरवालों ने चप्पा-चप्पा खोज या छान मारा पर वह कहीं नहीं मिला।

चप्पू – *पु०* 1. एक ओर से चपटा डंडा जिससे नाव खेते हैं, डाँड़। 2. एक विशेष तरह का चौड़ा डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है।

चबेना – *पु०* चबा-चबाकर खाने के लिए भूना हुआ सूखा अनाज, भूँजा, दाना।

चमक – *स्त्री०* 1. चकाचौंध। *प्र०* ऊँचे पावर के बल्ब की तेज़ रोशनी की चमक से आँखें चौंधिया रही हैं। 2. आभा, कांति। *प्र०* महात्माजी के चेहरे पर एक अद्भुत चमक है। 3. चोट या एक-ब-एक झटका लगने से होनेवाला कमर आदि का दर्द, चिक, चिल्हक।

चतुर्भुज | चपत | चपेट | चप्पू
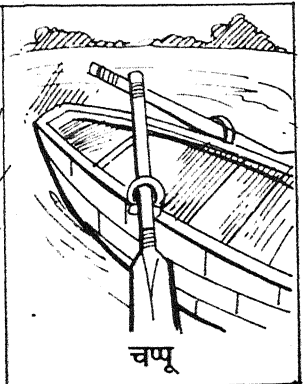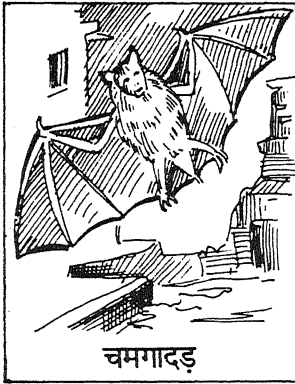
चमकदार – *वि०* जिसमें चमक हो, चमकीला।

चमकना – *क्रि०* 1. कौंधना। *प्र०* बिजली चमक रही है। 2. आभा या कांतिवाला होना। *प्र०* उसका चेहरा चमक रहा है। 3. प्रकाश देना, जगमगाना। *प्र०* रात में तारे चमकते हैं। 4. काफ़ी उन्नति करना। *प्र०* अब तो तुम्हारा रोज़गार काफ़ी चमक गया।

चमकीला – *वि०* चमकवाला, चमकदार; जैसे – चमकीला गोटा, चमकीली आँखें, चमकीले दाँत।

चमगादड़ – *पु०* रात के अँधेरे में उड़नेवाला एक जंतु जिसे दिन की रोशनी में दिखाई नहीं पड़ता।

चमचम –1. *पु०* छेने से बनी एक बंगाली मिठाई। 2. *अ०* चमाचम। *प्र०* उसके दाँत चमचम चमक रहे हैं।

चमचमाना – *क्रि०* चमकना। *प्र०* तुम्हारा फ़र्श चमचमाता रहता है, किस चीज़ से साफ़ करते हो?

चमचा – *पु०* 1. छिछली कलछी जैसा एक पात्र, बड़ा चम्मच। 2. खुशामदी व्यक्ति। *प्र०* मिश्रा मंत्रीजी का चमचा है, उन्हीं की कृपा से वह आगे बढ़ता जा रहा है।

चमड़ी – *स्त्री०* आदमियों की त्वचा। *प्र०* मोहन की चमड़ी दाद-खाज के कारण सख़्त हो गई है।

चमत्कार – *पु०* कोई अनोखा काम या घटना जो आश्चर्य में डाल दे, करामात। *प्र०* 1. अख़बार में पढ़ा था कि एक बस खड्ड में गिर गई, सभी लोग मारे गए पर छह महीने का एक बच्चा बच गया, यह एक चमत्कार है। 2. विज्ञान ने अनेक चमत्कार किए हैं; जैसे – टेलिफ़ोन, टेलिविज़न तथा चाँद की यात्रा आदि।

चमेली – *स्त्री०* एक झाड़ी या लता तथा उसके फूल जो सफ़ेद और खुशबूदार होते हैं।

चरखा – *पु०* दे० चर्खा।

चरखी – *स्त्री०* दे० चर्खी।

चरण – *पु०* पैर, पाँव, पग।

चरणामृत – *पु०* दूध, दही, घी, शहद और गोमूत्र आदि का वह तरल मिश्रण जिससे किसी देवता की मूर्ति के चरण (पैर) धोए गए हों या उसे नहलाया गया हो। इसे प्रसाद रूप में थोड़ा-थोड़ा पीते हैं।

चरपरा – *वि०* तीखे स्वादवाला, तेज़, तीता; जैसे – चरपरी मिर्च।

चरबी – *स्त्री०* दे० चर्बी।

चरम – *वि०* चोटी का, हद दर्जे का। *प्र०* चरम संकट की घड़ी में उस साधु ने मेरी मदद की।

चरस – पु० गाँजे के पेड़ से निकला हुआ गोंद जो नशीला होता है और गाँजे की तरह ही नशे के लिए पिया जाता है।

चरसा – पु० दे० चर्सा।

चरागाह – पु० पशुओं के चरने का घास का मैदान।

चरित्र – पु० आचरण, चाल-चलन। प्र० मेरे अध्यापक बहुत अच्छे चरित्रवाले हैं।

चरी – स्त्री० ज्वार के छोटे और हरे पौधे जो पशुओं के चारे के काम आते हैं।

चर्खा – पु० सूत कातने का लकड़ी का एक छोटा उपकरण (यंत्र)।

चर्खी – स्त्री० पहिए की तरह की घूमनेवाली गोल चीज़; जैसे – कपास ओटने की चरखी, सूत लपेटने की चरखी, कुएँ से पानी खींचने की चरखी (गराड़ी)।

चर्च – पु० ईसाइयों का उपासना गृह, गिरजाघर।

चर्चा – स्त्री० 1. बातचीत, वार्तालाप। प्र० मुख्य मंत्री ने प्रधान मंत्री से इस विषय पर चर्चा की है। 2. अफ़वाह। प्र० चर्चा है कि शहर में कहीं बाहर से एक गिरोह आया है जो बच्चों को लालच देकर अपने साथ भगा ले जाता है। 3. ज़िक्र। प्र० वे लोग तुम्हारी चर्चा भी कर रहे थे।

चर्म – पु० चमड़ा, चमड़ी, खाल, त्वचा।

चर्वणक – पु० मनुष्य के मुँह के भीतर के पीछेवाले वे दाँत जो भोजन चबाने का काम करते हैं, चौभड़, चौघर।

चर्सा – पु० चमड़े का बना एक बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिए कुएँ से पानी निकालते हैं, मोट, चरस, पुर।

चलचित्र – पु० फ़िल्म, सिनेमा।

चलन – पु० रिवाज़, फ़ैशन, रीति। प्र० कुर्ता-धोती पहनने का चलन ख़त्म-सा हो रहा है।

चलना – क्रि० 1. एक स्थान से दूसरे स्थान को पैरों से जाना, पैरों से आगे बढ़ना। प्र० हिमांशु बहुत तेज़ चलता है। 2. आगे बढ़ना, एक जगह से दूसरी जगह जाना; जैसे – हवा का चलना, ट्रेन का चलना, हवाई जहाज़ का चलना, पानी के जहाज़ का चलना। 3. लागू होना। प्र० यह कानून दो वर्षों से चल रहा है। *मु० चल बसना* – मर जाना। प्र० लंबी बीमारी के बाद कल कुमार के नानाजी चल बसे।

चलनी – स्त्री० आटा, बेसन आदि छानने का बरतन, छलनी, छन्नी। प्र० बेसन काफ़ी दिन का हो गया है, चलनी से छान लो।

चरागाह | चर्खा | चर्सा | चलचित्र

चलाना चहारदीवारी चाँद
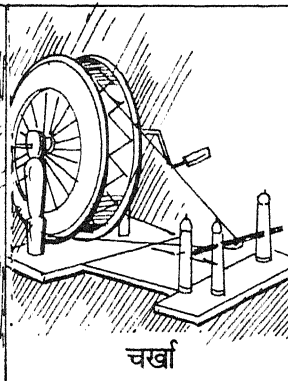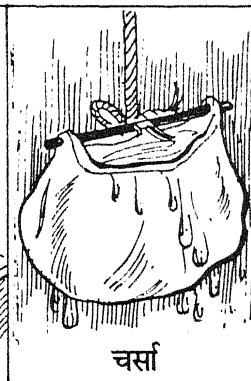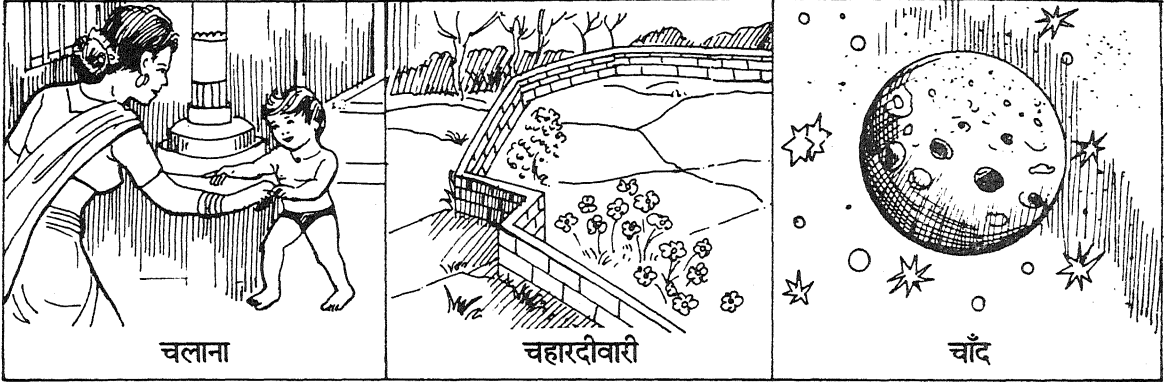
चलाना – *क्रि०* 1. चलने में सहायक होना। *प्र०* बच्चा चल-चलकर गिर-गिर जा रहा है, उसे उँगली पकड़कर चला दो। 2. गति में लाना, गतिशील करना; जैसे – कार चलाना, ट्रैक्टर चलाना, सिक्का चलाना, रिवाज़ चलाना। 3. काम को जारी रखना; जैसे – दूकान चलाना, फ़ैक्टरी चलाना। 4. छोड़ना, दागना; जैसे – गोली चलाना, बंदूक चलाना।

चवन्नी (चार+आना+ई) – *स्त्री०* (पहले) चार आने मूल्य का सिक्का, (अब) पच्चीस पैसे मूल्य का सिक्का, रुपए के चौथाई भाग का सिक्का।

चवर्ग – *पु०* च, छ, ज, झ, ञ अर्थात् च से शुरू होनेवाले व्यंजनों का वर्ग या समूह।

चश्मा – *पु०* 1. ऐनक। 2. झरना। *प्र०* पहाड़ों पर बहुत-से चश्मे हैं।

चस्का – *पु०* किसी चीज़ का मज़ा मिल जाने पर उसे बार-बार करने, खेलने, खाने या पीने आदि की लत, चाट; जैसे – जुए का चस्का, भाँग का चस्का, शतरंज का चस्का, शराब का चस्का।

चहबच्चा – *पु०* 1. पानी भरकर रखने का छोटा गड्ढा, हौज़। 2. रुपए-गहने आदि गाड़ने या छिपाने का छोटा तहख़ाना।

चहलक़दमी – *स्त्री०* धीरे-धीरे थोड़ा घूमना-टहलना। *प्र०* अभी तुम्हें कमज़ोरी तो है पर थोड़ी चहलक़दमी कर लेना तंदुरुस्ती के लिए अच्छा रहेगा।

चहल-पहल – *स्त्री०* किसी स्थान में काफ़ी आदमियों के इकट्ठा होने के कारण हँसी-ख़ुशी का वातावरण, धूमधाम, रौनक़। *प्र०* 1. शादी-विवाह में घर में चहल-पहल रहती है। 2. मेले में बहुत चहल-पहल थी।

चहारदीवारी – *स्त्री०* किसी स्थान के चारों ओर बचाव के लिए बनाई हुई दीवार, चारदीवारी, प्राचीर।

चाँटा – *पु०* तमाचा, थप्पड़।

चांडाल – 1. *वि०* (क) दुष्ट, पतित। (ख) क्रूर, ज़ालिम। 2. *पु०* (हिंदू जाति-व्यवस्था में) शूद्रों में सबसे नीची जाति, डोम, श्मशान में मुर्दों को जलानेवाला।

चाँद – *पु०* चंद्रमा। *लो०* *चाँद में भी दाग़ है* – हर अच्छी चीज़ में कोई-न-कोई बुराई होती है।

चाँदनी – 1. *स्त्री०* (क) चंद्रमा का प्रकाश या उजाला। *प्र०* शरद् पूनो की चाँदनी बड़ी सुहावनी लगती है। (ख) एक पौधा या उसका सफ़ेद फूल।

2. *वि०* चंद्रमा के प्रकाशवाला, चंद्रमा की रोशनीवाला। *प्र०* चाँदनी रात में घूमने का आनंद ही कुछ और है।

चाँदा – पु० गणित में आधे चाँद की शक्ल का प्लास्टिक का एक उपकरण, जिससे कोण बनाते तथा नापते हैं।

चाक – पु० 1. कील पर घूमनेवाला वह गोलाकार पत्थर जिस पर कुम्हार बरतन बनाते हैं। 2. ब्लैकबोर्ड पर लिखने की मिट्टी, खड़िया।

चाकर – पु० नौकर, सेवक।

चाकरी – *स्त्री०* नौकरी, सर्विस।

चाकलेट – पु० गाढ़ा दूध, कोको तथा चीनी आदि से बनी एक पश्चिमी मिठाई। *प्र०* आजकल बच्चे चाकलेट बड़े प्रेम से खाते हैं।

चाप – 1. पु० (क) वृत्त का आधा या कोई भाग। (ख) धनुष, कमान। 2. *स्त्री०* चलने की आहट या ध्वनि; जैसे – पदचाप, पदध्वनि।

चापलूस – *वि०* अपना काम निकालने के लिए झूठी बड़ाई करनेवाला, चापलूसी करनेवाला, खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी – *स्त्री०* खुशामद, झूठी प्रशंसा, झूठी बड़ाई, चमचागिरी, चाटुकारिता।

चाबी – *स्त्री०* ताला खोलने और बंद करने की कुंजी, ताली, चाभी।

चाबुक – पु० कोड़ा, हंटर।

चाभी – *स्त्री०* दे० चाबी।

चायदानी – *स्त्री०* 1. वह बरतन जिसमें चाय बनाई जाती है। 2. वह बरतन जिसमें चाय बनाकर रखी जाती है।

चारख़ाना – पु० 1. खड़ी और आड़ी धारियोंवाला कपड़ा। *प्र०* इस चारख़ाने की बुशशर्ट अच्छी बनेगी। 2. खड़ी और आड़ी धारियोंवाला डिज़ाइन। *प्र०* कोई भी कपड़ा मेरे लिए लाना पर चारख़ाना मत लाना।

चारदीवारी – *स्त्री०* दे० चहारदीवारी।

चारा – पु० 1. वह घास-फूँस जिसे पशु खाते हैं, पशुओं के खाने की चीज़ें। 2. उपाय। *प्र०* अब तो स्वयं जाकर उस काम को करवाने के अलावा कोई चारा नहीं है।

चारों – *वि०* चार का समूह; जैसे – चारों आदमी, चारों पुस्तकें, चारों अध्यापक।

चार्ट – पु० मौसम, क़ीमतें, व्यापार, हानि-लाभ,
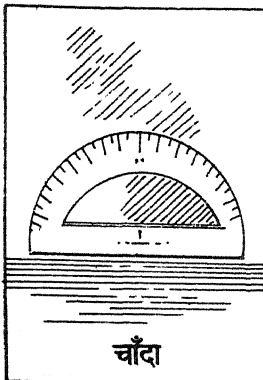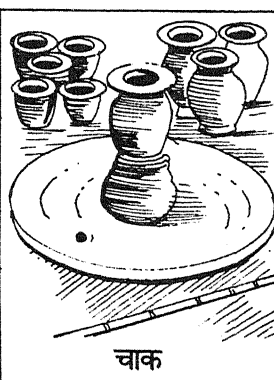
चाँदा | चाक | चाबुक | चायदानी
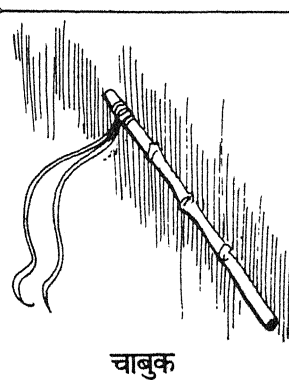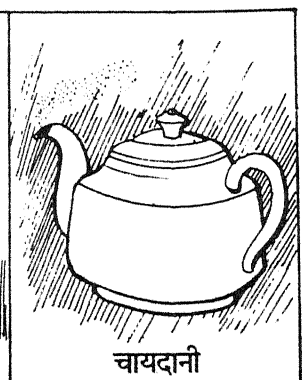
चार्ट पेपर | चालक | चालान

जनसंख्या, खेल में हार-जीत जैसी चीज़ों की तालिका; जैसे – मौसम चार्ट, महँगाई चार्ट, मृत्युदर चार्ट, जन्मदर चार्ट आदि।

चार्ट पेपर – पु० चार्ट बनाने का मोटा कागज़, चार्ट बनाने का ख़ानेदार कागज़, ग्राफ़ पेपर।

चार्टर – पु० किसी संस्था के ऐसे नियमों की सूची, जो उस संस्था के सदस्यों को यह बतलाते हैं कि उनके क्या अधिकार हैं और क्या कर्तव्य हैं। प्र० भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ का चार्टर 30 अक्तूबर, 1945 को स्वीकार किया था।

चार्टर्ड – *वि०* पूरा-का-पूरा भाड़े पर लिया हुआ; जैसे – चार्टर्ड बस, चार्टर्ड जहाज़।

चाल – *स्त्री०* 1. चलने की रफ़्तार; जैसे – बैलगाड़ी की चाल, बस की चाल, रेलगाड़ी की चाल। 2. चलने का ढंग या तरीका; जैसे – शतरंज में तिरछी चाल, सीधी चाल। 3. ठगने का ढंग या तरकीब। प्र० उसकी चाल में मत फँसना, वह बहुत बड़ा जालसाज़ है।

चालक – *वि०* चलाने या हाँकनेवाला, ड्राइवर। प्र० 1. मौसम की भविष्यवाणी से वायुयान और जलयान चालकों को बहुत लाभ होता है। 2. बस-चालक बस को अंधाधुंध भगाए लिए जा रहा था।

चाल-चलन – पु० चरित्र, आचरण। प्र० बुरे चाल-चलनवाले लोग समाज में बदनाम हो जाते हैं।

चालाक – *वि०* 1. धूर्त, चालबाज़, चंट। प्र० वह आदमी चालाक है, उससे बचकर रहना चाहिए। 2. होशियार, चतुर। प्र० वह लड़का अपने काम में चालाक है।

चालाकी – *स्त्री०* 1. चालबाज़ी, धूर्तता। 2. चतुराई, होशियारी।

चालान – पु० 1. पुलिस द्वारा तैयार किया गया अपराध बतानेवाला पत्र। प्र० उस चोर का चालान तैयार हो गया है। 2. किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए अदालत में भेजा जाना। प्र० पुलिस ने उसका चालान कर दिया है। 3. वह पत्रक या कागज़ जिसमें माल पानेवाले की सूचना के लिए माल की सूची होती है; जैसे – कपड़े का चालान, रुई का चालान।

चालू – *वि०* 1. चालाक, होशियार, तेज़, चलता-पुर्जा; जैसे – चालू आदमी। 2. जारी, लागू, जो चल रहा हो; जैसे– चालू रिवाज़, चालू फ़ैक्टरी, चालू नियम।

चाव – पु० 1. शौक। प्र० वे चटपटी चीज़ें बड़े चाव

प्र० चित्तीदार केले मीठे होते हैं। 2. चितकबरा। प्र० कुछ उल्लू चित्तीदार होते हैं।

चित्रकला – स्त्री० चित्र बनाने की कला या हुनर, पेंटिंग।

चित्रकार – पु० चित्र बनानेवाला, चित्र बनाने में कुशल, चितेरा।

चित्रकारी – स्त्री० चित्र बनाने की कला, पेंटिंग।

चित्रण – पु० चित्र या तस्वीर बनाना। प्र० अहमद प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण बहुत अच्छा करता है।

चित्रपट – पु० 1. परदा, स्क्रीन। प्र० चित्रपट पर फ़िल्म दिखाई जाती है। 2. फ़िल्म। प्र० आजकल यहाँ कौन-सा चित्रपट लगा है।

चित्र-विचित्र – वि० 1. अजीब, विलक्षण। प्र० यह दुनिया चित्र-विचित्र है। 2. कई रंगोंवाला, रंग-बिरंगा, बेल-बूटेदार। प्र० आजकल लोग चित्र-विचित्र कपड़ों की कमीज़ें पहनने लगे हैं।

चित्रशाला – स्त्री० 1. वह स्थान जहाँ बहुत से चित्र लगे हों। 2. वह स्थान जहाँ चित्र बनाए जाएँ, स्टूडियो।

चित्रांकित – वि० चित्रित। प्र० बच्चो, इन चिड़ियों को चित्रांकित करो।

चित्रित – वि० जिसका चित्र खींचा गया हो, अंकित, चित्रांकित। प्र० इस तस्वीर में दो लड़ते हुए हाथी चित्रित हैं।

चिनाई – स्त्री० 1. ईंट की जुड़ाई, ईंट जोड़ने का काम। 2. ईंट चिनने की मज़दूरी।

चिनार – पु० कश्मीर आदि कुछ स्थानों पर पाया जानेवाला कटावदार पत्तोंवाला एक पेड़।

चिपचिपा – वि० 1. चिपकनेवाला, लसदार। प्र० गोंद, लेई, सरेस तथा फ़ेवीकोल आदि चिपचिपे होते हैं। 2. चिपकनेवाली या लसलसी चीज़ लगे हुए। प्र० जाने क्यों तुम्हारे हाथ चिपचिपे हो रहे हैं?

चिपचिपाहट – स्त्री० चिपचिपा होना, लस। प्र० बरसात के मौसम में जब हवा न चल रही हो हम गर्मी और चिपचिपाहट महसूस करते हैं।

चिप्पी – स्त्री० कपड़ा, लकड़ी, धातु आदि का छोटा चिपटा टुकड़ा जिसे छेद आदि पर लगाते हैं।

चिमटा – पु० जलता कोयला, गर्म रोटी आदि पकड़ने का धातु से बना दो पत्तियों का एक उपकरण।

चिमटी – स्त्री० बहुत छोटा चिमटा।

चिमनी – स्त्री० 1. एक चौड़ी खड़ी नली जिससे मकान या कल-कारख़ाने आदि का धुआँ निकलता
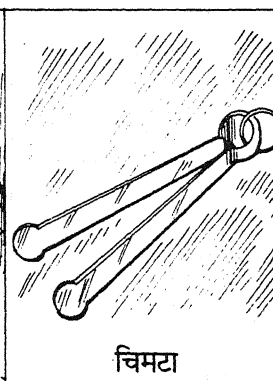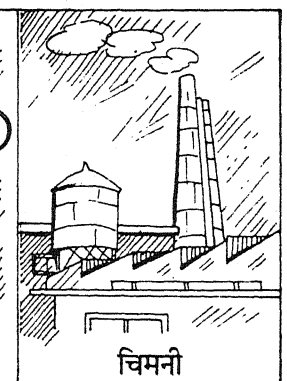
चिनाई चिनार चिमटा चिमनी
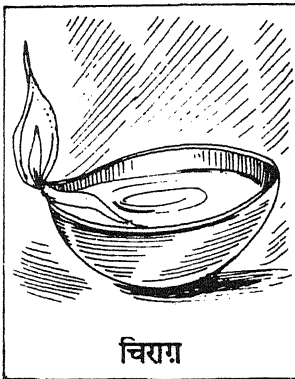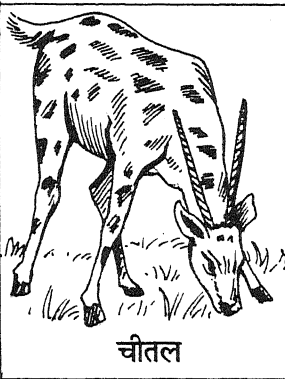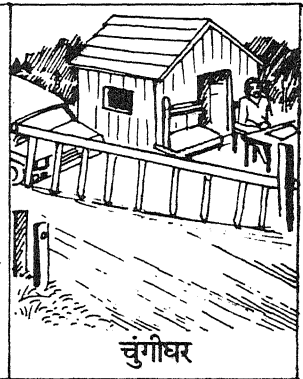
चिराग़ चीड़ चीतल चुंगीघर

है। 2. लालटेन या लैंप का शीशा।

चिरंजीव – 1. *वि॰* लंबी आयु के लिए दिया गया आशीर्वाद, जिसकी लंबी आयु की कामना की जाए। *प्र॰* मोहन के जन्मदिन पर उसकी दादी ने आशीर्वाद दिया कि तुम चिरंजीव हो। 2. *पु॰* बेटा, पुत्र। *पु॰* आजकल आपके चिरंजीव क्या कर रहे हैं?

चिराग़ – *पु॰* दीपक, दीया।

चिवड़ा – दे॰ चिउड़ा।

चिह्न – *पु॰* चिह्न, निशान।

चिह्नित – *वि॰* जिस पर चिह्न लगा हो, निशान लगा हुआ। *प्र॰* इस सूची में चिह्नित चीज़ें लेते आना।

चीं-चपड़ – *स्त्री॰* किसी कार्य या बात के विरोध में कुछ बोलना। *प्र॰* तुम्हारी हर बात में चीं-चपड़ करने की आदत है, यह ठीक नहीं है।

चीं-चीं – *स्त्री॰* चिड़ियों के बच्चों की चीं-चीं की आवाज़।

चीकट – *पु॰* तेल लगा और गंदा, बहुत गंदा जिस पर तेल जम गया हो।

चीख़ – *स्त्री॰* तेज़ दर्द या डर से निकल पड़नेवाली तीखी आवाज़।

चीड़ – *पु॰* एक बहुत लंबा पहाड़ी पेड़।

चीतल – *पु॰* एक हिरन जिसके सींग होते हैं तथा जो चित्तीदार होता है।

चीत्कार – *पु॰* बहुत तेज़ चीख़। *प्र॰* बुढ़िया की चीत्कार सुनकर बहुत सारे लोग इकट्ठे हो गए।

चीनी मिट्टी – *स्त्री॰* एक प्रकार की चिकनी सफ़ेद मिट्टी जिससे बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीर – *पु॰* कपड़ा, वस्त्र। *प्र॰* दुश्शासन ने द्रौपदी के चीर-हरण की कोशिश की थी लेकिन श्रीकृष्ण ने चीर बढ़ाकर उसकी लाज बचाई थी।

चीर-फाड़ – *स्त्री॰* चीरना-फाड़ना, जर्राही, ऑपरेशन, शल्य-क्रिया। *प्र॰* बिना चीर-फाड़ के यह फोड़ा ठीक नहीं होने का।

चीला – *पु॰* एक प्रकार की बहुत पतली, मीठी, घी लगाकर तवे पर सिंकी रोटी, चिल्ला, मीठा पपरा।

चुंगी – *स्त्री॰* माल पर लगाया जानेवाला वह कर जो किसी नगर या प्रदेश की सीमा में प्रवेश के समय वसूल किया जाता है, महसूल।

चुंगीघर – *पु॰* वह कार्यालय जहाँ चुंगी वसूल की जाती है।

चुंबक – *पु॰* ऐसी धातु या पत्थर जो लोहे को अपनी ओर खींच लेता है।

चुकंदर – *पु॰* गाजर या शलजम की शक्ल का एक गहरे लाल रंग का कंद जो सब्ज़ी के रूप में खाया जाता है और जिसके रस से चीनी बनती है।

चुकाना – *क्रि॰* अदा करना, चुकता करना, निबटाना, लौटाना। *प्र॰* सुरेश ने अब सारा क़र्ज़ चुका दिया है।

चुग़लखोर – *पु॰* जो चुग़ली करता हो, चुग़ली करनेवाला, पीठ-पीछे बुराई करनेवाला।

चुग़ली – *स्त्री॰* किसी की अनुपस्थिति में उसकी शिकायत, पीठ-पीछे शिकायत।

चुटकी – *स्त्री॰* उँगली और अँगूठे को बजाने से निकलनेवाली आवाज़। *मु॰ चुटकी बजाते ही* – तुरंत, झट से, एक क्षण में। *प्र॰* इस काम में देर क्यों? मैं चुटकी बजाते ही यह कर डालूँगा। *चुटकी-भर – थोड़ा,* बहुत थोड़ा। *प्र॰* भिखारी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा – बाबा, चुटकी-भर आटा दे दो।

चुटकुला – *पु॰* हँसी की कोई छोटी-सी कहानी, छोटी-सी मज़ेदार बात, लतीफ़ा। *प्र॰* मोहन चुटकुले सुनाकर लोगों को हँसाता रहा।

चुटीली – *वि॰* चुभती, चुभनेवाली। *प्र॰* उन्होंने ऐसी चुटीली बात कह दी कि मैं सह न सका।

चुनरी – *स्त्री॰* 1. बहुत हल्का बुँदकीदार कपड़ा या साड़ी। 2. चुन्नी, दुपट्टा।

चुनाव – *पु॰* 1. कई में से किसी एक को चुनने का काम; जैसे – पुस्तक का चुनाव, जगह का चुनाव, दूल्हा का चुनाव। 2. मतदान द्वारा किसी पद के लिए किसी व्यक्ति को चुनना। *प्र॰* राष्ट्रपति के चुनाव के लिए कई उम्मीदवार हैं।

चुनौती – *स्त्री॰* कुश्ती या मुक़ाबले आदि के लिए ललकार, आह्वान। *प्र॰* उस पहलवान की चुनौती कोई भी नहीं स्वीकार कर सका, सभी भाग खड़े हुए।

चुपके – *अ॰* चुपचाप, चुपके से, धीरे से, छिपकर। *प्र॰* चोर चुपके से आया और सब कुछ लेकर चलता बना।

चुप्पा – *वि॰* चुप रहनेवाला, जो बहुत कम बोलता हो, घुन्ना।

चुप्पी – *स्त्री॰* चुप रहना, मौन, ख़ामोशी। *मु॰ चुप्पी साधना* – मौन हो जाना, चुप लगा लेना। *प्र॰* जब भी उससे कुछ पूछता हूँ, वह चुप्पी साध लेता है।

चुंबक चुनरी चुनाव

चुमकारना | चूज़ा | चूड़ीदार | चेक
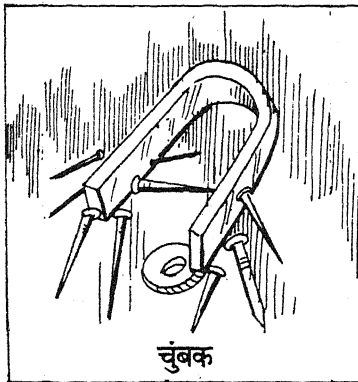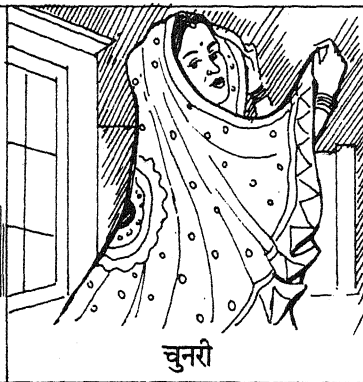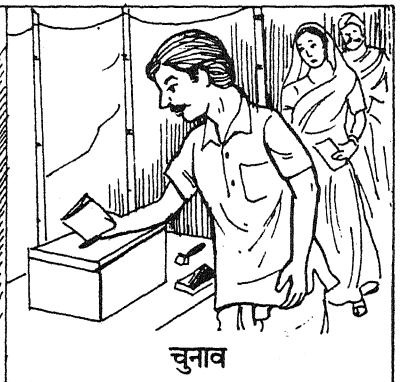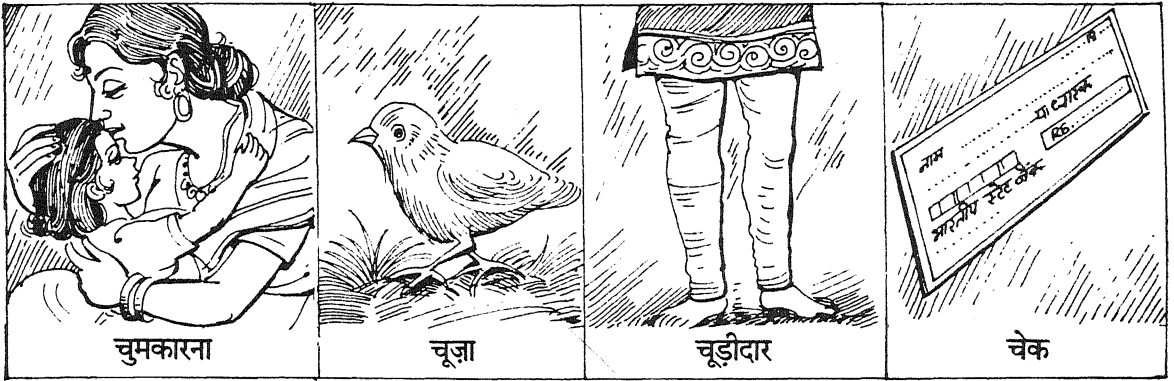
चुभन – *स्त्री०* चुभना, चुभने का दर्द। *प्र०* यदि मेढक के पैर में सूई चुभाएँ तो चुभन के कारण वह अपना पैर खींच लेगा।

चुभना – *क्रि०* 1. किसी नुकीली चीज़ का घुसना या गड़ना। *प्र०* मेरे पैर में काँटा चुभ गया है। 2. बुरा लगना, खलना, खटकना। *प्र०* उनकी कड़वी बात मेरे हृदय में चुभ गई।

चुमकारना – *क्रि०* बच्चों को प्यार करने या पशुओं को बुलाने के लिए मुँह से चूमने जैसी आवाज़ करना, पुचकारना; जैसे – कुत्ते को चुमकारना, बच्चे को चुमकारना।

चुरमुरा – *वि०* कुरमुरा, कुरकुरा, ख़स्ता; जैसे – चुरमुरे पापड़।

चुलबुला – *वि०* जो एक जगह स्थिर न रहे, चपल, चंचल, नटखट। *प्र०* बच्चे चुलबुले होते हैं।

चुल्लू – *पु०* उँगलियों को सटाकर और मोड़कर उनकी सहायता से हथेली द्वारा बनाया जानेवाला गड्ढा जिसमें पानी आदि ले सकते हैं, ओक। *प्र०* गिलास नहीं है तो चुल्लू से पानी पी लो।

चुसकी – *स्त्री०* ओठ से किसी वस्तु को थोड़ा-थोड़ा करके या सुड़क-सुड़ककर पीना। *प्र०* चाय की एक-दो चुसकी लेते जाओ।

चुस्त – *वि०* 1. तेज़, फुर्तीला। (*विलोम* – सुस्त)। *प्र०* वह पहलवान बहुत चुस्त है। 2. कसा हुआ, तंग। (*विलोम* – ढीला)। *प्र०* गर्मी में चुस्त कपड़े मत पहनो।

चुस्ती – *स्त्री०* तेज़ी, फुर्ती। *प्र०* अपना काम चुस्ती से करो। (*विलोम* – सुस्ती)।

चूज़ा – *पु०* मुर्ग़ी का बच्चा।

चूड़ीदार – *वि०* जिसमें चूड़ी अथवा छल्ले के आकार के घेरे हों; जैसे – चूड़ीदार पाजामा।

चूना – 1. *पु०* विशेष तरह के खनिज पत्थर आदि को जलाकर बनाई गई चीज़ जो खाने तथा सफ़ेदी करने के काम आती है। 2. *क्रि०* बूँद-बूँद गिरना, रिसना, टपकना। *प्र०* उसकी झोंपड़ी चू रही है।

चूमना – *क्रि०* प्यार से ओठों और गाल आदि का चुंबन लेना। *प्र०* बिल्ली अपने बच्चे को चूमती-चाटती है।

चेंपा – *पु०* उड़नेवाले छोटे-छोटे काले कीड़े जो नेलहन तथा बंदगोभी आदि को नुकसान पहुँचाते हैं, लाही।

चेक – *पु०* बैंक के नाम लिखित आदेश-पत्र जिससे वह रुपए का भुगतान कर दे।

चेचक – *स्त्री०* छूत का एक रोग जिसमें ज्वर के साथ सारे शरीर पर पानीदार दाने निकल आते हैं, शीतला।

चेतावनी – *स्त्री०* सावधान करने या किसी हानिकर कार्य को न करने के लिए दी जानेवाली सूचना। *प्र०* बाढ़ नियंत्रण कार्यालय बाढ़ आने से पहले चेतावनी देता है।

चेन – *स्त्री०* ज़ंजीर; जैसे – साइकल की चेन, सोने की चेन।

चेरी – *स्त्री०* 1. सेविका, दासी। 2. एक छोटा, गोल मीठा फल।

चेला – *पु०* शिष्य, छात्र, विद्यार्थी।

चेष्टा – *स्त्री०* प्रयत्न, कोशिश, यत्न। *प्र०* बिना चेष्टा किए बैठे रहने से कुछ भी नहीं हो सकता।

चेहरा – *पु०* शक्ल, मुँह, मुखमंडल, मुखाकृति, सूरत। *मु० चेहरा खिल उठना* – खुश हो उठना, प्रसन्न हो जाना। *प्र०* तीन दिन बेहोश रहने के बाद बच्चे के होश में आने पर घर-भर का चेहरा खिल उठा।

चैत – *पु०* भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष का पहला महीना, फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना, चैत्र।

चोंगा – *पु०* 1. टेलिफ़ोन का वह भाग जिससे आवाज़ सुनी जाती है। 2. कागज़, बाँस आदि की बनी नली जिसका एक सिरा सँकरा या बंद होता है तथा दूसरा खुला होता है। 3. मूर्ख, बेवकूफ़, जड़।

चोटग्रस्त – *वि०* चोट खाया हुआ, चोटिल। *प्र०* यदि चोट से हड्डी टूट गई हो तो चोटग्रस्त अंग को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

चोट-चपेट – *स्त्री०* घाव, ज़ख़्म। *प्र०* सावधानी से पेड़ काटो, कहीं चोट-चपेट लग जाएगी तो बेकार में परेशान होगे।

चोरीछिपे – *अ०* दूसरों से छिपकर, आँख बचाकर, लुके-छिपे। *प्र०* चोरीछिपे वह आता है और चुपचाप कुछ न कुछ उठा ले जाता है।

चोला – *पु०* 1. साधुओं, फकीरों आदि के पहनने का ढीला-ढाला कुर्ता, चोंगा। 2. शरीर, बदन। *मु० चोला छोड़ना* – मरना, मर जाना।

चोली – *स्त्री०* वह वस्त्र जिससे स्त्रियाँ अपने स्तनों को ढकती हैं, छोटा ब्लाउज़, अँगिया, बाडिस, ब्रा।

चौंकना – *क्रि०* 1. डर या आश्चर्य आदि से अचानक काँप उठना। 2. भौचक्का होना, चकित होना।

चौंधियाना – *क्रि०* तेज़ रोशनी के कारण आँख का

चेन चेरी चोंगा चोला
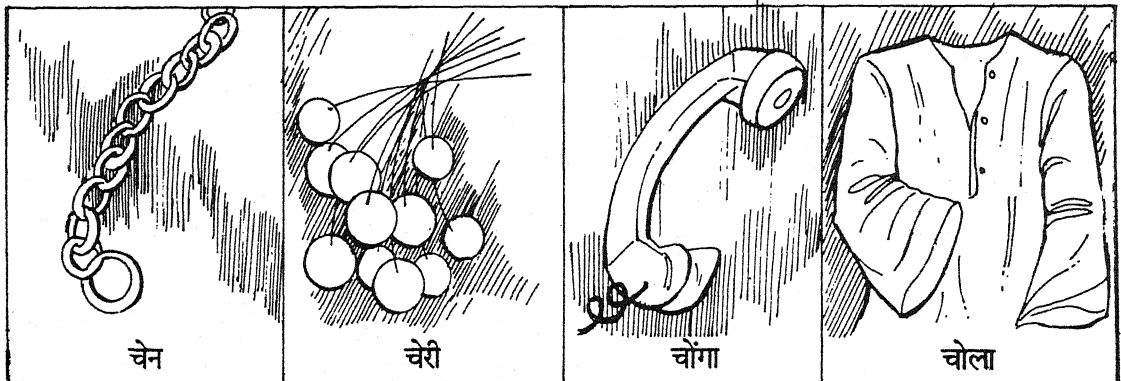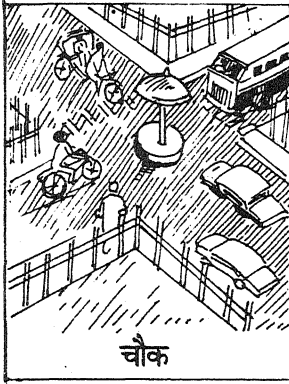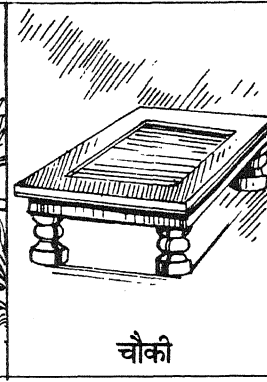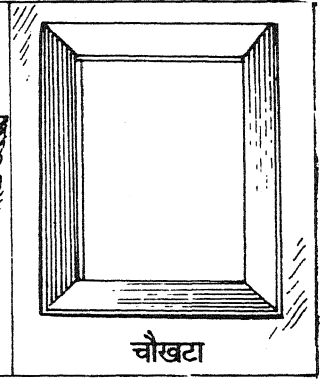
चौक चौकड़ी चौकी चौखटा

पूरा न खुल पाना, चकाचौंध होना, बहुत चमक के कारण नज़र स्थिर न रह पाना और ठीक से दिखाई न पड़ना। *प्र॰* सूर्य की ओर देखने से आँखें चौंधिया गईं।

चौक – *पु॰* 1. घर के बीच में या आगे चौकोर खुला स्थान, आँगन। 2. शहर में सड़क का वह स्थान जहाँ से चारों ओर को सड़कें जाती हैं, चौराहा, गोल चक्कर।

चौकड़ी – *स्त्री॰* 1. हिरन या घोड़े की चारों पैरों की छलाँग। *मु॰ चौकड़ी भरना* – छलाँग मारते हुए दौड़ना। *प्र॰* शेर को देखकर हिरनों का झुंड चौकड़ी भरते हुए भाग निकला। 2. चार व्यक्तियों की मंडली या गुट्ट।

चौकन्ना (चार + कान + आ) – *वि॰* चारों ओर कान अर्थात् ध्यान रखनेवाला, सतर्क, सावधान, होशियार, सजग। *प्र॰* सड़क पार करते समय चौकन्ना रहना चाहिए।

चौकसी – *स्त्री॰* देख-भाल, पहरेदारी, रखवाली।

चौका – *पु॰* 1. एक साथ चार, इकट्ठे चार (क्रिकेट या ताश में); जैसे – ईंट का चौका, चिड़ी का चौका। *मु॰ चौका मारना*– क्रिकेट में गेंद को इतना तेज़ मारना कि गेंद बाउंड्री को छू ले। *प्र॰* गावस्कर ने पहली मारी में बीस चौके लगाए। 2. रसोई, भोजन बनाने की जगह। *प्र॰* चौके में सब सामान रख दो, आज मैं खाना बनाऊँगा। 3. काठ या पत्थर या सीमेंट का रोटी बेलने का पाटा, चौकी।

चौका-बरतन– *पु॰* रसोई और उसके बरतनों की सफ़ाई का काम। *मु॰ चौका-बरतन करना*-रसोई के बरतनों को माँजना-धोना तथा चौका लीपना-पोतना या पक्का हो तो उसकी सफ़ाई करना।

चौकी – *स्त्री॰* 1. लकड़ी या पत्थर का चार पायोंवाला चौकोर आसन, छोटा तख़्ता। 2. बड़ा तख़्ता जिस पर सोया भी जा सकता है। 3. वह स्थान जहाँ पुलिस या सेना के कुछ सिपाही निगरानी और रक्षा आदि के लिए रखे जाएँ; जैसे–पुलिस चौकी, सेना की चौकी। 4. रोटी बेलने का चकला।

चौके – *वि॰* चौगुना। *प्र॰* चार चौके सोलह।

चौखटा – *पु॰* लकड़ी का चौकोर ढाँचा जिसमें तस्वीर या आईना जड़ा जाए।

चौथाई – *स्त्री॰* चौथा भाग, चौथा हिस्सा, 1/4। *प्र॰* खेत में जो उपज हुई है उसका चौथाई तुम ले लो।

चौधरी –*पु॰* 1. किसी गाँव, संस्था या समाज का मुखिया, प्रधान, चौधुरी। 2. जाटों, कायस्थों, अहीरों

तथा भूमिहारों आदि के नामों के साथ लगनेवाला शब्द; जैसे– अजित कुमार चौधरी।

चौपट –*वि०* बिगड़ा हुआ, ख़राब, नष्ट। *प्र०* 1. मैं दो ही दिन के लिए बाहर गया और तुमने सारा काम चौपट कर दिया। 2. बुरी संगति में वह लड़का चौपट हो गया।

चौपड़ –*स्त्री०* गोटियों और कौड़ियों से कपड़े या टाट के चारख़ानेवाली चार पट्टियों पर खेला जानेवाला खेल।

चौपाई –*स्त्री०* सोलह मात्राओं का एक प्रसिद्ध छंद जिसका प्रयोग तुलसी ने रामचरितमानस में किया है।

चौपाया (चार + पाया) –*पु०* वे जानवर जिनके चार पैर होते हैं, चार पैरोंवाले पशु; जैसे – बैल, गाय, भैंस आदि।

चौपाल –*पु०* खुला या छायादार चबूतरा या लंबा-चौड़ा दालान जहाँ गाँव के लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते-हैं।

चौमंज़िला–*वि०* चार मंज़िलों या खंडोंवाला; जैसे – चौमंज़िला मकान।

चौमासा (चौ + मास + आ) –*पु०* वर्षा के चार महीने (असाढ़, सावन, भादों, क्वार)।

चौलाई –*स्त्री०* पत्तोंवाला एक साग जो गर्मियों में होता है, चौराई।

चौहद्दी (चार + हद + ई) –*स्त्री०* चारों ओर की हद या घेरा या सीमा; जैसे – गाँव की चौहद्दी, खेत की चौहद्दी।

चौहरा –*वि०* जिसमें चार तहें हो, चार परतवाला; जैसे –चौहरा कपड़ा।

★

छ

–देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन।

छँटना –*क्रि०* 1. किसी समूह में से कुछ का अलग हो जाना या किया जाना। *प्र०* जो विद्यार्थी लिए जाने थे ले लिए गए हैं, बाकी छँट गए हैं। 2. साफ़ होना। *प्र०* बादल छँट गए हैं।

छँटनी –*स्त्री०* छँटने या छाँटने का काम, हटाने का काम; जैसे – दफ़्तर के कर्मचारियों की छँटनी, किताबों की छँटनी।

छँटाई –*स्त्री०* 1. छाँटने का काम। *प्र०* मज़दूरों की छँटाई हो रही है। 2. काटने-छाँटने का काम। *प्र०* बाड़ की छँटाई करानी है। 3. छाँटने की मज़दूरी।
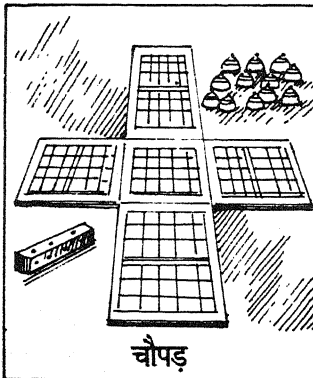
चौपड़ | चौपाया | चौपाल
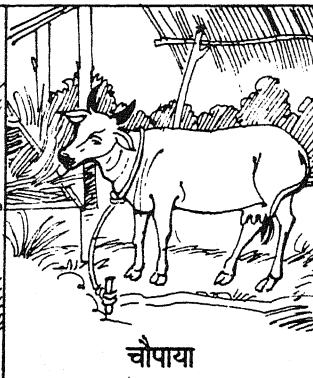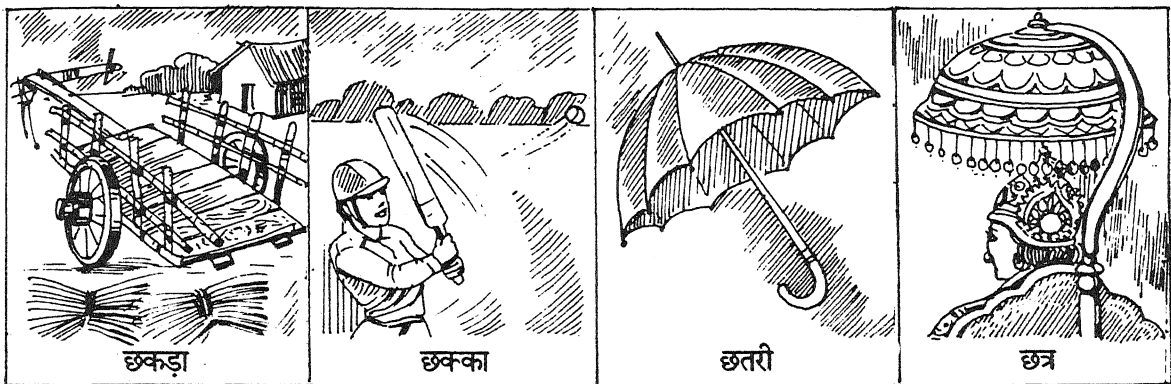
छंद – *पु॰* वर्ण या मात्रा की गिनती के हिसाब से लिखी गई कविता की पंक्ति या पंक्तियाँ; जैसे – दोहा छंद में प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं, जिसमें 13 मात्राओं के बाद विराम होता है।

छकड़ा – 1. *पु॰* बोझ लादने या माल ढोने की गाड़ी, सग्गड़, बैलगाड़ी, लढ़िया। 2. *वि॰* ढीला-ढाला। *प्र॰* यह तुम्हारी कार अब छकड़ा हो गई है।

छकना – *क्रि॰* इतना खाना कि मन भर जाए, पेट पूरी तरह भरना, अघाना, तृप्त होना; जैसे – आज तो तुमने छककर मिठाई खाई होगी।

छकाना – *क्रि॰* 1. खिला-पिलाकर पूरी तरह तृप्त कर देना। *प्र॰* पंडितजी, आपने अब तक छककर खीर नहीं खाई होगी, आज मैंने ढेर सारी खीर बनवाई है, आपको छकाकर ही घर जाने दूँगा। 2. परेशान या तंग करना। *प्र॰* उन बेचारे को क्यों छका रहे हो, उनकी चीज़ें दे दो।

छक्का – *पु॰* 1. क्रिकेट के खेल में गेंद का बाउंड्री लाइन के पार गिरने पर माना जानेवाला छह रनों का समूह, छह रनों का शॉट। 2. छह का समूह; जैसे – ताश का छक्का। *मु॰ छक्का-पंजा* – चालबाज़ी। *छक्के छुड़ाना* – कड़े संघर्ष से बुरी तरह हरा देना। *प्र॰* आज हमारी टीम ने विरोधी टीम के छक्के छुड़ा दिए। *छक्के छूटना*– 1. बुद्धि का काम न करना, होश-हवाश जाता रहना। *प्र॰* इस संघर्ष में तो मेरे छक्के छूट गए। 2. हिम्मत हारना, साहस छूटना। *प्र॰* पुलिस बल के सामने दंगाइयों के छक्के छूट गए।

छटनी – *स्त्री॰* दे॰ छँटनी।

छटा – *स्त्री॰* ख़ूबसूरती, शोभा, सौंदर्य। *प्र॰* नदी के लहराते हुए जल और उसमें पेड़ों की हिलती-काँपती परछाईं की छटा देखते ही बनती है।

छटाई – *स्त्री॰* दे॰ छँटाई।

छठी – *स्त्री॰* बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाली पूजा, संस्कार तथा उत्सव।

छड़ा – *वि॰* अविवाहित, ग़ैरशादीशुदा, जिसका विवाह न हुआ हो, अकेला।

छतरी – *स्त्री॰* 1. लोहे की तीलियों पर कपड़ा चढ़ाकर बनाई हुई ढक्कननुमा चीज़, छोटा छाता। 2. सैनिकों के हवाई जहाज़ से ज़मीन पर उतरने के लिए काम में आनेवाला बहुत बड़ा छाता, पैराशूट। 3. छज्जेदार मंडप।

छत्र – *पु॰* देवमूर्तियों और राजाओं के ऊपर लगाया या ताना जानेवाला छाता।

छन्ना – *पु०* जिससे छाना जाए। *प्र०* शर्बत को छन्ने से छान लो, उसमें एक-दो तिनके हैं।

छन्नी – *स्त्री०* जिससे चीज़ को अनावश्यक चीज़ों को निकालने के लिए छानें, चलनी। *प्र०* छन्नी से आटा छान लो।

छपना – *क्रि०* छापा जाना, छपने का काम होना, मुद्रित होना, प्रिंट होना; जैसे –अख़बार छपना, पत्रिका छपना, इश्तिहार छपना।

छपाई – *स्त्री०* 1. छापने का काम, मुद्रण। *प्र०* इस प्रेस में छपाई अच्छी होती है। 2. छापने की मज़दूरी। *प्र०* इस प्रेस में छपाई ज़्यादा है।

छपाक – *पु०* छप की आवाज़। *प्र०* वह तैराक छपाक से पानी में कूदा और देखते-ही-देखते सबसे आगे हो गया।

छपाना – *क्रि०* छापने का काम करवाना।

छप्पर – *पु०* मकान या झोंपड़ी के ऊपर की घास-फूँस आदि की छाजन, छपरा। *मु०* *छप्पर फाड़कर देना* – एक-ब-एक बहुत अधिक रुपए-पैसे देना। *प्र०* कल्लू साह का दिवाला निकल गया था पर नए रोज़गार में देखते-देखते वह लखपति बन गया है। ठीक ही कहा है – भगवान् देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।

छबीला – *वि०* सजा-सँवरा, बना-ठना, सजीला, सुंदर।

छम– *स्त्री०* घुँघरू बजने की आवाज़।

छम-छम, छमाछम – *स्त्री०* घुँघरू, पायल आदि की बार-बार होनेवाली आवाज़।

छमाही –*वि०* छह महीने के बाद होने या आनेवाला; जैसे– छमाही परीक्षा, छमाही क़िस्त।

छर्रा –*पु०* लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक में बारूद के साथ भरकर चलाए जाते हैं।

छलकना –*क्रि०* ऊपर तक भरे जल या दूसरे तरल पदार्थ का हिलने के कारण बरतन से बाहर निकलना या गिरना; जैसे – पानी छलकना, शर्बत छलकना, घी छलकना।

छलना –1. *क्रि०* छल करना, धोखा देना। 2. *स्त्री०* छल, धोखा, छलावा।

छलनी – *स्त्री०* आटा, बेसन आदि छानने का छेदोंवाला बरतन, चलनी, छन्नी।

छलाँग – *स्त्री०* चौकड़ी, कुदान, फलाँग, एक ही कूद में दूसरी जगह पहुँचना। *मु०* *छलाँग लगाना* – कूदना, चौकड़ी मारना।
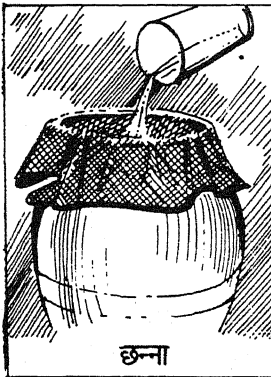
छन्ना | छपाक | छप्पर | छलाँग

छल्ला छाँव छाज छात्रावास
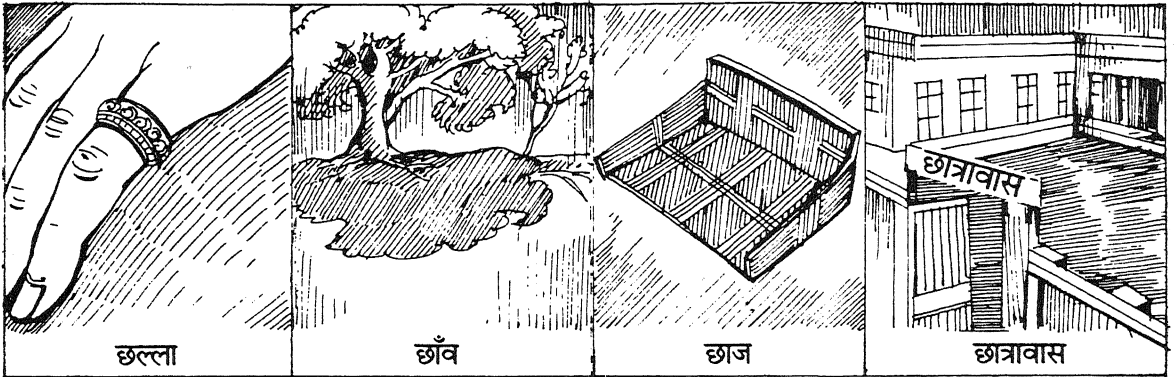
छल्ला –पु० अँगूठी। प्र० हमारी रीढ़ की हड्डी कई छल्ले जैसी हड्डियों के जुड़ने से बनी है।

छवि –स्त्री० छटा, शोभा, सुंदरता। प्र० कल दशहरे में सीता की छवि देखते ही बनती थी।

छाँटना –क्रि० 1. अलग करना, अलगाना। प्र० इनमें से ख़राब आमों को छाँट दो। 2. काटना, काटना-छाँटना। प्र० फ़रवरी का महीना आ गया है। अंगूर की बेल को छाँट दो।

छाँव –स्त्री० वह स्थान जहाँ किसी आड़ या ओट के कारण धूप न पड़े, छाँह, छाया। प्र० पथिक पेड़ की छाँव में बैठकर सुस्ता रहा है।

छाँह –स्त्री० दे० छाँव।

छाछ –स्त्री० मट्ठा, दही को मथकर तैयार किया गया पेय जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

छाज –पु० सींक या बाँस की खपच्चियों की बनी एक चीज़ जिससे अनाज फटकते हैं, फटककर साफ़ करते हैं।

छात्र –पु० विद्यार्थी, शिक्षार्थी।

छात्रवृत्ति –स्त्री० विद्यार्थी को योग्यता के आधार पर दिया जानेवाला धन, वज़ीफ़ा, स्कॉलरशिप।

छात्रालय (छात्र + आलय) –पु० छात्रों के रहने, खाने-पीने का स्थान, होस्टल, छात्रावास।

छात्रावास (छात्र+आवास) –पु० दे० छात्रालय।

छानना –क्रि० आटे आदि का मोटा अंश छलनी से निकालना; दूध, पानी आदि को साफ़ करने के लिए बारीक कपड़े के पार निकालना; जैसे – आटा छानना, बेसन छानना, पानी छानना, दूध छानना। *मु० छान मारना* – बहुत ज़्यादा ढूँढ़ना, खूब खोजना। प्र० मैंने सारे घर को छान मारा पर छाता कहीं नहीं मिला।

छाना –क्रि० 1. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु पर इस प्रकार डालना कि वह पूरी ढक जाए; मकान पर छप्पर या खपरैल डालना; जैसे– घर छाना, झोंपड़ी छाना। 2. घेर लेना, चारों ओर फैल जाना; जैसे– अँधेरा छाना, बादल छाना।

छाप –स्त्री० 1. किसी वस्तु पर बना या लगा चिह्न, मुहर, पहचान के लिए बनाया गया निशान। प्र० उस कपड़े पर बंबई के कपड़ा मिल की छाप है। 2. प्रभाव, असर। प्र० मोहन पर अपने पिता के अच्छे गुणों की छाप पड़ी है।

छापना –क्रि० 1. छपाई करना, मुद्रण करना; जैसे– पुस्तक छापना। 2. ठप्पे आदि लगाकर तरह-तरह

के डिज़ाइन बनाना; जैसे– कपड़ा छापना।

छापा –*पु॰* 1. धावा। *प्र॰* सिपाहियों द्वारा आज चोरों के अड्डे पर छापे में बहुत-सी चोरी की चीज़ें मिली हैं। *मु॰ छापा मारना* –हमला करना, धावा बोलना। *प्र॰* सेना ने दुश्मनों पर अचानक छापा मारा। 2. ठप्पा। 3. ठप्पे की छाप।

छापाख़ाना –*पु॰* वह स्थान जहाँ पत्र-पत्रिकाएँ, इश्तिहार या पुस्तकें आदि छापी जाती हैं, मुद्रणालय, प्रेस।

छाया –*स्त्री॰* छाँह, परछाईं, छाँव।

छायाचित्र –*पु॰* फोटो।

छायादार –*वि॰* छायावाला; जैसे– छायादार पेड़, छायादार कुंज।

छाला –*पु॰* 1. किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से पानी भर ज़ाने के कारण चमड़े का उभर जाना, फफोला। *प्र॰* चक्की चलाते-चलाते क़ैदियों के हाथों में छाले पड़ जाते हैं। 2. चमड़ा, चर्म; जैसे– मृगछाला।

छिः –*अ॰* घृणा प्रकट करनेवाली ध्वनि या शब्द। *प्र॰* छिः, यह कुकर्म करते तुम्हें शर्म नहीं आती।

छिटकना –*क्रि॰* किसी चीज़ का इधर-उधर फैलना, छितराना, बिखरना। *प्र॰* 1. कार-दुर्घटना में शीशे के टुकड़े चारों ओर छिटककर गिरे हुए हैं। 2. छिटकी हुई चाँदनी कितनी भली लग रही है!

छिड़कना –*क्रि॰* जल या दूसरे तरल पदार्थ के महीन छींटे फेंकना, पाउडर इधर-उधर बिखेरना; जैसे– पानी छिड़कना, इत्र छिड़कना, गुलाबजल छिड़कना, खेत में दवा छिड़कना, डी॰डी॰टी॰ छिड़कना।

छिड़काव –*पु॰* पानी जैसे तरल पदार्थ या पाउडर आदि को छिड़कने का काम। *प्र॰* 1. पौधों पर कीड़े लग रहे हैं, राख का छिड़काव कर दो। 2. एक भाग दवा और पाँच भाग पानी मिलाकर गुलाबों पर छिड़काव कर दो।

छिड़ना –*क्रि॰* आरंभ होना, चल पड़ना, शुरू होना; जैसे– राम और श्याम के बीच बहस छिड़ गई।

छिद्र –*पु॰* छेद, सूराख़।

छिद्रमय –*वि॰* छेदवाला, सूराख़वाला।

छिद्रयुक्त –*वि॰* जिसमें छेद हों, छेदवाला।

छिद्रहीन –*वि॰* जिसमें छेद न हो, बिना छेद का।

छिद्रिल –*वि॰* जिसमें छेद हों, सूराख़दार। *प्र॰* नाइलोन, डैक्रन तथा टेरिलीन के कपड़े छिद्रिल नहीं होते, इसीलिए इन्हें गर्मी में नहीं पहनना चाहिए।

छापाख़ाना | छाला | छिड़काव | छिद्रयुक्त
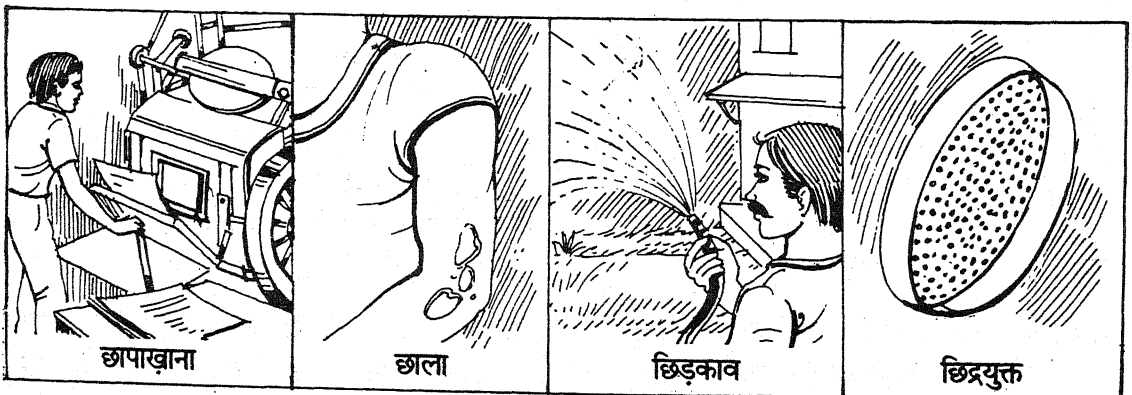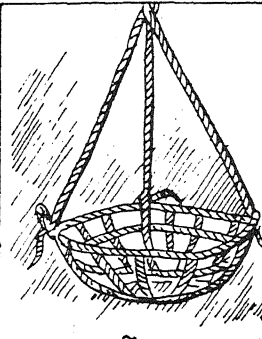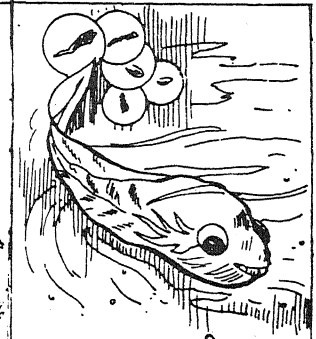
छिपकली – *स्त्री॰* रेंगनेवाला एक जंतु जो अकसर घर की दीवारों और छतों पर दिखाई देता है और कीड़े-मकोड़े खाता है, बिस्तुइया।

छिपना –*क्रि॰* ओट में हो जाना, आड़ में होना, ऐसी जगह होना जहाँ से दिखाई न पड़ सके। *प्र॰* सिपाही को आते देख चोर छिप गया।

छिपाना –*क्रि॰* 1. आड़ में करना या रखना, ऐसी जगह रख देना जहाँ कोई न देख सके। *प्र॰* सच बताओ तुमने माल कहाँ छिपा रखा है ? 2. प्रकट न करना, लोगों के सामने न आने देना। *प्र॰* अपने अपराध को छिपाना, अपराध करने से कम बुरा नहीं है।

छिलका –*पु॰* फल, सब्ज़ी और अनाज आदि के ऊपर की परत। *प्र॰* हवलदार साहब केले के छिलके पर फिसलकर गिर पड़े।

छिलना –*क्रि॰* 1. फल या सब्ज़ी आदि के छिलके का अलग होना या उतरना। *प्र॰* लौकी और तोरी छिल गई हैं। 2. ऊपरी चमड़े का कुछ भाग रगड़ या खरोंच से अलग हो जाना। *प्र॰* दुर्घटना में मेरे हाथ-पैर कई जगह छिल गए हैं।

छींका –*पु॰* तार या रस्सी का छत से लटका झोलीनुमा जाल जिस पर बिल्ली आदि से बचाने के लिए खाने-पीने की चीज़ें रख दी जाती हैं, सिकहर।

छींटा –*पु॰* 1. पानी या तरल पदार्थ की छोटी-छोटी बिखरी हुई बूँदें। *प्र॰* दूध उफन रहा है, पानी के छींटे मार दो। 2. पड़ी हुई बूँदों का चिह्न। *प्र॰* इस कपड़े पर किसी ने स्याही के छींटे डाल दिए हैं। 3. ताना, व्यंग्य। *मु॰ छींटे कसना* – व्यंग्य करना।

छीना-झपटी –*स्त्री॰* किसी चीज़ को एक-दूसरे से छीन लेने की कोशिश। *प्र॰* तुम लोगों की छीना-झपटी में कहीं यह शीशा गिरकर टूट न जाए।

छुईमुई –*स्त्री॰* एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ या मुरझा जाती हैं, लाजवंती।

छुछमछली –*स्त्री॰* मेढक के अंडे के बाद का वह रूप जो बढ़कर मेढक हो जाता है।

छुटकारा –*पु॰* बंधन से छूटना, रिहाई, आज़ादी, मुक्ति। *प्र॰* 1. किसी तरह ब्रिटिश शासन से भारत को छुटकारा मिला। 2. अगर इन बीमारियों से छुटकारा चाहते हो तो रोज़ टहला करो।

छुटपन (छोटा + पन) –*पु॰* लड़कपन, बाल्यकाल, बाल्यावस्था।

छुटाई –*स्त्री॰* छोटापन, छुटपन, छोटा होने का भाव।

छुट्टी –*स्त्री॰* 1. अवकाश। *प्र॰* आज रविवार की छुट्टी है। 2. फ़ुरसत। *प्र॰* आज तो छुट्टी नहीं है कल आ जाऊँगा। 3. काम बंद रहने का दिन। *प्र॰* मिल चार दिन बंद रहेगी, इसलिए छुट्टी है। 4. मुक्ति, छुटकारा, रिहाई। *प्र॰* उसे दो साल बाद जेल से छुट्टी मिली है।

छुड़ाना –*क्रि॰* 1. किसी चीज़ को अलग करना; जैसे – मैल छुड़ाना, रंग छुड़ाना। 2. छुटकारा दिलाना। *प्र॰* डाकू हमला करके अपने साथी को थाने से छुड़ा लाए। 3. पैसे देकर लेना। *प्र॰* रेल-गाड़ी से सामान आया है, पैसे देकर छुड़ा लाओ। 4. बर्ख़ास्त करना। *प्र॰* उस बेचारे की नौकरी मत छुड़ाओ। 5. आदत ख़त्म करना। *प्र॰* उसकी सिगरेट छुड़ा दो, खाँसी अपने आप ठीक हो जाएगी।

छुतहा –*वि॰* जो छूने से हो जाए या लग जाए, छूतवाला; जैसे – छुतहा रोग, छुतहे रोगों का अस्पताल।

छुपम-छुपाई, छुपा-छुपाई –*स्त्री॰* बच्चों का छिपने और खोजने का एक खेल।

छुरेबाज़ी –*स्त्री॰* एक-दूसरे पर छुरे से वार करना। *प्र॰* कल दोनों गुटों में जमकर छुरेबाज़ी हुई।

छू –*स्त्री॰* झाड़ने-फूँकने या भूत उतारने आदि में मुँह से निकला हुआ हवा का झोंका जिसमें 'छू' की आवाज़ होती है। *मु॰ छूमंतर होना* – ग़ायब हो जाना। *प्र॰* पाकिटमार देखते-देखते ही भीड़ में छूमंतर हो गया।

छूट –*स्त्री॰* 1. कोई बंधन न होना, स्वतंत्रता, आज़ादी। *प्र॰* अब उन्हें कहीं भी आने-जाने की पूरी छूट है। 2. मूल्य में की जानेवाली कटौती या कमी, रियायत। *प्र॰* गांधी जयंती के अवसर पर सूती खद्दर पर पैंतीस प्रतिशत की छूट है।

छूटना –*क्रि॰* 1. छुटकारा होना, मुक्त होना, रिहा होना। *प्र॰* कल वह क़ैद से छूट जाएगा। 2. पकड़ में न रहना, पकड़ से अलग होना। *प्र॰* इस गुब्बारे में सामान्य हवा नहीं है। यदि हाथ से छूट गया तो फिर हाथ नहीं आएगा। 3. आदत न रहना। *प्र॰* बड़ी मुश्किल से मेरी सिगरेट पीने की आदत छूटी है।

छूत –*स्त्री॰* स्पर्श। **छूत का रोग, छूत की बीमारी** – छूने से हो जानेवाली बीमारी। *प्र॰* कुछ बीमारियाँ छूत से फैलती हैं जिन्हें छूत का रोग कहते हैं।

छूमंतर –*पु॰* 'छू' 'छू' करते हुए पढ़ा गया मंत्र। **छूमंतर होना** –दे॰ छू।

छुपम-छुपाई | छुरेबाज़ी | छूटना
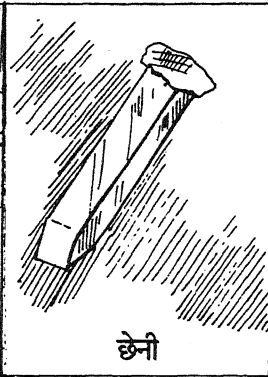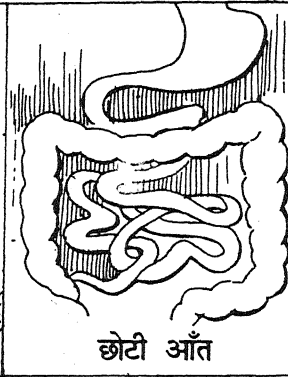
छेड़खानी | छेनी | छोटी आँत | छोड़ना

छेड़खानी –*स्त्री०* किसी को छेड़कर, कोंचकर, शरारत या व्यंग्य करके सताने, परेशान करने या छेड़-छाड़ करने की कोशिश। *प्र०* लड़कियों से छेड़खानी करना अनुचित है।

छेड़-छाड़ –*स्त्री०* दे० छेड़खानी।

छेड़ना –*क्रि०* 1. किसी को उत्तेजित करने के लिए कुछ करना या कहना, छेड़-छाड़ करना, छेड़खानी करना। *प्र०* उसको छेड़ो मत, वह पढ़ रहा है। 2. आरंभ करना, शुरू करना, शुरुआत करना; जैसे– मकान छेड़ना, राग छेड़ना, लड़ाई छेड़ना।

छेदक – *वि०* छेद करनेवाला, जो फल में छेद करके सब्ज़ियों और फलों को नुकसान पहुँचाते हैं; जैसे – फलछेदक कीड़ा, धड़छेदक कीड़ा।

छेना –*पु०* फटे दूध का पानी निचोड़कर बचा रहनेवाला पदार्थ, पनीर।

छेनी –*स्त्री०* लोहे का वह उपकरण जिससे लोहा, पत्थर, लकड़ी आदि काटे जाते हैं।

छोटा –*वि०* 1. जो विस्तार में कम हो; जैसे– छोटा खेत। 2. डीलडौल में कम; जैसे– छोटा घोड़ा। 3. जो अवस्था में कम हो, छोटी उम्र का; जैसे– छोटा बच्चा, छोटी लड़की। 4. जो ऊँचा न हो, कम तनख़्वाह या प्रतिष्ठावाला; जैसे– छोटा पद, छोटी नौकरी।

छोटा-मोटा –*वि०* छोटा-सा, मामूली, साधारण-सा। *प्र०* 1. मैं भी बेकार हूँ, मुझे भी कोई छोटा-मोटा काम दीजिए। 2. छोटी-मोटी नौकरी मैं नहीं करूँगा, उससे तो अपना कोई धंधा अच्छा।

छोटी आँत –*स्त्री०* सँकरी और लंबी नली-जैसा पेट के भीतर का एक अंग जहाँ पाचन-रस भोजन में मिलते हैं तथा भोजन का उपयोगी भाग खून में मिल जाता है। पतली या सँकरी होने के कारण इसे छोटी आँत कहते हैं। भोजन का जो भाग यहाँ पच नहीं पाता, यहाँ से बड़ी आँत में चला जाता है। (तुलना कीजिए बड़ी आँत)।

छोड़ना –*क्रि०* 1. अपनी पकड़ हटा लेना। *प्र०* यह डंडा छोड़ दो। 2. त्याग देना। *प्र०* सब घर-बार छोड़कर अब मैं आश्रम में आ गया हूँ। 3. कम कर देना। *प्र०* कुछ पैसे और छोड़ दो, इतना वह दे नहीं पाएगा। 4. पड़ा रहने देना। *प्र०* इस नौकर को अभी यहीं छोड़ दो, विवाह के बाद मैं भेज दूँगा। 5. रिहा करना, जाने देना, छुटकारा देना। *प्र०* जब तुमने जान लिया कि इसने अपराध नहीं किया है तो इसे छोड़ दो।

छोर –पु० 1. सिरा, किनारा। प्र० लकड़ी को एक छोर पर पकड़े रहो। 2. सीमा। प्र० तुम्हारे ज़िले का दक्षिणी छोर कहाँ तक है?

छौंक –स्त्री० 1. छौंकने की क्रिया, बघार, तड़का। प्र० बिना छौंक के दाल या सब्ज़ी अच्छी नहीं बनतीं। 2. वे चीज़ें जिनसे सब्ज़ी, दाल आदि छौंकें। प्र० काशीफल की सब्ज़ी में मेथी और हींग के छौंक की आवश्यकता पड़ती है तो लौकी में ज़ीरे के छौंक की।

छौंकना –क्रि० बघारना, तड़का देना, छौंक लगाना। प्र० माँ रसोईघर में दाल छौंक रही हैं।

छौना –पु० सूअर, हिरन या खरगोश का छोटा बच्चा, शावक; जैसे– मृगछौना।

ज

–देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का तीसरा व्यंजन।

जंक्शन –पु० वह स्टेशन जहाँ दो या दो से अधिक रेल लाइनें मिलें।

जंग –स्त्री० लड़ाई, युद्ध।

ज़ंग –पु० लोहे का मुर्चा, मोर्चा। प्र० बाहर पड़ी-पड़ी यह मशीन ज़ंग लग जाने से ख़राब हो रही है।

जँगला –पु० 1. खिड़की। 2. छड़ या जाली लगी हुई खिड़की। 3. जँगला लगा कटहरा। प्र० शेर लोहे के जँगले में है।

जंगली –वि० 1. जंगल में मिलने या पैदा होनेवाला, जंगल का; जैसे – जंगली जीव-जंतु, जंगली जड़ी-बूटियाँ, जंगली पेड़-पौधे। 2. असभ्य, उजड्ड। प्र० वह तुम्हारा दोस्त जंगली है, उसे बातचीत करने की भी तमीज़ नहीं है।

जँचना –क्रि० 1. अच्छा लगना, फबना, भाना। प्र० यह सूट तुम्हें जँच रहा है। 2. परीक्षक द्वारा देखा जाना, जाँचा जाना। प्र० आजकल कापियाँ जँच रही हैं, देखें कैसे नंबर आते हैं। 3. वाजिब लगना, ठीक लगना। प्र० तुम्हारी बात मुझे जँचती नहीं।

ज़ंजीर –स्त्री० 1. सिक्कड़। प्र० हाथी ज़ंजीर में बँधा है। 2. बेड़ी। प्र० क़ैदी ज़ंजीर में बँधा है। 3. सिकड़ी, चेन। प्र० उसके गले में सोने की ज़ंजीर है।

जंतर-मंतर – पु० 1. जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका। 2. वह स्थान जहाँ से ग्रहों-नक्षत्रों आदि की गति देखी जाती है, वेधशाला।

जंतु – पु० 1. छोटे आकारवाले जीव; जैसे– तिलचट्टा, छछूँदर, चूहा, मक्खी, साँप। 2. जीव-जंतु, प्राणी। प्र० संसार में अनेक प्रकार के जंतु हैं।
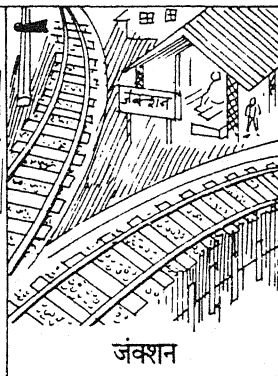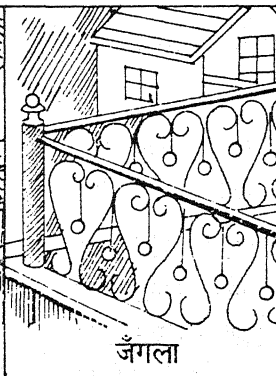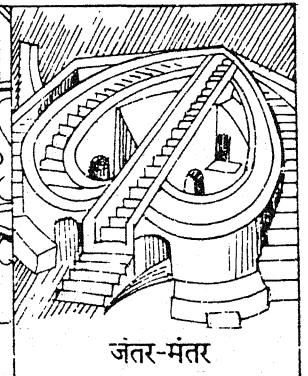
छौना | जंक्शन | जँगला | जंतर-मंतर
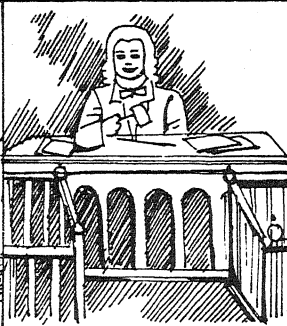
जकड़ना जज जटा जड़

ज –*प्रत्य०* जनमनेवाला; जैसे– जलज (= जल में जनमनेवाला, अर्थात् कमल), पंकज (पंक अर्थात् कीचड़ में जनमनेवाला, अर्थात् कमल)।

जकड़ना –*क्रि०* कसकर पकड़ना, कसकर बाँधना। *प्र०* साँप ने न्यौले को जकड़ रखा है।

ज़ख़्म –*पु०* चोट, घाव। *प्र०* उसके ज़ख़्म पर मक्खियाँ बैठ रही हैं, उसे ढक दो।

ज़ख़्मी –*वि०* जिसे ज़ख़्म हो, घायल, जिसे चोट लगी हो।

जग –*पु०* 1. दुनिया, संसार, विश्व, जगत्। 2. पानी आदि रखने का धातु, शीशे या प्लास्टिक का हत्थेदार बरतन।

जगत –*पु०* 1. दुनिया, संसार, विश्व, जग, जगत्। 2. *स्त्री०* कुएँ का चबूतरा, कुएँ के चारों ओर बना चबूतरा।

जगन्नाथपुरी - *स्त्री०* उड़ीसा में हिंदुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जगन्नाथधाम, पुरी।

जगप्रसिद्ध –*वि०* 1. जो दुनिया में मशहूर हो, जगत्प्रसिद्ध। 2. जो छिपा न हो, सबको ज्ञात, सर्वविदित।

जगाना –*क्रि०* 1. सोते हुए को नींद से उठाना, जागने को प्रेरित करना। *प्र०* मुकेश को स्कूल जाने में देर हो जाएगी, उसे जगा दो। 2. सजग करना, सावधान करना, सचेत करना। *प्र०* भारत ने वेदज्ञान देकर संसार को जगाया।

जज –*पु०* वह अधिकारी, जिसे मुकदमे सुनकर उनका फैसला करने का अधिकार हो, न्यायाधीश।

जटा –*स्त्री०* उलझे और चिपके हुए लंबे बाल, लंबी लट। *प्र०* जो महात्माजी आए हैं, उनकी जटाएँ एड़ियों तक हैं।

जटिल –*वि०* 1. (जटा की तरह) उलझा हुआ। 2. जिसे सुलझाना जटा की तरह कठिन हो, कठिन, मुश्किल। *प्र०* यह सवाल जटिल है, मैं नहीं हल कर सकता।

जड़ –1. *स्त्री०* पेड़-पौधों का वह भाग जो ज़मीन के भीतर रहता है, मूल। 2. *वि०* (क) चेतनारहित, जिसमें चेतना न हो, प्राणशून्य। *प्र०* लोहा, कोयला, पत्थर आदि जड़ पदार्थ हैं। (*विलोम*–चेतन)। (ख) नासमझ, मूर्ख; जैसे– जड़ व्यक्ति, जड़बुद्धि, जड़मति।

जड़ना –*क्रि०* 1. लगाना, मारना; जैसे — तमाचा जड़ना, थप्पड़ जड़ना। 2. ठोंकना; जैसे– घोड़े के पैर में नाल जड़ना, लकड़ी में कील जड़ना।

3. चुग़ली खाना, कान भरना। प्र० तुमने यह बात भी उससे जड़ दी।

जड़मति – पु० नासमझ, मूर्ख, बेवकूफ़।

जड़ाऊ – *वि०* जिस पर नग या रत्न जड़े हों; जैसे– जड़ाऊ गहना, जड़ाऊ अँगूठी, जड़ाऊ हार।

जत्था – पु० गिरोह, समूह। प्र० सिक्खों का एक जत्था पाकिस्तान में ननकाना साहब गया है।

जन – पु० लोग, मनुष्य, व्यक्ति।

जनक – पु० 1. जन्म देनेवाला, पिता। 2. श्रीरामचंद्र की पत्नी सीता के पिता।

जनगणना – स्त्री० किसी देश के भीतर रहनेवाले मनुष्यों की गिनती, जो भारत में प्रत्येक दस साल के बाद होती है। प्र० 1981 की जनगणना में भारत की जनसंख्या 67 करोड़ थी।

जनजाति – स्त्री० आदिवासी, ट्राइब; जैसे – शेड्यूल ट्राइब।

जनजीवन – पु० लोगों या जनता का जीवन, सर्वसाधारण का रहन-सहन।

जनतंत्र – पु० जनता का राज, लोकतंत्र, प्रजातंत्र। प्र० भारत में जनतंत्र है।

जनता – स्त्री० सामान्य लोग, जनसाधारण, सर्व-साधारण, आम लोग।

जनन – पु० जन्म, उत्पत्ति।

जननी – स्त्री० जननेवाली, पैदा करनेवाली, जन्म देनेवाली, वह जो जन्म दे, माँ, माता।

जनपद – पु० 1. जिला, सबडिविजन। 2. बस्ती, गाँव।

जनरल स्टोर – पु० किराने की दूकान, रोज़मर्रा की सामान्य चीज़ों की दूकान।

जनश्रुति – स्त्री० अफ़वाह, वह बात जो लोगों के बीच फैली हो, परंतु वास्तविक या प्रामाणिक न हो।

जनसंख्या – स्त्री० किसी देश या स्थान में रहनेवाले लोगों की संख्या, आबादी। प्र० इस समय भारत की जनसंख्या 80 करोड़ के लगभग है।

जन-साधारण – पु० आम लोग, आम जनता, जनता।

जनाब – 1. पु० बड़ों के लिए आदर का शब्द; हुजूर, महाशय। प्र० जनाब, ज़रा सुनिए। 2. *वि०* श्री, श्रीमान; जैसे – जनाब ज़ाकिर हुसैन साहब, जनाब अबुल कलाम आज़ाद।

जन्मदिन – पु० जन्म का दिन, जन्मतिथि, वर्षगाँठ।

जनजाति | जनरल स्टोर | जन्मदिन

जबड़ा | ज़बान | जमघट | जमादार
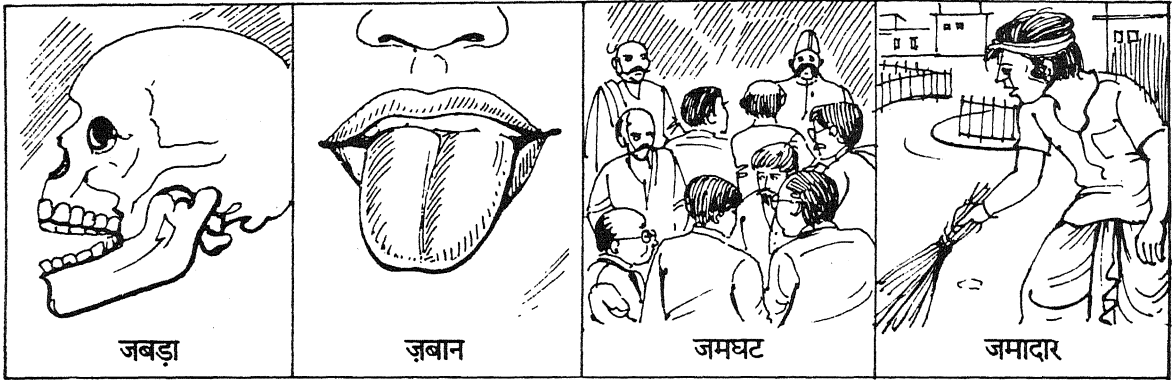
जन्मना – *अ०* जन्म से, पैदाइश के समय से। *प्र०* मेरी पीठ पर लाल धब्बा अब नहीं हुआ है यह जन्मना है।

जन्मभूमि – *स्त्री०* वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो, जन्मस्थान, मातृभूमि।

जन्मसिद्ध – *वि०* जन्म से ही प्राप्त, जिसकी सिद्धि जन्म से ही हुई हो। *प्र०* स्वतंत्रता हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है।

जन्मांध – *वि०* जन्म से अंधा, पैदाइशी अंधा।

जबकि – *अ०* जब। *प्र०* जबकि वे स्वयं बुलाने आए थे तो अवश्य चलना चाहिए।

जबड़ा – *पु०* मुँह में नीचे-ऊपर की हड्डियाँ जिनमें दाँत जड़े होते हैं।

ज़बरदस्त – 1. *अ०* दबाव डालकर, बलपूर्वक, शक्तिपूर्वक। *प्र०* उन्होंने अपना काम ज़बरदस्ती करवा लिया। 2. *स्त्री०* ज़्यादती, बलपूर्वक कराया गया काम, सीनाज़ोरी।

ज़बरन – *अ०* ज़बरदस्ती से, बलात्, विवश करके, विवश होकर।

ज़बान – *स्त्री०* 1. जीभ, जिह्वा, रसना। *प्र०* ज़बान में छाले पड़ गए हैं। 2. प्रतिज्ञा, वादा, कौल। *प्र०* सभी लोग अपनी ज़बान के पकके नहीं होते। 3. भाषा। *प्र०* चीन की ज़बान चीनी है।

ज़बानी – *वि०* जो केवल मुँह से कहा गया हो, लिखा न गया हो, मौखिक, अलिखित। *प्र०* ज़बानी कहने का क्या विश्वास? जो कह रहे हो उसे लिखित रूप में दो। *मु० ज़बानी जमाख़र्च करना* – यों ही कहना, कुछ करना नहीं। *प्र०* ज़बानी जमाख़र्च करने से काम नहीं चलेगा, तुम्हें कुछ करना चाहिए। *ज़बानी याद* – कंठस्थ, पूरी तरह याद। *प्र०* रामचरितमानस के कई अंश मुझे ज़बानी याद हैं।

जमघट – *पु०* लोगों की भीड़, जमावड़ा; जैसे – मनुष्यों का जमघट, लोगों का जमघट।

जमा – *वि०* 1. एकत्र, इकट्ठा। *प्र०* वहाँ काफ़ी लोग जमा हैं। 2. जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में या ऐसे ही रखा गया हो। *प्र०* मैंने उनके यहाँ पाँच सौ रुपए जमा कर दिए हैं, जब ज़रूरत हो ले लेना।

जमादार – *पु०* 1. भंगी, सड़क पर झाड़ू लगानेवाला। 2. सेना तथा पुलिस में एक छोटा अफ़सर।

ज़मानत – *स्त्री०* 1 किसी व्यक्ति द्वारा ली गई यह ज़िम्मेदारी कि दूसरा व्यक्ति कहीं समय पर हाज़िर

होगा, ऋण चुका देगा या अन्य कोई ज़िम्मेदारी पूरी करेगा, ज़िम्मेदारी, ज़िम्मेवारी, गारंटी। 2. ऐसी ज़िम्मेदारी के तौर पर जमा कराई जानेवाली रकम, गारंटी रूप में जमा रुपया।

ज़मानतदार – पु॰ ज़मानत लेनेवाला, गारंटर।

जमाना – *क्रि॰* 1. किसी द्रव पदार्थ को ठोस बनाना; जैसे – पानी जमाना, दूध जमाना। 2. अच्छी तरह चलने योग्य बनाना; जैसे – व्यापार जमाना। 3. स्थापित करना; जैसे – विश्वास जमाना। 4. मारना, जड़ना; जैसे – चाँटा जमाना, चपत जमाना।

ज़माना – पु॰ 1. काल, समय, युग। प्र॰ इस ज़माने में बहुत कम लोग ईमानदार हैं। 2. लंबा समय, बहुत दिन। प्र॰ मैं भी चलूँगा, ज़माना गुज़रा उनके दर्शन किए।

जमाव – पु॰ 1. जमावड़ा, भीड़। प्र॰ जाने क्या हो रहा है, यहाँ लोगों का इतना जमाव क्यों है? 2. जमना। प्र॰ बीज के जमाव के लिए नमी आवश्यक है।

जमावड़ा – पु॰ भीड़, जमाव, लोगों का एकत्र होना। प्र॰ इस छोटे से काम के लिए इतने बड़े जमावड़े की क्या ज़रूरत थी?

ज़मीन – *स्त्री॰* पृथ्वी का ऊपरी भाग, स्थल-भाग, धरती, भूमि। प्र॰ राजस्थान के कई भागों की ज़मीन उपजाऊ नहीं है। मु॰ *ज़मीन-आसमान एक करना* – बहुत कोशिश करना या भाग-दौड़ करना। प्र॰ मोहन ने अपना यह काम करवाने के लिए ज़मीन-आसमान एक कर दिया। *ज़मीन-आसमान का अंतर* – बहुत अधिक फ़र्क़, बहुत बड़ा अंतर। प्र॰ इन दोनों लड़कों में ज़मीन-आसमान का अंतर है। *जमीन में गड़ जाना* – बहुत ज़्यादा शर्मिंदा होना। प्र॰ अपने भाई को यह नीच काम करते देखकर मैं ज़मीन में गड़ गया।

जम्हाई – *स्त्री॰* पूरा मुँह खोलकर साँस लेने तथा छोड़ने की एक सहज क्रिया जो प्रायः निद्रा या आलस्य के कारण होती है, उबासी। प्र॰ तुम्हें जम्हाई आ रही है, थोड़ी देर सो लो।

जयंती – *स्त्री॰* 1. किसी महापुरुष अथवा संस्था की जन्मतिथि या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ होने की वार्षिक तिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव; जैसे – सूर-जयंती, भारतेंदु-जयंती। 2. किसी व्यक्ति, विद्यालय या संस्था आदि के 25वें (रजत जयंती), 50वें (स्वर्ण जयंती), तथा 75वें (हीरक जयंती) जन्मदिन या स्थापना-दिवस पर होनेवाला उत्सव।

जमाना | जमावड़ा | जम्हाई
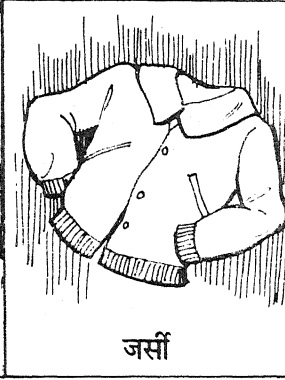
जय – *स्त्री॰* जीत, विजय, शत्रु को हराना, जै।

जय-जयकार – *पु॰* किसी की प्रशंसा में व्यक्ति द्वारा या लोगों द्वारा की गई जय-जयकार, जय-ध्वनि, जय-घोष, जै-जैकार।

जयमाल – *स्त्री॰* दे॰ जयमाला।

जयमाला – *स्त्री॰* 1. वह माला जिसे कन्या अपने होनेवाले पति को स्वयंवर या विवाह के अवसर पर पहनाती है, वरमाला। 2. किसी के विजयी होने पर उसे पहनाई जानेवाली माला, विजयमाला।

जरा – *स्त्री॰* बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

ज़रा – 1. *वि॰* थोड़ा। *प्र॰* ज़रा चावल और दो। 2. *अ॰* तनिक, थोड़ी देर के लिए। *प्र॰* ज़रा ठहरो, मैं अभी आया। **ज़रा-सा** 1. *वि॰* थोड़ा-सा। *प्र॰* ज़रा-सा चावल और देना। 2. *अ॰* तनिक-सा। *प्र॰* ज़रा-सा ठहरो, मैं अभी आता हूँ।

जरासीम – *पु॰* 1. रोग के कीटाणु, रोगाणु। 2. जीवाणु।

ज़रूरतमंद – *वि॰* जिसे ज़रूरत हो। *प्र॰* वह बहुत ज़रूरतमंद है, उसे कुछ रुपए दे दो।

जर्सी – *स्त्री॰* 1. एक प्रकार का ऊनी स्वेटर, बुना हुआ ऊनी जैकेट। 2. एक प्रकार की गाय जो अधिक दूध देती है।

जल-कैबेज़ – *पु॰* पानी में होनेवाला एक पौधा।

जलकौआ – *पु॰* एक जलपक्षी जिसकी सारी देह काली और गर्दन सफ़ेद होती है।

जलचर – *पु॰* वे जीव-जंतु जो पानी में रहते हैं और पानी के बिना और किसी स्थान पर जीवित नहीं रह सकते; जैसे – मछली।

ज़लज़ला – 1. *वि॰* क्रोधी, बिगड़ैल, चिड़चिड़ा। 2. *पु॰* भूकंप, भूडोल।

जलन – *स्त्री॰* 1. जल जाने से होनेवाली पीड़ा या कष्ट। *प्र॰* मेरी उँगली जल गई थी, बड़ी जलन हो रही है। 2. जलने-जैसी पीड़ा। *प्र॰* पेट में जलन हो रही है। 3. किसी की तारीफ़ या किसी की उन्नति के कारण होनेवाला डाह, ईर्ष्या। *प्र॰* तुम्हें राम के अच्छे नंबर पाने पर जलन क्यों हो रही है, तुम भी परिश्रम करो।

जलना – *क्रि॰* 1. झुलसना। *प्र॰* मेरा पैर जल गया है। 2. आँच के कारण कोयले या भाप आदि के रूप में हो जाना, जल जाना। *प्र॰* पानी जल गया है, अब बरतन उतार लो। 3.आग पकड़ना। *प्र॰* लकड़ी

जल रही है। 4. प्रकाश देना। *प्र०* टॉर्च जल रही है, बुझा दो। *मु० जले पर नमक छिड़कना* – किसी दुखी को और भी दुख देना। *प्र०* तुम्हारा दोस्त फेल हो गया है और तुम उसे ऊपर से चिढ़ा रहे हो। जले पर नमक नहीं छिड़कते।

ज़लनिकासी – *स्त्री०* गंदे पानी का निकलना। *प्र०* इस कालोनी में जलनिकासी का इंतज़ाम ठीक नहीं है।

जलपक्षी – *पु०* वह चिड़िया जो मुख्य रूप से पानी में रहती है; जैसे – बतख़।

जलप्रदूषण – *पु०* पानी ख़राब या दूषित होना या करना। *प्र०* 1. गंदे नालों और नालियों के पानी से गंगा जैसी पवित्र नदियों में जलप्रदूषण हो रहा है। 2. जलप्रदूषण के कारण दिल्ली में जमुना का पानी बिना साफ़ किए पीने लायक़ नहीं है।

जलप्रपात – *पु०* किसी नदी का पहाड़ के ऊपर से सीधे नीचे गिरता हुआ झरना, बहुत बड़ा झरना।

जलमार्ग – *पु०* जलवाला रास्ता। *प्र०* मैं पहले अंडमान-निकोबार जलमार्ग से जाना चाहता था, अब वायुमार्ग से जाऊँगा।

जलयान – *पु०* पानी का जहाज़।

जलवायु – *पु०* किसी जगह की हवा, पानी, सर्दी, गर्मी इत्यादि का मिला-जुला प्रभाव, आब-हवा। *प्र०* नैनीताल की जलवायु अच्छी है।

जलविद्युत् – *स्त्री०* पानी से पैदा की जानेवाली बिजली। *प्र०* जलप्रपात से जलविद्युत् पैदा की जा सकती है।

जलसंबुल – *पु०* पानी की सतह पर रहनेवाली एक वनस्पति जिसकी जड़ें पानी के भीतर होती हैं तथा पत्तियों के डंठल में हवा भरी होने के कारण कुछ फुलाव होता है, जलकुंभी।

जलसह – *वि०* जिसके भीतर से होकर पानी न निकले, वाटरप्रूफ़। *प्र०* बरसाती कोट जलसह कपड़े का बनता है।

जलहायसिंथ – *पु०* पानी का एक पौधा।

जलाशय – *पु०* तालाब, पोखरा, सरोवर।

जलूस – *पु०* शोभायात्रा, जुलूस।

जलोढ़ मिट्टी – *स्त्री०* वह मिट्टी जिसे नदियाँ अपने जल द्वारा पहाड़ों से लाकर मैदान बनाती हैं। यह मिट्टी भुरभुरी, मुलायम तथा उपजाऊ होती है।

जल्दी – *1. स्त्री०* तेज़ी, शीघ्रता, उतावलापन। 2. *अव्य०* (क) तेज़ी से, जल्दी से, शीघ्रता से। (ख) तुरंत। *प्र०* जल्दी जाओ।
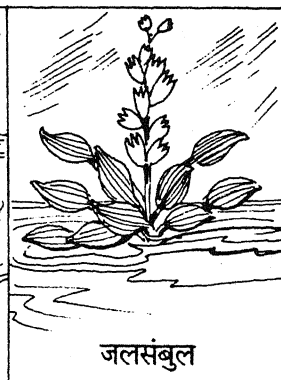
जलप्रपात | जलयान | जलसंबुल | जलूस

जवान – 1. *वि०* युवा, तरुण। *प्र०* वह अभी जवान है, बुड्ढा नहीं है। 2. *पु०* (क) युवक, युवा पुरुष। (ख) सिपाही, सैनिक। *प्र०* हमारे जवान दुनिया के किसी भी देश की सेना का सामना कर सकते हैं।

जवानी – *स्त्री०* युवावस्था, यौवन। *प्र०* जवानी में आदमी बहुत जोशीला होता है।

जवाबदेह – *वि०* उत्तरदायी, ज़िम्मेवार, ज़िम्मेदार।

जवाहरात – *पु०* रत्न, मणि, ज्वैलरी। *प्र०* मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के सिंहासन तख़्त-ए-ताऊस में हीरे-जवाहरात जड़े थे।

जस्सिआई – *स्त्री०* पानी पर तैरनेवाला एक पौधा।

ज़हर – *पु०* वह चीज़ जो देह में पहुँचकर मृत्यु का कारण बने या स्वास्थ्य की हानि करे, विष। *मु० ज़हर उगलना* – बहुत कड़वी बात कहना, चुभनेवाली बात कहना। *प्र०* उससे मैं कुछ नहीं कहूँगा, वह तो बात-बात पर ज़हर उगलता है।

ज़हरीला (ज़हर + ईल + आ) – *वि०* ज़हरवाला, विषैला। *प्र०* कुछ साँप ज़हरीले होते हैं।

जाँघिया – *पु०* जाँघों तक का पाजामा, कच्छा, चड्ढी।

जाँच – *स्त्री०* 1. खोजबीन, छान, जाँच-पड़ताल। *प्र०* पुलिस मामले की जाँच कर रही है। 2. परीक्षा। *प्र०* डॉक्टर से पहले जाँच करा लो, फिर दवा का निर्णय आसानी से किया जा सकेगा।

जाँचना – *क्रि०* 1. देखना, मूल्यांकन करना, सही-ग़लत के हिसाब से नंबर देना। *प्र०* परीक्षा हो गई, अब कॉपियाँ जाँची जाएँगी। 2. परीक्षा करना। *प्र०* डॉक्टर ख़ून-पेशाब जाँचकर दवा देंगे।

जाँच-पड़ताल – *स्त्री०* छानबीन, खोजबीन, तहक़ीक़ात।

जाकिट, जाकेट – *स्त्री०* बिना बाँहों का लंबाई में छोटा कोट, जैकेट, सदरी, बंडी, जवाहर जैकेट।

जातपाँत – *स्त्री०* 1. बिरादरी, जाति। 2. जाति-व्यवस्था। *प्र०* जातपाँत में मेरा विश्वास नहीं है।

जाति – *स्त्री०* 1. हिंदुओं के विभिन्न वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। 2. देश, संस्कृति और भाषा के आधार पर मनुष्य-समाज के भेद; जैसे – चीनी, मंगोल, हब्शी, अँग्रेज़ आदि। 3. प्राणियों के विभिन्न प्रकार; जैसे – मानव जाति, पशु जाति। 4. नस्ल; जैसे – अच्छी जाति की गाय, अच्छी जाति का आम।

जातिवाचक – *वि०* संज्ञा का एक प्रकार। जातिवाचक संज्ञाएँ किसी एक का नहीं, पूरी जाति का बोध कराती हैं; जैसे – 'मनुष्य' शब्द पूरी मनुष्य जाति का बोधक है, 'हाथी' शब्द सभी हाथियों का

बोधक है और 'नगर' शब्द सभी नगरों का बोधक है। इसीलिए मनुष्य, हाथी, नगर जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

जादू – पु० 1. हाथ की सफ़ाईवाले आश्चर्यजनक काम, इंद्रजाल। प्र० जादूगर ने ऐसे-ऐसे जादू दिखाए कि लोग दंग रह गए। 2. आकर्षित करनेवाली या मोहित करनेवाली शक्ति; जैसे – उसके रूप में जादू है, उसकी बातों में जादू है, उसकी वाणी में जादू है। 3. जादू-टोना, टोना-टोटका।

जादूगर – पु० जादू दिखाने या करनेवाला।

जादू-टोना – पु० जंतर-मंतर, भूतविद्या, ओझाई, ओझाई-सोखाई।

जान – स्त्री० 1. प्राण। प्र० वह मरा नहीं है, उसमें अभी जान है। 2. शक्ति, कूवत, बूता। प्र० उसमें काफ़ी जान है, तुम उसे कुश्ती में हरा नहीं सकते। मु० *जान की बाज़ी लगाना, जान पर खेलना* – ख़तरा उठाना, जोखिम उठाना। प्र० करीम ने जान की बाज़ी लगाकर उस डूबते आदमी को बचाया। *जान से हाथ धोना* – मारा जाना। प्र० दोनों गुटों की लड़ाई में कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

जानदार – *वि०* 1. जिसमें जान हो, सजीव, जीवधारी। 2. जीवट या हिम्मतवाला। प्र० वह आदमी जानदार है। 3. जिसमें उमंग और जोश हो; जैसे – जानदार खेल। 4. शक्तिशाली, बलवान्, कूवतवाला; जैसे – जानदार पहलवान।

जान-पहचान – पु० परिचय। प्र० मोहन से मेरी जान-पहचान नहीं है।

जानना-बूझना – *क्रि०* जानना, जानना-समझना।
जान-बूझकर – जानते-समझते हुए, सोच-समझकर, अनजाने में नहीं। प्र० जान-बूझकर तुमने यह आफ़त मोल ली है।

जानमाल – पु० जान-व-माल, प्राण और धन, धन-जन। प्र० वहाँ जाने में जानमाल का ख़तरा है।

जानवर – पु० 1. पशु, हैवान; जैसे – गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा आदि। 2. मूर्ख, जिसमें अक़्ल न हो। 3. निर्दय, बेरहम, जिसमें मानवता न हो। प्र० तुम आदमी नहीं जानवर हो, उस बेचारे ग़रीब को मार-मारकर बेदम कर दिया। 4. उजड्ड, असभ्य।

जाने-अनजाने – *अ०* जान-बूझकर या बिना जाने। प्र० ज़िंदगी में जाने-अनजाने तरह-तरह की ग़लतियाँ हो जाती हैं।

जाम – 1. पु० प्याला (शराब का)। 2. *वि०* (क) रुकाव। मु० *जाम हो जाना* – रुक जाना। प्र० रास्ता जाम हो गया है। (ख) फँस जाना। प्र० यह ढक्कन जाम हो गया है।

जादूगर | जानवर | जाम
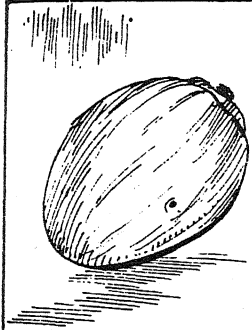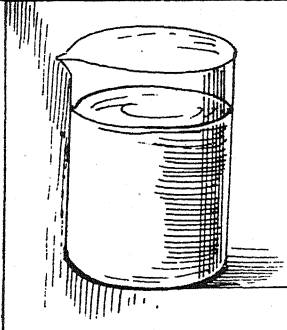
जायफल | जार | ज़ालिम | जासूस

जामुनी – *वि०* बैंगनी, गहरा बैंगनी, जामुन के रंग जैसा, जामुन के रंग का, अँटई।

ज़ायक़ा – *पु०* स्वाद, मज़ा। *प्र०* हर खाने का ज़ायक़ा अलग होता है।

ज़ायकेदार – *वि०* स्वादिष्ट, मज़ेदार। *प्र०* आज सब्ज़ी ज़ायकेदार बनी है।

जायफल – *पु०* एक सुगंधित फल जो औषध या मसाले के काम आता है।

जाया – *स्त्री०* जोरू, पत्नी, स्त्री।

ज़ाया – *वि०* नष्ट, बर्बाद, व्यर्थ (होना या करना)। *प्र०* खाना ज़रूरत-भर लो, जूठा छोड़कर ज़ाया मत करो।

जार – *पु०* शीशे या चीनी मिट्टी आदि का बना अचार, मुरब्बा, टॉफ़ी, बिस्कुट आदि रखने का ढक्कनदार बरतन।

जारी – *वि०* चलता हुआ, जो चल रहा है, जो रुका नहीं है। *प्र०* 1. उसका उल्टी होना अभी जारी है। 2. इसका ख़ून बहना अभी जारी है। 3. शहर के कुछ मुहल्लों में कर्फ़्यू अभी जारी है।

ज़ालिम – *वि०* ज़ुल्म करनेवाला अत्याचारी। *प्र०* रावण और कंस बड़े ज़ालिम थे।

जासूस – *पु०* छिपे तौर पर सूचना एकत्र करनेवाला, छिपकर भेद लेनेवाला, अपराध आदि का पता लगानेवाला, गुप्तचर, भेदिया। *प्र०* कई पाकिस्तानी जासूस कश्मीर में पकड़े गए। कुछ प्राइवेट जासूस भी होते हैं जो रुपए लेकर तरह-तरह के अपराधों का पता लगाते हैं।

ज़ाहिर – *वि०* खुला हुआ, जो छिपा न हो, प्रकट, प्रत्यक्ष। *प्र०* अब यह बात ज़ाहिर हो गई है कि उन दोनों के गुप्त संबंध रहे हैं।

ज़िंदगी – *स्त्री०* 1. जीवन, ज़िंदगानी। *प्र०* ज़िंदगी क्या पता कब खत्म हो जाए, इसलिए अच्छे काम कर लेने में देर नहीं करनी चाहिए। 2. उम्र, आयु। *प्र०* गांधीजी ने अपनी पूरी ज़िंदगी देशसेवा में लगा दी।

ज़िक्र – *पु०* चर्चा, उल्लेख, किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि के विषय में की गई बात। *प्र०* क्या कल वहाँ मेरा भी ज़िक्र हो रहा था?

जिज्ञासा – *स्त्री०* जानने की इच्छा।

जितना – *वि०* 1. जिस वज़न का। *प्र०* जितना आटा चाहो, ले जाओ। 2. जिस संख्या का। *प्र०* जितने रुपए चाहिए, ले जाना। 3. जिस मात्रा का। *प्र०* जितना भी काम किया हो, मुझे दिखा दो। 4. के बराबर; जैसे – मोहन जितना सुशील।

ज़िद – *स्त्री॰* हठ। *प्र॰* बात-बात पर ज़िद करना ठीक नहीं।

ज़िद्दी – *वि॰* जो ज़िद करता हो, हठ करनेवाला, हठी। *प्र॰* तुम्हारा दोस्त बड़ा ज़िद्दी है।

ज़िप – *स्त्री॰* एक तरह की ज़ंजीर जो बटन के स्थान पर कपड़े, चमड़े, टाट आदि के दो किनारों को बाँधने के काम आती है।

जिप्सम – *पु॰* एक तरह का खनिज पदार्थ।

ज़िम्मा – *पु॰* किसी बात या काम को करने का भार, ज़िम्मेदारी, ज़िम्मेवारी, दायित्व। *प्र॰* मैदान में खेल का सामान लाने का ज़िम्मा हरीश ने लिया है।

ज़िम्मेदार – *वि॰* 1. ज़िम्मा लेनेवाला, जिसका ज़िम्मा हो, जवाबदेह, उत्तरदायी। *प्र॰* तुम मुख्य मानीटर बनाए गए हो, अब कक्षा में शिक्षक के आने के पहले शांति बनाए रखने के लिए तुम ज़िम्मेदार हो। 2. अपने ज़िम्मे लेकर उसे निभानेवाला। *प्र॰* श्याम एक ज़िम्मेदार लड़का है। यह काम उसे तुम खुशी से सौंप सकते हो।

ज़िम्मेदारी – *स्त्री॰* ज़िम्मेवारी, जवाबदेही, दायित्व, उत्तरदायित्व। *प्र॰* मोहन तो स्कूल छोड़कर चला गया, मानीटर की ज़िम्मेदारी किसे दी जाए?

ज़िराफ़ – *पु॰* ऊँट की-सी गर्दन और लंबी टाँगों (केवल आगे की) वाला एक चित्तीदार ऊँचा जानवर।

ज़िला – *पु॰* प्रदेश, प्रांत अथवा सूबे या कमिश्नरी का वह भाग जो डिप्टी कमिश्नर या कलक्टर के मातहत हो, डिस्ट्रिक्ट, जनपद।

ज़िलाधीश – *पु॰* ज़िले का प्रधान अधिकारी, कलक्टर।

ज़िलाबोर्ड – *पु॰* ज़िले के प्रतिनिधियों का मंडल जिसका काम ज़िले की सड़कों, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का प्रबंध करना होता है, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड।

जिल्द – *स्त्री॰* 1. पुस्तक अथवा कापी या रजिस्टर की रक्षा के लिए लगाई, चिपकाई या मढ़ी गई दफ़्ती या गत्ता। 2. भाग, खंड (पुस्तक का)।

जिल्ददार – *वि॰* जिल्दवाला, जिस पर जिल्द हो; जैसे – जिल्ददार डायरी, जिल्ददार किताब, जिल्ददार रजिस्टर।

जिस – *सर्व॰* 'जो' सर्वनाम का वह रूप जिसके बाद कोई संज्ञा (जैसे – जिस आदमी को, जिस आदमी ने) या ने (जिसने), को (जिसको), से (जिससे), का (जिसका), या में (जिसमें) आदि आएँ।

जिह्वा – *स्त्री॰* जीभ, ज़बान।

जी – *पु॰* 1. मन, हृदय, दिल। *प्र॰* जी कर रहा है कि
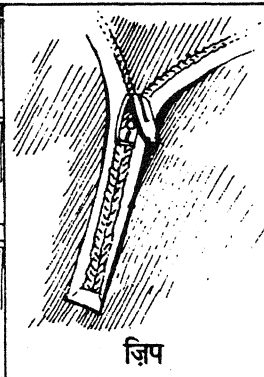
ज़िद्दी | ज़िप | ज़िराफ़ | जिल्द
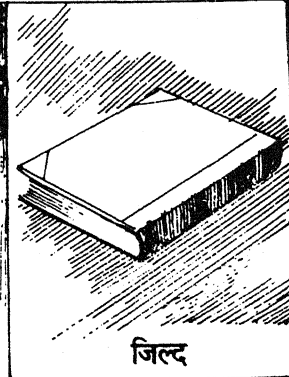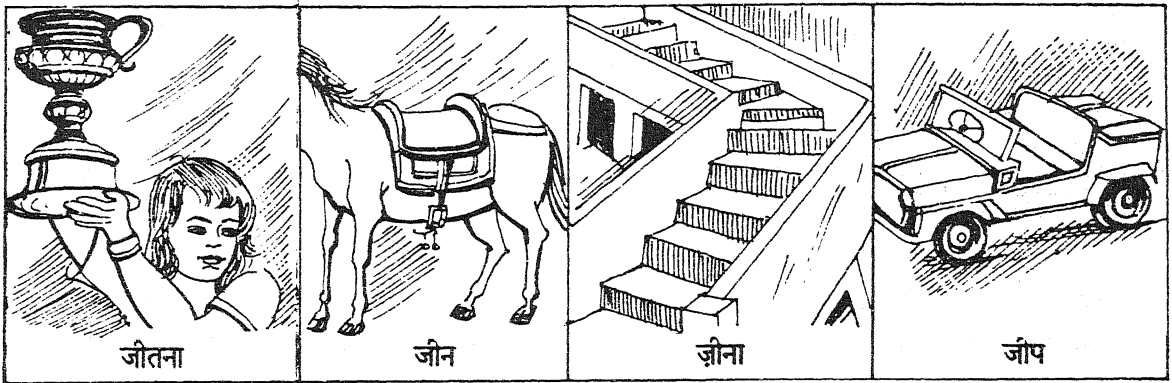
छुट्टियाँ यहीं बिताऊँ। मु॰ *जी खट्टा होना* – मन फिर जाना, घृणा होना। प्र॰ उनसे अब जी खट्टा हो गया। *जी-जान से कोशिश करना* या *जुट जाना* – पूरे मन और पूरी ताक़त से कोई काम करने की कोशिश करना। *जी भर जाना* – और करने को जी न चाहना। प्र॰ यह काम करते-करते जी भर गया। *जी लोट-पोट होना* – मोहित होना। 2. नाम, संबंध, पद आदि के अंत में आदर के लिए लगाया जानेवाला शब्द; जैसे – मोहनजी, गांधीजी, माताजी, मंत्रीजी आदि। 3. प्रश्नसूचक शब्द। प्र॰ जी? आपने मुझसे पूछा क्या? 4. हाँ, स्वीकारसूचक शब्द; जैसे – जी, मैं जाऊँगा।

जीतना – *क्रि॰* (युद्ध, मुक़दमा, खेल, प्रतियोगिता आदि में विपक्षी को) हराना, पराजित करना, विजय पाना।

जीता-जागता – *वि॰* सजीव, साक्षात्; जैसे – जीता-जागता उदाहरण।

जीन – *पु॰* 1. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। 2. एक विशेष प्रकार की पैंट।

ज़ीन – *पु॰* एक प्रकार का मोटा कड़ा सूती कपड़ा।

जीना – *क्रि॰* ज़िंदा रहना, जीवित रहना।

ज़ीना – *पु॰* सीढ़ी।

जीप – *स्त्री॰* एक तरह की कार, जो देहातों और सेना में विशेष रूप से काम में आती है।

ज़ीरा – *पु॰* एक सुगंधित छोटा बीज जो मसाले और दवा के काम लाया जाता है (यह सफ़ेद और स्याह दो तरह का होता है)।

जीवधारी – *पु॰* जीव, प्राणी, प्राणधारी, जंतु।

जीवन – *पु॰* 1. ज़िंदगी। प्र॰ महात्मा गांधी ने अपना पूरा जीवन देशसेवा में लगा दिया। 2. प्राण, जान। प्र॰ पहले लोग यह मानते थे कि जीवन केवल मनुष्यों और जीव-जंतुओं में होता है, पर अब यह माना जाने लगा है कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है।

जीवनकहानी – *स्त्री॰* जीवनी, जीवनकथा।

जीवनचक्र – *पु॰* 1. ज़िंदगी का चक्कर, जीवन की भली-बुरी स्थितियाँ। 2. जन्म से मृत्यु तक का विकास-चक्र। प्र॰ रेशम के कीड़े का जीवनचक्र अंडे से प्रारंभ होकर कोकोन, नवजात कीट, फिर रेशम का कीड़ा और अंत में उसकी मृत्यु तक फैला हुआ है।

जीवनचरित्र – *पु॰* जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओं का विवरण, जीवनी, जीवनवृत्त।

जीवन-मरण – *पु॰* जीना-मरना, ज़िंदगी-मौत, पैदा होने और मरने की क्रिया। मु॰ *जीवन-मरण का* – महत्त्वपूर्ण, अहमियतवाला। प्र॰ मेरे लिए यह

जीवन-मरण का प्रश्न है।

जीवन-विहीन – *वि॰* जिसमें प्राण न हो, जिसमें जीवन न हो। *प्र॰* चंद्रमा जीवन-विहीन है।

जीवनस्तर – *पु॰* जीवन का स्तर, जीवन का स्टैंडर्ड, जीवन में सुख-सुविधाओं का मिलना-न-मिलना। *प्र॰* भारत का जीवन-स्तर धीरे-धीरे ऊँचा हो रहा है।

जीवविज्ञान – *पु॰* जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों के अध्ययन का विज्ञान।

जीवहत्या – *स्त्री॰* जीवित प्राणी को मार डालना, जीव-हिंसा, जीव-वध। *प्र॰* 1. महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी जीवहत्या के विरोधी थे। 2. शाकाहारी लोग जीवहत्या के विरोधी होते हैं।

जीवा – *स्त्री॰* किसी वृत्त की परिधि के दो बिंदुओं को मिलानेवाली रेखा।

जीवाणु – *पु॰* बहुत छोटे-छोटे जीव जो हवा, पानी, मिट्टी तथा जीवित एवं मृत प्राणियों और पौधों में होते हैं, और कभी-कभी तरह-तरह के रोग पैदा करते हैं, बैक्टीरिया।

जीवाश्म – *पु॰* वे जीव-जंतु या पेड़-पौधे जो अत्यंत प्राचीन काल में दबाव के कारण पत्थर-जैसे कड़े हो गए।

जीविका – *स्त्री॰* जीवन-निर्वाह के लिए किया जाने-वाला कार्य, ज़िंदगी चलाने के साधन। *प्र॰* नौकरी मेरी जीविका है।

जीविकोपार्जन (जीविका+उपार्जन) – *पु॰* जीविका कमाना। *प्र॰* खेती मेरी जीविकोपार्जन का साधन है।

जुआ – *पु॰* 1. हल, बैलगाड़ी आदि में जोते जाने-वाले बैलों के कंधों पर रखी जानेवाली लकड़ी। 2. बाज़ी लगाकर खेला जानेवाला खेल। *प्र॰* जुआ खेलने की आदत बुरी होती है।

जुगनू – *पु॰* एक पतंगा जो रात में उड़ते हुए अपनी दुम से रोशनी निकालता है, खद्योत, भगजोगनी।

जुगाली – *स्त्री॰* गाय-बैल-भैंस आदि का निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा करके पेट से मुँह में लाकर चबाना, पागुर, पगुरी।

जुटना – *क्रि॰* 1. जमा होना, एकत्र होना। *प्र॰* चार हाथ, तीन मुँह और तीन पैर के एक बच्चे का पैदा होना सुनकर वहाँ हज़ारों की भीड़ आ जुटी है। 2. किसी काम में तन-मन से लगना, पूरी मेहनत के साथ लगना। *प्र॰* राम परीक्षा की तैयारी में जी-जान से जुटा है।

जुड़ना – *क्रि॰* 1. जोड़ा जाना, सटना, चिपकना। *प्र॰* इयूरोफ़िक्स से प्याले का टूटा हुआ हत्था जुड़
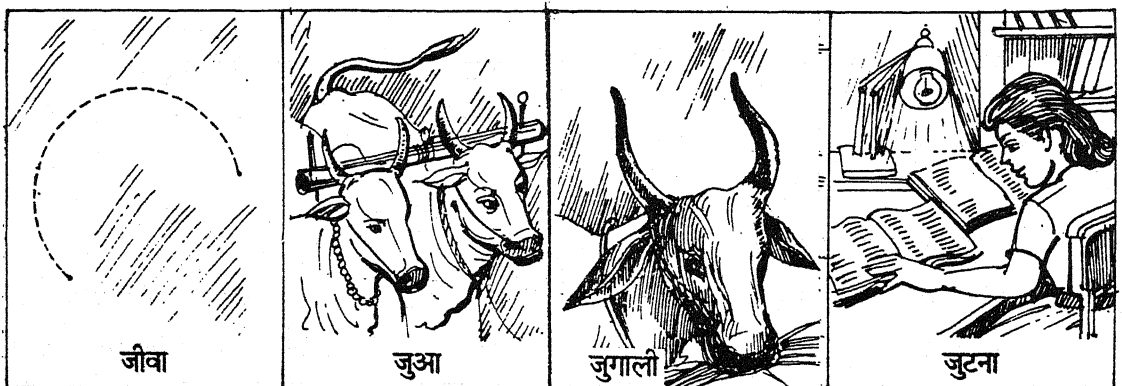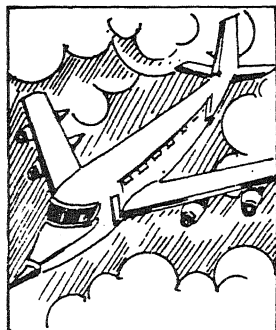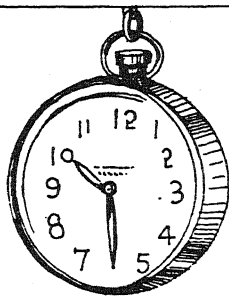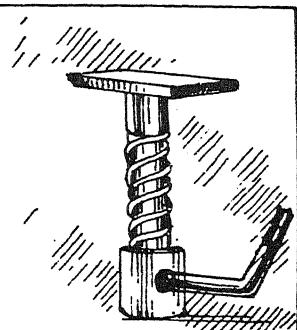
जेट जेब-घड़ी ज़ेबरा जैक

गया। 2. संबंध होना। *प्र०* यह कॉलिज आगरा विश्वविद्यालय से जुड़ गया है। 3. एकत्र होना। *प्र०* भूख-हड़ताल पर बैठे उस आदमी को देखने के लिए रोज़ ही छोटी-मोटी भीड़ जाती है। 4. मिला होना। *प्र०* भारत और पाकिस्तान की एक तरफ़ की सीमा जुड़ी हुई है।

जुलाब – *पु०* दस्त लाने की दवा।

जूँ – *स्त्री०* मैल और पसीने आदि के कारण सिर के बालों में पैदा हो जानेवाला एक नन्हा कीड़ा, ढील।

जूट – *पु०* पटसन, पाट।

जूही – *स्त्री०* एक झाड़ जिसके फूल बहुत छोटे, सुकुमार और बड़ी चमेली जैसी मधुर गंधवाले होते हैं।

जेट, जेट विमान – *पु०* एक विशेष प्रकार के इंजन-वाला विमान।

जेबकतरा – *पु०* जेब कतरनेवाला, पाकिटमार।

जेबख़र्च – *पु०* 1. निजी ख़र्च। *प्र०* मेरा जेबख़र्च सौ रुपए महीने है। 2. निजी ख़र्च के लिए मिलनेवाली रक़म। *प्र०* इस महीने मुझे जेबख़र्च नहीं मिला।

जेब-घड़ी – *स्त्री०* जेब में रखने की छोटी घड़ी, पाकिट घड़ी, पाकिट वाच।

ज़ेबरा, ज़ेब्रा – *पु०* ख़च्चर-जैसा एक जंगली जानवर जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं।

ज़ेबराक्रॉसिंग, ज़ेब्राक्रॉसिंग, ज़ेबरापट्टी, ज़ेब्रापट्टी – सड़कों पर बनी ज़ेब्रा की तरह की धारीदार पट्टी जो आदमियों के सड़क पार करने के लिए होती है।

जेली मछली – *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।

जैंथियम – *पु०* एक पौधा जिसके बीजों की सतह पर टेढ़े-मेढ़े काँटे होते हैं।

जैक – *पु०* कार आदि के अगले या पिछले हिस्से को ऊपर उठाने का उपकरण, जैकपेच।

जैकपेच – *पु०* दे० जैक।

जैकिट, जैकेट – *स्त्री०* दे० जाकिट।

जैव पदार्थ – *पु०* वे जिनमें जीव हों। ये दो प्रकार के होते हैं – जीव-जंतु और वनस्पति।

जैसा – *वि०* 1. जिस प्रकार का, जिस तरह का। *प्र०* जैसा सामान लेना चाहोगे वैसा ही कम-बेश दाम भी देना पड़ेगा। 2. -सा, -समान, मिलता-जुलता। *प्र०* मोहन हरीश-जैसा शरीफ़ नहीं है।

जैसे – *अ०* 1. जिस प्रकार, जिस तरह, जिस रीति से। *प्र०* जैसे वह कहे वैसे कर दो। 2. जिस समय,

ज्यों। प्र० जैसे वह आए उसे तुरंत सामान लाने के लिए बाज़ार भेज दो।

जोंक – *स्त्री०* पानी का एक कीड़ा जो प्राणियों की देह में चिपककर उनका ख़ून चूसता है, जलौका।

जो – *सर्व०* 1. एक सर्वनाम जिसके द्वारा कही गई संज्ञा या सर्वनाम के बारे में कुछ और कहा जाए। प्र० उस आदमी की मुझे ज़रूरत है जो उस दिन आया था। 2. अगर, यदि। प्र० जो आप समय पर आ जाते तो काम न बिगड़ता।

जोकर – पु० 1. मसख़रा, विदूषक, सर्कस या नाटक में हँसानेवाला; जैसे – नाटक का जोकर, सर्कस का जोकर, खेल का जोकर। 2. ताश का एक फ़ालतू पत्ता जिस पर जोकर बना होता है, निरर्थक आदमी।

जोखिम – *स्त्री०* 1. हानि, घाटे की संभावना। प्र० इस व्यापार में जोखिम है। 2. ख़तरा। प्र० भाई, बिजली के नंगे तारों को मैं नहीं जोड़ूँगा, इसमें जान जोखिम है।

जोगिया – *वि०* गेरू के रंग का, गेरुआ; जैसे – जोगिया रंग, जोगिया कपड़ा।

जोड़ – पु० 1. जोड़ने की क्रिया। प्र० यह लड़का जोड़-घटा सीख गया है। 2. कई संख्याएँ जोड़ने से मिलनेवाली संख्या, योग, योगफल; जैसे–पाँच और चार का जोड़ नौ होता है। 3. वह स्थान जहाँ दो चीज़ें या दो टुकड़े मिलें। प्र० 1. हड्डियों का जोड़ ठीक नहीं बैठा। 2. दोनों कपड़ों को तुमने जोड़ा तो पर जोड़ ठीक नहीं है। 4. बराबरी, समानता। प्र० भोलू पहलवान के जोड़ का दूसरा पहलवान इस समय ज़िले में नहीं है।

जोड़ना – *क्रि०* 1. दो चीज़ों या टुकड़ों को एक-दूसरे के साथ चिपकाना, सीना, मिलाना, सटाना आदि। प्र० डॉक्टर ने टूटी हड्डी जोड़ दी है। 2. दो या अधिक संख्याओं का जोड़ करना, योग निकालना; जैसे – तीन और चार का जोड़ना। 3. इकट्ठा करना। जैसे – प्र० मैं अभी रुपए जोड़ रहा हूँ, पूरे हो जाने पर इसे ख़रीद लूँगा।

जोड़ा – पु० 1. एक-सी या एक साथ काम में लाई जानेवाली दो चीज़ें; जैसे–साड़ी का जोड़ा, जूते का जोड़ा। 2. साथ पहने जानेवाले दो कपड़े; जैसे – कुर्ता-पाजामा, लहँगा-दुपट्टा, कमीज़-शलवार। 3. बराबर का, समान। प्र० कहाँ वह कहाँ तुम? जोड़ा नहीं है। 4. एक बार पहनने के सभी कपड़े; जैसे–कमीज़, वेस्टकोट, कोट, पैंट।

ज़ोर – पु० 1. बल, शक्ति, ताक़त। प्र० उस नए पहलवान में बहुत ज़ोर है। 2. वेग, तीव्रता, तेज़ी।
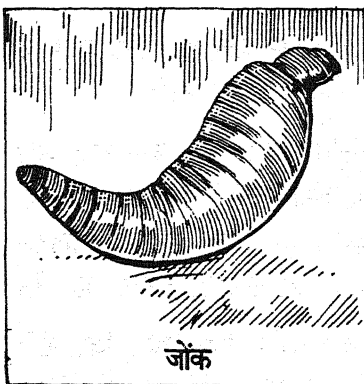
जोंक जोड़ जोड़ा
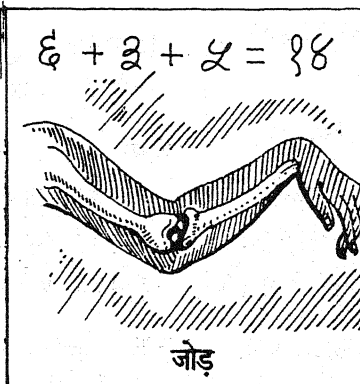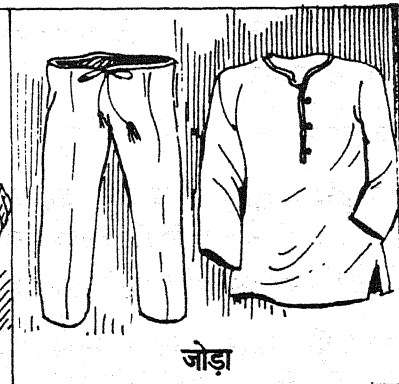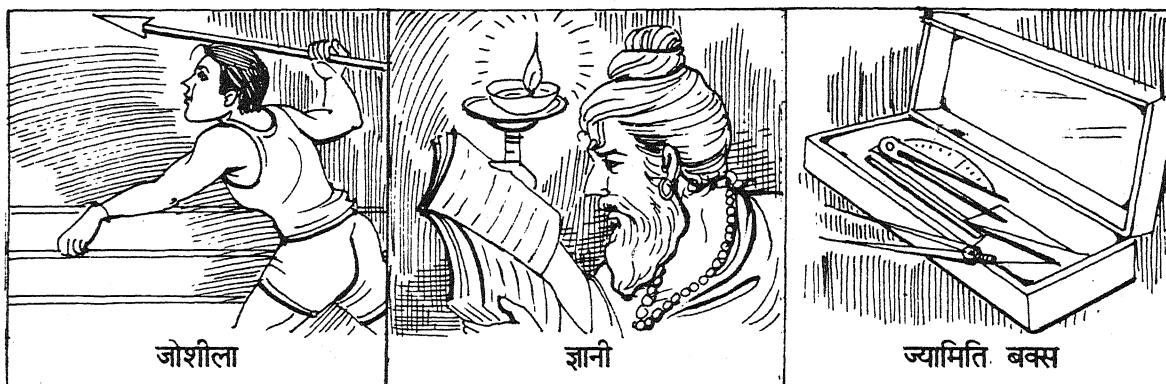
प्र॰ 1. वह अपने काम में बहुत ज़ोर से लगा है। 2. अपराध की घटनाएँ इस क्षेत्र में बड़े ज़ोरों पर हो रही हैं।

ज़ोरदार – *वि॰* 1. ज़ोरवाला, प्रबल, ताक़तवर, शक्तिशाली। प्र॰ वह आदमी है ज़ोरदार। 2. असरदार, प्रभावशाली; जैसे–ज़ोरदार लेख, ज़ोरदार भाषण, ज़ोरदार कविता।

जोशीला – *वि॰* जिसमें जोश भरा हो, ओजस्वी। प्र॰ 1. वह कविता बड़ी जोशीली थी। 2. नेताजी का भाषण बड़ा जोशीला था।

ज्ञात – *वि॰* मालूम, विदित, जाना हुआ। प्र॰ यह बात मुझे ज्ञात नहीं थी।

ज्ञान – *पु॰* जानकारी, किसी वस्तु, व्यापार या विषय का बोध; जैसे – गणित का ज्ञान, भूगोल का ज्ञान, भाषा का ज्ञान।

ज्ञान-विज्ञान – *पु॰* ज्ञान और विज्ञान। प्र॰ भारत धीरे-धीरे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करता जा रहा है।

ज्ञानी – *वि॰* जिसे ज्ञान हो, ज्ञानवाला, ज्ञानवान्, जानकार। प्र॰ वे कई विषयों के ज्ञानी हैं।

ज्ञानेंद्रिय (ज्ञान+इंद्रिय) – *स्त्री॰* वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे विभिन्न पदार्थों का ज्ञान होता है – आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

ज़्यादती – 1. *वि॰* अधिकता। प्र॰ इस चीज़ की यहाँ ज़्यादती है। 2. *पु॰* (क) ज़बरदस्ती। (ख) ज़ुल्म, अत्याचार। प्र॰ जन पर ज़्यादती करके कोई शासन बहुत दिन नहीं चल सकता।

ज़्यादातर – *अ॰* अधिकतर, प्रायः। प्र॰ ज़्यादातर लोग गाँवों से शहरों की ओर भागे आ रहे हैं।

ज्यामिति – *स्त्री॰* गणित की वह शाखा जिसमें रेखाओं, तलों, ठोस आकृतियों आदि का अध्ययन किया जाता है, रेखागणित, ज्योमेट्री।

ज्यामितिक – *वि॰* ज्यामिति का, रेखागणित का। प्र॰ ज्यामितिक बिंदु का केवल अस्तित्व होता है, उसे देखा नहीं जा सकता। कागज़ पर का बिंदु केवल उस ज्यामितिक बिंदु को प्रकट करता है, वह होता नहीं।

ज्यामिति बक्स – *पु॰* वह छोटा बक्स या डिब्बा जिसमें ज्यामिति की नाप-जोख से संबंधित उपकरण; जैसे – चाँदा, गुनिया, परकार तथा पटरी आदि रखे जाते हैं, ज्योमेट्री बॉक्स।

ज्योति – *स्त्री॰* प्रकाश, रोशनी, उजाला, आलोक।

ज्योतिष – *स्त्री॰* वह विद्या जिसके द्वारा ग्रहों-नक्षत्रों आदि की दूरी, गति आदि तथा मानव-जीवन पर उनका प्रभाव जाना जाता है।

ज्योतिषी – *पु॰* 1. ज्योतिष का जानकार, ज्योतिष का विद्वान्। 2. ग्रह-नक्षत्रों की गति के आधार पर शुभ-अशुभ तथा भविष्य बतानेवाला।

ज्वर – *पु॰* एक साधारण रोग जिसका मुख्य लक्षण शरीर की गर्मी का स्वाभाविक से अधिक हो जाना है, बुख़ार।

ज्वार – *स्त्री॰* 1. वह स्थिति जब समुद्र का जल खूब लहराते हुए ऊपर की ओर उठता है; जैसे – ज्वार-भाटा। 2. एक प्रकार का मोटा अन्न।

ज्वार-भाटा – *पु॰* चंद्रमा के आकर्षण के कारण समुद्र के जल का ऊपर उठना और फिर नीचे आना, समुद्र के जल का उतार-चढ़ाव। 'चढ़ाव' ज्वार है और 'भाटा' उतार है।

ज्वाला – *स्त्री॰* आग से निकलनेवाली लौ, आग की लपट, अग्निशिखा।

ज्वालामुखी – *पु॰* वह पर्वत जिसकी चोटी के गड्ढे में से बराबर अथवा समय-समय पर धुआँ, लावा या आग निकला करती है।

झ

– देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का चौथा व्यंजन।

झंकार – *स्त्री॰* झाँझ, पायल, घुँघरू आदि के बजने से होनेवाली झनझन की आवाज़, झनझन, झनझनाहट।

झंखाड़ – *पु॰* 1. काँटेदार झाड़ी या पौधा या ऐसी झाड़ियों या पौधों का समूह। 2. झाड़-झंखाड़, बेकार के पौधे और झाड़ियाँ।

झंझट – *पु॰* 1. कठिनाई, परेशानी, मुसीबत। *प्र॰* क्यों झंझट में पड़ते हो? 2. झमेला, झगड़ा-बखेड़ा, झगड़ा-झंझट, लफड़ा। *प्र॰* बेकार में एक झंझट मोल ले रहे हो।

झगड़ालू – *वि॰* बात-बात पर झगड़ा करनेवाला, झगड़ा करने की प्रवृत्तिवाला, कलहा, कलहप्रिय।

झटका – *पु॰* 1. झोंके के साथ दिया हुआ धक्का। *प्र॰* उन्होंने एक झटका दिया और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। 2. अकस्मात् लगा हुआ धक्का। *प्र॰* 1. बिजली का झटका लगने से लड़का बेहोश हो गया। 2. भूकंप के तेज़ झटके में कई मकान गिर गए। 3. किसी जानवर को एक वार में मार देना। *प्र॰* गोश्त दो प्रकार के होते हैं: झटका और धीरे-धीरे ज़बह किया हुआ।
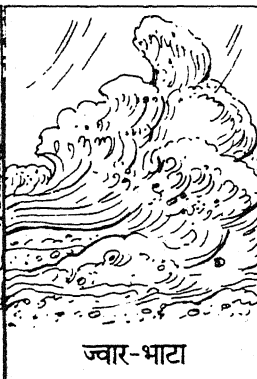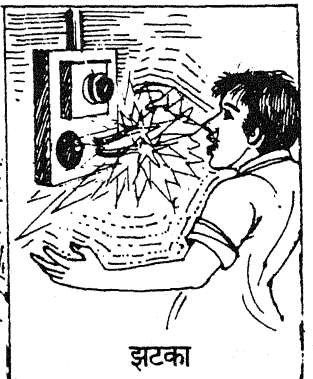
ज्योतिषि | ज्वार-भाटा | ज्वालामुखी | झटका

झटकारना | झब्बा | झाँकी | झाड़

झटकारना – *क्रि०* चीज़ को इस तरह तेज़ी से नीचे-ऊपर हिलाना कि धूल आदि झड़ जाए या पानी झड़ जाए; जैसे – कपड़े झटकारना, बाल झटकारना।

झड़ी – *स्त्री०* लगातार वर्षा। *प्र०* कई दिनों से बारिश की झड़ी लगी हुई है।

झपकना – *क्रि०* 1. पलकें गिरना; जैसे – तेज़ चकाचौंध से आँखों का झपकना। 2. आँखें लग जाना। *प्र०* आँखें झपक गई थीं, मैं तुम्हारी बातें ठीक से नहीं सुन पाया।

झपकी – *स्त्री०* थोड़ी देर की हल्की नींद, ऊँघ। *प्र०* उसकी बातें सुनते-सुनते मुझे झपकी आ गई थी, इसीलिए मैं पूरी बातें नहीं सुन पाया।

झपट्टा – *पु०* झपटना, झपट, लपक। *मु०* *झपट्टा मारना* – झपटना। *प्र०* बाज ने झपट्टा मारकर चिड़िया को पकड़ लिया।

झब्बा – *पु०* फुँदना, तारों या सूत का सुंदर-सा बना गुच्छा जो कपड़ों, गहनों या पगड़ी आदि पर लगाया जाता है। *प्र०* पुलिस और सेना में कुछ जवानों के कंधों, पगड़ियों या टोपी पर झब्बे लगे होते हैं।

झरना – 1. *पु०* (क) पहाड़ से नीचे गिरनेवाला पानी का सोता, चश्मा, निर्झर। (ख) अनाज छानने की बड़ी छलनी। 2. *क्रि०* नीचे गिरना, झड़ना। *प्र०* पतझड़ में पेड़ से पत्ते झरते हैं।

झलक – *स्त्री०* ज़रा-सा दिखना, हल्का-सा दिखाई पड़ जाना। *प्र०* मेले में मैंने उसकी एक झलक देखी अवश्य थी पर मिला नहीं था।

झाँकी – *स्त्री०* किसी घटना, दृश्य, चीज़, व्यवस्था, प्रदेश, व्यक्ति आदि का बनाकर दिखाया गया रूप; जैसे – जलियाँवाले बाग की झाँकी, सीता-हरण की झाँकी, चाय-बागान की झाँकी, केरल की झाँकी, राम की झाँकी, जन्माष्टमी की झाँकी, आदि।

झाड़ – 1. *पु०* (क) बड़ी झाड़ी, बेकार पौधा। *प्र०* यह सारा झाड़ उखाड़कर साफ़ कर दो। (ख) फ़ानूस, झाड़-फ़ानूस, कंदील; जैसे–चार मोमबत्तियों का झाड़, आठ बल्बों का झाड़। 2. *स्त्री०* फटकार, डाँट। *मु०* *झाड़ पड़ना* – फटकारा जाना, फटकार पड़ना। *झाड़ पिलाना* – झाड़ना, फटकारना, झाड़ना-फटकारना, झिड़कना। *प्र०* कक्षा में रोज़-रोज़ शैतानी करने पर अध्यापक ने रमेश को अच्छी झाड़ पिलाई। *झाड़ लगाना* – दे० झाड़ पिलाना।

झाड़-फूँक – *स्त्री०* मंत्र-तंत्र, ओझाई-सोखाई,

जंतर-मंतर, रोग, परेशानी आदि को दूर करने के लिए झाड़ना-फूँकना। प्र० झाड़-फूँक से कुछ नहीं होगा, दवा-दारू करो।

झामक – पु० जली हुई ईंट, झाँवाँ।

झालर – स्त्री० लटकता हुआ, कटावदार या कढ़ाई किया हुआ किनारा जो शोभा के लिए लगाया जाता है; जैसे – धातु की झालर, कपड़े की झालर, फूल की झालर।

झिरी – स्त्री० छोटी दरार। प्र० मेज़ में तख़्ते ठीक से सटाए नहीं गए हैं, थोड़ी झिरी रह गई है।

झिल्ली – स्त्री० 1. खाल की बहुत पतली तह, परदा; जैसे – कान की झिल्ली। 2. ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज़ दिखाई पड़े। 3. झींगुर; जैसे– झिल्लियों की झंकार।

झिल्लीदार – वि० जिस पर झिल्ली हो, जिसकी ऊपरी तह बहुत पतली हो; जैसे – बतख़ के छिल्लीदार पैर।

झींगा – पु० एक छोटी मछली जिसके मुँह और पूँछ पर छोटे बाल होते हैं।

झींगुर – पु० एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो अँधेरे घरों आदि में रहता है और झीं-झीं की आवाज़ करता है।

झीना – वि० बारीक, बहुत महीन, पतला; जैसे – झीना कपड़ा, झीना परदा।

झुकना – क्रि० 1. आगे को टेढ़ा होना, निहुरना। प्र० बूढ़ा भिखारी झुक गया है, बेचारा लाठी के सहारे चल रहा है। 2. हार मानना, हार मानने या समझौता करने को मज़बूर होना। प्र० अंत में शासन को आंदोलनकारियों के आगे झुकना पड़ा।

झुकाव –पु० मन का किसी ओर लगना या झुकना, रुझान, प्रवृत्ति। प्र० उसका प्रारंभ से ही झुकाव राजनीति की ओर है।

झुग्गी –स्त्री० कुटिया, झोंपड़ी, घास-फूँस का बना हुआ छोटा घर; झुग्गी-झोंपड़ी। प्र० बड़े-बड़े शहरों में ग़रीब मज़दूरों ने जगह-जगह झुग्गियाँ बना रखी हैं।

झुरमुट –पु० सटे-सटे या पास-पास उगे हुए झाड़ों या छोटे घने पेड़ों का झुंड। प्र० पिकनिक मनाने गई टोली ने एक झुरमुट के नीचे बैठकर खाना खाया।

झुर्री –स्त्री० चमड़ी में पड़ी हुई सिकुड़न जो प्रायः खून की कमी के कारण बीमारों और बूढ़ों के शरीर पर होती है। प्र० थोड़ी उम्र में ही बीमारी के कारण बेचारे की चमड़ी लटक गई है और उस पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं।

झिल्लीदार | झींगा | झींगुर | झुग्गी
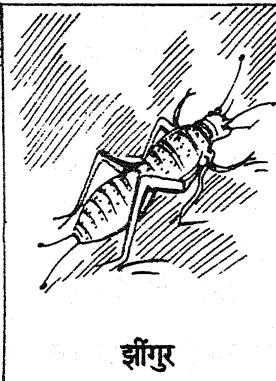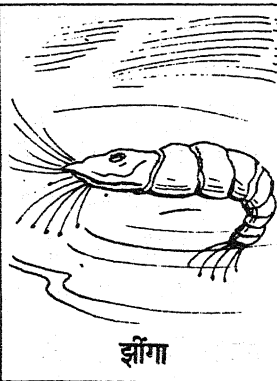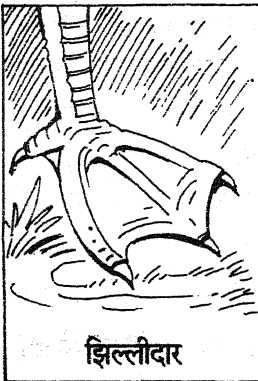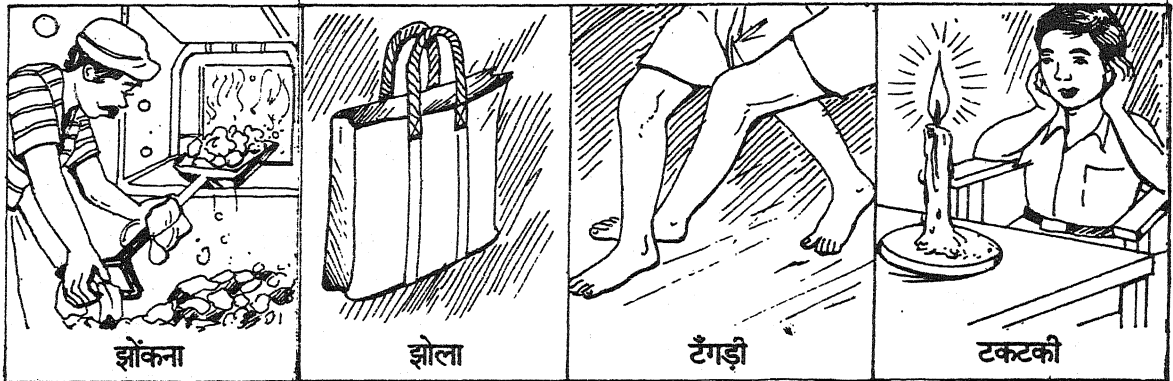
झुलसना –*क्रि०* तेज़ धूप में लगातार कई दिनों तक रहने, बहुत अधिक गर्मी या आग की आँच के कारण किसी चीज़ के ऊपरी भाग का जल जाना, चमड़ी का जलकर काला पड़ जाना या बालों का झौंस जाना। *प्र०* तेज़ आँच से बच्चे का मुँह झुलस गया।

झूठा –*वि०* 1. असत्य, जो झूठ हो। *प्र०* उसकी ये बातें झूठी हैं। 2. जो झूठ बोलता हो, झूठ बोलनेवाला, असत्यवादी। *प्र०* वह आदमी झूठा है, उसका एतबार मत करना। 3. नक़ली, बनावटी; जैसे – झूठे मोती।

झूम खेती –*स्त्री०* पहाड़ी स्थानों की जनजातियाँ स्थान बदल-बदलकर खेती करती हैं। इस खेती को झूम खेती कहते हैं।

झोंकना –*क्रि०* 1. भाड़, भट्ठी, आग आदि में किसी वस्तु को फेंकना; जैसे– भाड़ में लकड़ी झोंकना, भट्ठी में कोयला झोंकना, खोई झोंकना। 2. धक्का देना, धकेलना। *प्र०* डाकुओं ने उसे लूटा और लूटने के बाद उसे कुएँ में झोंक दिया। 3. किसी ऐसे काम में लगा देना जो मनचाहा न हो। *प्र०* सोनू बड़ा चालाक है, खुद तो अपने लिए साफ़-सुथरा काम चुना और मुझे गंदे-गंदे कामों में झोंक दिया।

झोला –*पु०* कपड़े की बड़ी झोली, थैला।

झोली –*स्त्री०* 1. छोटा थैला। 2. भीख माँगने के लिए फैलाया गया कपड़ा या आँचल या साड़ी-चादर का पल्ला। *प्र०* बेटा, मेरी झोली भर दो, राम तेरा भला करेगा।

झौआ –*पु०* 1. (बाँस की टहनी या अरहर के तने की बनी) खँचिया, खाँचा। यह सामान रखने के काम आता है। 2. एक पेड़, थ्यूजा, मोरपंखी।

★

ट

–टवर्ग का पहला व्यंजन।

टँगड़ी –*स्त्री०* टाँग, पैर, पाँव। *मु० टँगड़ी खींचना* – गिराने की कोशिश करना, आगे बढ़ने में रुकावट डालना। *प्र०* उनके लाख टँगड़ी खींचने के बावजूद तुम आगे बढ़ते जा रहे हो।

टकटकी –*स्त्री०* किसी एक स्थान पर टिकी हुई नज़र, बिना पलक झपकाए देखना, स्थिर दृष्टि। *मु० टकटकी लगाना* –बिना पलक गिराए कहीं एक स्थान पर देखना। *प्र०* सूरज की ओर तुम देर तक टकटकी नहीं लगा सकते।

टकसाल –*स्त्री०* 1. सिक्के ढालने की फ़ैक्टरी, सिक्के बनाने की जगह, टंकशाला। *प्र०* भारत में

कई टकसालें हैं। 2. ख़ज़ाना, सिक्कों का भंडार। प्र० हमारे यहाँ टकसाल नहीं है जो रोज़ रुपए माँगने चले आते हो।

टक्कर – *स्त्री०* 1. दो वस्तुओं का तेज़ी के साथ आपस में भिड़ जाना, भिड़ंत, टकराहट; जैसे – ट्रेन और ट्रक की टक्कर। 2. मुक़ाबला। प्र० दोनों पहलवानों की कल टक्कर होगी। 3. मुठभेड़। प्र० कल जंगल में डकैतों और पुलिस की टक्कर हो गई और सारे डाकू मारे गए।

टखना – *पु०* एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ, पैर का गट्टा, गिट्टा।

टटोलना – *क्रि०* 1. किसी चीज़ को ढूँढ़ने या उसका पता लगाने के लिए हाथ इधर-उधर रखना। प्र० बत्ती नहीं है तो क्या हुआ, मैं अभी टटोलकर बताता हूँ कि वह चीज़ है भी या नहीं। 2. बातों-बातों में ही किसी के मन या हृदय की बात जानने की कोशिश करना। प्र० तुम ज़रा टटोलकर देखो कि वह क़र्ज़ देगा भी या नहीं। 3. उँगलियों से छूकर पहचानना। प्र० दृष्टिहीन लोग (अंधे) पुस्तकें टटोलकर पढ़ लेते हैं।

टट्टी – *स्त्री०* 1. पाख़ाना (पाख़ानाघर, मल)। प्र० घर में टट्टी किधर है ? 2. छोटा हल्का टट्टर; जैसे – ख़स की टट्टी। 3. आड़ या रक्षा के लिए बाँस आदि की हल्की दीवार; जैसे – बाँस की टट्टी। 4. बाँस की खपच्चियों, फट्टियों की छाजन जिस पर अंगूर की बेलें चढ़ाते हैं। *मु०* *धोखे की टट्टी* – कोई ऐसा काम या ऐसी बात या चाल जिससे धोखा खाकर लोग नुकसान उठाएँ। प्र० उसकी यह बात धोखे की टट्टी है, सम्हलकर रहना। *टट्टी की आड़ में शिकार खेलना* – छिपकर कोई बुरा काम करना। प्र० वह सीधा-साधा नहीं है, टट्टी की आड़ में शिकार खेलता है।

टन – 1. *पु०* एक हज़ार किलो का एक तौल जिसमें लगभग 28 मन होते हैं। 2. *स्त्री०* किसी धातु पर चोट करने की आवाज़, टंकार। प्र० घंटा टन-टन बजा और बच्चों की छुट्टी हो गई।

टपाटप – *अ०* 1. शीघ्रता से, झटपट, झटाझट। प्र० टपाटप सारे गिरे आम चुन लो। 2. टप-टप ध्वनि करते हुए। प्र० ओले टपाटप गिर रहे हैं।

टब – *पु०* पानी आदि रखने का बड़ा और चौड़े मुँह का बरतन जिसका आकार नाँद-जैसा होता है। प्र० टब में पानी भर दो, गर्मी का मौसम है, काम आएगा।

टमटम – *स्त्री०* ऊँचे-ऊँचे दो पहियों की खुली गाड़ी जिसमें एक या दो घोड़े जोते जाते हैं।
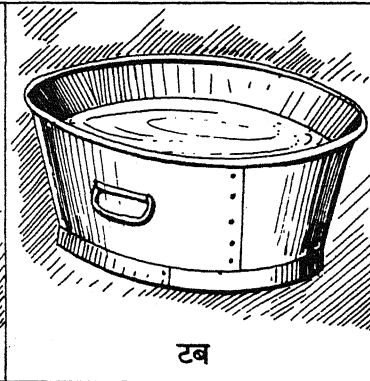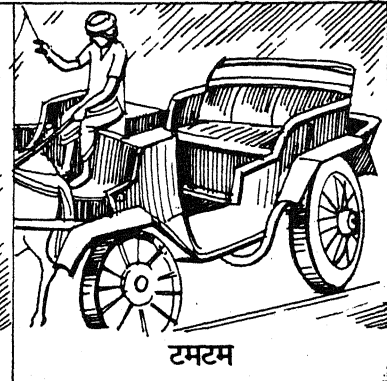
टखना | टब | टमटम
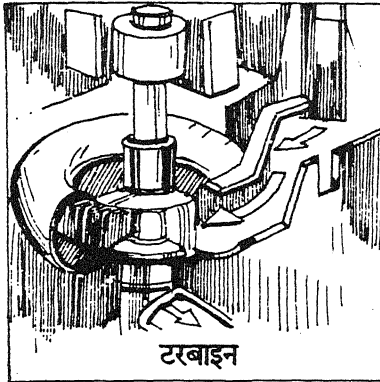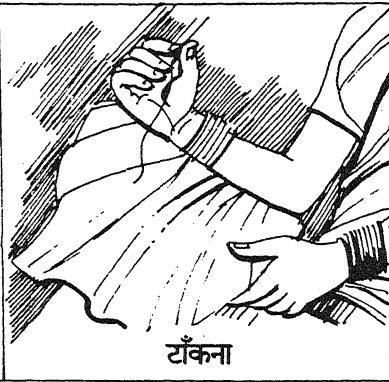
टरबाइन टाँकना टाँगना

टरकना –*क्रि०* किसी स्थान से धीरे से हट जाना, चला जाना, खिसक जाना। *प्र०* अब तुम टरक जाओ, ये लोग आ रहे हैं झगड़ा अवश्य करेंगे।

टरकाना –*क्रि०* टालना, कुछ बहाना बनाकर टाल देना। *प्र०* क़र्ज़ वसूल करने के लिए आज फिर वह आएगा। कैसे उसे टरकाऊँ समझ में नहीं आता।

टरबाइन –*स्त्री०* इंजन जो पानी की तेज़ धारा, भाप या हवा से चलता है तथा जिससे बिजली पैदा करते हैं। *प्र०* दिल्ली में इंद्रप्रस्थ एस्टेट के बिजलीघर में टरबाइन भाप से चलती है।

टर्र, टर्र-टर्र –*स्त्री०* मेढक के बोलने की आवाज़।

टर्राना –*क्रि०* 1. टर्र-टर्र बोलना। *प्र०* मेढक टर्रा रहे हैं, बारिश होगी। 2. घमंड से बातें करना। *प्र०* वह बहुत टर्राता है, कभी उसे मज़ा चखाना है। 3. बोलते जाना, लगातार बोलते जाना। *प्र०* जाने कितनी देर से टर्रा रहे हो, चुप भी हो जाओ। 4. कठोर वचन बोलना। *प्र०* जब देखो तुम टर्राने लगते हो, सभ्यता से बात करना तो सीखो।

टलना –*क्रि०* 1. हटना, स्थगित होना, आगे बढ़ना। *प्र०* परीक्षा की तारीख़ दस दिन टल गई है, अब तैयारी के लिए और समय मिल जाएगा। 2. न रहना।

टवर्ग –देवनागरी वर्णमाला में ट से ण तक पाँच व्यंजनों का वर्ग।

टसक –*स्त्री०* रह-रहकर होनेवाली पीड़ा, कसक, टीस, चसक, तभसक। *प्र०* लगता है चोट पक गई है, बड़े ज़ोर की टसक हो रही है।

टसकना –*क्रि०* किसी चीज़ का अपने स्थान से हटना, खिसकना। *प्र०* बिच्छू अभी यहीं तो था, लगता है कहीं टसक गया।

टसकाना –*क्रि०* खिसकाना, सरकाना, जगह बदलना, हटाना। *प्र०* आलमारी को थोड़ा आगे टसका दो, तो मेज़ भी आ जाए।

टाँकना –*क्रि०* 1. मोटी सिलाई करके जोड़ना, गूलना। *प्र०* इन दोनों कपड़ों को एक में टाँक दो। 2. नोट करना। *प्र०* इस महीने की आमदनी और ख़र्च कहीं टाँक रखना, ज़रूरत पड़ सकती है।

टाँका –*पु०* 1. शरीर के घाव या चोट की सिलाई, स्टिच। *प्र०* चोट ज़्यादा लगी है, कई टाँके लगाने पड़ेंगे। 2. धातुओं के जोड़ने की चीज़। *प्र०* थाली में टाँका लगाना पड़ेगा। 3. (कपड़े में) दूर-दूर की सिलाई या सीवन।

टाँगना –*क्रि०* 1. लटकाना। *प्र०* कलेंडर दीवाल पर

टाँग दो। 2. चढ़ाना। प्र० खूनी फाँसी पर टाँग दिया गया।

टाँगा – पु० दे० ताँगा।

टाइगर बेल – स्त्री० एक प्रकार की लता जिसके फल रोएँदार होते हैं, अतः कपड़ों में चिपक जाते हैं।

टाइप – पु० 1. शीशे के ढले हुए अक्षर जो छपाई के काम आते हैं। प्र० ये टाइप घिस गए हैं, इनसे छपाई अच्छी नहीं होगी। 2. प्रकार, क़िस्म। प्र० दुनिया में लोग कई टाइप के होते हैं।

टाइप मशीन – स्त्री० दे० टाइपराइटर।

टाइपराइटर – पु० टाइप करने की मशीन; टंकणयंत्र।

टाइपिस्ट – पु० टाइप करनेवाला, टंकक।

टाइमटेबल – पु० वह काग़ज़ जिस पर भिन्न-भिन्न कार्यों के करने या पढ़ने-पढ़ाने के समय दिए होते हैं, समयसारणी।

टाउन – पु० क़स्बा, शहर से छोटी और गाँव से बड़ी बस्ती।

टाउनएरिया – पु० क़स्बा, छोटा शहर।

टाउनहॉल – पु० शहर की वह इमारत जिसमें सरकार या जनता से संबंधित सभाएँ या बैठकें आदि होती हैं।

टापू – पु० चारों ओर पानी से घिरा हुआ ज़मीन का छोटा या बड़ा भाग।

टॉफ़ी – स्त्री० काग़ज़ में लिपटी एक प्रकार की पश्चिमी मिठाई जो मुख्यतः दूध और चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

टॉयगन – स्त्री० बच्चों की बंदूक, बच्चों के खेलने की बंदूक।

टायफ़ायड –एक प्रकार का बुख़ार, मियादी बुख़ार।

टॉर्च – पु० बैटरी या बिजली के कनेक्शन से जलने-वाली एक चीज़ जो अँधेरे में कुछ देखने के काम आती है, चोरबत्ती, बैटरी (मुख्यतः बैटरी से जलने के कारण कुछ पूर्वी क्षेत्रों में टॉर्च के अर्थ में बैटरी का भी प्रयोग चलता है)।

टार्टर – पु० दाँतों पर जमा मैल।

टालना – क्रि० 1. किसी कार्य के लिए दूसरा समय निश्चित करना, स्थगित करना, आगे बढ़ाना; जैसे – विवाह टालना, परीक्षा टालना, बैठक टालना। 2. टरकाना, हटाना। प्र० आज तो किसी तरह उस आदमी को टालो, कल-वल मैं रुपयों का प्रबंध करूँगा।

टिंडा – पु० एक गोल छोटी सब्ज़ी, टिंड।
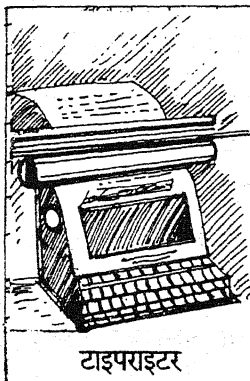
टाइपराइटर | टॉयगन | टॉर्च | टिंडा

टिटहरी | टिड्डी | टिरौस उपग्रह | टीका
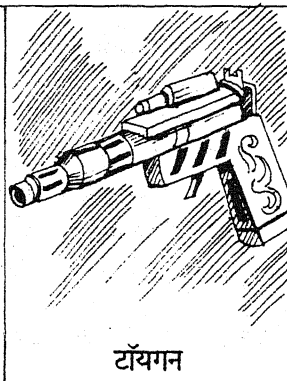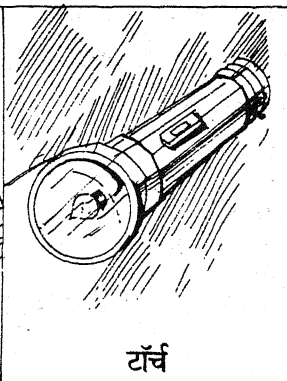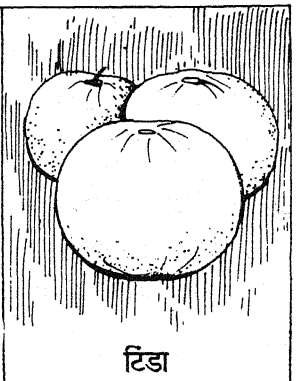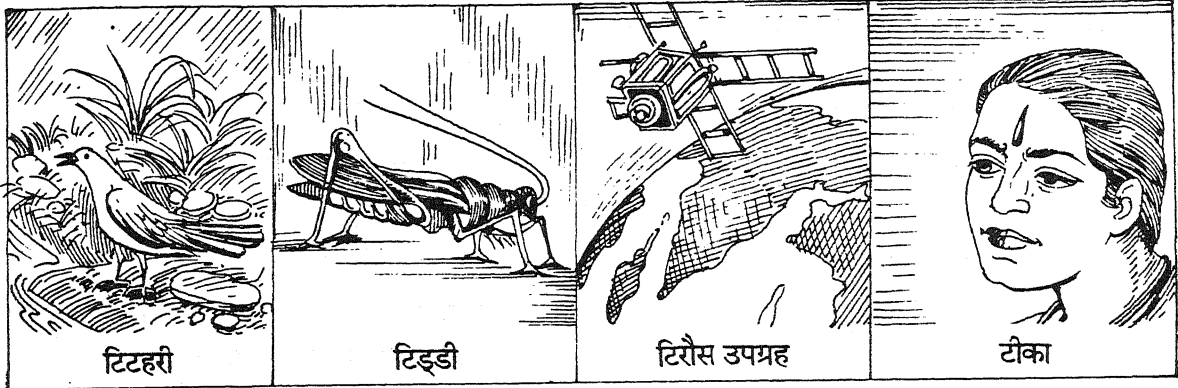
टिक –स्त्री॰ 1.✓ का निशान। प्र॰ नीचे के शब्दों में पुल्लिंग संज्ञा शब्दों पर टिक लगाओ। 2. घड़ी की आवाज़।

टिकट –पु॰ 1. काग़ज़ या पतले गत्ते (दफ़्ती) का चौकोर टुकड़ा जिस पर रक़म छपी होती है और जो रेलगाड़ी, बस, सिनेमा, नाटक आदि में 'प्रवेशपत्र' का काम करता है। 2. लाटरी का टिकट। 3. चिट्ठी आदि भेजने के लिए लिफ़ाफ़े आदि पर चिपकाया जानेवाला निश्चित मूल्य का काग़ज़ का छपा टुकड़ा।

टिकाऊ –वि॰ 1. लंबे समय तक टिकनेवाला, मज़बूत, जैसे –टिकाऊ जूता। 2. काफ़ी समय तक चलनेवाला; जैसे–टिकाऊ कपड़ा, टिकाऊ संबंध।

टिकिया –स्त्री॰ 1. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा; जैसे–दवा की टिकिया (टेबलेट), कोयले की टिकिया, आलू की टिकिया। 2. किसी भी शक्ल (गोल, चौकोर, अंडाकार आदि) का टुकड़ा; जैसे–साबुन की टिकिया।

टिक्की –स्त्री॰ दे॰ टिकिया।

टिटनस –एक रोग जो कहीं त्वचा के कट जाने से एक ख़ास तरह के रोगाणु के शरीर के भीतर प्रवेश से हो जाता है, जमुहाँ।

टिटहरी, टिटिहरी –स्त्री॰ पानी के किनारे रहनेवाली एक छोटी चिड़िया (ऐसा कहा जाता है कि आकाश के गिरने के भय से वह पैर ऊपर करके सोती है), कुररा।

टिड्डा – पु॰ एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा।

टिड्डी –स्त्री॰ एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसका दल-का-दल आता है और पेड़-पौधों की पत्तियों और फ़सल को खा जाता है।

टिन –पु॰ 1. क़लई की हुई लोहे की चद्दर, टीन। 2. कनस्तर, डिब्बा; जैसे –तेल का टिन, घी का टिन, मिट्टी के तेल का टिन। 3. क़लई, राँगा।

टिप –स्त्री॰ होटल के बैरे को दिया जानेवाला पैसा, इनाम।

टिब्बा –पु॰ रेगिस्तान में रेत या बालू का छोटा या बड़ा टीला।

टिरौस उपग्रह –पु॰ ऋतु की जानकारी देनेवाला उपग्रह, ऋतु उपग्रह।

टीका –पु॰ 1. मस्तक पर चंदन या रोली आदि का उँगली या साँचे से बनाया हुआ चिह्न, तिलक; जैसे–चंदन का टीका, रोली का टीका। 2. विवाह के पूर्व की एक रस्म, तिलक, सगाई। 3. संक्रामक रोग से बचाने के लिए सूई द्वारा शरीर में दवा

पहुँचाने की क्रिया, रोगों से बचाने या रोगों को ठीक करने के लिए शरीर में दवा पहुँचाना, सूई, इंजेक्शन; जैसे –टिटन्स का टीका, पोलियो का टीका, हैज़े का टीका, मियादी बुख़ार का टीका। 4. व्याख्या, कुंजी; जैसे – गीता की टीका।

टी-पार्टी – *स्त्री०* चाय पार्टी।

टी॰ बी॰ – *पु॰* तपेदिक, दिक, राजयक्ष्मा, यक्ष्मा, राजरोग।

टी॰ वी॰ – *पु॰* टेलिविज़न, दूरदर्शन।

टी-सेट, टी-सैट – *पु॰* चाय पीने के प्यालों, चायदानी, दूधदानी और चीनीदानी का सेट।

टुकड़ी – *स्त्री॰* सैनिकों या पुलिस का छोटा दल, समूह या जत्था।

टूथपेस्ट – *पु॰* दाँत साफ़ करने का मलहम जैसा मंजन, दंतमंजन।

टेक – *स्त्री॰* 1. ओट, सहारा। *प्र॰* पौधों और लताओं को सहारा देने के लिए लकड़ी, लोहे या बाँस की टेक लगा दो। 2. मन में ठानी हुई बात, हठ, ज़िद। *प्र॰* मोहन अपनी टेक से टस-से-मस नहीं होगा। 3. गीत का स्थायी पद, वह पंक्ति जो बार-बार आती है या गाई जाती है।

टेकना – *क्रि॰* 1. सहारे के लिए किसी चीज़ को दीवाल आदि से सटाना; जैसे – छड़ी टेकना, डंडा टेकना। 2. अपने लिए मसनद, तकिया या दीवाल का सहारा लेना। *प्र॰* थक गए हो, दीवाल से टेक लगाओ।

टेकनिकल – *वि॰* तकनीकी, विभिन्न विषयों की तकनीकों से संबंधित। *प्र॰* अपने देश में बहुत से टेकनिकल स्कूल खुल गए हैं।

टेढ़ापन – *पु॰* टेढ़ा होने की स्थिति, टेढ़ा होने का भाव, टेढ़ाई।

टेढ़ा-मेढ़ा – *वि॰* जो सीधा न हो, टेढ़ापन लिए हुए, जो कई-कई जगह टेढ़ा हो; जैसे –टेढ़ा-मेढ़ा खेत, टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता, टेढ़ी-मेढ़ी लक़ीर।

टेनिस – *पु॰* एक प्रकार का पश्चिमी खेल जिसमें कपड़े से ढकी रबड़ की गेंद को जाल लगे रैकिट (डंडा, बल्ला) से मारते हैं, लॉन टेनिस, टेबल टेनिस।

टेबल – *स्त्री॰* 1. मेज़। *प्र॰* चाय टेबल पर रख दो; ऐसे ही – टेबललैंप, टेबल टेनिस। 2. तालिका; जैसे – टाइमटेबल।

टेबललैंप – *पु॰* मेज़ पर रखने का बिजली का लैंप।

टेबिल – *स्त्री॰* दे॰ टेबल।
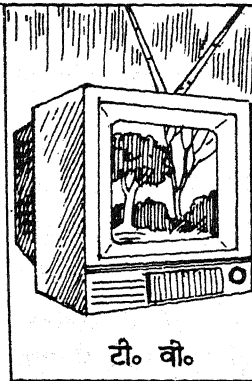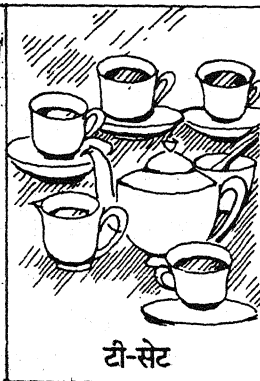
टी॰ वी॰ | टी-सेट | टेनिस | टेबललैंप

टेबुल – स्त्री॰ दे॰ टेबल।
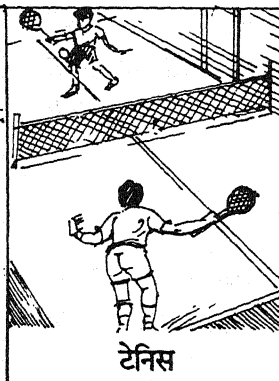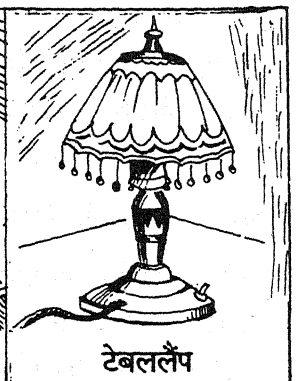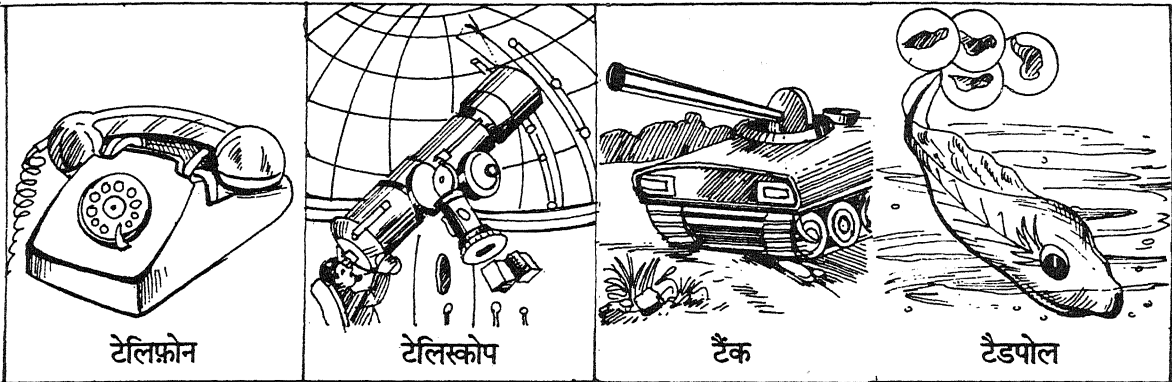
टेर – स्त्री॰ पुकार, आह्वान, पुकारने की ध्वनि, बुलाने की आवाज़। प्र॰ हे भगवान्! आप मुझ दुखिया की टेर सुन लें।

टेरिकॉट – पु॰ टेरीन और सूत कपास के धागों का मिला-जुला कपड़ा।

टेरिलीन, टेरीलिन, टेरेलीन – पु॰ कृत्रिम धागों से बना कपड़ा।

टेलिग्राम – पु॰ तार द्वारा भेजी गई ख़बर, तार।

टेलिफ़ोन – पु॰ तार द्वारा जुड़ा हुआ एक यंत्र जिसकी सहायता से दूर से ही दो व्यक्ति आपस में बात कर सकते हैं, दूरभाष।

टेलिविज़न – पु॰ दे॰ टेलीविज़न।

टेलिस्कोप – पु॰ दूरबीन, दूरदर्शक यंत्र।

टेलीग्राम – पु॰ दे॰ टेलिग्राम।

टेलीप्रिंटर – पु॰ वह यंत्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयं टाइप हो जाता है।

टेलीफ़ोन – पु॰ दे॰ टेलिफ़ोन।

टेलीविज़न – पु॰ एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से दूर के दृश्यों को उनकी ध्वनि के साथ देखा-सुना जा सकता है, दूरदर्शन, टी॰वी॰।

टेलीस्कोप – पु॰ दे॰ टेलिस्कोप।

टैंक – पु॰ 1. यंत्र से चलनेवाली एक प्रकार की बड़ी तोपगाड़ी। 2. पानी रखने का बड़ा हौज़, बड़ी टंकी।

टैक्स – पु॰ महसूल, कर, चुंगी; जैसे – सेल्सटैक्स, इनकमटैक्स, टोलटैक्स।

टैक्सी – स्त्री॰ किराए पर चलनेवाली कार, तिपहिया स्कूटर तथा टेंपो आदि।

टैक्सीस्टैंड – पु॰ वह स्थान जहाँ टैक्सियाँ ठहरती हैं तथा जहाँ से लोग टैक्सियाँ किराए पर लेते हैं।

टैडपोल – पु॰ मेढक के अंडों के फूटने पर निकले प्रारंभिक अवस्था के मेढक जो बड़े होकर मेढक बन जाते हैं, बेगची।

टैल्कम पाउडर – पु॰ टैल्क नामक मुलायम खनिज से बना पाउडर, शरीर पर लगाने का पाउडर, टॉयलेट पाउडर।

टोकना – क्रि॰ 1. किसी को बातचीत करते समय, काम करते समय या कहीं जाते समय कुछ कहकर रोकना या पूछताछ करना। प्र॰ कहीं जाते समय टोकना अच्छा नहीं माना जाता। 2. ग़लती की ओर

ध्यान दिलाना। प्र० मैं बोल रहा था, और बोलते समय ही उन्होंने टोक दिया कि आप ग़लत बोल रहे हैं।

टोकरी –स्त्री० छोटा टोकरा, डलिया, डाली।

टोड –पु० मेढक-जैसा पानी का एक जीव जो कभी ज़मीन पर तथा कभी पानी में रहता है।

टोली –स्त्री० कुछ लोगों की मंडली, दल; जैसे – खिलाड़ियों की टोली, नौटंकीवालों की टोली, नाचने-गानेवालों की टोली।

टोस्ट –पु० 1. डबलरोटी (पावरोटी) या ब्रेड का सेंका हुआ टुकड़ा (स्लाइस)। 2. ऐसे दो टोस्टों के बीच में कुछ भरकर बनाई गई खाने की चीज़।

टोस्टर –पु० डबलरोटी (पाव रोटी) या ब्रेड के टुकड़े (स्लाइस) सेंकने का बिजली का एक उपकरण।

ट्यूब –स्त्री० 1. रबर का पहिया जो ट्रक, बस, कार आदि के पहियों में टायर के नीचे होते हैं तथा जिनमें हवा भरी जाती है। 2. नली। 3. वह चीज़ जिसमें मरहम-जैसी दवा भरी हो। प्र० बोरोलीन की एक ट्यूब लेते आना। 4. ट्यूबलाइट की गैस-भरी गोल लंबी चीज़।

ट्यूबलाइट –पु० 1. डंडानुमा ट्यूब की रोशनी जो बल्ब से अधिक तेज़ होती है। 2. डंडानुमा ट्यूब। प्र० विवाह में अच्छी रोशनी के लिए पाँच-छह ट्यूबलाइटें लगवा दो।

ट्यूबवेल –पु० ज़मीन में धँसाया हुआ लोहे का पाइप जिससे मशीन के ज़रिए पानी प्राप्त किया जाता है, नलकूप।

ट्रंक –पु० कपड़ा आदि रखने का लोहे का बहुत बड़ा संदूक, बड़ा बक्स।

ट्रक –स्त्री० भारी माल ढोने की प्रायः छः पहियों की भारी मोटरगाड़ी।

ट्रांजिस्टर –पु० एक प्रकार का छोटा रेडियो जो बैटरी या बिजली से चलता है।

ट्राम –स्त्री० बड़े शहरों में बिजली की सहायता से लोहे की पटरियों पर चलनेवाली कई डिब्बों की गाड़ी।

ट्रॉली –स्त्री० स्टेशन पर सामान इधर-से-उधर पहुँचानेवाली या खाने की मेज़ के पास खाना आदि रखने की चार पहियोंवाली छोटी गाड़ी।

ट्रे –स्त्री० थाल, किश्ती, चाय के प्याले, चायदानी, दूधदानी, चीनीदानी तथा चाय के साथ खाने की चीज़ें रखने का थोड़ा बड़ा बरतन।
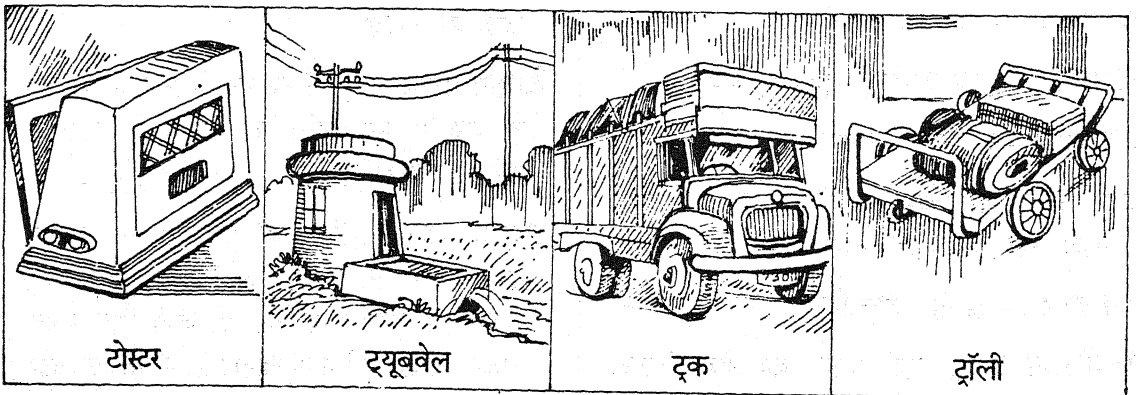
टोस्टर | ट्यूबवेल | ट्रक | ट्रॉली

ट्रेन ट्रैक्टर ठटरी ठठेरा
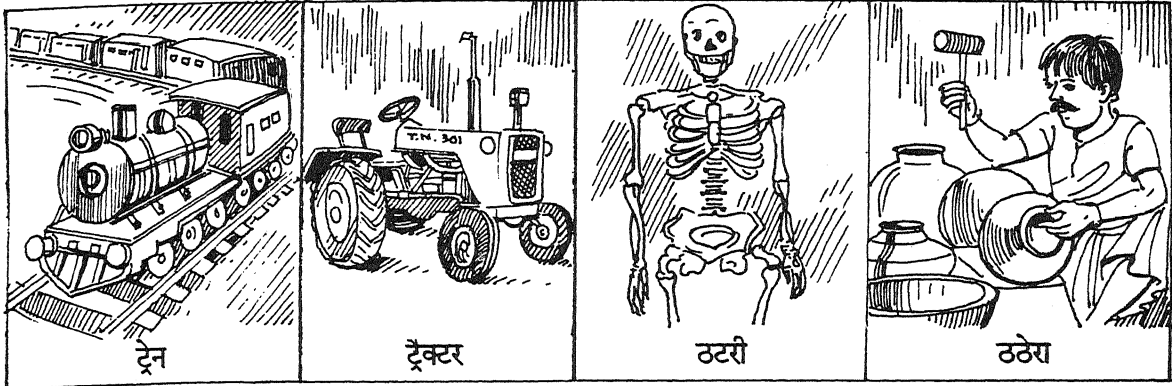
ट्रेकोमा – पु० आँखों में होनेवाला छूत का एक रोग जिसमें भीतर सूजन हो जाती है।

ट्रेन – स्त्री० 1. रेल की पटरी। 2. रेलगाड़ी।

ट्रेनिंग – स्त्री० किसी कार्य को सिखाने के लिए दिया जानेवाला व्यावहारिक शिक्षण, प्रशिक्षण। प्र० मैं मोटर ड्राइविंग की ट्रेनिंग ले रहा हूँ।

ट्रेलर – पु० 1. किसी बड़ी गाड़ी के पीछे जोड़कर चलाई जानेवाली बिना इंजन की छोटी गाड़ी; जैसे – ट्रैक्टर का ट्रेलर। 2. फ़िल्म के पहले दिखाया जानेवाला किसी आनेवाली फ़िल्म का उसी हॉल में छोटा-सा अंश।

ट्रेस करना – मूल चित्र, रेखाचित्र या ख़ाका आदि को ऊपर पतला कागज़ रखकर उतारना। प्र० विश्व का एक नक़्शा' ट्रेस कर लो और उसमें बड़े-बड़े शहर दिखाओ।

ट्रेसिंगपेपर – ट्रेस करने का बहुत झीना कागज़।

ट्रैक्टर – पु० खेत जोतने के काम आनेवाला मशीनी हल।

ट्रैफ़िक – पु० यातायात, गाड़ियों का आना-जाना। प्र० हर ड्राइवर को ट्रैफ़िक के नियम जानने चाहिए।

ठ

– देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का दूसरा व्यंजन।

ठटरी – स्त्री० हड्डियों का ढाँचा, कंकाल, अस्थि-पंजर। प्र० यदि ठीक से दवा न की जाए तो तपेदिक का मरीज़ सूखकर ठटरी हो जाता है।

ठट्ठा – पु० हँसी, दिल्लगी, मज़ाक, हँसी-मज़ाक। प्र० उस पहलवान का मुक़ाबला कर पाना कोई ठट्ठा नहीं है।

ठठेरा – पु० धातु को पीटकर उसके बरतन बनानेवाला, कसेरा।

ठप्पा – पु० 1. वह साँचा जिसमें रंग लगाकर कपड़े या किसी और चीज़ पर फूल-पत्ती आदि की छपाई करते हैं। 2. छापा। 3. मुहर।

ठसाठस – 1. वि० पूरी तरह या ठूँस-ठूँसकर भरा हुआ, ज़रा-सा भी न ख़ाली होने की स्थिति। प्र० हॉल ठसाठस है। 2. अ० पूरी तरह से। प्र० हॉल ठसाठस भरा है।

ठहाका – पु० ज़ोर की हँसी, अट्टहास, क़हक़हा। *मु० ठहाका लगाना* – बहुत ज़ोर से हँसना। प्र० पिताजी के एक मित्र बात-बात पर ठहाका लगाते हैं।

ठाकुर – *पु॰* 1. भगवान्, ईश्वर; जैसे – ठाकुरबाड़ी (मंदिर)। 2. (पूर्वी हिंदी प्रदेश में) मालिक, ज़मींदार। 3. क्षत्रियों के नाम से पूर्व लगनेवाला शब्द; जैसे – ठाकुर प्रेमसिंह। 4. नाइयों तथा क्षत्रियों आदि की कुछ जाति के नामों के साथ लगनेवाला शब्द; जैसे – भिखारी ठाकुर।

ठानना – *क्रि॰* 1. मन में पक्का निश्चय करना। *प्र॰* मैंने ठान लिया है कि इस वर्ष कक्षा में प्रथम आऊँगा। 2. छेड़ना। *प्र॰* मैं बीमार हूँ और इसी बीच घरवालों ने लड़की की शादी ठान दी।

ठिकाना – *पु॰* 1. रहने या ठहरने की जगह, पता, पता-ठिकाना, अता-पता। *प्र॰* उनका ठिकाना मुझे मालूम है, आपको अभी ले चलता हूँ। 2. भरोसा, विश्वास। *प्र॰* उस आदमी का कुछ ठिकाना नहीं, कहता कुछ है और करता कुछ है।

ठीक – *वि॰* 1. सच, यथार्थ। *प्र॰* तुम्हारी बात ठीक है। 2. शुद्ध, सही। *प्र॰* तुम्हारी भाषा ठीक है। 3. दुरुस्त, अच्छा। *प्र॰* पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। 4. उपयुक्त, मुनासिब, वाजिब। *प्र॰* तुमने बिल्कुल ठीक जवाब दिया।

ठीकठाक – *वि॰* अच्छी तरह, सकुशल, कुशल से। *प्र॰* यहाँ सब लोग ठीकठाक हैं, अपने यहाँ का समाचार देना।

ठीका – *पु॰* दे॰ ठेका।

ठीकेदार – *पु॰* दे॰ ठेकेदार।

ठुकराना – *क्रि॰* 1. ठोकर मारना, लात मारना। 2. तुच्छ, ग़लत या अनुचित समझकर स्वीकार न करना; जैसे – पुरस्कार ठुकराना, प्रस्ताव ठुकराना, सहायता ठुकराना, सम्मान ठुकराना।

ठूँसना – *क्रि॰* दबा-दबाकर भरना। *प्र॰* डिब्बों में सारी चीज़ें ठूँस-ठूँसकर रख दी हैं, अब जगह नहीं है।

ठेंगा – *पु॰* (हाथ का) अँगूठा। *मु॰ ठेंगा दिखाना* – इनकार करना। *प्र॰* पहले तो वह कहा करता था कि समय पर तुम्हारी पूरी मदद करूँगा पर जब समय आया तो ठेंगा दिखा दिया।

ठेका – *पु॰* 1. निश्चित समय पर निश्चित रेट पर कोई काम पूरा करने का वायदा या इक़रार, कंट्रैक्ट। *प्र॰* पिताजी के मित्र ने सड़क बनवाने का ठेका लिया है। 2. ढोलक, मृदंग या तबले पर हाथ से ताल देना।

ठेकेदार – *पु॰* ठेके पर काम करने या करानेवाला।

ठेठ – *वि॰* बिना मिलावट का, शुद्ध, खरा। *प्र॰* सरदारजी ने ठेठ पंजाबी भाषा में 'सत् श्री अकाल' कहकर अभिवादन किया।

ठुकराना ठूँसना ठेंगा
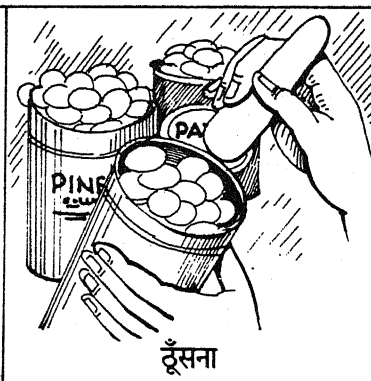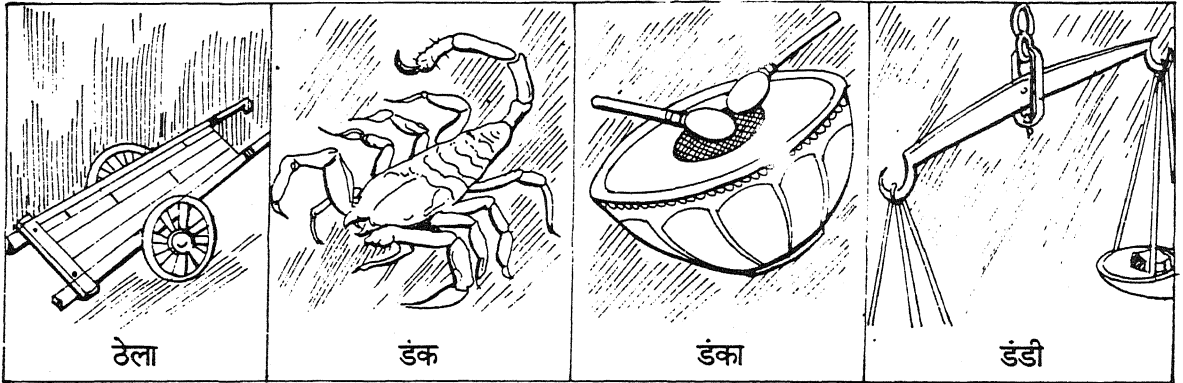
ठेलना – *क्रि०* धक्का देना, धक्का देकर आगे बढ़ाना, ढकेलना, धकेलना। *प्र०* अभी-अभी कार ख़राब हो गई है, ज़रा इसे ठेलकर सड़क के एक किनारे कर दीजिए।

ठेला – *पु०* सामान ढोने की विशेष तरह की गाड़ी जिसे हाथ से ढकेलकर चलाते हैं, हथगाड़िया, हाथगाड़ी।

ठेस – *स्त्री०* (हृदय में लगनेवाली) चोट, (मन को लगनेवाला) आघात। *प्र०* तुम्हारे फ़ेल हो जाने का समाचार सुनकर मुझे बहुत ठेस लगी है।

ठोस – *वि०* 1. जो भीतर से ख़ाली या खोखला न हो और द्रव या तरल भी न हो। *प्र०* पानी तरल पदार्थ है पर बर्फ़ उसका ठोस रूप है। 2. जो ताक़त या धन में खोखला न हो। *प्र०* 1. छोटू पहलवान ठोस है, वह बाज़ी मार लेगा। 2. सेठ किरोड़ीमल नाम के ही किरोड़ी नहीं हैं, उनके पास पैसे भी ख़ूब हैं, वे ठोस आदमी हैं।

★

ड

–देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का तीसरा व्यंजन।

डंक – *पु०* बिच्छू, भिड़, मधुमक्खियों आदि का पीछे का ज़हरीला काँटा, दंश, आँड़।

डंका – *पु०* एक प्रकार का नगाड़ा, धौंसा। *मु० डंका पीटना* – ज़ोर-ज़ोर से सबको सुनाना, प्रचार करना। *प्र०* मोहन हमेशा अपने गुणों का डंका पीटता रहता है। *डंके की चोट पर* – खुले आम, खुल्लम-खुल्ला। *प्र०* मैं डंके की चोट पर कह सकता हूँ कि वह आदमी रिश्वतख़ोर है।

डंडी – *स्त्री०* 1. छोटी और पतली लकड़ी, छोटा डंडा। 2. छाते आदि में लगी हाथ में पकड़ने की पतली छड़ी जिस पर कमानियाँ चढ़ी होती हैं। 3. तराजू का लोहे या लकड़ी का एक छोटा पतला टुकड़ा जिस पर दोनों तरफ पलड़े बँधे होते हैं, डाँड़ी। **डंडी मारना** – लेते समय ज़्यादा और देते समय कम तौलना। *प्र०* तौलकर लेने-देनेवाली चीज़ों के लेन-देन में दूकानदार या फेरीवाले प्रायः डंडी मारते हैं।

डकारना – *क्रि०* 1. डकार लेना, डकार जाना। *प्र०* वे गैस से परेशान हैं, दिन-भर डकारते हैं। 2. दूसरे की धन-संपत्ति हड़प लेना, हज़म कर जाना। *प्र०* पड़ोसी हो या संबंधी, हीरू सभी की धन-संपत्ति डकार जाता है। *मु० डकार तक न लेना* – पता न चलने देना। *प्र०* लखपत दूसरों का माल हज़म कर जाता है और डकार तक नहीं लेता।

डकैत – पु॰ डाका डालनेवाला, डाका मारनेवाला, डाकू, लुटेरा, लुटैत।

डकैती – स्त्री॰ डाका डालने या मारने का काम, लूट।

डग – पु॰ चलने में एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर पैर रखना, फाल, क़दम। मु॰ *डग भरना* – आगे क़दम बढ़ाना। *डग बढ़ाना* – कुछ अधिक तेज़ी से चलना। प्र॰ डग बढ़ाओ नहीं तो देर हो जाएगी।

डगमगाना – क्रि॰ लड़खड़ाना, सँभल न पाना, अस्थिर होना। प्र॰ बीमारी और बुढ़ापे के कारण पिताजी के पैर चलने में डगमगाते हैं।

डटना – क्रि॰ जमना, दृढ़ रहना। प्र॰ हमारी सेना ने दुश्मनों का डटकर सामना किया।

डपटना – क्रि॰ झिड़कना, घुड़कना, फटकारना, डाँटना।

डफ़ – स्त्री॰ हथेली और उँगलियों से बजाया जाने-वाला चमड़ा मढ़ा हुआ एक बाजा, चंग।

डफली– स्त्री॰ छोटा डफ, खँजरी। लो॰ *अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग* – जितने लोग उतने मत। प्र॰ इस देश की अजीब स्थिति है, जितने लोग, उतनी ही राएँ। ठीक ही कहा है – अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग।

डबल – वि॰ दो गुना अधिक, दुगुना, दूना।

डबलरोटी – स्त्री॰ पावरोटी, ब्रेड।

डब्बा – पु॰ 1. ढक्कनदार छोटा बरतन, डिब्बा। 2. रेलगाड़ी का कोठरीनुमा हिस्सा जो अलग किया जा सकता है, कंपार्टमेंट।

डरपोक – वि॰ 1. डरनेवाला। (*विलोम* – निडर)। 2. कायर। (*विलोम* – बहादुर)।

डरावना – वि॰ जिससे डर लगे, भयानक, भयंकर, ख़ौफ़नाक।

डलिया – स्त्री॰ छोटी टोकरी। प्र॰ वह डलिया में फूल आदि लेकर पूजा करने जा रही है।

डसना – क्रि॰ 1. साँप-जैसे विषवाले जंतुओं का काटना। 2. बिच्छू-जैसे ज़हरीले जंतुओं का डंक मारना।

डस्टर – पु॰ झाड़न (ब्लैक बोर्ड साफ़ करने का)।

डाँवाँडोल – वि॰ 1. जो अनिश्चय और संदेह की स्थिति में हो, अस्थिर। प्र॰ वे अब भी शादी के बारे में निश्चित नहीं कर पाए हैं। कई कारणों से डाँवाँडोल हैं कि वहाँ करें या दूसरी जगह। 2. डोलता हुआ,
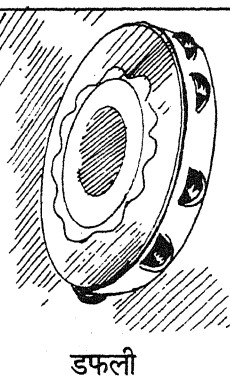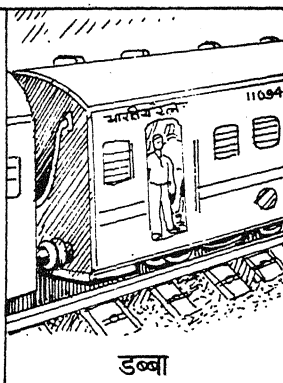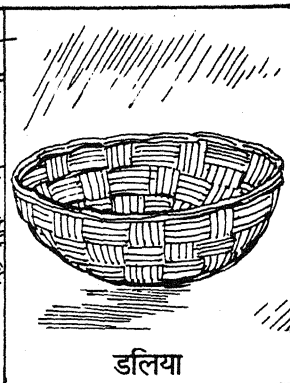
डकैत | डफली | डब्बा | डलिया
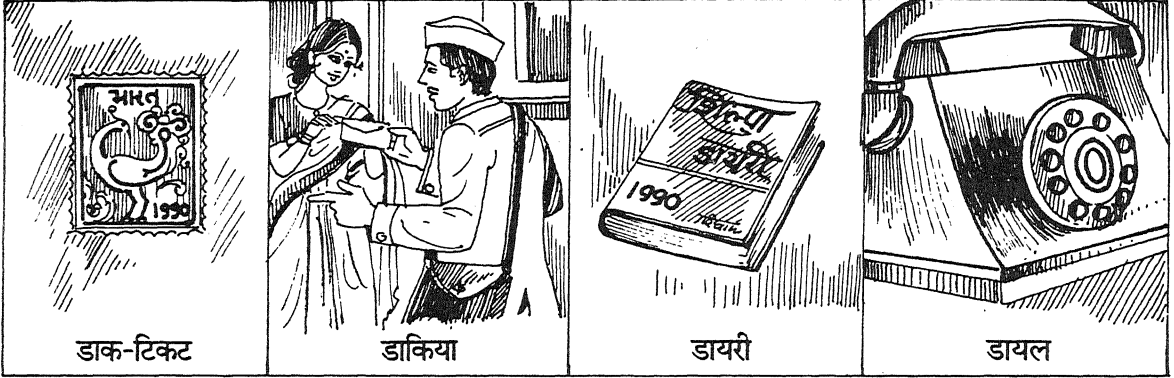
डाक-टिकट डाकिया डायरी डायल

इधर-उधर होता हुआ। *प्र०* नाव आँधी में बहुत ज़्यादा डाँवाँडोल हो रही है, कहीं डूब न जाए। 3. उतार-चढ़ाववाला। *प्र०* मंदी के कारण आजकल व्यापार की स्थिति बहुत ही डाँवाँडोल है।

डाइन – *स्त्री०* 1. चुड़ैल, भूतनी। 2. वह स्त्री जिसकी दृष्टि पड़ते ही कोई अनिष्ट हो जाए।

डाक – *पु०* 1. चिट्ठी, पत्र-पत्रिका, पार्सल आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना; जैसे – डाक-व्यवस्था। 2. डाक से आनेवाली चिट्ठी, काग़-ज़-पत्र आदि। *प्र०* आज अभी डाक आई या नहीं? 3. चिट्ठी, पत्र-पत्रिकाएँ, पार्सल, मनी आर्डर आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने का एक सरकारी प्रबंध।

डाकगाड़ी – *स्त्री०* डाक ले जानेवाली गाड़ी जो बहुत तेज़ चलती है।

डाक-टिकट – *स्त्री०* वे टिकटें जो चिट्ठी पर लगाई जाती हैं।

डाकबँगला – *पु०* सरकारी अफ़सरों के ठहरने के लिए बना बँगला।

डाकमहसूल – *पु०* डाक द्वारा भेजी या मँगाई जानेवाली वस्तु पर लगनेवाला ख़र्च।

डाकमुंशी – *पु०* पोस्ट-मास्टर।

डाकिया – *पु०* डाक बाँटनेवाला, पोस्टमैन।

डॉट – *स्त्री०* बोतल, शीशी आदि बंद करने का काग, कार्क, ठेंठी।

डामर – *पु०* अलकतरा, कोलतार, तारकोल; जैसे – डामर की सड़क।

डायरी – *स्त्री०* वह पुस्तिका जिसमें दैनिक कार्यों का विवरण हो, रोज़नामचा, दैनिकी।

डायल – *पु०* 1. टेलिफ़ोन का आगे का नंबरवाला हिस्सा। 2. घड़ी का सामने का भाग जिस पर एक-दो-तीन-चार आदि लिखे होते हैं।

डालडा – *पु०* वनस्पति घी।

डालना – *क्रि०* 1. गिराना, फेंकना; जैसे – कुत्ते को रोटी डालना। 2. उडेलना, उड़ेलना; जैसे – पानी डालना, दूध डालना, तेल डालना। 3. रखना, भरना; जैसे – संदूक में कपड़े डालना, कमरे में सामान डालना। 4. भीतर करना; जैसे – सूई में धागा डालना। 5. बिछाना; जैसे – ज़मीन पर चटाई डालना, पलंग पर गद्दा डालना।

डिगना – *क्रि०* हटना, विचलित होना; जैसे – बात से डिगना, वायदे से डिगना, उद्देश्य से डिगना।

डिज़ाइन – पु॰ नमूना, तर्ज़, ढंग, तरह; जैसे – नए डिज़ाइन का मकान, पुराने डिज़ाइन के कपड़े।

डिटॉल – पु॰ एक कीटाणुनाशक द्रव।

डिप्थीरिया – गले का एक ख़तरनाक छूत का रोग।

डिब्बा – पु॰ दे॰ डब्बा।

डिवाइडर – पु॰ कोण, रेखा आदि को नापने या विभाजित (डिवाइड) करने का एक उपकरण।

डिसमिस – *वि॰* 1. बरख़ास्त; जैसे – नौकरी से डिसमिस। 2. ख़ारिज; जैसे – मुक़दमा डिसमिस होना।

डिस्पेंसरी – *स्त्री॰* छोटा अस्पताल, ख़ैराती दवाख़ाना।

डींग – *स्त्री॰* शेख़ी, बड़ी-बड़ी बातें, अपनी झूठी बड़ाई, लंबी-चौड़ी बातें। *मु॰ डींग हाँकना* – शेख़ी बघारना, अपनी प्रशंसा में लंबी-चौड़ी बातें करना, अपनी झूठी बड़ाई करना। *प्र॰* मोहन को डींग हाँकने की बड़ी गंदी आदत है।

डीज़ल – पु॰ पेट्रोल की तरह का एक तेल जिससे ट्रक, ट्रैक्टर, बसें आदि चलती हैं।

डी॰डी॰टी॰ – *स्त्री॰* एक कीटनाशक पाउडर, डाई-क्लोरो डाईफ़िनाइल ट्राईक्लोरोईथेन। *प्र॰* कपड़ों को रखने के पहले आलमारियों या बक्सों में डी॰डी॰टी॰ छिड़क लेनी चाहिए।

डी॰पी॰टी॰ – *स्त्री॰* डिप्थीरिया, कुकुरखाँसी तथा टिटनेस के लिए बच्चों को लगाए जानेवाले टीके की दवा।

डीलडौल – पु॰ शरीर की लंबाई-चौड़ाई, शरीर का विस्तार, शरीर का आकार-प्रकार। *प्र॰* ह्वेल दुनिया में सबसे बड़े डीलडौल का जीव है।

डुगडुगी – *स्त्री॰* चमड़े से मढ़ा हुआ चौड़े मुँह का एक बाजा, डुग्गी।

डुग्गी – *स्त्री॰* दे॰ डुगडुगी।

डुबाना – *क्रि॰* 1. पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ के भीतर डालना, गोता देना। *प्र॰* हमारे जहाज़ ने दुश्मन के जहाज़ को समुद्र में डुबा दिया। 2. बर्बाद करना, चौपट करना; जैसे – पैसा डुबाना। 3. बुरे कामों से परिवार की बेइज़्ज़ती कराना। *प्र॰* बुरे लड़के बड़े होकर अपने माँ-बाप का नाम डुबा देते हैं।

डुबोना – *क्रि॰* दे॰ डुबाना।

डूबना – *क्रि॰* 1. पानी में समाना, पानी के भीतर जाकर मर जाना। *प्र॰* कल एक लड़का पानी में डूब
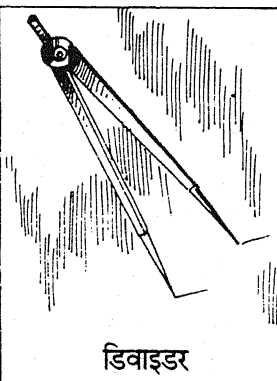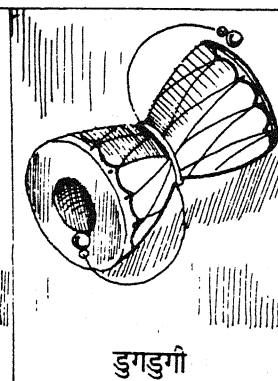
डिज़ाइन | डिवाइडर | डुगडुगी | डूबना
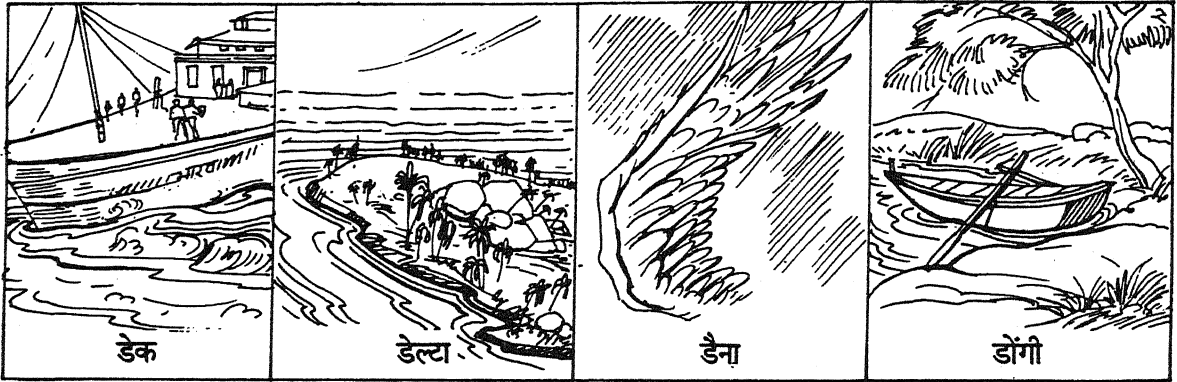
गया। 2. अस्त होना। प्र० सूरज डूब गया। 3.बर्बाद हो जाना; जैसे – पैसा डूबना। *मु० नाम डूबना* – इज़्ज़त न रहना। प्र० बेटों के बुरे कारनामों से बाप का नाम डूब गया।

डूरंटा – पु० एक पौधा जो बाड़ बनाने के काम आता है।

डेंगू ज्वर, डेंगू बुख़ार – पु० एक बुख़ार जो मच्छरों आदि से फैलता है।

डेक – पु० समुद्री जहाज़ों की वह खुली जगह जहाँ कम किराया देनेवाले व्यक्ति या काम करनेवाले बैठते हैं, जहाज़ का खुला बरामदा।

डेकाग्रा – पु० दे० डेकाग्राम।

डेकाग्राम – पु० दस ग्राम की माप, डेकाग्रा।

डेकामी – पु० दे० डेकामीटर।

डेकामीटर – पु० दस मीटर की नाप, डेकामी।

डेकालिटर, डेकालीटर – पु० दस लीटर द्रव पदार्थों की एक माप, डेकाली, डेकालि।

डेग – पु० खाना पकाने का ताँबे या टिन का बड़ा बरतन, देग।

डेटॉल – पु० दे० डिटॉल।

डेयरी – स्त्री० दे० डेरी।

डेरी – स्त्री० 1. वह स्थान जहाँ दूध देने के लिए गाय-भैंसें रखी जाती हैं और दही तथा मक्खन आदि भी तैयार किए जाते हैं। 2. दूध, मक्खन, क्रीम आदि की दूकान।

डेरीफार्म – पु० वह फार्म जहाँ डेरी-संबंधी काम होता है।

डेल्टा – पु० समुद्र में गिरने के पहले नदी की धारा के कई छोटी धाराओं में बँट जाने के कारण बीच में बनी लगभग तिकोनी भूमि।

डेसीग्रा – पु० ग्राम के दसवें भाग की एक माप।

डेसीमीटर – पु० मीटर के दसवें भाग की माप।

डेसीलीटर – पु० लीटर के दसवें भाग की माप।

डेस्क – पु० एक ढलवाँ मेज़ जो लिखने-पढ़ने के काम आती है।

डेकोटा – पु० एक प्रकार का हवाई जहाज़।

डैडी – पु० बाप, अब्बा, पिता।

डैना – पु० पंख, पर; जैसे – चिड़ियों के डैने, विमान के डैने।

डोंगी – स्त्री० छोटी नाव।

डोलना – *क्रि०* 1. चलना, टहलना। *प्र०* इधर-उधर थोड़ा डोला करो, बैठे-बैठे तुम्हारा जी भी नहीं ऊबता क्या? 2. हिलना-डुलना, इधर-उधर डगमगाना; जैसे – डोंगी का डोलना।

डोलोमाइट – *पु०* चूने के पत्थर की तरह की गुलाबी रंग की एक चट्टान।

डोसा – *पु०* चावल और उड़द के मिले-जुले आटे से बनाया जानेवाला नमकीन पराँठा।

ड्यूटी – *स्त्री०* 1. बँधा हुआ कार्य, निश्चित काम; जैसे– चौकीदार की ड्यूटी, थानेदार की ड्यूटी। 2. कर्तव्य। *प्र०* माँ-बाप के प्रति संतान की कुछ ड्यूटी होती है और उसे उसका पालन करना चाहिए।

ड्योढ़ा– *वि०* पूरा और आधा, डेढ़ गुना।

ड्योढ़ी – *स्त्री०* फाटक, चौखट, प्रवेश-द्वार। *प्र०* उनके यहाँ ड्योढ़ी पर दिन-रात पहरेदार रहता है।

ड्रम – *पु०* लोहे का बड़ा पीपा जिसमें तरल पदार्थ भरकर रखा या भेजा जाता है।

ड्राइंग – *स्त्री०* 1. रेखाओं तथा रंग द्वारा चित्र बनाने की कला। *प्र०* मैं ड्राइंग सीख रहा हूँ। 2. रेखाओं द्वारा बना हुआ चित्र।

ड्राइंगरूम – *पु०* बैठक, बाहर से आने-जानेवालों से मिलने का कमरा।

ड्राइवर – *पु०* गाड़ी चलानेवाला, चालक।

ड्राईक्लीन –सूखी धुलाई जो पेट्रोल द्वारा की जाती है। *प्र०* ये कपड़े ड्राईक्लीन होने हैं।

ड्राईक्लीनिंग – *स्त्री०* बिना पानी की धुलाई, पेट्रोल या कार्बन टेट्राक्लोराइड से की जानेवाली सूखी धुलाई जो प्रायः ऊनी या रेशमी कपड़ों की होती है, निर्जल धुलाई।

ड्रॉपर – *पु०* शीशे या प्लास्टिक का दो-ढाई इंच का नली जैसा उपकरण जिससे दवा आँख, कान आदि में डालते हैं।

ड्राम – *पु०* वज़न की एक माप।

ड्रामा – *पु०* नाटक।

ड्रिल – *स्त्री०* क़वायद, कसरत। *प्र०* पुलिस या सैनिक सुबह ड्रिल करते हैं।

★

ढ

– देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का चौथा व्यंजन।

ढकना –1. *क्रि०* (क) ढाँपना, ढाँकना। *प्र०* इन कटे फलों को ढक दो, मक्खियाँ बैठ रही हैं।

डोसा | ड्योढ़ी | ड्रम | ड्रॉपर
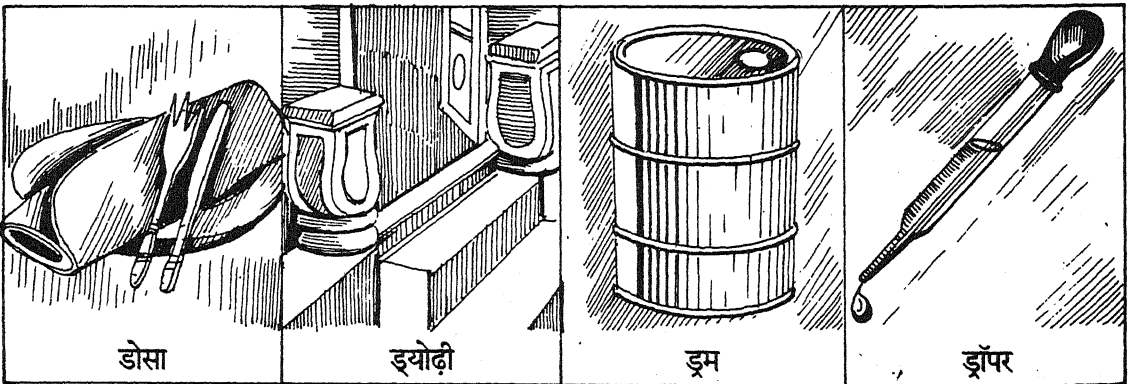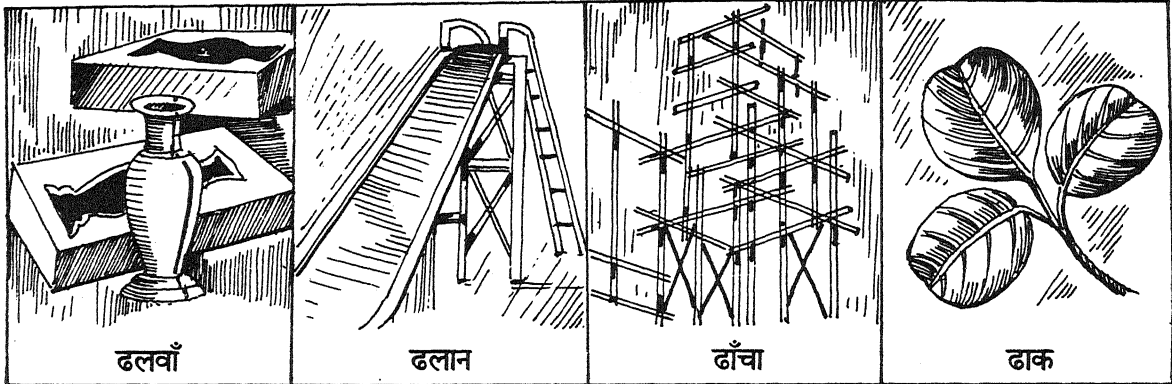
(ख) छिपाना, परदा डालना। *प्र०* 1. तेज़ बुख़ार में मोहन को अपने तन-बदन की सुध नहीं है, चद्दर से ढक दो, नंगा हो रहा है। 2. अपनी ग़लतियों को ढकने की कोशिश मत करो। (ग) छिपना। *प्र०* सूरज बादलों के पीछे ढक गया है। 2. *पु०* ढक्कन; जैसे – पतीले का ढकना। *मु० उल्लू का ढकना* – बहुत बड़ा मूर्ख। *प्र०* रीतू उल्लू का ढकना है, उसे कोई काम मत सौंपना।

ढकोसला – *पु०* 1. दिखावा, आडंबर। *प्र०* गेरुवा वस्त्र, टीका, माला – ये यों ही ढकोसले हैं, असली धर्म ये नहीं हैं। 2. बहाना। *प्र०* वह बीमार नहीं है यों ही बीमार होने का ढकोसला कर रहा है।

ढलना – *क्रि०* 1. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर बहना; जैसे – आँसू ढलना। 2. नीचे जाना। *प्र०* सूरज ढल रहा है। 3. उतार पर होना; जैसे – उम्र ढलना। 4. साँचे में ढालकर बनाया जाना, ढाला जाना। *प्र०* विष्णु की मूर्ति ढल गई है।

ढलवाँ – *वि०* 1. जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो, ढाला हुआ; जैसे – ढलवाँ बरतन। 2. ढालू, ढालवाला; जैसे – ढलवाँ छत।

ढलाई – *स्त्री०* 1. ढालने की क्रिया। *प्र०* वहाँ मूर्तियों की ढलाई होती है। 2. ढालने की मज़दूरी। *प्र०* आजकल मूर्तियों की ढलाई बहुत महँगी है।

ढलान – *स्त्री०* ऊपर से नीचे की ओर ज़मीन या रास्ते का ढलते जाना, ढालूपन। *प्र०* 1. इधर ढलान है, आसानी से सामान की गाड़ी चली जाएगी। 2. पहाड़ की ढलान पूरब की तरफ़ है।

ढहना – *क्रि०* मकान आदि का गिरना, ध्वस्त होना। *प्र०* लगातार एक हफ़्ते की तेज़ बारिश में गाँव के कई घर ढह गए।

ढाँचा – *पु०* बनावट का आधार जिस पर किसी वस्तु का विस्तार टिका होता है; जैसे – इमारत का ढाँचा, शरीर का ढाँचा। *प्र०* अस्थि-पंजर शरीर का ढाँचा है।

ढाई – *वि०* दो और आधे का जोड़, $2^1/_2$, अढ़ाई।

ढाक – *पु०* पलास का पेड़। *प्र०* ढाक के पेड़ों पर लाल-काले फूल बहुत सुंदर लगते हैं। *लो० ढाक के वही तीन पात* – (ढाक के पेड़ में पत्ते तीन-तीन के समूहों में होते हैं) सदा एक-सा, ज्यों-का-त्यों। *प्र०* वह अब बदलने का नहीं। ढाक के वही तीन पात।

ढाढ़स – *पु०* धीरज, तसल्ली, धैर्य। *प्र०* उस बेचारे का अकेला लड़का मर गया है, उसे ढाढ़स बँधाओ।

ढाल – *स्त्री०* 1. आगे की ओर क्रमशः नीची होती गई ज़मीन। *प्र०* इधर ढाल है, इधर से ही उतरना ठीक रहेगा। 2. तलवार आदि का वार रोकने के लिए एक गोल शस्त्र।

ढालना – *क्रि०* 1. तरल पदार्थ को साँचे में रखकर आकार या रूप देना; जैसे – मूर्ति ढालना। 2. द्रव पदार्थ को गिराना, उड़ेलना; जैसे – कॉफ़ी मग में ढालना, चाय प्याले में ढालना, शराब जाम में ढालना।

ढालू – *वि०* जो आगे की ओर नीचा होता गया हो, ढलवाँ, ढालवाला। *प्र०* यह छत कुछ ज़्यादा ढालू है।

ढिंढोरची – *पु०* ढिंढोरा पीटनेवाला, घोषणा या मुनादी करनेवाला। *प्र०* एक ढिंढोरची से इस बात की घोषणा इधर के काफ़ी गाँवों में करवा दी गई है।

ढिंढोरा – *पु०* 1. वह ढोल या बाजा जिसे बजाकर किसी बात की सूचना जनता को दी जाती है, डुग्गी। 2. वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाए, घोषणा।

ढुलकना – *क्रि०* गिरना, ढलकना। *प्र०* बहुत दिनों से बिछुड़े बेटे को देखकर खुशी से माँ के गालों पर आँसू की बूँदें ढुलक आईं।

ढेर – *पु०* बहुत सारी चीज़ों का एकत्र रूप, अंबार, पुंज, राशि। *प्र०* यहाँ कूड़े का ढेर पड़ा है, कोई साफ़ नहीं करता क्या?

ढेरी – *स्त्री०* ढेर, राशि। *प्र०* बेकार के कागज़ों की ढेरी में आग लगा दो।

ढोंग – *पु०* आडंबर, ढकोसला, पाखंड, छल। *प्र०* वह साधु नहीं है, साधु होने का ढोंग करता है।

ढोंगी – *वि०* ढोंग करनेवाला, पाखंडी, ढकोसला करनेवाला।

ढोना – *क्रि०* माल आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। *प्र०* बैलगाड़ी ज़्यादातर माल ढोने के काम आती है।

ढोर – *पु०* गाय, बैल, भैंस आदि पालतू जानवर, मवेशी।

ढोल – *पु०* चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रसिद्ध बाजा। *मु०* *ढोल बजाकर कहना* – खुले आम कहना, सबको सुनाकर कहना।

त – देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का पहला व्यंजन।

तंग – *वि०* 1. परेशान, बेचैन। *प्र०* मोहन के पिताजी अपनी बीमारी से तंग आ गए हैं। 2. कम चौड़ा,
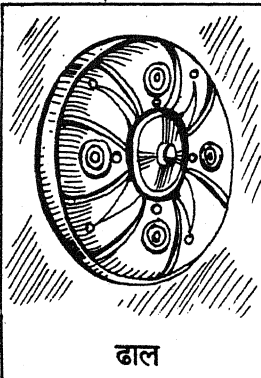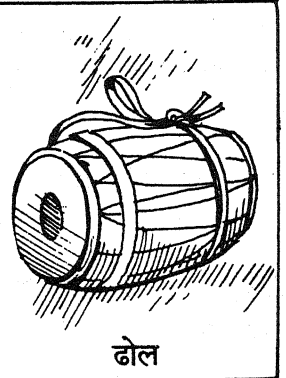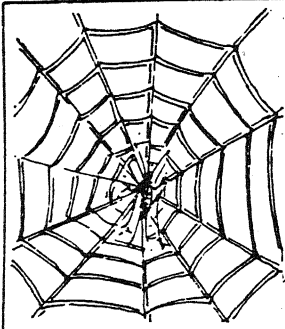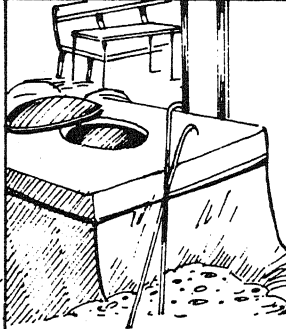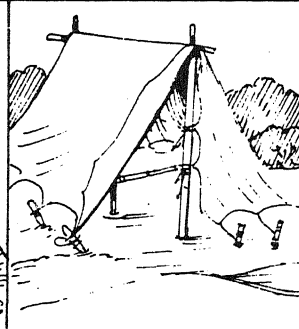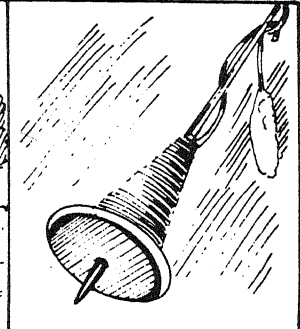
ढाल | ढिंढोरची | ढोर | ढोल

सँकरा, संकुचित; जैसे – तंग गली, तंग कुरता। 3. रुपए-पैसे के अभाववाला। प्र० खेती की स्थिति ख़राब होने से किसानों की हालत बहुत तंग है।

तंगी – स्त्री० 1. मुश्किल, ग़रीबी। प्र० नौकरी छूट जाने से वे बड़ी तंगी में हैं। 2. अभाव, कमी। प्र० गर्मियों में दिल्ली में बिजली और पानी की तंगी हो जाती है।

तंतु – पु० 1. धागा, डोरा, सूत। 2. ताँत, तार, सारंगी, सितार आदि बाजों का ताँत या तार। 3. मकड़ी का जाला।

तंत्रिका – स्त्री० शरीर के भीतर के तंतु बहुत पतले होते हैं, नर्व, स्नायु। तंत्रिका दो प्रकार की होती हैं: **संवेदी तंत्रिकाएँ** – जो विभिन्न अंगों से दिमाग़ तक सूचनाएँ ले जाती हैं। **प्रेरक तंत्रिकाएँ** – ये दिमाग़ से मांसपेशियों तक संदेश ले जाती हैं। इन तंत्रिकाओं के तंत्र को तंत्रिका-तंत्र (नर्वस सिस्टम) कहते हैं।

तंत्रिका-तंत्र – पु० शरीर की नस-नाड़ियों का जाल, स्नायु-संस्थान। दे० तंत्रिका।

तंत्रिका-संस्थान – दे० तंत्रिका-तंत्र।

तंदूर – पु० भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का गोल चूल्हा।

तंबाकू – पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते और डंठल हल्के नशे के लिए मुँह में रखे जाते हैं या हुक्के, चिलम, सिगरेट आदि में पिए जाते हैं।

तंबू – पु० मोटे कपड़े से घेरकर खुले स्थान पर बनाई हुई रहने की जगह, शामियाना, खेमा; जैसे – पुलिस का तंबू, यात्रियों का तंबू, बारातियों का तंबू।

तक – अ० सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाला शब्द, पर्यंत; जैसे – बनारस तक जाना है; अगले सोमवार तक शादी तय हो जाएगी।

तकनीकी – वि० 1. टेकनिकल; जैसे – तकनीकी शिक्षा। 2. तकनीक विषयक; जैसे – तकनीकी ज्ञान।

तकरार– स्त्री० विवाद, बहस, हुज्जत, झगड़ा; जैसे– बात-बात में तकरार होना।

तकली – स्त्री० सूत कातने का एक छोटा उपकरण जो हाथ से चलता है।

तक़ाज़ा – पु० 1. अपनी चीज़ या अपना रुपया-पैसा लौटाने की माँग, तक़ादा; जैसे – ऋण का तक़ाज़ा, किराए का तक़ाज़ा, पुस्तकों का तक़ाज़ा। 2. आवश्यकता, माँग। प्र० 1. वक़्त का तक़ाज़ा है

कि अपने ख़र्च में कमी करें। 2. उम्र का तक़ाज़ा है कि आप दिन में थोड़ा आराम भी किया करें।

तकुआ – पु॰ चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता जाता है, टेकुआ।

तख़्त – पु॰ 1. राजा के बैठने का स्थान, राजगद्दी, सिंहासन। प्र॰ बाबर के बाद हुमायूँ मुग़ल सल्तनत के तख़्त पर बैठा। 2. लकड़ी के पटरों की बनी चौकी।

तख़्ता – पु॰ लकड़ी का लंबा-चौड़ा-पतला और चौकोर टुकड़ा, पटरा, पल्ला। प्र॰ तख़्त बनवाने के लिए उसे कुछ तख़्ते ख़रीदने हैं।

तख़्ती – स्त्री॰ 1. काठ का वह छोटा टुकड़ा जिस पर पुराने ज़माने में छोटे बच्चे घोली या सूखी खड़िया से लिखने का अभ्यास करते थे, पट्टी। 2. लकड़ी या किसी और चीज़ की पट्टी; जैसे – पद, व्यक्ति या दफ़्तर के नाम की तख़्ती।

तट – पु॰ किनारा, तीर, कूल। प्र॰ नदी के तट पर पिकनिक मनाने का आनंद ही कुछ और है।

तटबंध – पु॰ नदियों के एक या दोनों किनारों को तेज़ धारा से होनेवाले कटाव से बचाने के लिए तट पर बनाया जानेवाला बाँध।

तटीय. (तट + ईय) – वि॰ तट का, किनारे का; जैसे – तटीय भूमि, तटीय मैदान।

तड़का – पु॰ 1. बहुत सुबह, भोर, प्रभात। प्र॰ तड़के ही नींद खुली और मैं उठ बैठा। 2. बघार, छौंक; जैसे – सब्ज़ी बनाने के लिए तड़का देना, मट्ठे में तड़का देना, दाल में तड़का देना।

तड़प – स्त्री॰ छटपटाना, छटपटाहट, बेचैनी।

तड़पना – क्रि॰ छटपटाना, बहुत अधिक पीड़ा या कष्ट के कारण बेचैन होना। प्र॰ कमल सिर के दर्द से तड़प रहा है।

ततैया – स्त्री॰ भिड़, बर्र। प्र॰ ततैया के काटने से सूजन हो जाती है।

तत्काल – अ॰ तुरंत, फ़ौरन, उसी वक़्त, उसी समय। प्र॰ बुख़ार ज़्यादा है, तत्काल डॉक्टर को बुलाओ।

तत्पर – वि॰ तैयार, मुस्तैद, उद्यत। प्र॰ रहीम मेरे हर काम के लिए तत्पर रहता है।

तत्पश्चात् – अ॰ उसके बाद, उसके उपरांत।

तत्त्व – पु॰ 1. सत्य, सचाई, यथार्थ। प्र॰ इस समाचार में कोई तत्त्व नहीं है कि उसका ख़ून हो गया है। 2. निचोड़, सार, सारतत्त्व। प्र॰ गीता के उपदेशों का मूल तत्त्व परिणाम की चिंता किए बिना
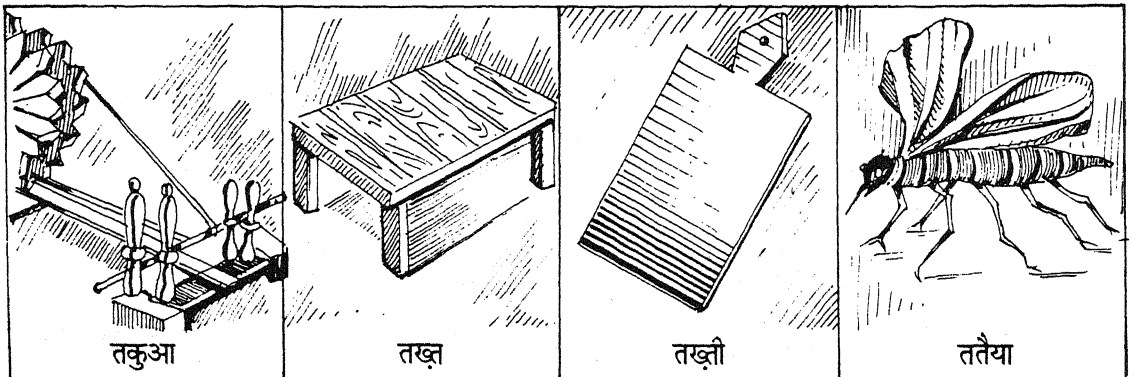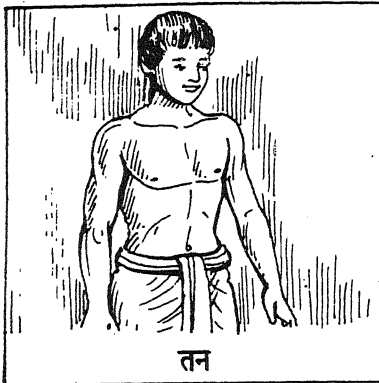
तन
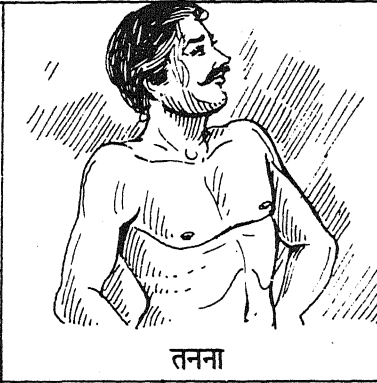
तनना

तनाव

कर्म करना है। 3. मूल पदार्थ या मूल तत्त्व जिनसे अन्य पदार्थ बनते हैं। प्र० विश्व में कुल 104 तत्त्व हैं जिनसे सभी चीज़ें बनी हुई हैं; जैसे – नमक सोडियम और क्लोरीन नामक दो तत्त्वों से तो पानी ऑक्सीजन और हाइड्रोजन नामक दो तत्त्वों से बना है।

तथा – *अ०* 1. और, एवं। प्र० राम तथा मोहन आनेवाले हैं। 2. वैसा ही, उसी प्रकार का। प्र० इनका नाम श्याम सुंदर है और ये 'श्याम' की तरह सुंदर भी हैं। ठीक ही कहा है – यथा नाम तथा गुण।

तथ्य – *पु०* सचाई, यथार्थ, वास्तविकता। प्र० तथ्य यह है कि वह वायदा तो करता है पर उसे पूरा कभी नहीं करता।

तदुपरांत (तत् + उपरांत) – *अ०* उसके उपरांत, उसके पश्चात्, उसके बाद।

तन – *पु०* शरीर, देह, जिस्म। *मु० तन-बदन में आग लगना* – बहुत क्रोधित होना। प्र० यह बात सुनकर उसके तन-बदन में आग लग गई।

तनना – *क्रि०* 1. अकड़कर सीधा खड़ा होना। प्र० वे मेरी बात सुनकर तनते हुए बोले – मैं आपकी बात नहीं मानूँगा, जो करना हो कर लो। 2. कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट होना, ऐंठना, क्रोधित होना। प्र० बात-बात पर तनना उनकी आदत है। 3. खिंचना, तनाव आना। प्र० उनकी भौंहें तन गईं और उन्होंने तलवार उठा ली।

तनाव – *पु०* 1. ढीला न छोड़ना, खिंचाव, शारीरिक तनाव। प्र० हाथ को कड़ा करो तो उसमें तनाव आ जाएगा। 2. मानसिक खिंचाव। प्र० दंगे तो अब नहीं हो रहे हैं पर जिन लोगों की धनहानि और जनहानि हुई है उनमें अभी भी तनाव कम नहीं हुआ है।

तनिक – *वि०* थोड़ा, अल्प, ज़रा, ज़रा-सा, मामूली। प्र० 1. उसे तनिक भी पता नहीं है कि उसका भाई इस दुनिया में नहीं रहा। 2. तनिक सोचो, उसने तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा है।

तपन – *स्त्री०* 1. (मौसम की) गर्मी। प्र० बड़ी तपन है, अब पंखे के बिना काम नहीं चलेगा। 2. तेज़ धूप। प्र० शाम को जाना, इस दुपहरी की तपन में मत जाओ।

तपाक – *पु०* उत्साह, जोश। प्र० मेरे जाने पर वे बड़े तपाक से मिले।

तपेदिक – *स्त्री०* फेफड़े का एक रोग, क्षय रोग, टी०बी०, राजयक्ष्मा। प्र० तपेदिक छूत की बीमारी है।

तपोवन (तप + वन) –*पु०* तपस्वी लोगों के रहने तथा तपस्या करने का वन, आश्रम।

तबदीली –*स्त्री०* परिवर्तन, फेरबदल। *प्र०* 1. केंद्र और राज्य, दोनों ही मंत्रिमंडलों में तबदीली हुई है। 2. मौसम की तबदीली से कपड़े तथा खान-पान में भी तबदीली होती है।

तबियत, तबीयत –*स्त्री०* 1. जी, मन, दिल, चित्त। *प्र०* मेरी तबीयत यहाँ लग नहीं रही है। 2. तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य, शरीर की स्थिति। *प्र०* मेरी तबीयत ठीक नहीं है, किसी डॉक्टर को बुलाना पड़ेगा।

तम – *पु०* अँधेरा, अंधकार। (*विलोम* – प्रकाश)।

तमग़ा – *पु०* पदक, मेडल। *प्र०* उस छात्र को इस वर्ष तीन तमग़े मिले।

तमाम – *वि०* 1. पूरा, संपूर्ण, कुल। *प्र०* आप लोगों की वजह से मेरा तमाम काम पूरा हो गया। 2. ख़त्म, समाप्त। *प्र०* बड़ी मुश्किल से आज काम तमाम हुआ।

तमाशबीन (तमाशा+बीन) – *पु०* तमाशा देखने-वाला। *प्र०* आँधी में तंबू गिर जाने के कारण तमाशबीनों को चोट लग गई।

तमाशा – *पु०* 1. खेल; जैसे – बंदर का तमाशा, भालू का तमाशा। 2, मनोरंजक दृश्य। *प्र०* घोड़े पर चढ़कर एक बंदर उसे दौड़ा रहा था और तरह-तरह के करतब दिखा रहा था, यह तमाशा देखने लायक़ था।

तमोली – *पु०* पान लगाने और बेचनेवाला।

तय – *वि०* 1. ठहराया हुआ, पक्का, निश्चित, निर्णीत। *प्र०* 1. परीक्षा की तिथि तय हो चुकी है। 2. सुरेश का विवाह तय हो चुका है। 2. समाप्त, पूरा हुआ। *प्र०* इतनी ऊँचाई मैंने बड़ी कठिनाई से तय की।

तरंग – *स्त्री०* 1. पानी की लहर , हिलोर। *प्र०* नौका तरंगों के थपेड़ों में डगमगा रही है। 2. चित्त की उमंग, मन की मौज। *प्र०* मोहन के पिताजी तरंग में आते हैं तो ग़रीबों को बहुत कुछ दे डालते हैं।

तरकश – *पु०* तीर रखने की थैली या चोंगा, तूणीर।

तरकीब – *स्त्री०* उपाय, तरीका, युक्ति, ढंग। *प्र०* कोई तरकीब करो ताकि मैं परीक्षा में पास हो जाऊँ।

तरक्की – *स्त्री०* 1. उन्नति, प्रगति, ऊँचे उठना, आगे बढ़ना। *प्र०* देश तरक्की कर रहा है। 2. पदोन्नति, पदवृद्धि। *प्र०* नरेंद्र मोहन की तरक्की हुई है।

तरतीब – *स्त्री०* क्रम, सिलसिला। *प्र०* इन चीज़ों को तरतीब से रख दो।

तमग़ा तमाशा तमोली तरकश
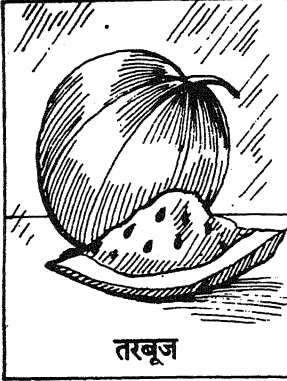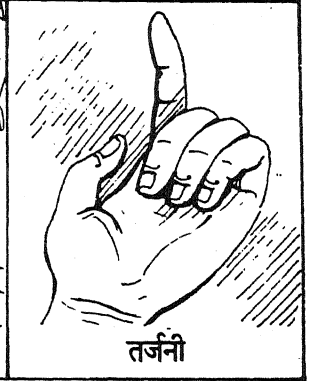
तरफ़ – *स्त्री०* 1. ओर, दिशा। *प्र०* किसान खेत की तरफ़ जा रहा है। 2. पक्ष। *प्र०* अब वे लोग मेरी तरफ़ नहीं हैं।

तरबूज – *पु०* बलुई ज़मीन पर फैलनेवाली एक लता का प्रसिद्ध फल जो आकार में गोल तथा मीठा होता है।

तरल – *वि०* ऐसा पदार्थ जो बह सके, द्रव; जैसे – पानी, तेल, पिघला हुआ घी आदि तरल पदार्थ हैं।

तरसना – *क्रि०* किसी वस्तु को न पाकर बेचैन रहना, उसे पाने की बहुत इच्छा होना; जैसे – दो वक़्त खाने को तरसना, दो घूँट पानी को तरसना।

तरह – *स्त्री०* 1. प्रकार, क़िस्म, ढंग। *प्र०* इस तरह के काम मुझे पसंद नहीं आते। 2. *अ०* इस तरह से, इस प्रकार से। *प्र०* अच्छी तरह खाओ-पीओ, कमज़ोरी दूर हो जाएगी।

तराई – *स्त्री०* वह नीची भूमि या मैदान जो पहाड़ों के आस-पास होते हैं। *प्र०* नैनीताल के आस-पास की तराइयों में अच्छी खेती होती है।

तराशना – *क्रि०* काटना-छाँटना। *प्र०* 1. मूर्तिकार पत्थरों को तराशकर सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ बनाता है। 2. सूरत के लोग हीरे तराशने में बहुत कुशल होते हैं।

तरी – *स्त्री०* 1. गीलापन। *प्र०* मिट्टी में अभी तरी है, बीज बो सकते हो। 2. रसा, शोरबा। *प्र०* सब्ज़ी अच्छी बनी है, तरी थोड़ी और देना। 3. नाव, नौका।

तरु – *पु०* वृक्ष, पेड़, दरख़्त।

तरुण – *वि०* नवयुवक, युवा, जवान।

तर्क – *पु०* 1. किसी बात के समर्थन या विरोध में कही गई बात, दलील। *प्र०* किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में कुछ कहने की प्रेरणा देकर छात्रों में तर्क करने की शक्ति का विकास करना चाहिए। 2. बहस, विवाद। *प्र०* बात-बात पर तर्क करना बहुत अच्छी बात नहीं है।

तर्जनी – *स्त्री०* अँगूठे और मध्यमा उँगली के बीच की उँगली, अँगूठे के पासवाली उँगली जिससे संकेत करते हैं।

तर्पण – *पु०* हिंदुओं द्वारा किया जानेवाला वह धार्मिक कृत्य जिसमें ऋषियों, पितरों और देवताओं को तृप्त करने के लिए उनको जल दिया जाता है।

तल – *पु०* पेंदा, सबसे नीचे का भाग। *प्र०* समुद्र तल में अनेक वनस्पति और जीव-जंतु होते हैं।

तलछट – *स्त्री०* पानी आदि द्रव पदार्थों में छनकर नीचे बैठी हुई मैल।

तलना – *क्रि०* घी या तेल को खौलाकर किसी वस्तु को उसमें डालकर पकाना; जैसे –पापड़ तलना, पूरी तलना, पकौड़ी तलना।

तलवा – *पु०* खड़े होने या चलने पर पृथ्वी की सतह पर पड़नेवाला पैर का भाग, पदतल।

तलहटी – *स्त्री०* पहाड़ के नीचे की मैदानी भूमि, तराई। *प्र०* पहाड़ की तलहटी में खेती होती है।

तला – *पु०* 1. किसी वस्तु की निचली सतह, पेंदा। 2. जूते का निचला भाग, तल्ला।

तलाश – *स्त्री०* 1. खोज, ढूँढ़-ढाँढ़। *प्र०* मेरा कुत्ता खो गया है, उसकी तलाश चल रही है। 2. चाह, आवश्यकता, ज़रूरत। *प्र०* एक नौकर की तलाश है, हो तो दिलाओ।

तलाशी – *स्त्री०* छिपाई हुई चीज़ के लिए की जानेवाली खोज। *प्र०* उनके घर तलाशी हो रही है। *मु० तलाशी लेना* – छिपाई वस्तु के लिए खोज-ढूँढ़ करना। *प्र०* सिपाहियों ने उस चोर के घर की तलाशी ली तो सारा माल बरामद हो गया।

तश्तरी – *स्त्री०* प्लेट, रकाबी; जैसे – स्टेनलेस स्टील की तश्तरी, मिट्टी की तश्तरी, शीशे की तश्तरी, चीनी मिट्टी की तश्तरी।

तसल्ली – *स्त्री०* 1. ढाढ़स, सांत्वना। *प्र०* बेचारा पुत्र के मरने से बिलख-बिलखकर रो रहा था, हम लोगों के जाने से उसे बहुत तसल्ली मिली। 2. धैर्य, धीरज। *प्र०* तसल्ली रखो, डॉक्टर ने बताया है तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे। 3. संतोष। *प्र०* नए नौकर के काम से मुझे तसल्ली है।

तसल्लीबखश – तसल्लीवाला, संतोषवाला, संतोषप्रद। *प्र०* यहाँ सभी तरह के कपड़ों की सिलाई तसल्लीबख़्श होती है।

तह – *स्त्री०* 1. परत। *प्र०* तह लगाकर कमीज़ रख दो। 2. तल, पेंदा। *प्र०* समुद्र की तह में अनेक प्रकार के जीव-जंतु हैं। 3. किसी वस्तु के नीचे का विस्तार, गहराई। *प्र०* इस बात की तह में जाओ तो असलियत का पता चलेगा।

तहख़ाना – *पु०* वह कमरा, कोठरी या गोदाम जो ज़मीन के अंदर बना हो, तलगृह, भुइँघरा। *प्र०* तहख़ाने में ज़ेवर के अलावा तरह-तरह की बेशक़ीमत चीज़ें रखी हुई हैं।

तहलका – *पु०* हलचल, उथल-पुथल, धूम, खलबली। *प्र०* शहर में सेना के घुसते ही तहलका मच गया।

तहसील – *स्त्री०* 1. ज़िले का वह भाग जो तहसीलदार के अधीन रहता है। 2. तहसीलदार का दफ़्तर। 3. लगान या मालगुज़ारी की वसूली, उगाही। *प्र०* तहसीलदार तहसील करने आए हैं।

तलवा | तला | तश्तरी | तहख़ाना

ताँगा | तान | तानना
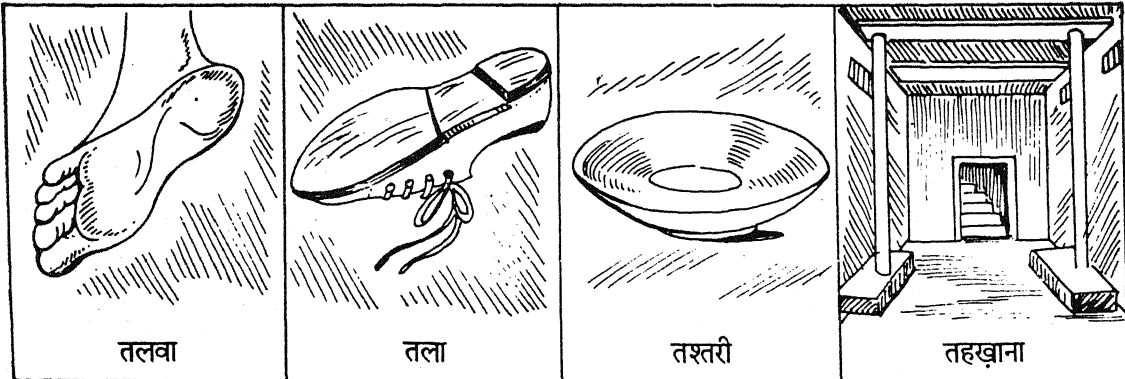
तहसीलदार – *पु०* तहसील का प्रधान अधिकारी। *प्र०* प्रवीण नायब तहसीलदार से तहसीलदार हो गया है।

ताँगा – *पु०* एक घोड़े से खींची जानेवाली दो पहिए की गाड़ी, टाँगा।

ताँत – *स्त्री०* पशुओं की लंबी नसों को बँटकर बनाया हुआ तागा। *प्र०* रुई ताँत की धुनकी से धुनी जाती है।

ताँता – *पु०* क़तार, अटूट पंक्ति, सिलसिला। *प्र०* 1. बड़े शहरों में गाड़ियों का ऐसा ताँता लगता है कि कभी-कभी रास्ता पूरी तरह जाम हो जाता है। 2. आज सवेरे से अपना काम करानेवालों का ताँता लगा है, मैं तो ऊब गया।

ताकि – *अ०* जिससे, इसलिए, कि। *प्र०* तुम ठीक से खाओ-पीओ ताकि जल्दी स्वस्थ हो जाओ।

ताज़गी – *स्त्री०* 1. ताज़ापन, ताज़ा होने का भाव। *प्र०* सवेरे-सवेरे खुले मैदान में ताज़गी होती है। 2. स्वस्थता। *प्र०* पहले तो रमेश बीमार-बीमार-सा लगता था, अब उसके चेहरे पर ताज़गी है।

ताज़ा – *वि०* 1. जो सूखा या मुरझाया या कुम्हलाया न हो, हरा-भरा (*विलोम* – सूखा); जैसे – ताज़ा सब्ज़ी, ताज़ा फल। 2. जो पुराना न हो; जैसे – ताज़ा समाचार। 3. जो अभी-अभी तैयार किया गया हो; जैसे – ताज़ा भोजन। (*विलोम* – बासी)। ('ताज़ा' का 'ताज़ी' या 'ताज़े' नहीं बनता)।

ताड़ी – *स्त्री०* खजूर या ताड़ से निकला हुआ एक नशीला पेय पदार्थ।

तात्पर्य -- *पु०* मतलब, अभिप्राय, आशय।

तान – *स्त्री०* संगीत के लय या सुर को विस्तार देना या तानना।

तानना – *क्रि०* 1. किसी चीज़ को खींचना। *प्र०* बहुत तानो नहीं, नहीं तो रस्सी टूट जाएगी। 2. खींचकर फैलाना; जैसे – तंबू तानना।

ताना – *पु०* 1. व्यंग्य, व्यंग्यवाली बात, चुभती बात। *मु० ताना कसना, ताना मारना*– व्यंग्य करना, चुभती बात कहना। *प्र०* नेताजी मतदान में बुरी तरह हार गए, अब सभी ताना मार रहे हैं। 2. कपड़े की बुनाई में लंबाई में फैलाया हुआ सूत।

ताना-बाना – *पु०* कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई में क्रमशः फैलाए हुए सूत।

ताप – *पु०* गर्मी, उष्णता।

ताप ऊर्जा – स्त्री॰ ऊर्जा का एक रूप जो लकड़ी, कोयला, पेट्रोल आदि के ताप से प्राप्त होता है।

तापमान – पु॰ वह माप जो यह बताती है कि शरीर या किसी वस्तु में कितनी गर्मी है।

तापमापक यंत्र – पु॰ थर्मामीटर, वह यंत्र जिससे शरीर या वायुमंडल की गर्मी मापी जाती है।

तापमापी – स्त्री॰ थर्मामीटर, तापमापी यंत्र।

तार – पु॰ 1. धातु को खींचकर बनाई गई धागे जैसी चीज़; जैसे – लोहे का तार, ताँबे का तार, सोने का तार। 2. इस तरह की चीज़ जिससे होकर बिजली जा सकती है। इस पर प्रायः प्लास्टिक आदि चढ़ा होता है। 3. तार से भेजी गई ख़बर, टेलिग्राम।

तारकोल – पु॰ पत्थर के कोयले से निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ जो सड़क आदि पर लेप के रूप में लगाया जाता है, कोलतार, डामर, अलकतरा।

तारघर – पु॰ वह सरकारी दफ़्तर जहाँ से तार द्वारा ख़बरें आती और जाती हैं।

तारत्व – पु॰ जब पेंच (स्क्रयू) को एक बार किसी लकड़ी में चारों ओर घुमाया जाता है तब वह दो धारियों के बीच की दूरी के बराबर आगे बढ़ता है। इस दूरी को तारत्व कहते हैं।

तारपीन – पु॰ औषध, चित्रकारी आदि के काम आनेवाला एक तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।

तारामंडल – पु॰ तारों का समूह।

तारामीन – स्त्री॰ एक जलजंतु जो समुद्र के खारे पानी में पाया जाता है।

तारीफ़ – स्त्री॰ बड़ाई, प्रशंसा, गुणगान।

ताल – पु॰ 1. वह ध्वनि जो दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न होती है। 2. संगीत में दिया जानेवाला ठेका, संगीत में नाप; जैसे– तीन ताल, तिताला, चार ताल, चौताल। 3. बड़ा तालाब, सरोवर, पोखरा।

तालमय – *वि॰* (संगीत) ताल से युक्त, तालवाला, संगीतात्मक।

तालमेल – पु॰ ताल का मेल, एकरूपता, समन्वय, सामंजस्य। *प्र॰* 1. दिमाग़, शरीर की सभी क्रियाओं में तालमेल बिठाए रखता है। 2. केंद्रीय समिति सभी उपसमितियों में तालमेल बिठाने का काम करती है।

तालिका – स्त्री॰ सूची।

ताली – स्त्री॰ 1. हथेलियों के परस्पर आघात से पैदा होनेवाली आवाज़; जैसे– ताली बजाना, ताली

तापमापक यंत्र | तारामंडल | तारामीन | ताली

तिजोरी | तिपहिया | तिपाई | तिरंगा
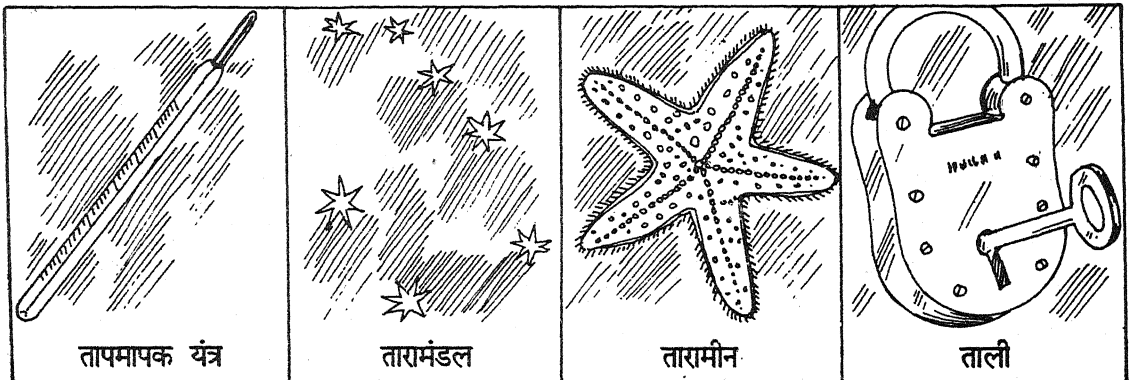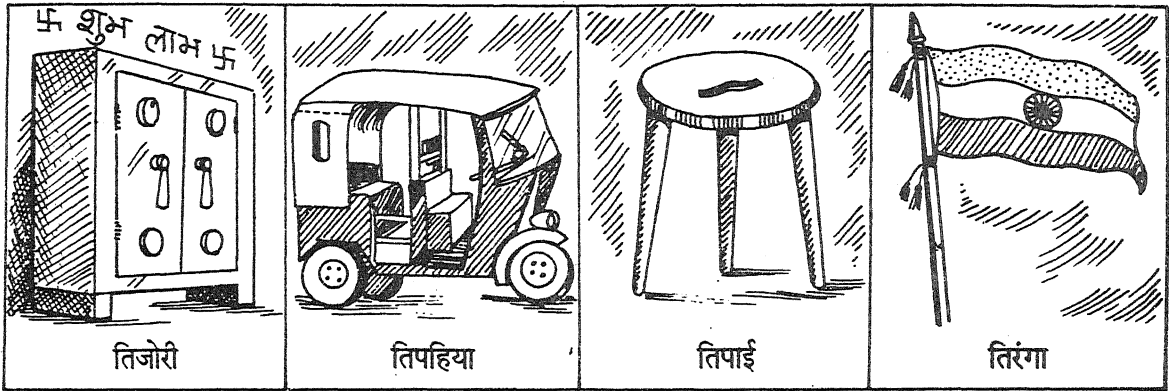
पीटना। 2. एक उपकरण जिससे ताला बंद होता और खुलता है, चाबी, कुंजी।

तालु, तालू – *पु०* मुहँ के भीतर ऊपर की पूरी छत।

ताल्लुका – *पु०* बड़ा इलाक़ा, बड़ा क्षेत्र।

ताव – *पु०* 1. ताप, गर्मी। *प्र०* धूप में मत निकलो, ताव लग जाएगा। 2. क्रोध, गुस्सा, आवेश। *प्र०* इस समय तुम ताव में हो, ठंडे दिल से बात नहीं कर सकते।

तिकोना – 1. *वि०* जिसमें तीन कोने हों, जो तीन कोनों का हो। 2. *पु०* समोसा।

तिजोरी – *स्त्री०* लोहे की मज़बूत आलमारी जिसमें गहने, रुपए-पैसे तथा महत्त्वपूर्ण काग़ज़ आदि रखे जाते हैं।

तितर-बितर – *वि०* इधर-उधर फैला हुआ, बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त। *प्र०* लोग धरना देने के लिए इकट्ठे हुए थे पर पुलिस को देखकर तितर-बितर हो गए।

तिथि – *स्त्री०* 1. हिंदू-पंचांग के अनुसार चंद्रमा के घटने-बढ़ने के आधार पर दिनों की गिनती, मिति। *प्र०* राम का जन्म चैत्र सुदी नवमी तिथि को हुआ था। 2. तारीख़, दिनांक।

तिपहिया – *वि०* जिसमें तीन पहिए लगे हों, तीन पहियोंवाला; जैसे – तिपहिया स्कूटर।

तिपाई – *स्त्री०* तीन पैरों का स्टूल।

तिमंज़िला – *वि०* तीन मंज़िल का, तीन खंडों का, तीन मंज़िलोंवाला; जैसे – तिमंज़िली इमारत।

तिरंगा – *वि०* जिसमें तीन रंग हों, तीन रंगोंवाला। *प्र०* भारत का झंडा तिरंगा है।

तिरछा – *वि०* जो सीधा न होकर इधर-उधर या आगे-पीछे झुका हो, टेढ़ा; जैसे – तिरछी रेखा, तिरछी टोपी, तिरछी नज़र। (*विलोम* – सीधा)।

तिरस्कार – *पु०* बेइज़्ज़ती, अनादर, अपमान। *प्र०* कई देशों में आज भी गोरे लोग कालों को तिरस्कार की नज़र से देखते हैं।

तिल – *पु०* 1. तिल नामक पौधे से मिलनेवाला काले या सफ़ेद रंग का दाना जिससे तेल निकाला जाता है। 2. शरीर पर जन्म से होनेवाला काले रंग का एक दाग़। *मु० तिल-तिल करके* – थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे। *प्र०* तिल-तिल करके वह मौत की ओर बढ़ रहा है। *तिल धरने की जगह न होना* – खूब भरा होना, ठसाठस भरा होना। *प्र०* उस हॉल में तिल धरने की जगह नहीं है।

तिलक – पु० 1. चंदन, केसर आदि घिसकर या रोली, सिंदूर आदि का माथे पर टीका। 2. विवाह पक्का करने की एक रीति जिसमें बेटीवाले बेटेवाले के घर जाते हैं।

तिलचट्टा – पु० एक कीड़ा जो सीलनभरी गंदी और अँधेरी जगहों में रहता है, काक्रोच।

तिलहन – पु० फ़सल के वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है; जैसे – सरसों, तिल, अलसी आदि।

तिल्ली – स्त्री० 1. (दियासलाई की) तीली। 2. पसलियों के नीचे का अवयव जो पोली गुठली के आकार का होता है, प्लीहा।

तीक्ष्ण – *वि०* 1. तेज़ नोक या तेज़ धारवाला; जैसे – तीक्ष्ण खड्ग, तीक्ष्ण बाण। 2. तेज़, प्रखर, तीव्र; जैसे – तीक्ष्ण बुद्धि। 3. तीखे या बहुत चरपरे स्वाद का, कटु, कड़ुवा; जैसे – तीक्ष्ण मिर्च।

तीखा – *वि०* 1. तीक्ष्ण, चरपरा, कटु, कड़ुवे स्वाद का, स्वाद में तेज़; जैसे– तीखी मिर्च। 2. तेज़ धारवाला, तेज़ नोकवाला; जैसे – तीखी छुरी।

तीज – स्त्री० 1. अँधेरे या उजले पक्ष की तृतीया तिथि। 2. भादों के शुक्ल पक्ष में तृतीया तिथि को स्त्रियों द्वारा पति के कल्याण के लिए रखा जानेवाला बिना अनन और जल का एक व्रत और उससे संबंधित उत्सव।

तीतर – पु० मुर्ग़ी-जैसा एक प्रसिद्ध और चंचल पक्षी जो काफ़ी तेज़ दौड़ता है तथा जो कुछ लोगों द्वारा लड़ाने के लिए पाला जाता है। *प्र०* कहीं-कहीं लोग तमाशे के रूप में तीतर या तीतर-बटेर की लड़ाई कराते हैं। *लो० आधा तीतर आधा बटेर*– बेमेल चीज़ों का समूह, जिसमें पूरे में एकरूपता न हो। *प्र०* अरे भाई, यह तो अच्छा नहीं लग रहा है, यह तो आधा तीतर है आधा बटेर है।

तीर्थ – पु० वह पवित्र धार्मिक स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग यात्रा, पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों।

तीर्थयात्रा – स्त्री० तीर्थ के लिए की गई यात्रा, पवित्र स्थानों के दर्शन आदि के लिए जाना, तीर्थ पर जाना, तीर्थाटन।

तीर्थयात्री – पु० तीर्थयात्रा पर जानेवाले लोग।

तीर्थस्थान – पु० तीर्थस्थल,. तीर्थ, पवित्र स्थान।

तीली – स्त्री० 1. दियासलाई की मसाला लगी सींक। 2. साइकलं के पहियों में रिम में लगी लोहे की पतली-पतली सलाइयाँ।

तीव्र – *वि०* 1. तेज़, वेगवान्, शीघ्रगामी; जैसे– तीव्र गति। 2. तीक्ष्ण, तेज़; जैसे – तीव्र बुद्धि। 3. ऊँचा, ज़ोर से; जैसे – तीव्र स्वर।

तीव्रगति – *वि०* जिसकी चाल तेज़ हो।
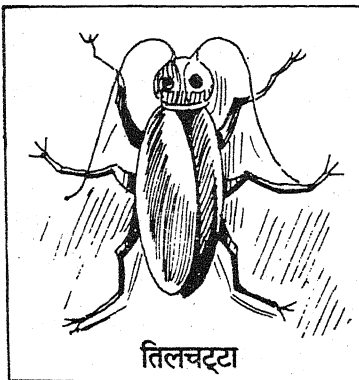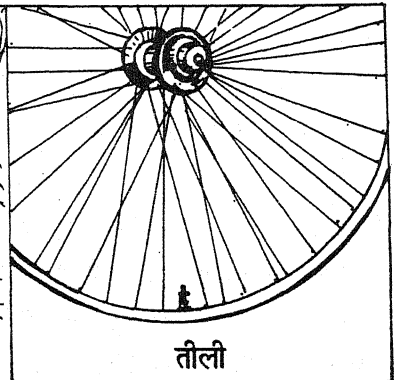
तिलचट्टा | तीतर | तीली
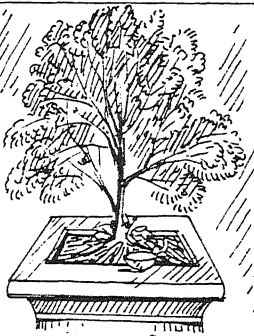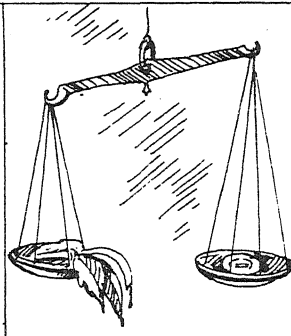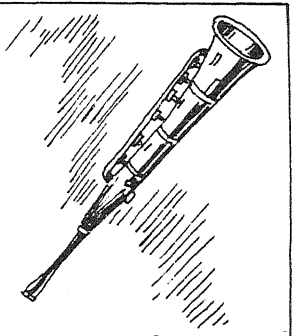
तुड़ाना तुलसी तुला तूती

तीव्रगामी – *वि०* तीव्र गतिवाला, तेज़ चाल चलनेवाला; जैसे – तीव्रगामी रथ, तीव्रगामी अश्व।

तीसमार ख़ाँ – *पु०* जो यह समझे कि वह बहुत कुछ कर सकता है, किंतु यह सचाई न हो, अपने को यों ही बहुत कुछ समझनेवाला। *प्र०* वह मामूली-सा काम तो कर नहीं पाता और अपने को तीसमार ख़ाँ समझता है।

तुड़ाना – *क्रि०* 1. तोड़ने का काम दूसरे से कराना, तुड़वाना। *प्र०* यह मकान टूट-फूट गया है, इसे तुड़ाकर नया बनवा लो। 2. बड़े नोट या सिक्के के बदले बराबर मूल्य के छोटे नोट या सिक्के बदलवाना, भुनाना। *प्र०* कुछ. फुटकर रुपयों और पैसों की ज़रूरत है, कहीं से पचास का यह नोट तुड़ा लाओ।

तुतलाना – *क्रि०* कुछ ध्वनियों के स्थान पर दूसरी ध्वनियाँ बोलना; जैसे – 'ल' का न या 'छ' का थ उच्चारण करना, साफ़ न बोल पाना। *प्र०* **मेला** भाई **अत्था** (अच्छा) लिखता है।

तुरंत – *अ०* 1. अभी, इसी समय। *प्र०* मरीज़ की तबीयत ख़राब है, डॉक्टर को तुरंत बुलाओ। 2. फ़ौरन, झटपट। *प्र०* जो भी काम आए तुरंत कर डाला करो, आज का काम कल पर नहीं छोड़ते।

तुरत – *अ०* दे० तुरंत।

तुलना – 1. *स्त्री०* मिलान, बराबरी। *प्र०* इस चित्र की तुलना में वह चित्र ज़्यादा अच्छा है। 2. *क्रि०* उतारू होना, आमादा होना। *प्र०* वे लोग अब मार-पीट करने पर तुल गए हैं।

तुलवाई – *स्त्री०* 1. तौलने की मज़दूरी। 2. तौलने की क्रिया।

तुलवाना – *क्रि०* तौलने का काम दूसरे से कराना, तौलवाना, तौलाना।

तुलसी – *स्त्री०* एक प्रसिद्ध पौधा जो हिंदुओं द्वारा पवित्र माना जाता है, तुलसा, बृंदा।

तुला – *स्त्री०* तराजू, काँटा।

तुल्य – *वि०* समान, बराबर। *प्र०* 1. (गणित) $^1/_2$ और $^2/_4$ तुल्य भिन्न हैं। 2. दो व्यक्ति पूरी तरह एक-दूसरे के तुल्य नहीं हो सकते।

तुषार – *पु०* हवा में मिली भाप जो सर्दी के कारण बर्फ़ के कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है, पाला।

तूती – *स्त्री०* छोटी जाति का एक प्रकार का तोता। *मु० तूती बोलना*– किसी व्यक्ति का ख़ूब प्रभाव होना, धाक जमना। *प्र०* अरे भाई, उसका क्या कहना? उसकी तो तूती बोलती है।

तूफ़ान – पु० 1. बहुत तेज़ आँधी जिसमें वर्षा भी हो सकती है, भयंकर आँधी। 2. उपद्रव, उत्पात। प्र० क्या तूफ़ान मचा रखा है?

तूफ़ानी – वि० 1. बहुत तेज़; जैसे – कलक्टर का तूफ़ानी दौरा। 2. तूफ़ानवाली; जैसे – तूफ़ानी रात, तूफ़ानी दिन।

तृण – पु० तिनका।

तृतीय – वि० तीसरा।

तृष्णा – स्त्री० 1. जो न मिला हो या जिसका मिलना कठिन हो उसे पाने की तीव्र इच्छा, लोभ, लालच; जैसे – यश की तृष्णा, धन की तृष्णा। 2. प्यास; जैसे – मृगतृष्णा, जलतृष्णा।

तेंदुआ – पु० दक्षिणी एशिया और अफ्रीका में पाया जानेवाला एक खूँख़ार और मांसाहारी जानवर जिसके चमड़े पर मटमैले और भूरे रंग की चित्तियाँ होती हैं।

तेंदू – पु० एक पेड़ जिसके पत्ते से बीड़ी बनती है।

तेज़ – वि० 1. होशियार, तीव्र बुद्धि, कुशाग्र। प्र० पढ़ने में वह बहुत तेज़ है। 2. पैना, तीखी धारवाला; जैसे – तेज़ हथियार, तेज़ चाकू। 3. बहुत ज़ोर का, प्रचंड, भीषण; जैसे – तेज़ आँधी, तेज़ ज्वर, तेज़ गर्मी। 4. तीव्र गतिवाला, अच्छी रफ़्तारवाला; जैसे – तेज़ घोड़ा।

तेजस्वी – वि० 1. प्रतापी, पराक्रमी, प्रभावशाली; जैसे – तेजस्वी व्यक्ति। 2. तेज या कांतिवाला, तेजयुक्त; जैसे – तेजस्वी चेहरा।

तेज़ी – स्त्री० 1. फुर्ती, शीघ्रता। प्र० हमारा धावक बहुत तेज़ी से दौड़ रहा है। 2. मूल्यों का बढ़ना, भाव अधिक हो जाना। प्र० सोने के दाम में बहुत तेज़ी आ गई है। (*विलोम*– मंदी)।

तेल – पु० 1. बीजों से निकाला जानेवाला एक तरल पदार्थ; जैसे – तिल का तेल, अलसी का तेल, गोले का तेल, सूरजमुखी का तेल। 2. एक तरल खनिज पदार्थ जो ज़मीन से निकाला जाता है; जैसे – मिट्टी का तेल। 3. जीवों की चिकनाई का तेल; जैसे – मछली का तेल, बाघ का तेल।

तेलशोधक – वि० ज़मीन से निकलनेवाले तेल को शुद्ध करनेवाला; जैसे – तेलशोधक कारख़ाना।

तैयार – वि० 1. जो बन गया हो। प्र० खाना तैयार है, खा लीजिए। 2. प्रस्तुत, उद्यत। प्र० मैं तुम्हारा साथ देने को तैयार हूँ। 3. स्वस्थ, मोटा-तगड़ा, हृष्ट-पुष्ट। प्र० पता नहीं भोलू पहलवान क्या खाता है, आजकल खूब तैयार है।

तैरना – क्रि० हाथ-पैर हिलाते हुए पानी में मछली-जैसा चलना, पैरना, पौंरना।
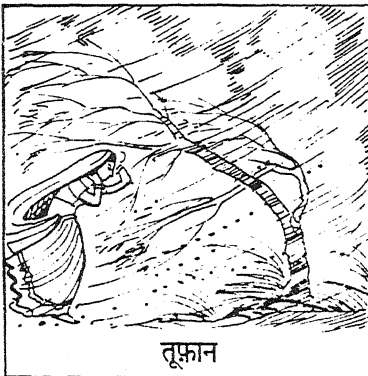
तूफ़ान | तेंदुआ | तेंदू
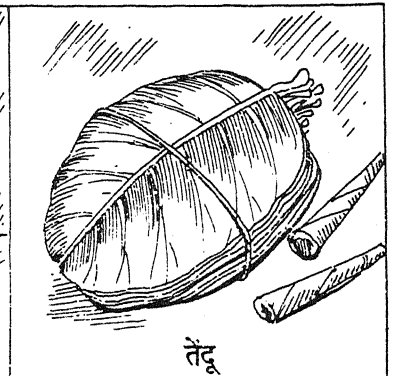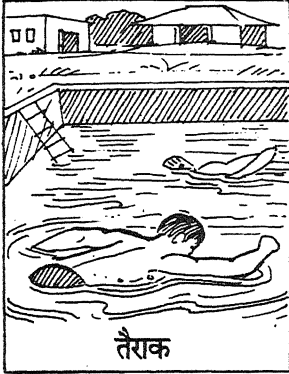
तैराक तोंद त्योहार

तैराक – *पु॰* जो अच्छी तरह तैरना जानता हो, जो तैरने में कुशल हो, अच्छा तैरनेवाला।

तैराकी – *स्त्री॰* तैरना। *प्र॰* कल ज़िले के अच्छे-अच्छे तैराकों की तैराकी प्रतियोगिता है।

तैसा – *वि॰* उसी प्रकार का। *प्र॰* जैसे को तैसा मिलता है।

तोंद – *स्त्री॰* पेट, पेट का फुलाव, पेट का आगे निकला बढ़ा हुआ भाग। *प्र॰* पहलवान कसरत-कुश्ती छोड़ देते हैं तो उनकी तोंद निकल आती है।

तो – *अ॰* उस दशा में, उस हालत में, वैसी स्थिति में। *प्र॰* यदि तुम नहीं आए तो मुझे आना पड़ेगा। 2. ज़ोर देने के लिए आनेवाला शब्द, बलबोधक शब्द। *प्र॰* यही तो मैं भी जानता हूँ।

तोतला – *वि॰* तुतलाकर या अस्पष्ट बोलनेवाला।

तोप – *स्त्री॰* युद्ध में गोलाबारी करने का एक प्रसिद्ध अस्त्र।

तोरई, तोरी – *स्त्री॰* बेलों में होनेवाली पतले लंबे फलों की एक हरी सब्ज़ी, तुरई।

तोलना – *क्रि॰* वज़न करना, तौलना।

तोला – *पु॰* 1. चाँदी-सोना तौलने की बारह माशे की एक तौल। 2. इस तौल का बाट।

तौबा – *स्त्री॰* 1. किसी काम को भविष्य में न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा या क़सम, 2. पश्चात्ताप, प्रायश्चित।

तौर-तरीक़ा – चाल-ढाल, बात-व्यवहार। *प्र॰* उनके घर का तौर-तरीक़ा मुझे पसंद नहीं आया।

तौल–*स्त्री॰* वज़न, भार। *प्र॰* इस वस्तु की तौल कितनी है?

तौलना–*क्रि॰* किसी वस्तु का भार मापना, वज़न करना, भार लेना।

तौलिया–*स्त्री॰* एक विशेष तरह का मोटा अँगोछा जो हाथ और बदन आदि पोंछने के काम आता है।

त्याग–*पु॰* 1. किसी अच्छे काम के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना; जैसे – सर्वस्व त्याग, आत्मत्याग, विषय-त्याग, संपत्ति-त्याग। 2. छोड़ना, अपने से अलग करना; जैसे – मलत्याग, मूत्रत्याग।

त्यागपत्र–*पु॰* इस्तीफ़ा। *प्र॰* आज़ादी की लड़ाई में बहुतों ने अपनी नौकरियों से त्यागपत्र दे दिया था।

त्यागी–*वि॰* त्याग करनेवाला, स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला, विरक्त। *प्र॰* महात्मा गांधी बहुत बड़े त्यागी थे।

त्योंही–*अ॰* उसी समय, तभी। *प्र॰* ज्योंही मैं पहुँचा त्योंही वे भी आ गए।

त्योहार–*पु॰* वह दिन जब कोई धार्मिक या राष्ट्रीय

उत्सव मनाया जाए, पर्व, उत्सव; जैसे – होली, दीपावली, ईद, बुद्धजयंती, महावीर जयंती, क्रिसमस आदि।

त्रिकोण– पु० तीन कोनेवाला आकार, त्रिभुज, △।

त्रिज्या– स्त्री० वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा, व्यास की आधी रेखा, अर्धव्यास।

त्रिभुज– पु० जिसमें तीन भुजाएँ हों, त्रिकोण।

त्रिशिरस्क पेशी– स्त्री० बाँह की नीचे की हड्डी के ऊपर की हड्डी।

त्रिशूल– पु० एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन नोक होते हैं, शिव का अस्त्र। प्र० दुर्गा और शंकर त्रिशूल से दुष्टों का संहार करते हैं।

त्रुटि– स्त्री० 1. भूल, चूक, ग़लती। प्र० मेरे लेख में कोई त्रुटि हो तो कृपया बताएँ। 2. कसर, कमी। प्र० आपके स्वाग़त-सत्कार में कोई त्रुटि तो नहीं हुई।

त्वचा– स्त्री० शरीर का चमड़ा, चमड़ी, खाल।

★

थ – देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का दूसरा व्यंजन।

थकना– क्रि० थकावट होना, कोई काम करते-करते ऐसा हो जाना कि और काम न किया जा सके, और काम करने की ताक़त न रह जाना।

थकान– स्त्री० दे० थकावट।

थका-माँदा– वि० थका हुआ, काम करते-करते जिसमें और काम करने की ताक़त न रह गई हो, थका-हारा।

थकावट– स्त्री० थकान, थकन, और काम करने की शक्ति न रह जाना, थक जाने की सुस्ती।

थपकी– स्त्री० प्रेम से आशीर्वाद देते हुए या किसी बच्चे को सुलाने के लिए हथेली तथा पंजों से दिया गया आघात। प्र० बच्चों को थपकी देकर सुलाते हैं।

थपथपाना– क्रि० थपकी देना, हथेली और पंजे से थपथपाना। मु० *पीठ थपथपाना* – शाबाशी देना। प्र० मोहन के दौड़ में प्रथम आने पर प्रिंसिपल ने उसकी पीठ थपथपाई।

थपेड़ा– पु० 1. तेज़ थप्पड़। प्र० रामू ने हरीश को ऐसा थपेड़ा मारा कि वह गिरते-गिरते बचा। 2. धक्का, झटका, आघात। प्र० तेज़ तूफ़ान के थपेड़ों से समुद्र में कई नावें डूब गईं।

थमना – क्रि० रुकना, चालू न रहना; जैसे – आँधी थमना, बारिश थमना।

थमाना– क्रि० देना, पकड़ाना। प्र० मैं स्टूल पर चढ़कर किताबें आलमारी के ऊपर के ख़ाने में रखूँगा, तुम मुझे थमा दो।

थरथराना– क्रि० भय या सर्दी के कारण थर-थर काँपना, डर या जाड़े के मारे कँपकँपी मचना।

त्रिज्या | त्रिशूल | थका-माँदा | थपकी

थर्मस | थान | थिएटर | थूहर
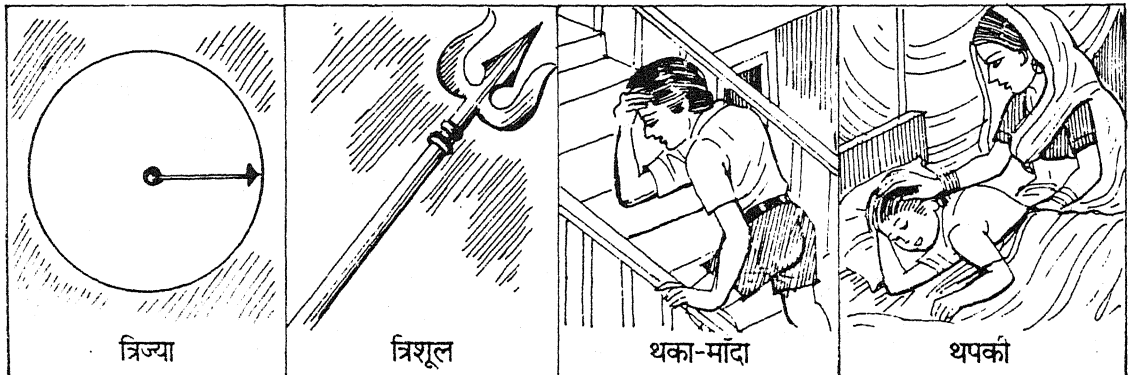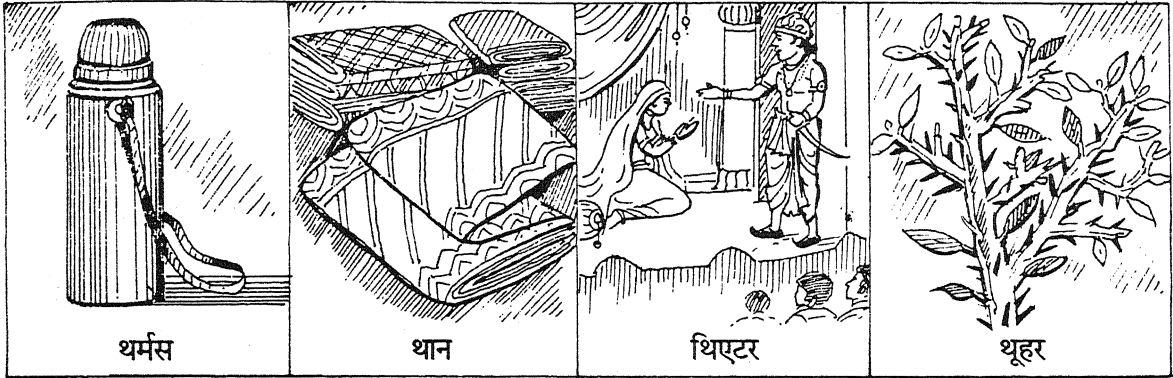
थर्मस– *पु०* एक प्रकार की बोतल जिसमें गरम-चीज़ देर तक गरम और ठंडी चीज़ देर तक ठंडी रहती है।

थर्मामीटर– *पु०* शीशे की नली में थोड़ा-सा पारा भरकर बनाया हुआ गरमी नापने का एक उपकरण, तापमापी, तापमापकयंत्र।

थल– *पु०* धरती, स्थल, ज़मीन। *प्र०* थल सेना, जल सेना और वायु सेना से ही किसी भी देश की सुरक्षा निश्चित होती है।

थाती– *स्त्री०* धरोहर, अमानत। *प्र०* 1. यही थोड़ी ज़मीन पूर्वजों की थाती है। 2. मोहन ने ये रुपए थाती रूप में रखे थे, मैं उसके कहे बिना किसी और को कैसे दे दूँ?

थान– *पु०* 1. कपड़े तथा गोटे आदि का निश्चित नाप का बड़ा टुकड़ा। *प्र०* कुछ कपड़ों का थान बारह गज़ का होता है तो कुछ का चौबीस गज़ का तथा कुछ का और बड़ा। 2. देवताओं आदि के लिए बना चबूतरा; जैसे – काली का थान। 3. पशुओं के बाँधने की जगह; जैसे – हाथी का थान, घोड़े का थान।

थामना –*क्रि०* 1. पकड़ना, हाथ में लेना, सँभालना। *प्र०* ये पुस्तकें मुझे ऊपर से नीचे उतारनी हैं, ज़रा थाम लो। 2. किसी चीज़ को गिरने या लुढ़कने न देना। *प्र०* थामो नहीं तो गिरा।

थाल– *पु०* बड़ी थाली। *प्र०* मिठाई के पाँच थाल उन्होंने मेरे परिवार के लिए भेजे हैं।

थाह– *स्त्री०* गहराई, गहराई का पता, गहराई का अंदाज़, गहराई की सीमा। *प्र०* 1. इस जगह पर तो नदी के पानी की थाह नहीं मिलती, अथाह पानी है। 2. पंडितजी के ज्ञान की थाह नहीं है, उनका ज्ञान अथाह है।

थिएटर– *पु०* वह भवन जहाँ नाटक आदि खेले जाते हैं, रंगशाला।

थिरकना– *क्रि०* पैरों को हिलाते-डुलाते हुए धीरे-धीरे नाचना।

थूहर– *पु०* 1. एक छोटा काँटेदार पौधा, जिसका दूध दवा के काम आता है, सेहुँड़। 2. नागफनी।

थोक– *पु०* ढेर, राशि, समूह। (*विलोम* – खुदरा)। *प्र०* 1. दिल्ली के सदर में कई चीज़ों के थोक बाज़ार हैं। 2. मैंने ये बॉलपेन थोक में लिए थे, इसीलिए सस्ते हैं।

थोथा– *वि०* जो भीतर से ख़ाली या खोखला हो, जिसमें कोई तत्त्व या सार न हो। *प्र०* उसके वायदे थोथे होते हैं, उन्हें वह कभी पूरा नहीं करता। *लो० थोथा चना बाजे घना* – जिस आदमी का ज्ञान कम होता है वह बहुत बातें करता है।

थ्यूजा– पु० एक पौधा, जिससे दवा बनती है, मोरपंखी, झाऊ।

★

द – 1. देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा व्यंजन। 2. *प्रत्य०* देनेवाला; जैसे – सुखद, दुखद।

दंग– *वि०* हैरान, चकित, हक्का-बक्का, आश्चर्यचकित।

दंगल– पु० पहलवानों की ईनामी कुश्ती। *प्र०* अगले महीने दिल्ली में एक बहुत बड़ा दंगल हो रहा है जिसमें देश के बहुत-से मशहूर पहलवान भाग ले रहे हैं।

दंड– पु० 1. किसी अपराध के लिए दिया जानेवाला जुरमाना, अर्थदंड। *प्र०* पाकिटमार को पचास रुपए दंड देने पड़े। 2. किसी जुर्म के लिए दी जानेवाली सज़ा। *प्र०* चोर को दो साल क़ैद का दंड मिला। 3. एक प्रकार की कसरत जिसे हाथ-पैर के बल पर पट लेटकर करते हैं।

दंत– पु० दाँत।

दंतक्षय– पु० दाँतों का सड़ना।

दंतचिकित्सक– पु० दाँतों का डॉक्टर, डेंटिस्ट।

दंतवल्क– पु० दाँतों का ऊपरी सख़्त खोल, इनेमल।

दंतशूल– पु० दाँत का दर्द।

दंभ– पु० अहंकार, झूठा घमंड, झूठी ठसक।

दंश– पु० दाँत से काटना; जैसे – सर्प-दंश।

दक्ष– *वि०* निपुण, कुशल, प्रवीण, होशियार, चतुर।

दक्षिण– पु० 1. उत्तर के सामने की दिशा, दक्खिन। (*विलोम* – उत्तर)। 2. बायाँ का उल्टा, दाहिना। (*विलोम* – वाम)।

दक्षिण-पश्चिम– पु० दक्षिण और पश्चिम दिशाओं का मिलन-स्थल, दक्षिण-पश्चिम कोण।

दक्षिण-पश्चिम मानसून– पु० वे बरसनेवाले बादल जो दक्षिण-पश्चिम दिशा से आते हैं, गर्मी का मानसून (मई और अक्तूबर के बीच लगभग छः महीने तक भारत में हवा दक्षिण-पश्चिम से आती है तथा मानसून लाती है)।

दक्षिण-पूर्व– पु० दक्षिण दिशा और पूर्व दिशा का कोना, दक्षिण-पूर्वी दिशा।

दक्षिणी– *वि०* 1. दक्षिण दिशा-संबंधी; जैसे – दक्षिणी ध्रुव, दक्षिणी हवा। 2. दक्षिण भारत-संबंधी।

दक्षिणी गोलार्ध– पु० यदि पृथ्वी के गोले को बीच से विभाजित कर दें तो उत्तर दिशा में स्थित भाग उत्तरी गोलार्ध और दक्षिण में स्थित भाग दक्षिणी गोलार्ध कहलाता है।

दक्षिणी ध्रुव– पु० यदि पृथ्वी के बीचोंबीच एक कीली

दंगल | दंड | दंतचिकित्सक | दक्षिणी गोलार्ध

दढ़ियल | दफ़नाना | दबोचना | दमकल केंद्र
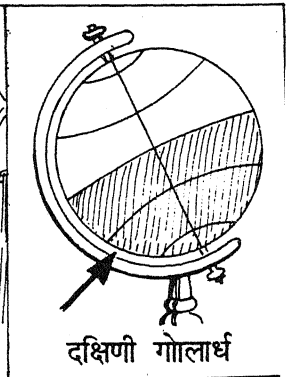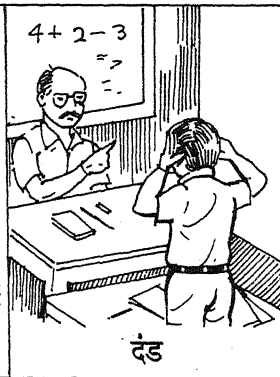
मानें तो उसका उत्तरी भाग उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी भाग दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है, दक्षिण-ध्रुव।

दख़ल– *पु०* 1. क़ब्ज़ा, अधिकार। *प्र०* इस ज़मीन को बदमाशों ने लाठी के बल पर दख़ल कर रखा है। 2. हस्तक्षेप, बीच में आना। *प्र०* भारत दूसरे देशों के मामलों में दख़ल नहीं देता।

दढ़ियल– *वि०* जो दाढ़ी रखे हो, दाढ़ीवाला।

दत्त–*वि०* दिया गया, दिया हुआ; जैसे – दत्त संख्या।

दधि– *पु०* दही।

दफ़नाना– *क्रि०* मुर्दे को ज़मीन में गाड़ना।

दफ़्ती – *स्त्री०* गत्ता, बहुत मोटा काग़ज़, कार्डबोर्ड।

दबदबा– *पु०* रोब-दाब, रोब, प्रभुत्व, प्रभाव। *प्र०* मुखियाजी का इस गाँव में बहुत दबदबा है।

दबना– *क्रि०* 1. भार के नीचे आना, बोझ के नीचे पड़ना, ऊपर से भार पड़ना। *प्र०* सारे काग़ज़ किताबों के नीचे दबे हैं। 2. किसी से डरकर उसका विरोध न करने के लिए मज़बूर होना। *प्र०* मुखिया के विरोध में कोई भी हाथ नहीं उठाएगा, सभी उनसे दबते हैं।

दबाना– *क्रि०* 1. भार या दबाव के नीचे लाना, भार डालना। *प्र०* गाँव में मुखिया सबको दबा रहा है, इसीलिए कोई उसके ख़िलाफ़ बोल नहीं सकता। 2. किसी बात या मामले को आगे न बढ़ने देना, ज्यों-का-त्यों रखना, छिपा रखना। 3. ग़लत ढंग से किसी की चीज़ हड़प लेना; जैसे – ज़मीन दबाना, संपत्ति दबाना।

दबाव– *पु०* दबाना, दाब, प्रभाव। *प्र०* मुखिया के दबाव में आकर ही सब लोगों ने उनका समर्थन किया।

दबोचना– *क्रि०* किसी को पकड़कर दबा लेना। *प्र०* बिल्ली ने चूहे को दबोच लिया।

दब्बू– *वि०* दबनेवाला, जो दूसरों से दब जाए, जो दूसरों के सामने कुछ बोल न सके। *प्र०* आपका बेटा बड़ा दब्बू है, किसी से कुछ कह नहीं सकता।

दम – *पु०* 1. साँस, श्वास। *मु० दम फूलना* – साँस तेज़ी से बाहर निकलना और भीतर जाना। *प्र०* बहुत तेज़ मत दौड़ो, दम फूलने लगेगा। 2. ताक़त, शक्ति। *प्र०* आओ, मुझसे लड़ लो, देखता हूँ, तुममें कितना दम है। *मु० दम घुटना*–साँस ठीक से ले पाना मुश्किल होना। *प्र०* इस कमरे में बीड़ी-सिगरेट के धुएँ से दम घुट रहा है।

दमकल– *पु०* आग बुझाने की गाड़ी।

दमकल केंद्र– *पु०* ऐसी जगह जहाँ कई दमकल गाड़ियाँ हों, फ़ायर स्टेशन।

दयालु– *वि०* जो दूसरों पर दया करे, जो दूसरों पर

रहम खाए, दया करनेवाला, रहमदिल। (*विलोम* – निर्दय)।

दर– 1. *पु॰* द्वार, दरवाज़ा, दहलीज़। *प्र॰* बेचारा दर-दर भटक रहा है। 2. *स्त्री॰* भाव, रेट, मूल्य। *प्र॰* आजकल चना किस दर से मिल रहा है?

दरगाह– *पु॰* किसी फ़कीर का मक़बरा, मज़ार, समाधि। *प्र॰* हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह पर हम लोग चादर चढ़ाने जा रहे हैं।

दरबा– *पु॰* कबूतरों और मुर्ग़ियों आदि के रहने के लिए काठ का बना हुआ घर, दड़बा।

दरबान– *पु॰* दरवाज़े या फ़ाटक पर पहरा देनेवाला, द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

दरबार– *पु॰* राजाओं का अपने मंत्रियों आदि के साथ बैठने का स्थान, राजसभा।

दरम्यान– *पु॰* बीच, मध्य। *प्र॰* हम लोग बातचीत कर ही रहे थे कि इसी दरम्यान भाई साहब आ गए।

दराँती– *स्त्री॰* हँसिया, फ़सल आदि काटने का एक दाँतिदार उपकरण।

दराज़– *स्त्री॰* मेज़ में लगा हुआ संदूकनुमा ख़ाना।

दरार– *स्त्री॰* लंबा-पतला छेद, किसी चीज़ के फटने के कारण बनी ख़ाली जगह।

दरिद्र– *वि॰* निर्धन, कंगाल, ग़रीब।

दरिया– *पु॰* नदी।

दरियाई– *वि॰* 1. नदी संबंधी, नदी का। 2. जो नदी में रहता हो।

दरियाई घोड़ा– *पु॰* अफ़्रीका का मोटे चमड़ेवाला गैंडे-जैसा जानवर जो नदियों के किनारे ज़मीन पर भी रहता है और पानी में भी।

दर्ज– *वि॰* लिखा हुआ, अंकित, नोट। *प्र॰* मोहन को बुख़ार है, उसका सुबह, दोपहर और शाम का बुख़ार एक काग़ज़ पर दर्ज करें, डॉक्टर ने मँगाया है।

दर्जन– *पु॰* बारह वस्तुओं का समूह। *प्र॰* बाज़ार से आधा दर्जन संतरे और एक दर्जन केले ले आना।

दर्जा– *पु॰* 1. ओहदा, पद; जैसे – ऊँचे दर्जे के अफ़सर। 2. कक्षा, वर्ग, क्लास। *प्र॰* आपका बेटा किस दर्जे में पढ़ता है? 3. श्रेणी; जैसे – ऊँचे दर्जे के आदमी, ऊँचे दर्जे के ख़यालात।

दर्द– *पु॰* तकलीफ़, पीड़ा; जैसे – सिरदर्द, बदनदर्द।

दर्पण– *पु॰* जिसमें मुँह देखते हैं, आईना, शीशा।

दर्रा– *पु॰* पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग; जैसे – बानिहाल दर्रा, ख़ैबर दर्रा।

दर्शक– *पु॰* देखनेवाला; जैसे – नाटक के दर्शक, सिनेमा-दर्शक।

दर्शन– *पु॰* किसी देवी-देवता की मूर्ति या पूज्य व्यक्ति को आँखों से देखना; जैसे – पुरी में जगन्नाथजी
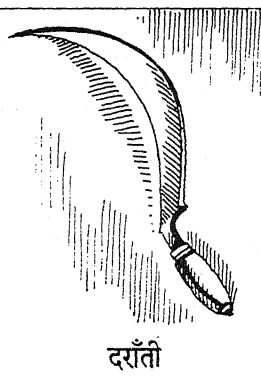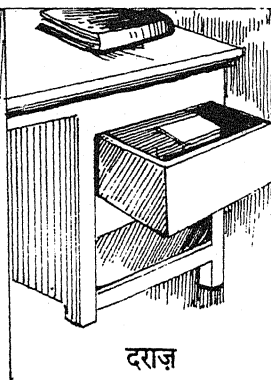
दरबान | दराँती | दराज़ | दरियाई घोड़ा
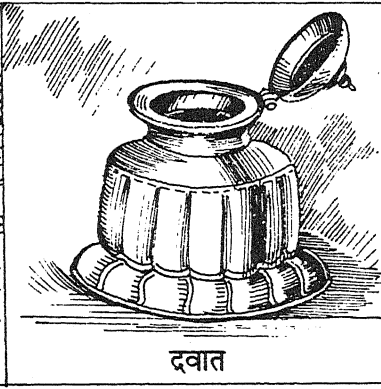
दलदल | दवात | दशहरा

का दर्शन, वैष्णवजी का दर्शन। 2. भेंट, मुलाक़ात। प्र० आज तो चलते हैं कल फिर दर्शन करेंगे।

दर्शनीय– *वि०* देखने योग्य, देखने लायक़। प्र० दक्षिणी भारत में कई मंदिर दर्शनीय हैं।

दल–*पु०* 1. पार्टी। प्र० भारत में कांग्रेस, कम्यूनिस्ट, लोक दल, भारतीय जनता पार्टी आदि कई दल हैं। 2. समूह, झुंड; जैसे – टिड्डी दल। 3. खंड, भाग; जैसे – दाल के दो दल। 4. पत्ता, पत्र; जैसे – तुलसीदल। 5. परत की तरह फैली हुई चीज़ की मोटाई।

दलदल– *स्त्री०* वह गीली ज़मीन जिसमें पैर नीचे धँसता चला जाता है और उसमें से निकलना कठिन हो जाता है। प्र० उधर मत जाना, वहाँ दलदल है।

दलना– *क्रि०* दलहन (अरहर, मूँग, मटर, चना आदि) को चक्की चलाकर दो-दो दलों या भागों में करना। प्र० अभी अरहर की दाल दलनी है।

दलिया – *पु०* दला हुआ अनाज; जैसे – मक्के का दलिया, गेहूँ का दलिया।

दवाख़ाना–*पु०* औषधालय, दवाईघर, दवा मिलने की जगह।

दवात – *स्त्री०* स्याही रखने का बरतन, मसिपात्र, इंकपॉट।

दवा-दारू– *स्त्री०* इलाज, चिकित्सा। प्र० बीमार हो तो कुछ दवा-दारू करो।

दशक–*पु०* दस वर्षों का समूह। प्र० इस दशक में भारत ने खेती में काफ़ी उन्नति की है।

दशमलव– *पु०* गणित में वह भिन्न जिसके हर (दे०) में दस या उसका कोई घात होता है। दूसरे शब्दों में गणित में एक बिंदु जिसे किसी संख्या के दसवें भाग को बताने के लिए उस संख्या के पहले लगाते हैं; जैसे – 0.8= $^{8}/_{10}$।

दशमलव भिन्न–*स्त्री०* वह भिन्न जो दशमलव ढंग से लिखी हो; जैसे – $^{3}/_{10}$ भिन्न है। इसकी दशमलव भिन्न होगी .3।

दशमांश– *पु०* दसवाँ हिस्सा, दसवाँ भाग; जैसे – तीस का दशमांश तीन है।

दशहरा – *पु०* क्वार के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि जिस दिन राम ने रावण को मारा था। उस दिन 'दशहरा' नामक त्योहार मनाया जाता है, विजयदशमी, रामलीला।

दशा–*स्त्री०* अवस्था, हालत, स्थिति; जैसे – देश की दशा, खेती की दशा, रोगी की दशा।

दस्त–*पु०* 1. पतला पाख़ाना। 2. पाख़ाना। 3. हाथ; जैसे – दस्तकारी।

दस्तक– *स्त्री०* दरवाज़े पर हाथ से खटखट। *मु० दस्तक देना* – दरवाज़ा खटखटाना। *प्र०* शायद कोई दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है, खोलकर देखो तो।

दस्तकारी– *स्त्री०* हाथ से चीज़ें बनाने का काम, हाथ की कारीगरी, हस्तशिल्प, शिल्प। *प्र०* उस प्रदर्शनी में दस्तकारी की बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें बिक रही हैं।

दस्तख़त– *पु०* अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम, हस्ताक्षर, सही।

दस्ता– *पु०* 1. दल; जैसे – सैनिकों का दस्ता, पुलिस दस्ता। 2. हत्था, हैंडिल। *प्र०* चाकू का दस्ता टूट गया है। 3. काग़ज़ की चौबीस या पच्चीस शीटों की गड्डी।

दहलना– *क्रि०* डर से एकाएक काँप उठना। *प्र०* शेर की दहाड़ से जंगल का पूरा वातावरण दहल उठा।

दहला– *पु०* ताश का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों; जैसे – ईंट का दहला, पान का दहला।

दहाड़– *पु०* शेर, बाघ आदि का ज़ोर से गर्जन।

दहाड़ना– *क्रि०* 1. शेर, बाघ आदि का ज़ोर से गरजना। 2. युद्ध आदि में वीरों का गरजना या ललकारना।

दहेज– *पु०* वह धन या सामान जो विवाह के समय कन्यापक्ष की ओर से वर या वर-पक्ष को दिया जाता है। *प्र०* दहेज माँगना अनुचित है।

दाँत– *पु०* प्राणियों के जबड़े की छोटी-छोटी हड्डियाँ जिनसे भोजन चबाया जाता है, दंत। *मु० दाँत खट्टे करना* – लड़ाई में हराना। *प्र०* भारतीय सेना ने लड़ाई में दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए। *दाँत पीसना* – क्रोध करना, गुस्सा होना। *प्र०* वे दाँत–पीसते हुए बोले, ख़बरदार जो फिर इधर आए। *दाँतों तले उँगली दबाना* – अचरज करना, दंग रह जाना, आश्चर्यचकित होना। *प्र०* उस जादूगर के खेल देखकर दर्शक दाँतों तले उँगली दबाने लगे।

दाई – *स्त्री०* 1. बच्चों की देख-रेख करनेवाली, धाय। 2. नौकरानी, मज़दूरनी, महरी।

दाख़िल – *वि०* भीतर घुसा हुआ, प्रविष्ट, भर्ती; जैसे– कमरे में दाख़िल होना, स्कूल में दाख़िल होना, सेना में दाख़िल होना।

दाख़िला – *पु०* प्रवेश, ऐडमिशन। *प्र०* उस बच्चे को किसी भी स्कूल में दाख़िला नहीं मिला।

दाग़ – *पु०* 1. धब्बा, चित्ती, निशान; जैसे – फोड़े का दाग़, चेचक के दाग़, स्याही का दाग़, ख़ून के दाग़। 2. कलंक, लांछन, ऐब। *प्र०* वैसे तो वे अच्छे हैं किंतु उनके चरित्र में बिल्कुल दाग़ न हो, ऐसी बात नहीं है।

दस्तक | दस्ता | दहाड़ना | दाँत
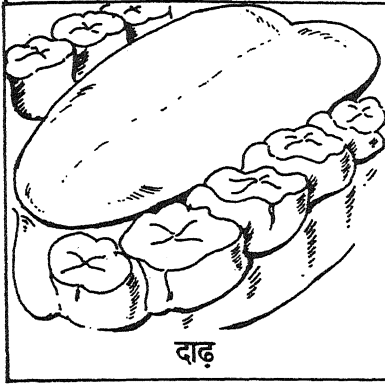
दाढ़ दानव दावत
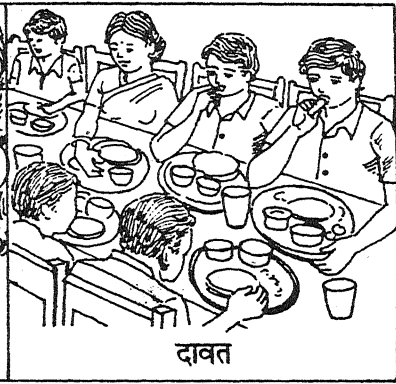
दाढ़ – *स्त्री॰* जबड़े के भीतर के चबाने के काम आनेवाले मोटे-चौड़े दाँत, चौभड़, चौभर, चहुआ। *प्र॰* आज अशोक की दाढ़ में दर्द है।

दाद – *पु॰* चमड़ी का एक रोग जिसमें खुजली होती है, चकत्ते पड़ जाते हैं और वहाँ की चमड़ी कड़ी और बदरंग हो जाती है, दिलाय, दिनाई, दद्रु।

दानव – *पु॰* राक्षस।

दानवीर – *पु॰* दान करने में बहादुर, बहुत अधिक दान करनेवाला। *प्र॰* महाभारत के कर्ण दानवीर कहे जाते थे।

दाना – *पु॰* 1. अनाज का एक बीज। *प्र॰* बहुत से धार्मिक लोग कबूतरों के लिए अनाज के दाने बिखेरते हैं। 2. चबेना, भुना हुआ अन्न; जैसे – चने का दाना, बाजरे का दाना। 3. किसी सतह पर छोटे-छोटे उभार। *प्र॰* 1. पूरे शरीर पर दाने निकल आए हैं। 2. दीवाल पर दाना पड़ेगा।

दानेदार – *वि॰* दानेवाला; जैसे – दानेदार दीवाल, दानेदार रेखा (------------)।

दायरा – *पु॰* घेरा, वृत्त।

दालचीनी – *स्त्री॰* एक पेड़ और उसका सुगंधित छिलका जो दवा और मसाले के काम आता है।

दालमोठ – *स्त्री॰* मोठ या कुछ और दालों का तला हुआ चटपटा नमकीन।

दावत – *स्त्री॰* 1. खाना। 2. खाने का बुलावा, निमंत्रण। 3. भोज, सहभोज, सामूहिक खाना।

दावा – *पु॰* 1. मुक़दमा, नालिश। *प्र॰* वे क़र्ज़ नहीं लौटा रहे हैं, लगता है मुझे दावा करना पड़ेगा। 2. विश्वास, यक़ीन। *प्र॰* मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह क़लम तुम्हारी नहीं है। 3. हक़, अधिकार। *प्र॰* इस ज़मीन पर उनका कोई दावा नहीं है। *मु॰ दावा ठोकना* – मुक़दमा चलाना। *प्र॰* यदि वह मकान छोड़ने में आनाकानी करता है तो दावा ठोक दो।

दावात – *स्त्री॰* दे॰ दवात।।

दास – *पु॰* 1. गुलाम। *प्र॰* मैं आपका दास नहीं हूँ जो हर कहना मानूँ। 2. नौकर, चाकर, सेवक।

दासता – *स्त्री॰* गुलामी। *प्र॰* भारत ने बड़ी कुर्बानी देकर दासता की ज़ंजीरों से मुक्ति पाई।

दासी – *स्त्री॰* नौकरानी, सेविका।

दाहिना – *वि॰* दायाँ। (*विलोम* – बायाँ)।

दिक़्क़त – *स्त्री॰* कठिनाई, परेशानी, मुश्किल,

तंगी। प्र० पढ़ाई में मुझे कई दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा।

दिखलाना – *क्रि०* दूसरे को देखने में लगाना, दिखाना। प्र० तुम्हारा बुख़ार उतर नहीं रहा है, किसी डॉक्टर को दिखलाओ।

दिदोरा – *पु०* चमड़ी पर उभार, चकत्ता। प्र० खुजलाने से चमड़ी पर दिदोरे पड़ जाते हैं।

दिनचर्या – *स्त्री०* रोज़ का कार्यक्रम, दिन-रात का काम। प्र० पिताजी की दिनचर्या पहले से निश्चित रहती है।

दिन-प्रति-दिन – *अ०* दे० दिनोंदिन।

दिन-ब-दिन – *अ०* दे० दिनोंदिन।

दिनांक – *पु०* तारीख़। प्र० आज कौन-सा दिनांक है?

दिनोंदिन – *अ०* समय बीतने के साथ, धीरे-धीरे, दिन-ब-दिन, दिन-प्रतिदिन। प्र० मरीज़ की हालत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है।

दिमाग़ – *पु०* 1. शरीर का वह अंग जो सोचने-समझने का काम करता है, बुद्धि, मस्तिष्क, सोचने-विचारने की शक्ति। प्र० उस बच्चे का दिमाग़ अच्छा है। 2. भेजा, सिर के भीतर का गूदा। प्र० उसके दिमाग़ की नसें फट गई हैं।

दिलचस्प – *वि०* 1. जिसमें दिल या मन लगे, मनोरंजक, रोचक; जैसे – दिलचस्प फ़िल्म, दिलचस्प उपन्यास। 2. जिससे ऊब न हो, जिससे बात करना या जिसके बारे में जानना अच्छा लगे; जैसे – दिलचस्प आदमी।

दिलचस्पी – *स्त्री०* रुचि। प्र० उस काम में मेरी दिलचस्पी है।

दिवस – *पु०* दिन; जैसे – गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस।

दिवार – *स्त्री०* दीवाल, भीत। प्र० शहर की दिवारें इश्तिहारों से भरी पड़ी हैं।

दिवाली – *स्त्री०* दीपावली, दीवाली।

दिशा – *स्त्री०* 1. क्षितिज (दे०) के चार माने हुए भाग – पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। 2. तरफ़, ओर। प्र० आप यह ठीक कहते हैं कि चित्रकला और संगीत ख़ाली समय के उपयोग के लिए बहुत अच्छे हैं पर इस दिशा में शुरू से ही मेरी रुचि नहीं है।

दीक्षा – *स्त्री०* 1. गुरुमंत्र। प्र० कबीर के बहुत कहने पर रामानंद ने उन्हें दीक्षा दी। 2. शिक्षा; जैसे – दीक्षांत भाषण (शिक्षा के अंत में किसी बड़े आदमी द्वारा दिया गया भाषण)।

दिवार | दिवाली | दिशा
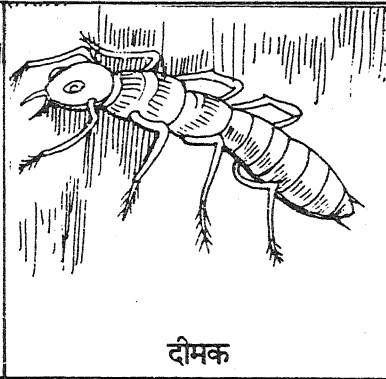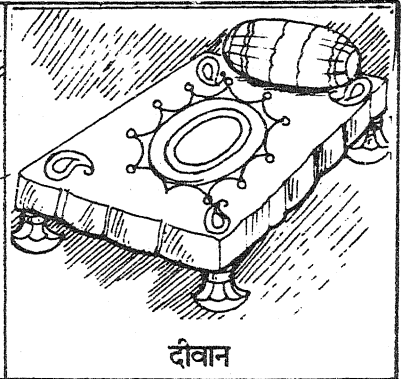
दीखना – *क्रि॰* दिखाई पड़ना, दिखाई देना। *प्र॰* यहाँ से कुतुबमीनार दीखती है।

दीप – *पु॰* दिया, चिराग़। *प्र॰* दीपावली दीपों का त्योहार है।

दीपक – *पु॰* दिया, चिराग़, दीप।

दीपावली – *स्त्री॰* कार्तिक की अमावस्या को मनाया जानेवाला दीपों का त्योहार। *प्र॰* हिंदू-सिख दीपावली बड़े उत्साह से मनाते हैं।

दीमक – *स्त्री॰* चींटी-जैसा एक सफ़ेद कीड़ा जो लकड़ी, काग़ज़, कपड़े आदि खाकर खोखला कर देता है।

दीया – *पु॰* चिराग़, दीप, दीपक।

दीर्घ – *वि॰* 1. बड़ा, लंबा। *प्र॰* 1. भगवान् आपको दीर्घ आयु दे। दीर्घ श्वास लेकर माँ बोली ...। 2. बड़ी मात्रावाला, जिसके बोलने में ह्रस्व की तुलना में अधिक समय लगे; जैसे– दीर्घ स्वर, दीर्घ ई, दीर्घ ऊ।

दीवान – *पु॰* 1. पुराने राजे-रजवाड़ों और बादशाहों का मंत्री। *प्र॰* उसके दादाजी एक रियासत में दीवान थे। 2. लकड़ी का तख़्त, चौकी, गद्देदार तख़्त। *प्र॰* कुछ लोगों की बैठक में दीवान भी होता है।

दीवाना – *वि॰* पागल। *प्र॰* एक दीवाना गाता हुआ सड़कों पर घूम रहा है।

दीवार, दीवाल – *स्त्री॰* मिट्टी या ईंट-सीमेंट आदि से बनी खड़ी चीज़ जिस पर छत डालते हैं या जो परदे का काम करती है, भीत, भित्त, भित्ति।

दीवाली – *स्त्री॰* दे॰ दीपावली।

दुख – *पु॰* 1. मानसिक पीड़ा या कष्ट, व्यथा। *प्र॰* भाई के मर जाने का उन्हें दुख है। 2. तकलीफ़, कष्ट। *प्र॰* दुख जब आते हैं तो चारों ओर से आते हैं।

दुखद, दुखदायक, दुखदायी – *वि॰* दुख देनेवाला।

दुखना – *क्रि॰* दर्द करना, दर्द होना। *प्र॰* पूरा बदन दुख रहा है।

दुखाना–*क्रि॰* दुख या तकलीफ़ देना, कष्ट देना। *प्र॰* जो दूसरों का दिल दुखाता है, भगवान् उसका दिल दुखाते हैं।

दुबकना–*क्रि॰* सिमटकर छिप जाना। *प्र॰* बिल्ली की म्याऊँ सुनकर चूहा कहीं दुबक गया।

दुबारा– *अ॰* दूसरी बार, दोबारा।

दुमंज़िला– *वि॰* वह मकान जिसमें दो मंज़िलें हों, दुतल्ला; जैसे – दुमंज़िला मकान।

दुम– *स्त्री०* पूँछ। *मु० दुम दबाना* – सहयोग न करना, चुप रह जाना, पीछे हटना। *प्र०* मैंने तुमको उस काम के लिए बुलाया था पर तुम दुम दबाकर बैठ गए। *मु० दुम दबाकर भागना* – डरकर भाग जाना। *प्र०* पहले तो बड़े बहादुर बनते थे पर जब देखा कि काफ़ी लोग पकड़ने आ रहे हैं तो दुम दबाकर भाग गए।

दुरुपयोग (दुः + उपयोग) – *पु०* बुरा उपयोग। (*विलोम* – सदुपयोग)। *प्र०* लाठी ले जाना चाहते हो तो ले जाओ पर उसका दुरुपयोग मत करना।

दुरेंटा– *पु०* एक पौधा जो बाड़ लगाने के काम आता है।

दुर्गंध (दुः + गंध)– *स्त्री०* बदबू।

दुर्ग– *पु०* क़िला।

दुर्गति (दुः +गति) – *स्त्री०* बुरी दशा, ख़राब हालत, दुर्दशा, बुरी स्थिति। *प्र०* तुम अपने को सुधार लो नहीं तो बुढ़ापे में तुम्हारे ये तरह-तरह के नशे तुम्हारी दुर्गति करेंगे।

दुर्गम (दुः + गम) –*वि०* न जाने या चलने योग्य, अटपटा; जैसे – दुर्गम मार्ग।

दुर्गापूजा– *स्त्री०* दुर्गा की पूजा से संबंधित त्योहार जो विशेष रूप से बंगालियों द्वारा मनाया जाता है।

दुर्गुण (दुः +गुण) –*पु०* बुराई, ऐब, दोष। *प्र०* उनमें सभी बातें अच्छी हैं, केवल एक ही दुर्गुण है कि सिगरेट बहुत पीते हैं।

दुर्घटना (दुः + घटना)– *स्त्री०* बुरी घटना। *प्र०* दो रेलगाड़ियों के टकरा जाने की एक दुर्घटना में सैकड़ों लोग मारे गए।

दुर्दशा (दुः + दशा)– *स्त्री०* बुरी दशा, बुरी हालत, दुर्गति। *प्र०* उस बूढ़े की बड़ी दुर्दशा हो रही है, दोनों टाँगें भी टूट गई हैं और कैंसर भी हो गया है।

दुर्दिन (दुः + दिन)– *पु०* बुरा दिन, बुरा समय।

दुर्बल (दुः + बल)– *वि०* 1. कमज़ोर, निर्बल। 2. दुबरा, दुबला-पतला।

दुर्भाग्य (दुः + भाग्य)– *पु०* बुरी क़िस्मत, बदक़िस्मती। *प्र०* आज फिर दुर्भाग्य से रेलगाड़ी छूट गई।

दुर्लभ (दुः + लभ)–*वि०* कठिनाई से मिलनेवाला, मुश्किल से प्राप्त होनेवाला। *प्र०* उन जैसा आदमी आज की दुनिया में दुर्लभ है जो दूसरे के लाभ के लिए अपनी चिंता न करे।

दुर्व्यवहार (दुः + व्यवहार)–*पु०* बुरा व्यवहार, बुरा बर्ताव, ख़राब सुलूक। *प्र०* सुनने में आया है कि नए थानेदार सबके साथ दुर्व्यवहार करते हैं।

दुशाला– *पु०* मोटी या दोहरी ऊनी चद्दर।

दुष्कर (दुः + कर)–*वि०* कठिन, मुश्किल; जैसे – दुष्कर कार्य।

दूत दूरबीन दूल्हन दूल्हा
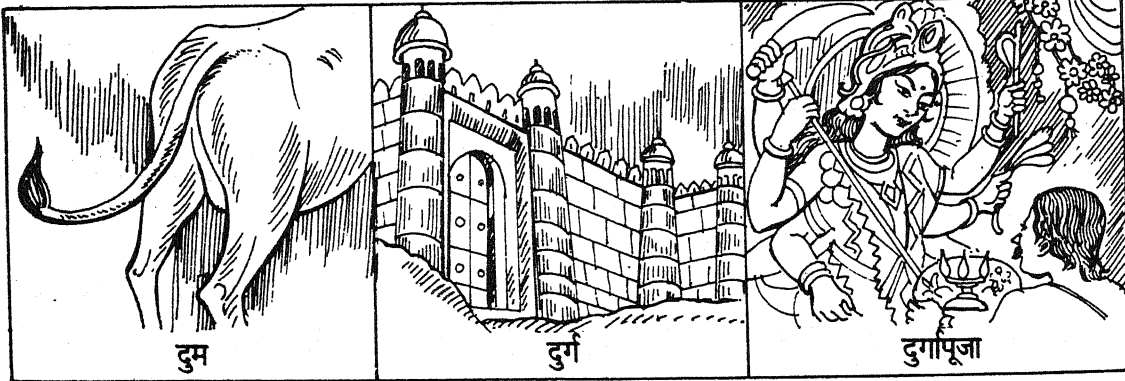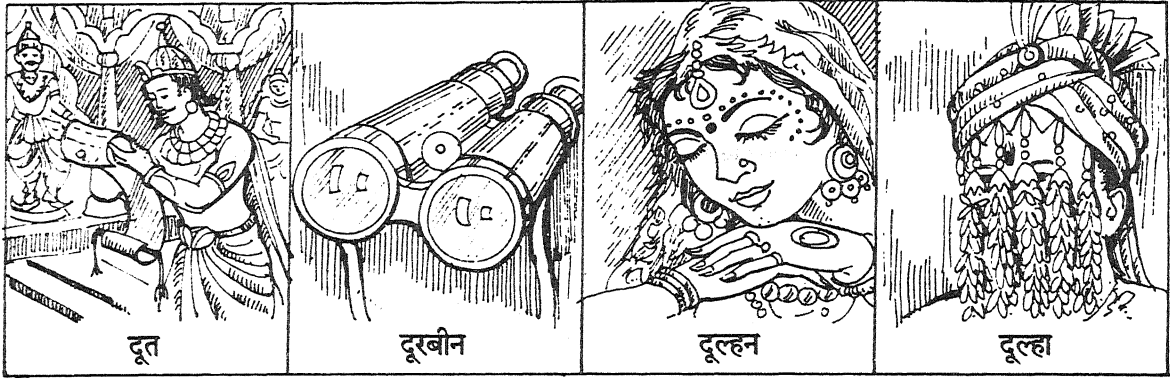
दुष्परिणाम (दुः + परिणाम)—*पु॰* बुरा परिणाम, बुरा नतीजा। *प्र॰* यदि अभी से चोरी करने और झूठ बोलने की आदत पड़ जाएगी तो आगे चलकर दुष्परिणाम तुम्हीं को भोगना पड़ेगा।

दुहराना—*क्रि॰* दुबारा देखना। *प्र॰* अपने लेख को दुहरा लो, शायद कुछ गलतियाँ हों।

दूत—*पु॰* संदेश ले जाने और ले आनेवाला, संदेशवाहक; जैसे – राजदूत।

दूतावास (दूत + आवास)—*पु॰* राजदूत का कार्यालय। *प्र॰* भारत के दूतावास कई देशों में हैं।

दूब—*स्त्री॰* एक ख़ास तरह की मुलायम घास।

दूभट, दूमट मिट्टी—*स्त्री॰* जिस मिट्टी में बालू तथा चिकनी मिट्टी की मात्रा बराबर हो, दोमट।

दूरदराज़—*पु॰* दूर, सुदूर। *प्र॰* बड़े नगरों में दूरदराज़ के इलाक़ों से बहुत-से लोग ट्रेन, बस, कार, साइकल आदि से काम करने रोज़ आते हैं।

दूरदर्शन—*पु॰* टेलिविज़न। *प्र॰* अब भारत के काफ़ी बड़े क्षेत्र में दूरदर्शन के कार्यक्रम देखे जा सकते हैं।

दूरदर्शी—*वि॰* दूर तक देखनेवाला, दूर की सोचने-वाला। *प्र॰* नेहरूजी बड़े दूरदर्शी थे।

दूरबीन—*पु॰* दूर की वस्तुएँ साफ़ देखने का यंत्र, दूरदर्शक यंत्र। *प्र॰* तारों का अध्ययन दूरबीन से किया जाता है।

दूरस्थ—*वि॰* दूरी पर स्थित, दूरवाले। *प्र॰* कुछ पक्षी अपनी प्रकृति से प्रतिकूल मौसम से बचने के लिए दूरस्थ स्थानों पर चले जाते हैं।

दूरी—*स्त्री॰* अंतर, फ़ासला। *प्र॰* इन दोनों गाँवों के बीच काफ़ी दूरी है।

दूल्हन—*स्त्री॰* 1. वह युवती जिसकी शादी होनेवाली हो। *प्र॰* दूल्हन को विवाह के लिए मंडप में लाओ। 2. जिसका विवाह अभी-अभी हुआ हो। *प्र॰* दूल्हन आज बिदा होगी। 3. वधू।

दूल्हा—*पु॰* 1. वह युवक जिसका विवाह होनेवाला हो। *प्र॰* दूल्हा को विवाह के लिए मंडप में बुलाओ। 2. वह युवक जिसका विवाह अभी-अभी हुआ हो। *प्र॰* दूल्हा दूल्हन को लेकर अपने घर जा रहा है। 3. वर।

दूषण—*पु॰* 1. ख़राबी। *प्र॰* रुके हुए पानी में धीरे-धीरे दूषण की मात्रा बढ़ती जाती है। 2. एक राक्षस जो खर का भाई था।

दूषणकारी—*वि॰* ख़राब, दोषयुक्त। *प्र॰* दूषणकारी पदार्थ नहीं खाने-पीने चाहिए।

दूषित—*वि॰* ख़राब, ख़राबीवाला; जैसे – दूषित वातावरण, दूषित हवा, दूषित विचार।

दूसरा–*वि०* 1. क्रम में नंबर दो, द्वितीय; जैसे –दूसरा दरवाज़ा, इस पंक्ति का दूसरा छात्र, दूसरी शादी। 2. और कोई, अन्य। *प्र०* इस पुस्तक से काम नहीं चलेगा, दूसरी पुस्तक लाइए। 3. पराया, ग़ैर। *प्र०* ये भी अपने हैं कोई दूसरे नहीं हैं।

दृढ़–*वि०* 1. अटल। *प्र०* वह अपनी बात पर दृढ़ है। 2. पक्का। *प्र०* उसने वहाँ जाने का दृढ़ निश्चय कर रखा है। 3. मज़बूत, अटूट। *प्र०* उन दोनों के संबंध दृढ़ हैं।

दृढ़ता–*स्त्री०* मज़बूती। *प्र०* 1. इस लकड़ी को दृढ़ता से पकड़ो। 2. महात्मा गांधी के विचारों में अद्‌भुत दृढ़ता थी। 3. अंगद ने रावण के दरबार में अपना पैर इतनी दृढ़ता से रखा कि रावण के दरबारियों से वह हिला तक नहीं।

दृश्य–*पु०* जो आँखों से दीखे, नज़ारा। *प्र०* नदी-पर्वत का प्राकृतिक दृश्य मन को मोह लेता है।

दृष्टि–*स्त्री०* नज़र, निगाह। *प्र०* 1. सूरज पर दृष्टि नहीं टिकती। 2. उसकी दृष्टि कमज़ोर है, उसे चश्मा लगाना चाहिए।

दृष्टिगत– *वि०* जो दिखाई पड़े, जो दीखता हो। *प्र०* पर्वत पर चढ़कर चारों ओर देखो तो कितनी सारी चीजें दृष्टिगत होती हैं।

दृष्टिगोचर – *वि०* जो दिखाई पड़ता हो, दृष्टिगत, जो दीखे। *प्र०* कुतुबमीनार पर चढ़ने पर चारों ओर बहुत कुछ दृष्टिगोचर होता है।

देख-भाल – *स्त्री०* देख-रेख, निगरानी। *प्र०* मैं तो बहुत दिनों से अपने गाँव जा नहीं पाया, ज़मीन-जायदाद की देख-भाल एक नौकर करता है।

देख-रेख – *स्त्री०* देख-भाल, निगरानी। *प्र०* माँ-बाप तो बचपन में ही गुज़र गए, मैं तो दादीजी की देख-रेख में बड़ा हुआ और पढ़ाई-लिखाई की।

देन – *स्त्री०* 1. दी गई चीज़। *प्र०* आज का भारत महात्मा गांधी और पंडित नेहरू की देन है। 2. योगदान। *प्र०* भारत को उसका आधुनिक रूप देने में पंडित नेहरू की देन को भुलाया नहीं जा सकता।

देव, देवता – *पु०* हिंदू धर्म के अनुसार वे अमर प्राणी जो स्वर्गलोक में रहते हैं तथा जो बूढ़े नहीं होते, सुर।

देवनागरी – *स्त्री०* भारत की एक प्रसिद्ध लिपि, नागरी। *प्र०* देवनागरी लिपि का प्रयोग देश-विदेश में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, मराठी तथा नेपाली भाषाओं के लिए होता है।

देवी – *स्त्री०* 1. देवताओं की स्त्रियाँ; जैसे–लक्ष्मी, सीता, राधा, रुक्मिणी, पार्वती आदि, तथा सरस्वती, दुर्गा आदि। 2. महिलाओं के नामों के साथ जोड़ा

दृश्य देव देवी

देशांतर | देहली | देहांत | दैत्य
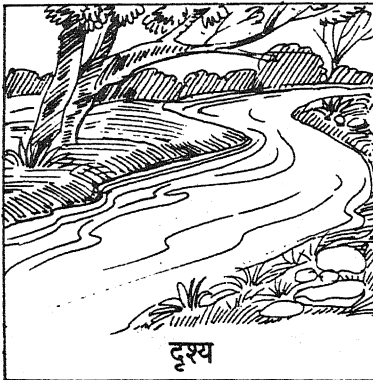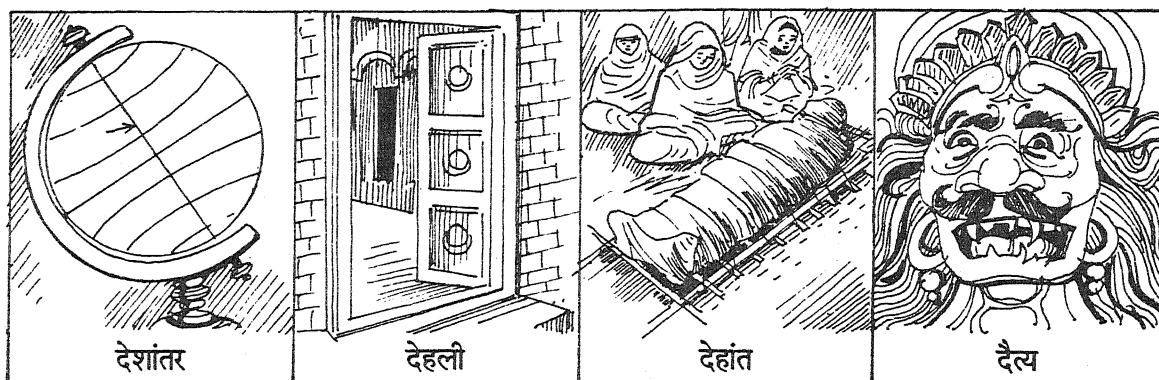
जानेवाला शब्द; जैसे–सुशीला देवी, राधा देवी, शारदा देवी। (मूलतः यह शब्द आदर के लिए जोड़ा जाता था, बाद में परंपरावश जोड़ा जाने लगा)।

देशनिकाला – *पु॰* अपने देश से निकाल दिए जाने की सज़ा, जलावतन।

देश-विदेश – *पु॰* अपना देश और अन्य देश। *प्र॰* वह देश-विदेश घूम चुका है।

देशसेवा – *स्त्री॰* देश की सेवा, देश का काम। *प्र॰* गांधीजी ने अपनी ज़िंदगी देशसेवा में बिताई।

देशांतर – *पु॰* 1. ग्रीनविच (लंदन का एक भाग) से होती उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव तक जानेवाली कल्पित रेखा से किसी स्थान की पूरब या पश्चिम की दूरी। 2. नक़्शे या ग्लोब आदि में दिखाई जानेवाली इस प्रकार की कल्पित रेखाएँ। 3. दूसरा देश।

देहली – *स्त्री॰* 1. दरवाज़े की चौखट की नीचे की लकड़ी या पट्टी, दहलीज़। 2. दरवाज़ा, द्वार। *प्र॰* अब उसकी देहली पर कभी भी क़दम नहीं रखूँगा।

देहांत – *पु॰* मौत, मृत्यु, स्वर्गवास। *प्र॰* परसों मेरे मित्र के पिताजी का देहांत हो गया।

दैत्य – *पु॰* 1. राक्षस, असुर। *प्र॰* रावण दैत्य था। 2. बहुत बड़े डीलडौलवाला, बहुत लंबा-चौड़ा, ग्रांडील, दैत्य के आकार का मनुष्य। *प्र॰* वह दैत्य है, हम लोग तो उसके सामने बौने हैं। 3. बहुत ज़ालिम व्यक्ति।

दैनिक – *वि॰* रोज़-रोज़ का, प्रतिदिन का, हर रोज़ होनेवाला; जैसे–दैनिक जीवन, दैनिक कार्यक्रम। 2. रोज़ निकलनेवाला, हर रोज़ छपनेवाला; जैसे – दैनिक समाचार-पत्र।

दोतल्ला – *वि॰* दो तलोंवाला, दो मंज़िला; जैसे – दोतल्ला मकान।

दोनों – *वि॰* एक भी और दूसरा भी, उभय। *प्र॰* दोनों लड़के इधर ही आ रहे हैं।

दोमंज़िला–*वि॰* दो मंज़िलोंवाला, दुमंज़िला, दुतल्ला; जैसे – दोमंज़िला इमारत।

दोमट – *स्त्री॰* वह मिट्टी जिसमें आधा भाग रेत हो और आधा भाग चिकनी मिट्टी।

दोष – *पु॰* 1. बुरी बात, ख़राबी, ऐब, अवगुण। *प्र॰* तुममें एक ही दोष है कि तुम आलसी बहुत हो। (*विलोम*– गुण)। 2. क़ुसूर, अपराध, त्रुटि, जुर्म। *प्र॰* उस बेचारे को किस दोष की सज़ा दे रहे हैं?

दोसा – *पु॰* एक दक्षिण भारतीय नमकीन खाना जो उर्द और चावल के आटे से पराँठे-सा बनता है।

दोहता – *पु॰* बेटी का बेटा, नाती, पोता।

दोहराना – *क्रि॰* दुहराना, किसी बात को दुबारा

कहना, किसी काम को दुबारा करना, किसी पाठ आदि को दुबारा देखना। प्र० 1. जो तुमने कहा है, उसे दोहरा दो, मैं समझा नहीं। 2. कल परीक्षा है, एक बार पाठ दोहरा लो।

दोहा – पु० दो पंक्तियों और चार चरणों का एक छंद जिसमें पहले और तीसरे चरण में तेरह और दूसरे-चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं; जैसे – कबीर के दोहे, रहीम के दोहे।

दौड़-धूप – स्त्री० बहुत कोशिश, बहुत प्रयत्न, किसी काम के लिए इधर-उधर भागना-दौड़ना। प्र० उनकी दौड़-धूप का नतीजा है कि काम हो सका।

दौड़ना-भागना – क्रि० किसी काम के लिए दौड़-भाग करना, इधर-उधर जाने के रूप में बहुत परिश्रम करना। प्र० काम तो हो गया पर बहुत दौड़ना-भागना पड़ा।

दौर – पु० 1. हुकूमत, शासन। प्र० अकबर के दौर में देश में शांति थी। 2. बारी, पारी; जैसे–शराब के दौर चलना। 3. अवधि। प्र० खाने के बाद खाना पचता है। पचने के इस दौर में लगभग चार घंटे का समय लगता है।

दौरा – पु० 1. गश्त, अफ़सर का क्षेत्र विशेष में जाँच-पड़ताल के लिए जाना। प्र० इंस्पेक्टर साहब का दौरा दो तारीख़ को है। 2. किसी रोग का उभार या प्रकोप; जैसे – मिर्गी का दौरा।

दौरान – पु० बीच, दरमियान। प्र० तुम्हें गए दो महीने हो गए। इस दौरान वे तीन बार आए थे।

दौलतमंद – वि० धनी, अमीर। (*विलोम*– निर्धन)।

द्रव – पु० बहनेवाला पदार्थ, तरल पदार्थ। प्र० पानी द्रव है और लकड़ी ठोस है।

द्रवण – पु० भाप का द्रव में बदलना, वाष्प का तरल हो जाना।

द्रव-बल – पु० वह बल जो कोई द्रव पदार्थ चारों ओर डालता है।

द्रव्य – पु० 1. धन, धन-दौलत, रुपया-पैसा, नक़द। प्र० उस सेठ के पास बहुत द्रव्य है। 2. स्थान घेरनेवाले पदार्थ। प्र० विज्ञान में स्थान घेरनेवाले सभी पदार्थों को द्रव्य कहते हैं।

द्रोह – पु० 1. द्वेष, वैरभाव। प्र० आपके प्रति उनके मन में द्रोह है। 2. ग़द्दारी, विश्वासघात; जैसे–राजद्रोह, देशद्रोह।

द्वारका – स्त्री० गुजरात में स्थित एक हिंदू तीर्थ, द्वारिका।

द्वारा – अ० जरिए, मार्फ़त। प्र० 1. यह पत्र मैं दूत के द्वारा भेज रहा हूँ। 2. यह क़त्ल किसी अज्ञात आदमी के द्वारा कराया गया है।

द्विशिरस्क पेशी – स्त्री० बाँह की हड्डी के ऊपर की पेशी।
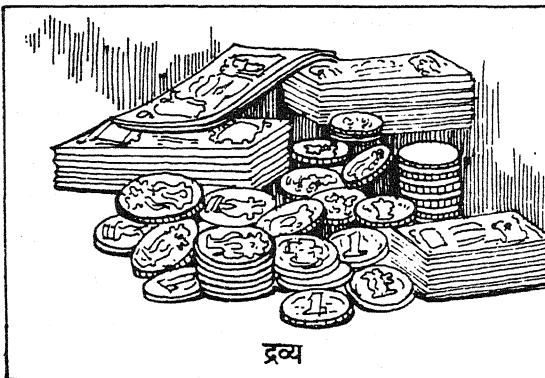
द्रव्य द्वारका
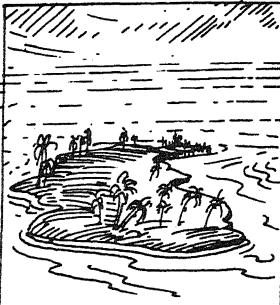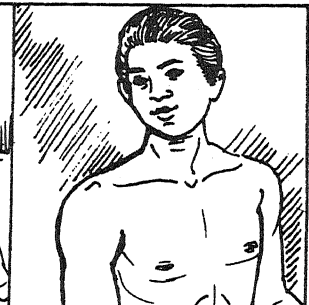
द्वीप – पु॰ चारों ओर से पानी से घिरी ज़मीन, टापू; जैसे– लक्षद्वीप, मालद्वीप।

ध – देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का चौथा व्यंजन।

धँसना – *क्रि॰* नीचे या भीतर की ओर जाना, गड़ना; जैसे – ज़मीन में धँसना, दलदल में धँसना, हाथ में धँसना।

धकेलना – *क्रि॰* ठेलना, ढकेलना; जैसे – नाव को नदी में धकेलना, ट्रक को सड़क पर धकेलना।

धक्कम-धक्का – पु॰ धकापेल, धक्कामुक्की, ठेलमठेल। *प्र॰* टिकट लेने में लोग इतना धक्कम-धक्का कर रहे हैं कि सबका जाना संभव नहीं।

धक्का – पु॰ 1. टक्कर, धक्का-मुक्की, एक ओर से दूसरी ओर ढकेलना। *प्र॰* अरे भाई उस बूढ़े को धक्का मत दो, गिर जाएगा। 2. नुकसान, हानि। *प्र॰* तुम्हारी बेवकूफ़ी से मुझे हज़ारों का धक्का लगा। 3. मानसिक चोट, आघात, सदमा। *प्र॰* 1. इलेक्शन में हारने पर मुझे बड़ा धक्का लगा। 2. भाई के मर जाने से पूरे परिवार को बड़ा धक्का लगा।

धक्का-मुक्की – *स्त्री॰* धक्कम-धक्का, एक दूसरे को धक्का देना। *प्र॰* हॉल में एक ही गेट है, लोग बाहर भागने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे हैं।

धज्जी – *स्त्री॰* कपड़े या कागज़ की कटी हुई लंबी पट्टी या टुकड़ा। *मु॰ धज्जियाँ उड़ाना* – 1. टुकड़े-टुकड़े करना। *प्र॰* उन लोगों ने शत्रु के झंडे की धज्जियाँ उड़ा दीं। 2. दुर्दशा करना, हराना; जैसे– दुश्मन की धज्जियाँ उड़ाना, प्रतिद्वंद्वी की धज्जियाँ उड़ाना, प्रतियोगिता में विपक्षी की धज्जियाँ उड़ाना।

धड़ – पु॰ 1. कमर से कंधे तक का शरीर, शरीर के छाती, पेट और पीठवाले भाग, (कभी-कभी बाँहों को धड़ में नहीं लेते), शरीर का मध्य भाग। 2. तना (पेड़ का)।

धड़कन – *स्त्री॰* दिल की धकधक। *प्र॰* मरीज़ के दिल की धड़कन तेज़ हो गई है।

धड़कना – *क्रि॰* 1. धकधक करना। *प्र॰* जीवित मनुष्य का दिल धड़कता रहता है। 2. डर या आवेश के कारण दिल का ज़ोर से धकधक करना। *प्र॰* शेर को सामने खड़ा देखकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

धड़छेदक – पु॰ बैंगन आदि के तने में छेद करनेवाला कीड़ा।

धड़ाका – पु० धड़ (धड़धड़) की ध्वनि। प्र० दीपावली की रात में आतिशबाज़ी के धड़ाके से नींद नहीं लगती। **धड़ाके से** – चटपट, तेज़ी से, फुर्ती से। प्र० धड़ाके से अपना काम निपटा लो।

धड़ाधड़ – अ० तेज़ी से, जल्दी-जल्दी। प्र० अपना काम धड़ाधड़ कर डालो।

धड़ाम – पु० ऊपर से कूदने या गिरने की आवाज़; जैसे – धड़ाम से कूदना, धड़ाम से गिरना।

धधकना – *क्रि०* दहकना, लपट के साथ जलना। प्र० भट्ठी में आग धधक गई है, सब्ज़ी का बरतन चढ़ा दो।

धन-दौलत – पु० रुपया-पैसा। प्र० उसके पास बहुत धन-दौलत है।

धनवान् – *वि०* धनी, दौलतमंद। (*विलोम* – धनहीन)।

धनहीन – *वि०* निर्धन, ग़रीब।

धनिया – पु० एक पौधा और उसका बीज जो मसाले में और दवा के रूप में काम आता है।

धन्य – *वि०* बड़ाई के योग्य, प्रशंसनीय। प्र० आपने बहुत बड़ा काम किया है, आप धन्य हैं।

धन्यवाद – पु० किसी के द्वारा किसी अन्य के लिए कुछ काम करने के बाद उस अन्य व्यक्ति द्वारा कहा जानेवाला शब्द, शुक्रिया, आभार या कृतज्ञतासूचक शब्द।

धब्बा – पु० 1. दाग़, निशान; जैसे – दीवाल पर तेल का धब्बा, कपड़े पर रंग का धब्बा। 2. कलंक। प्र० उन्होंने ऐसा करके अपने नाम पर बहुत बड़ा धब्बा लगा लिया है। उनके चरित्र का यह धब्बा धुलने का नहीं।

धमकाना – *क्रि०* डाँटना, घुड़कना, धमकी देना, डराना-धमकाना। प्र० पुलिस के धमकाते ही चोर ने अँगूठी दे दी।

धमकी – *स्त्री०* घुड़की, डाँट-डपट, डराने के लिए कही गई बात। प्र० तुम्हारी धमकी में मैं आनेवाला नहीं, जो सही है, वही कहूँगा।

धमाका – पु० तोप छूटने, बम फटने या बंदूक छूटने आदि की तेज़ आवाज़; जैसे – तोप का धमाका, बम का धमाका।

धरना – 1. *क्रि०* (क) रखना। प्र० 1. पता नहीं मैंने चाबी कहाँ धर दी है। 2. पतझड़ के पेड़ों से सीखो दुख में धीरज धरना। (ख) पकड़ना। प्र० बदमाशों को धरो-पकड़ो, मुझसे क्यों कह रहे हो? 2. पु० किसी काम को कराने या बात मनवाने के लिए अड़कर बैठ जाना; जैसे – कचहरी में धरना देना, उच्च अधिकारी के दफ़्तर में धरना देना।

धर-पकड़ – *स्त्री०* गिरफ़्तारी, लोगों को पकड़ना।
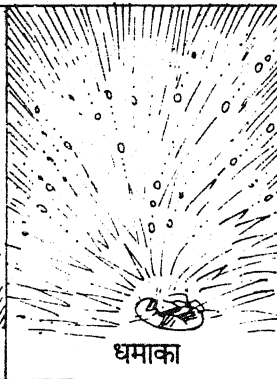
धड़ाम | धनिया | धमाका | धरना
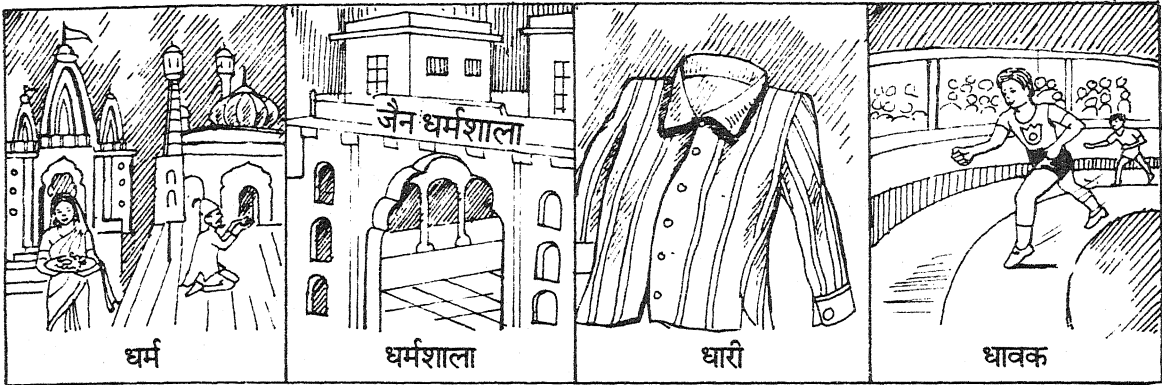
धर्म धर्मशाला धारी धावक

प्र० उस क़त्ल के सिलसिले में आजकल गाँव में धर-पकड़ हो रही है।

धरा – *स्त्री०* पृथ्वी, ज़मीन, धरती।

धरातल – *पु०* सतह; जैसे – पृथ्वी का धरातल, किसी देश की ज़मीन का धरातल।

धराशायी – *वि०* ज़मीन पर गिरा हुआ। *प्र०* मोहन की एक ही लाठी में भीष्म धराशायी हो गया।

धर्म – 1. *पु०* विश्व में विश्वासों के वे अलग-अलग समूह जिनके आधार पर एक मानव वर्ग अपने को एक-दूसरे मानव वर्ग से अलग पहचानता है, मज़हब; जैसे – हिंदू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म आदि। 2. कर्तव्य; जैसे – पुत्र का धर्म, माता का धर्म, पिता का धर्म, शिष्य का धर्म। 3. प्रकृति, स्वभाव, स्वाभाविक गुण। *प्र०* आग का धर्म जलाना है।

धर्मनिरपेक्ष – *वि०* जिसमें किसी भी बात में धर्म का विचार न हो। *प्र०* भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है।

धर्मशाला – *स्त्री०* धर्म के लिए बना भवन, वह भवन जहाँ यात्री मुफ़्त में रह सकते हों।

धाँधली – *स्त्री०* गड़बड़, गड़बड़ी, अव्यवस्था, मनमाना व्यवहार। *प्र०* 1. इस ऑफ़िस में बहुत धाँधली होती है। 2. लोग कहते हैं कि इस चुनाव में बहुत धाँधली हुई।

धाक – *स्त्री०* रोब, दबदबा, प्रभाव। *प्र०* इस क्षेत्र में तो उनकी बड़ी धाक है। *मु० धाक जमना* – प्रभाव या दबदबा हो जाना। *प्र०* एक ही घटना से पूरे क्षेत्र में उसकी धाक जम गई।

धाम – *पु०* हिंदुओं के चार प्रमुख तीर्थस्थान – बदरीनाथ, द्वारका, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम।

धार – *स्त्री०* 1. किसी औज़ार या हथियार का तेज़ किनारा; जैसे – चाकू की धार, तलवार की धार। 2. धारा, प्रवाह।

धारणा – *स्त्री०* विचार, ख़्याल। *प्र०* हरी के बारे में तुम्हारी यह धारणा ग़लत है।

धारिता – *स्त्री०* किसी बरतन, डिब्बे आदि में दूध, पानी, तेल, पेट्रोल आदि के रखे जाने की जगह या क्षमता। *प्र०* इस बरतन की धारिता दो लीटर है।

धारी – 1. *स्त्री०* लकीर, रेखा, लाइन; जैसे – धारियोंवाली कमीज़, धारियोंवाला पाजामा। 2. *वि०* धारण करनेवाला; जैसे – शस्त्रधारी, खद्दरधारी, जटाधारी।

धारीदार – *वि०* धारियोंवाला; जैसे – धारीदार कपड़ा।

धार्मिक – *वि०* धर्म का, धर्म-विषयक; जैसे – धार्मिक कार्य, धार्मिक स्थान।

धावक – *पु०* दौड़नेवाला। *प्र०* विक्रम बहुत तेज़

धावक है।

धावा – *पु०* (बहुत हलके धर्म में) आक्रमण, हमला, चढ़ाई। *प्र०* 1. रमेश ने बहुत दिनों से कुछ खिलाया-पिलाया नहीं, चलो आज उसके घर धावा बोलते हैं। 2. प्यासे खिलाड़ियों ने शर्बत पर धावा बोल दिया और गिलास-पर-गिलास चढ़ाते चले गए।

धुंध – *स्त्री०* कोहरा, कुहासा। *प्र०* धुंध है, कार धीरे-धीरे चलाओ।

धुँधला – *वि०* जो साफ़ न हो, अस्पष्ट; जैसे – धुँधला चित्र, धुँधली याद, बादलों के पीछे धुँधला-सा चाँद।

धुआँधार – *वि०* बड़े ज़ोर का, प्रचंड, घोर; जैसे – धुआँधार भाषण, धुआँधार बारिश।

धुन – *स्त्री०* 1. गाने की लय, गाने की तर्ज़। *प्र०* इस गाने की धुन मुझे पसंद है। 2. लगन। *प्र०* उसे तो सिर्फ़ पढ़ने की धुन है।

धुनना – *क्रि०* 1. रुई के रेशों को अलग-अलग करना। *प्र०* धुनिया रुई धुनता है। 2. खूब मारना। *प्र०* पुलिस ने चोर को बुरी तरह धुन दिया तब जाकर उसने अपराध स्वीकार किया।

धुनाई – *स्त्री०* 1. रुई धुनने का काम; जैसे – रुई की धुनाई। 2. पिटाई। *प्र०* आज पुलिस उस गुंडे की धुनाई करेगी, वह चौथी बार पकड़ा गया है।

धुर – *अ०* बिल्कुल, एकदम; जैसे – धुर पूरब, धुर ऊपर, धुर नीचे।

धुरी – *स्त्री०* केंद्र जिस पर कोई चीज़ घूमे, अक्ष। *प्र०* पृथ्वी अपनी झुकी हुई धुरी पर सूर्य के चारों ओर घूमती है।

धुलना – *क्रि०* पानी, पानी-साबुन या पेट्रोल आदि से साफ़ होना; जैसे – सड़क धुलना (पानी), कपड़े धुलना (पानी-साबुन), गर्म कपड़े धुलना (पेट्रोल)।

धुलाई – *स्त्री०* 1. धोने का काम। *प्र०* आज कपड़ों की धुलाई हो रही है। 2. धोने की मज़दूरी। *प्र०* गर्म कपड़े की धुलाई महँगी हो गई है।

धुस्सा – *पु०* मोटे ऊन की लोई या पतला कंबल। *प्र०* धुस्सा कम सर्दी में ओढ़ने के काम आता है।

धूप – *पु०* 1. पूजा या सुगंध के लिए अगर आदि सुगंधित लकड़ी का बुरादा या कई एक में मिलाई हुई सुगंधित चीज़ें। *प्र०* पूजा के लिए धूप-दीप लाओ। 2. *स्त्री०* घाम, सूरज की सीधी पड़ रही किरणें। *प्र०* इतनी कड़ी धूप में बाहर मत जाओ।

धूम – 1. *पु०* धुआँ। 2. *स्त्री०* चर्चा, शोहरत, प्रसिद्धि। *प्र०* जो भी जाता है ठीक हो जाता है, इसीलिए डॉ० सिन्हा की इस क्षेत्र में बड़ी धूम है।

धुआँधार | धुनना | धुलाई | धुस्सा

धूमधाम धोती धौंकनी

धूमधाम – *स्त्री०* ठाट-बाट, शान-शौकत, धूम-धड़क्का। *प्र०* नेताजी अपनी बेटी का ब्याह बड़ी धूमधाम से कर रहे हैं।

धूसर – *वि०* मटमैला, धूल के रंग का, ख़ाकी।

धृष्ट – *वि०* ढीठ, बदतमीज़, अशिष्ट। *प्र०* यह नया लड़का बहुत धृष्ट है, सभी अध्यापकों से उलझता रहता है।

धैर्य – *पु०* धीरज, सब्र। *प्र०* धैर्य का फल मीठा होता है।

धैर्यपूर्वक – *अ०* धैर्य के साथ, धीरज से। *प्र०* मैंने उनकी बातें धैर्यपूर्वक सुनीं।

धोखेबाज़ – *वि०* धोखा देनेवाला, छल करनेवाला।

धोखेबाज़ी – *स्त्री०* कपट, छल, चार सौ बीसी।

धोती – *स्त्री०* 1. पुरुषों द्वारा कमर में बाँधा जानेवाला एड़ी तक का एक अनसिला कपड़ा। 2. स्त्रियों द्वारा कमर में बाँधा जानेवाला एक अनसिला कपड़ा जो ऊपर सिर या कंधों तक रहता है और नीचे एड़ी तक।

धोना – *क्रि०* पानी, पानी-साबुन या पेट्रोल आदि से साफ़ करना, धुलाई करना; जैसे – सड़क धोना, कपड़े धोना, गर्म कोट धोना, बरतन धोना। *मु० हाथ धोना* –गँवाना, खोना। *प्र०* अपनी मूर्खता के कारण वह हज़ारों रुपयों से हाथ धो बैठा।

धौंकना – *क्रि०* जली आग तेज़ करने के लिए धौंकनी या पंखे से हवा देना।

धौंकनी – *स्त्री०* चमड़े की विशेष प्रकार की थैली जिसे दबाकर आग को तेज़ करते हैं, भाथी।

धौंस – *स्त्री०* रोब, रोब-दाब, हेकड़ी। *प्र०* मैं तुम्हारी धौंस में नहीं आने का।

ध्यान – *पु०* 1. याद, स्मरण। *प्र०* क्या तुमको ध्यान नहीं है कि कल हम लोगों को जाना है। 2. मन, मन को एक विषय पर लगाना। *प्र०* 1. ध्यान से पढ़ो तो अवश्य पास हो जाओगे। 2. मेरी बात ध्यान से सुनो।

ध्येय – *पु०* उद्देश्य, मक़सद, लक्ष्य। *प्र०* तुम्हारा एक ही ध्येय होना चाहिए, पूरी तरह अपना विकास।

ध्रुव – 1. *पु०* (क) एक तारा, ध्रुव तारा। (ख) पृथ्वी का दक्षिणी और उत्तरी छोर–दक्षिणी ध्रुव, उत्तरी ध्रुव। 2. *वि०* अटल, दृढ़; जैसे – ध्रुव निश्चय, ध्रुव विश्वास।

ध्रुव तारा – पु० हमेशा उत्तर दिशा में चमकनेवाला तारा विशेष, ध्रुव।

ध्रुवीय रीछ – पु० ध्रुव प्रदेश में पाया जानेवाला भालू।

ध्वजा – पु० झंडा, पताका।

★

न – देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का पाँचवाँ और अंतिम व्यंजन।

नंगधड़ंग – वि० बिल्कुल नंगा, एकदम नग्न। प्र० वह पागल नंगधड़ंग घूम रहा है।

नंगा – वि० 1. जो कपड़ा न पहने हो; जैसे – नंगा लड़का। 2. खुला, जो ढका न हो, जिसके नीचे कुछ न हो; जैसे – नंगी तलवार, नंगा सिर, नंगा बदन, नंगा पैर। 3. केवल आँख, सिर्फ़ आँख, बिना किसी और की सहायता के। प्र० कीटाणु इतने छोटे होते हैं कि वे नंगी आँख देखे भी नहीं जा सकते। 4. बदमाश, शैतान, लुच्चा, पाज़ी। प्र० वह नंगा आदमी है, उसके मुँह क्यों लगते हो।

नंदन – पु० 1. प्रसन्न करनेवाला। 2. पुत्र, लड़का, बेटा; जैसे – रघुनंदन (राम), दशरथनंदन (राम), सुमित्रानंदन (लक्ष्मण)।

नंबर – पु० 1. अंक, परीक्षांक। प्र० मोहन को हिंदी में सौ में से पचहत्तर नंबर मिले हैं। 2. संख्या; जैसे – रेलटिकट का नंबर।

नंबरी – वि० 1. जिस पर नंबर लगा या लिखा या छपा हो। 2. सौ रुपए का; जैसे – नंबरी नोट। 3. मशहूर; जैसे– नंबरी बदमाश, नंबरी जालसाज़ (यह मूलत: एक नंबर का से या दसनंबर से जुड़ा है)।

न– अ० 1. 'मना' के अर्थवाला शब्द। प्र० आप यह काम न करें। 2. किसी बात के निश्चय-अनिश्चय को पक्के तौर पर पूछने का प्रश्नसूचक शब्द, या नहीं। प्र० तुम उन लोगों के साथ जाओगे न?

नक़ल – स्त्री० 1. किसी चीज़ को देखकर जैसी की तैसी या हू-ब-हू बनाई, लिखी या उतारी गई चीज़। प्र० 1. यह उस मूर्ति की नक़ल है। 2. यह लड़का इम्तहान में अपने साथी की नक़ल कर रहा था। 2. कॉपी, प्रतिलिपि। प्र० अपने सर्टिफ़िकेट की नक़ल भी अर्ज़ी के साथ लगा दीजिए।

नक़ली – वि० जो नक़ल हो, जो असली न हो, जाली, बनावटी; जैसे – नक़ली ज़ेवर, नक़ली सर्टिफ़िकेट, नक़ली दवा।

नक़्क़ाशी – स्त्री० धातु या लकड़ी आदि पर खोदकर बनाए गए बेल-बूटे या डिज़ाइन आदि। प्र० 1. दक्षिण भारत लकड़ी पर नक़्क़ाशी के लिए

ध्रुवीय रीछ | नक़ल | नक़्क़ाशी

नक़्शा नक्षत्र नथ

प्रसिद्ध है। 2. मुरादाबाद में पीतल के बरतनों पर अच्छी नक़्क़ाशी होती है।

नक़्शा – *पु॰* मानचित्र। *प्र॰* भारत का नक़्शा बनाओ और उसमें देश के मुख्य नगरों का स्थान दिखाओ।

नक्षत्र – *पु॰* 1. चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले विशेष तारे जिनकी संख्या सत्ताईस है। 2. भाग्य, क़िस्मत। *प्र॰* हरीश नक्षत्र का तेज़ है।

नगण्य – *वि॰* जिसकी किसी में भी गिनती न हो, नहीं के बराबर, बहुत ही साधारण, तुच्छ। *प्र॰* यह आदमी तो बहुत नगण्य है। इसके स्वागत-सत्कार के लिए कुछ विशेष करने की आवश्यकता नहीं।

नगद – *पु॰* दे॰ नक़द।

नगरनिगम – *पु॰* वह संस्था जो बड़े नगरों की व्यवस्था देखे, कारपोरेशन, महानगरपालिका; जैसे – दिल्ली नगरनिगम।

नगरपालिका – *स्त्री॰* नगर की व्यवस्था करनेवाली संस्था, म्युनिसिपैलिटी।

नगरवासी – *पु॰* शहर के निवासी, पुरवासी, शहरी।

नगरी – *स्त्री॰* नगर, शहर।

नग्न – *वि॰* नंगा, बिना कपड़े का।

नचाना – *क्रि॰* 1. किसी से नाच कराना; जैसे – बंदर नचाना। 2. किसी को तंग या परेशान करना। *प्र॰* क्यों उस ग़रीब को नचा रहे हो? 3. अपनी इच्छा के अनुसार काम करवाना। *प्र॰* गाँव का मुखिया गाँववालों को नंगा नचा रहा है।

नज़दीक – *अ॰* पास, समीप, क़रीब। *प्र॰* जहाँ तुम जा रहे हो वह गाँव यहाँ से नज़दीक ही है।

नज़र – *स्त्री॰* निगाह, दृष्टि। *प्र॰* उसकी नज़र बड़ी तेज़ है, बहुत दूर से ही हम लोगों को साथ-साथ आते उसने देख लिया था। *मु॰ नज़र आना* – दीखना, दिखाई पड़ना। *प्र॰* तिमंज़िले से बहुत अच्छा दृश्य नज़र आ रहा है। *नज़र डालना* – सरसरी नज़र से देखना। *प्र॰* मैंने उसकी कॉपी पर एक नज़र डाल ली है, वह अच्छा विद्यार्थी लगता है। *नज़र रखना* – निगाह रखना, चौकसी बरतना। *प्र॰* यह आदमी कुछ ग़लत काम करता है, पुलिस उस पर नज़र रख रही है।

नथ – *स्त्री॰* बाली की तरह का नाक का गहना, नाक में पहनने का छल्ला, नथिया।

ननिहाल – *पु॰* नाना का घर, ननसार, ननसाल।

नन्हा – *वि॰* छोटा; जैसे – नन्हा शिशु, बच्चे के नन्हें-नन्हें हाथ-पैर।

नब्ज़ – *स्त्री॰* नाड़ी। *प्र॰* वैद्यजी मरीज़ की नब्ज़ देख रहे हैं।

नभ – *पु॰* आसमान, आकाश।

नम – *वि॰* गीली, भीगी; जैसे – नम आँखें, नम घास।

नमस्कार – *पु॰* नमस्ते, प्रणाम, अभिवादन। *प्र॰* बड़ों को नमस्कार करना चाहिए।

नमूना – *पु॰* 1. देखने-परखने के लिए थोड़ा अंश; जैसे – गेहूँ का नमूना, दूध का नमूना। 2. आदर्श, मॉडल। *प्र॰* इस नमूने को देखकर आप कपड़े पर कढ़ाई कर लें।

नम्र – *वि॰* बिना घमंड का, विनम्र, विनीत। *प्र॰* तुम्हारे अध्यापक बड़े नम्र व्यक्ति हैं।

नम्रता – *स्त्री॰* नम्र होना, नम्र होने का भाव, विनय, विनम्रता। *प्र॰* विद्या से आदमी में नम्रता आ जाती है।

नयन – *पु॰* आँख, नेत्र।

नर – *पु॰* 1. मर्द, पुरुष। *प्र॰* वहाँ के नर-नारी सभी उनका आदर करते हैं। (*विलोम* – नारी)। 2. मादा का उल्टा, पुरुष जाति का; जैसे – नर साँप, नर छछूँदर, नर गिलहरी। (*विलोम* – मादा)।

नरक – *पु॰* 1. धार्मिक विश्वास के अनुसार नीचे स्थित वह लोक जहाँ व्यक्ति को अपने कुकर्मों के कारण मरने के बाद जाना पड़ता है, दोज़ख़, जहन्नुम। 2. बहुत गंदा स्थान, कष्टदायक जगह। *प्र॰* बड़े शहर नरक होते जा रहे हैं।

नरम – *वि॰* 1. कोमल, मुलायम (*विलोम* – कठोर); जैसे– नरम तकिया, नरम घास। 2. जो कठोर न हो, लचीला; जैसे– नरम आदमी, नरम रुख़। (*विलोम* – सख़्त)।

नरमी – *स्त्री॰* नम्रता, कोमलता, विनम्रता। *प्र॰* इन लोगों से नरमी से पेश आओ।

नर्तक – *पु॰* नाचनेवाला, नाच करनेवाला।

नर्तकी – *स्त्री॰* नाचनेवाली, नाच करनेवाली।

नर्स – *स्त्री॰* अस्पतालों में मरीज़ की देख-भाल करनेवाली, धात्री, धाय, जिसने रोगियों की देख-भाल की शिक्षा प्राप्त की हो।

नर्सरी – *स्त्री॰* 1. जहाँ पेड़-पौधे तैयार किए जाते और बेचे जाते हैं। *प्र॰* दिल्ली में कई नर्सरियाँ हैं जहाँ से पौधे और फूल आदि ख़रीदे जा सकते हैं। 2. प्रारंभिक कक्षा। *प्र॰* मेरा छोटा भाई नर्सरी में पढ़ता है।

नर्सरी स्कूल – *पु॰* वह स्कूल जहाँ पहली कक्षा में जाने के पहले छोटे बच्चे पढ़ते हैं।

नब्ज़ | नयन | नर्तकी | नर्सरी

नवजात नवयुवक नवयुवती नशेबाज़
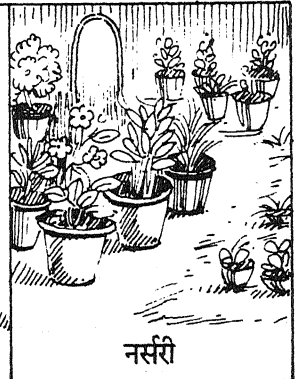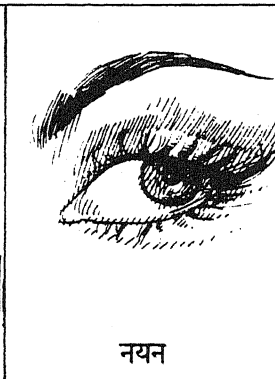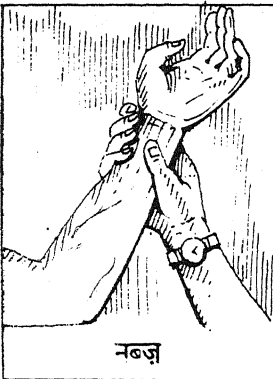
नलकूप – *पु०* एक यंत्र जिससे ज़मीन के नीचे से नल द्वारा पानी निकालते हैं, ट्यूबवेल।

नलिका – *स्त्री०* विशेष प्रकार की पतली, छोटी और पोली चीज़, बहुत पतली और छोटी नली। *प्र०* कई मशीनों में धातु की कई नलिकाएँ होती हैं जिनसे तरल पदार्थ इधर-उधर जाते हैं।

नली – *स्त्री०* धातु, प्लास्टिक या रबर आदि की विशेष प्रकार की पतली और पोली चीज़। *प्र०* 1. कुछ मरीज़ों को ऑपरेशन के बाद भीतर से मवाद आदि निकलने के लिए रबर की नली लगा देते हैं। 2. कल पिताजी की बंदूक की नली फट गई।

नव – *वि०* 1. जो पुराना न हो, नया, नवीन, नूतन; जैसे– नववर्ष की शुभकामनाएँ, नववर्ष की बधाई। 2. नौ; जैसे – नवरत्न, नवमी, नवग्रह, नवरात्र।

नवचंद्र – *पु०* नया चाँद।

नवजात – *वि०* हाल का पैदा, कुछ समय या दिन पहले का ही उत्पन्न, नवोत्पन्न; जैसे– नवजात शिशु।

नवमी – *स्त्री०* अँधेरे या उजेले पखवारे का नवाँ दिन। *प्र०* श्री रामचंद्र का जन्म नवमी को हुआ था।

नवयुग – *पु०* नया युग, नया ज़माना। *प्र०* भारत में 1947 के बाद नवयुग आया।

नवयुवक – *पु०* नौजवान। *प्र०* देश का भविष्य बच्चों और नवयुवकों पर टिका है।

नवयुवती – *स्त्री०* जवान लड़की, तरुणी। *प्र०* नवयुवतियों की पसंद कई दृष्टियों से औरतों से अलग होती है।

नवाब – *पु०* मुसलमानी रियासतों के शासक; जैसे – हैदराबाद के नवाब।

नवीन – *वि०* नया, नूतन; जैसे – पुस्तक का नवीन संस्करण, नवीन वस्त्र, खेती की नवीन पद्धति। (*विलोम* – प्राचीन)।

नशा – *पु०* 1. शराब, गाँजा, भाँग आदि पीने या अफ़ीम खाने से उत्पन्न होश में न रहने की स्थिति। 2. वह चीज़ जिससे नशा हो, मादक द्रव्य। *प्र०* वह नशा करता है; वह नशे में धुत्त है। 3. लत, इल्लत, बुरी आदत; जैसे – जुआ खेलने का नशा, जासूसी उपन्यास पढ़ने का नशा।

नशेबाज़ – *वि०* नियमित रूप से नशा करनेवाला, नशे का आदती।

नष्ट – *वि०* 1. जिसका नाश हो गया हो। *प्र०* तेज़ तूफ़ान और बाढ़ से हज़ारों मकान नष्ट हो गए।

2. चौपट। प्र० आपसी फूट के कारण वह परिवार नष्ट हो गया।

नस – स्त्री० 1. शरीर में खून को चारों ओर ले जानेवाली बहुत पतली नली, रग। प्र० दुर्घटना में पैर की नस कट जाने से काफ़ी खून निकल गया है। 2. वे पतले-पतले तंतु या रेशे जो पत्तों में चारों ओर होते हैं। मु० *नस-नस पहचानना* – पूरी तरह जानना।प्र० मैं उस बदमाश की नस-नस पहचानता हूँ। *नस-नस में* – पूरे शरीर में, शरीर के हर अंग में। प्र० उसकी नस-नस में शैतानी भरी हुई है।

नसीब – पु० भाग्य, क़िस्मत; जैसे– बदनसीब, खुशनसीब।

नस्ल – स्त्री० वंश, जाति; जैसे– अच्छी नस्ल का आम, अच्छी नस्ल का घोड़ा, अच्छी नस्ल की भैंस।

नहला – पु० ताश के पान, ईंट, हुकुम और चिड़ी के वे पत्ते जिन पर नौ-नौ बूटियाँ होती हैं, नौ बूटियोंवाला ताश का पत्ता। मु० *नहले पर दहला* – किसी से बढ़-चढ़कर होना। प्र० क्या खेल-कूद और क्या पढ़ाई-लिखाई, सभी बातों में राघवेंद्र नहले पर दहला है, कोई और विद्यार्थी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

नहीं – अ० 1. इनकार बतानेवाला शब्द। प्र० मैं तुम्हारा काम नहीं करूँगा। 2. निषेध का बोध करानेवाला शब्द। प्र० हिमांशु कल हमारे साथ नहीं जा रहा है।

नाँद – स्त्री० चौड़े मुँह का मिट्टी या सीमेंट का बड़ा बरतन जिसमें मवेशी चारा खाते हैं। मु० *नाँद भर खाना* – बहुत खाना। प्र० वह पहलवान तो नाँद भर खाता है, इतने थोड़े खाने से उसका काम नहीं चलेगा।

ना – अ० 1. इनकार। प्र० मैंने उनसे पूछा था किंतु उन्होंने ना कर दिया। 2. निषेधबोधक उपसर्गात्मक शब्द जो शब्दों के प्रारंभ में जोड़ा जाता है; जैसे – नाकाम, नाउम्मीद, नाखुश, नाजायज़, नामंजूर।

नाइट्रोजन – पु० एक प्रकार की गैस जो हवा में पाई जाती है।

नाइलॉन – पु० एक प्रकार का कृत्रिम धागा या उससे बना कपड़ा।

नाकाम – वि० असफल। प्र० मोहन ने बहुत कोशिश की पर वह नाकाम रहा।

नाग – पु० 1. साँप। 2. फनवाला साँप।

नागफनी – स्त्री० छोटे काँटेदार पौधों की एक जाति, कैक्टस।

नागरिक – पु० किसी देश का वह निवासी जिसे वहाँ के राजनीतिक अधिकार प्राप्त हों। प्र० प्रत्येक देश

नाँद नाग नागफनी

नागा | नाथना | नापना | नाभि
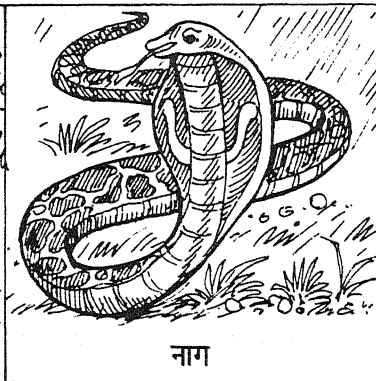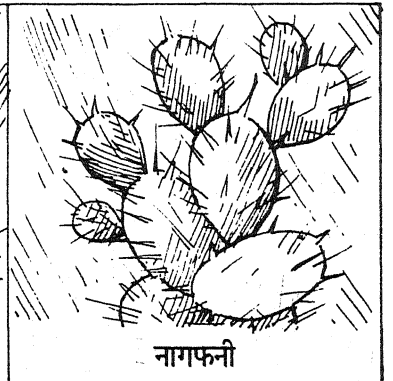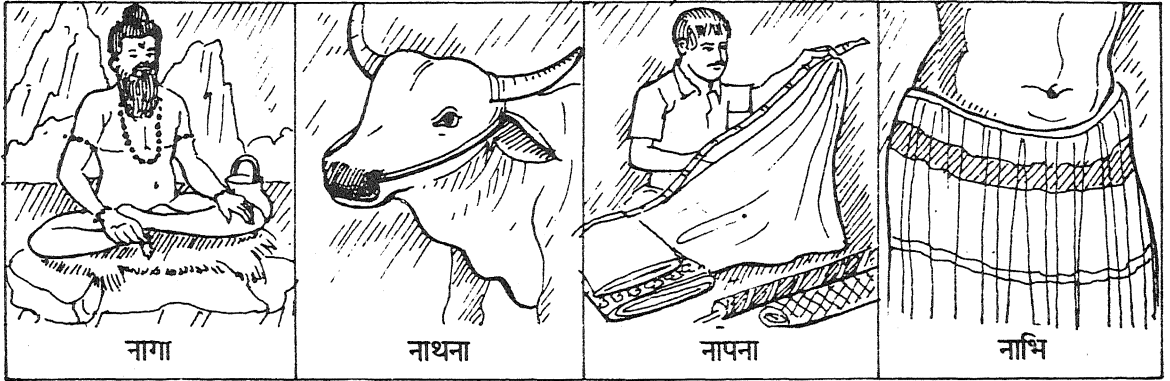
के नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह उसकी उन्नति करने का प्रयास करे।

नागा – पु॰ 1. नंगे रहनेवाले साधुओं का एक संप्रदाय। प्र॰ कुंभ में बहुत से नागा लोग आए थे। 2. असम के पूरब की पहाड़ी लोगों की एक जाति और उनका नाच।

नाजमंडी – स्त्री॰ अनाज की मंडी, अनाज थोक ख़रीदने और बेचने का बाज़ार।

नाजुक – *वि॰* 1. कोमल, सुकुमार। प्र॰ शिशु के हाथ-पैर नाजुक होते हैं, मालिश सम्हालकर करना। 2. कमज़ोर। प्र॰ शीशे के बरतन नाजुक होते हैं, सम्हालकर इनका प्रयोग करना।

नाटा – *वि॰* छोटा, छोटे क़दवाला, ठिगना।

नाट्यकथा – स्त्री॰ नाटक रूप में कथा।

नाड़ा – पु॰ पाजामा, लहँगा, साया आदि बाँधने की डोरी, इज़ारबंद।

नाता – पु॰ 1. रिश्ता। प्र॰ उन दोनों में साले-बहनोई का नाता है। 2. संबंध। प्र॰ धनी और ग़रीब का केवल एक ही नाता है कि धनी ग़रीब को चूसता है और ग़रीब दिन-पर-दिन अधिक चूसा जाता है।

नाथना – *क्रि॰* ऊँट, बैल या भैंस की नाक में छेद करके रस्सी डालना, नकेल या नाथ पहनाना।

नाना – 1. *वि॰* तरह-तरह का, अनेक प्रकार का; जैसे– नाना प्रकार के कपड़े, नाना प्रकार की मिठाइयाँ। 2. पु॰ माँ के पिता।

नाप – स्त्री॰ किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, गहराई या ऊँचाई आदि की माप। प्र॰ इस गड्ढे की नाप ले लो और इतना हीं बड़ा एक गड्ढा बना डालो।

नापना – *क्रि॰* नाप लेना, नाप करना; जैसे – खेत नापना, प्लाट नापना, कपड़ा नापना।

नापसंद – *वि॰* जो पसंद न हो, जो अच्छा न लगे। प्र॰ यह काम मुझे नापसंद है।

नाभि – स्त्री॰ पेट के बीच का छोटा-सा गड्ढा, तुंडी, ढोंढ़ी।

नाभिक – *वि॰* अणु का, न्यूक्लियर। प्र॰ अन्य स्रोतों के अतिरिक्त नाभिक प्रक्रिया से भी बिजली प्राप्त होती है।

नाम – पु॰ 1. वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि का बोध हो। प्र॰ 1. इस लड़के का नाम मोहन है। 2. इस शहर का नाम दिल्ली है। 3. इस चीज़ का नाम कुर्सी है। 2. शोहरत, प्रसिद्धि, ख्याति। प्र॰ मरने के बाद भी गांधीजी का दुनिया में बहुत नाम है।

नामक – *वि०* नाम का, नामवाला। *प्र०* 1. गांधीजी का जन्म पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। 2. गांधीजी की हत्या गोडसे नामक व्यक्ति ने की थी।

नामकरण – *पु०* नाम रखना, नाम रखने का काम। *प्र०* कल कृपाशंकर के भाई का नामकरण होगा।

नामज़द – *वि०* जिसका नाम किसी पद या संस्था आदि के लिए निश्चित किया गया हो। *प्र०* हमारी राज्यसभा के कुछ सदस्य राष्ट्रपति द्वारा नामज़द किए जाते हैं।

नामांकन (नाम + अंकन) –*पु०* 1. नाम अंकित करना, नाम लिखना। 2. नामज़दगी; जैसे – नामांकन-पत्र।

नामावली (नाम + अवली) – *स्त्री०* नामों की सूची, नामों की तालिका।

नायक – *पु०* 1. नेता, अगुआ, सरदार; जैसे– सेनानायक। 2. नाटक या फ़िल्म का मुख्य पात्र, हीरो। *प्र०* राजकपूर कई फ़िल्मों का नायक रह चुका है।

नायलॉन – *पु०* एक प्रकार का कृत्रिम कपड़ा।

नायिका –*स्त्री०* किसी फ़िल्म या नाटक का मुख्य स्त्री पात्र, हीरोइन।

नारंगी – 1. *स्त्री०* संतरा। *प्र०* भारत में नागपुर की नारंगियाँ प्रसिद्ध हैं। 2. पीला-लाल मिला रंग, संतरी; जैसे – नारंगी रंग का कपड़ा।

नारा – *पु०* 1. किसी जुलूस, रैली या सभा आदि द्वारा ज़ोर-ज़ोर से कहा जानेवाला शब्द, स्लोगन; जैसे – इनक़लाब ज़िंदाबाद, हमारी आज़ादी अमर रहे। 2. किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया कोई आदर्श या सिद्धांत वाक्य; जैसे – तिलक ने नारा दिया था – स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है; नेहरू ने नारा दिया था – आराम हराम है; लालबहादुर शास्त्री का नारा था – जय जवान जय किसान।

नाल – *पु०* 1. पोला थोड़ा लंबा डंठल, डंडी; जैसे – कमलनाल, कुमुदनी की नाल। 2. घोड़े की खुर तथा जूते के नीचे ठोंका जानेवाला अर्धचंद्राकार लोहा।

नालीदार – *वि०* नालियोंवाला; जैसे – छत के लिए नालीदार चादर।

नाविक – *पु०* नाव खेनेवाला, नाव चलानेवाला, खेवट, मल्लाह, माँझी।

नाशक – *वि०* नाश करनेवाला; जैसे – दर्दनाशक ओषधि, कीटनाशक दवा।
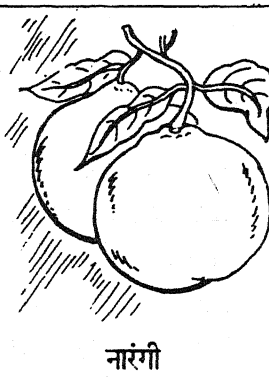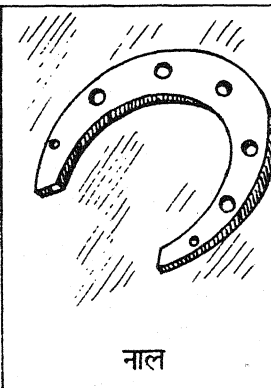
नायक नारंगी नाल नाविक
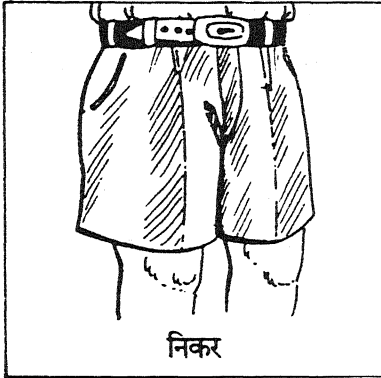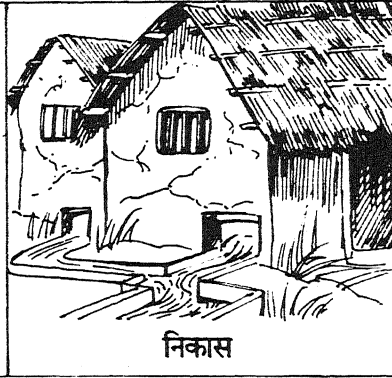
निकर निकास निगरानी

नास्तिक – पु० जिसका ईश्वर में विश्वास न हो। (*विलोम* – आस्तिक)।

निंदक – *वि०* निंदा करनेवाला, जो बुराई करे।

निंदा – *स्त्री०* बुराई। *प्र०* दूसरों की निंदा करते रहना अच्छी बात नहीं। (*विलोम* – प्रशंसा)।

निःशुल्क – *वि०* मुफ़्त, बिना पैसा लिए बिना फ़ीस के। *प्र०* 1. अस्पतालों में निःशुल्क इलाज होता है। 2. सोवियत संघ में शिक्षा निःशुल्क है।

निकट – *अ०* पास, समीप, नज़दीक।

निकटतम – *वि०* सबसे निकट। *प्र०* निकटतम रेलवे स्टेशन इस गाँव से पाँच किलोमीटर है।

निकटवर्ती – *वि०* नज़दीक का, पास का; जैसे – निकटवर्ती स्टेशन, निकटवर्ती मुहल्ला, निकटवर्ती थाना, निकटवर्ती प्रदेश।

निकम्मा – *वि०* बेकार, जो किसी भी काम का न हो, जो कुछ भी करना न चाहता हो; जैसे – निकम्मा लड़का।

निकर – *स्त्री०* जाँघिया, हाफपैंट। *प्र०* हमारी टीम के खिलाड़ी लाल निकर पहने हैं तथा दूसरी टीम के काली निकर।

निकालना – *क्रि०* 1. बाहर लाना। *प्र०* बस्ते से अपनी किताब निकाल लो। 2. बाहर करना। *प्र०* 1. मोहन ने अपने भाई को घर से निकाल दिया। 2. अफ़सर ने क्लर्क को नौकरी से निकाल दिया।

निकास – पु० बाहर निकलना। *प्र०* अब गाँवों में पानी के निकास के लिए पक्की नालियाँ बनने लगी हैं।

निकासी – *स्त्री०* बाहर निकालना। *प्र०* घर में से गंदे पानी की निकासी का इंतज़ाम ज़रूर होना चाहिए।

निकाह – पु० विवाह। *प्र०* शरीफ़ का शमा से निकाह हो रहा है।

निखार – पु० रूप-रंग का पहले से अच्छा हो जाना, रूप-रंग में सुधार, देखने में पहले से बेहतर। *प्र०* इस दवा से उसके चेहरे पर निखार आ गया है।

निगम – पु० किसी नगर, प्रदेश या देश में विभिन्न चीज़ों की व्यवस्था करनेवाली संस्था या संगठन, कारपोरेशन; जैसे – नगरनिगम, परिवहन निगम, दिल्ली नगर निगम।

निगरानी – *स्त्री०* देख-भाल, देख-रेख, चौकसी। *प्र०* पालतू कुत्ता मालिक के घर की निगरानी करता है।

निगाह – नज़र, दृष्टि। *मु०* *निगाह डालना*–

सरसरी नज़र से देखना। प्र० इस लेख पर भी निगाह डाल लो। *निगाह दौड़ाना* – किसी को देखने या पाने के लिए चारों ओर देखना। प्र० सभा में निगाह तो दौड़ाई थी पर मोहन दिखा नहीं। *निगाह पड़ना* – अचानक दिख जाना। प्र० कल मेले में अचानक उस लड़के के ऊपर निगाह पड़ गई जो चोरी करके भागा था और मैंने उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

निचोड़ – *वि०* सार, सारांश। प्र० इस पुस्तक का निचोड़ यह है कि अपना काम परिश्रम और ईमानदारी से करना चाहिए और बेकार समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

निचोड़ना – *क्रि०* दबाकर या ऐंठकर पानी, रस आदि निकालना; जैसे – कपड़े निचोड़ना, नीबू निचोड़ना।

निजी – *वि०* अपना, खुद का, व्यक्तिगत। प्र० अध्यापक अपने निजी काम से कहीं गए हैं।

निठल्ला – *वि०* निकम्मा, बेकार। प्र० यह लड़का तो बिल्कुल निठल्ला है।

नित – *अ०* हमेशा, सर्वदा। प्र० फूलों से नित हँसना सीखो।

नितांत – *अ०* बिल्कुल, एकदम, अत्यंत। प्र० यह काम नितांत आवश्यक है।

नित्य – 1. *अ०* हमेशा, हर रोज़, प्रतिदिन, रोज़। प्र० पंडितजी नित्य प्रातः संध्या करते हैं। 2. *वि०* अक्षर, अविनाशी, सदा बना रहनेवाला। प्र० हिंदू परंपरा के अनुसार ईश्वर नित्य है।

निदान – *पु०* रोग की पहचान, रोग का निर्णय। प्र० रोग का निदान किसी अच्छे डॉक्टर से करवा लेना चाहिए।

निनाद – *पु०* ध्वनि, आवाज़। प्र० विमल दूध-सा हिम का जल कर-कर निनाद कल-कल छल-छल।

निपट – *अ०* बिल्कुल, एकदम; जैसे – निपट मूर्ख।

निपटना – *क्रि०* 1. छुट्टी पाना, फ़ुरसत पाना। प्र० काम से निपटने के बाद आ जाऊँगा। 2. बात कर लेना, लड़ लेना, संघर्ष कर लेना, विवाद कर लेना। प्र० उनकी चिंता मत करो, मैं उनसे निपट लूँगा। 3. पाख़ाना जाना।

निपटाना – *क्रि०* 1. ख़त्म करना, पूरा करना। प्र० पहले काम निपटाओ फिर जाना। 2. निर्णय करना, फ़ैसला करना। प्र० उनका झगड़ा निपटाना मुश्किल है।

निपटारा – *पु०* फ़ैसला। प्र० उन दोनों का निपटारा अब कचहरी में ही हो सकता है।

निपुण – *वि०* होशियार, चतुर, कुशल, माहिर। प्र० यह विद्यार्थी सभी विषयों में निपुण है।

निचोड़ना | निपटारा | निपुण

निब | निबौली | निरक्षर | निराई
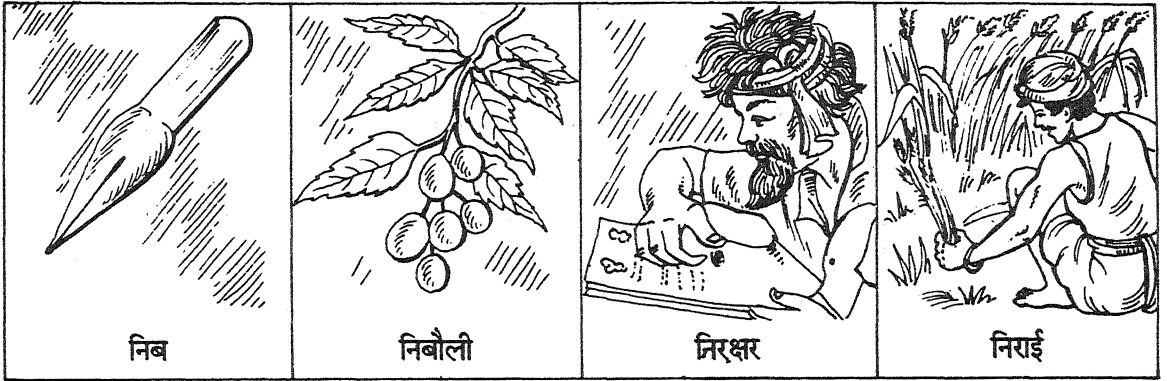
निबंध – पु० लेख। प्र० मेरा एक साथी अच्छे निबंध लिख लेता है।

निब – स्त्री० पेन में आगे लगा लोहे या पीतल का वह भाग जिससे लिखते हैं।

निबटना – क्रि० दे० निपटना।

निबाहना – क्रि० दे० निभाना।

निबौली – स्त्री० नीम का फल।

निभाना – क्रि० निबाहना, ज़िम्मेदारी या वचन का निर्वाह करना। प्र० अच्छे लोग अपनी ज़िम्मेदारी और अपने वचन निभाते हैं।

निमोनिया – पु० फेफड़ों का एक रोग।

निम्न – वि० 1. नीचे लिखा, निम्नलिखित। प्र० निम्न बातें ध्यान देने की हैं। 2. नीचा, ख़राब। प्र० 1. उनके विचार निम्न प्रकार के हैं। 2. वे निम्न कोटि के व्यक्ति हैं। (*विलोम* – उच्च)।

निम्नलिखित – वि० नीचे लिखा, नीचे लिखा हुआ, अधोलिखित। प्र० निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दीजिए।

नियंत्रण – पु० क़ाबू, क़ब्ज़ा, कंट्रोल। प्र० 1. अपने मन पर नियंत्रण रखो। 2. गाड़ी पर चालक का नियंत्रण खो देने से दुर्घटनाएँ हो जाती हैं।

नियत – वि० निश्चित, तय किया हुआ। प्र० 1. परीक्षा की तिथि नियत हो गई है। 2. नियत समय पर आ जाना।

नियमित – वि० नियम के अनुसार। प्र० वह अपना सभी काम नियमित रूप से करता है।

नियामत – पु० जल्दी न मिलनेवाली चीज़, दुर्लभ वस्तु, अलभ्य पदार्थ। प्र० तंदुरुस्ती हज़ार नियामत है।

नियुक्त – वि० किसी पद पर रखा हुआ, किसी पद पर रखा गया। प्र० इधर दो अध्यापक स्कूल में नियुक्त हुए हैं और दोनो ही अच्छे हैं।

नियुक्ति – स्त्री० किसी पद पर रखा जाना। प्र० नए अध्यापक की स्कूल में नियुक्ति का सभी ने स्वागत किया है।

निरंतर – अ० बराबर, लगातार। प्र० तीन दिनों से निरंतर बारिश हो रही है।

निरक्षर – वि० अनपढ़, अशिक्षित। प्र० गाँवों में अब भी काफ़ी लोग निरक्षर हैं।

निराई – स्त्री० खेत से बेकार के खर-पतवार या घास-फूँस उखाड़ना, घास-फूँस निकालकर खेत की सफ़ाई करना।

निराकार (निः+आकार) – *वि॰* जिसका कोई आकार या रूप न हो। *प्र॰* भगवान् निराकार हैं। (*विलोम* – साकार)।

निरादर – *पु॰* बेइज़्ज़ती, अपमान।

निराला – 1. *पु॰* निर्जन स्थान, एकांत जगह, ऐसी जगह जहाँ कोई न हो, सुनसान जगह। *प्र॰* निराले में बैठना उन्हें पसंद है। 2. *वि॰* अनोखा, विचित्र। *प्र॰* 1. वे निराले आदमी हैं। 2. वहाँ की छटा निराली थी।

निराश (निः+आस) – *वि॰* जिसे कोई आशा न हो, नाउम्मीद। *प्र॰* परीक्षा में अंक कम आने से निराश नहीं होना चाहिए।

निराश्रय (निः+आश्रय) – *वि॰* बिना आश्रय का, बेसहारा। *प्र॰* माँ-बाप के मर जाने के कारण बेचारा रामू निराश्रय हो गया है।

निराहार (निः+आहार) – *वि॰* बिना आहार का, भूखा। *प्र॰* वह कई दिनों से निराहार है, उसे कुछ खाने को दो।

निरीक्षक – *पु॰* इंस्पेक्टर, जाँच करनेवाला।

निरीक्षण – *पु॰* 1. जाँच, जाँच-पड़ताल। 2. निगरानी, देख-रेख, देख-भाल।

निर्जन (निः+जन) – *वि॰* सुनसान, जहाँ कोई आदमी न हो। *प्र॰* वह स्थान तो बहुत निर्जन है।

निर्जल (निः+जल) – *वि॰* बिना पानी का; जैसे – निर्जल उपवास, निर्जल धुलाई।

निर्जल धुलाई – *स्त्री॰* बिना पानी की धुलाई, दे॰ ड्राईक्लीनिंग।

निर्जलीकरण (निः+जल+ई+करण) – *पु॰* बिना पानी के कर देना। *प्र॰* निर्जलीकरण से चीज़ें सड़ती-गलती नहीं हैं।

निर्जीव (निः+जीव) – *वि॰* 1. जिसमें जान न हो, मरा हुआ, मृत। 2. जड़, चेतना रहित; जैसे – निर्जीव पत्थर। 3. बेजान, उत्साहहीन। *प्र॰* वह बेचारा तो निर्जीव है, उससे कुछ होने का कहाँ?

निर्दय (निः + दया) – *वि॰* जिसमें दया न हो, बेरहम, कठोर; जैसे – निर्दय व्यक्ति।

निर्दयी (निः + दया + ई) – *वि॰* जिसमें दया न हो, निर्दय, बेरहम, कठोर।

निर्देश – *पु॰* 1. आज्ञा, हुक्म। 2. संकेत। *प्र॰* अफ़सर ने ऐसा करने का निर्देश तो दिया पर यह नहीं बताया कि कैसे किया जाए। 3. हिदायत। *प्र॰* मंत्रीजी के निर्देश पर सभा का आयोजन किया गया।

निर्देशक – पु॰ डाइरेक्टर; जैसे – फ़िल्म-निर्देशक।

निर्भीक | निर्माण | निर्मोचन | निर्वाचक
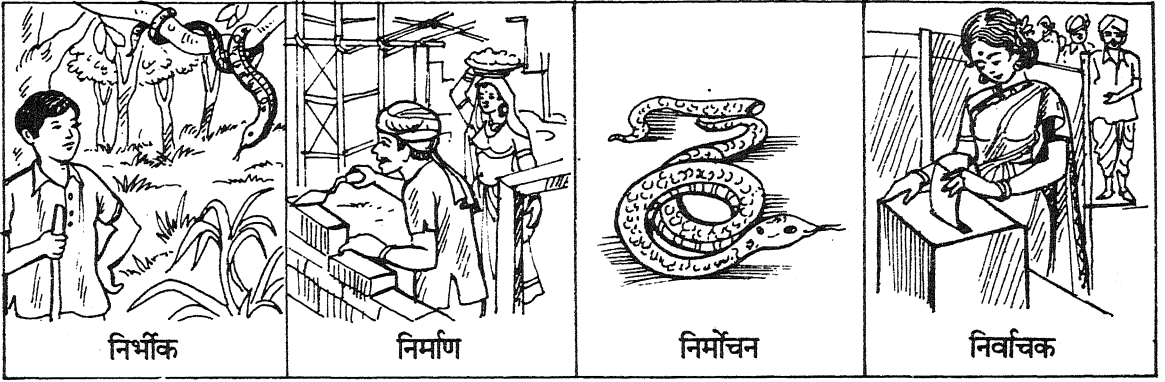
निर्धनता – *स्त्री॰* धनहीनता, ग़रीबी।

निर्धारण – *पु॰* निश्चय, निर्णय। *प्र॰* डॉक्टर ने मरीज़ को देख लिया है पर दवा का निर्धारण अभी नहीं किया है।

निर्धारित – *पु॰* तैशुदा, निश्चित; जैसे – निर्धारित समय, निर्धारित पाठ्यक्रम, निर्धारित पुस्तक, निर्धारित कार्यक्रम।

निर्भयता – *स्त्री॰* निडरता। *प्र॰* वह बच्चा बड़ी निर्भयता के साथ इस सुनसान जगह में घूम रहा है।

निर्भर – आश्रित, मुनहसर, किसी के भरोसे। *प्र॰* खेती का अच्छा होना या न होना बारिश पर निर्भर करता है।

निर्भीक – *वि॰* निडर, न डरनेवाला, निर्भय; जैसे – निर्भीक लड़का, निर्भीक व्यक्ति।

निर्मल (निः + मल) – *वि॰* बिना मैल का, साफ़, स्वच्छ; जैसे – निर्मल नदी, निर्मल जल, निर्मल धारा, निर्मल हृदय।

निर्माण – *पु॰* बनाना, रचना; जैसे – भवन-निर्माण, बाँध-निर्माण, सड़क-निर्माण, देश-निर्माण, चरित्र-निर्माण।

निर्माता– *पु॰* निर्माण करनेवाला, बनानेवाला, रचना करनेवाला, रचयिता; जैसे – देश-निर्माता, चरित्र-निर्माता।

निर्मोचन – *पु॰* पुरानी खाल या त्वचा का उतरना, चमड़ी झड़ना। *प्र॰* तितली, तिलचट्टा, मक्खी आदि कीड़े अंडे देते हैं। अंडे से बाहर निकलने पर बच्चे कई अवस्थाओं से गुजरते हुए तितली आदि बनते हैं। अंतिम अवस्था में पुरानी खाल उतरती है और इसी उतरने को निर्मोचन कहते हैं।

निर्मोही (निः + मोह + ई) – *वि॰* जिसके मन में मोह या ममता न हो।

निर्यात – *पु॰* देश के बाहर माल भेजना। (*विलोम* – आयात)। *प्र॰* पिछले कुछ वर्षों में अपने देश का निर्यात बहुत बढ़ा है।

निर्वाचक – *पु॰* चुननेवाला, वोटर।

निर्वाचन – *पु॰* बहुतों में से एक को चुनना, चुनाव, इलेक्शन। *प्र॰* पिछले निर्वाचन में कांग्रेस को बहुमत मिला था।

निर्वाह – *पु॰* गुज़ारा, गुज़र-बसर। *प्र॰* उस बेचारे के पास जीवन-निर्वाह का कोई साधन नहीं है।

निवारण – *पु॰* हटाना, दूर करना, छुटकारा। *प्र॰* इस रोग का निवारण थोड़ा कठिन है।

निवास – *पु॰* 1. घर, मकान। *प्र॰* आपका निवास

किस मुहल्ले में है? 2. रहना। प्र० आप कहाँ निवास करते हैं?

निवासस्थान – पु० रहने का स्थान, निवास। प्र० आपका निवासस्थान यहाँ नहीं लगता।

निवेदन – पु० विनय, प्रार्थना, विनती। प्र० मेरा निवेदन है कि कभी मेरे घर पर पधारने का कष्ट करें।

निशाना – पु० 1. किसी चीज़ या व्यक्ति आदि पर किया गया वार। प्र० उसका निशाना ख़ाली नहीं जाता। 2. जिसकी ओर हथियार चलाएँ, जिसे लक्ष्य करके कुछ करें। प्र० 1. उस पागल कुत्ते को निशाना बनाओ, वह कई लोगों को काट चुका है। 2. इस बार उस डाकू का निशाना कोई और नहीं बल्कि तुम हो।

निशानी – स्त्री० 1. यादगार, स्मृतिचिह्न, किसी की याद के लिए दी गई वस्तु। प्र० यह क़लम उनकी निशानी है। 2. निशान, वह चिह्न जिससे किसी की पहचान हो। प्र० चरखे का चित्र उस पार्टी की निशानी है।

निशानेबाज़ – पु० निशाना लगानेवाला।

निशानेबाज़ी – पु० निशाना लगाना, निशाने पर मारना। प्र० यह हवलदार निशानेबाज़ी में बहुत माहिर है।

निशि – स्त्री० रात, निशा; जैसे – निशिचर (रात में चलने या घूमने-फिरनेवाला)।

निश्चय – पु० पक्का विचार। प्र० उन्होंने निश्चय कर रखा है कि वे इस चुनाव में खड़े होंगे।

निश्चिंत – वि० जिसे कोई चिंता न हो, बिना फ़िक्र का, बेफ़िक्र, चिंतामुक्त। प्र० घर की सारी ज़िम्मेदारियों को पूरी करके मैं अब निश्चिंत हो गया हूँ।

निश्चित – वि० 1. पक्का, दृढ़। प्र० मेरा यह निश्चित विचार है कि यह शरारत उन्हीं लोगों की है। 2. तै। प्र० परीक्षा की तिथि निश्चित हो चुकी है।

निषेचन – पु० बीज डालना, बीजारोपण। प्र० तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर जरूर निषेचन करती हैं।

निषेधात्मक – वि० नहीं, ना या निषेध का बोध करानेवाला, नकारात्मक; जैसे–निषेधात्मक वाक्य – मैं नहीं जा रहा हूँ।

निष्कपट (निः+कपट) – वि० बिना कपट का, निश्छल, छल-कपटरहित, सीधा, सरल; जैसे – निष्कपट व्यक्ति।

निष्कर्ष – पु० 1. नतीजा, परिणाम। 2. सार, निचोड़।
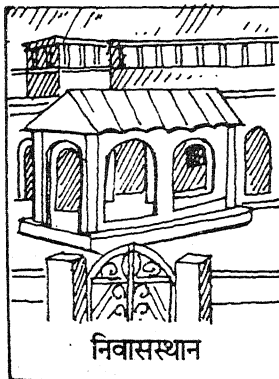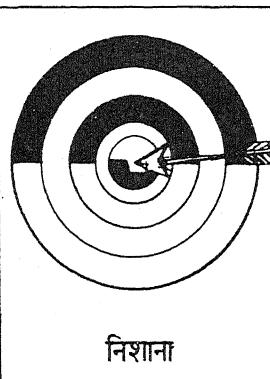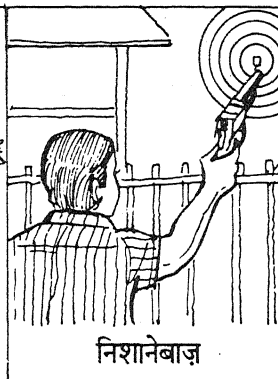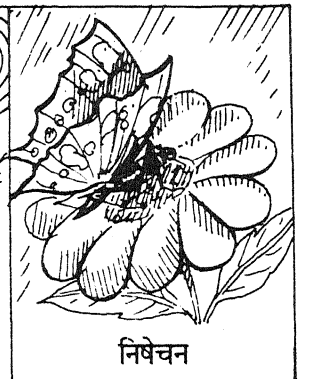
निवासस्थान | निशाना | निशानेबाज़ | निषेचन

नीलाम नृत्य नेत्र
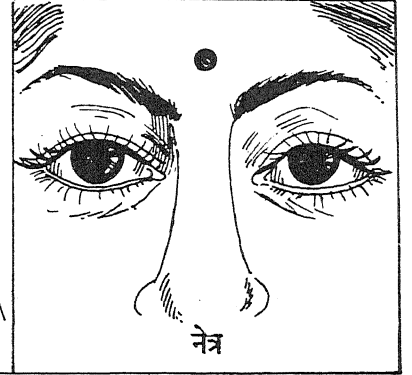
निष्क्रिय (निः+क्रिया) – *वि॰* 1. जिसमें कोई क्रिया न हो। (*विलोम* – सक्रिय)। *प्र॰* शीत ऋतु में बहुत-से जीव-जंतु निष्क्रिय हो जाते हैं। 2. बेकार, बिना काम-धंधे का। *प्र॰* मोहन कई महीनों से निष्क्रिय बैठा है।

निष्फल (निः+फल) – *वि॰* जिसका कोई फल न हो, निरर्थक, बेकार। *प्र॰* सारा प्रयास निष्फल गया और कोई भी काम बन नहीं पाया।

निस्संकोच (निः+संकोच) – 1. *अ॰* बिना संकोच के, बिना लाज-शर्म के। *प्र॰* जो चीज़ माँगनी हो निस्संकोच माँगो। 2. *वि॰* जिसमें संकोच न हो, बिना संकोच का, बिना झिझक का। *प्र॰* निस्संकोच बर्ताव-व्यवहार से आदमी सुखी रहता है।

निस्संदेह (निः+संदेह) – *अ॰* जिसमें तनिक भी संदेह न हो। *प्र॰* निस्संदेह, वह बिल्कुल भी व्यावहारिक नहीं है।

नीचा – *वि॰* जो ऊँचा न हो, कम ऊँचाईवाला। (*विलोम* – ऊँचा); जैसे – नीची ज़मीन, नीची छत, नीचा इलाका। *मु॰ नीचा दिखाना* – बेइज़्ज़त करना, शेख़ी उतारना, हराना। *प्र॰* दूसरों को नीचा दिखाने के प्रयास में उसे खुद नीचा देखना पड़ा।

नीति – *स्त्री॰* व्यवहार का ढंग या उसकी रीति, पालिसी; जैसे – शासन की नीति, शत्रु की नीति, विपक्ष की नीति।

नीरोग – *वि॰* बिना रोग का, तंदुरुस्त, स्वस्थ।

नील – 1. *वि॰* नीला, नीले रंग का; जैसे – नील गगन, नील वस्त्र। 2. *पु॰* एक नीला पाउडर जो नील नामक पौधे से प्राप्त होता है।

नीलम – *पु॰* नीले रंग का एक रत्न।

नीला थोथा – *पु॰* 'तूतिया' नामक एक रसायन।

नीलाम – *पु॰* किसी वस्तु पर कई लोगों से बोली लगवाकर सबसे ऊँची बोली लगानेवाले को बेचने की क्रिया।

नूतन – *वि॰* नवीन, नया। (*विलोम* – पुरातन)।

नृत्य – *पु॰* नाच।

नृत्यनाटिका – *स्त्री॰* नृत्य के रूप में छोटा नाटक। *प्र॰* मथुरा में रासलीला की नृत्यनाटिका होती है।

नृत्यशैली – *स्त्री॰* नाचने की शैली।

नेतृत्व – *पु॰* अगुआई, नेता होने का भाव। *प्र॰* इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार बनी।

नेत्र – *पु॰* आँख, नयन; जैसे – नेत्र चिकित्सा, नेत्र बैंक, नेत्रदान।

नेपथ्य – *पु॰* नाटक या नृत्य आदि में परदे के पीछे

का वह स्थान जो दर्शकों को दीखता नहीं तथा जहाँ अभिनेता या नर्तक आदि सजते हैं।

नैजमान – *पु०* निजी मान, किसी का अपना मूल्य; जैसे – 51 में 5 का नैजमान 5 है किंतु स्थानीय मान 50 है।

नैदानिक – *वि०* रोग के निदान (दे०) या निर्णय के लिए प्रयोग में आनेवाला; जैसे – नैदानिक थर्मामीटर।

नैपच्यून – *पु०* सूर्य के चारों ओर घूमनेवाले नौ ग्रहों में से एक।

नैप्थलीन – *पु०* एक बहुत तेज़ गंधवाला पदार्थ जो कोलतार और पेट्रोलियम से बनता है। नेप्थलीन की गोलियाँ कीड़ों से कपड़ों को बचाने के लिए बक्स में कपड़ों के साथ रखी जाती हैं।

नैसर्गिक – *वि०* प्राकृतिक। *प्र०* शिमला का नैसर्गिक दृश्य देखने योग्य है।

नोकीला – *वि०* नुकीला, नोकदार।

नोट – *पु०* 1. टिप्पणी, छोटा पत्र, पर्चा। *प्र०* प्रधान मंत्री ने मंत्रियों के पास केंद्र का ख़र्च कम करने के लिए एक नोट भेजा है। 2. स्मरण के लिए संकेत रूप में लिखी गई बात। *प्र०* उसे प्रधान मंत्री के निजी सचिव को नोट करा दीजिए। 3. काग़ज़ का सिक्का; जैसे – पाँच रुपए का नोट, बीस रुपए का नोट, सौ रुपए का नोट, नंबरी नोट, हरा नोट। 4. कक्षा के नोट।

नोटिस – *पु०* 1. सूचना। *प्र०* सभा का नोटिस मेरे पास नहीं आया। 2. सूचनापत्र। *प्र०* कोई व्यक्ति एक नोटिस मेरे दरवाज़े पर चिपका गया।

नौका – *स्त्री०* नाव।

नौसेना – *स्त्री०* जलसेना, पानी में लड़नेवाली सेना, नेवी।

न्याय – *पु०* 1. इंसाफ़। *प्र०* मुखिया ने ऐसा करके मेरे साथ न्याय नहीं किया। 2. ठीक फ़ैसला, सही निर्णय। *प्र०* न्यायाधीश ही इसका न्याय करेंगे।

न्यायपालिका – *पु०* किसी राज्य या प्रदेश के न्यायाधीशों का सामूहिक रूप, न्यायाधिकरण, न्यायतंत्र।

न्यायप्रिय – *वि०* न्यायी, इंसाफ़पसंद।

न्यायालय – *पु०* कचहरी, कोर्ट, अदालत।

न्यारा – *वि०* अद्‌भुत, अनोखा, निराला, सबसे अलग।

न्यून – *वि०* कम, थोड़ा, अल्प।

न्यूनकोण – *पु०* वह कोण जो 90 अंश से कम हो।

नैपच्यून नोकीला नौका
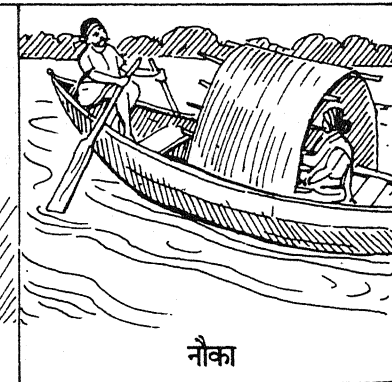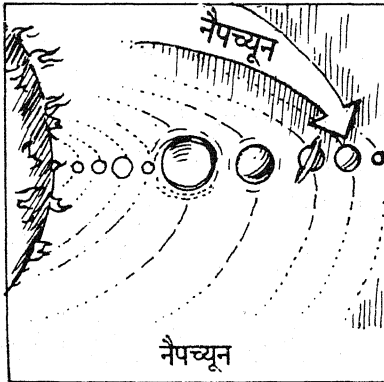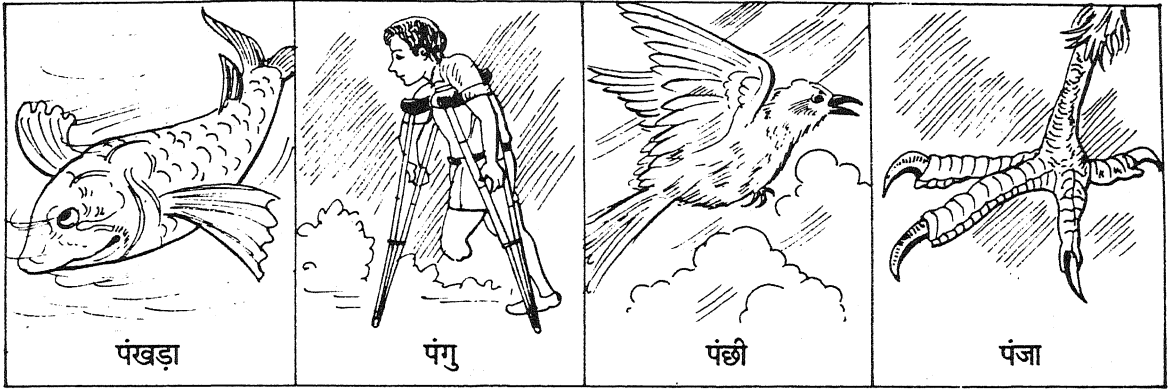
न्यूनकोण त्रिभुज – *पु०* ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों कोण न्यूनकोण हों।

न्यूनतम – *वि०* सबसे छोटा, लघुतम।

न्यूमोनिया – *पु०* फेफड़ों का एक रोग।

न्योछावर – *पु०* 1. क़ुर्बानि, बलिदान। *प्र०* शहीद भगतसिंह ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। 2. किसी की रक्षा के लिए कोई चीज़ किसी के सिर तथा अंगों के ऊपर घुमाकर ज़मीन पर डाल देना या दान कर देना, उतारा, वाराफेरा। *प्र०* शादी में न्योछावर करने की परंपरा है।

प – देवनागरी लिपि के पवर्ग का पहला व्यंजन।

पंक – *पु०* कीचड़।

पंकज (पंक+ज) – *पु०* पंक में जनमा हुआ अर्थात् कमल।

पंक्ति – *स्त्री०* लाइन, क़तार। *प्र०* राशन की दूकान पर पंक्ति में खड़े होकर लोग बारी-बारी से चावल, चीनी, गेहूँ ले रहे हैं।

पंखड़ा – *पु०* मछलियों के शरीर के दोनों ओर लगे पंख-जैसे वे डैने जिनसे तैरते समय वे चप्पू की तरह पानी को काटती हैं, सुफ़ज़ा।

पँखड़ी – *स्त्री०* फूल का दल, पँखुड़ी।

पँखुड़ी, पँखुरी – *स्त्री०* फूल का दल, पँखड़ी।

पंगु – *वि०* जो पैर से चल न सके, लँगड़ा।

पंच – 1. *पु०* (क) दूसरों के झगड़ों को निपटानेवाला। *प्र०* किसी को भी पंच बना लो, वह मामला निपटा देगा। (ख) पंचायत का मेंबर या सदस्य। *प्र०* पंचों में एक तुम भी तो हो। 2. *वि०* पाँच; जैसे – पंचानन (पाँच मुँहवाले अर्थात् ब्रह्मा), पंचवर्षीय।

पंचम – *वि०* पाँचवाँ।

पंचमी – *स्त्री०* अँधेरे या उजेले पक्ष की पाँचवीं तिथि।

पंचवर्षीय – *वि०* पाँच वर्षवाला; जैसे – पंचवर्षीय योजना।

पंचायती राज – *पु०* वह राज्य जहाँ पंचायतों द्वारा शासन चलाया जाए।

पंछी – *पु०* चिड़िया, पक्षी।

पंजा – *पु०* 1. हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह। 2. चिड़ियों के पैर का अगला भाग जिससे वे कुछ पकड़ती हैं।

पँजीरी, पंजीरी – *स्त्री०* 1. घी में आटा भूनकर

चीनी, भुना धनिया तथा मेवा मिलाकर बननेवाला चूर्ण जिसे खाते हैं तथा प्रसाद भी चढ़ाते हैं। 2. फूलों तथा सब्ज़ियों आदि के छोटे-छोटे पौधे जिन्हें खेत में लगाते हैं।

पंडाल – *पु०* सभा आदि के लिए बना बड़ा मंडप, कई शामियाने या तंबू मिलाकर बना सभागार।

पंडित – *पु०* 1. ब्राह्मण। *प्र०* पंडितजी विवाह करा रहे हैं। 2. ब्राह्मणों के नामों के पहले जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द; जैसे – पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंडित मदनमोहन मालवीय। 3. किसी विषय का विद्वान् या जानकार; जैसे – राजनीति का पंडित, अँग्रेज़ी का पंडित।

पंथ – *पु०* रास्ता, पथ, मार्ग।

पंप – *पु०* पानी आदि तरल पदार्थ को निकालने या साइकल आदि में हवा भरने का एक उपकरण।

पंसारी – *पु०* नमक, मसाले आदि चौके की चीज़ें तथा घर के रोज़मर्रा के सामान बेचनेवाला, किराने की चीज़ें बेचनेवाला।

पकड़ – *स्त्री०* 1. पकड़ने की स्थिति, पकड़ना, गिरफ़्त। *प्र०* अच्छा, उन्होंने मेरे भाई को यों ही मारा है, एक बार मेरी पकड़ में आ जाएँ तो मज़ा चखा दूँ। 2. समझ, बुद्धि; जैसे – विद्यार्थी की पकड़ में विषय आना, डॉक्टर की पकड़ में रोग आना।

पकड़ना – *क्रि०* 1. थामना, धरना; जैसे – क़लम पकड़ना, छाता पकड़ना, छड़ी पकड़ना, मरीज़ को गिरने से बचाने के लिए पकड़ना। 2. गिरफ़्तार करना; जैसे – चोर, डाकू या हत्यारे को पकड़ना।

पकवान – *पु०* घी या तेल में पका हुआ सादा, मीठा या नमकीन खाद्य पदार्थ; जैसे – पूड़ी, कचौड़ी, मालपूवा।

पक्का – *वि०* 1. जो कच्चा न हो, सीमेंट या चूने आदि का; जैसे – पक्का फ़र्श, पक्की इमारत, पक्की सड़क, पक्की छत। 2. तला हुआ, जो पानी में न बना हो, जो कच्चा न हो; जैसे – पक्का खाना (तुलना कीजिए – कच्चा खाना)। 3. मज़बूत; जैसे – पक्का धागा। 4. जो छूटे या घुले नहीं; जैसे – पक्का रंग। 5. निश्चित; जैसे – पक्की बात, पक्का सौदा, पक्का वायदा।

पक्ष – *पु०* 1. ओर, तरफ़। (*विलोम* – विपक्ष)। *प्र०* 1. मैं किसी पक्ष में नहीं हूँ, न तुम्हारे न उसके। 2. वाद-विवाद प्रतियोगिता में विषय के पक्ष में मैं बोलूँगा और विपक्ष में वह। 2. पखवाड़ा, कृष्ण या शुक्ल पक्ष के पंद्रह दिन। *प्र०* कृष्ण पक्ष में अष्टमी को जन्माष्टमी है।

पंडाल | पंप | पकड़

पछाड़ना | पटकना | पटरी | पट्टी
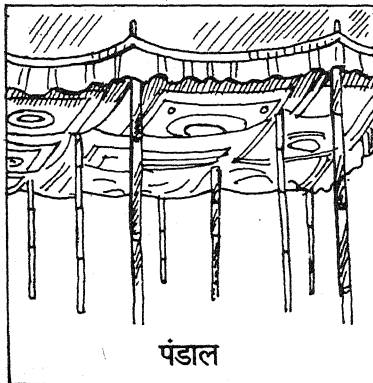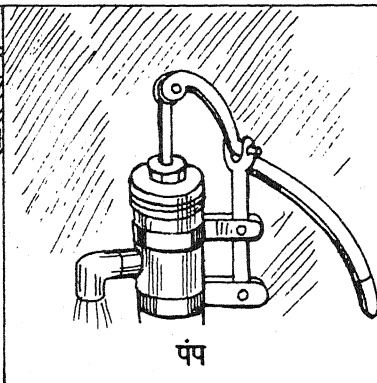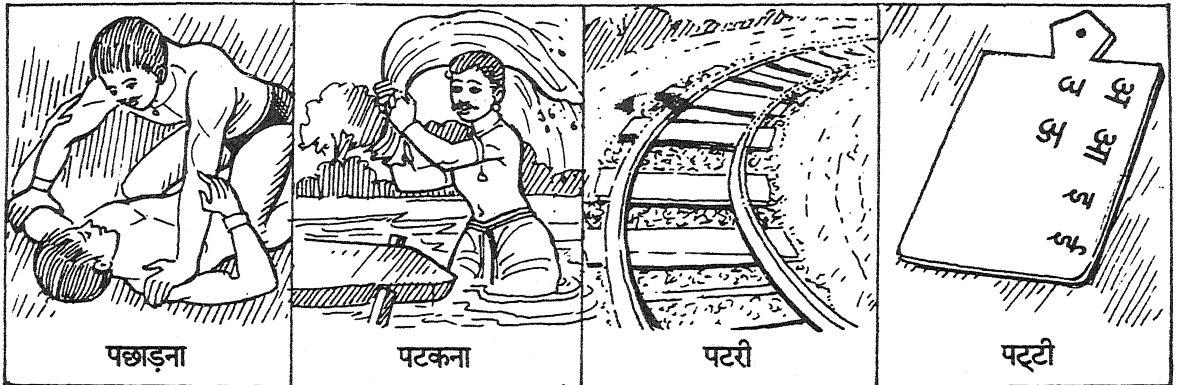
पक्षी – पु० चिड़िया।

पच्चीकारी – स्त्री० एक रंग की धातु, पत्थर आदि में दूसरे रंग की धातु, दूसरे रंग का पत्थर या नग और रतन आदि जड़ना।

पछताना – *क्रि०* कुछ ग़लत कर देने या कोई ग़लती हो जाने पर अफ़सोस करना, दुखी होना, पश्चात्ताप करना। *प्र०* बिना सोचे-समझे मैंने उसे मार दिया और अब इस बात को सोच-सोचकर पछता रहा हूँ।

पछाड़ना – *क्रि०* हराना; जैसे – कुश्ती में पछाड़ना, पढ़ाई-लिखाई में पछाड़ना, आगे बढ़ने में पछाड़ना।

पटकना – *क्रि०* 1. झटके के साथ या ज़ोर से नीचे गिराना; जैसे – कोई चीज़ पटकना, किसी आदमी को पटकना। 2. कुश्ती में पछाड़ना, हरा देना। *प्र०* अखाड़े में छोटे पहलवान ने बड़े पहलवान को पटक दिया।

पटचित्र – पु० उड़ीसा में मोटे काग़ज़ पर बनाई जानेवाली विशेष प्रकार की सुंदर और रंगीन डिज़ाइन। *प्र०* उड़ीसा की पटचित्र कला प्रसिद्ध है।

पटना – *क्रि०* 1. बनना, मन मिलना, मेल खाना। *प्र०* दोनों सहपाठियों में ख़ूब पटती है। 2. भर जाना, समतल होना, सतह के बराबर होना। *प्र०* वहाँ गड्ढे, नाली आदि सब पट गए, अब तो जैसे अच्छा-सा मैदान हो गया है।

पटरी – *स्त्री०* 1. रेल लाइन, रेल की पटरी। 2. छोटा पटरा। 3. तख़्ती (बच्चों के लिखने की)। 4. सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलने के लिए होता है। *प्र०* बीच सड़क पर क्यों आते हो, पटरी पर चलो।

पटसन – पु० एक पौधा जिसके रेशे से रस्सी, टाट, बोरे (कट्टे), कपड़े आदि बनाए जाते हैं, पटुआ, पाट, जूट।

पटाका, पटाख़ा – पु० एक तरह की आतिशबाज़ी जिसमें आग लगाने से बड़े ज़ोर की आवाज़ होती है।

पट्टा – पु० 1. किसी खेत आदि का मालिक की ओर से किसी व्यक्ति को उपयोग के लिए अधिकार-पत्र। 2. चमड़े आदि से बनी एक चीज़ जो कुत्तों आदि को पहनाते हैं। 3. कपड़े, क़नात, टाट, मोटा कपड़ा आदि की पट्टी जो कई काम आती है।

पट्टी – *स्त्री०* 1. टाट, कपड़ा, धातु या काग़ज़ आदि का लंबा पतला टुकड़ा; जैसे – काग़ज़ की पट्टी (जो प्रेस में कटिंग के रूप में बचती है)। 2. चोट पर बाँधने की कपड़े की पट्टी। 3. बच्चों के खड़िया से लिखना सीखने की लकड़ी की तख़्ती। *मु० पट्टी पढ़ाना* – बहकाना, गुमराह करना। *प्र०* राजू हरीश

को पट्टी पढ़ा-पढ़ाकर उलटे-सीधे काम करा रहा है।

पठार – पु॰ कहीं-कहीं छोटी-छोटी पहाड़ियोंवाली दूर-दूर तक फैली ऊँची पथरीली ज़मीन, प्लेटो; जैसे– दक्षिणी भारत का पठार।

पड़ना – *क्रि॰* 1. गिरना, आना। *प्र॰* जो अपने ऊपर पड़ेगा, भोगना पड़ेगा। 2. लाचारी या मज़बूरी में कुछ ऐसा करना जो पसंद न हो। *प्र॰* मैं चाहता तो नहीं था पर अब जाना ही पड़ेगा। 3. औसत होना, औसत आना। *प्र॰* कोई ख़ास दिहाड़ी नहीं है। पंद्रह रुपए रोज़ का औसत पड़ेगा।

पड़ाव – पु॰ 1. सफ़र के बीच में ठहरना। *प्र॰* आज पड़ाव कहाँ होगा? 2. यात्रा में रुकने की जगह, ठहरने का स्थान। *प्र॰* बदरीनाथ की यात्रा में कई चट्टियाँ लोगों के पड़ाव के लिए अच्छी हैं।

पढ़ना – *क्रि॰* 1. बाँचना, किसी पुस्तक, चिट्ठी या लेख आदि को देखकर उच्चारण करना। *प्र॰* यह पत्र मुझसे पढ़ा नहीं जा रहा है, ज़रा पढ़ दो। 2. शिक्षा पाना। *प्र॰* 1. मैं तो अभी पढ़ रहा हूँ, नौकरी नहीं करूँगा। 2. मैं इसी स्कूल में पढ़ता हूँ।

पतंगा – पु॰ उड़नेवाला छोटा कीड़ा, पतिंगा। *प्र॰* आजकल रोशनी देखते ही ढेर-के-ढेर पतंगे मँडराने लगते हैं।

पतन – *पु॰* 1. गिरना, गिरावट। *प्र॰* अत्याचारी शासन का पतन निश्चित है। 2. अवनति। *प्र॰* यह व्यक्ति बहुत चरित्रवान् है, इसके चरित्र का पतन कभी नहीं हुआ।

पतलून – *पु॰* पैंट।

पतवार – *पु॰* नाव के पीछे लगा तिकोना डंडा जिससे दिशा बदलते हैं।

पता – *पु॰* 1. ठिकाना, किसी व्यक्ति या स्थान की पूरी जानकारी जिसके आधार पर उसे पत्र भेज सकें। 2. जानकारी, ज्ञान। *प्र॰* 1. तुम प्रथम श्रेणी में पास हुए हो, इस बात का मुझे पता नहीं था। 2. इस विषय में मुझे कुछ पता नहीं है।

पताका – *स्त्री॰* झंडा।

पति – पु॰ 1. मर्द, आदमी, शौहर। *प्र॰* इस औरत के पति का बहुत दिनों से अता-पता नहीं है। 2. स्वामी, मालिक, चलानेवाला; जैसे – सभापति, राष्ट्रपति,

पत्ता – पु॰ 1. पेड़-पौधों का हरा-पतला भाग, पत्ती, पत्र। 2. ताश, ताश के कार्ड। *प्र॰* ताश की इस गड्डी में पत्ते पूरे नहीं हैं। *मु॰ पत्ता काटना* – नौकरी से अलग करना, निकालना। *प्र॰* साहब ने कल मोहन का भी पत्ता काट दिया।

पतंगा | पतलून | पतवार | पत्ता

पथिक पदक पद्म पनघट
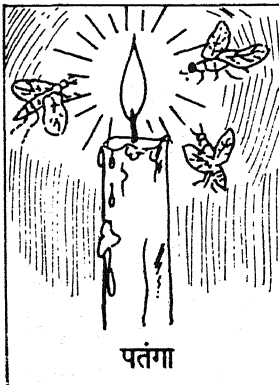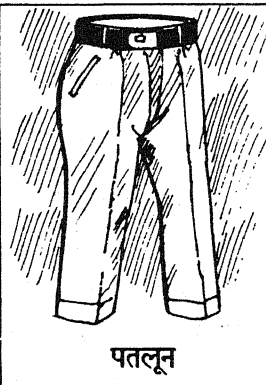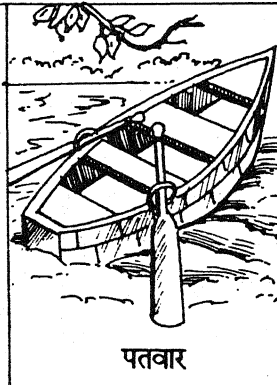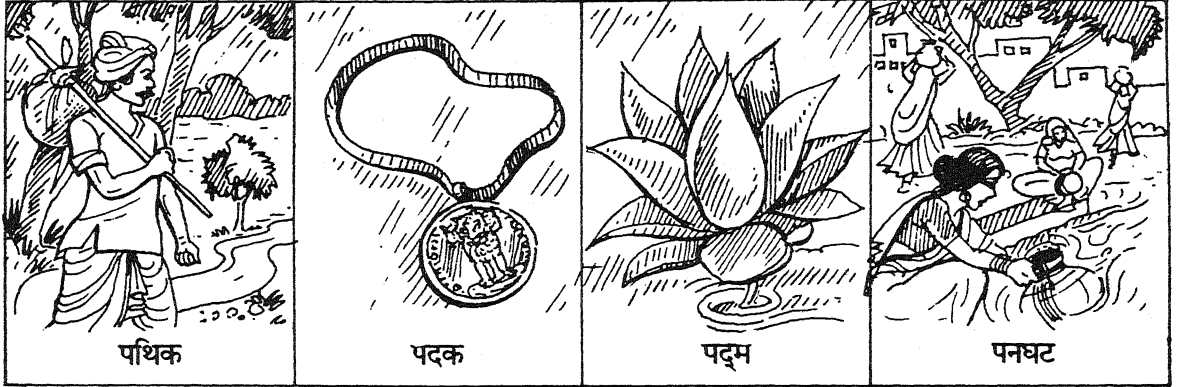
पत्नी – स्त्री॰ बीवी, स्त्री, धर्मपत्नी।

पत्रकार – पु॰ समाचार-पत्र या पत्रिका का काम करनेवाला; जैसे – संपादक, सहसंपादक, उपसंपादक, संवाददाता आदि।

पत्र-व्यवहार – पु॰ चिट्ठियों का आना-जाना। प्र॰ आजकल उन दोनों में पत्र-व्यवहार नहीं है।

पत्रिका – स्त्री॰ अलग-अलग विषयों के लेखों, कविताओं, कहानियों आदि का नियमित समय (एक महीने, दो महीने, छह महीने, एक वर्ष) पर निकलनेवाला संग्रह; जैसे – स्कूल की पत्रिका, साहित्यिक पत्रिका।

पथ – पु॰ रास्ता, मार्ग, पंथ, राह।

पथिक – पु॰ मुसाफ़िर, राही।

पद – पु॰ 1. ओहदा, दर्जा; जैसे – कलक्टर का पद, प्रोफ़ेसर का पद, मंत्री का पद। 2. पैर, पाँव; जैसे – पदचाप (पैरों की आवाज़), पदचिह्न (पैरों के निशान)। 3. एक प्रकार के छंद जिसमें प्रायः भक्ति की रचनाएँ की जाती हैं; जैसे – कबीर के पद, सूर के पद, तुलसी के पद।

पदक – पु॰ अच्छा काम करने पर सम्मान के लिए दिया जानेवाला धातु का सिक्का जिस पर उस काम तथा संस्था का नाम आदि अंकित होता है, तमग़ा, मेडल। प्र॰ पदक पढ़ाई-लिखाई तथा खेल-कूद में बहुत अच्छा होने तथा अपना काम अच्छी तरह करने आदि के लिए दिए जाते हैं।

पदवी – स्त्री॰ राजा, शासन तथा संस्था आदि के द्वारा दिया जानेवाला ख़िताब, उपाधि।

पदार्थ – पु॰ चीज़, वस्तु।

पद्धति – स्त्री॰ ढंग, तरीका, रीति, प्रणाली, शैली; जैसे – पढ़ने की पद्धति, परीक्षा में लिखने की पद्धति, काम करने की पद्धति।

पद्म – पु॰ कमल।

पद्य – पु॰ छंद, जिसमें कविता के पद या चरण हों, छंद जो गद्य न हो। (*विलोम* – गद्य)। प्र॰ वह लड़का अब पद्य लिखने लगा है।

पधारना – क्रि॰ 1. आना। प्र॰ महात्माजी! कभी मेरे घर भी पधारिए। 2. जाना। प्र॰ महात्माजी कल ही यहाँ से पधारे हैं, शायद अगले गाँव में गए हैं। 'पधारना' आना और जाना दोनों ही अर्थों में बड़ों के लिए ही आता है।

पनकौवा – पु॰ पानी का एक पक्षी, जलपक्षी।

पनघट (पानी+घाट) – पु॰ नदी या तालाब का घाट या कुएँ का एक छोर जहाँ से लोग पानी भरते हैं।

पनचक्की (पानी+चक्की) – *स्त्री॰* पानी के बहाव या गिरने की शक्ति से चलनेवाली चक्की।

पनडुब्बी (पानी+डूबना) – *स्त्री॰* पानी के भीतर डूबकर चलनेवाला विशेष प्रकार का लड़ाई का जहाज़।

पनपना – *क्रि॰* नई पत्तियाँ और कोंपल निकलना, हरा-भरा होना। *प्र॰* मुझे तो लगा था कि पेड़ सूख जाएगा पर फिर पनपने लगा है।

पन्नी – *स्त्री॰* राँगे आदि का बहुत बारीक़ पत्थर जो सुनहरा, रुपहला आदि कई रंगों का होता है तथा जिसे सुंदरता के लिए कई चीज़ों पर चिपकाते या लगाते हैं।

पपड़ी – *स्त्री॰* किसी चीज़ की सूखी हुई ऊपरी परत। *प्र॰* घाव पर पपड़ी पड़ गई है।

पपीहा – *पु॰* एक पक्षी जो 'पी कहाँ' 'पी कहाँ' की आवाज़ लगाता है, चातक।

परंतु – *अ॰* मगर, पर, लेकिन। *प्र॰* मैं आ जाता परंतु बीमार पड़ गया।

परंपरा – *स्त्री॰* पुराने ज़माने से चले आ रहे रीति-रिवाज़, प्रथा। *प्र॰* सभी जगह अलग-अलग परंपराएँ होती हैं।

परंपरावादी – *वि॰* पुरानी परंपराओं में विश्वास रखनेवाला, पहले से चले आ रहे रीति-रिवाज़ों के अनुसार चलनेवाला। *प्र॰* मेरे पिताजी परंपरावादी हैं, इसलिए वे आज की नई बातों को नहीं स्वीकार करते।

पर – 1. *पु॰* पंख, डैना; जैसे – पक्षी के पर। 2. *अ॰* लेकिन, मगर, परंतु। *प्र॰* मैं आता पर कोई आ गया था। 3. *वि॰* ग़ैर, पराया, दूसरा; जैसे – परलोक, परोपकार (पर+उपकार), परदेश।

परकार – *पु॰* वृत्त खींचने का एक औज़ार।

परख – *स्त्री॰* 1. जाँच, अच्छे-बुरे की पहचान के लिए परीक्षण। *प्र॰* यह सोना खरा है या खोटा है, इसकी परख सुनार ही कर सकता है। 2. गुण-दोष का पता लगानेवाली दृष्टि, पहचान, ज्ञान। *प्र॰* रत्नों की परख जौहरी ही कर सकता है।

परखनली – *स्त्री॰* तरह-तरह के प्रयोग करने की नली, टेस्टट्यूब।

परखना – *क्रि॰* जाँचना, जाँच-परख करना।

परगना – *पु॰* ज़िले की किसी तहसील का एक भाग जिसमें बहुत से गाँव होते हैं।

परचा – *पु॰* दे॰ पर्चा।
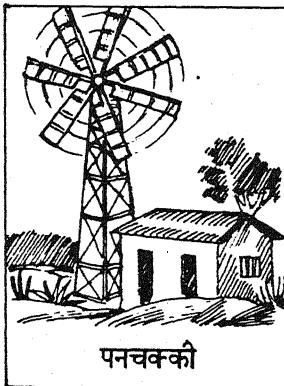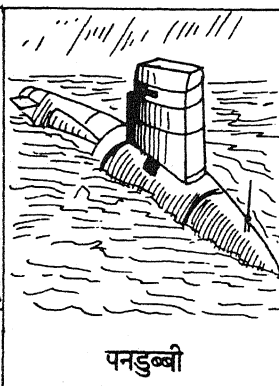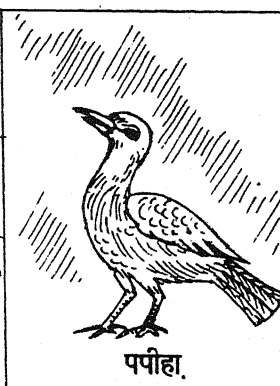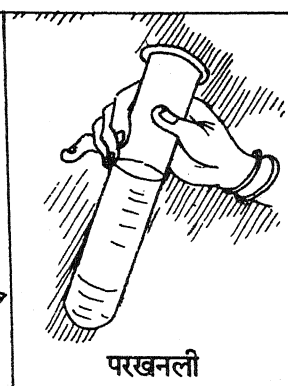
पनचक्की | पनडुब्बी | पपीहा | परखनली
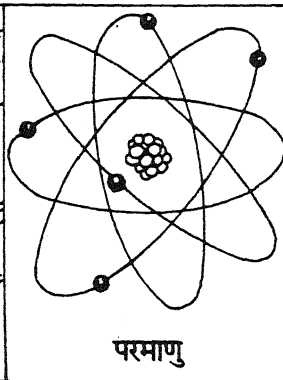
परचून परमाणु परशु पराक्रम

परची – *स्त्री॰* दे॰ पर्ची।
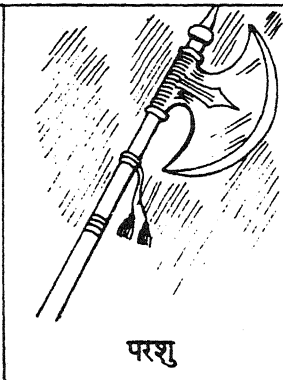
परचून – पु॰ चौके का खुदरा सामान; जैसे – परचून की दूकान।

परतंत्र – *वि॰* जो स्वतंत्र न हो, पराधीन, गुलाम। (*विलोम* – स्वतंत्र)।

परतंत्रता – *स्त्री॰* पराधीनता, ग़ुलामी। (*विलोम* – स्वतंत्रता)।

परदा – पु॰ दे॰ पर्दा।

परदादा – पु॰ पिता के दादा।

परम – *वि॰* 1. बहुत अधिक, बहुत ज़्यादा; जैसे – परमपूज्य, परम आदरणीय, परम शांति। 2. अंतिम, आख़िरी। प्र॰ कल स्वामीजी परमगति (मृत्यु) को प्राप्त हुए। 3. सबसे बड़ा; जैसे – परमात्मा (परम+आत्मा), परमेश्वर (परम+ईश्वर)।

परमाणु – पु॰ छोटे-से-छोटा कण, सबसे छोटा अणु।

परमाणु ऊर्जा – *स्त्री॰* परमाणु को तोड़ने से प्राप्त होनेवाली शक्ति। प्र॰ अब भारत में भी परमाणु ऊर्जा का प्रयोग होने लगा है।

परमाण्विक (परमाणु+इक) – *वि॰* परमाणु (दे॰) का, परमाणु-संबंधी, परमाणु-विषयक; जैसे – परमाण्विक ऊर्जा।

परलोक – पु॰ दूसरा लोक, वह लोक जहाँ मरने के बाद प्राणी जाता है। (परलोक की सत्ता सचाई नहीं बल्कि एक कल्पना है)। *मु॰ परलोक सिधारना* – मर जाना। प्र॰ मेरे परदादा 102 वर्ष की उम्र में परलोक सिधारे।

परवा, परवाह – *स्त्री॰* फ़िक्र, चिंता। प्र॰ दिनोंदिन तुम्हारा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है लेकिन तुमको इसकी ज़रा भी परवाह नहीं है।

परशु – पु॰ फरसा, कुल्हाड़ी; जैसे – परशुराम (जमदग्नि ऋषि के पुत्र जो हमेशा परशु लिए रहते थे)।

परसना – *क्रि॰* दे॰ परोसना।

परस्पर – *अ॰* एक दूसरे के साथ, आपस में। प्र॰ दोनों पड़ोसियों में आजकल परस्पर लड़ाई की स्थिति है।

परहेज़ – पु॰ किसी चीज़ के सेवन से बचना। प्र॰ वैद्य ने मोहन को पूड़ी, पराँठा, हलवा आदि भारी चीज़ों से परहेज़ करने को कहा है।

पराक्रम – पु॰ बहादुरी, वीरता, पुरुषार्थ। प्र॰ वे बूढ़े हो गए पर फिर भी उनमें ग़ज़ब का पराक्रम है।

पराक्रमी – *वि०* कर्मठ, बहादुर, वीर, पुरुषार्थी। *प्र०* वे सज्जन अस्सी वर्ष के होने पर भी ग़ज़ब के पराक्रमी हैं।

पराग – *पु०* वह धूलि जो फूलों के बीच में जमा रहती है। *प्र०* तितलियाँ और मधुमक्खियाँ पराग की खोज में फूलों के पास आती हैं।

परागण – *पु०* पराग बनना। *प्र०* फूलों में परागण क्रिया के बाद बीज बनते हैं।

पराजय – *स्त्री०* हार। *प्र०* आज तक कभी भी विरोधियों से मेरी हार नहीं हुई।

पराधीन (पर + अधीन) – *वि०* दूसरे के अधीन, परतंत्र, जो स्वतंत्र न हो, गुलाम। (*विलोम* – स्वाधीन)। *प्र०* 1947 के पहले भारत पराधीन था, अब स्वाधीन है।

पराधीनता (पर + अधीन + ता) – *स्त्री०* परतंत्रता, गुलामी।

परावर्तन – *पु०* पलटना, लौटाना, प्रतिबिंबित करना। *प्र०* चंद्रमा की चमक उसकी अपनी नहीं है, यह सूर्य के प्रकाश का परावर्तन है।

परावर्तित – *वि०* पलटा हुआ, लौटाया हुआ, प्रतिबिंबित किया हुआ। *प्र०* चंद्रमा की अपनी चमक नहीं होती। यह चमकता है क्योंकि सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करता है।

परास्त – *वि०* हारा, हारा हुआ, पराजित। *प्र०* एक समय था जब भारत की हॉकी टीम विश्व की सभी टीमों को परास्त किया करती थी।

परिकलन – *पु०* गणना, हिसाब लगाना। *प्र०* परिकलन करके यह बताया जा सकता है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करने में कितना समय लगाती है।

परिक्रमण – *पु०* 1. परिक्रमा करना, चारों ओर घूमना। *प्र०* पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है, इस क्रिया को परिक्रमण कहते हैं। 2. चक्कर लगाना, घूमना। *प्र०* पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर लगाने को भी परिक्रमण कहते हैं।

परिक्रमा – *स्त्री०* चारों ओर घूमना, फेरी, चक्कर। *प्र०* बहुत से लोग श्रद्धा के साथ पीपल के पेड़, तुलसी तथा मंदिर आदि की परिक्रमा करते हैं।

परिगणित जाति – *स्त्री०* वे कुछ जातियाँ जिनको सरकार ने अलग से गिनाया है तथा अनेक बातों में इन्हें विशेष अधिकार प्राप्त हैं।

परिचारक – *पु०* 1. सहायक, सेवक, नौकर। 2. मेल नर्स, रोगी की सेवा करनेवाला।

परावर्तन | परिक्रमा | परिचारक

परिचारिका परिधान परिमाप
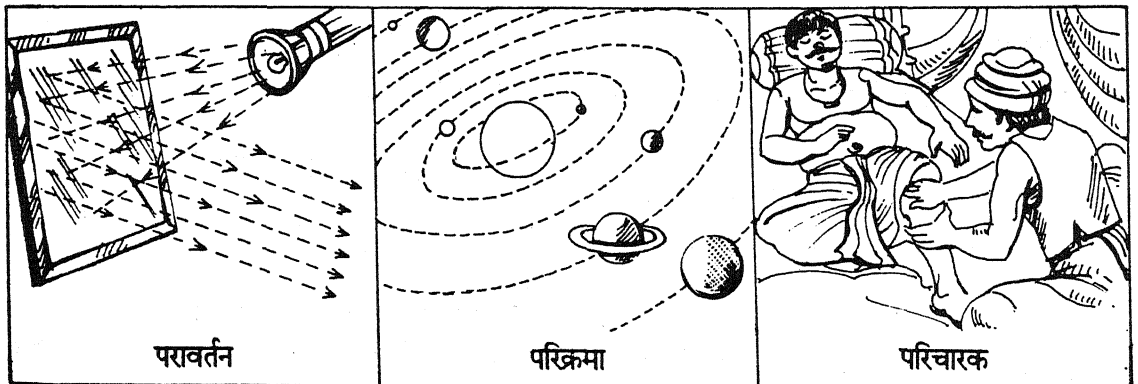
परिचारिका – *स्त्री०* 1. दासी, नौकरानी, सेविका। 2. नर्स, रोगी की सेवा करनेवाली।

परिच्छेद – *पु०* अध्याय। *प्र०* इस पुस्तक में कई परिच्छेद हैं।

परिणाम – *पु०* नतीज़ा, फल। *प्र०* परिश्रम का परिणाम अच्छा होता है।

परिधान – *पु०* पोशाक, पहनने के कपड़े या वस्त्र। *प्र०* 1. अब कई भारतीय परिधान अन्य देशों में भी प्रचलित हो रहे हैं। 2. यूरोपीय परिधानों के पूरे विश्व में प्रचार के कारण अब वे अंतर्राष्ट्रीय परिधान बनते जा रहे हैं।

परिधि – *स्त्री०* घेरा, घेरे की माप। *प्र०* इस वृत्त की परिधि एक फ़ुट है।

परिपक्व – *वि०* 1. अच्छी तरह या पूरी तरह पका हुआ। 2. पूरी तरह से विकसित, प्रौढ़। *प्र०* बच्चों का मस्तिष्क परिपक्व नहीं होता।

परिपाटी – *स्त्री०* परंपरा। *प्र०* भारत में ऐसी परिपाटी है कि छोटा बड़े से मिले तो अवश्य नमस्कार करे।

परिपूर्ण – *वि०* 1. पूर्ण, सभी तरह से पूर्ण। *प्र०* कोई भी व्यक्ति सभी दृष्टियों से परिपूर्ण नहीं होता। 2. भरा हुआ। *प्र०* यह संसार अनेक प्रकार के प्राणियों से परिपूर्ण है।

परिपूर्णता – *स्त्री०* सभी दृष्टियों से भरा-पूरा होना। *प्र०* शिक्षा जीवन को परिपूर्णता प्रदान करती है।

परिभाषा – *स्त्री०* किसी विशेष विषय में किसी संकल्पना या शब्द आदि का लक्षण, उसके विषय में नपे-तुले शब्दों में सामान्य कथन। *प्र०* वृत्त की परिभाषा दीजिए।

परिभाषित – *वि०* जिसकी परिभाषा दी या की गई हो। **परिभाषित करना**– परिभाषा देना। *प्र०* 1. भगवान् को परिभाषित करना कठिन है। 2. रेखा को परिभाषित कीजिए। 3. सभी विचारों को ठीक से परिभाषित कीजिए।

परिभ्रमण – *पु०* 1. चारों ओर घूमना, चारों ओर चक्कर लगाना। *प्र०* पृथ्वी हर समय परिभ्रमण करती रहती है। 2. भ्रमण, घूमना-फिरना, पर्यटन। *प्र०* कुछ लोगों को परिभ्रमण करना बहुत पसंद होता है।

परिमाण – *पु०* 1. माप, नाप। *प्र०* इस फीते का परिमाण क्या है? 2. तौल। *प्र०* जो चावल मैंने भेजा था, उसका परिमाण तीन किलो था।

परिमाप – *पु०* किसी जगह या क्षेत्र का बाहरी घेरा।

प्र० आयत की चारों भुजाओं की लंबाई का जोड़ उस आयत का परिमाप कहलाता है।

परिमित – *वि०* सीमित। *प्र०* हमारा ज्ञान परिमित है।

परिरक्षण – *पु०* सुरक्षित रखना। *प्र०* अनाज उगाना ही काफ़ी नहीं है, उसका उचित परिरक्षण किया जाना चाहिए।

परिवर्तन – *पु०* बदलना, बदलाव। *प्र०* दुनिया में हर चीज़ में थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता रहता है।

परिवर्तनशील – *वि०* बदलनेवाला। *प्र०* दुनिया परिवर्तनशील है।

परिवहन – *पु०* मुसाफ़िरों को इधर-से-उधर (ट्रेन, हवाई जहाज़, पानी के जहाज़, मोटर आदि से) ले जाने तथा माल ढोने का काम, ट्रांसपोर्ट। *प्र०* परिवहन की पूरी व्यवस्था अपने देश में अभी नहीं हो पाई है।

परिवेश – *पु०* पड़ोस। *प्र०* 1. प्राकृतिक परिवेश में रहने से मन और शरीर स्वस्थ रहता है। 2. वह मुहल्ला तो ठीक है पर परिवेश अच्छा नहीं है।

परिशिष्ट – 1. *वि०* बचा हुआ, शेष। *प्र०* यह सामग्री परिशिष्ट है। 2. *पु०* पुस्तक या लेख आदि के अंत में दी गई शेष या संबंधित सामग्री। *प्र०* इस पुस्तक में तीन परिशिष्ट हैं।

परिश्रम – *पु०* श्रम, मेहनत। *प्र०* यदि उननति करना चाहते हो तो परिश्रम करो।

परिश्रमी – *वि०* मेहनती। *प्र०* आपका बेटा बहुत परिश्रमी है।

परिषद् – *स्त्री०* किसी विषय पर विचार करने, सलाह देने या कहीं का काम-काज चलाने के लिए बनाई गई कुछ मेंबरों की समिति; जैसे – विद्यार्थी-परिषद्, छात्र-परिषद्, ज़िला-परिषद्।

परिस्थिति – *स्त्री०* हालत, अवस्था, स्थिति। *प्र०* उस बेचारे की पारिवारिक परिस्थिति अच्छी नहीं है।

परीक्षक – *पु०* परीक्षा लेनेवाला, परीक्षा की कॉपियाँ जाँचनेवाला। *प्र०* लगता है इस वर्ष हमारे परीक्षक बहुत दयालु थे, खूब नंबर दिए हैं।

परीक्षण – *पु०* जाँच-परख करना, टेस्ट। *प्र०* आप अपने मल-मूत्र-रक्त का परीक्षण कराइए तब रोग का ठीक पता लग पाएगा।

परीक्षा – *स्त्री०* इम्तहान। *प्र०* हमारी परीक्षा होनेवाली है।

परेड – *पु०* सिपाहियों, सैनिकों या स्काउटों की

परिवहन | परीक्षा | परेड
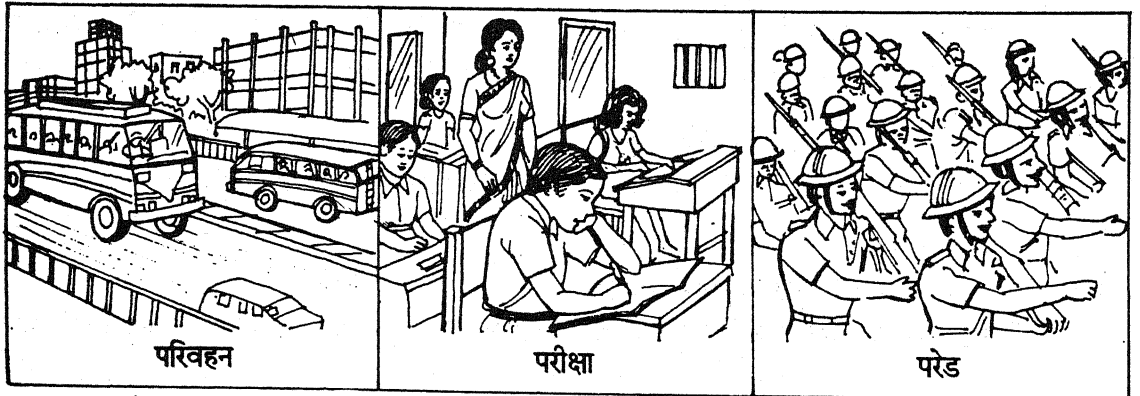
पर्दा | पर्यटक | पर्व | पर्वत

कवायद। प्र० सवेरे-सवेरे सिपाही चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए परेड करते हैं।

परोपकार (पर + उपकार) – पु० दूसरों का हित, दूसरों की भलाई।

परोपकारी – *वि०* औरों की भलाई करनेवाला, दूसरों का हित साधनेवाला। प्र० परोपकारी आदमियों की सभी लोग इज़्ज़त करते हैं।

पर्चा – पु० 1. प्रश्नपत्र, पेपर। प्र० परीक्षा में मेरे पर्चे अच्छे हो रहे हैं। 2. कागज़ का टुकड़ा, स्लिप। प्र० 1. एक पर्चे पर मैंने उनका फ़ोन नंबर लिखा था, अब मिल नहीं रहा है। 2. डॉक्टर का पर्चा लेकर जाना। 3. विज्ञापन के लिए बाँटा जानेवाला छोटे साइज़ का इश्तिहार। प्र० इस चीज़ के प्रचार के लिए हज़ार-दो हज़ार पर्चे छपवा लो।

पर्दा – पु० 1. बड़ों की दृष्टि से बचने के लिए सामने न आना, घूँघट। प्र० देहातों में पर्दा का अब भी रिवाज है। 2. आड़, ओट। प्र० गर्मी तेज़ है, यहाँ थोड़ा पर्दा कर दो। 3. कपड़े का आवरण; जैसे – खिड़की का पर्दा, दरवाज़े का पर्दा।

पर्यंत – *अ०* 1. भर। प्र० जीवनपर्यंत वह दुख ही भोगता रहा। 2. तक। प्र० मृत्युपर्यंत काम करते रहना मनुष्य का धर्म है।

पर्यटक – पु० पर्यटन या भ्रमण करनेवाला, देश-विदेश में घूमनेवाला, विदेशों से भारत में घूमने-फिरने के लिए आनेवाला। प्र० धीरे-धीरे भारत में पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पर्यटन – पु० देश-विदेश में घूमना, देश-भ्रमण। प्र० पर्यटन से भारत को काफ़ी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

पर्याप्त – *वि०* जितना चाहिए उतना, जितनी इच्छा हो, उतना, काफ़ी, यथेष्ट। प्र० यात्रा के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, इसलिए मैं नहीं जा पाऊँगा।

पर्याय – पु० वही अर्थ देनेवाला दूसरा शब्द, समानार्थी। प्र० पानी और जल पर्याय हैं।

पर्यावरण – पु० चारों ओर की हवा, वायुमंडल, परिवेश। प्र० 1. पेट्रोल और डीज़ल की बहुत अधिक गाड़ियों के चलने से पर्यावरण ख़राब हो रहा है। 2. हमें अपने प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।

पर्व – पु० 1. त्योहार। प्र० गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। 2. अध्याय। प्र० महाभारत में अट्ठारह पर्व हैं।

पर्वत – पु० पहाड़, गिरि।

पर्वतमाला – *स्त्री॰* पहाड़ों की शृंखला, पर्वत श्रेणी।

पर्वतशिखर – पु॰ पहाड़ की चोटी।

पर्वतारोहण (पर्वत + आरोहण) – पु॰ पहाड़ पर चढ़ना।

पर्वतीय (पर्वत + ईय) – *वि॰* 1. पहाड़ी, पहाड़ का; जैसे – पर्वतीय भाषा, पर्वतीय लोग, पर्वतीय संस्कृति। 2. पहाड़-संबंधी, पहाड़-विषयक; जैसे – पर्वतीय समस्याएँ।

पल – पु॰ 1. समय का बहुत छोटा भाग (जो मूलतः 24 सेकेंड का होता है)। 2. थोड़ी देर। *प्र॰* पल-भर रुको, मैं अभी चलता हूँ।

पलक – *स्त्री॰* चमड़ी का पतला पर्दा जिसके गिरने से आँखें मुँद जाती हैं और उठने से खुल जाती हैं। *मु॰ पलक झपकते ही* –एक क्षण में, थोड़ी ही देर में, पल-भर में। *प्र॰* पलक झपकते ही वह आदमी वहाँ से ग़ायब हो गया।

पलड़ा – पु॰ 1. तराजू का पल्ला। *प्र॰* तराजू का एक पलड़ा कुछ टेढ़ा है। 2. पक्ष। *प्र॰* तुम्हारे विरोधी से तुम्हारा पलड़ा भारी है।

पलस्तर – पु॰ 1. सीमेंट या चूना आदि से दीवाल या छत पर किया जानेवाला लेप। 2. फ्रैक्चर हो जाने पर टूटी जगह के चारों ओर कपड़ा आदि लगाकर किया जानेवाला प्लास्टर ऑफ़ पेरिस का लेप। *प्र॰* आज उनके पैर का पलस्तर कटनेवाला है।

पल्ला – पु॰ 1. किवाड़ के दोनों ओर के हिस्सों में से एक हिस्सा। *प्र॰* किवाड़ का बायाँ पल्ला कुछ टेढ़ा हो गया है। 2. (कपड़े का एक) छोर, (साड़ी का) आँचल, दामन। *प्र॰* साड़ी का पल्ला फैलाकर उसने भगवान् से मन्नत माँगी।

पल्लू – पु॰ कपड़े का छोर, आँचल।

पल्लेदार – पु॰ अनाज ढोनेवाला।

पवन – पु॰ हवा, वायु।

पवनचक्की – *स्त्री॰* हवा से चलनेवाली चक्की, हवाचक्की।

पवर्ग – पु॰ व्यंजनों का प वाला वर्ग, प, फ, ब, भ, म का सामूहिक नाम।

पवित्र – *वि॰* शुद्ध, साफ़, निर्मल; जैसे – पवित्र स्थान, पवित्र जल।

पश्चात्ताप – पु॰ पछतावा।

पश्चात् – *अ॰* बाद, पीछे, उपरांत। *प्र॰* परीक्षा के पश्चात् मैं अपने गाँव जाऊँगा।
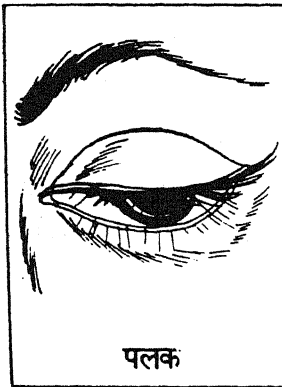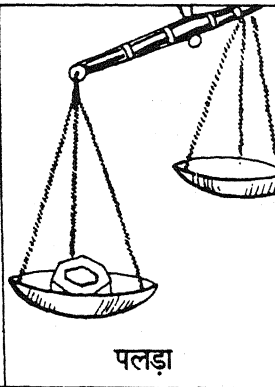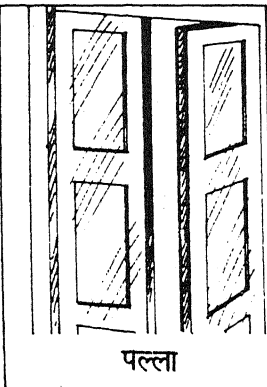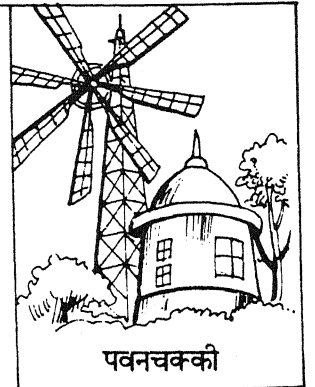
पलक | पलड़ा | पल्ला | पवनचक्की

पश्चिम – *पु०* सूरज के अस्त होने की दिशा।

पश्चिमी – *वि०* 1. पश्चिम का; जैसे – मकान का पश्चिमी भाग। 2. पश्चिम से आनेवाला; जैसे – पश्चिमी हवा, पश्चिमी मानसून।

पसीजना – *क्रि०* 1. पानी या पसीने का थोड़ा-थोड़ा बाहर निकलना। *प्र०* हाथ में थोड़ी देर तक सेंधा नमक दबाकर रखो तो वह पसीजने लगेगा। 2. चित्त में दया उत्पन्न होना। *प्र०* उस भिखारी की दयनीय स्थिति देखकर मेरा मन पसीज गया।

पहचान – *पु०* 1. निशानी, चिह्न। *प्र०* वहाँ सभी मकान एक जैसे हैं, मेरे मकान की पहचान यह है कि उसके सामने तार का खंभा है। 2. जान-पहचान, परिचय। *प्र०* उनसे मेरी पहचान तो है, मैं कह दूँगा। 3. ज्ञान, परख। *प्र०* तुम कहते हो तो लेता आऊँगा, वैसे मुझे अच्छे-बुरे की पहचान नहीं है।

पहनावा – *पु०* पोशाक, लिबास, परिधान। *प्र०* हमारा पहनावा धीरे-धीरे बदलता आया है, पुरुष कभी धोती बाँधते थे, फिर पाजामा पहनने लगे, और अब पैंट पहनते हैं।

पहर – *पु०* रात-दिन (चौबीस घंटे) का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय, प्रहर। *प्र०* 1. दिन के पहले पहर मत आना। 2. दोपहर हो रही है। 3. दिन के तीसरे पहर आ जाना।

पहलू – *पु०* पक्ष, बात। *प्र०* हमारा संविधान देश की उन्नति और भलाई के हर पहलू को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

पहले – *अ०* 1. पुराने ज़माने में। *प्र०* पहले लोग बहुत परिश्रम किया करते थे। 2. शुरू में। *प्र०* पहले तुम स्कूल जाओ फिर छुट्टी होने पर बाज़ार जाना। 3. आज के पूर्व। *प्र०* पहले तुम कहाँ पढ़ते थे?

पहेली – *स्त्री०* 1. जिसका उत्तर देना कठिन हो, बुझौवल। *प्र०* बच्चे एक दूसरे से पहेलियाँ पूछ रहे हैं। 2. अस्पष्ट बात, ऐसी बात जो साफ़ न हो। *प्र०* पहेली मत बुझाओ, जो कुछ कहना हो साफ़-साफ़ कहो।

पांडव – *पु०* राजा पांडु के पाँच पुत्र – युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पाँडा – *पु०* एक जंगली जानवर। *प्र०* सिक्किम में पहाड़ों की ढलानों पर सघन वन हैं जिसमें भालू, हिरन, पाँडा और चीते आदि जंगली जानवर मिलते हैं।

पाइन – *पु०* एक प्रकार के पेड़। *प्र०* मास्को के

आस-पास के जंगलों में बर्च, पाइन तथा ओक के पेड़ हैं।

पाइलेट – पु॰ हवाई जहाज़ चलानेवाला, वायुयान-चालक।

पाउडर – पु॰ बुकनी, चूर्ण, पिसी हुई चीज़; जैसे – कीड़ों के मारने का ज़हरीला पाउडर, चेहरे और शरीर पर लगाने का सुगंधित पाउडर, दूध का पाउडर, दवा का पाउडर।

पॉकिट, पॉकेट – पु॰ जेब, थैली।

पॉकिटमार, पॉकेटमार – पु॰ पॉकेट काटनेवाला, ज़ेबकतरा।

पागुर – पु॰ खाए हुए चारे आदि को फिर से मुँह में लाकर चबाना, जुगाली।

पाचक – वि॰ 1. पकानेवाला। 2. पचानेवाला पाउडर, गोली या बटी। प्र॰ पेट ठीक नहीं है तो वैद्यजी से पाचक ले लो।

पाचकरस – पु॰ लार-जैसे वे रस जो पेट में खाना पचाते हैं।

पाचन – पु॰ पचाना; जैसे – पाचन-क्रिया, पाचनरस, पाचनतंत्र, पाचननलिका, पाचननाल।

पाज़ी – वि॰ शैतान, दुष्ट, बदमाश।

पाज़ेब – स्त्री॰ पैरों में टख़ने के ऊपर पहनने का एक ज़ेवर, पायल।

पाट – पु॰ 1. चक्की के ऊपर-नीचे के पत्थर के दो भागों में से कोई एक। 2. फैलाव, इस पार से उस पार तक का विस्तार; जैसे – नदी का पाट। 3. पटसन, पटुआ।

पाटना – क्रि॰ गड्ढे आदि को मिट्टी आदि से भरना। प्र॰ इस गड्ढे को पाटकर बराबर कर दो, यहाँ शाम को सभा के लिए दरी बिछेगी!

पाठ – पु॰ 1. सबक। प्र॰ अपना पाठ याद करके स्कूल आया करो। 2. पढ़ना। प्र॰ वे आज रेडियो पर कविता-पाठ करेंगे।

पाठक – पु॰ पढ़नेवाला।

पाठशाला – स्त्री॰ स्कूल, विद्यालय।

पाताल – पु॰ पृथ्वी के नीचे का लोक (जो केवल कल्पना है)।

पात्र – पु॰ 1. बरतन; जैसे – भिक्षा-पात्र। 2. योग्य, क़ाबिल। प्र॰ वह दुष्ट पिटाई का ही पात्र है। 3. चरित्र; जैसे – नाटक का पात्र, सिनेमा का पात्र।

पाद – पु॰ पैर, चरण, पाँव।

पादप – पु॰ पेड़, वृक्ष।

पागुर | पाज़ेब | पाट | पाद

पायदान पारसी पार्क
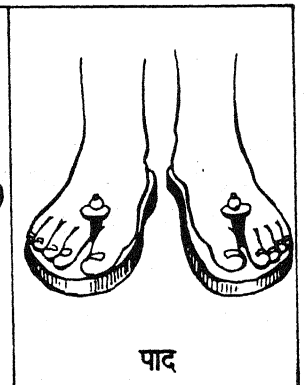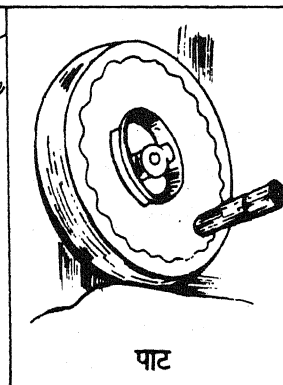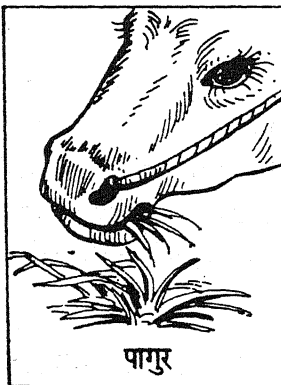
पापड़ – पु० मूँग, उड़द, आलू या साबूदाना आदि की बनी मसालेदार गोल चीज़ जिसे तल या सेंककर खाते हैं।

पापलीन – स्त्री० एक अच्छा सूती कपड़ा।

पाबंदी – स्त्री० 1. रोक; जैसे – सभा करने पर पाबंदी, पाँच या उससे अधिक आदमियों के इकट्ठा होने पर पाबंदी, जुलूस पर पाबंदी। 2. ठीक समय से काम करने का बंधन। प्र० वक़्त की पाबंदी रखा करो, ठीक समय सोना, ठीक समय पर उठना तथा ठीक समय पर अपने सभी काम करना।

पायदान – पु० 1. पैर रखने की जगह। प्र० बस के पायदान पर सफ़र करना मना है। 2. कमरे में जाने के पहले जूते या पैर की गंदगी पोंछने के लिए जूट आदि की बनी चौकोर चीज़ जो दरवाज़े पर रखी होती है।

पायल – स्त्री० पैरों में पहनने का हलका ज़ेवर।

पाया – पु० पैर; जैसे – मेज़ का पाया, कुर्सी का पाया।

पारंगत – वि० निपुण, कुशल, पूरा जानकार। प्र० वह अंधा तबला बजाने और गाने में पारंगत है।

पारखी – पु० परखनेवाला, पहचाननेवाला; जैसे – सोने का पारखी, रत्नों का पारखी, कला का पारखी।

पारदर्शक – वि० जिसके आर-पार देखा जा सके; जैसे – शीशा।

पारदर्शी – वि० जिसके आर-पार दिखाई पड़े; जैसे – शीशा।

पारपथ – पु० पार करने के लिए सड़क पर बना धारीदार रास्ता, ज़ेब्राक्रॉसिंग।

पारसी – पु० एक धर्म या उसके माननेवाला। प्र० भारत में पारसी भी रहते हैं।

पारा – पु० रुपहले रंग की चमकती एक तरल धातु, पारद। प्र० पारा दवा के काम आता है तथा सभी प्रकार के थर्मामीटरों में पड़ता है। मु० *पारा चढ़ना* – ज़ोर का गुस्सा आना। प्र० बात-बात पर उनका पारा चढ़ जाता है, वे भला शांत होकर बात क्या करेंगे!

पारितोषिक – पु० इनाम, पुरस्कार। प्र० मोहन कई बार पारितोषिक पा चुका है।

पार्क – पु० लोगों के घूमने-टहलने के लिए शहरों में बना सार्वजनिक उपवन। प्र० दिल्ली में बहुत से पार्क हैं।

पार्ट – *पु॰* नाटक आदि में पात्र द्वारा कही जानेवाली बातें और की जानेवाली क्रिया। *प्र॰* नाटक के सभी पात्र अपना पार्ट याद कर रहे हैं।

पार्टी – *स्त्री॰* 1. दल; जैसे – जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी, समाजवादी पार्टी, साम्यवादी पार्टी। 2. एक पक्ष; जैसे – मुक़दमे में हारनेवाली पार्टी, व्यापार में माल ख़रीदनेवाली पार्टी। 3. भोज, सहभोज, खाना; जैसे – विजय की पार्टी, शादी की पार्टी, जन्मदिन की पार्टी।

पार्सल – *पु॰* डाक, रेल, हवाई जहाज़ या पानी के जहाज़ द्वारा भेजा जानेवाला बंडल; जैसे – दवाओं का पार्सल, किताबों का पार्सल, कपड़ों का पार्सल।

पाल – *पु॰* वह लंबा-चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल में लगाकर नाव चलाते हैं।

पालतू – *वि॰* पाले जानेवाला, पाला हुआ; जैसे – पालतू पशु।

पालन – *पु॰* 1. लालन-पालन, पालना-पोसना, परवरिश, भरण-पोषण। *प्र॰* माँ तो मर गई है पर चाची इस बच्चे का पालन अच्छी तरह कर रही है। 2. मानना, निभाना; जैसे – आज्ञा-पालन, ज़िम्मेदारी का पालन।

पालन-पोषण – *पु॰* लालन-पालन, भरण-पोषण, परवरिश। *प्र॰* माँ-बाप के मरने के बावजूद बच्चे का पालन-पोषण घरवाले अच्छी तरह कर रहे हैं।

पालना – 1. *क्रि॰* पालन-पोषण करना, परवरिश करना, खिला-पिलाकर बड़ा करना; जैसे – बच्चे को पालना, पशुओं को पालना। 2. *पु॰* बच्चों का झूला।

पाला – *पु॰* 1. हवा में मिली भाप का छोटा कण जो सर्दी से सफ़ेद परत के रूप में किसी चीज़ या पत्ते आदि पर जम जाता है, तुषार। 2. वास्ता। *प्र॰* आपसे पाला पड़ेगा तो आप समझ जाएँगे कि वह कैसा आदमी है।

पालिएस्टर – *पु॰* कृत्रिम धागों का बना एक कपड़ा।

पालिश – *स्त्री॰* ऐसा द्रव, पाउडर या गीली चीज़ जिससे रगड़कर किसी चीज़ को चमकाते हैं; जैसे – जूते की पालिश, बर्तन की पालिश।

पावक – *पु॰* आग।

पावती – *स्त्री॰* रसीद। *प्र॰* मनीऑर्डर की पावती अभी तक नहीं आई।

पावन – *वि॰* पवित्र, पाक, शुद्ध; जैसे – पावन जल, पावन भूमि।
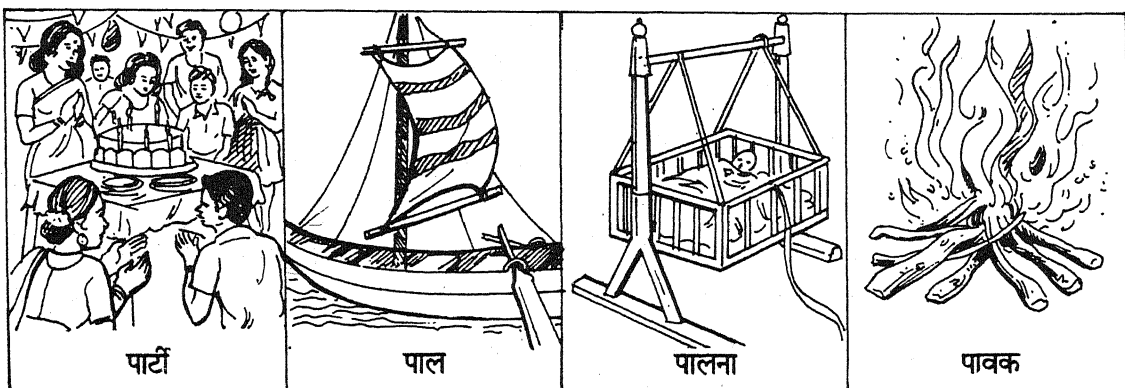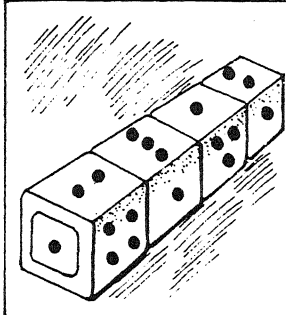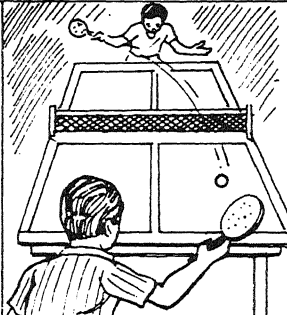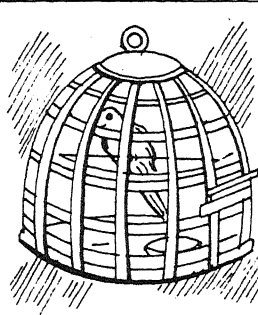
पार्टी पाल पालना पावक

पावरोटी – *स्त्री०* ख़मीर उठाकर बनाई गई मैदे की रोटी, डबल रोटी।

पाषाण – *पु०* 1. पत्थर; जैसे – पाषाण मूर्ति। 2. पत्थर-सा, निर्दय, हृदयहीन। *प्र०* वह पाषाण-हृदय है।

पास – 1.*वि०* उत्तीर्ण, सफल, क़ामयाब। *प्र०* परीक्षा में मैं पास हो गया। 2. *पु०* (क) नज़दीक, निकट, समीप। *प्र०* मेरे घर के पास ही उनका भी घर है। (ख) मुफ़्त में मिलनेवाला प्रवेश-पत्र; जैसे – सिनेमा का पास, नाटक का पास। (ग) यात्रा का अनुमति-पत्र; जैसे – रेल का पास, बस का पास। 3. *अ०* अधिकार में। *प्र०* वे सारे रुपए उन्हीं के पास हैं।

पास-पड़ोस – *पु०* अड़ोस-पड़ोस, अगल-बगल के लोग और परिवेश। *प्र०* मकान ले तो लिया है पर पास-पड़ोस अच्छा नहीं है, गंदगी भी है और लोग भी ऐसे ही हैं।

पासा – *पु०* चौसर, जुआ आदि खेलने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली गोटी। *मु० पासा फेंकना* – क़िस्मत आजमाना। *प्र०* पासा फेंककर देखो, शायद जीत जाओ।

पाहुना – *पु०* मेहमान, अतिथि।

पिंगपौंग – *पु०* मेज़ पर खेला जानेवाला एक खेल, टेबुल टेनिस।

पिंजरा – *पु०* बाँस, सींक या लोहे की तीलियों से बना विशेष प्रकार का बक्स जिसमें चिड़िया और कुछ जानवर रखे जाते हैं; जैसे – मैना का पिंजरा, बुलबुल का पिंजरा, चीते का पिंजरा।

पिंड – *पु०* ठोस तथा छोटा या बड़ा या बहुत बड़ा टुकड़ा। *प्र०* आकाश में सूर्य के चारों ओर कई पिंड चक्कर लगाते हैं, जिनमें एक पृथ्वी भी है।

पिकनिक – *स्त्री०* घूमने-फिरने और खेलने-कूदने तथा घर के बाहर खाने-पीने की यात्रा। *प्र०* हम लोग कल पिकनिक पर गए थे।

पिगमी – *पु०* मध्य अफ्रीका में पाई जानेवाली एक जाति जिसके लोग बौने होते हैं।

पिट – *पु०* गड्ढा। *प्र०* जहाँ सीवेज की व्यवस्था न हो वहाँ पिट शौचालय बनाए जाते हैं।

पिटारी – *स्त्री०* लकड़ी, बेंत, बाँस आदि का ढक्कनदार संदूक।

पिटुनिया – *पु०* एक फूल।

पिट्ठू – *पु०* बिना कारण किसी की हाँ में हाँ

मिलानेवाला, चमचा। प्र० नेताओं को उनके पिट्ठू ही और बिगाड़ देते हैं।

पितामह – पु० दादा, बाबा, पिता के पिता।

पितृभक्त – *वि०* पिता का भक्त। *प्र०* श्रवणकुमार बहुत पितृभक्त थे।

पितृभक्ति – *स्त्री०* पिता के प्रति भक्ति, भक्तिभाव और श्रद्धा। *प्र०* पुराणों में श्रवणकुमार की पितृभक्ति अपने जैसी आप है।

पित्त – *पु०* शरीर में यकृत द्वारा बनाया गया पीला रस जो खाना पचाने में सहायक होता है।

पित्ती – *स्त्री०* एक रोग जिसमें शरीर पर लाल चकत्ते उभर आते हैं जिनमें बहुत ज़्यादा खुजली होती है, जुलपित्ती।

पिन – *स्त्री०* पतली और नुकीली कील, आलपिन। *प्र०* उस चिट्ठी के साथ इन तीन काग़ज़ों को पिन कर दो।

पिपरमिंट – *पु०* पुदीने-जैसे एक पौधे का सत। *प्र०* पिपरमिंट दवा के काम आता है।

पियानो – *पु०* एक विलायती बाजा।

पिलपिला – *वि०* भीतर से बहुत नरम और गीला, पिचपिचा। *प्र०* अरे यह फोड़ा तो पिलपिला है, लगता है पूरी तरह पक गया और भीतर मवाद भरा है।

पिल्लू – *पु०* सफ़ेद और थोड़ा लंबा कीड़ा जो घाव में पड़ जाता है तथा कुछ पौधों पर भी दीखता है।

पिस्ता – *पु०* एक बहुत महँगा मेवा।

पिस्तौल – *स्त्री०* तमंचा, छोटी बंदूक, रिवाल्वर।

पिस्सू – *पु०* 1. एक छोटा कीड़ा, जो सड़ी चीज़ों में पड़ जाता है। 2. एक उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और ख़ून पीता है, कुटकी।

पीक – *स्त्री०* चबाए हुए पान का थूक मिला रस। *प्र०* बहुत-से लोग जहाँ भी चाहते हैं पीक थूक देते हैं, जो बहुत बुरी आदत है।

पीठ – *स्त्री०* शरीर के पीछे का ऊपरी भाग, पेट के दूसरी ओर का हिस्सा जो मनुष्य में पीछे की ओर और पशु-पक्षियों में ऊपर पड़ता है। *मु०* *पीठ थपथपाना* – पीठ थपथपाकर तारीफ़ करना, पीठ ठोंककर शाबाशी देना। *प्र०* सभी खेलों में अव्वल आने पर प्रिंसिपल ने हरीश की पीठ थपथपाई। *पीठ दिखाना* – लड़ाई आदि से भाग जाना। *प्र०* राणा प्रताप ने कभी भी दुश्मनों को पीठ नहीं दिखाई।

पियानो | पिस्तौल | पीक | पीठ

पीपा | पीसना | पुआल | पुतला
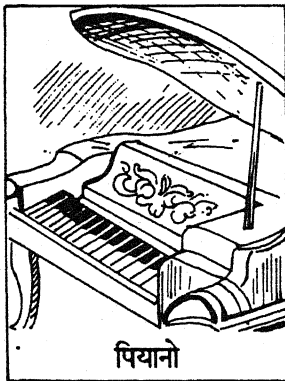
पीठी– *स्त्री॰* भिगोकर पीसी हुई उड़द या मूँग की दाल। *प्र॰* पीठी से पकौड़ी बनती है।

पीड़ा– *स्त्री॰* तकलीफ़, दर्द; जैसे – सिर की पीड़ा, कान की पीड़ा।

पीड़ित– *वि॰* 1. दुखी, सताया हुआ; जैसे – बाढ़ पीड़ित। 2. बीमार; जैसे -- ज्वर पीड़ित।

पीढ़ी– *स्त्री॰* 1. बैठने का छोटा आसन, छोटा-सा पीढ़ा। 2. पुश्त। *प्र॰* कई पीढ़ियों से हमारे परिवार में कोई शिक्षित नहीं हुआ। 3. किसी एक काल में बराबर के उम्रवालों का समूह। *प्र॰* पुरानी पीढ़ी पुरानी बातों का समर्थन करती है तो नई पीढ़ी अधिकतर उसका विरोध करती है।

पीत– *वि॰* पीला; जैसे – पीतांबर (पीत + अंबर = पीला कपड़ा, रेशम का पीला कपड़ा)।

पीतज्वर– *पु॰* गर्म देशों में छूत से होनेवाला एक बुख़ार जिसमें शरीर पीला हो जाता है।

पीतल– *पु॰* ताँबे और जस्ते के मेल से बनी एक मिश्र धातु।

पीपा– *पु॰* 1. तरल पदार्थ रखने के लिए टिन का बड़ा बरतन, टिन। 2. लकड़ी या लोहे का ढोलक के आकार का बड़ा बरतन।

पीला– *वि॰* हल्दी के रंग का, ज़र्द।

पीलाज्वर– *पु॰* दे॰ पीतज्वर।

पीलिया– *पु॰* एक रोग जिसमें सारा शरीर पीला हो जाता है, कामला रोग, जांडिस।

पीसना-- *क्रि॰* 1. बारीक चूरा या पाउडर बनाना; जैसे – गेहूँ पीसना, चना पीसना। 2. पानी डालकर बारीक करना; जैसे – मसाला पीसना, चटनी पीसना, ठंडाई पीसना। 3. आपस में रगड़ना, रगड़ना; जैसे – दाँत पीसना (बहुत क्रोध करना)।

पीहर– *पु॰* शादीशुदा स्त्री के माँ-बाप का घर, मैका, मायका, नैहर।

पुंल्लिंग– *पु॰* नरवाचक शब्द, पुल्लिंग।

पुआल– *पु॰* धान निकाले हुए धान के सूखे डंठल जो ज़मीन पर बिछाने, झोंपड़ी छाने और पशुओं के खाने के काम आते हैं, पयाल, पुअरा, पैरा।

पुखराज– *पु॰* एक प्रकार का पीला रत्न। *प्र॰* नेताजी पुखराज की अँगूठी पहने हैं।

पुण्य– *पु॰* धर्म का काम, सबाब। (*विलोम* – पाप)।

पुतला– *पु॰* किसी की शक्ल का या किसी के प्रतीक रूप में बनाया गया बड़ा गुड्डा। *प्र॰* 1. रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद का पुतला दशहरे के दिन

जलाया जाता है। 2. लोगों ने नेताजी का पुतला जलाया।

पुतली– स्त्री॰1. आँख के बीच का काला भाग। प्र॰ उसकी आँख की दाईं पुतली में चोट लगी है। 2. गुड़िया। प्र॰ शीला ने यह पुतली बहुत अच्छी बनाई है।

पुत्र– पु॰ बेटा, लड़का।

पुत्री– स्त्री॰ बेटी, लड़की।

पुदीना– पु॰ हरी और ख़ुशबूदार पत्तियोंवाला एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों की चटनी बनती है और वे दवा के भी काम आती हैं।

पुनः–अ॰ फिर, दुबारा, दूसरी बार। प्र॰ आगे से पुनः ऐसी बात मत कहना।

पुरखा – पु॰ बाप-दादा, दादा-परदादा। प्र॰ हमारे पुरखों ने काफ़ी संपत्ति छोड़ी थी।

पुरज़ा – पु॰ दे॰ पुर्ज़ा।

पुरस्कार – पु॰ पारितोषिक, इनाम। प्र॰ सुरेश को लंबीकूद में प्रथम आने पर पुरस्कार मिला है।

पुराण –पु॰ हिंदुओं के प्रसिद्ध धर्मग्रंथ जो अट्ठारह माने जाते हैं; जैसे – विष्णुपुराण, शिवपुराण, ब्रह्मपुराण, भागवतपुराण आदि।

पुरुष –पु॰ नर, मर्द। प्र॰ मेले में पुरुष भी आते हैं और स्त्रियाँ भी।

पुरुषार्थ –पु॰ घोर परिश्रम, कड़ी मेहनत, उद्यम। प्र॰ पुरुषार्थ से ही आदमी आगे बढ़ता है।

पुरुषार्थी – वि॰ पुरुषार्थ करनेवाला, उद्यमी। प्र॰ पुरुषार्थी व्यक्ति कभी हार नहीं मानता।

पुरोहित – पु॰ विवाह तथा पूजा-पाठ आदि करानेवाला, कथा-वार्ता कहनेवाला, पंडित। प्र॰ पहले हर परिवार का पुरोहित होता था, अब वह परंपरा समाप्त हो गई है।

पुर्ज़ा –पु॰ 1. मशीन के छोटे-छोटे हिस्से। प्र॰ इस गाड़ी के कुछ पुर्ज़े बदलने पड़ेंगे। 2. काग़ज़ का छोटा टुकड़ा; जैसे – डॉक्टर का पुर्ज़ा, ख़रीदारी का पुर्ज़ा।

पुर्तगाली –पु॰ पुर्तगाल के रहनेवाले। प्र॰ पुर्तगाली लोग पुर्तगाली भाषा बोलते हैं।

पुलाव –पु॰ सब्जी, मांस, मेवा, घी आदि डालकर बनाया गया चावल।

पुलिंदा –पु॰ बंडल; जैसे – चीज़ों का पुलिंदा, काग़ज़ों का पुलिंदा, कपड़ों का पुलिंदा।

पुतली | पुदीना | पुरोहित | पुर्ज़ा
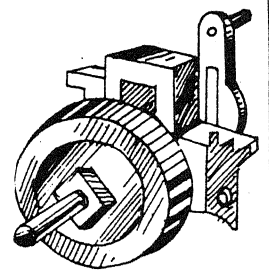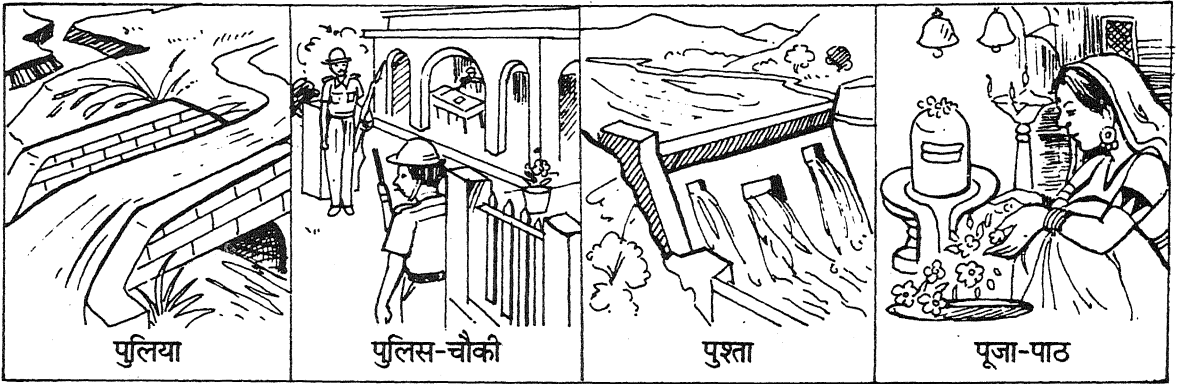
पुलिया पुलिस-चौकी पुश्ता पूजा-पाठ

पुलिया – *स्त्री०* छोटा पुल, छोटी नदी पर बना छोटा-सा पुल।

पुलिस – *स्त्री०* 1. सिपाही, सिपाहियों का दस्ता। *प्र०* सामने पुलिस खड़ी है, बाहर मत निकलो। 2. लोगों के जान-माल की रक्षा और अमन-चैन बहाल करने के लिए सरकारी मुहकमा तथा व्यवस्था। *प्र०* हमारी पुलिस चुस्त नहीं है।

पुलिस-चौकी – *स्त्री०* पुलिसवालों की पुलिस थाने से छोटी चौकी जो हर बड़े मुहल्ले में जान-माल की रक्षा और शांति आदि बनाए रखने के लिए होती है।

पुल्लिंग – *पु०* नरवाची शब्द, पुंल्लिंग। *प्र०* मामा पुल्लिंग है और मामी उसका स्त्रीलिंग है। (*विलोम* – स्त्रीलिंग)।

पुश्ता – *पु०* बाँध, बंद। *प्र०* यदि नदियों और बड़े नालों के किनारे पुश्ते बनवा दिए जाएँ तो भीषण बारिश और बाढ़ तबाही नहीं मचा सकते।

पुष्कर – राजस्थान में अजमेर के पास एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है।

पुष्ट – *वि०* बलवान्, बलिष्ठ, मज़बूत; जैसे – पुष्ट शरीर, पुष्ट मांसपेशियाँ।

पुष्प – *पु०* फूल, सुमन।

पूँजी – *स्त्री०* 1. कमाकर जोड़ा हुआ रुपया, जमा धन। *प्र०* मैंने अपनी सारी पूँजी व्यापार में लगा दी और उसमें घाटा हो गया। 2. मूलधन, किसी व्यापार आदि में लगाया जानेवाला पैसा। *प्र०* इतनी कम पूँजी से इतना बड़ा काम तो नहीं शुरू हो सकता।

पूछताछ – *स्त्री०* किसी विषय में जानकारी के लिए पूछना, सवाल, प्रश्न, पूछताछ, इनक्वायरी। *प्र०* दफ़्तर में सामने ही पूछताछ की खिड़की है, उसमें मेरे बारे में पूछ लेना।

पूजनीय – *वि०* पूज्य, आदरणीय। *प्र०* बड़े पूजनीय होते हैं, उनका आदर करो।

पूजा-पाठ – *पु०* पूजा करना और धर्मग्रंथ को पढ़ना। *प्र०* बहुत से लोग पूजा-पाठ किए बिना जलपान नहीं करते।

पूज्य – *वि०* पूजा के योग्य, पूजनीय। *प्र०* माता, पिता और गुरु पूज्य होते हैं।

पूतिक – *वि०* सड़नवाला, कीटाणुवाला, सेप्टिक। *प्र०* घाव के खुला रहने पर मक्खियाँ और कीटाणु उसे पूतिक (सेप्टिक) बना सकते हैं।

पूतिरोधी – *वि०* सड़न रोकनेवाला, ऐंटिसेप्टिक,

कीटाणु रोकनेवाला। *प्र०* स्पिरिट या डिटॉल पूतिरोधी होते हैं।

पूनी – *स्त्री०* साफ़ धुनी हुई रुई की वह बत्ती जिससे चरखे पर सूत कातते हैं।

पूर्ण – *वि०* 1. पूरा, सारा। (*विलोम* – अपूर्ण); जैसे – पूर्ण स्वतंत्रता, पूर्ण विश्व, पूर्ण अधिकार। 2. भरा, भरा हुआ। *प्र०* उस कार्यालय के सभी रिक्त स्थान अब तो पूर्ण हो गए हैं। 3. ख़त्म, समाप्त। *प्र०* बिनाई का कार्य तो पूर्ण हो गया है।

पूर्णतया – *अ०* पूरी तरह, पूरी तरह से। *प्र०* 1. भवन-निर्माण का कार्य तो पूर्णतया समाप्त हो गया है। 2. वे अब भी पूर्णतया स्वस्थ नहीं हैं।

पूर्णमासी – *स्त्री०* चांद्र मास की अंतिम तिथि जिस रात चाँद पूरा होता है और सारी रात चमकता है, पूर्णिमा, पूनो।

पूर्णांक – *पु०* इम्तहान के किसी पर्चे के कुल नंबर, किसी प्रश्नपत्र के लिए निर्धारित कुल अंक। *प्र०* गणित के प्रश्नपत्र के पूर्णांक सौ हैं किंतु तुम्हें मिले हैं पचास। ये तो बहुत कम हैं।

पूर्णिमा – *स्त्री०* दे० पूर्णमासी।

पूर्ति – *स्त्री०* 1. पूरा करना, किसी कमी को पूरा करने का काम। *प्र०* हमारी सरकार गेहूँ का काफ़ी बड़ा भंडार बनाती है और जिस क्षेत्र में गेहूँ की जितनी कमी होती है, वहाँ उतनी पूर्ति की जाती है। 2. वाक्य में ख़ाली जगहों को भरना। *प्र०* नीचे के वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

पूर्व – 1. *पु०* (क) पूरब दिशा। (*विलोम* – पश्चिम)। (ख) पहले। (*विलोम* – पीछे)। *प्र०* दो वर्ष पूर्व मोहन के पिताजी का देहांत हो गया था। 2. *वि०* पहले का, पुराना; जैसे – पूर्व समय, पूर्व काल।

पूर्वक – *अ०* के साथ, के सहित; जैसे – प्रसन्नतापूर्वक, श्रद्धापूर्वक, प्रेमपूर्वक।

पूर्वज – *पु०* दादा-परदादा, पुरखा, पूर्व पुरुष। *प्र०* यह मंदिर हमारे पूर्वजों ने बनवाया था।

पूर्ववत् – *अ०* पहले की तरह, जैसा पहले था वैसा ही। *प्र०* 1. डॉक्टर के लाख प्रयास के बाद रोगी की हालत पूर्ववत् है। 2. पूर्ववत् पिताजी समय से उठे, टहलने गए, आकर नाश्ता किया और उसके बाद उठते ही बेहोश होकर गिर पड़े और फिर नहीं उठे।

पूर्वाह्न – *पु०* सवेरे से दोपहर तक का समय। *प्र०* तुम कल पूर्वाह्न में आ जाना, मध्याह्न के बाद कहीं जाना है।
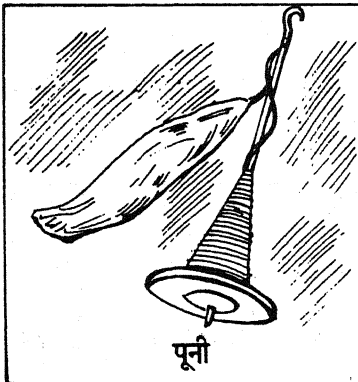
पूनी | पूर्णमासी | पूर्व
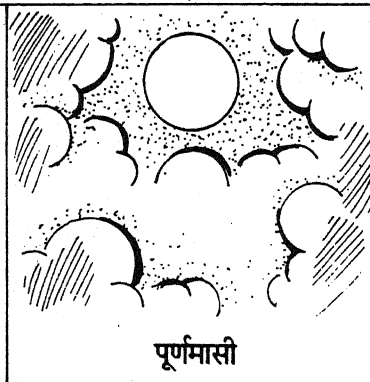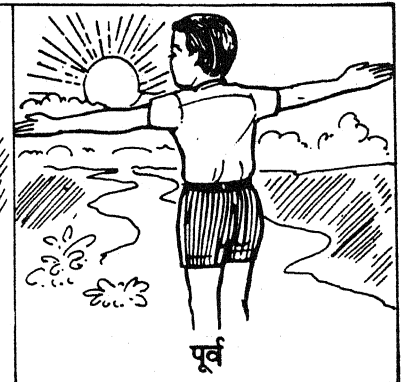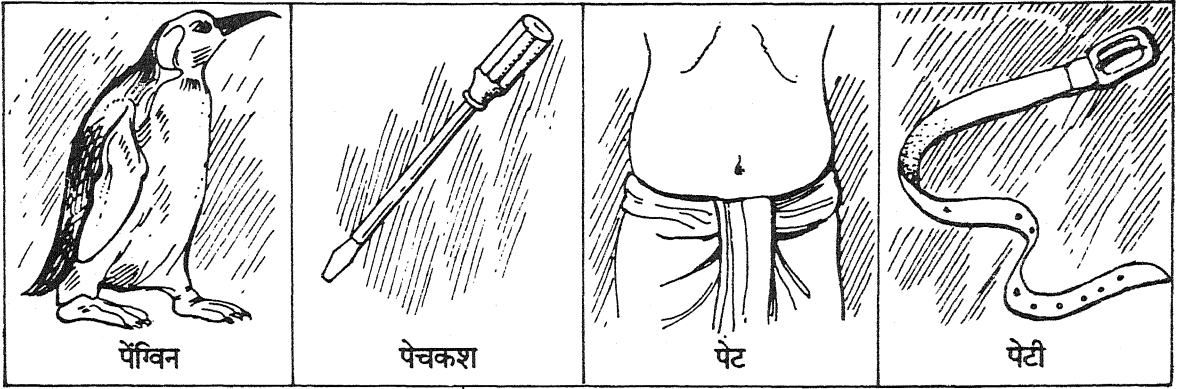
पूर्वी – *वि॰* पूरब का; जैसे – पूर्वी क्षेत्र, पूर्वी भारत।

पूस – *पु॰* अगहन और माघ के बीच का भारतीय परंपरा का महीना जब बहुत ठंड पड़ती है, पौष।

पृथक् – *वि॰* अलग। *प्र॰* कभी भारत, पाकिस्तान और बांगलादेश एक थे, अब पृथक्-पृथक् हैं।

पृथ्वी – *स्त्री॰* ज़मीन, धरती।

पृष्ठ – *पु॰* पन्ना, सफ़ा। *प्र॰* हमारी हिंदी की पुस्तक में डेढ़ सौ पृष्ठ हैं।

पृष्ठभूमि – *स्त्री॰* 1. पीछे की भूमि। *प्र॰* इस बंगले की पृष्ठभूमि में नदी, पहाड़, और पेड़ बहुत सुंदर लग रहे हैं। 2. पीछे। *प्र॰* इस चित्र की पृष्ठभूमि में सवेरे के रंग-बिरंगे बादल अच्छे लग रहे हैं।

पेंग्विन – *स्त्री॰* एक पक्षी जो उड़ नहीं पाता और पैरों के सहारे ज़मीन पर चलता है।

पेंट – *पु॰* गीला रंग जिसे लकड़ी, दीवाल तथा लोहे आदि पर लगाते हैं।

पेंटर – *पु॰* 1. पेंट करनेवाला। 2. पेंट से तस्वीर बनानेवाला।

पेंदा – *पु॰* दे॰ तला।

पेंदी – *स्त्री॰* तला, निचला हिस्सा। *प्र॰* लोटे की पेंदी में छेद हो गया है।

पेंशन – *स्त्री॰* नौकरी से रिटायर होने के बाद मिलनेवाली मासिक राशि।

पेचकश – *पु॰* चक्करदार कील अर्थात् पेच को ढीला करने या कसने का औज़ार, पेचकस, स्क्रूड्राइवर।

पेचिश – *स्त्री॰* पेट की एक बीमारी जिसमें ऐंठन के साथ पेट में दर्द होता है और बार-बार पाख़ाना जाना पड़ता है।

पेट – *पु॰* 1. शरीर में थैले-जैसा वह अंग जिसमें खाना जाता और पचता है। 2. तोंद। *प्र॰* तुम्हारा पेट निकल रहा है, खाने पर थोड़ा नियंत्रण रखो और खूब दौड़ा करो।

पेटिकोट – *पु॰* साड़ी के नीचे पहना जानेवाला एक घाँघरानुमा कपड़ा, साया।

पेटी – *स्त्री॰* 1. कमर पर पैंट, हाफपैंट या निकर कसने की चमड़े या कपड़े आदि की पट्टी। 2. संदूक, बक्स।

पेटीकोट – *पु॰* दे॰ पेटिकोट।

पेटूसिया – *पु॰* तबाकू की जाति का एक फूलवाला पौधा।

पेटो – पु॰ अर्जेंटीना का एक प्रसिद्ध खेल जो घोड़ों पर चढ़कर खेला जाता है।

पेट्रोल –पु॰ एक खनिज तेल जिससे हवाई जहाज़ तथा ट्रक-कार आदि चलते हैं।

पेट्रोलियम –पु॰ एक खनिज तेल जिसे साफ़ करके पेट्रोल बनता है।

पेठा –पु॰ 1. सफ़ेद कुम्हड़ा, भतुआ। *प्र॰* पेठे की सब्ज़ी अच्छी बनती है। 2. पेठे से बनी एक मिठाई। *प्र॰* आगरा जाओ तो मेरे लिए पेठा ले आना।

पेड़ा –पु॰ खोए से बननेवाली एक प्रसिद्ध मिठाई।

पेन –पु॰ क़लम, फ़ाउंटेनपेन।

पेपर –पु॰ 1. प्रश्नपत्र, पर्चा। *प्र॰* आज रमेश का पेपर अच्छा नहीं हुआ। 2. अखबार, समाचारपत्र। *प्र॰* आज पेपर नहीं आया। 3. कागज़।

पेपरमेशी –*स्त्री॰* कागज़ की लुगदी। *प्र॰* पेपरमेशी से मूर्तियाँ आदि बनती हैं।

पेय –*वि॰* पीने योग्य, पीने लायक; जैसे – पेय पदार्थ। *प्र॰* सर्दियों में चाय आदि गर्म पेय तथा गर्मियों में शर्बत, लस्सी, कैंपाकोला, लिमका आदि शीतल पेय की माँग होती है।

पेलिकन –*स्त्री॰* एक बड़ा जलपक्षी जिसकी चोंच बड़ी होती है तथा उसमें खाना रखने के लिए एक थैली होती है।

पेशगी –*स्त्री॰* अग्रिम, बयाना, ऐडवांस, किसी काम आदि के लिए पहले से दी जानेवाली धनराशि।

पेशा –पु॰ जीविका के लिए किया गया काम, व्यवसाय, धंधा, उद्यम; जैसे – दलाली का पेशा, वकालत का पेशा। *प्र॰* मेरा बेटा अपनी पढ़ाई तो ख़त्म कर चुका है, अब देखें किस पेशे में जाता है।

पेशी –*स्त्री॰* 1. हाकिम के सामने किसी मुक़दमे में पेश होना या जाना। 2. मुक़दमे की सुनवाई। 3. मांसपेशी, शरीर में मांस की गाँठ।

पेस्ट –पु॰ लेई, लेप; जैसे – टूथपेस्ट।

पैंज़ी –*स्त्री॰* एक प्रसिद्ध विलायती फूल।

पैंट –*स्त्री॰* पतलून।

पैकिट, पैकेट –पु॰ बंडल, पुलिंदा; जैसे – पुस्तकों का पैकेट, बिस्कुट का पैकेट।

पैगंबर –पु॰ इस्लाम, यहूदी आदि कई धर्मों में ईश्वर का दूत या देवदूत; जैसे – पैगंबर मुहम्मद (इस्लाम), पैगंबर मूसा (यहूदी)।

पैडल –पु॰ साइकल तथा कई अन्य चीज़ों में वह भाग जिस पर पैर रखकर चलाते हैं। *मु॰ पैडल मारना* –पैडल पर पैर रखकर ऊपर-नीचे चलाना।
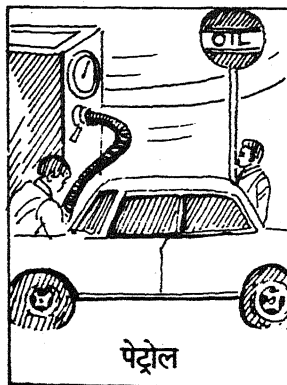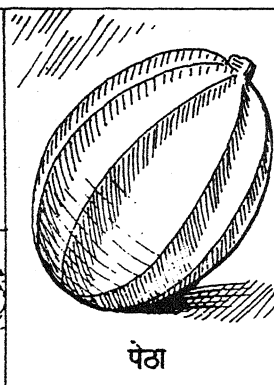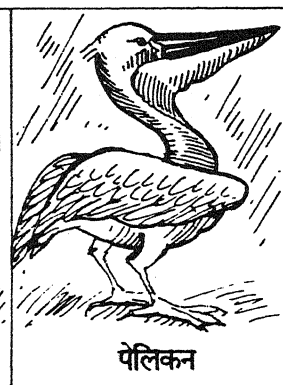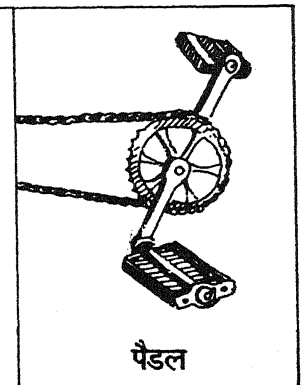
पेट्रोल पेठा पेलिकन पैडल
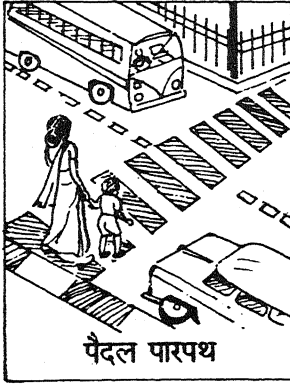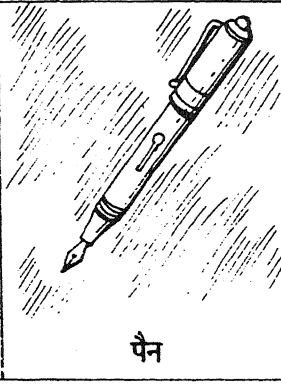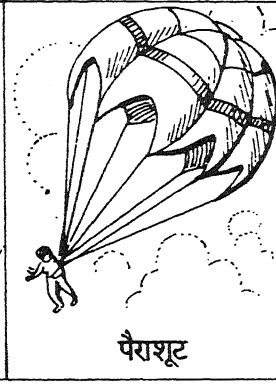
पैदल पारपथ | पैन | पैराशूट | पोंगल

प्र० जितनी तेज़ पैडल मारो साइकल उतनी ही तेज़ चलेगी।

पैतृक – *वि०* पिता-दादा-परदादा आदि से मिला, पुरखों से प्राप्त। प्र० यह मकान, बाग़ तथा ज़मीन हमारी पैतृक संपत्ति है।

पैथोजेन – ऐसे कीटाणु जो ख़ाली आँख से नहीं दीखते तथा जो पौधों तथा जीव-जंतुओं आदि में बीमारी पैदा कर सकते हैं।

पैदल पारपथ – *पु०* सड़क पर बनी वह धारीदार जगह, जहाँ से पैदल चलनेवाले सड़क पार कर सकते हैं, ज़ेब्राक्रॉसिंग।

पैदावार – *स्त्री०* फ़सल, उपज। प्र० जैसी पैदावार होगी, अनाज का दाम उसी के हिसाब से बढ़ेगा या घटेगा।

पैन – *पु०* क़लम, पेन, फ़ाउंटेनपेन।

पैना – *वि०* 1. तेज़, धारदार; जैसे – पैना हथियार, पैना चाकू। 2. तेज़, कुशाग्र, तीक्ष्ण; जैसे – पैनी बुद्धि।

पैमाइश – *स्त्री०* नाप, माप, नापने की क्रिया; जैसे – ज़मीन की पैमाइश, सड़क की पैमाइश।

पैमाना – *पु०* 1. नापने या मापने का औज़ार। 2. मापने का आधार, मापदंड। 3. शराब का प्याला, जाम।

पैरा, पैराग्राफ़ – *पु०* आपस में संबंधित वाक्यों की एक इकाई, अनुच्छेद। प्र० किसी विषय पर चार पैराग्राफ़ लिखो।

पैराशूट – *पु०* उड़ते हवाई जहाज़ से कूदने की छतरी, हवाई छतरी।

पैसिंजर, पैसेंजर – *पु०* यात्री, सवारी; जैसे – बस के पैसेंजर, पैसेंजर गाड़ी।

पोंगल – *पु०* 1. तमिलनाडु का फ़सल की कटाई के अवसर पर मनाया जानेवाला विशेष त्योहार। 2. तमिलनाडु में पोंगल के दिन नए चावल, दूध और गुड़ से बनाया जानेवाला विशेष पकवान।

पोंस – *पु०* मस्तिष्क में प्रमस्तिष्क (विचार विभाग) और मेडुला (पंप विभाग) को मिलानेवाला भाग।

पोखर, पोखरा – *पु०* तालाब।

पोटली – *स्त्री०* छोटी गठरी। प्र० सुदामा कृष्ण के यहाँ गए थे तो उनके लिए उपहार रूप में एक पोटली में साँवें का चावल ले गए थे।

पोटाश परमैंगनेट, पोटास – *पु०* दे० पोटैशियम परमैंगनेट।

पोटैशियम परमैंगनेट – *पु०* एक प्रकार का क्षार जो दवा तथा खाद-साबुन आदि बनाने के काम आता है, पोटास।

पोत – *पु०* पानी का जहाज़, जलयान।

पोतना –*क्रि॰* चूना, रंग तथा गोबर आदि से लेपना ; जैसे – घर पोतना, घर के भीतर या बाहर की ज़मीन पोतना, दीवाल पोतना।

पोत-प्रांगण –*पु॰* एक प्रकार का कारख़ाना जहाँ नाव या पानी के जहाज़ बनाए जाते हैं तथा उनकी मरम्मत की जाती है।

पोता –*पु॰* बेटे का बेटा।

पोती –*स्त्री॰* बेटे की बेटी।

पोथी –*स्त्री॰* 1. किताब, पुस्तक। 2. हस्तलिखित पुस्तक।

पोदीना –*पु॰* एक सुगंधित छोटा पौधा जो दवा के काम आता है तथा जिससे चटनी बनती है, पुदीना।

पोपला –*वि॰* बिना दाँत का ; जैसे – पोपला मुँह।

पोल –1. *स्त्री॰* किसी चीज़ के भीतर का खोखला भाग या खोखलापन ; जैसे – ढोल में खोल। *मु॰ पोल खोलना* – रहस्य खोलना, भेद खोलना। *प्र॰* वह धोखेबाज़ पहले तो सभी को मूर्ख बनाकर ठगता रहा पर जब एक आदमी ने उसकी पोल खोली तो पकड़ा गया और जेल की हवा खानी पड़ी। 2. *पु॰* फुटबॉल, हॉकी आदि में गोल के दोनों ओर लगे डंडे।

पोला –*वि॰* भीतर से खोखला, ख़ाली ; जैसे – पोली ज़मीन, पोला बाँस।

पोलियो –*पु॰* वाइरस कीटाणु से उत्पन्न छूत की एक बीमारी जिसमें रीढ़ की हड्डी के धूसर द्रव्य (ग्रे मैटर) में सूजन हो जाती है जिससे शारीरिक विकृति उत्पन्न हो जाती है।

पोलो –*पु॰* एक खेल; जैसे – हॉर्स पोलो, वाटर पोलो।

पोशाक –*स्त्री॰* ड्रेस, पूरा पहनावा। *प्र॰* प्रत्येक टीम की पोशाक अलग-अलग होती है।

पोषक –*वि॰* पोषण करनेवाला, पुष्ट बनानेवाला, स्वास्थ्य अच्छा रखनेवाला। *प्र॰* बच्चों को दूध-दही आदि अधिक मात्रा में देना चाहिए क्योंकि इनमें पोषक तत्त्व अधिक होते हैं।

पोस्ट –*स्त्री॰* 1. पद, ओहदा, नौकरी। 2. डाकख़ाना, पोस्ट ऑफ़िस। 3. डाक। *प्र॰* यह पार्सल पोस्ट से जाएगा। **पोस्ट करना** – लेटरबॉक्स में डालना या छोड़ना। *प्र॰* मैंने पत्र पोस्ट कर दिया था।

पोस्ट ऑफ़िस –*पु॰* डाकघर।

पोस्टकार्ड –*पु॰* वह कार्ड जिस पर पत्र लिखते हैं तथा जिस पर टिकट पहले से छपा होता है।

पोस्टमास्टर –*पु॰* डाकख़ाने का मुख्य अधिकारी।

पोस्टमैन –*पु॰* चिट्ठी, पार्सल आदि घर-घर पहुँचानेवाला, डाकिया, चिट्ठीरसाँ।

पोस्टर –*पु॰* मोटे-मोटे अक्षरों में छपा या लिखा

पोतना | पोल | पोलो | पोस्टकार्ड
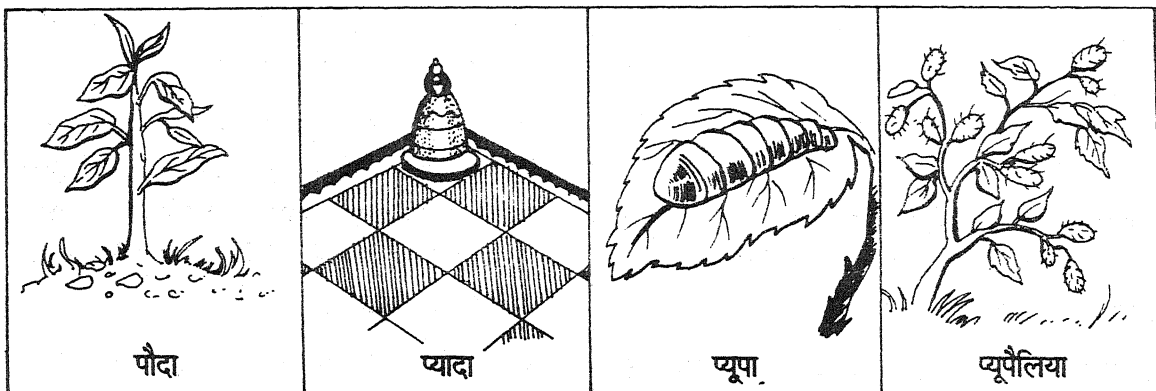
इश्तिहार या विज्ञापन, अथवा किसी के पक्ष या विपक्ष में कोई अपील।

पोस्त, पोस्ता – *पु०* अफ़ीम का पौधा।

पौंड – *पु०* 1. तौलने की एक इकाई जिसमें 16 औंस होते हैं। 2. इंग्लैंड की करेंसी जिसमें 20 शिलिंग होते हैं।

पौ – *स्त्री०* 1. किरण, प्रकाश। *मु० पौ फटना – सवेरा होना। प्र०* पिताजी पौ फटते ही चले गए थे। 2. पाँसे की एक चाल। *मु० पौ बारह होना* – जीतना, बन आना, लाभ का अवसर मिलना। *प्र०* अब क्या? अब तो तुम्हारी पौ बारह है।

पौत्र – *पु०* बेटे का बेटा, पोता।

पौद – *स्त्री०* दे० पौध।

पौदा – *पु०* छोटा पेड़; जैसे –चमेली का पौदा।

पौध – *स्त्री०* वह छोटा पौधा जो एक स्थान पर उगाकर, फिर वहाँ से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाते हैं, पनीरी; जैसे –टमाटर की पौध, मिर्च की पौध।

पौराणिक – *वि०* पुराणों का, पुराणों से संबंधित; जैसे– पौराणिक व्यक्ति, पौराणिक कथा।

पौष – *पु०* अगहन और माघ के बीच का महीना, पूस।

पौष्टिक – *वि०* पुष्टकारक, शक्ति बढ़ानेवाला। *प्र०* बच्चों को दूध, दही, पनीर जैसी पौष्टिक चीज़ें खानी चाहिए।

प्यादा – *पु०* शतरंज का सबसे छोटा मुहरा, सिपाही।

प्यूपा – *पु०* अंडे से निकलने के बाद लारवा और नन्हा बच्चा (जैसे नन्हीं तितली) बनने के बीच की स्थिति; जैसे –तितली का प्यूपा।

प्यूपैलिया – *पु०* एक पौधा जिसके बीज काँटेदार होते हैं।

प्रकट – *वि०* जो सामने हो, जाहिर, प्रत्यक्ष, स्पष्ट। (*विलोम –गुप्त*); जैसे –रहस्य प्रकट होना, मत प्रकट करना, राय प्रकट करना।

प्रकांड – *वि०* बहुत बड़ा; जैसे – प्रकांड विद्वान्, प्रकांड पंडित।

प्रकार – *पु०* भेद, तरह, क़िस्म, भाँति। *प्र०* 1. संज्ञा के कितने प्रकार होते हैं? 2. जंगलों में अनेक प्रकार के जानवर होते हैं।

प्रकाश – *पु०* उजाला, रोशनी; जैसे – बिजली का प्रकाश, सूर्य का प्रकाश।

प्रकाश ऊर्जा – *स्त्री०* एक प्रकार की ऊर्जा जो प्रकाश से प्राप्त होती है।

प्रकाश-स्तंभ – *पु०* नाव और जहाज़ आदि की सुरक्षा और मार्ग-दर्शन के लिए समुद्र में चट्टानी द्वीपों पर बना स्तंभ जिस पर रात के समय रोशनी होती है।

प्रकीर्णन – *पु०* बिखेरना। *प्र०* नए पौधों की वृद्धि तथा जाति को आगे चलाने के लिए बीजों का प्रकीर्णन आवश्यक है।

प्रकृति – *स्त्री०* 1. स्वभाव। *प्र०* यह आदमी प्रकृति से क्रोधी है। 2. संसार की कुदरती वस्तुएँ; जैसे – नदी, पहाड़, पेड़-पौधे आदि, कुदरत। *प्र०* संसार में जिधर देखो प्रकृति का सौंदर्य बिखरा हुआ है।

प्रकोप – *पु०* बहुत गुस्सा, बहुत अधिक क्रोध, विशेष कोप। *प्र०* बाढ़ के प्रकोप से बचने के लिए बाँध बनाए जाने चाहिए।

प्रक्रिया – *स्त्री०* 1. किसी काम को करने के लिए की जानेवाली क्रमिक क्रियाएँ। 2. तरीक़ा, पद्धति, ढंग।

प्रखंड – *पु०* ज़िले का एक भाग, ब्लॉक। *प्र०* तरह-तरह के सुधार लाने के लिए ज़िले के प्रत्येक प्रखंड में सभाएँ हो रही हैं।

प्रख्यात – *वि०* सुप्रसिद्ध, विख्यात, बहुत मशहूर, जैसे – प्रख्यात विद्वान्, प्रख्यात चित्रकार, प्रख्यात सरोद-वादक।

प्रगति – *स्त्री०* आगे बढ़ना, विकास। *प्र०* देश धीरे-धीरे काफ़ी प्रगति कर रहा है।

प्रगतिशील – *वि०* 1. प्रगति की ओर बढ़नेवाला, विकासशील, उन्नतिशील; जैसे – प्रगतिशील जाति, प्रगतिशील समाज, प्रगतिशील देश। 2. रूढ़ियों का विरोधी; जैसे – प्रगतिशील कवि, प्रगतिशील आंदोलन।

प्रचंड – *वि०* भीषण, भयंकर; जैसे – प्रचंड सर्दी, प्रचंड गर्मी, प्रचंड आदमी।

प्रचलन – *पु०* चलन, रिवाज़। *प्र०* बाल-विवाह, परदा-प्रथा और दहेज का प्रचलन समाज की बहुत हानि कर रहे हैं।

प्रचलित – *वि०* चालू, जिसका चलन हो, जो चल रहा हो। *प्र०* अगर देश को आगे बढ़ाना है तो समाज में प्रचलित बुराइयाँ दूर करनी होंगी।

प्रचार – *पु०* 1. चलन, रिवाज़। *प्र०* आजकल रंगीन टेलिविज़न का प्रचार बढ़ रहा है। 2. प्रसिद्ध करना, किसी चीज़ के पक्ष या विपक्ष में अपना पक्ष जनता के सामने रखना। *प्र०* चुनाव आते ही तरह-तरह के प्रचार शुरू हो जाते हैं।

प्रचुर – *वि०* बहुत अधिक, काफ़ी, पर्याप्त। *प्र०* हमारे पास प्राकृतिक संपदा प्रचुर मात्रा में है पर अभी तक
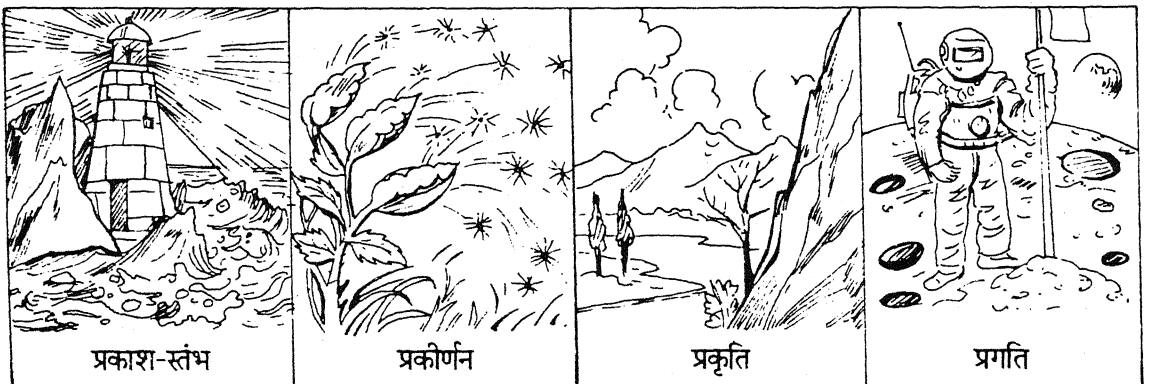
प्रकाश-स्तंभ | प्रकीर्णन | प्रकृति | प्रगति

हम उसका पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

प्रजनन –*पु०* संतान उत्पन्न करना। *प्र०* मच्छर जैसे कई कीट-पतंगों में प्रजनन बहुत तेज़ी से होता है।

प्रजा –*स्त्री०* किसी राजा के अधीन रहनेवाले लोग, रिआया, रैयत। (*विलोम* –राजा)। *प्र०* राजा का कर्तव्य है प्रजा को सुखी रखना।

प्रजातंत्र –*पु०* प्रजा के चुने प्रतिनिधियों द्वारा प्रजा पर किया जानेवाला शासन, जनतंत्र, लोकतंत्र। *प्र०* धीरे-धीरे पूरा विश्व प्रजातंत्र की ओर बढ़ रहा है।

प्रज्वलन –*पु०* जलने की क्रिया, जलना। *प्र०* ईंधन के तापमान को यदि प्रज्वलन तापमान से कम कर दें तो आग बुझ जाएगी।

प्रण –*पु०* प्रतिज्ञा, अटल निश्चय। *प्र०* प्रण करना आसान होता है किंतु उसे निभाना कठिन होता है।

प्रणाम –*पु०* मिलने पर अपने से बड़ों को हाथ जोड़कर नमस्ते करना, नमस्कार, अभिवादन।

प्रणाली –*स्त्री०* तरीक़ा, ढंग, पद्धति, क़ायदा। *प्र०* इस काम को करने की कई प्रणालियाँ हैं।

प्रताप –*पु०* बल तथा शौर्य आदि का व्यापक प्रभाव, महिमा, दबदबा, रोब, इक़बाल। *प्र०* अपने क्षेत्र में उनका बड़ा प्रताप है।

प्रतापी –*वि०* प्रतापवाला, प्रभाववाला, इक़बाल-वाला। *प्र०* विश्व में एक-से-एक प्रतापी राजा हो चुके हैं।

प्रति – 1. *उप०* विरोधी; जैसे –प्रतिकूल। (*विलोम* – अनुकूल)। 2. *वि०* प्रत्येक, हर; जैसे –प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन, प्रतिवर्ष। 3. अख़बार या किताबों की एक समय में छपनेवाली संख्या। *प्र०* इस किताब की इस साल एक हज़ार प्रतियाँ छपी हैं।

प्रतिकूल –*वि०* ख़िलाफ़, विरुद्ध, विपरीत। *प्र०* तुम्हारी बातों का कल प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

प्रतिज्ञा – *स्त्री०* दृढ़ निश्चय, दृढ़ संकल्प, प्रण। *प्र०* हड़तालियों ने प्रतिज्ञा कर रखी है कि जब तक उनकी माँगें मानी नहीं जाएँगी, वे हड़ताल ख़त्म नहीं करेंगे।

प्रतिदिन –*अ०* हर रोज़, रोज़ाना। *प्र०* वे प्रतिदिन व्यायाम करते हैं।

प्रतिनिधि –*पु०* वह व्यक्ति जो किसी क्षेत्र, संस्था, वर्ग या पार्टी आदि की ओर से कुछ कहने या करने के लिए चुना या नामांकित किया गया हो। *प्र०* उस समिति में सभी पार्टियों के प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं।

प्रतिनिधित्व – *पु॰* प्रतिनिधि होने का भाव। *प्र॰* विभिन्न पार्टियों के चुने हुए लोग समिति में अपनी पार्टियों का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रतिबंध – *पु॰* रोक, पाबंदी। *प्र॰* सांप्रदायिक तनाव के कारण पाँच दिन के लिए सभा करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

प्रतिबिंब – *पु॰* पानी या शीशे में पड़नेवाली छाया, परछाईं। *प्र॰* नदी के स्वच्छ शांत पानी में अपना प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

प्रतिबिंबित – *वि॰* छाया रूप में फेंकता हुआ। *प्र॰* चंद्रमा सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर प्रतिबिंबित करता है।

प्रतिभा – *स्त्री॰* महान् कार्य करने की क्षमता, वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे किसी भी विषय पर व्यक्ति मौलिक रूप में सोच सकता तथा रचना कर सकता है, कल्पना और मेधा का मिश्रित रूप। *प्र॰* इस विद्यार्थी में बड़ी प्रतिभा है।

प्रतिभाशाली – *वि॰* प्रतिभावाला, महान् कार्य करने की क्षमतावाला। *प्र॰* प्रतिभाशाली विद्यार्थी अनायास ही अन्य विद्यार्थियों से आगे निकल जाते हैं।

प्रतिमा – *स्त्री॰* मूर्ति। *प्र॰* गांधी पार्क में गांधीजी की बड़ी-सी प्रतिमा है।

प्रतियोगिता – *स्त्री॰* मुक़ाबला, होड़। *प्र॰* कल कई स्कूलों की सामूहिक रूप से वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ हो रही हैं।

प्रतियोगी – *पु॰* प्रतियोगिता में सम्मिलित होनेवाला। *प्र॰* आज की कुश्ती की प्रतियोगिता के लिए कुल पंद्रह प्रतियोगियों के नाम आ चुके हैं।

प्रतिरक्षण – *पु॰* ख़राब करनेवाली चीज़ों, बीमारियों या कीड़ों-मकोड़ों से बचाव या हिफ़ाजत करना। *प्र॰* हमें अनाज का संरक्षण और प्रतिरक्षण करना चाहिए।

प्रतिरक्षा – *स्त्री॰* बचाव, देश का शत्रुओं से बचाव; जैसे – देश की प्रतिरक्षा, प्रतिरक्षा मंत्री।

प्रतिरूप – *पु॰* उसी जैसे रूपवाला, कॉपी। *प्र॰* ग्लोब पृथ्वी का प्रतिरूप होता है।

प्रतिरोध – *पु॰* 1. रुकावट, रोक। *प्र॰* हड़तालियों ने सड़क पर प्रतिरोध खड़ा कर रखा है। 2. विरोध। *प्र॰* 1. गाँव के लोग कई बातों का प्रतिरोध कर रहे हैं। 2. यदि किसी बोतल में फूकें तो हवा भीतर नहीं जाएगी क्योंकि भीतर की हवा प्रतिरोध करेगी।

प्रतिबिंब | प्रतिमा | प्रतियोगिता | प्रतिरोध

प्रतिवर्ती प्रतीक प्रतीक्षा
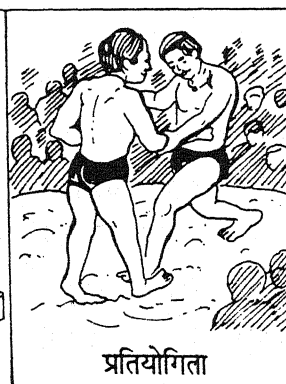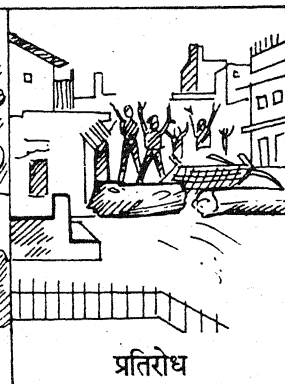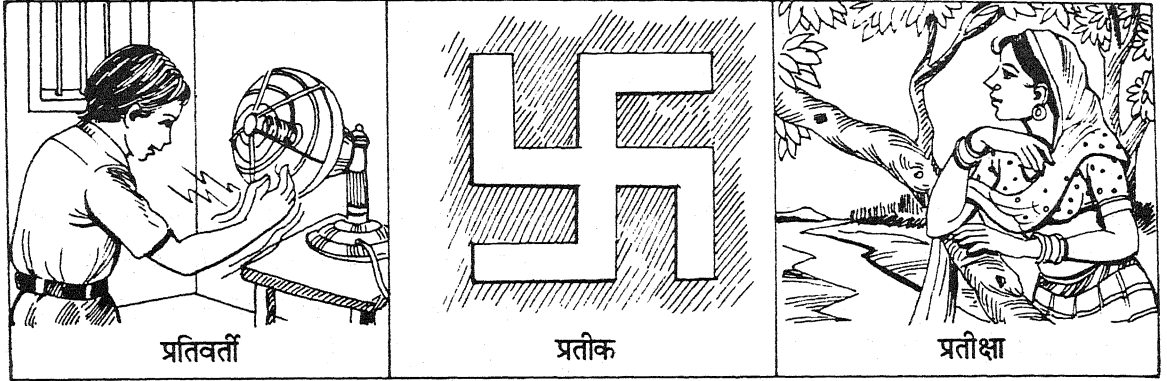
प्रतिरोपण –*पु॰* 1. पौध (*दे॰*) तैयार हो जाने के बाद उसे उखाड़कर खेतों में रोपना या लगाना। 2. एक व्यक्ति का कोई अंग काटकर दूसरे को लगाना।

प्रतिलिपि –*स्त्री॰* कॉपी, नक़ल। *प्र॰* प्रार्थना-पत्र के साथ सर्टिफ़िकेट की प्रतिलिपि लगाते हैं।

प्रतिलिप्याधिकार –*पु॰* प्रतिलिपि या नक़ल करने का अधिकार। *प्र॰* सरकारी नक़्शों का प्रतिलिप्याधिकार सरकार के पास ही होता है।

प्रतिवर्ती –*वि॰* किसी क्रिया के साथ-साथ होने-वाला, स्वचालित; जैसे –प्रतिवर्ती क्रिया। यदि हमें बहुत गर्म चीज़ का स्पर्श हो जाए तो स्पर्श होते ही झट हाथ दूर हट जाता है। यह क्रिया स्वचालित (ऑटोमैटिक) होती है। इसी क्रिया को प्रतिवर्ती क्रिया कहते हैं।

प्रतिवर्ष –*अ॰* हर साल, हर वर्ष।

प्रतिशत –*वि॰* हर सौ के पीछे, फीसदी, परसेंट, %। *प्र॰* कविता को पाँचवीं की परीक्षा में 93 प्रतिशत अंक मिले हैं।

प्रतिस्थापन –*पु॰* एक के स्थान पर दूसरे को रखना।

प्रतीक –*पु॰* सूचक चिह्न, निशान, चिह्न। *प्र॰* कबूतर शांति का प्रतीक है।

प्रतीक्षा –*स्त्री॰* इंतज़ार, राह देखना। *प्र॰* मैं आऊँगा लेकिन यदि देर हो जाए तो प्रतीक्षा मत करना, चले जाना।

प्रतीत –*वि॰* लगना, ज्ञात होना, मालूम होना। *प्र॰* तेज़ चलती ट्रेन में से बाहर देखें तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे पेड़, मकान आदि पीछे की ओर भाग रहे हैं।

प्रत्यक्ष –*वि॰* 1. जो देखा जा सके, जो आँखों के सामने हो। (*विलोम* –परोक्ष)। *प्र॰* टेलिविज़न में हम समाचारों के साथ-साथ घटनाओं को भी प्रत्यक्ष देख सकते हैं। 2. सीधा। *प्र॰* जनता की समस्याओं को जानने के लिए हमें जनता से प्रत्यक्ष संपर्क करना चाहिए।

प्रत्येक –*वि॰* हर एक। *प्र॰* 1. इस महीने प्रत्येक राशन कार्ड पर एक-एक किलो चीनी अतिरिक्त मिलेगी। 2. प्रत्येक रविवार को छुट्टी रहती है।

प्रदर्शक –*वि॰* दिखानेवाला; जैसे –पथ-प्रदर्शक, मार्ग-प्रदर्शक।

प्रदर्शन –पु॰ 1. दिखावा। प्र॰ तुम्हारे मित्र में प्रदर्शन की प्रवृत्ति है। 2. किसी के विरोध में निकाला गया जुलूस आदि। प्र॰ मिल के मज़दूर आज मालिक के ख़िलाफ़ प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रदर्शनी – स्त्री॰ वह स्थान जहाँ देखने और कभी-कभी बिक्री के लिए तरह-तरह की चीज़ें सजाई गई हों, नुमाइश; जैसे –चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक प्रदर्शनी, हस्तकला प्रदर्शनी।

प्रदर्शित – वि॰ दिखाया गया, जिसे दिखाया गया हो। प्र॰ प्रदर्शनी में तरह-तरह की चीज़ें प्रदर्शित की गई हैं।

प्रदान –पु॰ देना, देने की क्रिया। प्र॰ अच्छा भोजन वह है जो हमारे शरीर के लिए ज़रूरी पोषक तत्त्व प्रदान करे।

प्रदेश –पु॰ 1. इलाक़ा, क्षेत्र। प्र॰ यह प्रदेश पहाड़ी है। 2. राज्य, स्टेट; जैसे –उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश।

प्रधान –1. वि॰ मुख्य, प्रमुख, सबसे बड़ा; जैसे – प्रधान नदी, प्रधान पर्वत, प्रधानमंत्री, प्रधान कार्यालय, प्रधान संपादक। 2. पु॰ (क) मुखिया; जैसे –ग्राम-प्रधान। (ख) सरदार, नेता; जैसे – संस्था के प्रधान, दल के प्रधान।

प्रधानता – स्त्री॰ मुख्यता, प्रमुखता। प्र॰ पंजाब के लोगों के भोजन में गेहूँ और मक्के की प्रधानता होती है।

प्रधानाध्यापिका – स्त्री॰ महिला विद्यालय की मुख्य अध्यापिका, हेडमिस्ट्रेस।

प्रपात –पु॰ बहुत ऊँचाई से गिरनेवाला बड़ा झरना, जलप्रपात। प्र॰ भारत के प्रसिद्ध प्रपातों में मुख्य कर्नाटक का जोग प्रपात है जहाँ पानी 250 मीटर की ऊँचाई से गिरता है।

प्रबंध –पु॰ इंतज़ाम, व्यवस्था। प्र॰ कल हमारे स्कूल का वार्षिकोत्सव है लेकिन सभी प्रबंध अभी नहीं हो पाए हैं।

प्रबंधक – पु॰ प्रबंध करनेवाला, इंतज़ामकार, मैनेजर; जैसे– बैंक का प्रबंधक, कारख़ाने का प्रबंधक।

प्रबल –वि॰ बलवाला, ज़ोरदार, शक्तिवाला; जैसे – प्रबल समर्थक, प्रबल विरोधी, प्रबल इच्छा।

प्रभात –पु॰ तड़का, सुबह, सवेरा। प्र॰ आसमान पर पूरब में लाली फैल रही है, प्रभात होनेवाला है।

प्रभाव –पु॰ असर। प्र॰ जैसे संग-साथ में रहोगे वैसा प्रभाव पड़ेगा।

प्रभावशाली –वि॰ प्रभाववाला, असरदार; जैसे – प्रभावशाली व्यक्ति, प्रभावशाली नेता, प्रभावशाली भाषण।

प्रदर्शन | प्रदर्शनी | प्रपात | प्रभात

प्रमस्तिष्क | प्रमाणपत्र | प्रयोगशाला
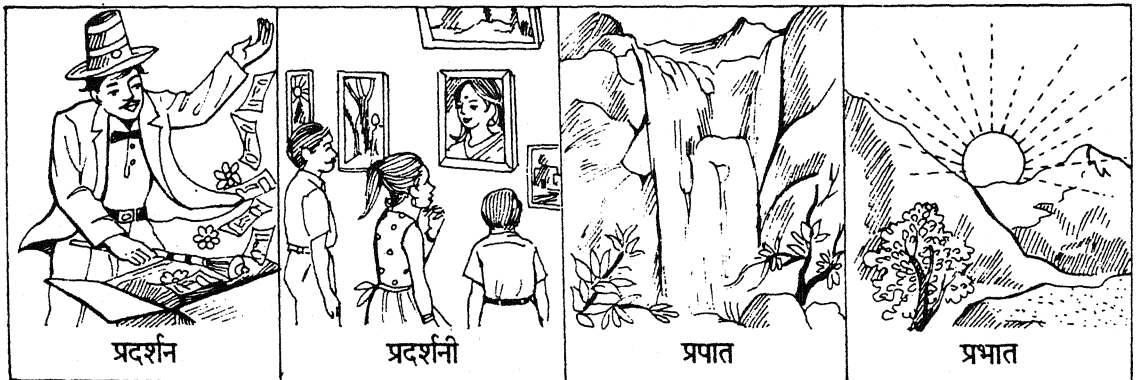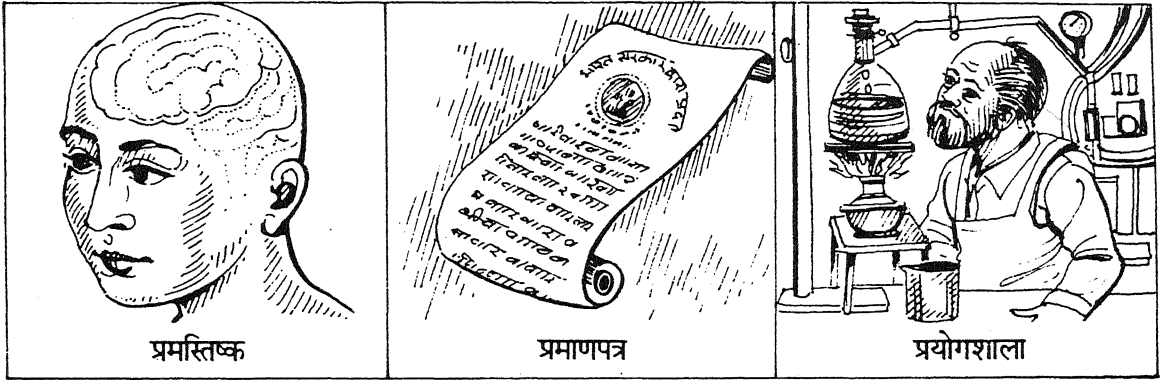
प्रभावित – *वि॰* प्रभाव में आया हुआ, जिस पर प्रभाव पड़ा हो। *प्र॰* बाढ़ से प्रभावित इलाक़ों में लोग बहुत परेशान हैं।

प्रभावी – *वि॰* भावपूर्ण, असरदार, प्रभावशाली। *प्र॰* समाचारपत्रों में समाचार को प्रभावी बनाने के लिए साथ में चित्र भी देते हैं।

प्रभु – *पु॰* ईश्वर, भगवान्।

प्रमस्तिष्क – *पु॰* मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग जो सोचने, सीखने, याद रखने, देखने, सुनने, सूँघने, स्वाद लेने तथा अनुभव करने आदि का काम करता है।

प्रमाण – *पु॰* ऐसी बात या ऐसा कार्य जिससे किसी बात को साबित या सिद्ध कर सकें, सबूत। *प्र॰* मेरे पास इस बात के कई प्रमाण हैं जो इस बात को साबित करते हैं कि वह ईमानदार है।

प्रमाणपत्र – *पु॰* किसी की शिक्षा संबंधी योग्यता या चरित्र आदि के लिए लिखित सबूत; सर्टिफ़िकेट। *प्र॰* अपने सभी प्रमाणपत्र लेते आना।

प्रमुख – *वि॰* मुख्य, प्रधान; जैसे–प्रमुख विषय, प्रमुख व्यक्ति, प्रमुख नगर।

प्रयत्न – *पु॰* यत्न, कोशिश, चेष्टा, प्रयास। *प्र॰* यदि आदमी ईमानदारी और लगन से प्रयत्न करे तो बहुत कुछ कर सकता है।

प्रयत्नशील – *वि॰* प्रयत्न या कोशिश में लगा हुआ। *प्र॰* मेरा मित्र कक्षा में प्रथम आने के लिए प्रयत्नशील है।

प्रयास – *पु॰* कोशिश, प्रयत्न। *प्र॰* अच्छा बनने का प्रयास करो तो एक दिन अवश्य अच्छे व्यक्ति बन जाओगे।

प्रयुक्त – *वि॰* प्रयोग में लाया गया या लाया हुआ। *प्र॰* आदिमानव द्वारा प्रयुक्त औज़ारों और हथियारों को पुरानी चीज़ों के संग्रहालयों में देखा जा सकता है।

प्रयोग – *पु॰* 1. व्यवहार, इस्तेमाल। *प्र॰* बच्चों को भोजन में दूध और दूध से बनी चीज़ों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। 2. अभ्यास या कोई नई चीज़ बनाने के लिए किया जानेवाला काम। *प्र॰* वैज्ञानिक तरह-तरह के प्रयोग करके नई-नई चीज़ों का आविष्कार करते हैं।

प्रयोगशाला – *स्त्री॰* वह स्थान, कमरा या भवन जहाँ अभ्यास या नई चीज़ें बनाने के लिए तरह-तरह के प्रयोग किए जाते हैं।

प्रयोगात्मक – *वि॰* प्रयोगवाला, व्यावहारिक, प्रैक्टिकल। *प्र॰* विद्यार्थियों को सिद्धांत पढ़ने के साथ-साथ प्रयोगात्मक काम भी करने चाहिए।

प्रलय – *पु॰* संसार का समाप्त हो जाना, क़यामत।

प्र० काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब।

प्रवचन –पु० उपदेश, धर्मोपदेश, धार्मिक भाषण या व्याख्यान। प्र० कल स्वामीजी का प्रवचन है, अवश्य आना।

प्रवास –पु० अपना देश छोड़कर विदेश में रहना। प्र० अपने यूरोप प्रवास के दौरान मैंने अनेक नई-नई चीज़ें देखीं।

प्रवासी – वि० विदेश में रहनेवाला; जैसे – प्रवासी भारतीय, प्रवासी पक्षी।

प्रवाह –पु० बहाव, धारा। प्र० बाढ़ में उफनती नदी के तेज़ प्रवाह में बहुत से लोग बह गए।

प्रवेश – पु० 1. किसी स्कूल या कॉलिज आदि में किसी क्लास में दाख़िला, ऐडमिशन। 2. भीतर जाना, घुसना। प्र० इस कार्यालय का प्रवेश इधर से है।

प्रवेशपत्र –पु० 1. (भीतर जाने का) पास। प्र० नाटक का एक प्रवेशपत्र मेरे पास है, आप जा सकते हैं। 2. परीक्षा-हॉल में जाने का अनुमति-पत्र। प्र० परसों परीक्षा है और अभी तक मेरा प्रवेशपत्र नहीं आया।

प्रशंसा –स्त्री० तारीफ़, सराहना, बड़ाई।

प्रशासक–पु० किसी संस्था की व्यवस्था चलानेवाला मुख्य अफ़सर, प्रशासन का मुख्य अधिकारी। प्र० ईमानदार और योग्य प्रशासक की देख-रेख में पूरा कार्यालय अच्छा काम करता है।

प्रशासन –प्र० किसी संस्था या कार्यालय आदि की प्रबंध-व्यवस्था, संचालन-व्यवस्था।

प्रशासनिक –वि० प्रशासन का, प्रशासन- संबंधी, प्रशासन-विषयक; जैसे – प्रशासनिक कार्य, प्रशासनिक व्यवस्था।

प्रशिक्षण –पु० व्यावहारिक शिक्षा, ट्रेनिंग; जैसे – बिजली का प्रशिक्षण, टेलिविज़न का प्रशिक्षण, पढ़ाने का प्रशिक्षण।

प्रशिक्षित –वि० प्रशिक्षण प्राप्त, ट्रेनिंग लिया हुआ। प्र० कुछ प्रशिक्षित अध्यापकों की वांट निकली है।

प्रश्नपत्र –पु० पेपर, पर्चा। प्र० आज का प्रश्नपत्र आसान था।

प्रश्नावली–स्त्री० प्रश्नसूची, सवालों की लिस्ट, प्रश्नतालिका। प्र० विद्यार्थियों की पुस्तक में प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रश्नावली दी होती है।

प्रश्नोत्तर (प्रश्न+उत्तर) –पु० प्रश्न और उत्तर, सवाल-जवाब। प्र० बाज़ार में सभी विषयों के प्रश्नोत्तर की पुस्तिकाएँ बिक रही हैं लेकिन उनमें कोई भी अच्छी नहीं है।

प्रसंग –पु० किस कवि या लेखक का है, किस

प्रवचन | प्रवाह | प्रशिक्षण
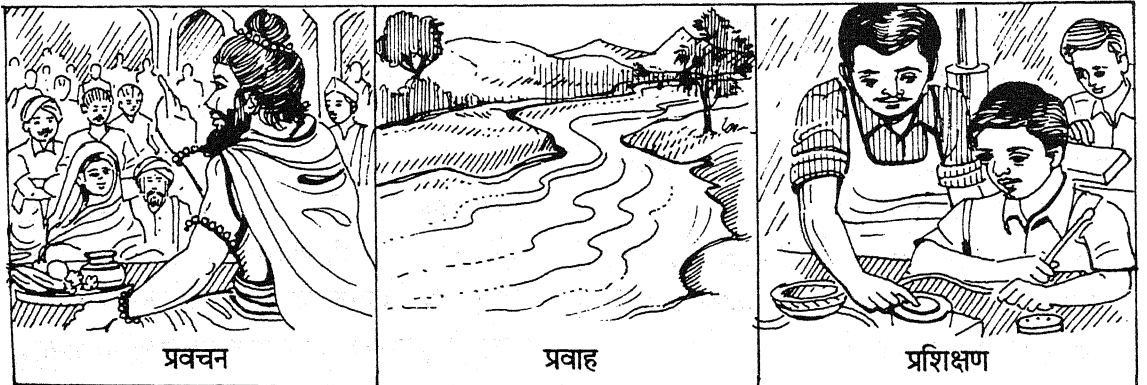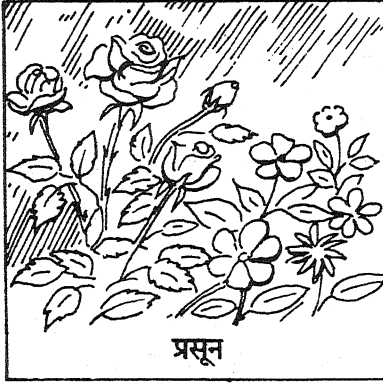
पुस्तक का है और उसका प्रकरण क्या है —इन बातों का उल्लेख। प्र० निम्नांकित छंदों की प्रसंग देते हुए व्याख्या कीजिए।

प्रसन्न — *वि०* खुश। *प्र०* कक्षा में प्रथम आने के कारण मोहन आज बहुत प्रसन्न है।

प्रसन्नतापूर्वक — *अ०* खुशी के साथ, प्रसन्नता के साथ। *प्र०* हम लोगों के जाने पर उन्होंने बहुत प्रसन्नतापूर्वक हमारा स्वागत-सत्कार किया और हमारी हर प्रकार से सहायता की।

प्रसाद —*पु०* 1. किसी देवी या देवता को चढ़ाई गई चीज़। *प्र०* हम लोग वैष्णव देवी गए थे, यह वहाँ का प्रसाद है। 2. आशीर्वाद, कृपा। *प्र०* बड़ों के प्रसाद से ही मेरे इतने अच्छे नंबर आए हैं।

प्रसार —*पु०* फैलाव। *प्र०* शिक्षा के प्रसार से ही देश की उन्नति होगी।

प्रसारण — *पु०* फैलाना, दूर-दूर तक ले जाना। *प्र०* प्रधान मंत्री ने जो भाषण सोवियत संघ में दिया था, आज रात उसका प्रसारण रेडियो पर फिर होगा।

प्रसिद्ध —*वि०* मशहूर, नामी, ख्यातिप्राप्त। *प्र०* कई प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों की कल से यहाँ प्रदर्शनी हो रही है।

प्रसिद्धि — *स्त्री०* नाम, मशहूरी, ख्याति। *प्र०* अपने मधुर गायन के लिए लता मंगेशकर की प्रसिद्धि पूरे संसार में है।

प्रसून — *पु०* फूल, पुष्प।

प्रस्ताव — *पु०* 1. सुझाव। *प्र०* गाँव की उन्नति के लिए उन लोगों के प्रस्ताव मान लिए जाने चाहिए। 2. निबंध, लेख। *प्र०* 'पुस्तकालय के लाभ' पर एक प्रस्ताव लिखिए।

प्रस्तुत —*वि०* 1. यह। *प्र०* प्रस्तुत विषय पर फिर कभी विचार करेंगे। 2. तैयार। *प्र०* मैं तुम्हारा काम करने को प्रस्तुत हूँ किंतु तुम्हें भी मेरा काम करना पड़ेगा।

प्रस्थान — *पु०* जाना, रवाना होना, गमन। *प्र०* मोहन कल हवाई जहाज़ से कलकत्ता के लिए प्रस्थान कर रहा है।

प्रहरी — *पु०* पहरा देनेवाला, चौकीदार, पहरेदार। *प्र०* देश की सेनाएँ देश की प्रहरी हैं।

प्रहार — *पु०* मारना, वार, चोट, आघात। *प्र०* यदि तुमने मुझ पर प्रहार किया तो मज़ा चखने को तैयार रहना।

प्रांगण — *पु०* अहाता, सहन, आँगन; जैसे — विद्यालय का प्रांगण।

प्रांत —*पु०* राज्य, प्रदेश। इस शब्द का प्रयोग पहले 'प्रदेश' के अर्थ में होता था; जैसे — सीमाप्रांत, संयुक्त प्रांत।

प्रांतीय – *वि०* प्रांत का, राज्य का, प्रादेशिक।

प्राइमरी – *वि०* बुनियादी, प्राथमिक; जैसे प्राइमरी स्कूल, प्राइमरी शिक्षा, प्राइमरी विद्यालय।

प्राइवेट –*वि०* 1. ग़ैरसरकारी; जैसे –प्राइवेट स्कूल। 2. निजी, व्यक्तिगत; जैसे –प्राइवेट मामला, प्राइवेट बात, प्राइवेट ज़िंदगी।

प्राकृतिक–*वि०* 1. प्रकृति का, प्रकृति से संबंधित, प्रकृति- विषयक; जैसे – प्राकृतिक-दृश्य, प्राकृतिक चिकित्सा। 2. स्वाभाविक, सहज; जैसे – प्राकृतिक सम्मान।

प्राचीन – *वि०* पुराना (*विलोम* – अर्वाचीन); जैसे – प्राचीन संस्कृति, प्राचीन जीवन।

प्राण – *पु०* जान, जीवन; जैसे – प्राणी (प्राणवाला), प्राणदंड (मौत की सज़ा), प्राणों से प्यारा (बहुत प्यारा)। *मु० प्राण खाना* – बहुत तंग करना। *प्र०* तुम मेरा प्राण मत खाओ, फ़ुरसत मिली तो तुम्हारा काम कर दूँगा। *प्राण-पखेरू उड़ना* – मर जाना, प्राण निकलना। *प्र०* एक-न-एक दिन सभी के प्राण-पखेरू उड़ेंगे। *प्राणों की बाज़ी लगाना* – अपने प्राण संकट में डालकर कोई जोखिम भरा काम करना। *प्र०* उफनती नदी में डूबते आदमी को मोहन ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर बचा लिया।

प्राणदंड – *पु०* फाँसी, मृत्युदंड, मौत की सज़ा। *प्र०* ख़ूनी को प्राणदंड की सज़ा मिलती है।

प्राणी – *पु०* प्राणवाला, जिसमें प्राण हों, जीव, जीवजंतु। *प्र०* मनुष्य सभी प्राणियों में बुद्धिमान है।

प्राथमिक – *वि०* बुनियादी, प्रारंभिक; जैसे – प्राथमिक कक्षा, प्राथमिक चिकित्सा, प्राथमिक सहायता।

प्राप्त – *वि०* पाया, पाया हुआ, मिला, मिला हुआ। *प्र०* 1. मुझे वे रुपए प्राप्त हो गए। 2. मैंने इलाहाबाद में उच्च शिक्षा प्राप्त की।

प्राप्ति – *स्त्री०* 1. जो मिले। 2. लाभ, फ़ायदा। *प्र०* 1. इसमें ख़र्च ही ख़र्च हुआ है, प्राप्ति तो कुछ हुई नहीं। 2. मनीऑर्डर से 500 रुपए भेज रहा हूँ, प्राप्ति की सूचना देना।

प्रायः – 1. *अ०* अक्सर, अधिकतर, बहुधा। *प्र०* प्रायः उन लोगों में कहासुनी होती है। 2. *वि०* क़रीब-क़रीब, तक़रीबन, लगभग। *प्र०* परीक्षाएँ प्रायः समाप्त हो चुकी हैं।

प्रायद्वीप – *पु०* पृथ्वी का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो। *प्र०* दक्षिण भारत एक प्रायद्वीप है।

प्रारंभ – *पु०* आरंभ, शुरू। *प्र०* अगले हफ़्ते मेरी परीक्षाएँ प्रारंभ हो रही हैं।

प्राणदंड | प्राणी | प्रायद्वीप
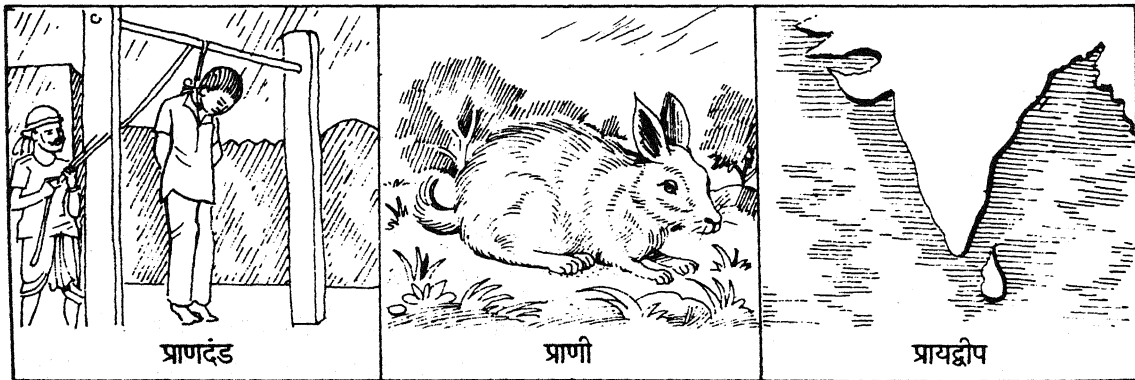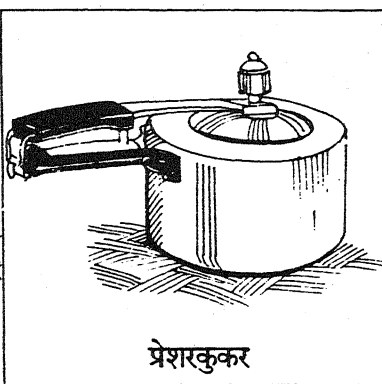
प्रार्थना

प्रेशरकुकर
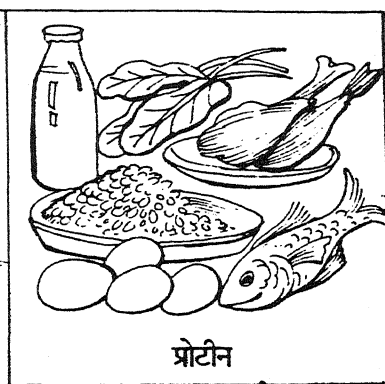
प्रोटीन

प्रारंभिक – *वि॰* प्रारंभ का, शुरू का। *प्र॰* पढ़ाई की प्रारंभिक तैयारी हो गई है।

प्रारूप – *पु॰* ड्राफ़्ट, मसौदा, किसी पत्र या योजना का कच्चा रूप। *प्र॰* प्रारूप तो अच्छा बन गया है, अब दो-तीन लोगों को दिखाकर इसे अंतिम रूप दे दो।

प्रार्थना – *स्त्री॰* 1. निवेदन, विनती। *प्र॰* मैंने इंस्पेक्टर से प्रार्थना की है कि वे गाँव की कच्ची सड़क को पक्की करा दें। 2. ईश्वर या देवी-देवता के प्रति भक्तिपूर्ण निवेदन। *प्र॰* पिताजी रोज़ सुबह प्रार्थना करते हैं।

प्रार्थनापत्र – *पु॰* आवेदनपत्र, अर्ज़ी, ऐप्लिकेशन। *प्र॰* नौकरी के लिए कल मैंने प्रार्थनापत्र रजिस्ट्री डाक से भेज दिया है।

प्रार्थी – *पु॰* प्रार्थना करनेवाला, आवेदक, निवेदक। *प्र॰* सुना है आपके कार्यालय में कुछ स्थान रिक्त हैं, कृपया प्रार्थी को उनमें से एक पर काम करने का अवसर प्रदान करें।

प्रिंसिपल – *पु॰* स्कूल या कॉलिज का प्रधान अध्यापक, प्रधानाचार्य।

प्रिय – *वि॰* प्यारा। *प्र॰* प्रिय भाई, मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। घर का ध्यान रखें।

प्रेरणा – *स्त्री॰* कुछ करने की इच्छा जगाना। *प्र॰* भगवान् बुद्ध की प्रेरणा से अनेक लोगों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया।

प्रेरित – *वि॰* किसी कार्य में प्रवृत्त किया हुआ। *प्र॰* महात्मा गांधी से प्रेरित होकर बहुत से भारतवासी आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े।

प्रेशरकुकर – *पु॰* खाना बनाने का वह बरतन जिसमें भाप के दबाव से खाना जल्दी पक जाता है।

प्रेसिडेंट – *पु॰* 1. सभापति, अध्यक्ष। 2. राष्ट्रपति, राष्ट्राध्यक्ष।

प्रैशरकुकर – *पु॰* दे॰ प्रेशरकुकर।

प्रोग्राम – *पु॰* कार्यक्रम। *प्र॰* छुट्टियों में तुम्हारा प्रोग्राम क्या है?

प्रोटीन – *स्त्री॰* शरीर के लिए एक पोषक पदार्थ जो दाल, दूध, मछली, अंडा आदि में मिलता है।

प्रोत्साहन – *पु॰* बढ़ावा, आगे बढ़ाना, आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देना। *प्र॰* अपने प्रोफ़ेसर के प्रोत्साहन से ही मैं जीवन में आगे बढ़ा।

प्रोफ़ेसर – *पु॰* विश्वविद्यालय के किसी विषय का लेक्चरर और रीडर के ऊपर का अध्यापक, आचार्य।

प्लग – *पु०* तीन या दो खूँटीवाला एक उपकरण जिसे सॉकिट में डालकर बिजली का कनेक्शन लेते हैं।

प्लाई – *स्त्री०* लकड़ी की पतली परतों को आपस में चिपकाकर बनाई गई समतल शीट, प्लाई शीट।

प्लाईवुड – *स्त्री०* प्लाई शीट, प्लाई लकड़ी।

प्लॉट – *पु०* मकान बनाने के लिए ज़मीन का टुकड़ा।

प्लास्टर – *पु०* टूटे अंगों को जोड़ने या दीवार आदि के लिए गाढ़ा लेप, पलस्तर।

प्लास्टिक – *पु०* एक कृत्रिम द्रव्य जिसे आसानी से विभिन्न रूपों में ढाला जा सकता है।

प्लेटिनम, प्लैटिनम – *पु०* एक बहुत महँगी धातु।

फ – देवनागरी वर्णमाला का पवर्ग व्यंजनों में दूसरा व्यंजन।

फंदा – *पु०* 1. रस्सी या तार आदि से बनी फाँसने की घेरेदार चीज़; जैसे – फाँसी का फंदा। 2. जाल, धोखा। *प्र०* उसके फंदे में मैं तो फँसा ही था, तुम भी फँस गए।

फँसना – *क्रि०* 1. निकल न पाना, धँसना, अटकना। *प्र०* बैलगाड़ी कीचड़-भरे रास्ते में फँस गई है। 2. फंदे या बंसी के हुक आदि में पकड़ना या पकड़ा जाना; जैसे – मछली फँसना, चिड़िया फँसना, शिकार फँसना। 3. चाल में आना, चाल का शिकार होना। *प्र०* उसकी बातों में कौन नहीं फँस जाता।

फँसाना – *क्रि०* 1. फंदे में लेना, फाँसना, फंदे में डालना; जैसे – शिकार फँसाना। 2. बंसी के हुक में लेना; जैसे – मछली फँसाना। 3. उलझाना; जैसे – मुक़दमे में फँसाना। 4. अपने वश में करना। *प्र०* पता नहीं उन डाकुओं ने मेरे बेटे को कैसे इस तरह फँसा लिया है कि मेरे लाख समझाने पर भी उनका साथ नहीं छोड़ता।

फ़कीर – *पु०* 1. मुसलमान साधु; जैसे – फ़कीर की दरगाह। 2. मुसलमान भिखारी। 3. ग़रीब आदमी, निर्धन मनुष्य। *प्र०* अपना सब कुछ लुटाकर फ़कीर हो जाना कहाँ की बुद्धिमानी है?

फक्कड़–*पु०* 1.अलमस्त, मस्त रहनेवाला, मस्तमौला। *प्र०* वह आदमी तो फक्कड़ है, उसे आराम-तकलीफ़ या सुख-दुख की परवाह कहाँ? 2. जिसके पास कुछ न हो, निर्धन, ग़रीब। *प्र०* उस फक्कड़ के पास पैसे कहाँ? किसी और से माँगो।

फ़ज़ूल – *वि०* बेकार, निरर्थक, व्यर्थ। *प्र०* फ़ज़ूल में इतने पैसे क्यों ख़र्च करते हो?

फटकारना फन फफोला फ़र्नीचर
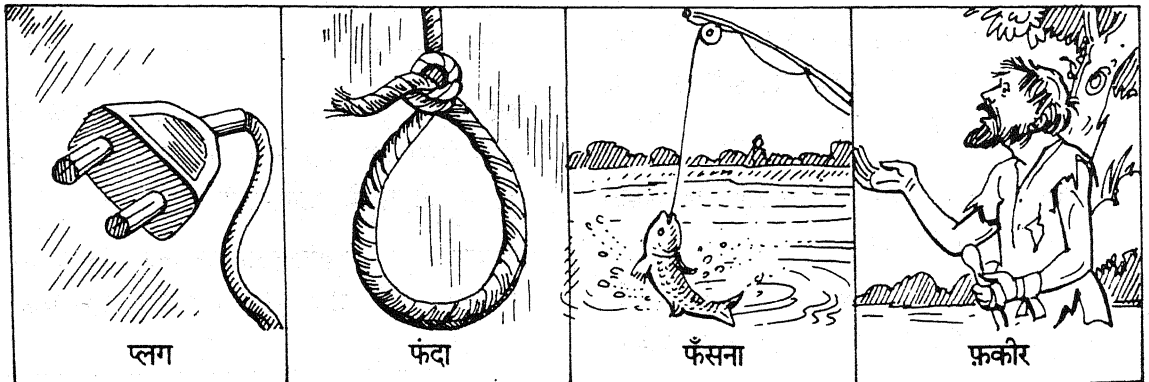
फटकार – स्त्री० झिड़की, डाँट, डाँट-फटकार। प्र० तुम पर तो जैसे फटकार का कोई असर ही नहीं होता।

फटकारना – क्रि० झिड़कना, डाँटना, डाँट पिलाना। प्र० बच्चों को बहुत फटकारना उचित नहीं।

फ़तह – स्त्री० जीत, विजय।

फन – पु० साँप का फन।

फ़न – पु० शिल्प, हुनर; जैसे – हर फ़न मौला, कई फ़नों में माहिर।

फफूंद, फफूँदी – स्त्री० सील के कारण किसी चीज़ पर जम जानेवाली हरी या सफ़ेद परत। प्र० फफूँदीवाली चीज़ें नहीं खानी चाहिए।

फफोला – पु० छाला, झलका। प्र० गर्म दूध गिर जाने के कारण मेरे पैर में फफोले पड़ गए हैं।

फ़रनीचर – पु० दे० फ़र्नीचर।

फ़रमाइश – स्त्री० माँग; जैसे – फ़िल्मी गानों की फ़रमाइश, रेडियो पर नाटक की फ़रमाइश।

फ़रमाइशी – वि० फ़रमाइश पर तैयार किया हुआ या प्रसारित; जैसे – फ़रमाइशी प्रोग्राम।

फ़रमान – पु० सरकारी हुक्म, राजकीय आज्ञापत्र; जैसे– शाही फ़रमान।

फ़रलाँग – पु० 220 गज की दूरी। प्र० बस अड्डा यहाँ से चार फ़रलाँग पर है।

फ़रियाद – स्त्री० ज़ुल्म से बचाए जाने के लिए की गई पुकार, शिकायत, प्रार्थना। प्र० पुराने ज़माने में कुछ बादशाह अपनी रिआया की फ़रियाद सुना करते थे।

फ़रियादी – वि० फ़रियाद करनेवाला।

फ़रिश्ता – पु० ईश्वर का दूत, देवदूत।

फ़र्ज़ – पु० 1. कर्तव्य। प्र० ग़रीब-दुखियों की मदद करना हर आदमी का फ़र्ज़ है। 2. कल्पना करना, मान लेना। प्र० फ़र्ज़ करो कि तुम्हारे पास 90 रुपए हैं। उनमें से 20 ख़र्च हो गए, 10 खो गए और 30 अपने दोस्त को दे दिए तो कितने रुपए बचे?

फर्न – पु० एक पौधा जिसके पत्ते बहुत सुंदर होते हैं।

फ़र्नीचर – पु० लकड़ी या लोहे का बना कुर्सी, मेज़, स्टूल, सोफ़ा, पलंग, आलमारी आदि सामान।

फर्मा – पु० छपाई में वह ढाँचा या साँचा जिसमें एक बार में छापी जा सकनेवाली सामग्री तरतीब से लगी होती है तथा जिसमें प्रायः सोलह, आठ या चार पृष्ठ होते हैं।

फ़र्मान – पु० दे० फ़रमान।

फ़र्लांग – पु॰ दे॰ फ़रलाँग।

फलक – पु॰ पटल, तख़्ता, पट्टी।

फलस्वरूप – *अ॰* परिणामस्वरूप, नतीजे के रूप में। *प्र॰* पिछले वर्ष वह फ़ेल हो गया था किंतु इस वर्ष उसने ख़ूब परिश्रम किया जिसके फलस्वरूप प्रथम श्रेणी में पास हुआ।

फली – *स्त्री॰* पतले दानेदार फल, छीमी; जैसे – मटर की फली।

फ़व्वारा – पु॰ जिससे पानी की फुहार निकले, फ़ौआरा, फ़ौवारा, फ़ुहारा।

फ़सल – *स्त्री॰* खेती, खेती की उपज, खेती की पैदावार। *प्र॰* इस बार बारिश अच्छी होने से फ़सल अच्छी हुई है।

फाँक – *स्त्री॰* किसी फल या सब्ज़ी आदि का लंबा टुकड़ा; जैसे – संतरे की फाँक, आलू की फाँक।

फाँकना – *क्रि॰* कोई चूर्ण या पाउडर हथेली पर रखकर मुँह में डालना। *प्र॰* यह चूर्ण फाँककर गर्म पानी पी लीजिए, थोड़ी देर में पेट का दर्द ठीक हो जाएगा।

फाँदना – *क्रि॰* उछल या कूदकर कोई चीज़ लाँघना; जैसे – दीवार फाँदना, बड़ी नाली फाँदना।

फाँसी – *स्त्री॰* 1.मौत की सज़ा, मृत्युदंड। *प्र॰* ख़ून का जुर्म साबित होने पर उसे फाँसी होगी। 2. रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से दम घुटने लगता है और मौत हो जाती है।

फ़ाइल – *स्त्री॰* मोटे काग़ज़ का कवर जिसमें काग़ज़ों को नत्थी करके रखते हैं।

फ़ाउंटेनपेन – पु॰ ऐसा क़लम जिसमें एक बार में काफ़ी स्याही भर दी जाती है जिससे बार-बार भरनी नहीं पड़ती, पेन।

फ़ाक़ा – पु॰ भोजन न करना, उपवास।

फागुन – पु॰ माघ और चैत के बीच का महीना, फाल्गुन।

फ़ाटक – पु॰ बड़ा और ऊँचा दरवाज़ा, गेट। *प्र॰* फ़ाटक पर दरबान है, उससे पूछ लो।

फ़ायदा – पु॰ लाभ, नफ़ा।

फ़ायर ब्रिगेड – पु॰ पानी और गैस आदि से आग बुझानेवाली गाड़ी, दमकल।

फ़ायर स्टेशन – पु॰ वह स्थान जहाँ दमकल रखे जाते हैं तथा ज़रूरत पड़ने पर इधर-उधर भेजे जाते हैं, दमकल स्टेशन।

फ़ार्म – पु॰ 1. छापा गया या टाइप किया हुआ
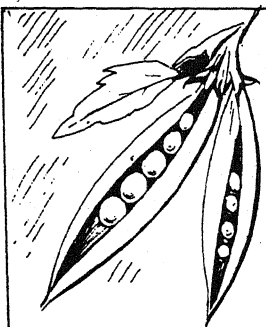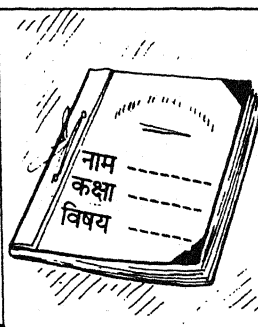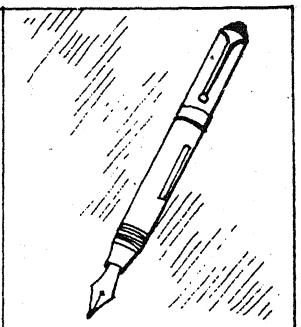
फली फ़व्वारा फ़ाइल फ़ाउंटेनपेन
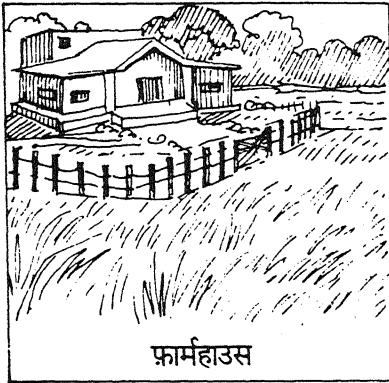
फ़ार्महाउस फावड़ा फिरंगी

काग़ज़ जिसमें ख़ाने होते हैं, जो जमा करने के पहले भरे जाते हैं। 2. कई खेतों की सामूहिक इकाई।

फ़ार्महाउस – पु॰ बड़े-बड़े खेतों की इकाई जिसमें रहने के लिए मकान बना होता है।

फ़ालतू – *वि॰* 1. ज़रूरत से ज़्यादा, बिना आवश्यकता का। *प्र॰* फ़ालतू सामान बेच दो। 2. निकम्मा, बेकार का। *प्र॰* उस फ़ालतू आदमी को बुलाकर क्या करोगे? वह किसी काम का नहीं है।

फाल्गुन – पु॰ माघ और चैत के बीच का महीना, फागुन।

फावड़ा – पु॰ मिट्टी खोदने और एक तरफ फेंकने आदि का एक उपकरण, फरसा।

फ़ास्फोरस – पु॰ पीले रंग का एक जल्दी आग पकड़नेवाला खनिज जो दाँतों और हड्डियों की मज़बूती के लिए भोजन में ज़रूरी होता है।

फाहा – पु॰ इत्र, दवा या मरहम आदि लगा रुई या कपड़े का टुकड़ा, फाया।

फ़िक्र – *स्त्री॰* चिंता। *प्र॰* अभी तक वह बच्चा घर नहीं लौटा, मुझे इस बात की फ़िक्र है।

फ़िनाइल, फ़िनायल – *पु॰* कोलतार और पेट्रोलियम से बना तेज़ गंधवाला एक तरल पदार्थ जिसका इस्तेमाल कीड़ों को मारने के लिए तरह-तरह से किया जाता है। **फ़िनायल की गोली** – दे॰ नेप्थलीन।

फिरंगी – *वि॰* अंग्रेज़, यूरोपीय, गोरा। *प्र॰* हमारे देश पर पहले फिरंगियों का शासन था।

फिरना – *क्रि॰* 1. इधर-उधर चक्कर लगाना। *प्र॰* वह तो मारा-मारा फिर रहा है। 2. घूमना; जैसे – घूमना-फिरना, फिरकी का फिरना। 3. उचट जाना। *प्र॰* मेरा जी अब इस काम से फिर गया है। *मु॰ दिन फिरना* – हालत अच्छी हो जाना। *प्र॰* बेचारे के दिन फिर गए नहीं तो मारा-मारा फिरता था। *सिर फिरना* – अक़्ल मारी जाना, बुद्धि भ्रष्ट होना। *प्र॰* पता नहीं वह आजकल क्या-क्या कर रहा है, उसका तो सिर फिर गया है।

फ़िल्टर – पु॰ पानी आदि साफ़ करने के लिए तरह-तरह से बनाया जानेवाला छन्ना, छानने का साधन।

फ़िल्टरन – पु॰ फ़िल्टर करना, साफ़ करने के साधन से पानी आदि साफ़ करना।

फ़िल्म – *स्त्री॰* 1. विशेष प्रकार के प्लास्टिक से बनी पतली पट्टी जिस पर कैमरे से फोटो खींचते हैं। 2. सिनेमा, चलचित्र। *प्र॰* आज कौन-सी फ़िल्म देखने जा रहे हो?

फिसलन – स्त्री० फिसलने का भाव या क्रिया, रपटन। प्र० वहाँ बहुत फिसलन है, सँभलकर जाना।

फिसलना – क्रि० 1. गीलापन और चिकनाहट के कारण पैर न जम पाना, रपटना। 2. उचित रास्ते से डिगना, अपने कर्तव्य से च्युत होना। प्र० धन-ऐश्वर्य को देखकर रमेश का मन फिसल गया।

फ़ीता – पु० सूत या रेशम आदि की पतली लंबी पट्टी जो बाँधने के काम आती है।

फुंसी – स्त्री० चमड़ी पर होनेवाली छोटी फुड़िया।

फ़ुट – पु० बारह इंच की एक नाप। प्र० एक फ़ुट में बारह इंच होते हैं।

फुटपाथ – पु० सड़क के दोनों ओर पैदल चलने का रास्ता।

फुनगी – स्त्री० 1. पेड़-पौधों का ऊपरी भाग। 2. एक प्रकार का कीटाणु जो एक कोशिकावाला तथा लंबा होता है।

फुफ्फुस – पु० शरीर का एक भाग जो स्पंजी और लचीली थैलियोंवाला होता है, फेफड़ा।

फ़ुरसत – स्त्री० 1. ख़ाली वक़्त, अवकाश, समय। प्र० अब मुझे फ़ुरसत है, तुम कभी भी आ सकते हो। 2. आराम। प्र० पहले तो मोहन बहुत बीमार था, अब कुछ फ़ुरसत है।

फुर्ती – स्त्री० 1. चुस्ती, तेज़ी। प्र० मोहन बीमारी से उठा है फिर भी उसमें बहुत फुर्ती है। 2. शीघ्रता, जल्दी। प्र० शीला ने बड़ी फुर्ती से अपना सारा काम कर डाला।

फुर्तीला – वि० 1. चुस्त। 2. फुर्ती या तेज़ी से काम करनेवाला, जल्दी-जल्दी अपना काम निपटा देनेवाला।

फुर्र – पु० चिड़ियों के उड़ने या उड़ जाने की ध्वनि। प्र० चिड़िया फुर्र से उड़ गई। मु० *फुर्र हो जाना*– 1. उड़ जाना। प्र० मेरे जाते ही चिड़िया फुर्र हो गई। 2. नौ दो ग्यारह हो जाना। प्र० अजीब आदमी है, मैं अभी आ ही रहा था कि वह चुपचाप फुर्र हो गया।

फ़ुर्सत – स्त्री० दे० फ़ुरसत।

फुलका – पु० चपाती, हल्की और पतली रोटी।

फुसलाना – क्रि० अपने अनुकूल करने या संतुष्ट करने के लिए मीठी-मीठी बातें करना। प्र० प्रमोद अपना काम निकालने के लिए विनोद को फुसला रहा है।

फुहार – स्त्री० नन्हीं-नन्हीं बूँदें, महीन बूँदों की झड़ी, झींसी। प्र० अभी बारिश तो नहीं हो रही है, फुहार पड़ रही है।
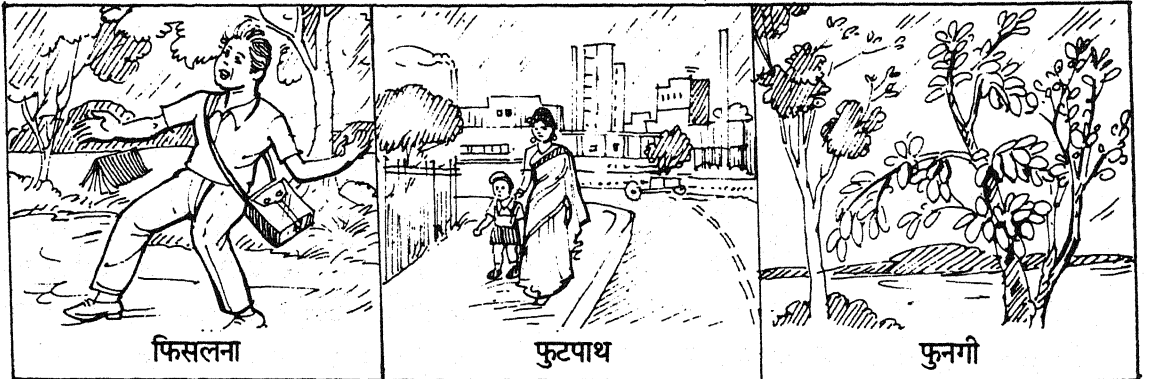
फिसलना | फुटपाथ | फुनगी

फूँकना | फूटना | फूलदान | फूलना

फूँक – *स्त्री०* मुँह से निकाली गई ज़ोर की हवा। *मु० फूँकना* – फूँक मारना। *फूँक निकल जाना* – 1. मर जाना। 2. ऐंठ जाती रहना, घमंड चूर-चूर हो जाना। *प्र०* बस एक ही डाँट में फूँक निकल गई।

फूँकना – *क्रि०* 1. जलाना, भस्म करना; जैसे – कूड़े को फूँकना, मुर्दा फूँकना। 2. बर्बाद करना, नष्ट करना; जैसे – पैसा फूँकना, घर फूँकना। 3. दोनों होंठों को मिलाकर उनके बीच से ज़ोर से हवा निकालना; जैसे – फूँककर दिया बुझाना, चूल्हा फूँकना।

फूट – *स्त्री०* न पटना, न बनना, अनबन, मेल-मिलाप न रहना, मतभेद। *प्र०* फूट से बड़े-से-बड़े घर बर्बाद हो जाते हैं।

फूटना – *क्रि०* 1. टूटना, दरकना, दरार पड़ना; जैसे – शीशा फूटना, घड़ा फूटना। 2. अपनी पार्टी छोड़कर दूसरी में जा मिलना, पक्ष छोड़ना। *प्र०* मोहन तो फूटकर दुश्मनों से जा मिला है। 3. अंकुर, शाखा आदि निकलना; जैसे – अंकुर फूटना, कोंपल फूटना, अँखुआ फूटना। 4. कली का खिलना। *मु० फूट-फूटकर रोना* – बहुत रोना-पीटना, बिलख-बिलखकर रोना। *प्र०* बुढ़िया अपने इकलौते बेटे के मरने से फूट-फूटकर रो रही है। *फूटी कौड़ी भी पास न होना* – पास में एक पैसा भी न होना, बिल्कुल ही कंगाल हो जाना। *प्र०* एक समय था जब वह अपने शहर के धनी आदमियों में था, पर जुए और शराब की आदत ने उसे इतना कंगाल कर दिया कि अब उसके पास फूटी कौड़ी तक नहीं है।

फूलदान – *पु०* फूल रखने का बरतन, गुलदान।

फूलदार – *वि०* जिसपर फूल-पत्ते बने हों; जैसे – फूलदार कपड़ा, फूलदार नक़्क़ाशी।

फूलना – *क्रि०* 1 फूल आना। *प्र०* अब बेला फूलने लगा है। 2. खिलना। *प्र०* कल तक तो यह कली थी, लगता है आज ही फूली है। 3. बहुत प्रसन्न होना। *प्र०* उनकी बात सुनकर फूलो नहीं, वे तुम्हारी तारीफ़ नहीं कर रहे थे; तुम्हें बना रहे थे। 4. घमंड करना, इतराना। *प्र०* छोटे लोग थोड़ा भी धन आ जाने से फूल जाते हैं। 5. हवा भर जाने से बड़े आकार का हो जाना; जैसे – गुब्बारे का फूलना। 6. सूज जाना, सूजन आना। *प्र०* चोट लगने से उसका मुँह फूल गया है।

फूस – *पु०* सूखी घास। *प्र०* हम लोग फूस की झोंपड़ी में रह रहे हैं।

फेन – *पु०* झाग; जैसे – साबुन का फेन।

फ़ेनाइल – *पु०* दे० फ़िनाइल।

फेफड़ा – पु॰ छाती का वह अंग जिससे जीव साँस लेते हैं।

फेर – पु॰ चक्कर। प्र॰ आजकल लोग अधिक-से-अधिक धनी बनने के फेर में पड़े रहते हैं। मु॰ *निन्यानवे का फेर* – रुपए कमाने और जो रुपए अपने पास हों उनको बढ़ाने का चक्कर। प्र॰ निन्यानवे के फेर ने दुनिया का सुख-चैन छीन रखा है।

फेरना – *क्रि॰* 1. लौटाना, वापस करना। प्र॰ यह सामान फेर दो, मुझे पसंद नहीं है। 2. उलट-पलट या इधर-उधर करना; जैसे – पान फेरना। 3. घुमाना, मोड़ना। प्र॰ गाड़ी उधर फेर दो। 4. चारों ओर चलाना, चक्कर देना, घुमाना। प्र॰ महात्माजी माला फेर रहे हैं।

फेरा – *क्रि॰* 1. चक्कर, लौटकर फिर आना। प्र॰ यह सारा सामान एक बार में नहीं जा सकता, इसके लिए कई फेरे लगाने पड़ेंगे। 2. परिक्रमा, प्रदक्षिणा; जैसे – मंदिर के फेरे लगाना। 3. आग के चारों ओर वर-वधू का विवाह के समय पर घूमना। प्र॰ विवाह में अब फेरे पड़ रहे हैं।

फ़ैशन – पु॰ 1. नया चलन। प्र॰ आजकल ऐसे कपड़ों का फ़ैशन है। 2. ढंग, चाल, तर्ज़। प्र॰ इस फ़ैशन के कपड़े अब नहीं चलते। 3. प्रचलन, प्रचार। प्र॰ धोती बाँधने का फ़ैशन कम होता जा रहा है।

फ़ैसला – पु॰ दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है – इसका निर्णय; जैसे – झगड़े का फ़ैसला, मुक़दमे का फ़ैसला।

फ़ोटो, फ़ोटोग्राफ़, फ़ोटोग्रैफ़ – पु॰ कैमरे से खींचा गया चित्र, छायाचित्र।

फ़ोटोग्राफ़र, फ़ोटोग्रैफ़र – *पु॰* फ़ोटो खींचनेवाला।

फोटोग्राफ़ी, फ़ोटोग्रैफ़ी – *स्त्री॰* फ़ोटो खींचना, फ़ोटो खींचने की कला।

फ़ौआरा – पु॰ दे॰ फ़व्वारा।

फ़ौरन – *अ॰* तुरत, झटपट, जल्दी। प्र॰ इस बच्चे की हालत ख़राब है, इसे फ़ौरन अस्पताल ले जाओ।

फ़ौलाद – पु॰ अच्छा और कड़ा लोहा, इस्पात, स्टील।

फ़ौलादी – *वि॰* 1. फ़ौलाद का बना हुआ; जैसे – फ़ौलादी कवच। 2. फ़ौलाद-जैसा बड़ा और मजबूत; जैसे – फ़ौलादी पंजा, फ़ौलादी शरीर। 3. दृढ़; जैसे – फ़ौलादी इरादा।
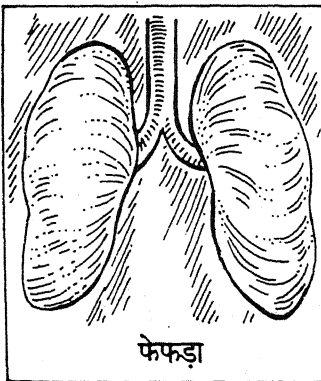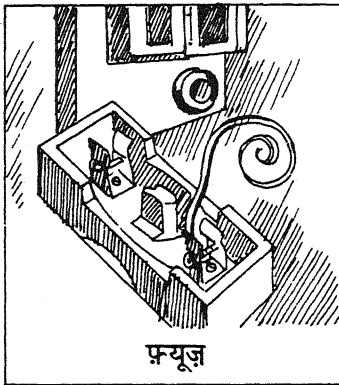
फेफड़ा | फेरा | फ़ोटोग्राफ़र
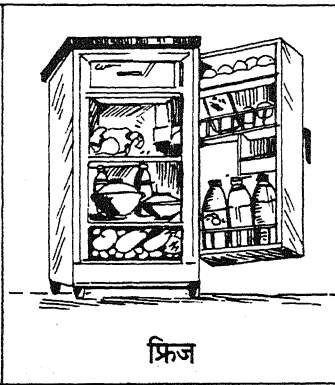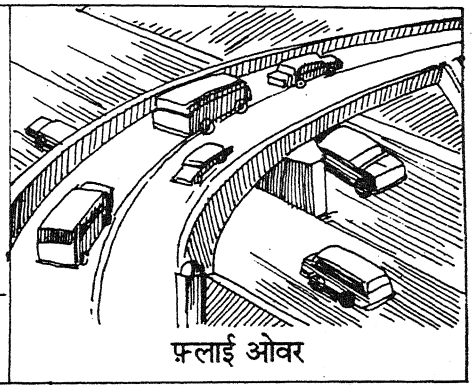
फ़ौवारा – पु० दे० फ़व्वारा।

फ़्यूज़ – पु० (मूल अर्थ: पिघलाकर दो चीजों को मिलाना)। बिजली के सर्किटों में इस्तेमाल होनेवाला सुरक्षा का एक उपकरण जो करेंट के एक सीमा के ऊपर चले जाने पर उसे रोक देता है। **फ़्यूज़ उड़ना** – बिजली की तेज़ गर्मी से फ़्यूज़ के तार का पिघलकर टूट जाना। **फ़्यूज़ होना** – बिजली की तेज़ गर्मी से बल्ब के भीतर के तार का पिघलकर टूट जाना। प्र० बल्ब फ़्यूज़ हो गया है। **फ़्यूज़ वायर** – एक पतला तार जो बिजली के करेंट के एक सीमा के ऊपर चले जाने पर पिघलकर टूट जाता है।

फ्रॉक – पु०, स्त्री० लड़कियों और स्त्रियों का एक लंबा वस्त्र।

फ्रिज – पु० पानी ठंडा करने, फल-सब्ज़ी आदि को सड़ने तथा दूध आदि को बिगड़ने से बचाने तथा बर्फ़ जमाने आदि के लिए काम में आनेवाली आलमारी जिसका यंत्र बिजली से काम करता है।

फ्रेम – पु० चौखटा; जैसे – चश्मे का फ्रेम, तस्वीर का फ्रेम, खिड़की का फ्रेम।

फ़्लश – पु० 1. पाख़ाना साफ़ करने की एक मशीनी व्यवस्था जिसमें ज़ंजीर खींचने या हत्था दबाने से पानी की तेज़ धार निकलती है, जो पाख़ाने के पॉट को साफ़ कर देती है। 2. ताश का एक जुएवाला खेल।

फ़्लाई ओवर – पु० ऐसी सड़क-व्यवस्था जिसमें एक के ऊपर दूसरी सड़क जाती है ताकि दोनों सड़कों पर एक साथ यातायात होता रहे।

फ़्लॉक्स – पु० दे० फ़्लौक्स।

फ़्लिट – स्त्री० एक कीटनाशक तरल पदार्थ जिसे मच्छरों को मारने के लिए कमरे आदि में छिड़कते हैं।

फ़्लू – पु० छूतवाली एक वाइरस बीमारी जिसमें जुकाम, छींक तथा बुख़ार जैसे ख़ास तौर पर दिखाई पड़ते हैं, इंफ़्लुएंज़ा।

फ्लैश – तेज़ रोशनी, तेज़ रोशनीवाला अधिक वाट का बल्ब।

फ़्लौक्स – पु० सर्दियों में होनेवाला सुंदर फूलों का एक पौधा, फ़्लॉक्स।

ब – देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का तीसरा व्यंजन।

बँगला – 1. पु० उपवन, बाग़ या खुली जगह में बना

एकमंज़िला मकान। 2. *स्त्री०* बंगाल की भाषा, बँगला भाषा। 3. *वि०* बंगाल का, बंगाल-संबंधी; जैसे – बँगला कुर्ता, बँगला मिठाई, बँगला संस्कृति।

बंगाली – 1. *पु०* बंगाल का निवासी। 2. *स्त्री०* बँगला भाषा। *प्र०* मुझे बंगाली नहीं आती। 3. *वि०* बंगाल का; जैसे – बंगाली मिठाई।

बंजर – *वि०* जो उपजाऊ न हो, ऊसर, अनुपजाऊ; जैसे – बंजर धरती।

बँटना – *क्रि०* बाँटा जाना, अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जाना, एक से अधिक वर्ग में हो जाना; जैसे – मिठाई बँटना, जायदाद बँटना, कई दलों में बँटना।

बँटवारा – *पु०* अलग-अलग होना, अलगाव। *प्र०* उस परिवार का बँटवारा हो गया।

बँटाई – *स्त्री०* खेती का एक प्रकार जिसमें खेत का मालिक किसी और को जोतने-बोने के लिए ज़मीन देता है, और खुद उपज का हिस्सा लेता है। *प्र०* मैंने तो अपना खेत बँटाई पर दे दिया है।

बंडल – *पु०* गठरी, पुलिंदा; जैसे – सामान का बंडल, किताबों का बंडल।

बंडा – *पु०* सब्ज़ी बनाने के काम आनेवाला एक कंद।

बंडी – *स्त्री०* 1. जैकेट। 2. बनियाइन, गंजी। 3. फतूही, मिरज़ई।

बंद – 1. *वि०* (क) जो खुला न हो; जैसे – बंद मकान, बंद चिट्ठी, बंद दरवाज़ा। (ख) ऐसी स्थिति में जिसमें व्यक्ति बाहर न जा सके; जैसे – कमरे में बंद, जेल में बंद। (ग) जो चालू न हो। *प्र०* उधर से गाड़ियों का आना-जाना बंद है। (*विलोम* – खुला)। 2. *पु०* पुश्ता, मेड़, बाँध।

बंदनवार – *पु०* त्योहारों या शुभ अवसरों पर फाटक, दरवाज़ा तथा दीवार आदि पर बाँधी जानेवाली फूल-पत्तों की झालर, तोरण। *प्र०* आज विवाह है इसलिए बंदनवार बाँधे जा रहे हैं।

बंदर – *पु०* मनुष्य से मिलता-जुलता एक प्रसिद्ध प्राणी जो पेड़ों पर चढ़ सकता है, कपि, मर्कट। *मु० बंदर का घाव* – वह घाव जो सूखे नहीं। *प्र०* राघवेंद्र ने खुजा-खुजाकर फोड़े को बंदर का घाव बना लिया है।

बंदरगाह – *पु०* समुद्र के किनारे की वह जगह जहाँ जहाज़ आते हैं और जहाँ से अन्य बंदरगाहों को यात्री या माल आदि लेकर जाते हैं।

बंदी – 1. *वि०* जो जेल में हो। *प्र०* प्रकाश आजकल बंदी है। 2. *पु०* क़ैदी। *प्र०* कल जेल से एक बंदी भाग गया।
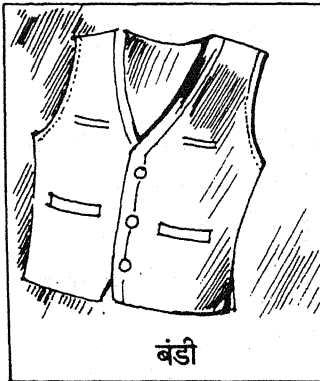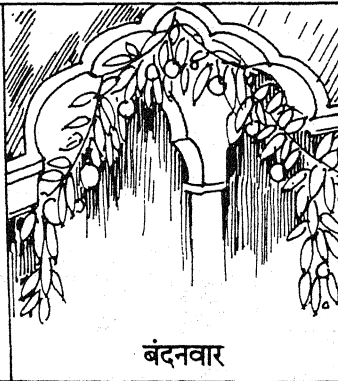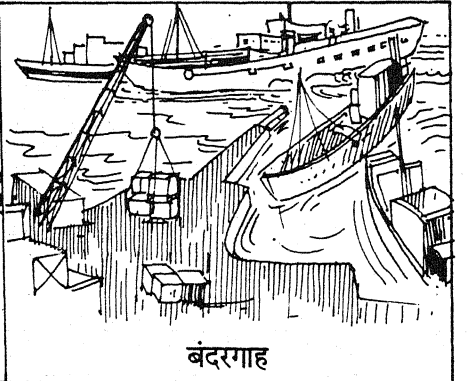
बंडी | बंदनवार | बंदरगाह
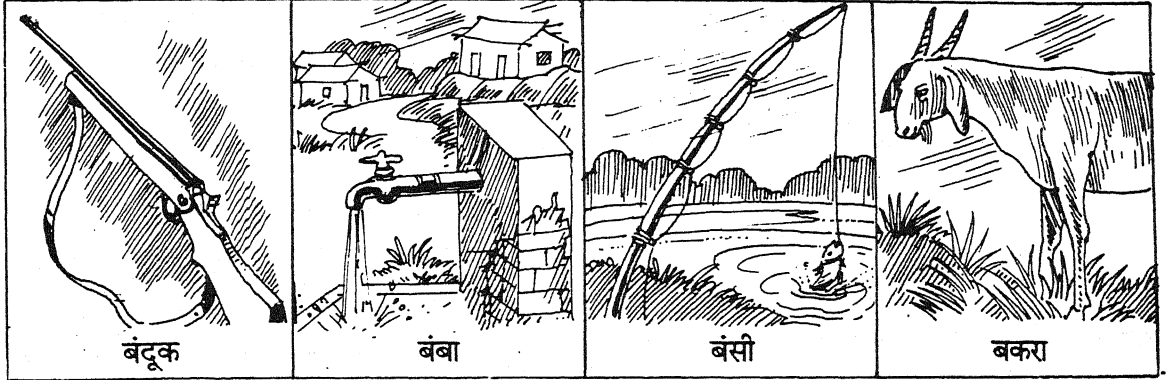
बंदीगृह – *पु०* जेल, जेलख़ाना।

बंदूक – *स्त्री०* एक प्रसिद्ध हथियार जिसमें गोली भरकर किसी को मारने या भगाने आदि के लिए चलाते हैं।

बंधक – *पु०* 1. वह चीज़ जो रुपए लेने के लिए किसी के यहाँ गिरवी रखी जाए, रेहन। *प्र०* गाँवों में काफ़ी लोग ब्याह-शादी या खेती के लिए अपने गहने बंधक रखकर रुपए ले जाते हैं और फिर रुपए लौटा देने पर अपने गहने वापस ले जाते हैं। 2. रुपए या अपने किसी और उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी एक या कई आदमियों को अपने कब्ज़े में ले लेना। *प्र०* 1. डाकुओं ने महाजन के दोनों बेटों को बंधक बना रखा है और एक लाख रुपए की माँग कर रहे हैं। 2. अरब छापामारों ने एक अमरीकी यात्री जहाज़ को उसके सारे यात्रियों के साथ बंधक बना रखा है और कुछ लोगों की जेल से रिहाई की माँग कर रहे हैं।

बंधन – *पु०* 1. वह साधन जिससे किसी को बाँधें; जैसे – प्रेम का बंधन, शादी का बंधन, मित्रता का बंधन। 2. पाबंदी, बंदिश, प्रतिबंध। *प्र०* ग्यारह बजे रात के बाद इस पार्क में आने-जाने पर बंधन है।

बँधना – *क्रि०* बंधन में आना, बाँधा जाना। *प्र०* 1. भैंस बँध गई है, अब इधर-उधर नहीं जाएगी। 2. प्रेम के बंधन में बँधने के बाद उन दोनों ने शादी कर ली।

बँधवाना – *क्रि०* बाँधने का काम किसी और से करवाना। *प्र०* यह बैल मारता है, किसी से इसे बँधवा दो।

बंधु – *पु०* 1. भाई, भ्राता। 2. मित्र, दोस्त।

बंबा – *पु०* 1. पानी का नल। *प्र०* उस गाँव में अभी बंबा नहीं लगा है। 2. लेटरबॉक्स।

बंसी – *स्त्री०* मछली को फँसाने का काँटा जो एक पतले बाँस में एक रस्सी के साथ बँधा होता है।

बकना – *क्रि०* बकबक करना, बकवास करना, बेकार की बातें करना।

बकरा – *पु०* चार पैरोंवाला एक छोटा जानवर। *मु० बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनाएगी* – अपराधी कब तक बच सकता है?

बकलस – *पु०* लोहा या पीतल आदि का विशेष तरह का छल्ला जिससे कपड़े या तसमे फँसाते हैं, बकसुआ।

बकवास – *पु०* बकबक, बेकार की बात करना।

प्र० आए हो तो चुपचाप बैठो, बकवास मत करो।

बकसुआ – पु० दे० बकलस।

बक़ाया – 1. *वि०* जो बाक़ी हो, बाक़ी बचा हुआ; जैसे – बक़ाया रुपए, बक़ाया माल, बक़ाया कपड़े। 2. पु० बाक़ी चीज़। प्र० जो आ गए आ गए, बक़ाया अगले सप्ताह दे जाऊँगा।

बक्की – *वि०* बकबक करनेवाला, बहुत बोलनेवाला।

बक्स, बक्सा – पु० संदूक। प्र० ये सब सामान बक्स में (बक्से में) रख दो।

बखिया – पु० एक प्रकार की घनी मज़बूत सिलाई जिसमें टाँके दुहरे होते हैं। मु० *बखिया उधेड़ना* – रहस्य खोलना, भंडाफोड़ करना, भेद खोलना। प्र० दोनों पहले तो मित्र थे, अब अलग-अलग पार्टियों में चले जाने पर एक-दूसरे का बखिया उधेड़ने में लगे हैं।

बखेड़ा – पु० झंझट, झमेला, लफड़ा। प्र० वहाँ जाने में और सारा सामान लाने में बहुत बखेड़ा है। मु० *बखेड़ा खड़ा करना* – झंझट करना, झमेला करना। प्र० देखो मेरे मामले में बखेड़ा मत खड़ा करना।

बग़ल – पु० 1. काँख, बाँह के जोड़ के नीचे का गड्ढा। प्र० बग़ल में फोड़ा हो जाने से बहुत परेशान हूँ। 2. बिल्कुल पास, पास ही, क़रीब। प्र० आपके मित्र भी बग़ल में ही रहते हैं।

बगिया – *स्त्री०* छोटा बगीचा, फुलवाड़ी। प्र० पास की बगिया में सुबह-सुबह मुस्कुराते फूलों को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

बगीचा – पु० छोटा बाग़। प्र० बगीचे में आजकल आमों की बहार है।

बगुला – पु० एक सफ़ेद पक्षी जिसकी चोंच और टाँग दोनों लंबे होते हैं, बगला।

बगुलाभगत – पु० कपटी आदमी, ढोंगी मनुष्य, ऐसा आदमी जो बगुले की तरह पानी में साधना करता भक्त लगे किंतु भीतर से कपटी हो और ज्योंही मछली दिखे उस पर झपट पड़े। प्र० वह साधु नहीं, पूरा बगुलाभगत है, उसका भरोसा मत करना।

बग़ैर – *अ०* बिना; जैसे – बग़ैर नौकरी, बग़ैर मकान, बग़ैर खाना।

बघारना – *क्रि०* तड़का लगाना, छौंकना। प्र० सब्ज़ी ताज़ा है, बघारकर अच्छी बनाना। मु० *शेखी बघारना* – 1. अपनी तारीफ़ करना, बढ़-चढ़कर बातें करना। प्र० बहुत शेखी मत बघारो, मैं तुम्हारी

बग़ल　　बगिया　　बगुला

बचत बचाना बच्चा
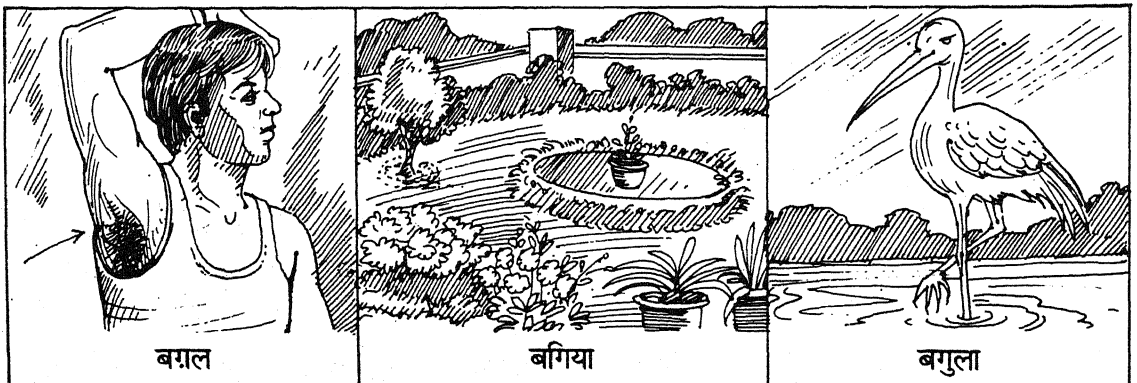
असलियत जानता हूँ। 2. रोब दिखाना, घमंड दिखाना। प्र० शेखी बघारनेवाले का सिर नीचा होता है।

बचत – *स्त्री०* ख़र्च करने से बचा हुआ पैसा। *प्र०* सारा पैसा ख़र्च कर डालना ठीक नहीं, कुछ-न-कुछ बचत करने की आदत डालनी चाहिए।

बचत खाता – *पु०* बैंक के दो मुख्य खातों (चालू खाता और बचत खाता) में से एक जिसमें थोड़ा ब्याज मिलता है तथा रुपयों के निकालने की सीमा होती है, सेविंग्स अकाउंट।

बचत बैंक – *पु०* डाकख़ाने का वह खाता जिसमें लोग बचत की अपनी छोटी-मोटी रकम जमा करते हैं, सेविंग बैंक। *प्र०* हर बड़े डाकख़ाने में एक बचत बैंक होता है।

बचना – *क्रि०* 1. बचत होना, बाक़ी रह जाना। *प्र०* जो पैसे बचे थे जमा करा दिए हैं। 2. ख़राब होने से बाक़ी रह जाना, सुरक्षित रह जाना। *प्र०* बाढ़ में सारी किताबें ख़राब हो गईं, सिर्फ़ अलमारी के ऊपर के ख़ानों की बच गईं जहाँ पानी नहीं पहुँच पाया। 3. अलग रहना, दूर रहना। *प्र०* 1. अवगुणों से बचो। 2. वह मुझसे बचता फिरता है।

बचपन (बच्चा + पन) – *पु०* छुटपन, लड़कपन, बाल्यावस्था।

बचपना – *पु०* 1. दे० बचपन। 2. गंभीरता का अभाव, नटखटपना।

बचा-खुचा – *वि०* जो बचा हो, बचा हुआ। *प्र०* 1. बारात के लगभग सारे लोग खा चुके हैं, कुछ बचे-खुचे लोगों को ही खिलाना है। 2. बची-खुची चीज़ें सम्हालकर रख दो।

बचाना – *क्रि०* 1. ख़र्च न होने देना, ख़र्च में से कोशिश करके कुछ पैसे अपने पास रहने देना। *प्र०* पूरी ज़िंदगी में जो कुछ बचाया था तुमको दे रहा हूँ। 2. हिफ़ाज़त करना, रक्षा करना; जैसे – डूबने से बचाना, बदमाशों से बचाना, हमले से बचाना।

बचाव – *पु०* रक्षा, हिफ़ाज़त, बचाने का काम; जैसे– बीमारियों से बचाव, गर्मी से बचाव, मच्छरों से बचाव।

बच्चा – *पु०* 1. हाल का पैदा हुआ शिशु। *प्र०* इस बच्चे को समय पर टीके लगवाते रहो। 2. लड़का, बालक। *प्र०* अभी बच्चा है, उसकी बातों का क्या बुरा मानना? *मु० बच्चों का खेल* – आसान काम, सरल काम। *प्र०* इस मुक़ाबले में अव्वल आना बच्चों का खेल नहीं है।

बच्चा-गाड़ी – *स्त्री०* शिशुओं या छोटे बच्चों के घुमाने-फिराने की गाड़ी, बाबा गाड़ी।

बछड़ा – पु० गाय का नर बच्चा।

बछेड़ा – पु० घोड़े का नर बच्चा।

बजना – *क्रि०* 1. समय होना, घड़ी में वक़्त होना। *प्र०* 1. बारह बज चुके हैं । 2. तीन बजकर तेरह मिनट चालीस सेकंड हुए हैं। 2. चोट या बाजे आदि से आवाज़ होना; जैसे – घंटा बजना, तबला बजना। 3. यंत्र से चलनेवाली किसी चीज़ से आवाज़ निकलना; जैसे – कैसेट बजना, रिकार्ड बजना।

बजरंग (बज्र + अंग) – 1. *वि०* बहुत कड़े और दृढ़ शरीरवाला। 2. पु० बजरंगबली, हनुमान्, महावीर।

बजरी – *स्त्री०* कंकड़ या पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े। *प्र०* बजरी से छत, फ़र्श तथा सड़क आदि बनाई जाती हैं।

बज़ाज़ – कपड़ा बेचनेवाला।

बजाय – *अ०* की जगह पर, के स्थान पर, के बदले में।

बटना – *क्रि०* सूत या रस्सी आदि को ऐंठकर मज़बूत बनाना।

बटेर – *स्त्री०* तीतर से मिलती-जुलती एक चिड़िया। *मु० अंधे के हाथ बटेर लगना* – बिना प्रयास किए लाभ हो जाना। *प्र०* मोहन बिना मेहनत किए पास हो गया है, अंधे के हाथ बटेर लग गई है।

बट्टा – पु० 1. सिल पर कुछ पीसने का पत्थर, लोढ़ा। 2. कटौती, घाटा, कमी।

बड़भागी – *वि०* बड़े भाग्यवाला, भाग्यवान्। *प्र०* तुम तो बड़भागी हो जो इतना बड़ा पुरस्कार मिला।

बढ़ोतरी – *स्त्री०* बढ़ती, उन्नति, लगातार बढ़ना।

बताशा, बतासा – पु० चीनी से बनी फूली-फूली एक हल्की मिठाई।

बत्तख़ – *स्त्री०* हंस से मिलती-जुलती पानी में रहनेवाली एक चिड़िया, बतख़।

बत्ती – *स्त्री०* 1. कपड़े, सूत या रुई की बुन या ऐंठकर बनाई गई एक चीज़ जिसे तरह-तरह के दिए या लैंप आदि में रखकर जलाते हैं। 2. रोशनी देनेवाली चीज़; जैसे – मोमबत्ती, बिजलीबत्ती, गैस की बत्ती।

बत्तीसी – *स्त्री०* बत्तीसों दाँतों का समूह, डॉक्टर द्वारा
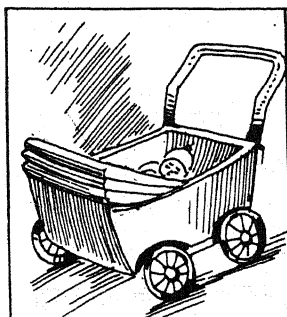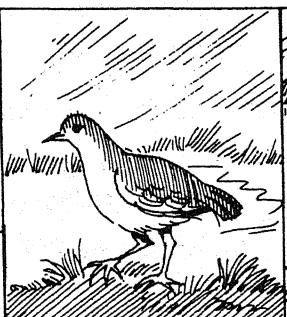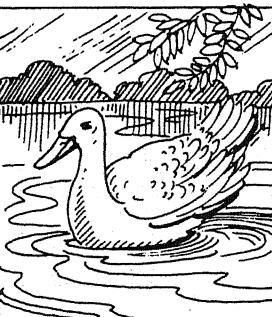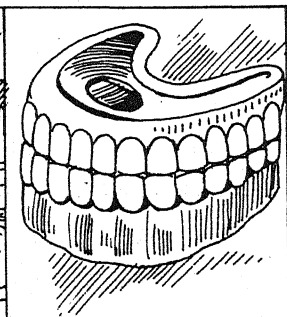
बच्चा-गाड़ी | बटेर | बत्तख़ | बत्तीसी
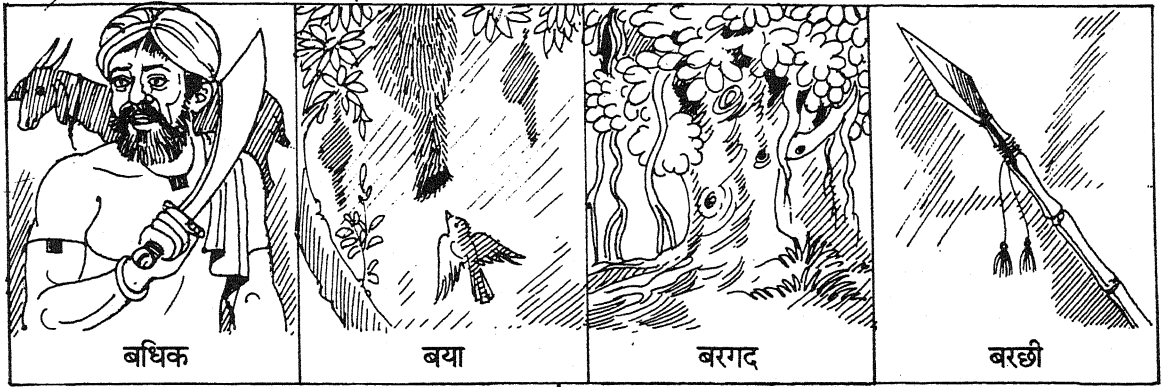
बनाया गया दाँतों का सेट। *प्र०* उसके सारे दाँत दुर्घटना में टूट गए हैं, अब उसे डॉक्टर से अपनी बत्तीसी बनवानी पड़ेगी।

बदतमीज़ (बद + तमीज़) – *वि०* असभ्य, अशिष्ट, जिसमें तमीज़ न हो, बुरी तमीज़वाला। *प्र०* यह लड़का बड़ा बदतमीज़ है।

बदबू (बद + बू) – *स्त्री०* बुरी बू, दुर्गंध। *प्र०* आजकल इस क्षेत्र में बहुत बदबू है।

बदलाव – *पु०* परिवर्तन। *प्र०* अब भारत की स्थिति में बहुत बदलाव आ गया है। क्या शिक्षा, क्या राजनीति, क्या पैदावार, क्या विकास, सभी क्षेत्रों में पिछले पच्चीस वर्षों का भारत अब नहीं रहा।

बदहज़मी (बद + हज़म + ई) – *स्त्री०* खाना ठीक से न पचना, अपच।

बधाई – *स्त्री०* मुबारकवाद। *प्र०* मोहन प्रथम आया है, उसे बधाई दे आनी चाहिए।

बधिक (बध + इक) – *पु०* पशुओं को मारनेवाला, जानवरों का वध करनेवाला, शिकारी, बहेलिया, हत्यारा।

बधिर – *पु०* बहरा, जो सुन सकता न हो।

बनावट – *स्त्री०* 1. रचना, निर्माण, बनना, गठन। *प्र०* इस ज़ेवर की बनावट बहुत अच्छी है। 2. असली न होना। *प्र०* उस लड़के में बनावट बहुत है। वह है कुछ और, अपने को दिखाना चाहता है कुछ और।

बनावटी – *वि०* नक़ली, जो असली न हो, कृत्रिम; जैसे – बनावटी व्यवहार, बनावटी इंस्पेक्टर, बनावटी बातें, बनावटी दाँत।

बबूल – *पु०* एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़, कीकर।

बया – *पु०* एक छोटी चिड़िया जिसका घोंसला बहुत सुंदर होता है और पेड़ों पर लटका रहता है।

बयान – *पु०* कहना, कथन, वर्णन। *प्र०* पुलिस ने डाकू का बयान ले लिया है।

बरगद – *पु०* एक बड़ा फैला हुआ पेड़, बड़, वट, वटवृक्ष।

बरछी – *स्त्री०* छोटा भाला या बरछा।

बरदाश्त – *स्त्री०* सहन, सहन करना। *प्र०* अन्याय का विरोध करना चाहिए, उसे बरदाश्त करना महापाप है।

बरनॉल, बरनौल – *पु०* एक मलहम जिसे जले, कटे या घाव पर लगा लेने पर जख़्म जल्दी भर जाता है और घाव बढ़ता नहीं है।

बरफ़ीला – *वि०* दे० बर्फ़ीला।

बरबस – *अ०* ज़बरदस्ती, इच्छा के विरुद्ध; अनायास। *प्र०* यह प्राकृतिक दृश्य मन को बरबस अपनी ओर खींच लेता है।

बरमा – पु० 1. लकड़ी में छेद करने का बढ़ई का एक औज़ार। 2. ज़मीन से हाथ से चलाकर पानी निकालने की मशीन, चापाकल, हैंड पाइप।

बरसाती – 1. *वि०* बरसात में होनेवाला, बरसात। *मु० बरसाती मेढक*– थोड़े दिनों तक रहनेवाला, थोड़े दिन के लिए संख्या में बहुत बढ़ जानेवाला। *प्र०* चुनाव में बरसाती मेढक की तरह चुनाव-प्रचारक इधर-उधर फुदकते फिरते हैं। 2. *स्त्री०*(क) बरसात में कपड़ों के ऊपर पहनने का ओवरकोट। (ख) पहली या दूसरी मंज़िल पर बना छोटा कमरा।

बराबर – *वि०* 1. एक जैसा, समान। *प्र०* मोहन और किशोर पढ़ाई में बराबर हैं। 2. समतल। *प्र०* यहाँ ज़मीन बराबर है।

बराबरी – स्त्री० तुलना, समानता। *प्र०* पढ़ने में कृष्ण की बराबरी कक्षा में कोई नहीं कर सकता।

बरौनी – *स्त्री०* पलकों के ऊपर के बाल।

बर्च – *पु०* उत्तरी देशों में प्राप्त एक जंगली पेड़ जिसका छिलका चिकना होता है।

बर्ताव – *पु०* व्यवहार, सलूक। *प्र०* अब दोनों पड़ोसियों में आपसी बर्ताव बहुत अच्छा हो गया है।

बर्नर – *पु०* चूल्हे का वह पुर्ज़ा जिसमें गैस जलती है।

बर्फ़ीला– *वि०* बर्फ़ का; जैसे – बर्फ़ीली हवा, बर्फ़ीला क्षेत्र।

बर्बर – *वि०* जंगली, असभ्य ; जैसे – बर्बर जाति, बर्बर व्यवहार।

बर्बाद – *वि०* नष्ट। *प्र०* आँधी में सारी खेती बर्बाद हो गई।

बर्बादी – *स्त्री०* नाश, तबाही। *प्र०* तेज़ आँधी और पानी से बहुत बर्बादी हुई है।

बल – पु० 1. ताक़त, शक्ति, ज़ोर; जैसे – सैन्य बल, शारीरिक बल, बुद्धिबल। 2. शिकन, सिलवट; जैसे – ललाट पर बल। 3. मरोड़; जैसे – रस्सी में बल।

बलवान्, बलशाली – *वि०* ताक़तवाला, ताक़तवर; जैसे – बलवान् सैनिक या योद्धा, बलशाली पहलवान।

बलहीन – *वि०* कमज़ोर, निर्बल।

बला – *स्त्री०* आफ़त, विपत्ति, संकट।
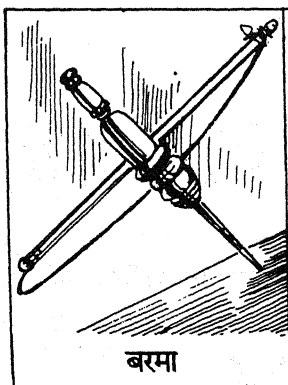
बरमा बरसाती बरौनी बर्नर

बल्ला बसूला बस्ता बहँगी
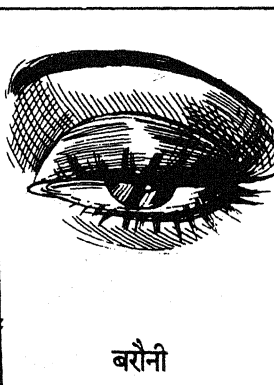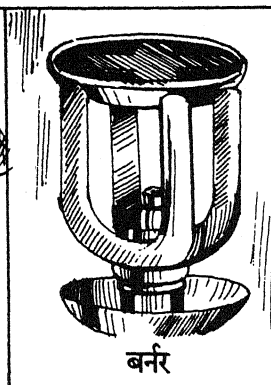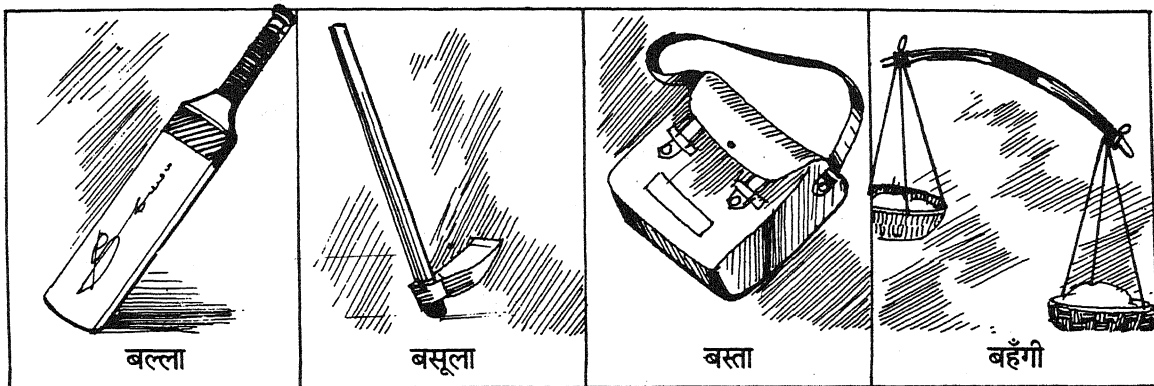
बलिदान – पु॰ 1. किसी देवी-देवता के लिए पशु-वध। 2. क़ुर्बानी, प्राण देना। प्र॰ बहुत-से क्रांतिकारी देश के लिए बलिदान हो गए।

बलिष्ठ – *वि॰* बलवाला, ताक़तवर, बहुत बली।

बली – *वि॰* बलवाला, बलशाली, बलिष्ठ।

बलुआ – *वि॰* 1. बालूवाला; जैसे – बलुआ ज़मीन। 2. बालू का बना; जैसे – बलुआ पत्थर।

बल्कि – *अ॰* इसकी जगह पर, इसके स्थान पर, अपितु। प्र॰ 1. विभीषण नहीं बल्कि रावण मारा गया। 2. मैं यह काम नहीं कर पाऊँगा, बल्कि आप कर डालिए।

बल्ला – पु॰ क्रिकेट में गेंद मारने का डंडा, बैट।

बल्ली – *स्त्री॰* छोटी या लंबी मोटी लकड़ी।

बशर्ते – *अ॰* शर्त यह है कि। प्र॰ मैं कल तुम्हारे घर चला चलूँगा बशर्ते कि अगले हफ़्ते तुम मेरे घर चलने का वादा करो।

बसंत – पु॰ दे॰ वसंत।

बसंती – *वि॰* 1. वसंत ऋतु का; जैसे – बसंती फूल। 2. हल्के पीले रंग का; जैसे – बसंती साड़ी, बसंती कपड़ा, बसंती ब्लाउज़।

बस स्टॉप – पु॰ जहाँ बसें रुकती हैं, बस रुकने की जगह। प्र॰ शहरों में एक-एक बस के कई-कई स्टॉप होते हैं।

बसूला – पु॰ बढ़ई का एक औज़ार जिससे लकड़ी छीली और काटी जाती है।

बसेरा – पु॰ रहने का स्थान; जैसे – रैन-बसेरा (रात में बिना घर-मकानवाले लोगों के सोने के लिए बने कमरे या हॉल आदि)।

बस्ता – पु॰ 1. बच्चों का स्कूल ले जाने का छोटा थैला जिसमें वे किताब-कॉपी आदि रखते हैं। प्र॰ मोहन, अपना बस्ता तैयार कर लो, स्कूल जाने को देर हो रही है। 2. एक कपड़ा जिसमें काग़ज़-पत्र आदि बाँधे जाते हैं।

बस्ती – *स्त्री॰* 1. घरों का समूह, छोटा गाँव। 2. आबादी।

बहँगी – *स्त्री॰* बोझा ढोने के लिए फटे बाँस की लचीली पट्टी जिसके दोनों ओर मज़बूत रस्सी बँधी होती है।

बहरापन – पु॰ बहरा होना।

बहलाना – *क्रि॰* भुलावा देना, बात से या कुछ देकर किसी का ध्यान दूसरी ओर फेरना। प्र॰ बच्चा रो रहा है, उसे कुछ देकर बहला दो।

बहस – *स्त्री॰* किसी बात या कथन के पक्ष-विपक्ष पर वाद-विवाद, बहस-मुबाहिसा।

बहार – *स्त्री॰* वसंत (ऋतु), वह मौसम जिसमें फूल ख़ूब खिलते हैं।

बहिष्कार – *पु॰* छोड़ना, छोड़ देना, बायकॉट। *प्र॰* 1. गांधीजी ने विदेशी चीज़ों का बहिष्कार किया। 2. जाति-बिरादरी ने उस बदमाश का बहिष्कार कर रखा है।

बहिष्कृत – *वि॰* 1. निकाला हुआ; जैसे – जाति-बहिष्कृत, देश-बहिष्कृत, धर्म-बहिष्कृत। 2. जिसका बहिष्कार किया गया हो; जैसे – बहिष्कृत व्यक्ति।

बही – *स्त्री॰* दूकानदारों या महाजनों का हिसाब लिखने का लंबा रजिस्टर।

बहुतायत – *स्त्री॰* अधिकता, ज़्यादा होना। *प्र॰* अमेरिका में अनाज की इतनी बहुतायत है कि सुना है कभी-कभी टनों गेहूँ समुद्र में डुबा दिया जाता है।

बहुतेरा – *अ॰* बहुत ज़्यादा, बहुत-बहुत। *प्र॰* राम ने मोहन से बहुतेरा कहा किंतु उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

बहुधा – *अ॰* ज़्यादातर, अकसर। *प्र॰* श्याम बहुधा इधर आता है।

बहुमंज़िला – *वि॰* कई मंज़िलोंवाला; जैसे – बहुमंज़िला मकान, बहुमंज़िली इमारत।

बहुमत – *पु॰* बहुत-से लोगों का मत, आधे से ज़्यादा लोगों का मत। *प्र॰* उस समिति में इन्हीं लोगों का बहुमत है, इसलिए जो भी चाहते हैं, करा लेते हैं।

बहुमूल्य – *वि॰* क़ीमती, बेशक़ीमती, ज़्यादा मूल्यवाला; जैसे – बहुमूल्य हार, बहुमूल्य हीरा।

बहुरंगी – *वि॰* कई रंगोंवाला, रंग-बिरंगा; जैसे बहुरंगी पोशाकें।

बहुवचन – *पु॰* व्याकरण में शब्द दो प्रकार के माने जाते हैं: (क) एकवचन – जो एक का ज्ञान कराए; जैसे – घोड़ा (घोड़ा खड़ा है), औरत (औरत बैठी है)। (ख) बहुवचन – जो एक से अधिक या बहुत (बहु + वचन) का ज्ञान कराए; जैसे – घोड़े (घोड़े खड़े हैं); औरतें (औरतें बैठी हैं)।

बहेलिया – *पु॰* शिकारी, चिड़ीमार।

बाँग – *स्त्री॰* 1. मुर्ग़े की पुकार। 2. नमाज़ के लिए सवेरे-सवेरे मुल्ला द्वारा लगाई गई पुकार, अज़ान।

बाँबी – *स्त्री॰* 1. बिल। 2. साँप का बिल।

बही | बहुमंज़िला | बहेलिया | बाँबी

बाँसुरी | बाज़ | बाट | बारहसिंघा
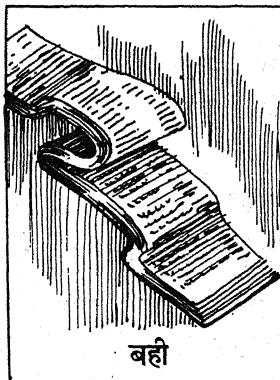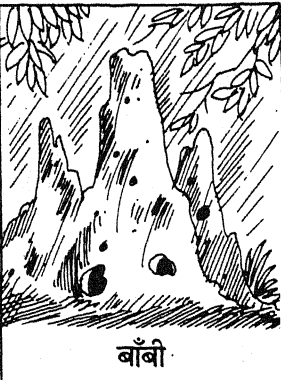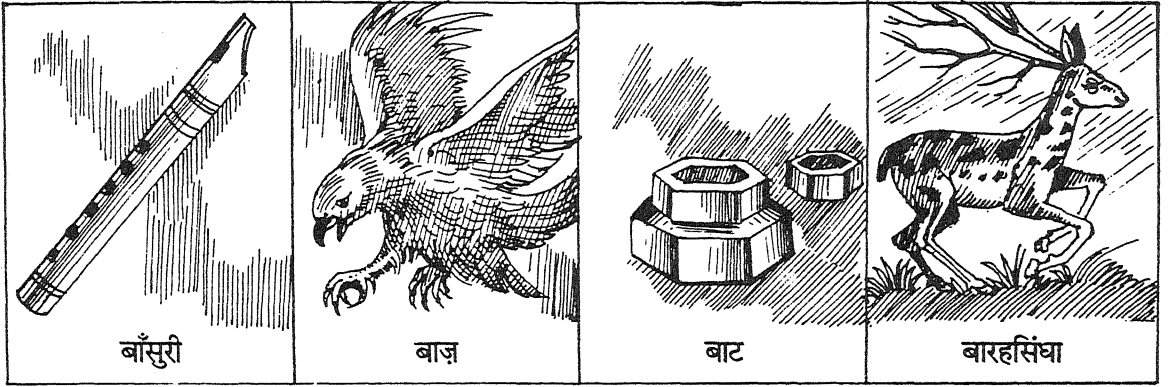
3. दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का घर, बँबीठा, भीटा।

बाँसुरी – *स्त्री०* पतले बाँस से बना एक बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है।

बाइबिल, बाइबल – *स्त्री०* ईसाइयों का धर्म-ग्रंथ।

बॉक्साइड – *पु०* एक खनिज पदार्थ जिससे अल्युमिनियम धातु प्राप्त की जाती है।

बाग़वान – *पु०* माली।

बाग़वानी – *स्त्री०* फूल-पौधे लगाने और उनकी देख-रेख करने का काम, माली का काम।

बाग़ान – *वि०* बाग़; जैसे – चाय-बाग़ान।

बाज़ – 1. *पु०* शिकारी पक्षी। 2. *वि०* कोई-कोई, कुछ, कुछ थोड़े।

बाज़ी – *स्त्री०* शर्त, दाँव। *प्र०* मोहन बाज़ी हार गया है।

बाज़ीगर – *पु०* तरह-तरह के जादू के खेल या करतब दिखानेवाला।

बाट – 1. *स्त्री०* रास्ता। 2. *पु०* सामान तौलने का बटखरा।

बाड़ – *स्त्री०* कँटीली झाड़ियों की दीवाल जो बाग़ या खेत के चारों ओर जानवरों से बचाव के लिए लगाते हैं।

बाड़ा – *पु०* चारों ओर से घिरी जगह; जैसे – जानवरों का बाड़ा।

बातूनी – *वि०* बहुत बात करनेवाला।

बाद – *अ०* पीछे, बाद में। *प्र०* रमेश के बाद सुरेश घर आया था।

बाधक – *वि०* अड़चन पैदा करनेवाला, रुकावट डालनेवाला।

बाधा – *स्त्री०* रुकावट, अड़चन। *प्र०* जीवन में बहुत-सी बाधाएँ आईं पर मैंने कभी हार नहीं मानी।

बाबू – *पु०* 1. पिता के लिए प्रयुक्त एक शब्द। 2. क्लर्क।

बारंबार – *अ०* बार-बार, कई बार।

बार – *स्त्री०* दफ़ा, मर्तबा; जैसे – एक बार, दस बार।

बारहसिंघा – *पु०* ऐसा हिरन जिसके सींगों की कई शाखाएँ होती हैं।

बारानी क्षेत्र – *पु०* ऐसा क्षेत्र जहाँ सिंचाई की सुविधा

न हो और लोग अपनी खेती-बाड़ी के लिए केवल वर्षा पर निर्भर करते हों।

बारानी खेती – *स्त्री०* ऐसी खेती जो केवल वर्षा के जल पर निर्भर करती है।

बारी – *स्त्री०* पारी, क्रम।

बारूद – *स्त्री०* एक मसाला जो आग लगाने से आवाज़ करते हुए भड़क उठता है; जैसे – गोला-बारूद।

बालचर – *पु०* स्काउट, सामाजिक सेवा के लिए प्रशिक्षित लड़के-लड़कियाँ।

बाल-बच्चे – *पु०* लड़के-बच्चे, संतान।

बालविवाह – *पु०* बचपन में शादी कर देने की बुरी प्रथा।

बालसम – *पु०* एक फूलदार पौधा।

बालिका – *स्त्री०* छोटी लड़की।

बालिश्त – *पु०* हाथ की सभी उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कानी उँगली के सिरे तक की दूरी, बित्ता।

बालुकाश्म – *पु०* बलुआ पत्थर, बालू के पत्थर से बनी चट्टान।

बालूकृमि – *पु०* मिट्टी में रहनेवाला एक चपटा कीड़ा।

बालोपयोगी (बाल + उपयोगी) – *वि०* लड़के-बच्चों के उपयोग या काम का; जैसे – बालोपयोगी पुस्तक।

बावजूद – *अ०* इतना होने पर भी, इतने पर भी। *प्र०* बावजूद इसके कि वहाँ कई लोग थे, उसने मुझे मारा-पीटा और गालियाँ दीं।

बावला – *वि०* पागल।

बास – *स्त्री०* महक, गंध।

बासी – *वि०* 1. कल का; जैसे – बासी खाना। 2. पुरानी, जो नई न हो; जैसे – बासी ख़बर।

बाहु – *स्त्री०* भुजा, बाँह।

बाह्य – *वि०* बाहरी, बाहर का।

बिंदी – *स्त्री०* 1. सिफ़र, ज़ीरो, शून्य, सुन्ना। 2. अनुस्वार; जैसे – 'अं' में 'अ' पर बिंदी है। 3. स्त्रियों के माथे पर लगा गोल टीका।

बिंदु – *पु०* 1. सिफ़र, ज़ीरो, शून्य, सुन्ना। 2. अनुस्वार; जैसे – 'कं' में 'क' पर बिंदु दिया गया है।

बिंधना – *क्रि०* छिदना, छिद जाना, छेदा जाना।
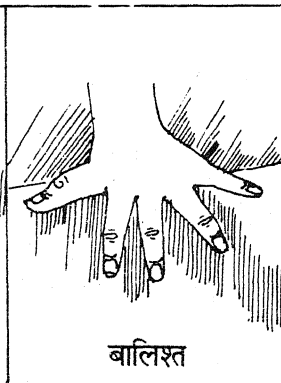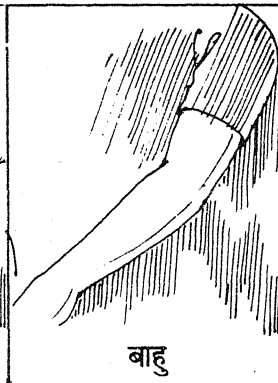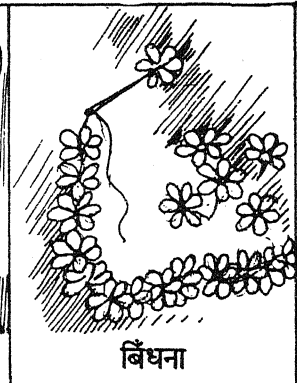
बालचर | बालिश्त | बाहु | बिंधना
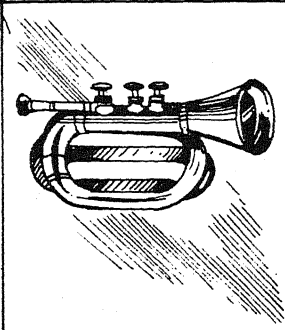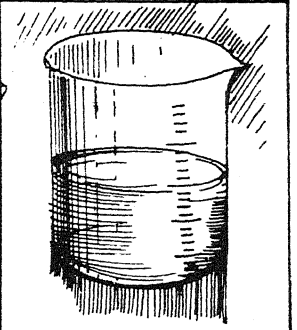
बिगुल बिछवा बिलाव बीकर

प्र० फूल बिंधकर माला बनते हैं।

बिगुल – पु० एक प्रकार का विलायती छोटा बाजा जो सैनिकों को एकत्र करने या मार्च करने आदि के लिए बजाते हैं।

बिछवा, बिछुआ, बिछुवा – पु० पैर की उँगली में पहनने का एक प्रकार का छल्ला (एक ज़ेवर)।

बिताना – क्रि० गुज़ारना, व्यतीत करना; जैसे – छुट्टी बिताना।

बित्ता – पु० दे० बालिश्त।

बिदूषक – पु० दे० विदूषक।

बिनौला – पु० कपास का बीज।

बिफरना – क्रि० नाराज़ हो जाना, बिगड़ जाना। प्र० हिमांशु की बात सुनते ही नितिन बिफर गया।

बियाबान – पु० उजाड़, सुनसान, जंगल।

बिरादरी – स्त्री० 1. भाई-बंद, भाई-बंधु, अपने परिवार या जाति के लोग, जाति-बिरादर। 2. वह आपसी लोगों का समूह जिसमें रोटी-बेटी का संबंध हो।

बिल – पु० 1. पैसे चुकाने का माँगपत्र, देयक; जैसे – बिजली का बिल, होटल का बिल, पानी का बिल। 2. संसद या विधानसभा में पेश किया गया विधेयक। 3. साँप, चूहे आदि के रहने का छेद।

बिलाव – पु० नर बिल्ली, बिल्ली।

बिलोना – क्रि० मथना। प्र० दही बिलोने से मक्खन निकलता है।

बिलौटा – पु० बिल्ली का बच्चा, नर बिल्ली।

बिसातख़ाना – पु० फुटकल चीज़ों (जैसे फीता, बनियाइन, मोजा (जुराब), क़लम, बिस्कुट आदि) की दूकान।

बिसाती – पु० बिसातख़ाने की दूकान का मालिक।

बीकर – पु० शीशे का चोंचदार गिलास जो प्रयोगशाला में काम आता है।

बीजगणित – पु० गणित का वह रूप जिसे हल करते समय संख्याओं को अक्षर मान लेते हैं, अलजब्रा।

बीट – पु० चिड़ियों का मैला, मल।

बी०सी०जी० – स्त्री० चेचक और तपेदिक न होने देने के लिए चार से नौ महीने के बीच बच्चों को लगाए जानेवाले टीके की दवा।

बुज़दिल – वि० कायर, कमज़ोर दिलवाला, डरपोक।

बुर्ज – पु० मीनार; जैसे – किले का बुर्ज।

बुलबुल – *स्त्री०* काले रंग की एक चिड़िया।

बुलबुला – *पु०* (पानी का) बुदबुदा, बुल्ला।

बुलेटिन – *स्त्री०* समाचार का सरकारी विवरण, स्वास्थ्य-विवरण, सरकारी समाचार की छपी शीट, बहुत छोटी पत्रिका।

बुशशर्ट – *स्त्री०* एक प्रकार की कमीज़, बुशर्ट।

बुहारी – *पु०* झाड़ू।

बूटा – *पु०* पेड़, पौधा।

बूटी – *स्त्री०* 1. दवा के काम आनेवाली जड़ी। 2. कपड़े या काग़ज़ पर बने चौकोर या गोल चिह्न, बेल-बूटा।

बूरा – *पु०* 1. भूरे रंग की कच्ची चीनी। 2. साफ़ की हुई बहुत सफ़ेद चीनी।

बृहन्मस्तिष्क – *पु०* मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग जिसे प्रमस्तिष्क भी कहते हैं। यह सोचने, सीखने, याद रखने तथा अनुभव करने आदि में सहायक होता है।

बेंज़ीन – *पु०* एक कार्बनिक पदार्थ।

बेअसर – *वि०* जिसका असर न हो, जिसका प्रभाव न हो। *प्र०* यह दवा बेअसर है।

बेगची – *स्त्री०* दे० टैडपोल।

बेगार – *स्त्री०* बिना पैसा दिए करवाया गया काम।

बेड़ा – *पु०* 1. बाँस या लकड़ी के टट्ठरों से बनी खुली नाव। 2. नावों या जहाज़ों का समूह; जैसे – समुद्री बेड़ा।

बेड़ी – *स्त्री०* क़ैदियों के पैरों में लगी ज़ंजीर।

बेडौल (बे + डौल) – *वि०* जो सुंदर या सुडौल न हो, भद्दा, टेढ़ा-मेढ़ा। (*विलोम* – सुडौल)।

बेढंगा (बे + ढंग) – *वि०* 1. बिना ढंग का, बुरे ढंगवाला; जैसे – बेढंगा लड़का। 2. भद्दा, कुरूप।

बेदिनखल्लन – *पु०* मेघालय का एक मुख्य त्योहार जो वर्षा का उत्सव है।

बेपनाह (बे + पनाह) – *वि०* बहुत अधिक, बहुत ज़्यादा; जैसे – बेपनाह ताक़त, बेपनाह ख़ूबसूरती।

बेमियादी – *वि०* जिसकी कोई सीमा या मियाद न हो; जैसे – बेमियादी हड़ताल, बेमियादी क़ैद।

बेमुद्दती – *वि०* जिसकी कोई मुद्दत या अवधि न हो; जैसे – बेमुद्दती हड़ताल।

बेला – *पु०* सफ़ेद रंग का ख़ुशबूदार फूल, मोतिया।
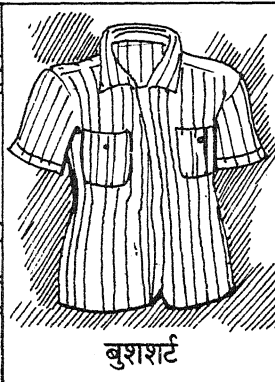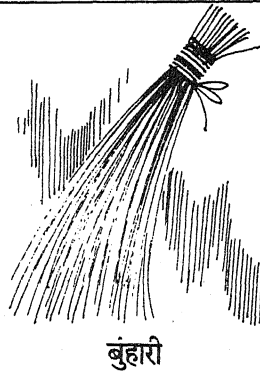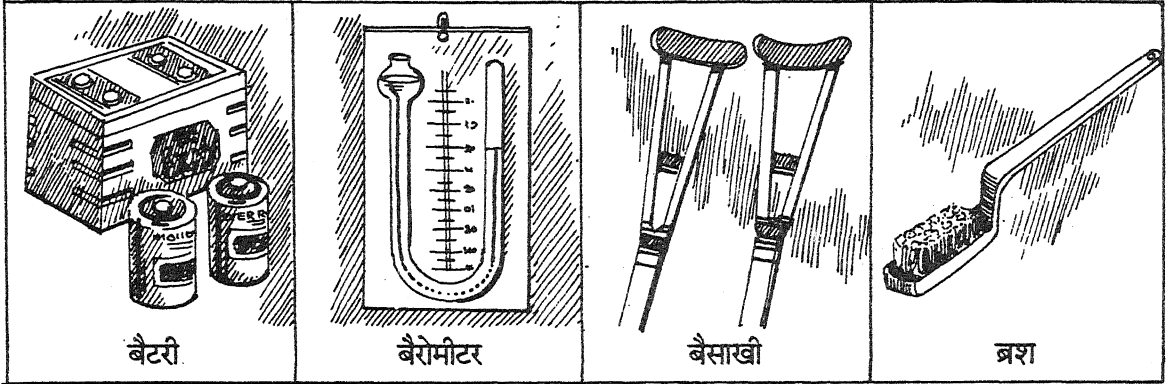
बैटरी बैरोमीटर बैसाखी ब्रश

बेसिन – पु॰ किसी क्षेत्र या देश का वह भाग जो किसी नदी या उसकी सहायक नदियों से सींचा जाता है।

बेहतर – *वि॰* अधिक अच्छा, ज़्यादा अच्छा। *प्र॰* राम अच्छा है पर मोहन बेहतर है।

बैंजनी – *वि॰* बैंगनी रंग का, बैंगनी।

बैटरी – *स्त्री॰* प्लास्टिक या धातु से बनी गोल या चौकोर डिबिया या डिब्बा जिसमें बिजली पैदा करने के पदार्थ भरे होते हैं; जैसे – टॉर्च की बैटरी, घड़ी की बैटरी, कार की बैटरी।

बैठक – *स्त्री॰* 1. सभा, मीटिंग। 2. ड्राइंग रूम, बैठने का कमरा। 3. एक प्रकार की कसरत, उठक-बैठक।

बैर – पु॰ शत्रुता, दुश्मनी।

बैरल – पु॰ 1. लकड़ी का बना गोल बरतन। 2. बंदूक या रिवॉल्वर की धातु की बनी नली।

बैरोमीटर – पु॰ हवा का दबाव नापने का उपकरण, वायुदाबमापी यंत्र।

बैलून – पु॰ रबर का थैला जिसमें हवा भरते और उड़ाते हैं, गुब्बारा।

बैसाख – पु॰ भारतीय पंचांग के अनुसार दूसरा महीना (मार्च-अप्रैल में) जो चैत के बाद तथा जेठ से पहले आता है, वैशाख।

बैसाखी – *स्त्री॰* 1. वैशाख की पूर्णिमा को मनाया जानेवाला एक पंजाबी त्योहार। 2. लँगड़ों के लिए बग़ल में लगाकर चलने की एक विशेष लाठी।

बोध – पु॰ ज्ञान, जानकारी।

बोरला – पु॰ राजस्थानी औरतों का माथे पर पहनने का एक गहना।

बोरिंग – पु॰ पानी या तेल निकालने के लिए ज़मीन में काफ़ी गहराई तक मशीन से छेद करना, बोर करना।

बोर्ड – पु॰ 1. परिषद्, समिति; जैसे – म्यूनिसिपल बोर्ड। 2. लकड़ी का चौकोर तख़्ता। 3. ब्लैक-बोर्ड। 4. गत्ता, मोटी दफ़्ती।

बोल्ट – पु॰ पेच, जिसे नट में डालकर कसते हैं।

बौद्ध – पु॰ बुद्ध धर्म को माननेवाला।

ब्रश – पु॰ दाँत साफ़ करने या जूते पर पॉलिश लगाने आदि का बनावटी बालों का एक उपकरण।

ब्रह्म – पु॰ परमात्मा, परमेश्वर।

ब्रह्मा – पु॰ सृष्टि की रचना करनेवाला, विधाता।

ब्रह्मांड – पु॰ चौदहों भुवनों का समूह, संपूर्ण सृष्टि।

ब्रिटिश – *वि॰* ब्रिटेन या इंग्लैंड से संबंध रखनेवाला, अंग्रेज़ी; जैसे – ब्रिटिश सरकार।

ब्रेल-लिपि– *स्त्री॰* अंधों के लिए बनाई गई एक उभरी-उभरी-सी लिपि, अंधलिपि।

ब्रैकेट – पु॰ लिखने में प्रयुक्त चिह्न [ ], { }, ( ), कोष्ठक।

ब्लॉटिंग पेपर – पु॰ काग़ज़ पर स्याही से लिखे हुए को सुखाने का मोटा खुरदरा काग़ज़, सोख़्ता।

ब्लीचिंग पाउडर – पु॰ कपड़ों में सफ़ेदी लाने और पानी साफ़ करने के काम आनेवाला पाउडर, रंग उड़ाने का पाउडर।

ब्लेड – पु॰ दाढ़ी बनाने के काम आनेवाली इस्पात की बनी धारदार पत्ती।

ब्लैक-बोर्ड – पु॰ कक्षा में सभी बच्चों के देखने के लिए दीवाल पर लगा या फ्रेम पर रखा काला तख़्ता जिस पर अध्यापक कक्षा के लिए लिखते हैं, श्यामपट्ट, तख़्तास्याह।

ब्लैडर – पु॰ 1. शरीर के भीतर की थैली जिसमें पेशाब जैसे बेकार के द्रव पदार्थ इकट्ठे होते हैं। 2. फुटबॉल आदि के भीतर की रबर की थैली जिसमें हवा भरते हैं।

भ

– देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का चौथा व्यंजन।

भंडार – पु॰ 1. तरह-तरह की खाने-पीने की चीज़ें रखने का बड़ा कमरा। *प्र॰* आटा भंडार में रख दो। 2. ख़ज़ाना। *प्र॰* विवेकानंद ज्ञान के भंडार थे।

भंडारा – पु॰ बहुत-से साधुओं को इकट्ठा खिलाया जानेवाला भोज, लंगर। *प्र॰* इस मंदिर में हर महीने भंडारा होता है।

भँवर – पु॰ नदी में तेज़ी से गोल-गोल घूमता हुआ पानी का चक्र जिसमें फँसकर व्यक्ति, नाव आदि अक्सर डूब जाते हैं।

भक्त – पु॰ जो भक्ति करे, मन में श्रद्धा और आस्था की भावना रखनेवाला।

भक्ति – *स्त्री॰* ईश्वर या आदर्श व्यक्ति के लिए पूजा, श्रद्धा और अटूट विश्वास का भाव।

भक्षक – *वि॰* खानेवाला, भक्षण करनेवाला। (*विलोम* – रक्षक)।

भगदड़ – *स्त्री॰* डर और हड़बड़ी में बहुत-से लोगों का भागना। *प्र॰* जँगले को तोड़कर शेर के बाहर निकलते ही भगदड़ मच गई।

भगवा – *वि॰* गेरू जैसा रंग, गेरुए रंग में रँगा हुआ।
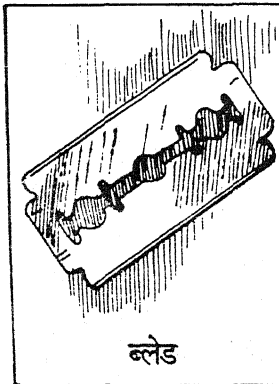
ब्लेड | ब्लैक-बोर्ड | ब्लैडर | भँवर

भट्ठी | भड़भूँजा | भरतनाट्यम
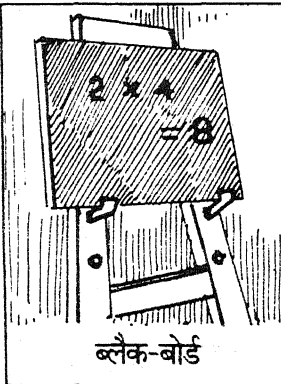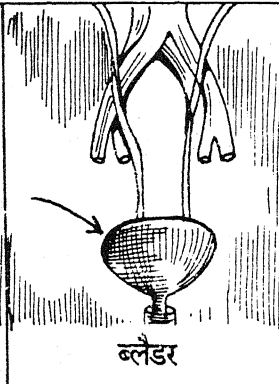
प्र० वह साधु भगवे वस्त्र पहने हुए था।

भगिनी – *स्त्री०* बहिन।

भग्न – *वि०* टूटा हुआ, नष्ट। *प्र०* यह भग्न मूर्ति औरंगज़ेब द्वारा नष्ट किए मंदिर की है।

भटकना – *क्रि०* 1. रास्ता भूल जाना। *प्र०* शहर में नया होने के कारण मोहन वहाँ की गलियों में भटक गया। 2. इधर-उधर फिरना, व्यर्थ घूमना। *प्र०* नौकरी की खोज में वह छः महीने तक भटकता रहा।

भट्ठी – *स्त्री०* बड़ा चूल्हा।

भड़कना – *क्रि०* 1. ज़ोर से जल उठना। *प्र०* घी डालने से आग भड़क उठती है। 2. उत्तेजित हो जाना, क्रोधित होना। *प्र०* रिश्वत की बात सुनते ही ईमानदार अफ़सर भड़क उठा।

भड़कीला – *वि०* चमक-दमकवाला। *प्र०* जादूगर ने भड़कीले कपड़े पहने हुए थे।

भड़भूँजा – *पु०* एक हिंदू जाति जो चना, लाई आदि का दाना भूनने का काम करती है

भद्र – *वि०* भला, शरीफ़, शिष्ट। *प्र०* आज एक भद्र व्यक्ति ने मेरी बहुत मदद की।

भनक – *स्त्री०* हल्की-सी आवाज़, आशंका, आभास। *प्र०* कमरे में किसी के आने की भनक मिलते ही चोर भाग गए।

भभकी – *स्त्री०* झूठी धमकी। *प्र०* मैं उसकी भभकियों की परवाह नहीं करती।

भयंकर – *वि०* जिसे देखने से डर लगे, डरावना, भीषण।

भयभीत – *वि०* डरा हुआ। *प्र०* डाकुओं के हमले से सभी गाँववाले भयभीत हो गए।

भरण-पोषण – *पु०* पाल-पोसकर बड़ा करना, लालन-पालन।

भरतनाट्यम – *पु०* तमिलनाडु का एक प्रसिद्ध नृत्य।

भरपूर – 1. *वि०* खूब भरा हुआ, पूरी तरह से भरा हुआ, पूरा-पूरा। 2. *क्रि० वि०* अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से।

भरमार – *स्त्री०* बहुत अधिक, बहुतायत। *प्र०* उस किताब में ग़लतियों की भरमार है।

भरसक – *अ०* जहाँ तक हो सके, यथासंभव। *प्र०* पढ़ने-लिखने में मैं आपकी भरसक सहायता करूँगा।

भर्त्सना – *स्त्री०* निंदा, भला-बुरा कहना, अपमानजनक बातें करना, सही-ग़लत खोट निकालना।

भवदीय – *वि०* आपका (इस शब्द का प्रयोग केवल पत्र के अंत में पत्र लिखनेवाला अपना नाम लिखने से पहले करता है)।

भवानी – *स्त्री०* दुर्गा, पार्वती।

भविष्य – *पु०* आगे आनेवाला समय, वर्तमान काल के बाद आनेवाला काल। *प्र०* भविष्य में मैं तुम्हें पैसा उधार नहीं दूँगा।

भविष्यवाणी – *स्त्री०* भविष्य में होनेवाली बात को पहले से ही बताना; जैसे – मेरे वक़ील बनने की भविष्यवाणी उस ज्योतिषी ने पहले ही कर दी थी।

भव्य – *वि०* देखने में बड़ा और सुंदर, शानदार; जैसे – भव्य इमारत, भव्य व्यक्तित्व।

भस्म – *पु०* राख।

भाँति – *स्त्री०* क़िस्म, तरह, प्रकार। *प्र०* शैतान बच्चा बंदर की भाँति पेड़ पर चढ़ गया।

भाँपना – *क्रि०* समझ जाना, अनुमान कर लेना, ताड़ना। *प्र०* वह उनका इरादा भाँप गया।

भाईचारा – *पु०* भाई की-सी भावनावाला संबंध। *प्र०* सभी धर्मों के लोगों में आपस में भाईचारा होना चाहिए।

भाग – *पु०* 1. अंश, हिस्सा। *प्र०* गंगा नदी बिहार के उत्तरी भाग से बहती है। 2. गणित में किसी संख्या को अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया। *प्र०* दस को दो से भाग दें तो भागफल पाँच होगा। 3. भाग्य, तक़दीर। *मु० भाग फूटना* – बुरे दिन आना। *प्र०* यहाँ आकर मेरा तो भाग ही फूट गया।

भाग-दौड़ – *स्त्री०* किसी काम के लिए बहुत कोशिश करना, दौड़-धूप, बहुत प्रयत्न *प्र०* उसने मेरी नौकरी के लिए बहुत भाग-दौड़ की।

भागफल – *पु०* किसी संख्या को दूसरी संख्या से भाग देने पर जो संख्या प्राप्त होती है उसे भागफल कहते हैं। *प्र०* यदि बारह भाज्य संख्या है और तीन भाजक संख्या तो भागफल चार होगा।

भाग्य – *पु०* क़िस्मत, तक़दीर, नसीब। *प्र०* मेरे भाग्य में धन-दौलत नहीं है।

भाजक – *पु०* गणित में वह संख्या जिससे किसी संख्या को भाग देते हैं। *प्र०* 32 ÷ 8 में 8 भाजक है।

भाज्य – *पु०* गणित में वह संख्या जिसे भाग दिया जाता है। *प्र०* 32 ÷ 8 में 32 भाज्य है।

भाट – *पु०* राजा और उनके वंश की प्रशंसा में गीत लिखने और गानेवाला कवि, चारण।

भवानी | भाईचारा | भाट

भाटा | भाला | भिक्षु | भिश्ती
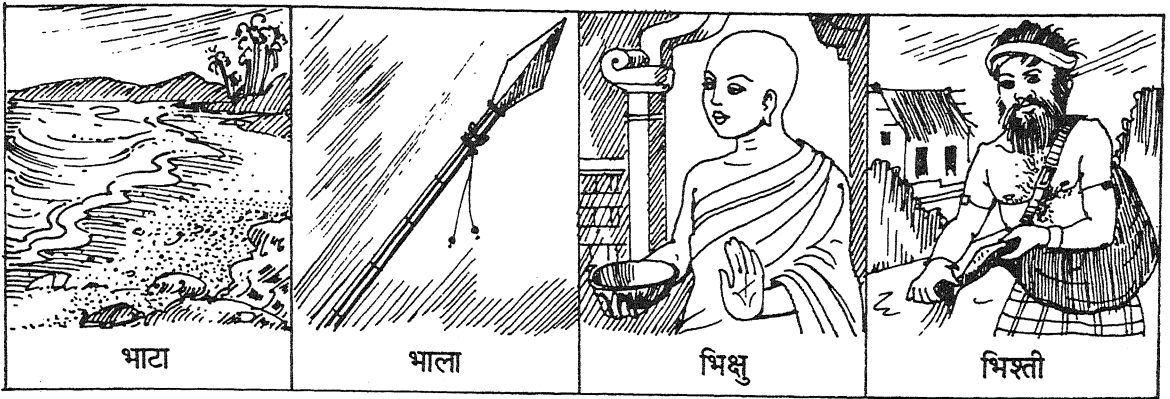
भाटा – पु॰ समुद्र के पानी का उतार। (*विलोम* – ज्वार)।

भाड़ा – पु॰ किराया। प्र॰ इस सामान को गाड़ी में ले जाने का कितना भाड़ा लगेगा?

भात – पु॰ पका हुआ चावल।

भाद्रपद – पु॰ भारतीय पंचांग के अनुसार छठा महीना, भादों का महीना जो श्रावण के बाद और आश्विन के पहले पड़ता है।

भार – पु॰ 1. बोझ। प्र॰ इस बक्से का भार बहुत ज़्यादा है। 2. ज़िम्मेदारी, दायित्व। प्र॰ पिता की मृत्यु के बाद पूरे घर का भार उसके कंधों पर आ गया।

भाला – पु॰ नुकीले फलवाला एक हथियार, बरछा। प्र॰ आदि मानव पशुओं को मारने के लिए भाले का प्रयोग करता था।

भाव – पु॰ 1. शब्द, वाक्य, पैरा आदि का अर्थ। प्र॰ मुझे इस कविता का भाव समझाओ। 2. क़ीमत, मूल्य, दर। प्र॰ इस गेहूँ का क्या भाव है? 3. दे॰ भावना।

भावना – स्त्री॰ जो कुछ मन में महसूस किया जाए। प्र॰ बच्चों में देशप्रेम की भावना भरनी चाहिए।

भावार्थ – पु॰ वह अर्थ जिसमें अलग-अलग शब्दों का अर्थ न देकर पूरे वाक्य, पद या पैराग्राफ़ का आशय समझाया जाए।

भिक्षा – स्त्री॰ भीख।

भिक्षु – पु॰ 1. भीख माँगनेवाला, भिखारी। 2. साधु, संन्यासी।

भिखमंगा – पु॰ भीख माँगनेवाला, भिक्षुक।

भिड़ना – क्रि॰ 1. टकराना। 2. लड़ना। प्र॰ अर्जुन अकेले ही हज़ारों शत्रुओं से भिड़ जाता था।

भिनकना – क्रि॰ मक्खियों के परों से भिन-भिन की आवाज़ होना, किसी चीज़ का बहुत गंदा होना। प्र॰ गंदी चीज़ों पर मक्खियाँ भिनकती रहती हैं।

भिन्न – वि॰ 1. गुणों और विशेषताओं में अलग। प्र॰ आदि मानव का जीवन आज के हमारे जीवन से भिन्न था। 2. गणित में वह संख्या जो पूर्ण संख्या से कम हो; जैसे – 4/5, 8/9।

भिश्ती – पु॰ मशक (चमड़े का बड़ा थैला) में पानी ढोनेवाला। प्र॰ भिश्ती लोगों को मशक से पानी पिलाने का काम किया करते थे।

भींचना – क्रि॰ कसकर दबाना, बंद करना, खींचना। प्र॰ उस व्यक्ति की भयानक शक्ल देखकर बच्चे ने आँखें भींच लीं।

भीनी – *वि०* 1. हल्की, मंद (ख़ुशबू)। 2. से भरी हुई। *प्र०* बच्चों ने अपने अध्यापक को भावभीनी विदाई दी।

भीरु – *वि०* डरपोक।

भील – *पु०* एक जंगली जाति। *प्र०* राजस्थान के पहाड़ी भाग में भील और गोंड बसते हैं।

भीषण – *वि०* बहुत भयानक, डरावना। *प्र०* अभिमन्यु के भीषण बाणों की चोट से बड़े-बड़े वीर भयभीत होकर भागने लगे।

भुगतान – *पु०* क़ीमत या दाम देना, चुकाना, अदायगी। *प्र०* बिजली के बिल का भुगतान आज ही कर दो।

भुजंग – *पु०* साँप।

भुजा – *स्त्री०* हाथ, बाँह।

भुट्टा – *पु०* मक्के की हरी कुकड़ी जिसमें दाने लगे होते हैं, मकई।

भुनगा – *पु०* उड़नेवाला छोटा कीड़ा।

भुनाना – *क्रि०* 1. बड़े नोटों को छोटे नोटों से या बड़े सिक्कों को छोटे सिक्कों से बदलना। 2. कोई चीज़ भूनने का काम करवाना।

भुरभुरा – *वि०* जो चीज़ हाथ लगने से भी टूटकर चूरा हो जाए। *प्र०* ये भुरभुरे बिस्कुट खाने लायक नहीं हैं।

भुलावा – *पु०* छल, धोखा, बहकाने की तरकीब।

भूकंप – *पु०* धरती के अंदर होनेवाली उथल-पुथल से धरती के ऊपरी हिस्से का ज़ोरों से हिलना, काँपना, भूचाल, ज़लज़ला।

भूखंड – *पु०* भूमि का एक टुकड़ा।

भूगर्भ – *पु०* पृथ्वी का भीतरी भाग।

भूगोल – *पु०* वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी और उसकी प्राकृतिक बनावट के बारे में जानकारी दी जाए।

भूचाल – *पु०* दे० भूकंप।

भूतपूर्व – *वि०* जो पहले बीत चुका हो, वर्तमान समय से पहले का, निवर्तमान।

भूमध्यरेखा – *स्त्री०* वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटती है।

भूमि – *स्त्री०* ज़मीन, धरती।

भूरा – *वि०* मिट्टी जैसा रंग, ख़ाकी रंग।

भूसा – *पु०* गेहूँ, जौ आदि के डंठल के बारीक टुकड़े जो पशुओं के खाने के काम आते हैं।

भील | भुजंग | भुट्टा | भूमध्यरेखा

भेंट | भेरि | भोंपू | भौंह
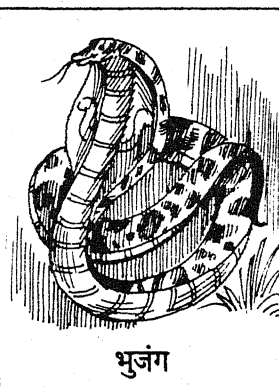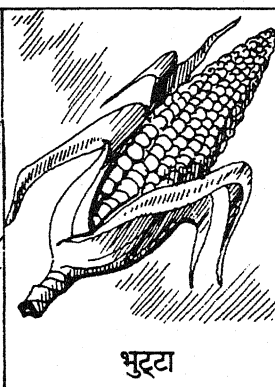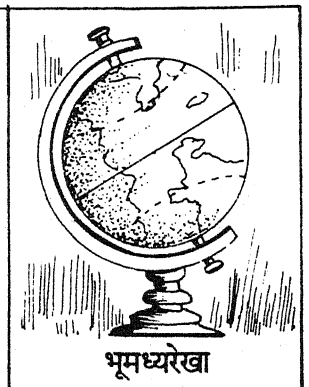
भेंट – *स्त्री॰* 1. मिलना, मुलाक़ात। *प्र॰* कल मैंने तुम्हारे पिताजी से भेंट की थी। 2. उपहार, नज़राना। *प्र॰* राजा ने ब्राह्मण को दरबार में बुलाकर मोहरों की थैली भेंट की।

भेद – *पु॰* 1. फ़र्क, अंतर। 2. छिपी हुई बात, रहस्य। *प्र॰* अपना भेद खुल जाने पर दिनेश बहुत शर्मिंदा हुआ।

भेदभाव – *पु॰* अलग-अलग व्यक्तियों या वर्गों के साथ अलग-अलग व्यवहार। *प्र॰* लड़के और लड़कियों में भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

भेदिया – *पु॰* भेद लेनेवाला, जासूस, गुप्तचर।

भेरि – *स्त्री॰* नगाड़ा, डंका।

भेष – *पु॰* कपड़े आदि पहनने का ढंग, बाहरी रूप, वेश। *प्र॰* रावण साधु के भेष में सीता के पास भीख माँगने आया था।

भोंकना – *क्रि॰* तलवार आदि नुकीली चीज़ को शरीर में धँसाना, घुसेड़ना।

भोंड़ा – *वि॰* भद्दा, बदशक्ल।

भोंपू – *पु॰* 1. एक प्रकार का बाजा जिसे फूँककर बजाते हैं, तुरही। 2. कारख़ानों आदि की ज़ोरों से बजनेवाली सीटी। *प्र॰* कारख़ाने का भोंपू बजते ही मज़दूर अपने-अपने घर जाने की तैयारी करने लगे।

भोग – *पु॰* 1. सुख-दुख का अनुभव। 2. देवताओं के आगे चढ़ाया जानेवाला प्रसाद।

भोगना – *क्रि॰* सहना, भुगतना, सुख-दुख का अनुभव करना। *प्र॰* जो जैसा काम करेगा, वैसा ही फल भोगेगा।

भोजनालय – *पु॰* रसोईघर, खाना बनने और मिलने की जगह।

भोज्य – 1. *पु॰* भोजन, खाद्य-सामग्री। 2. *वि॰* जो खाया जा सके, खाने योग्य।

भोथरा – *वि॰* जिसकी धार कुंद हो गई हो; जैसे – भोथरा चाकू।

भोर – *पु॰* रात बीतने और सूरज निकलने के बीच का समय, सुबह।

भौंरा – *पु॰* काले रंग का उड़नेवाला कीड़ा जो फूलों का रस चूसता है, भँवरा।

भौंह – *पु॰* आँख की ऊपरवाली हड्डी पर उगे हुए बाल या रौंए, भौं।

भौगोलिक – *वि॰* भूगोल से संबंधित।

भौतिक – *वि॰* 1. वह वस्तु जिसे देखा, सुना, छुआ,

चखा या सूँघा जा सके। 2. सांसारिक, दुनियावी।

भ्रम – पु॰ किसी बात को कुछ का कुछ समझ लेना, ग़लतफ़हमी। प्र॰ कुछ लोगों का यह भ्रम है कि कुष्ठ रोग का इलाज नहीं है।

भ्रमण – पु॰ घूमना-फिरना, यात्रा।

भ्रमर – पु॰ भौंरा।

भ्रष्ट – *वि॰* नीचे गिरा हुआ, पतित, दुराचारी। *प्र॰* भ्रष्ट लोग रिश्वत को पाप की कमाई नहीं समझते।

भ्रष्टाचार (भ्रष्ट + आचार) – पु॰ बेईमानी, रिश्वतख़ोरी, ग़लत आचरण।

भ्राता – पु॰ भाई।

भ्रातृत्व – पु॰ भाई-भाई के बीच और बहिन के मन में भाई के लिए प्रेम और आदर की भावना।

भ्रामक – *वि॰* भ्रम पैदा करनेवाला, बहकानेवाला।

म

म – देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन।

मंगल – पु॰ 1. शुभ, कल्याण, भलाई। 2. सौरमंडल का एक ग्रह। *प्र॰* बिना आदमी के रॉकेट तो अब मंगल और शुक्र ग्रहों तक पहुँच चुके हैं। 3. सप्ताह का एक दिन, मंगलवार।

मंच – पु॰ ज़मीन से थोड़ी ऊँची जगह जिस पर भाषण, नाटक, संगीत आदि का कार्यक्रम होता है, स्टेज।

मँझला – *वि॰* बीच का। *प्र॰* तीनों भाइयों में मँझला सबसे सुंदर है।

मंडप – पु॰ किसी उत्सव आदि के लिए बनाया गया स्थान जिसकी छत बाँस, घास-फूँस की होती है और जो चारों ओर से खुला होता है।

मँडराना – *क्रि॰* 1. किसी वस्तु के ऊपर घूमकर उड़ना। *प्र॰* भँवरे फूलों पर मँडरा रहे हैं। 2. किसी के आसपास ही घूम-फिरकर रहना। *प्र॰* मरे हुए पशु के आसपास कुत्ते मँडरा रहे हैं।

मंडल – पु॰ 1. गोल घेरा; जैसे – भूमंडल। 2. समिति; जैसे – प्रतिनिधि मंडल। 3. गाँवों का समूह, इलाक़ा।

मंडली – *स्त्री॰* टोली। *प्र॰* मित्र मंडली कहाँ जा रही है ?

मंत्र – पु॰ 1. ऐसा शब्द या शब्दों का समूह जिसका प्रयोग किसी देवता की पूजा, स्तुति या किसी काम
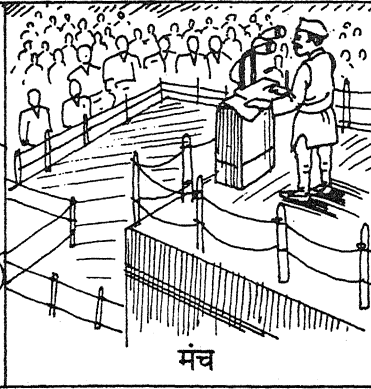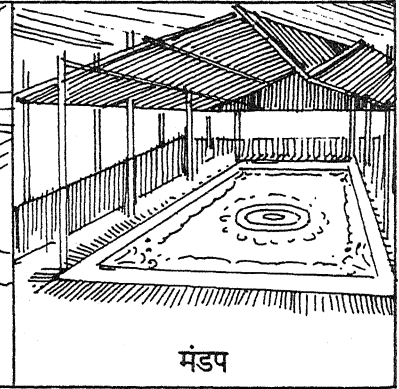
भ्रमर | मंच | मंडप
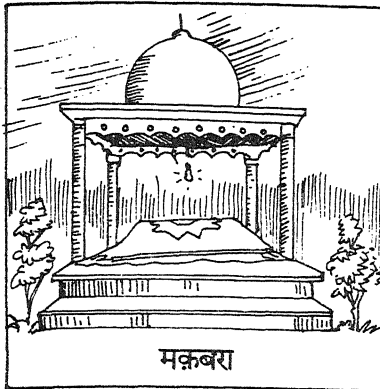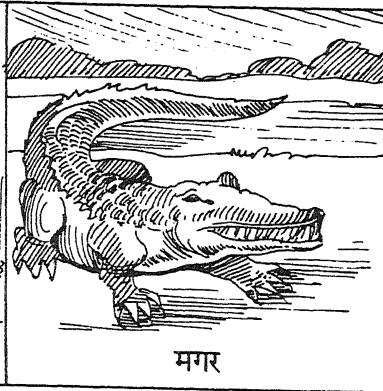
मक़बरा मगर मछुआ

की सफलता के लिए किया जाता है। प्र० मंदिर से मंत्रों के पाठ की आवाज़ आ रही है। 2. किसी काम को सफलतापूर्वक करने का गुर या ढंग। प्र० भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाने के मंत्र वह खूब जानता है।

मंत्री – पु० 1. किसी राज्य के शासक के विभिन्न विभागों में से एक या अधिक का शासक; जैसे – विदेश मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री। 2. राज्य के कामों में राजा को सलाह देनेवाला, सचिव, अमात्य। प्र० राजा ने मंत्री से कहा, जाओ यह सूचना सारे राज्य में फैला दो।

मंद – वि० धीमा, सुस्त, हल्का। प्र० वह बचपन में दीपक की मंद रोशनी में पढ़ा करता था।

मकई – स्त्री० एक तरह का अनाज, मक्का, भुट्टा।

मक़बरा – पु० वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो, मज़ार। प्र० बादशाह अकबर का मक़बरा सिकंदराबाद (आगरा) में है।

मकरंद – पु० फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे चूसते हैं।

मक्कार – वि० धोखेबाज़, धूर्त। प्र० मक्कार लोगों से बचकर रहना चाहिए।

मख़मल – स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मगर – 1. पु० पानी में रहनेवाला एक जलजंतु, मगरमच्छ। 2. अ० परंतु, लेकिन। प्र० मैंने बहुत कोशिश की, मगर उसकी शादी में नहीं पहुँच सका।

मग्न – वि० 1. जो किसी काम या व्यक्ति के ध्यान में सब-कुछ भूल गया हो, तन्मय, तल्लीन। प्र० थामस एडीसन अपने काम में इतना मग्न रहता था कि खाना-पीना ही भूल जाता था। 2. डूबा हुआ; जैसे – जल-मग्न।

मचलना – क्रि० किसी चीज़ को लेने या न देने के लिए ज़िद करना। प्र० बच्चा खिलौने के लिए मचलने लगा।

मछुआ – पु० मछली पकड़नेवाला, मछुआरा।

मजबूर – वि० लाचार, बिना वश का, विवश। प्र० पैसे न होने के कारण मजबूर होकर उसे अपनी घड़ी बेचनी पड़ी।

मज़ार – पु० समाधि, मक़बरा। प्र० मुमताज महल का मज़ार आगरा में है।

मटमैला – वि० मिट्टी के रंग का, ख़ाकी रंग का।

प्र॰ विटामिन 'ए' की कमी से आँख पर मटमैले धब्बे पड़ जाते हैं।

मटियामेट – *वि॰* जो नष्ट हो गया हो, जो मिट्टी में मिल गया हो। प्र॰ पड़ोसी राजा के हमले से यह शहर मटियामेट हो गया।

मट्ठा – *पु॰* पानी मिली हुई दही जिसमें से मथकर घी निकाल लिया गया हो, छाछ।

मठ – *पु॰* जहाँ साधु-संन्यासी रहते हों, आश्रम।

मढ़ना – *क्रि॰* 1. किसी वस्तु पर ऐसी चीज़ लगाना जिससे वह वस्तु पूरी तरह ढक जाए; तस्वीर या किताब को मढ़ना। 2. आरोप लगाना। प्र॰ अपनी करतूतों का दोष मुझ पर मत मढ़ो।

मणि – *स्त्री॰* क़ीमती पत्थर, रत्न।

मणिपुरी – *पु॰* 1. मणिपुर का एक प्रसिद्ध नृत्य। 2. मणिपुर का रहनेवाला।

मत – 1. पु॰ (क) राय, विचार, सम्मति। प्र॰ इस मामले में घर के मुखिया का मत जान लेना आवश्यक है। (ख) किसी प्रस्ताव या चुनाव में डाले जानेवाले वोट। प्र॰ संसद् में इस प्रस्ताव के पक्ष में अधिक मत डाले गए। 2. *अ॰* नहीं (केवल आज्ञावाले वाक्यों में)। प्र॰ शोर मत करो।

मतगणना – *स्त्री॰* मतों, वोटों की गिनती।

मतदाता – *पु॰* प्रतिनिधि को चुनने के लिए मत या वोट देनेवाला।

मतभेद – *पु॰* दो या उससे अधिक लोगों के विचारों/मतों में अंतर होना, किसी विषय पर अलग-अलग राय होना। प्र॰ गाँव के मुखिया के चुनाव को लेकर गाँववालों में काफ़ी मतभेद पैदा हो गया।

मतवाला – *वि॰* 1. मस्त। 2. नशे में डूबा हुआ, मदमस्त। 3. किसी काम की धुन में मगन।

मति – *स्त्री॰* बुद्धि, समझ। मु॰ *मति मारी जाना* – अक़्ल काम न करना। प्र॰ लगता है संजय की मति मारी गई है जो पढ़ाई छोड़कर इधर-उधर के कामों में लगा रहता है।

मत्स्य – *पु॰* मछली।

मद – *पु॰* 1. नशा। प्र॰ पैसे के मद ने उसे घमंडी बना दिया है। 2. मस्ती। 3. ऐंठ। 4. हाथी की कनपटी से बहनेवाला तरल पदार्थ।

मधु – *पु॰* शहद।

मधुर – *वि॰* 1. मीठा, प्रिय, अच्छा; जैसे – मधुर

मठ | मणिपुरी | मतदाता | मत्स्य

मध्य | मनका | मनमुटाव | मनीऑर्डर
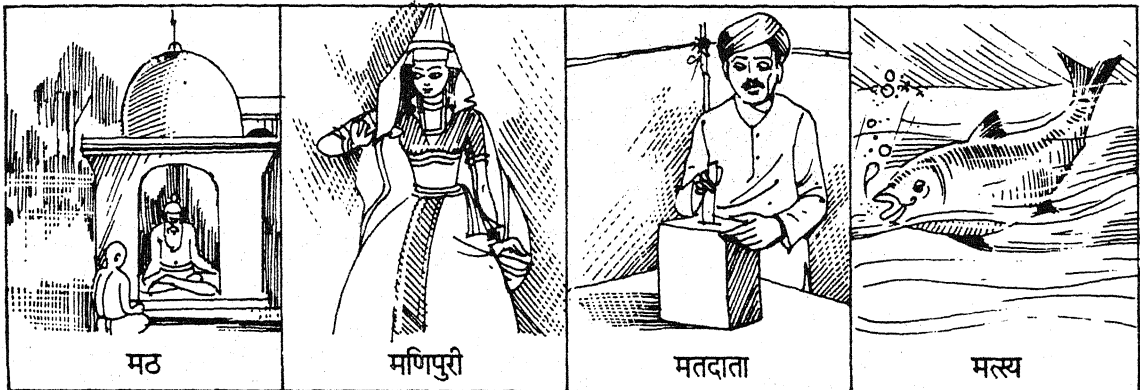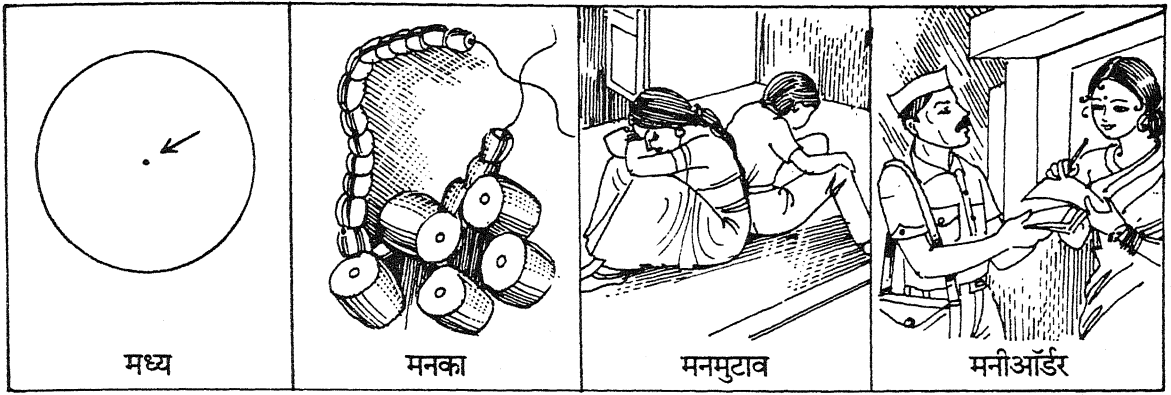
संबंध। 2. जो सुनने में अच्छा लगे; जैसे – मधुर गीत।

मध्य – पु॰ किसी चीज़ के बीच का हिस्सा, केंद्र। प्र॰ इस गोले के मध्य में एक रेखा खींचो।

मध्यस्थता – स्त्री॰ किसी बहस में दोनों तरफ़ की बात सुनकर समझौते का रास्ता निकालना। प्र॰ तुम्हारी मध्यस्थता के बिना वे दोनों किसी फ़ैसले पर नहीं पहुँच पाएँगे।

मध्यांतर – पु॰ छोटा अवकाश, इंटरवल। प्र॰ फ़िल्म के मध्यांतर के दौरान मैंने चाय पी।

मध्याह्न – पु॰ दोपहर।

मन – पु॰ 1. दिल, हृदय। प्र॰ सीमा ने मन में फ़ैसला किया कि वह कभी भीख नहीं माँगेगी। 2. चाह, इच्छा। प्र॰ उसका फ़िल्म देखने को मन नहीं है। *मु॰ मन का कच्चा*– कमज़ोर दिल का। मन से उतरना– किसी के मन में अपने लिए स्नेह या इज़्ज़त ख़त्म हो जाना। प्र॰ अपनी करतूतों के कारण वह अध्यापकों के मन से उतर गया है।

मनका – पु॰ लकड़ी, धातु आदि के छेदवाले दाने जिनके आरपार धागा डालकर माला पिरोई जाती है।

मनमुटाव – पु॰ किसी झगड़े या बहस के कारण दो व्यक्तियों में पहले जैसा स्नेह का भाव न रहना। प्र॰ पैसे के लेन-देन को लेकर गहरे से गहरे दोस्तों में भी मनमुटाव पैदा हो जाता है।

मनहूस – *वि॰* अभागा, अशुभ, उदासीभरा। प्र॰ अपना मनहूस चेहरा मुझे फिर न दिखाना।

मनाही – स्त्री॰ न करने की आज्ञा, रोक, निषेध।

मनीऑर्डर – पु॰ डाक द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर रुपया भेजने की व्यवस्था।

मनीषी – 1. *वि॰* बुद्धिमान्। 2. पु॰ बुद्धिमान् व्यक्ति।

मनुज – पु॰ मनु की संतान, मनुष्य।

मनोकामना – स्त्री॰ मन की इच्छा। प्र॰ बेटे के डॉक्टर बन जाने से माँ की मनोकामना पूरी हो गई।

मनोनीत – *वि॰* चुना हुआ, नामज़द। प्र॰ हमारी प्रिंसिपल ने सुधा को छात्र-संगठन की अध्यक्षा मनोनीत किया।

मनोमालिन्य – पु॰ मनमुटाव, वैमनस्य, मन में मैल आना। प्र॰ आजकल उन दोनों के बीच कुछ मनोमालिन्य है।

मनोयोग – पु॰ पूरे मन और दिमाग़ से (किसी एक

काम में जुट जाना)। *प्र०* वह बहुत मनोयोग से एम० ए० की परीक्षा की तैयारी कर रहा है।

मनोरथ – पु० दे० मनोकामना।

मनोरम – *वि०* सुंदर, मन में रम जानेवाला। *प्र०* उत्तर प्रदेश में अल्मोड़ा, रानीखेत जैसे कई मनोरम पहाड़ी क्षेत्र हैं।

मनोविकार – पु० मन को परेशान या मैला करनेवाली भावनाएँ, आवेग, ख़राबियाँ। *प्र०* फ़िल्मों में दिखाई जानेवाली हिंसा बच्चों में मनोविकार पैदा कर सकती है।

मनोविज्ञान – पु० व्यक्ति के मन में उठनेवाली भावनाओं की जाँच-पड़ताल, अध्ययन।

मनोहर – *वि०* दे० मनोरम।

मन्नत – *स्त्री०* मन में चाही हुई बात या काम पूरा हो जाने पर किसी देवता की पूजा करने का संकल्प, मनौती, मानना। *प्र०* हरीश ने परीक्षा में पास होने की मन्नत हनुमान् मंदिर में माँगी।

मरहम – पु० घाव पर लगाया जानेवाल गाढ़ा लेप। *प्र०* चोट लगने पर तुरंत मरहम-पट्टी करनी चाहिए।

मरियल – *वि०* कमज़ोर, बहुत दुबला। *प्र०* यह मरियल आदमी इतना बोझ कैसे उठाएगा?

मरीचिका – *स्त्री०* धूप में चमकती हुई रेगिस्तान की रेत को दूर से देखकर पानी होने का भ्रम।

मरुभूमि – *स्त्री०* रेतीला मैदान जहाँ पानी नहीं होता, रेगिस्तान, मरुस्थल। *प्र०* मरुभूमि में पैदल यात्रा करना बहुत कष्टदायक होता है।

मर्यादा – *स्त्री०* 1. आचार-व्यवहार की सीमाएँ जिन्हें तोड़ना धर्म और समाज द्वारा अच्छा नहीं समझा जाता। *प्र०* हमारे समाज में स्त्रियों के लिए निर्धारित मर्यादाएँ ज़्यादा कड़ी होती हैं। 2. प्रतिष्ठा।

मलद्वार – पु० शरीर का वह अंग जिससे मल निकलता है, गुदा। *प्र०* शरीर का अनपचा भोजन मलद्वार द्वारा बाहर जाता है।

मलमल – *स्त्री०* महीन सूती कपड़ा।

मलहम – पु० दे० मरहम।

मलिन – *वि०* 1. मैला, गंदा। 2. उदास।

मल्ल – पु० कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान।

मल्लाह – पु० एक जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना पेट भरती है, केवट, माँझी।

मवेशी – पु० दूध देने या बोझा ढोनेवाले पालतू पशु; जैसे – गाय, भेड़, बकरी आदि।
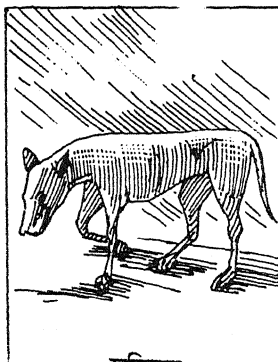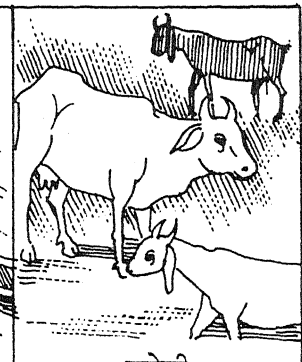
मरियल | मल्ल | मल्लाह | मवेशी
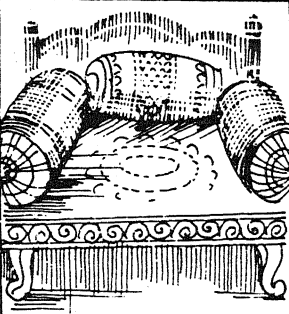
मशक मसनद मसूड़ा मस्तक
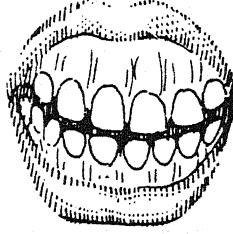
मशक – स्त्री॰ भेड़ या बकरी की खाल से बना हुआ थैला जिससे भिश्ती पानी ढोते हैं।

मसनद – पु॰ गोल और लंबा तकिया, गाव तकिया।

मसलना – *क्रि॰* हाथ से दबाते हुए रगड़ना, मलना। प्र॰ अगर फूल को मसलें, तो मुरझा जाता है।

मसूड़ा, मसूढ़ा – पु॰ दाँतों के ऊपर और नीचे का मांस जिसमें दाँतों की जड़ें होती हैं।

मसोसना – *क्रि॰* 1. ऐंठना, मरोड़ना, दबाना। प्र॰ इस काग़ज़ को मसोसकर एक गोला बनाओ। 2. किसी दुख या इच्छा को मन में दबाकर रखना। प्र॰ ग़रीब किसान अपने बेटे के लिए स्वेटर नहीं ख़रीद सका, तो वह मन मसोसकर रह गया।

मस्त – *वि॰* 1. किसी बात की चिंता न करनेवाला, बेफ़िक्र। प्र॰ मस्त होकर जीना सीखो। 2. मतवाला, नशे में। प्र॰ वह शराब पीकर इतना मस्त हो गया कि पुलिसवाले से लड़ बैठा।

मस्तक – पु॰ सिर, माथा।

मस्तिष्क – पु॰ दिमाग़।

मस्सा – पु॰ शरीर पर दाने के रूप में उभरा हुआ गहरे रंग का मांस का टुकड़ा।

महंत – पु॰ मठ या साधु-संघ का मुखिया।

महक – स्त्री॰ गंध, बू। प्र॰ रातरानी के फूल की महक अच्छी होती है।

महत्ता – स्त्री॰ बड़ापन, श्रेष्ठ, आदरणीय और महत्त्वपूर्ण होने का भाव। प्र॰ हिंदुओं के धार्मिक समारोहों में गणेशजी की बड़ी महत्ता है।

महत्त्व – पु॰ उत्तमता, बड़ापन, ज़रूरी होने का भाव। प्र॰ राजनीति में आजकल पैसे का अधिक महत्त्व है।

महत्त्वाकांक्षा – स्त्री॰ औरों से बहुत आगे बढ़ने या कोई महत्त्वपूर्ण काम करने की इच्छा। प्र॰ जीवन में सफल होने के लिए महत्त्वाकांक्षा का होना ज़रूरी है।

महर्षि – पु॰ बड़ा या महान् ऋषि। प्र॰ महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की।

महाजन – पु॰ रुपए-पैसे का लेन-देन करनेवाला, साहूकार। प्र॰ प्रीतमसिंह ने किसी महाजन से 200 रुपए लिए।

महाद्वीप – पु॰ पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें कई देश हों। प्र॰ एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है।

महान् – *वि॰* श्रेष्ठ, उच्च, बड़ा।

महामारी – *स्त्री॰* छूत के रोगों की वह स्थिति जिसकी चपेट में आकर सैकड़ों लोग एक साथ मरने लगते हैं। *प्र॰* कुंभ में हैज़ा की महामारी फैलने से हज़ारों लोग मर गए।

महायुद्ध – *पु॰* वह बड़ा युद्ध जिसमें कई देश शामिल हों, विश्वयुद्ध। *प्र॰* द्वितीय महायुद्ध 1939 में शुरू हुआ था।

महारथी – *पु॰* 1. वीर योद्धा, वह योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सके। *प्र॰* अभिमन्यु ने सात-सात महारथियों से अकेले युद्ध किया था। 2. जो अपने विषय या क्षेत्र का कुशल जानकार हो।

महावत – *पु॰* हाथी की देख-भाल करने और चलानेवाला, पीलवान, हाथीवान।

महाशय – *पु॰* 1. ऊँचे विचारोंवाला, सम्मान के योग्य व्यक्ति, महानुभाव। 2. पुरुषों के लिए आदर का संबोधन। *प्र॰* महाशय! आप मेरी मदद कर सकते हैं।

महिमा – *स्त्री॰* बड़ाई, प्रताप, बड़प्पन। *प्र॰* प्रयाग के कुंभ की बड़ी महिमा है।

महिला – *स्त्री॰* औरत, स्त्री।

महीन – *वि॰* बारीक, पतला। *प्र॰* कुछ बेईमान व्यापारी हल्दी में ईंट के महीन चूरे की मिलावट कर देते हैं।

महुआ – *पु॰* एक पेड़ जिसके फूल, फल खाने और लकड़ी ईंधन, इमारत के काम आती है।

महोत्सव – *पु॰* बड़ा समारोह या उत्सव। *प्र॰* हमारे देश में हर वर्ष वन महोत्सव मनाया जाता है।

महोदय – *वि॰* दे॰ महाशय। *प्र॰* इस प्रश्न का उत्तर अपने शिक्षक महोदय से पूछो।

मांगलिक – *वि॰* शुभ, मंगलमय, सौभाग्यपूर्ण। *प्र॰* हिंदू समाज में किसी भी मांगलिक अवसर पर गणेशजी की पूजा की जाती है।

माँझी – *पु॰* नाव खेने-(चलाने) वाला, मल्लाह, नाविक।

माँद – *स्त्री॰* जंगली जानवरों के रहने की जगह, गुफा। *प्र॰* शेर माँद में रहता है।

मांसपेशी–*स्त्री॰* शरीर के अंदर एक-दूसरे से जुड़े हुए मांस के गोले। *प्र॰* मनुष्य का शरीर हड्डियों एवं मांसपेशियों से बना है।

मांसाहारी – *वि॰* मांस खानेवाला। *प्र॰* शेर मांसाहारी होता है।

महारथी　महावत　माँद　मांसपेशी

माणिक मानचित्र मानव
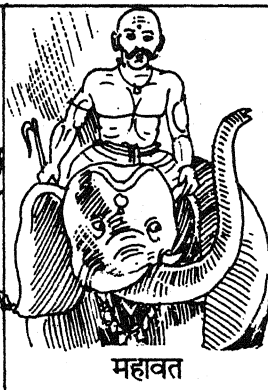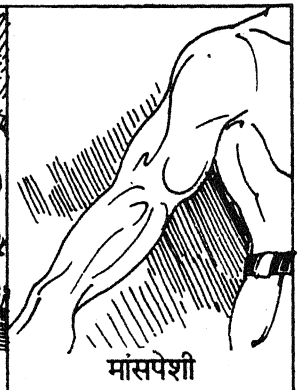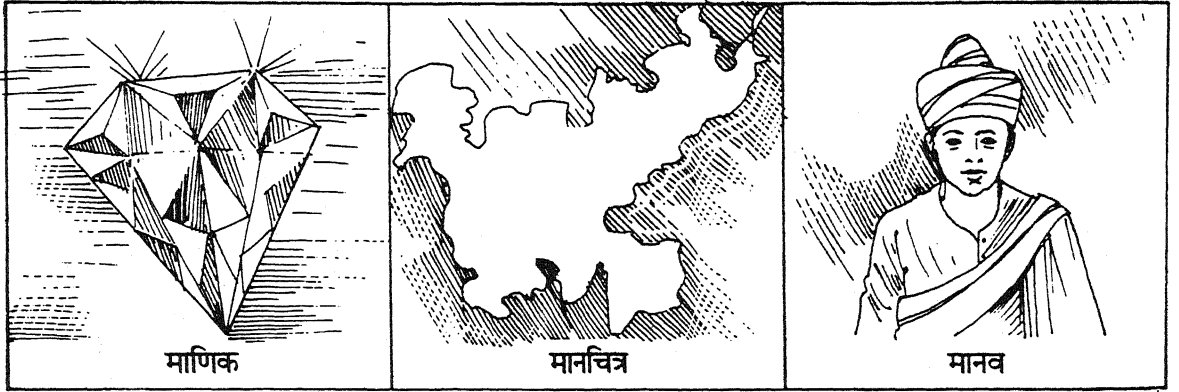
माघ – पु॰ भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष का ग्यारहवाँ महीना (जनवरी-फ़रवरी के आसपास) जो फागुन से पहले और पूस के बाद आता है।

माणिक – पु॰ लाल या गुलाबी रंग का एक रत्न।

मातृभाषा – *स्त्री॰* अपने घर में बोली जानेवाली भाषा।

मात्र – *अ॰* सिर्फ़, केवल। *प्र॰* इस क़लम का मूल्य मात्र छः रुपए है।

मात्रा – *स्त्री॰* 1. तौल, परिमाण। *प्र॰* भोजन में नमक की मात्रा अधिक नहीं होनी चाहिए। 2. अक्षरों के ऊपर-नीचे, आगे या पीछे लगनेवाला स्वर-सूचक निशान; जैसे–ई की मात्रा।

मादा – *स्त्री॰* स्त्री जाति, स्त्री जाति का प्राणी; जैसे – मादा पक्षी, मादा पशु।

माधुर्य – पु॰ मिठास, मधुरता। *प्र॰* उसकी भाषा का माधुर्य सभी का मन मोह लेता है।

माध्यम – पु॰ ज़रिया, साधन, मीडियम। *प्र॰* मेरी शिक्षा का माध्यम हिंदी है।

माध्यमिक – *वि॰* बीच का, मध्य का। *प्र॰* प्रारंभिक शिक्षा के बाद की तथा उच्च शिक्षा से पहले की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहते हैं।

मान – पु॰ 1. इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान। *प्र॰* मोहन के पिता का समाज में बहुत मान है। 2. मूल्य, पैमाना। *प्र॰* इस सिक्के का मान दस पैसे है।

मानक – पु॰ 1. एक निश्चित स्तर या कसौटी जिसे सही मानकर अन्य वस्तुओं के घटिया-बढ़िया होने का फ़ैसला किया जाता है, स्टैंडर्ड। *प्र॰* आई॰ एस॰ आई॰ की मोहर वस्तु के मानक होने का प्रमाण होती है। 2. *वि॰* स्तरीय, प्रामाणिक, स्टैंडर्ड। *प्र॰* रेडियो के समाचारों में मानक भाषा का प्रयोग होता है।

मानचित्र – पु॰ किसी देश या स्थान का नक़्शा।

माननीय – *वि॰* मान के योग्य, आदरणीय।

मानव – पु॰ आदमी, मनुष्य।

मानवता – *स्त्री॰* इंसानियत, मनुष्यता। *प्र॰* किसी भी क़िस्म की हिंसा मानवता के ख़िलाफ़ होती है।

मानसून – पु॰ 1. हिंद महासागर में बहनेवाली हवा जो गर्मियों में दक्षिण-पश्चिम और सर्दियों में उत्तर-पूर्व से बहती है। *प्र॰* तीन-चार दिन में दिल्ली में मानसून आ जाएगा। 2. बरसात का मौसम।

मान्य – *वि॰* 1. मानने योग्य। 2. आदरणीय।

मान्यता – *स्त्री॰* 1. मानना, किसी सिद्धांत या विचार

का मान्य होना। प्र० गैलीलियो के सिद्धांत से पहले लोगों की मान्यता यह थी कि पृथ्वी चपटी है। 2. किसी संस्था को स्वीकृति देना या प्रामाणिक मान लिया जाना। प्र० इस स्कूल को अभी सरकार की मान्यता प्राप्त नहीं हुई है।

मापदंड – पु० किसी वस्तु की विशेषताओं को तय करने की कसौटी, नियम या आधार।

मारे – *अ०* वजह से, कारण से। *प्र०* वह मारे शरम के मुँह छिपाए जा रहा था।

मार्ग – पु० रास्ता, पथ।

मार्गदर्शन – पु० मार्ग या दिशा दिखाना, निर्देश देना। प्र० गांधीजी के मार्गदर्शन में भारत ने आज़ादी पाई।

मार्गशीर्ष – पु० भारतीय (हिंदू) पंचांग के अनुसार वर्ष का नौवाँ महीना, अगहन (नवंबर-दिसंबर के आसपास)।

मालती – *स्त्री०* सफ़ेद रंग का फूल जो लताओं (बेल) में खिलता है।

मालामाल – *वि०* बहुत पैसेवाला, धनवान्।

माल्यार्पण (माल्य + अर्पण) – पु० किसी को सम्मान देने के लिए फूलों की माला पहनाना। प्र० स्कूल के सबसे छोटे बच्चे ने मुख्य अतिथि को माल्यार्पण किया।

मास – पु० साल का बारहवाँ भाग, महीना।

मासिक – *वि०* 1. हर महीने का। *प्र०* सोहनलाल की मासिक आय 800 रुपए है। 2. महीने में एक बार होनेवाला। *प्र०* कादंबिनी एक मासिक पत्रिका है।

माह – पु० *दे०* मास।

मिठास – *स्त्री०* मीठा होने का भाव, मीठापन। प्र० इस गन्ने में मिठास कम है।

मिथ्या – *वि०* 1. झूठ, असत्य। *प्र०* यह मिथ्या है कि धरती चपटी है। 2. बेकार, व्यर्थ। *प्र०* पैसे का घमंड मिथ्या होता है।

मिमियाना – *क्रि०* भेड़ या बकरी का 'में-में' करके बोलना। प्र० शेर को देखकर बकरी का बच्चा मिमियाने लगा।

मिलन – पु० भेंट, मुलाक़ात।

मिलान – पु० 1. मिलाने की क्रिया। 2. दो वस्तुओं को एकसाथ रखकर तुलना करना। *प्र०* दोनों पुस्तकों का मिलान करके देखो कि कौन-सी अधिक मोटी है।

मिलाप – पु० 1. भेंट। 2. प्रेम, दोस्ती।

मिलीभगत – *स्त्री०* दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा मिलकर किसी तीसरे को धोखा देने या हराने

मालती | माल्यार्पण | मिलन

मिस्तरी मीनार मुकुट मुद्रा
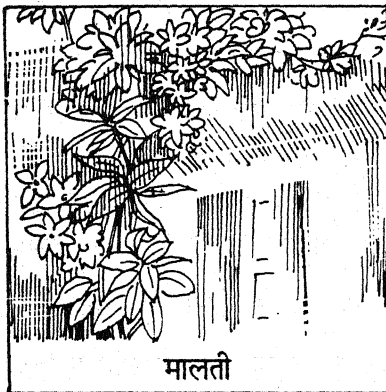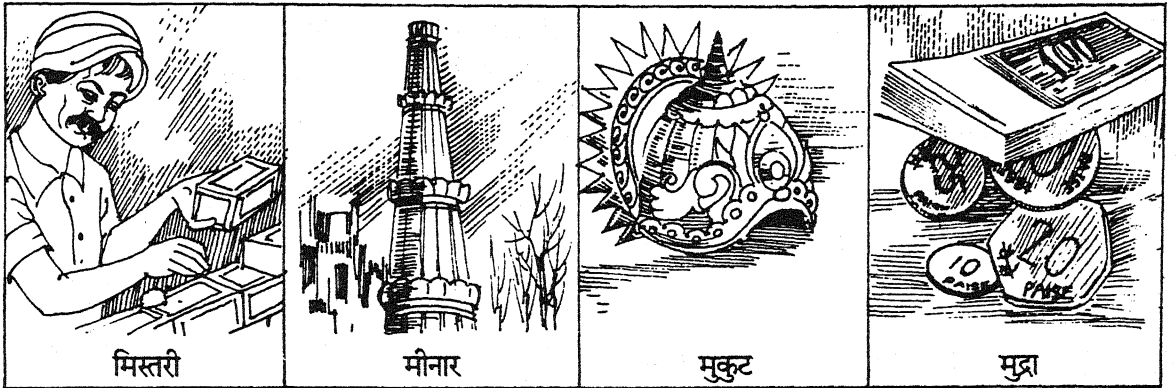
के लिए समझौता। प्र० नेताजी अपने ही दोस्तों की मिलीभगत से चुनाव हार गए।

मिल्कीयत – *स्त्री०* वह चीज़ जिस पर मालिकवाला हक़ हो, जायदाद, ज़मींदारी।

मिश्रण – *पु०* 1. एक से अधिक चीज़ों को एक में मिलाने की क्रिया, मिलावट। *प्र०* दीवार में सीमेंट, बालू तथा पानी के मिश्रण से पलस्तर किया जाता है। 2. एक से अधिक चीज़ों को मिलाकर तैयार की गई चीज़। *प्र०* इस मिश्रण को खा लोगे तो पेटदर्द ठीक हो जाएगा।

मिस्तरी – *पु०* कुशल कारीगर, मिस्त्री। *प्र०* शाहजहाँ ने ताजमहल बनानेवाले मिस्तरियों के हाथ कटवा दिए थे।

मीचना – *क्रि०* (आँख) बंद करना, मूँदना।

मीन – *पु०* 1. मछली। 2. बारह राशियों में से अंतिम राशि।

मीनार – *स्त्री०* खंभे के आकार की गोल और ऊँची इमारत। *प्र०* कुतुबमीनार दुनिया की सबसे सुंदर मीनार है।

मुँहफट – *वि०* बिना सोचे-समझे और बिना किसी शर्म-लिहाज के बोलनेवाला। *प्र०* वह इतनी मुँहफट है कि कोई भी उससे बात करना पसंद नहीं करता।

मुकुट – *पु०* ताज, सिर पर पहना जानेवाला गहना।

मुक्त – *वि०* जिस पर कोई बंधन न हो, छूटा हुआ, स्वच्छंद। *प्र०* अपनी छोटी बेटी की शादी कर देने के बाद वह परिवार की ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो गया।

मुक्ति – *स्त्री०* आज़ादी, छुटकारा। *प्र०* गुलीवर ने बादशाह से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की।

मुख – *पु०* मुँह, चेहरा।

मुखर – *वि०* ज़्यादा बोलनेवाला, वाचाल। *प्र०* ईशा स्कूल में जितनी शर्मीली है, घर में उतनी ही मुखर है।

मुख्य – *वि०* प्रधान, प्रमुख; जैसे – मुख्य अतिथि।

मुग्ध – *वि०* बहुत ज़्यादा प्रभावित, मोहित, रीझा हुआ। *प्र०* हरिप्रसाद चौरसिया की बाँसुरी सुनकर सभी मुग्ध हो गए।

मुठभेड़ – *स्त्री०* दो शत्रुओं के बीच आमने-सामने थोड़ी देर तक चलनेवाली लड़ाई।

मुद्रण – *पु०* छापना, छपाई। *प्र०* इस किताब का मुद्रण सरकारी प्रेस में हुआ है।

मुद्रा – *स्त्री०* 1. सिक्का, करेंसी। *प्र०* बँगला देश की मुद्रा टका है। 2. चेहरे, हाथ, पैर आदि की ऐसी क्रिया जिससे मन का कोई विशेष भाव प्रकट होता

हो; जैसे – क्रोध की मुद्रा।

मुनि – पु० ऋषि, तपस्वी।

मुरली – *स्त्री०* बाँसुरी।

मुहावरा – पु० ऐसा वाक्यांश जिसका प्रयोग साधारण (शाब्दिक) अर्थ में न होकर किसी विशेष अर्थ में होता हो।

मुहूर्त – पु० विवाह, यात्रा आदि किसी भी विशेष काम को करने के लिए फलित ज्योतिष के हिसाब से तय किया जानेवाला शुभ समय। प्र० पंडित ने मुंडन के लिए प्रातः आठ बजे का मुहूर्त निकाला है।

मूँज – *स्त्री०* एक घास जिसके छिलके से तैयार की गई बान से चारपाई बीनी जाती है।

मूँड़ना – *क्रि०* 1. उस्तरे से सिर या दाढ़ी के बाल काटना। 2. ठगना।

मूक – *वि०* गूँगा, जो बोल न सके।

मूठ – *स्त्री०* किसी औज़ार या हथियार का वह भाग जो हाथ (मूठ) में पकड़ा जाता है; जैसे– आरी की मूठ।

मूढ़ – *वि०* बुद्धू, मूर्ख, जड़बुद्धि, हक्का-बक्का।

मूत्र – पु० पेशाब।

मूत्राशय – पु० पेट के निचले हिस्से (पेड़ू) में स्थित वह थैली जिसमें पेशाब इकट्ठा होता है।

मूर्ख – *वि०* नासमझ, बेवकूफ़, बुद्धू।

मूर्च्छा – *स्त्री०* बेहोशी। प्र० उसकी मूर्च्छा की बीमारी अभी ठीक नहीं हुई है।

मूर्ति – *स्त्री०* किसी की आकृति या रूप की नक़ल करके बनाई गई मिट्टी, धातु, लकड़ी आदि की वस्तु, प्रतिमा। प्र० दुर्गा-पूजा के दिन दुर्गा की मूर्ति को नदी में प्रवाहित किया जाता है।

मूर्द्धन्य, मूर्धन्य – *वि०* 1. श्रेष्ठ, बड़ा, ऊँचा। प्र० मुक्तिबोध का नाम हिंदी के मूर्धन्य कवियों में गिना जाता है। 2. जिसका उच्चारण मूर्धा से हो। प्र० 'ष' को मूर्धन्य 'ष' कहा जाता है।

मूर्द्धा, मूर्धा – पु० 1. माथा, सिर। 2. मुँह के भीतर तालु और कंठ के बीच का भाग।

मूल – पु० 1. पौधे का वह भाग जो मिट्टी के अंदर रहता है, जड़। 2. असली/वास्तविक (रूप), बुनियाद। प्र० कुछ लोग बढ़ती हुई आबादी को भारत की ग़रीबी का मूल कारण मानते हैं। 3. किसी वस्तु के आरंभ होने का स्थान, स्रोत। प्र० गंगा का मूल गोमुख में है।

मुनि | मूठ | मूर्ति

मूषक मृग मृदंग मेरुदंड
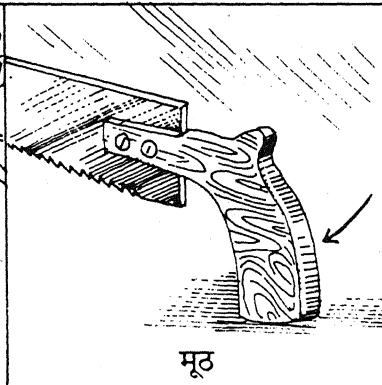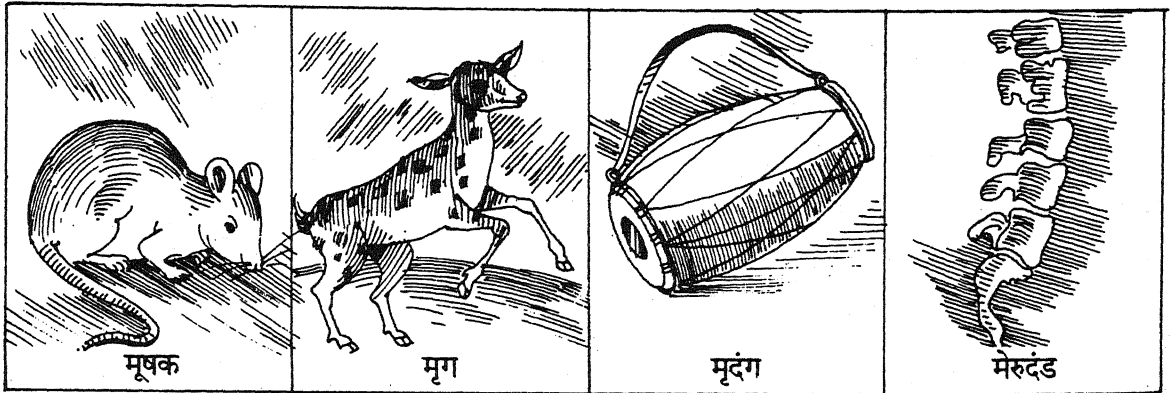
मूलभूत – *वि॰* बुनियादी, मुख्य, आवश्यक; जैसे– मूलभूत कारण, मूलभूत समस्याएँ।

मूल्य – पु॰ 1. क़ीमत, दाम। *प्र॰* इस किताब का मूल्य दस रुपए है। 2. उपयोगिता, महत्त्व। *प्र॰* आज के भ्रष्ट युग में ईमानदारी का मूल्य कम हो गया है। 3. व्यक्ति या समाज के आदर्श, विश्वास, धारणाएँ। *प्र॰* पश्चिमी और भारतीय समाज के मूल्यों में बहुत अंतर है।

मूल्यांकन – पु॰ 1. किसी चीज़ की क़ीमत आँकना; जैसे – मूर्ति का मूल्यांकन। 2. किसी किताब या लेख के गुण-दोष परखना, समीक्षा। *प्र॰* मुक्तिबोध के साहित्य का सही मूल्यांकन उनकी मृत्यु के बाद ही हुआ।

मूषक – पु॰ चूहा।

मूसल – पु॰ लकड़ी का मोटा डंडा जिससे धान या अनाज कूटा जाता है।

मूसलाधार – *वि॰* मोटी-मोटी बूँदोंवाली, तेज़ (बारिश)। *प्र॰* चेरापूँजी में मूसलाधार वर्षा होती है।

मृग – पु॰ हिरन, हरिण।

मृत – *वि॰* मरा हुआ, जिसमें प्राण न हों।

मृत्यु – *स्त्री॰* मौत, मरण।

मृदंग – पु॰ ढोलक की तरह बजनेवाला एक बाजा।

मृदु – *वि॰* 1. कोमल। 2. मधुर (स्वर)।

मेंड़ – *स्त्री॰* खेत के चारों ओर मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा। *प्र॰* किसान खेत की सिंचाई करने के लिए मेंड़ बाँधते हैं।

मेघ – पु॰ बादल।

मेधा – *स्त्री॰* बुद्धि, अक़्ल।

मेधावी – *वि॰* तेज़ दिमाग़वाला, बुद्धिमान।

मेमना – पु॰ भेड़ का बच्चा।

मेरुदंड – पु॰ रीढ़ की हड्डी।

मेलजोल – पु॰ घनिष्ठता, दोस्ती, हेलमेल। *प्र॰* हम सब आपस में बड़े मेलजोल से रहते हैं।

मेहनताना – पु॰ मेहनत के बदले दिया जानेवाला पैसा, मज़दूरी, पारिश्रमिक। *प्र॰* काम करवाकर मेहनताना न देना विनोद की आदत है।

मैत्री – *स्त्री॰* दोस्ती, मित्रता। *प्र॰* अनु और मनु की मैत्री सारे स्कूल में मशहूर थी।

मैना – *स्त्री॰* मीठी आवाज़वाली काले रंग की एक चिड़िया।

मैल – *स्त्री॰* शरीर, कपड़े आदि पर धूल का जमा हुआ रूप, गंदगी। *प्र॰* उसने खूब रगड़कर हाथों की मैल छुड़ाई।

मोक्ष – पु॰ जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा, मुक्ति। *प्र॰* हिंदू धर्म में मोक्ष की बहुत महिमा है।

मोचन – 1. पु॰ बंधन, कष्ट आदि से छुटकारा, मुक्ति। 2. *वि॰* छुड़ानेवाला; जैसे – संकटमोचन।

मोटाताज़ा – *वि॰* तगड़ा, सेहतमंद, हृष्ट-पुष्ट।

मोतिया – पु॰ बेला के जैसा सफ़ेद रंग का एक फूल।

मोती – पु॰ समुद्र की सीपियों से निकलनेवाला एक प्रसिद्ध क़ीमती रत्न।

मोदक – पु॰ लड्डू।

मोरचा, मोर्चा – पु॰ क़िले की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर खोदी हुई खाई। *प्र॰* दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए सेना को मोरचे पर तैनात कर दिया गया।

मोह – पु॰ ममता, स्नेह।

मोहक – *वि॰* मन को मोह लेनेवाला, मुग्ध करनेवाला। *प्र॰* गोआ के मछुआरों का लोक-नृत्य बहुत मोहक होता है।

मोहताज – *वि॰* 1. किसी बात के लिए दूसरे पर निर्भर या आश्रित। 2. जिसे किसी चीज़ का अभाव और आवश्यकता हो। *प्र॰* वह बच्चा अपनी सौतेली माँ के प्यार का मोहताज है।

मोहर – *स्त्री॰* 1. कोई अक्षर या चिह्न अंकित करने का ठप्पा। *प्र॰* डाक के थैलों को मोहर लगाकर विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता है। 2. अशर्फ़ी। *प्र॰* राजा ने बच्चे को तीन मोहरें इनाम में दीं।

मोहित – *वि॰* बहुत ज़्यादा आकर्षित, रीझा हुआ, मुग्ध।

मोहिनीअट्टम – पु॰ केरल का एक प्रसिद्ध नृत्य।

मौखिक – *वि॰* 1. ज़बानी, मुँह से बोला हुआ; जैसे – मौखिक प्रश्न। 2. मुँह से संबंधित।

मौन – पु॰ 1. चुप्पी, न बोलना। 2. चुप, शांत। *प्र॰* मेरे प्रश्न के उत्तर में वह मौन हो गया।

मौलवी – पु॰ मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ानेवाला, जिसके पास धार्मिक शिक्षा से संबद्ध मौलवी की डिग्री (प्रमाणपत्र) हो।

मौलिक – *वि॰* जो किसी की नक़ल न हो, स्वतंत्र रूप से सोचा, रचा या बनाया हुआ। *प्र॰* उमा को पहला पुरस्कार इसलिए मिला क्योंकि उसका निबंध मौलिक था।

मोती | मोदक | मोहर | मौलवी
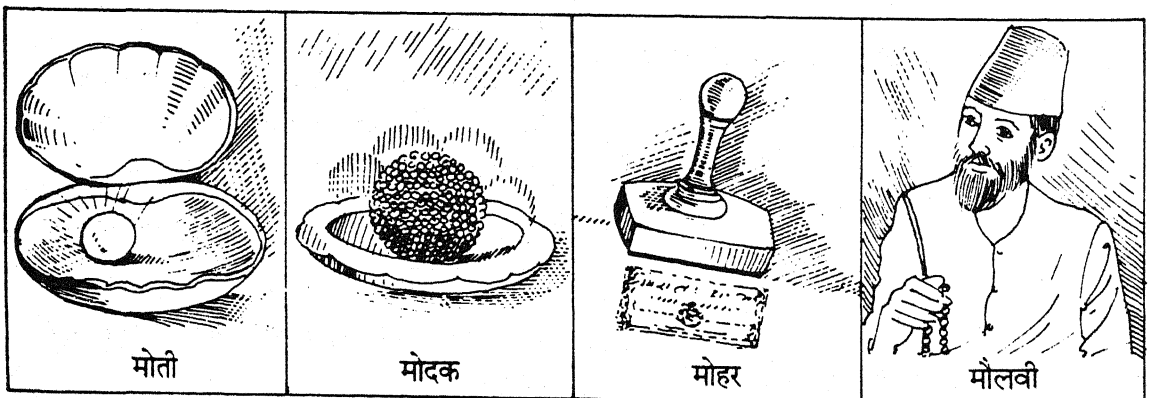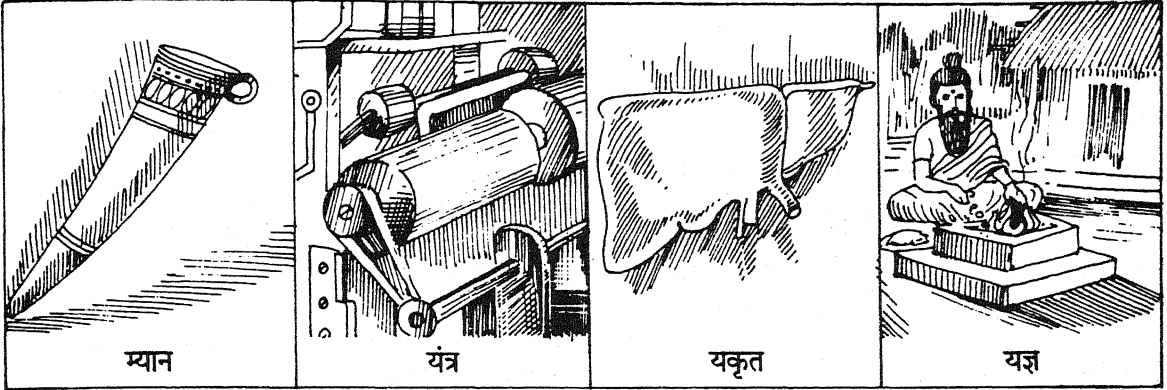
म्यान – पु० तलवार रखने का खोल।

म्लान – *वि०* 1. गंदा, मलिन; जैसे – म्लान वस्त्र। 2. मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, उदास; जैसे – म्लान चेहरा।

य – देवनागरी वर्णमाला का एक अर्धस्वर, छब्बीसवाँ वर्ण।

यंत्र – पु० 1. मशीन। प्र० उद्योगों में हाथ की जगह यंत्र का प्रयोग अधिक होने से बेरोज़गारी बढ़ी है। 2. औज़ार, उपकरण। प्र० आजकल खेती ट्रैक्टरों जैसे यंत्रों से की जाती है।

यंत्रणा – *स्त्री०* अत्याचार, बहुत ज़्यादा कष्ट, पीड़ा, यातना। प्र० जेलों में अपराधियों को कई प्रकार की यंत्रणाएँ दी जाती हैं।

यंत्रवत् – *वि०* मशीन की तरह लगातार, नियमित ढंग से, भावनाहीन होकर। प्र० ग़रीबी लाखों भारतीयों को यंत्रवत् काम करने पर मज़बूर करती है।

यकायक – *अ०* अचानक, सहसा, एकाएक। प्र० यकायक मुझे याद आया कि मैं पैसे लाना तो भूल ही गया।

यकृत – पु० पेट के दाएँ भाग में एक थैली जिसमें खाना पचानेवाला रस होता है, जिगर।

यक्ष – पु० धन के देवता, कुबेर के ख़ज़ाने की रक्षा करनेवाले देवताओं की एक जाति।

यक्ष्मा – पु० टी०बी० की बीमारी, तपेदिक, क्षयरोग, राजयक्ष्मा।

यजमान – पु० ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनसे हवन, पूजा-पाठ आदि करवानेवाला।

यजुर्वेद – पु० चार वेदों में से वह वेद जिसमें यज्ञ-संबंधी मंत्रों का गद्य के रूप में संकलन है।

यज्ञ – पु० हवन, अनुष्ठान, होम।

यज्ञोपवीत – पु० यज्ञ करके कंधे पर पहना जानेवाला उपवीत (पवित्र धागा), जनेऊ, उपनयन।

यत्न – पु० कोशिश, प्रयत्न, चेष्टा।

यथा – *अ०* जैसे, जिस प्रकार।

यथायोग्य – 1. *वि०* जिसके लिए जैसा उचित हो, उपयुक्त, यथोचित। प्र० उसे यथायोग्य व्यवहार की तमीज़ नहीं है। 2. पु० जिसके लिए जैसा उचित हो वैसा अभिनंदन (केवल पत्र-व्यवहार में)। प्र० घर में सबको यथायोग्य कहें।

यथार्थ – पु० वास्तविकता, असलियत, सचाई।

प्र॰ अधिकतर बंबइया फ़िल्में यथार्थ से कोसों दूर होती हैं।

यथावत् – *वि॰* ज्यों-का-त्यों, जैसे-का-तैसा। प्र॰ क़रीम का लेख अख़बार में यथावत् छप गया।

यथाशक्ति – *अ॰* जितना करने की शक्ति हो उतना, शक्ति के अनुसार, अपनी शक्ति-भर, भरसक। प्र॰ बुढ़ापे में भी वह यथाशक्ति काम करता है।

यथासंभव – *अ॰* जहाँ तक हो सके, जितना, जैसा संभव हो। प्र॰ डॉक्टर ने मरीज़ को बचाने का यथासंभव प्रयत्न किया।

यथेष्ट (यथा + इष्ट) – *वि॰* जितना चाहिए उतना, पर्याप्त। प्र॰ हिमांशु ने मेरी यथेष्ट सहायता की।

यथोचित (यथा + उचित) – *वि॰* जैसा उचित हो वैसा, मुनासिब, उपयुक्त। प्र॰ शादी में लड़कीवालों ने बारात का यथोचित स्वागत किया।

यद्यपि (यदि + अपि) – *अ॰* हालाँकि, अगरचे। प्र॰ यद्यपि खेल-कूद आवश्यक है, किंतु पढ़ाई-लिखाई भी अनिवार्य है।

यम – *पु॰* मृत्यु के देवता।

यमुनोत्री – *पु॰* वह स्थान जहाँ से यमुना निकलती है।

यश – *पु॰* प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्ति, नेकनामी।

यशस्वी – *वि॰* जिसका ख़ूब यश फैला हुआ हो, प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त। प्र॰ विक्रमादित्य यशस्वी सम्राट् थे।

याक – *पु॰* बैल जैसा एक पालतू पशु जो ऊँचे पहाड़ी प्रांतों में पाया जाता है।

याचक – *पु॰* माँगनेवाला, भिखारी। प्र॰ राजा ने याचक को भिक्षा दी।

याचना – *स्त्री॰* कुछ माँगने के लिए किसी से नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना; जैसे – क्षमा-याचना।

यातना – *स्त्री॰* बहुत अधिक तकलीफ़, कष्ट, पीड़ा, वेदना। प्र॰ उस डाकू को लोगों को यातनाएँ देकर मारने में आनंद आता था।

यातायात – *पु॰* आना-जाना, किसी रास्ते पर लोगों और वाहनों का आवागमन, ट्रैफ़िक। प्र॰ पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली की सड़कों पर यातायात बहुत बढ़ गया है।

यात्रा – *स्त्री॰* एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, सफ़र। प्र॰ प्राचीन काल में लोग प्रायः पैदल यात्रा किया करते थे।
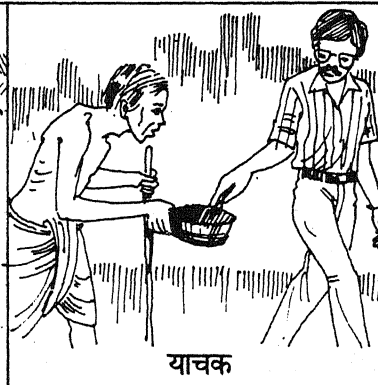
याक　　याचक　　यातायात
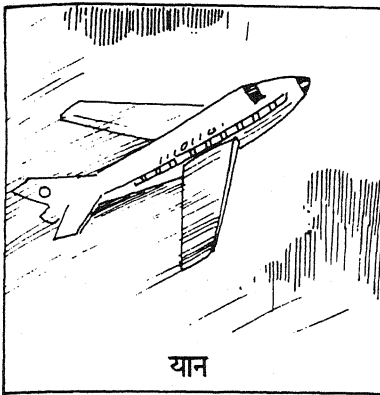
यान योग योगी
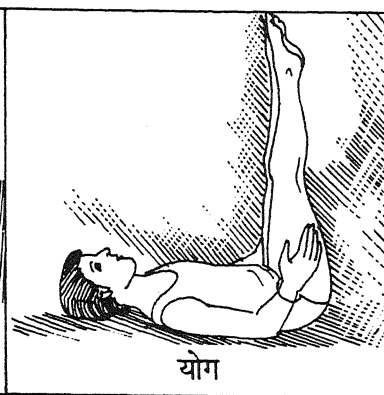
यान – पु॰ सवारी, वाहन, विमान।

युक्त – *वि॰* जुड़ा हुआ, मिला हुआ, लगा हुआ, सहित। *प्र॰* प्रोटीनयुक्त भोजन फ़ायदा करता है।

युक्ति – *स्त्री॰* 1. उपाय, तरक़ीब। 2. कौशल, चतुरता।

युग – पु॰ समय, काल, ज़माना; जैसे – आधुनिक युग, पाषाण युग।

युग्म – पु॰ ऐसी दो संख्याओं का जोड़ा (1) जिनमें आपस में कोई समानता हो (4, 2 का युग्म); (2) जो प्रायः साथ आती हों (8, 9 का युग्म)।

युद्ध – पु॰ लड़ाई, संग्राम, रण। *प्र॰* द्वितीय विश्वयुद्ध में बहुत-से सैनिक मारे गए।

युवक – पु॰ सोलह से पैंतीस वर्ष तक की आयु का व्यक्ति, जवान, तरुण।

युवती – *स्त्री॰* सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष तक की उम्र की स्त्री।

युवराज – पु॰ राजा का सबसे बड़ा बेटा जो राजपाट का अधिकारी होता है।

योग – पु॰ 1. जोड़। *प्र॰* दो और तीन का योग पाँच होता है। 2. तपस्या, ध्यान, मन को वश में रखने की क्रियाएँ, आसन आदि। *प्र॰* मैं रोज़ सुबह योग सीखने जाता हूँ। 3. किसी बात या काम के लिए ज्योतिष-शास्त्र में विशिष्ट समय। *प्र॰* नित्या की जन्म-कुंडली में विवाह का योग नहीं है।

योगदान – पु॰ 1. सहयोग, सहायता। 2. किसी क्षेत्र में किसी व्यक्ति द्वारा किया जानेवाला अमूल्य काम। *प्र॰* क्रिकेट में सुनील गावस्कर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

योगफल – पु॰ दो या दो से अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त हुई संख्या; जैसे – पाँच और तीन का योगफल आठ होता है।

योगी – पु॰ 1. योग की साधना करनेवाला व्यक्ति। 2. ऐसा व्यक्ति जो न दुख में बहुत दुखी हो और न सुख में बहुत प्रसन्न हो।

योग्य – *वि॰* क़ाबिल, लायक़, सक्षम, समर्थ। *प्र॰* 1. मोहन को अपने योग्य बेटे पर गर्व है। 2. यह नौकरी तुम्हारे योग्य नहीं है।

योग्यता – *स्त्री॰* योग्य होने का गुण, क्षमता, क़ाबलियत। *प्र॰* समाज में हर व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार काम मिलना चाहिए।

योजना – *स्त्री॰* 1. किसी क़ाम को करने का विचार, कल्पना या इरादा। *प्र॰* अगले वर्ष उमा की अमेरिका घूमने की योजना है। 2. आगे (भविष्य में) किए

जानेवाले काम की रूपरेखा, स्कीम, प्लान; जैसे – पंचवर्षीय योजना, वार्षिक योजना।

योद्धा – पु० युद्ध करनेवाला, सिपाही, सैनिक। प्र० युद्ध में बहुत-से योद्धा मारे गए।

यौगिक – *वि०* 1. मिला हुआ। 2. योग-संबंधी।

यौवन – पु० सोलह से पैंतीस वर्ष के बीच की अवस्था, युवावस्था, जवानी।

★

र – देवनागरी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन।

रंक – *वि०* ग़रीब, निर्धन।

रंगमंच – पु० वह जगह जहाँ नाटक, नृत्य, संगीत, समारोह आदि होता हो, मंच, स्टेज।

रंग-बिरंगा – *वि०* 1. अनेक रंगोंवाला। 2. क़िस्म-क़िस्म का। प्र० रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर बच्चे मेला घूमने जा रहे हैं।

रंगरूट – पु० नया सिपाही, नौसिखिया, रिक्रूट।

रंगरेज़ – पु० कपड़ा रँगने का काम करनेवाला।

रँगीला – *वि०* मौज-मस्ती का शौक़ रखनेवाला, आनंदी, रसिया, शौक़ीन स्वभाव का।

रंगोली – *स्त्री०* त्योहार-उत्सव के समय सुर्ख़ रंगों से फ़र्श पर बनाया जानेवाला चित्र, डिज़ाइन आदि, अल्पना।

रंजित – *वि०* 1. रँगा हुआ; जैसे – रक्तरंजित तलवार। 2. ख़ुश, प्रसन्न।

रंजिश – *स्त्री०* नाराज़गी, अनबन, दुश्मनी।

रंदा – पु० एक औज़ार जिससे छीलकर लकड़ी की सतह को चिकना और बराबर बनाया जाता है।

रंध्र – पु० छेद, सुराख़।

रँभाना – *क्रि०* गाय का बोलना।

रक्त – पु० ख़ून, रुधिर।

रक्तचाप – पु० 1. शरीर की नाड़ियों की दीवार पर पड़नेवाला ख़ून का दबाव। प्र० अपने बेटे की दुर्घटना की ख़बर सुनकर अनिल का रक्तचाप बढ़ गया। 2. एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का दबाव सामान्य से कम या अधिक हो जाता है।

रक्तपात – पु० रक्त गिरना, मारकाट, ख़ूनख़राबा।

रक्तस्राव – पु० ख़ून बहना, निकलना। प्र० रक्तस्राव रोकने के लिए ज़ख़्म पर बर्फ़ रखनी चाहिए।

रक्षक – पु० 1. हिफ़ाज़त करनेवाला, रक्षा

योद्धा | रंगरेज़ | रंगोली | रंदा

रक्षाबंधन | रखवाला | रजनीगंधा | रज्जु
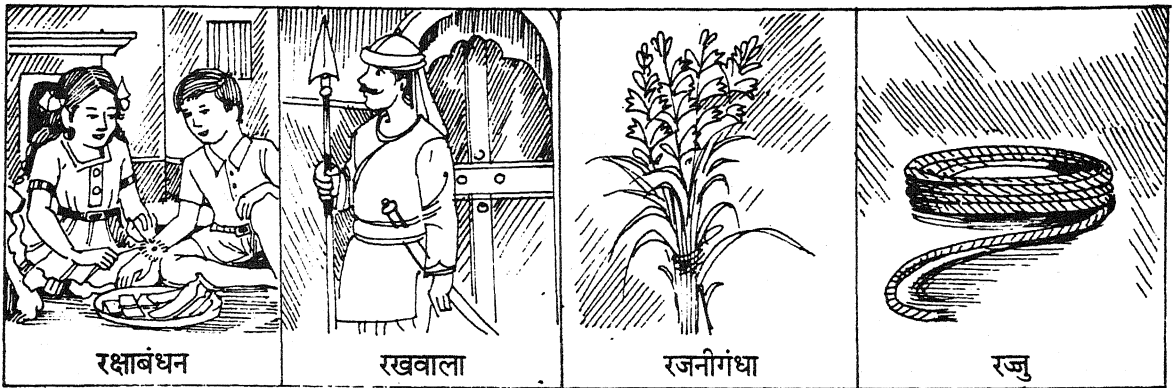
करनेवाला। 2. रखवाला, पहरेदार। *प्र०* उस रात्रि राजा के सभी रक्षक सो गए थे।

रक्षा – *स्त्री०* किसी परेशानी, संकट आदि से बचाने की क्रिया, बचाव, हिफ़ाज़त, सुरक्षा। *प्र०* संकटकाल में किसी की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

रक्षाबंधन – *पु०* श्रावण मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक त्योहार जिसमें बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और यह राखी भाइयों द्वारा बहिनों की रक्षा का प्रतीक होती है।

रखरखाव – *पु०* किसी चीज़, जगह आदि को सँभाल-सँवारकर रखने की क्रिया जिससे वह काम में आने के लायक़ बनी रहे; जैसे – घर का रखरखाव, मिक्सी का रखरखाव।

रखवाला – *पु०* रखवाली करनेवाला, देख-भाल करनेवाला, पहरेदार।

रग – *स्त्री०* नस, नाड़ी। *मु० रग-रग पहचानना*– पूरी तरह जानना। *प्र०* मैं उसकी रग-रग पहचानती हूँ, वह आसानी से नहीं मानेगा।

रचना – 1. *स्त्री०* (क) बनाने, निर्माण, सृजन या रचने की क्रिया। (ख) कविता, कहानी, निबंध आदि कोई भी साहित्यिक कृति। *प्र०* तॉलस्तॉय की रचनाओं का संसार की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 2. *क्रि०* लिखना, बनाना, कल्पना करना। *प्र०* सुधा ने अपनी बेटी के लिए एक सुंदर-सा गीत रचा।

रचयिता – *पु०* जो किसी वस्तु या साहित्य की रचना करे, निर्माता, साहित्यकार, प्रणेता। *प्र०* 'कामायनी' के रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं।

रचित – *वि०* (किसी के द्वारा) बनाया हुआ, निर्मित। *प्र०* गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस को घर-घर में पढ़ा जाता है।

रज – *स्त्री०* मिट्टी, धूल, गर्द।

रजत – 1. *वि०* (क) उज्ज्वल, सफ़ेद, चाँदी के रंग का। (ख) चाँदी का बना हुआ। 2. *पु०* चाँदी, रूपा।

रजनी – *स्त्री०* रात।

रजनीगंधा – *स्त्री०* छोटे, सफ़ेद फूल जो रात में खिलते हैं, रातरानी।

रज्जु – *स्त्री०* रस्सी।

रट – *स्त्री०* एक ही शब्द या बात को बार-बार कहने की क्रिया। *प्र०* बच्चा खिलौने की रट लगा रहा है।

रटना – *क्रि०* कोई चीज़ बार-बार बोलकर याद करना।

रण – पु॰ लड़ाई, युद्ध, संग्राम, जंग।

रणक्षेत्र – पु॰ लड़ाई का मैदान, युद्धभूमि।

रत – *वि॰* 1. लीन, जो किसी काम में पूरे मन से लगा हुआ हो। *प्र॰* वह आजकल एक नई मूर्ति बनाने में इतना रत है कि उसे खाने-पीने की भी चिंता नहीं रहती। 2. प्रेम में लीन, आसक्त।

रतौंधी – *स्त्री॰* आँख की एक बीमारी जिसमें रोगी को रात में दिखाई नहीं देता।

रत्ती – *स्त्री॰* 1. 'घुंघची' नाम की बेल का लाल-काले रंग का बीज। 2. ढाई जौ या आठ चावल के दानों के वज़न के बराबर की तौल।

रत्न – पु॰ क़ीमती और चमकीला पत्थर जिसे आभूषणों में जड़ा जाता है, मणि।

रथ – पु॰ पुराने ज़माने की एक घोड़ागाड़ी जिसमें दो या चार पहिए हुआ करते थे।

रद्द – *वि॰* 1. तय या निश्चित हुए कार्यक्रम, समारोह, मीटिंग आदि के न होने की स्थिति। *प्र॰* प्रधानमंत्री की मृत्यु के कारण शहर के सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम रद्द कर दिए गए। 2. क़ानून या संविधान के किसी नियम को ख़त्म कर देना, किसी अपील को न मानना; जैसे – रद्द फ़ैसला।

रद्दी – 1. *वि॰* (क) बेकार, जिसका कोई उपयोग न हो; जैसे – रद्दी सामान। (ख) नीचे स्तर का, घटिया। *प्र॰* ऐसा रद्दी लेख मेरी पत्रिका में नहीं छप सकता। 2. *स्त्री॰* पुराने और बेकार अख़बार, पत्रिकाएँ आदि। *प्र॰* अब्दुल को रद्दी की बिक्री से पचास रुपए मिले।

रपट – *स्त्री॰* सूचना, ख़बर, रिपोर्ट। *प्र॰* महीप ने अपने घर में चोरी होने की रपट थाने में तुरंत लिखवाई।

रफ़ू – पु॰ जले या फटे कपड़े में हुए छेद को धागे से भरकर सिलने की क्रिया।

रफ़ूचक्कर – *वि॰* चुपके से चले जाना, ग़ायब, फ़रार, चंपत।

रफ़्तार – *स्त्री॰* गति, चाल। *प्र॰* विमल 70 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से गाड़ी चलाता है।

रबी – 1. पु॰ वसंत ऋतु। 2. *स्त्री॰* वसंत ऋतु में काटी जानेवाली (गेहूँ, जौ आदि) फ़सल।

रमज़ान – पु॰ मुसलमानों के हिजरी वर्ष का नौवाँ महीना जिसके दौरान वे लोग रोज़ा रखते हैं।

रमणी – *स्त्री॰* सुंदर औरत।

रमणीक – *वि॰* सुंदर, मनोहर। *प्र॰* जोधपुर का मंडोर

रण | रथ | रद्दी | रफ़ू
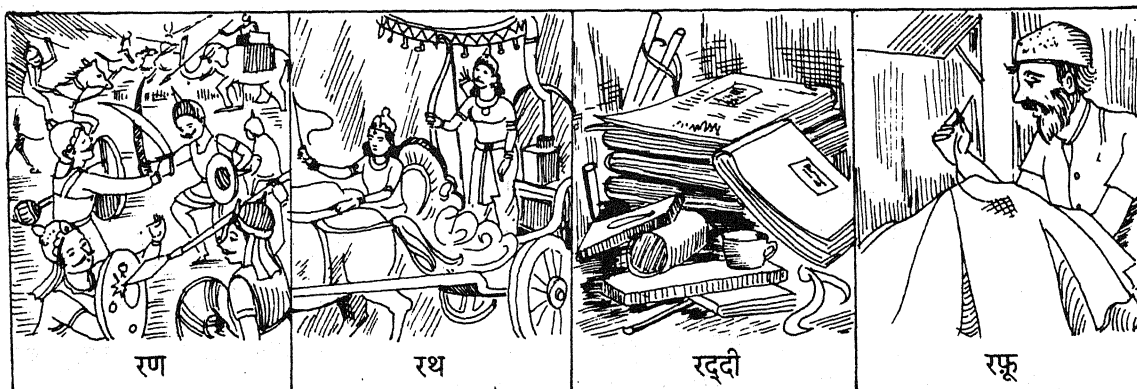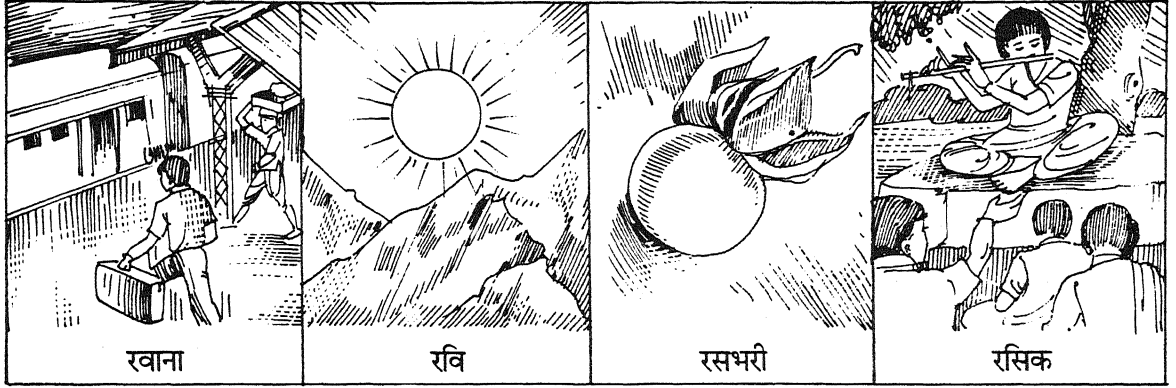
गार्डन एक रमणीक स्थान है।

रमना – *क्रि॰* पूरी तरह मन लग जाना। *प्र॰* रानीखेत जाकर मोहन ऐसा रमा कि वह दिल्ली को भूल ही गया।

रम्य – *वि॰* दे॰ रमणीक।

रवा – पु॰ 1. बहुत छोटा टुकड़ा, दाना, कण। 2. सूजी।

रवानगी – *स्त्री॰* 1. रवाना होने की क्रिया, प्रस्थान। *प्र॰* अमेरिका के लिए तुम्हारी रवानगी कब की है? 2. बिना रुके या अटके कोई काम किए जाने का या कोई बात कहे जाने का भाव, बहाव, लय, प्रवाह; जैसे – विचारों में रवानगी, लेखन में रवानगी।

रवाना – *वि॰* किसी जगह तक पहुँचने के लिए चल पड़ना, प्रस्थान। *प्र॰* रेलगाड़ी बंबई के लिए दस बजे रवाना होगी।

रवि – पु॰ सूर्य।

रवैया – पु॰ व्यवहार, रुख़। *प्र॰* ग़रीबों के प्रति महेश का रवैया ठीक नहीं है।

रश्मि – *स्त्री॰* किरण।

रस – पु॰ 1. फल, फूल, सब्ज़ियों का तरल अंश जो उन्हें दबाने, निचोड़ने या कूटने से निकलता है; जैसे – गन्ने का रस। 2. संगीत सुनने, नाटक, फ़िल्म आदि को देखने और साहित्य पढ़ने से पैदा होनेवाला आनंद का भाव; जैसे – हास्य रस, करुण रस। 3. पानी में घोलकर तैयार किया गया चीनी, गुड़, मिश्री आदि का रस।

रसभरी – *स्त्री॰* वसंत ऋतु में होनेवाला एक छोटा फल, मकोय।

रसायन – पु॰ 1. रसायनशास्त्र के प्रयोगों में इस्तेमाल होनेवाले पदार्थ। 2. उद्योगों और कृषि में इस्तेमाल होनेवाले विशेष पदार्थ, केमिकल्स।

रसायनशास्त्र – पु॰ विज्ञान की एक शाखा जिसमें पदार्थों के गुणों और विभिन्न पदार्थों के मिलने से होनेवाली प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण होता है, केमिस्ट्री।

रसिक – 1. *वि॰* स्वाद लेनेवाला; संगीत, साहित्य आदि का रस या आनंद लेनेवाला। *प्र॰* पंडित जसराज का गायन सुनकर रसिक श्रोता झूम उठे। 2. पु॰ (क) प्रेमी, रसिया। *प्र॰* मुहम्मद शाह रँगीले बहुत रसिक स्वभाव के थे। (ख) किसी ख़ास विषय को समझनेवाला, पारखी, मर्मज्ञ। *प्र॰* इस कविता को तुम जैसा रसिक ही समझ सकता है।

रस्म – *स्त्री॰* रिवाज, प्रथा, चलन। *प्र॰* अलग-अलग समाजों की रस्में अलग-अलग तरह की होती हैं।

रहँट, रहट – पु॰ बैलों की सहायता से कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र।

रहन-सहन – पु॰ रहने का या जीवन-चर्या का ढंग, तौर-तरीका, शैली। प्र॰ संसार के हर देश का खानपान और रहन-सहन एक-दूसरे से भिन्न है।

रहस्य – पु॰ ऐसी बात जो छिपाकर रखी जाए, गुप्त बात, भेद, गोपनीय। प्र॰ मदन की हत्या का रहस्य कोई नहीं जान पाया।

रहित – *वि॰* ...के बिना, ...से हीन, ...के बग़ैर; जैसे – नमकरहित भोजन।

राग – पु॰ संगीत के विभिन्न स्वरों के मेल से तैयार रचना जिसके आधार पर शास्त्रीय गायन और वादन होता है। प्र॰ अमज़द अली ख़ाँ ने सरोद पर राग यमन बजाया।

राजकीय – *वि॰* 1. राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला। 2. सरकारी।

राजदूत – पु॰ 1. किसी राज्य या राजा का संदेश लेकर किसी दूसरे राज्य में जानेवाला दूत या प्रतिनिधि। 2. वह व्यक्ति जो अपने देश की सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से किसी अन्य देश में रह रहा हो।

राजनीति – स्त्री॰ 1. व्यक्तियों द्वारा एक दल से जुड़कर सत्ता हासिल करने और संचालित करने की नीति। 2. व्यक्तियों द्वारा एक समूह से जुड़कर सत्ता की नीतियों और काम-काज की दिशा को प्रभावित करने का प्रयास। 3. वह नीति जो राजकाज सँभालने के गुर और ढंग बताए।

राजनीतिक – *वि॰* राजनीति से संबद्ध।

राजभाषा – स्त्री॰ किसी प्रांत या देश के सरकारी कामकाज की भाषा। प्र॰ हिंदी भारत के कई राज्यों की राजभाषा है।

राजस्व – पु॰ भूमि-कर आदि से होनेवाली सरकार की आय, रेवेन्यू।

राजर्षि – पु॰ वह ऋषि जो राजपरिवार या क्षत्रिय वंश में पैदा हुआ हो; जैसे – राजर्षि भर्तृहरि।

राज़ी-ख़ुशी – *वि॰* सकुशल, सही-सलामत, अच्छी तरह से। प्र॰ सिपाही लड़ाई के मैदान से राज़ी-ख़ुशी लौट आया।

राज्य – पु॰ 1. वह प्रांत, इलाक़ा या प्रदेश जिसे एक राजा या एक प्रशासन चलाता हो। प्र॰ उत्तर प्रदेश भारत के राज्यों में से एक है। 2. शासन, हुकूमत। प्र॰ बाबर के वंशजों ने भारत पर तीन सौ साल तक राज्य किया।

रहँट | राजदूत | राजर्षि

राल रासलीला रिमझिम

रातरानी – स्त्री॰ सफ़ेद खुशबूदार फूलों का एक पौधा जो केवल रात के समय खिलता है, रजनीगंधा।

रात्रि – स्त्री॰ रात। (*विलोम* – दिवस)।

रामनवमी – स्त्री॰ चैत्र शुक्ल नवमी को मनाया जानेवाला श्रीरामचंद्रजी का जन्मदिन।

राय – स्त्री॰ मत, विचार, सुझाव, सलाह। प्र॰ तुम्हें अपने अच्छे दोस्तों की राय माननी चाहिए।

राल – स्त्री॰ 1. दक्षिण भारत में होनेवाला एक सदाबहार पेड़ तथा इससे निकाला जानेवाला गोंद। 2. लार, पतला लेसदार थूक।

रावी – स्त्री॰ पंजाब की पाँच नदियों में से एक।

राशि – स्त्री॰ 1. वस्तुओं का समूह, ढेर, पुंज। 2. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य के भ्रमण-मार्ग में पड़नेवाले बारह तारों का समूह; जैसे – सिंह राशि, मकर राशि।

राष्ट्र – पु॰ देश, मुल्क़।

राष्ट्रध्वज – पु॰ किसी देश का राष्ट्रीय झंडा। प्र॰ राष्ट्रध्वज का अपमान करना क़ानूनी अपराध है।

राष्ट्रभाषा – स्त्री॰ वह भाषा जिसका प्रयोग पूरे राष्ट्र में हो।

राष्ट्रीय – *वि*॰ राष्ट्र का, राष्ट्र से संबंधित। प्र॰ हर वर्ष पंद्रह अगस्त को राष्ट्रीय झंडा फहराया जाता है।

राष्ट्रीयकरण – पु॰ किसी उद्योग या बिजली, परिवहन आदि सार्वजनिक व्यवस्थाओं को सरकार द्वारा अपने हाथ में लेना और चलाना। प्र॰ भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण 1969 में हुआ था।

राष्ट्रीयता – स्त्री॰ 1. नागरिकता। प्र॰ रघु ने इतने वर्ष विदेश में रहकर भी भारत की राष्ट्रीयता नहीं छोड़ी। 2. देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम।

रासलीला – स्त्री॰ कृष्ण और गोपियों का नृत्य।

रासायनिक – *वि*॰ 1. रसायन से संबंधित। 2. रसायनशास्त्र से संबद्ध।

राहु – पु॰ 1. एक मछली, रोहू। 2. नौ ग्रहों में से एक।

रिक्त – *वि*॰ ख़ाली, शून्य; जैसे – रिक्त स्थान।

रिपु – पु॰ दुश्मन, शत्रु।

रिमझिम – स्त्री॰ छोटी-छोटी, हल्की बूँदोंवाली बारिश। प्र॰ कल दिन-भर रिमझिम बारिश होती रही।

रियायत, रिआयत – स्त्री॰ 1. छूट। प्र॰ बहुत-सी किताबें ख़रीदने पर दूकानदार ने मुझे बीस प्रतिशत

रियायत दी। 2. रहम, दया और नरमी का बर्ताव। प्र॰ अकाल के बावजूद ज़मींदार ने किसानों को कोई रियायत नहीं दी।

रीझना – *क्रि॰* मुग्ध होना, मोहित होना।

रीठा – *पु॰* करंज की जाति का एक जंगली वृक्ष जिसके फल का प्रयोग बाल और ऊनी कपड़े धोने के लिए किया जाता है।

रीति – *स्त्री॰* 1. तरह, प्रकार, ढंग। 2. प्रथा, रिवाज, परिपाटी।

रुग्ण – *वि॰* बीमार, अस्वस्थ।

रुचि – *स्त्री॰* 1. जिस काम या बात में मन लगता हो, दिलचस्पी। प्र॰ पढ़ने-लिखने में उसकी कोई रुचि नहीं है। 2. पसंद। प्र॰ मेरी रुचियाँ नीता की रुचियों से भिन्न हैं।

रुचिकर – *वि॰* रुचि पैदा करनेवाला, अच्छा लगनेवाला, मनपसंद।

रुदन – *पु॰* रोना, विलाप।

रुधिर – *पु॰* खून, रक्त।

रुपहला – *वि॰* चाँदी जैसा, चाँदी के रंग का; जैसे – रुपहला सिक्का।

रुष्ट – *वि॰* नाराज़, क्रुद्ध।

रूखा – *वि॰* 1. जिसमें चिकनापन न हो; जैसे – रूखी त्वचा। 2. सूखा, शुष्क, रसहीन; जैसे – रूखी रोटी। 3. जिसके मन में स्नेह न हो, भावनाहीन; जैसे – रूखा व्यक्ति।

रूढ़ – 1. *वि॰* गणित में वह संख्या जो विभाज्य न हो; जैसे – सात, उन्नीस आदि। 2. *पु॰* (क) वह शब्द जिसे तोड़ा न जा सके, जो यौगिक न हो। प्र॰ घोड़ा रूढ़ है, घोड़ागाड़ी रूढ़ नहीं है। (ख) वह शब्द जिसका प्रयोग मूल अर्थ में न होकर किसी और निश्चित अर्थ में होता हो; जैसे – 'नित्य' का प्रयोग 'शाश्वत' के मूल अर्थ में न होकर 'प्रतिदिन' के अर्थ में होता है।

रूढ़ि – *स्त्री॰* पुराने ज़माने से चली आ रही प्रथाएँ, रीतियाँ आदि। प्र॰ आजकल के ज़माने में बहुत-सी रूढ़ियाँ बेमानी हो गई हैं।

रूप – *पु॰* 1. शक्ल, सूरत, आकृति। 2. सुंदरता। प्र॰ व्यक्ति का रूप नहीं, गुण देखना चाहिए। 3. दशा, अवस्था। प्र॰ मोहन का क्रोधवाला रूप मैंने आज पहली बार देखा है। 4. प्रकार, भेद; जैसे – दुर्गा का रूप, सरस्वती का रूप, लक्ष्मी का रूप आदि। 5. किसी काम या विषय पर एक ख़ास ढंग से सोचने, करने या कहने का तरीक़ा।

रीठा | रुग्ण | रुदन | रुष्ट

रेखाचित्र रेगिस्तान रेती रोंआँ
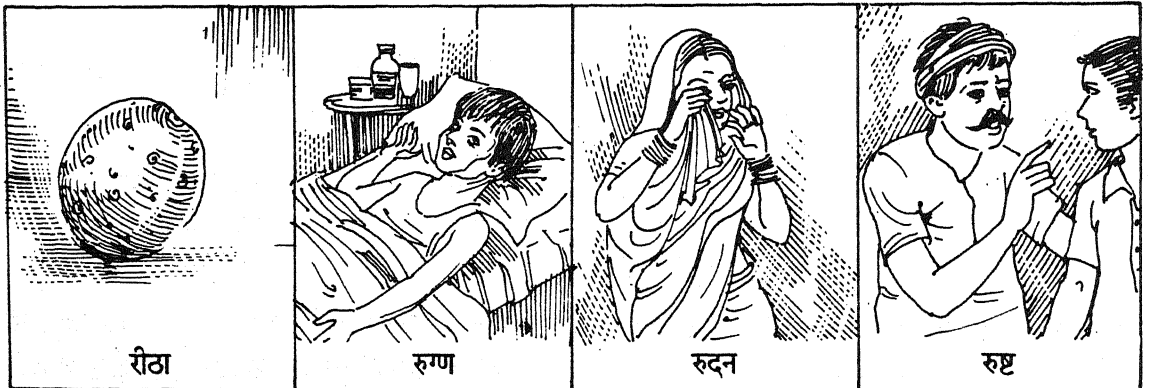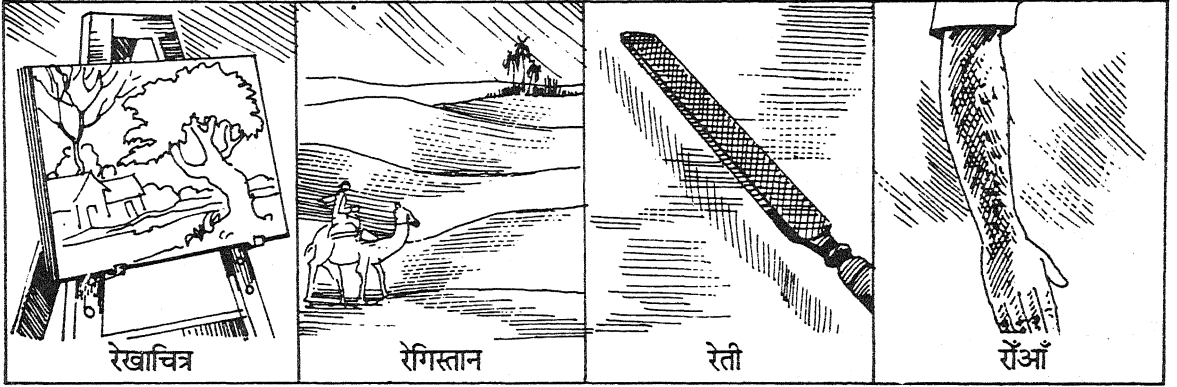
प्र॰ भगतसिंह के जन्मदिन को शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

रूपरेखा – *स्त्री॰* 1. किसी काम या योजना का वह रूप या ख़ाका जो उसके पहलुओं को उजागर करे; जैसे – किताब की रूपरेखा। 2. किसी चित्र (अंकित) में वे बाहरी रेखाएँ जो बनाई गई वस्तु को आकार देती हैं।

रूपांतरण – *पु॰* किसी वस्तु के रूप, आकार आदि में परिवर्तन।

रेंकना – *क्रि॰* गधे का बोलना।

रेखांकित – *वि॰* 1. रेखाओं की सहायता से बनाया हुआ, अंकित, चित्रित। 2. (शब्द या वाक्य) जिसके नीचे रेखा खींची गई हो। 3. (बहस के दौरान) जिस बात या मुद्दे पर ज़ोर दिया जाए, जिसकी ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया हो।

रेखागणित – *पु॰* गणित की वह शाखा जिसका अध्ययन रेखाओं की सहायता से किया जाता है, ज्यामिति, ज्यामेट्री।

रेखाचित्र – *पु॰* 1. केवल रेखाओं की सहायता से बना हुआ चित्र, स्केच। 2. किसी स्थान, व्यक्ति आदि का ऐसा लिखित वर्णन जो चित्र की तरह सजीव हो।

रेगिस्तान – *पु॰* वह प्रदेश जहाँ रेतीले मैदान हों, मरुस्थल।

रेडियम – *पु॰* एक धातु जो अँधेरे में भी चमकता है।

रेणु – *स्त्री॰* धूल, बालू।

रेती – *स्त्री॰* 1. लोहे का एक औज़ार जो वस्तुओं को काटने, तेज़ करने या चिकना करने के काम आता है। 2. बालू, नदी के तल का बारीक़ रेत जो सीमेंट के साथ मिलाकर चिनाई आदि के काम आता है।

रेशा – *पु॰* महीन सूत या तंतु जो कुछ वनस्पतियों, पौधों की छालों आदि से निकलता है।

रोंआँ – *पु॰* त्वचा के ऊपर छोटे-छोटे बाल, रोम।

रोग – *पु॰* बीमारी, मर्ज़।

रोग़न – *पु॰* 1. पतला लेप जिसे दीवार, लकड़ी आदि में चमक लाने के लिए लगाया जाता है। 2. तेल, घी जैसी चिकनी चीज़।

रोगाणु – *पु॰* रोग पैदा करनेवाले छोटे, ज़हरीले कीड़े।

रोचक – *वि॰* अच्छा लगनेवाला, मनोरंजक, दिलचस्प; जैसे – रोचक कहानी।

रोज़गार – *पु॰* कमाई का ज़रिया, पेशा, धंधा, व्यवसाय।

रोज़ा – *पु॰* रमज़ान के दौरान एक महीने तक रोज़ रखा जानेवाला व्रत जो सवेरे चार बजे से शाम के सात बजे तक चलता है।

रोज़ी – *स्त्री॰* 1. रोज़ मिलनेवाली मज़दूरी, दिहाड़ी। 2. आय का साधन, आजीविका।

रोपण – *पु॰* बीज, पौधा, फ़सल रोपना, लगाना, जमाना।

रोम – *पु॰* त्वचा के बाल, रोयाँ, रोंआँ।

रोमांच – *पु॰* प्रसन्नता या भय से रोंओं का खड़े होना, पुलक। *प्र॰* जासूसी फ़िल्म देखते-देखते बच्चे को रोमांच हो आया।

रोशनदान – *पु॰* कमरे में हवा और रोशनी के लिए दरवाज़े के ऊपर या दीवार में ऊँचाई पर बनी हुई छोटी खिड़की।

रोष – *पु॰* गुस्सा, क्रोध।

रौद्र – *वि॰* 1. डरावना, भयंकर। 2. क्रोधपूर्ण, उग्र।

ल

– हिंदी का एक अर्धव्यंजन।

लंगर – *पु॰* 1. लोहे का एक भारी काँटा जो नाव या जहाज़ को पानी में खड़ा करने के काम आता है। 2. मंदिर, गुरुद्वारे आदि में वह स्थान जहाँ लोगों को मुफ़्त भोजन खिलाया जाता है। 3. मंदिर आदि में मुफ़्त बाँटा जानेवाला भोजन। 4. गुरुद्वारे आदि में मुफ़्त भोजन बाँटे जाने का कार्यक्रम। *प्र॰* गुरुद्वारे में लंगर एक बजे से होगा।

लंगूर – *पु॰* काले मुँह और लंबी पूँछवाला बंदर।

लंब – *पु॰* वह खड़ी रेखा जो दूसरी पड़ी रेखा पर इस प्रकार गिरे कि इसके साथ समकोण बनाए। *प्र॰* निम्न चित्र में अ ब रेखा पर स द लंब है।
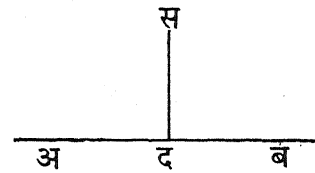
लंबा – *वि॰* 1. जो दाएँ से बाएँ या बाएँ से दाएँ काफ़ी फैला हुआ हो, बड़ा हो; जैसे – लंबी सड़क। 2. जो नीचे से ऊपर काफ़ी फैला हुआ हो, ऊँचाई में बड़ा; जैसे – लंबा आदमी। 3. जो समय के

रोशनदान   लंगर   लंगूर
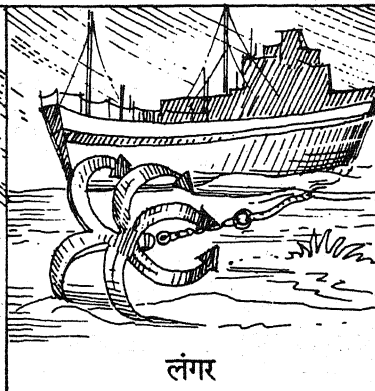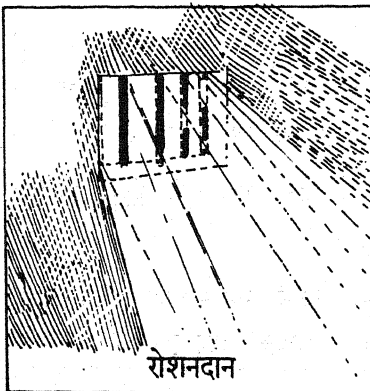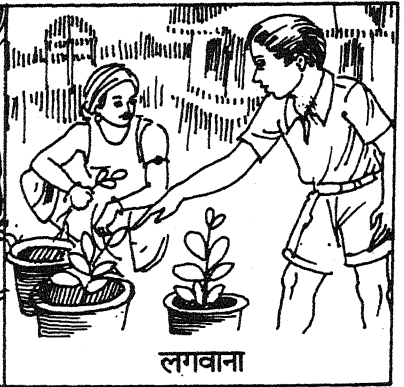
लकड़बग्घा लकड़हारा लगवाना

लिहाज़ से फैला हुआ हो; जैसे – लंबी छुट्टी, लंबा काम। *मु॰ लंबा करना–* चलता कर देना। *प्र॰* राजेश ने भिखारी को बिना कुछ दिए ही लंबा कर दिया।

लकड़बग्घा – *पु॰* भेड़िए से कुछ बड़ा, मांसाहारी जंगली जानवर।

लकड़हारा – *पु॰* जंगल से लकड़ी काटकर बेचनेवाला।

लक़वा – *पु॰* एक रोग जिसमें स्नायुओं के बेजान हो जाने के कारण स्नायु काम करना बंद कर देते हैं, पक्षाघात, फ़ालिज।

लकीर – *स्त्री॰* रेखा, लाइन। *मु॰ लकीर का फ़कीर–* बिना सोचे-समझे पुरानी रीति पर चलनेवाला। *प्र॰* सीमा के लकीर के फ़कीर पिता ने उसे विदेशी लड़के से विवाह नहीं करने दिया।

लक्षण – *पु॰* 1. वह गुण, विशेषता या चिह्न जिससे किसी वस्तु, रोग या होनेवाली घटना की पहचान की जाए। *प्र॰* नदी में पानी का लगातार बढ़ना बाढ़ आने का लक्षण था। 2. चाल-ढाल, तौर-तरीक़ा, व्यवहार। *प्र॰* मोहन के लक्षण देखकर मैं समझ गया कि वह बुरी संगत में पड़ गया है।

लक्ष्य – *पु॰* 1. जिसे पाने का कोई विशेष प्रयत्न किया जाए, उद्देश्य। *प्र॰* विरोधी दलों का लक्ष्य कांग्रेस को सत्ता से उखाड़ना था। 2. निशाना। *प्र॰* अर्जुन के तीर का लक्ष्य पानी के बरतन पर लटकती हुई मछली थी।

लगन, लग्न – *स्त्री॰* 1. किसी काम या बात में ख़ूब मन या ध्यान लगाना, धुन। *प्र॰* सुधा आजकल ख़ूब लगन से भरतनाट्यम सीख रही है। 2. विवाह का शुभ अवसर, मुहूर्त, लग्न। *प्र॰* आश्विन के प्रारंभ में कोई लगन नहीं होता।

लगना – *क्रि॰* 1. अंदाज़ होना, आभास होना। *प्र॰* मुझे लगता है कि मोहन परीक्षा में फेल हो जाएगा। 2. महसूस होना। *प्र॰* मुझे गर्मी लग रही है। 3. किसी चीज़ का मिलना। *प्र॰* ओम के घर में फ़ोन लग गया है। 4. एक चीज़ का दूसरी में जोड़ा जाना, सटना। *प्र॰* मेरी कमीज़ में बटन लगा दो।

लगभग – *अ॰* क़रीब-क़रीब, तक़रीबन। *प्र॰* मैं लगभग दस बजे आपके घर पहुँच जाऊँगी।

लगवाना – *क्रि॰* लगाने का काम किसी और से करवाना। *प्र॰* मुझे माली से पौधे लगवाने हैं।

लगातार – *अ॰* एक के बाद एक, बिना रुके, निरंतर। *प्र॰* शबाना आज़मी ने लगातार तीन साल तक सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता।

लगान – पु० सरकार द्वारा खेतों पर लगाया जानेवाला भूमि-कर, राजस्व।

लगाम – स्त्री० घोड़े की गति को वश में रखने के लिए उसके मुँह में लगाया जानेवाला लोहे का एक गोल ढाँचा। मु० *लगाम कड़ी करना* – नियंत्रण करना। *ज़बान पर लगाम न होना*– अच्छे-बुरे का ख़्याल किए बिना ज़रूरत से ज़्यादा बोलना।

लगाव – पु० 1. स्नेह, प्रेम; जैसे – अपनी संतान से लगाव। 2. गहरी रुचि; जैसे – किताबों से लगाव।

लघु – वि० 1. थोड़ा, कम, अल्प; जैसे – लघु मात्रा। 2. छोटा; जैसे – लघु फ़िल्म, लघु कथा।

लचकना – क्रि० किसी लंबी चीज़ का दबाव पड़ने से बीच के हिस्से से झुकना या मुड़ना।

लचकीला – वि० आसानी से झुक या मुड़ जाने का गुण, लचीला, लचकदार। प्र० रबड़ लचकीला होता है।

लच्छा – पु० 1. बहुत लंबे तार या धागे का गुच्छा; जैसे – ऊन का लच्छा। 2. सूत की तरह किसी चीज़ के लंबे, पतले कटे हुए टुकड़े; जैसे – प्याज़ का लच्छा।

लज्जा – स्त्री० शर्म, लाज।

लज्जित – वि० शर्म महसूस करना, शर्मिंदा। प्र० बेटे की करतूतें सुनकर माँ-बाप बहुत लज्जित हुए।

लट – स्त्री० बालों का एक गुच्छा। प्र० मधु ने माथे पर गिरती लटों को पीछे किया।

लट्टू – पु० कील पर घूमनेवाला लकड़ी का गोल खिलौना जिसे डोरी की सहायता से ज़मीन पर नचाया जाता है। मु० *लट्टू होना* – रीझना, मुग्ध होना। प्र० बच्चा बैटरी से चलनेवाली गुड़िया पर लट्टू हो गया।

लट्ठ – पु० बड़ा डंडा, मोटी लाठी।

लट्ठा – पु० 1. लकड़ी का एक मोटा, लंबा टुकड़ा, शहतीर। 2. सफ़ेद, मोटा कपड़ा।

लड़ाई – स्त्री० 1. झगड़ा, तकरार, एक-दूसरे से मारपीट। 2. युद्ध, संग्राम। प्र० राम और रावण की लड़ाई में रावण मारा गया।

लड़ाका – वि० 1. लड़नेवाला, योद्धा। प्र० राजपूत हमेशा से एक लड़ाका जाति रही है। 2. बात-बात में झगड़ा करनेवाला, झगड़ालू। प्र० हमारी कॉलोनी में कस्तूरी सबसे ज़्यादा लड़ाका है।

लड़ाकू – वि० लड़नेवाला, लड़ाई या युद्ध के काम आनेवाला; जैसे – लड़ाकू जहाज़।

लड़ी – स्त्री० एक ही प्रकार की वस्तुओं की गुँथी हुई
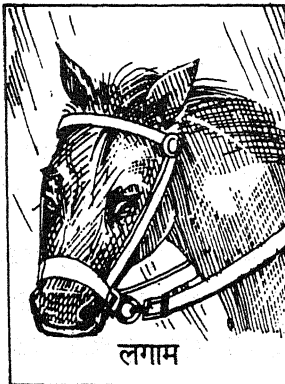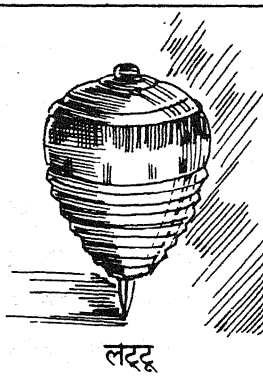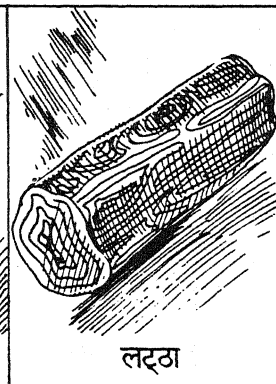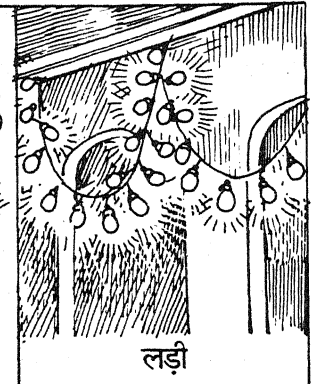
लगाम | लट्टू | लट्ठा | लड़ी
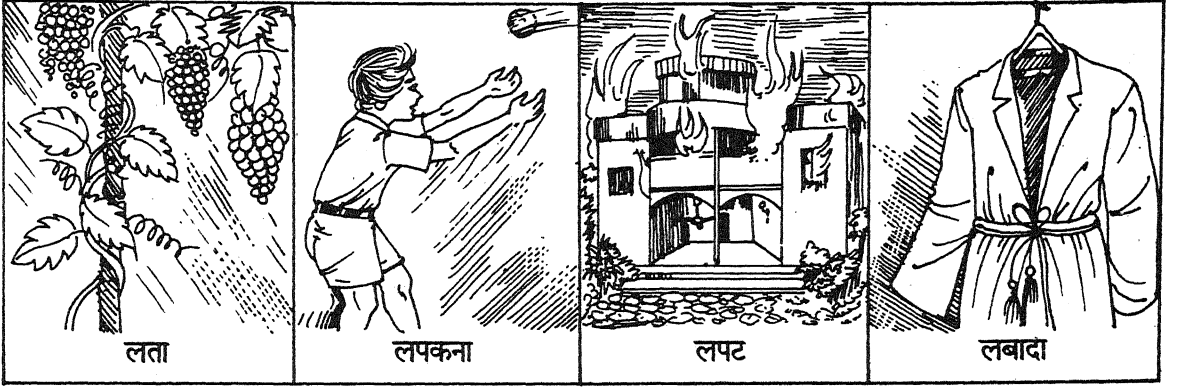
पंक्ति, माला। *प्र०* आजकल दीपावली पर लोग अपने घरों को बल्बों की लड़ियों से भी सजाते हैं।

लत – *स्त्री०* बुरी आदत; जैसे – शराब की लत।

लता – *स्त्री०* ज़मीन, पेड़, धागा आदि किसी चीज़ के सहारे फैलनेवाला पौधा, बेल; जैसे – चमेली की लता, मनीप्लांट की लता।

लताड़ना – *क्रि०* बुरी तरह डाँटना, फटकारना।

लथपथ – *वि०* 1. किसी तरल वस्तु से भीगा हुआ, तर; जैसे – खून से लथपथ। 2. सना हुआ; जैसे – कीचड़ से लथपथ।

लदना – *क्रि०* 1. सामान रखा जाना, भारी बोझ लिए होना; जैसे – भूसे से लदी हुई बैलगाड़ी। 2. किसी चीज़ का किसी और चीज़ से ढक जाना या भर जाना; जैसे – फूलों से लदा हुआ पेड़। 3. बीतना, ख़त्म हो जाना, समाप्त हो जाना। *प्र०* वे दिन लद गए जब एक रुपए किलो देसी घी मिला करता था।

लदवाना – *क्रि०* किसी से लादने का काम करवाना।

लपकना – *क्रि०* 1. अचानक तेज़ी से आगे बढ़ना। *प्र०* नेताजी के कमरे से बाहर आने पर प्रशंसक उनकी ओर लपके। 2. अपने से दूर जाते व्यक्ति या किसी गिरती हुई वस्तु को फुर्ती से पकड़ लेना। *प्र०* अज़हरुद्दीन ने छलाँग लगाकर गेंद लपक ली और कपिलदेव को आउट कर दिया।

लपट – *स्त्री०* 1. आग की लौ, ज्वाला। *प्र०* जलती हुई इमारत की लपटें आसपास भी फैलने लगीं। 2. गंध से भरा हुआ हवा का झोंका; जैसे – गुलाब की लपट, ख़स की लपट।

लपेटना – *क्रि०* 1. सूत, ऊन आदि जैसी लंबी वस्तु को घुमाते हुए लच्छे, गोले या गट्ठर के रूप में बाँधना; जैसे – कपड़े के थान को लपेटना। 2. किसी वस्तु को कपड़े, काग़ज़ आदि में इस तरह बाँधना कि वह वस्तु ढक जाए। *प्र०* गुरुग्रंथ साहिब को लाल कपड़े में लपेट दो। 3. किसी व्यक्ति को मुसीबत, झगड़े-झंझट आदि में फँसाना। *प्र०* नरेश को इस झगड़े में न लपेटो।

लबादा – *पु०* लंबा और ढीला-ढाला पहनावा, चोगा।

लब्धप्रतिष्ठ – *वि०* जिसने प्रतिष्ठा पा ली हो, प्रसिद्ध, यशस्वी; जैसे – हुसैन देश के लब्धप्रतिष्ठ चित्रकारों में से हैं।

लय – *स्त्री०* सुरों/स्वरों का मधुर उतार-चढ़ाव, धुन। *प्र०* कवि ने अपनी कविता लय में पढ़कर सुनाई।

ललक – *स्त्री०* ज़बरदस्त इच्छा, गहरी लालसा।

प्र० उमा के मन में पाइलेट बनने की बहुत ललक है।

ललकारना – *क्रि०* किसी को लड़ने की चुनौती देना, लड़ने के लिए उकसाना या भड़काना।

ललचना – *क्रि०* मनपसंद चीज़ को पाने के लिए लालच या लोभ करना। प्र० उस खिलौने को देखकर नंदू का मन ललच गया।

ललचाना – *क्रि०* किसी के मन में लालच या लोभ पैदा करना। प्र० रामू अपने खिलौने श्यामू को दिखाकर ललचा रहा है।

ललाट – पु० माथा, मस्तक। प्र० उस आदमी के ललाट पर चंदन का टीका अच्छा लग रहा था।

लवण – पु० नमक।

लश्कर – पु० 1. फ़ौज, सेना। 2. फ़ौज के ठहरने की जगह, सैनिक पड़ाव, छावनी। 3. व्यक्तियों या जानवरों का बड़ा समूह या दल; जैसे – भेड़ों का लश्कर।

लस्सी – *स्त्री०* दही, चीनी और बर्फ़ से बनाया गया एक पेय पदार्थ।

लहँगा – पु० स्त्रियों के लिए कमर से टख़ने तक का घेरदार पहनावा, घाँघरा, घाघरा।

लहर – *स्त्री०* हवा की गति से पानी में पैदा होनेवाली उतार-चढ़ावदार हरकत, हिलोर। मु० *डर की लहर दौड़ना*– कई लोगों के मन में किसी के प्रति डर पैदा होना। प्र० सुलताना डाकू के आते ही गाँव में डर की लहर दौड़ गई।

लहराना – *क्रि०* हवा के झोंके से किसी चीज़ का हिलना-डुलना। प्र० साइकल चलाती लड़की के बाल लहरा रहे थे।

लहलहाना – *क्रि०* हरियाली से भरना, हरा-भरा होना; जैसे – लहलहाते खेत।

लहसुन – पु० एक पौधा जिसकी गोल, सफ़ेद जड़ का इस्तेमाल भोजन और ओषधियों में किया जाता है।

लहू – पु० ख़ून, रक्त।

लाँघना – *क्रि०* इस पार से उस पार जाना, पार करना। प्र० पुलिस के कुछ करने से पहले ही आतंकवादी दिल्ली की सीमा लाँघ चुका था।

लांछन – पु० 1. कोई बुरा काम करने से चरित्र पर लगनेवाला धब्बा, कलंक। 2. दोष, इलज़ाम, आरोप। प्र० गिरीश पर चोरी का लांछन लगा तो उसे बहुत कष्ट हुआ।
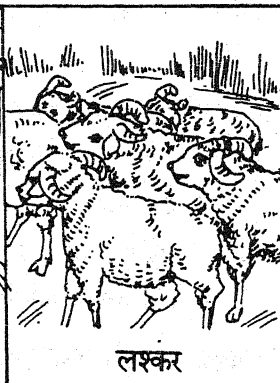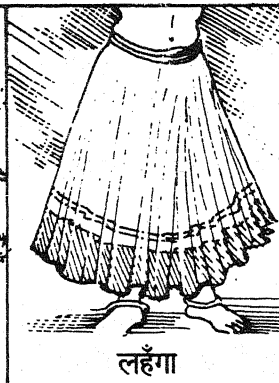
ललचाना | लश्कर | लहँगा | लहसुन
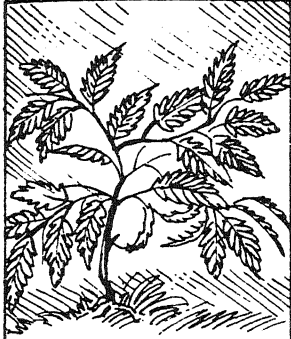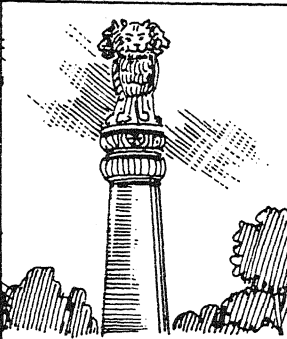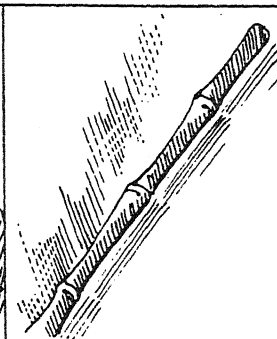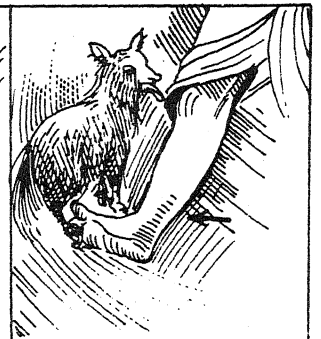
लाजवंती लाट लाठी लात

लाइन – *स्त्री०* 1. रेखा, लकीर। *प्र०* इस कागज़ पर दो लाइनें खींचो। 2. पंक्ति, कतार। *प्र०* दूध ख़रीदने के लिए लोगों की लंबी लाइन लगी है।

लाख – 1. *वि०* सौ हज़ार। 2. *स्त्री०* पेड़ों पर लगनेवाले लाख कीड़े से निकला लाल रंग का पदार्थ जो चूड़ियाँ बनाने, सील मुहर लगाने के काम आता है।

लागत – *स्त्री०* किसी चीज़ को बनाने में होनेवाला ख़र्च। *प्र०* इस खिलौने की लागत पंद्रह रुपए है।

लागू – *वि०* 1. किसी बात का किसी ख़ास व्यक्ति पर या संदर्भ में ठीक बैठना, संगत, चरितार्थ। *प्र०* पीठ पीछे बुराई करनेवाली बात राधा ही नहीं, उसकी बेटी पर भी लागू होती है। 2. लगनेवाला, किसी नियम या क़ानून का पालन किए जाने का आदेश जारी होना। *प्र०* पंजाब में कई बार राष्ट्रपति शासन लागू हो चुका है।

लाचार – *वि०* जिसके पास कोई चारा या उपाय न हो, मज़बूर, विवश, निरुपाय।

लाज – *स्त्री०* शर्म, लज्जा। *मु० लाज से गड़ना*– बहुत शर्मिंदा होना। *प्र०* बेटे की चोरी की बात सुनकर श्याम लाज से गड़ गया।

लाजवंती – *स्त्री०* 1. शरमानेवाली स्त्री। 2. एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ जाती हैं, छुईमुई।

लाट – *स्त्री०* 1. पत्थर, धातु या लकड़ी का बना हुआ मोटा, ऊँचा खंभा। *प्र०* अशोक की लाट दिल्ली के फ़िरोज़शाह कोटला में है। 2. अँग्रेज़ी के 'लॉर्ड' से बना शब्द जिसका प्रयोग अँग्रेज़ों के राज में प्रांत के सबसे बड़े शासक के लिए होता था; जैसे – लाट साहब।

लाठी – *स्त्री०* बाँस का लंबा डंडा।

लाड़ – *पु०* दुलार, प्यार।

लात – *स्त्री०* पैर, टाँग। *मु० लात मारना*– उपेक्षा करना। *प्र०* अँग्रज़ों की नौकरी को लात मारकर वह आज़ादी की लड़ाई में शामिल हो गया।

लादना – *क्रि०* 1. बहुत-सा बोझ या सामान किसी चीज़ पर रखना। *प्र०* तुमने सारे बिस्तर इस बक्स पर क्यों लाद दिए? 2. किसी पर ज़िम्मेदारी या काम का भार डालना। *प्र०* विवाह की तैयारी के सारे काम मोहन पर ही लाद दिए गए।

लानत – *स्त्री०* किसी के ग़लत व्यवहार पर उसे शर्मिंदा करने के लिए कही जानेवाली कड़ी बातें, फटकार, धिक्कार, भर्त्सना। *प्र०* लानत है तुम पर जो तुम अपनी माँ के लिए इतना भी नहीं कर पाए।

लापता – *वि०* जिसका कोई अता-पता न हो, जो खो गया हो, ग़ायब; जैसे – लापता बच्चा।

लाभ – *पु०* 1. पैसे का मुनाफ़ा, नफ़ा। *प्र०* क़रीम को मकान बेचने में दो लाख रुपए का लाभ हुआ। 2. फ़ायदा, भलाई, हित। *प्र०* उन गुंडों से दुश्मनी मोल लेने का कोई लाभ नहीं है। 3. फ़ायदा, असर। *प्र०* रोगी को उस दवा से कोई लाभ नहीं हो रहा है।

लाभप्रद – *वि०* जिससे कोई लाभ हो, फ़ायदेमंद, लाभकारी, लाभदायक।

लायक़ – *वि०* 1. उपयुक्त, मुनासिब। *प्र०* मेरे पास तुम्हारे लायक़ कोई काम नहीं है। 2. योग्य, क़ाबिल। *प्र०* 1. चंपा के सब बच्चे बहुत लायक़ हैं। 2. वह जूता अब पहनने लायक़ नहीं रहा। 3. कुछ कर सकने के योग्य, समर्थ। *प्र०* वह इतना बीमार है कि उसकी हालत डॉक्टर के पास जाने लायक़ नहीं है।

लार – *स्त्री०* मुँह से निकलनेवाला पतला, लसदार थूक।

लारी – *स्त्री०* लंबी मोटरगाड़ी जिस पर बहुत-से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

लाल – 1. *वि०* ख़ून के रंग का, सुर्ख़; जैसे – लाल कपड़ा। 2. *पु०* (क) एक क़ीमती रत्न, माणिक। (ख) छोटा और प्रिय बच्चा। *प्र०* माँ अपने लाल को सुला रही है।

लालच – *पु०* किसी चीज़ को पाने की बहुत अधिक इच्छा, लाभ, लालसा।

लालटेन – *स्त्री०* मिट्टी के तेल से जलनेवाला शीशे से घिरा हुआ एक लैंप। *प्र०* पुराने ज़माने में शहरों में भी लालटेन की रोशनी में काम होता था।

लालन – *पु०* लाड़-प्यार, बच्चे को प्यार से पालना।

लालसा – *स्त्री०* तीव्र इच्छा, बहुत दिनों से मन में बनी रहनेवाली इच्छा, अभिलाषा, साध। *प्र०* बलबीर की अपना ट्रैक्टर ख़रीदने की लालसा आज पूरी हो पाई।

लाला – *पु०* कायस्थ, बनिया और पंजाबी लोगों में आदरसूचक शब्द। *प्र०* लालाजी, मैं आपकी क्या मदद करूँ?

लालायित – *वि०* जिसके मन में किसी चीज़ के लिए चाह या लालसा पैदा हो जाए। *प्र०* सुबोध अपने पड़ोसी के जैसी कार ख़रीदने को लालायित हो उठा।
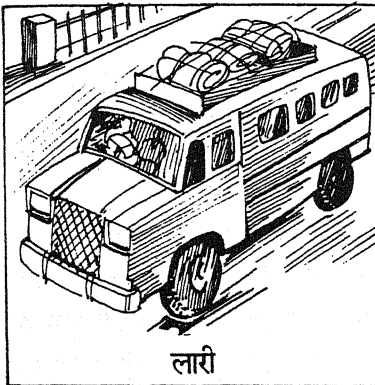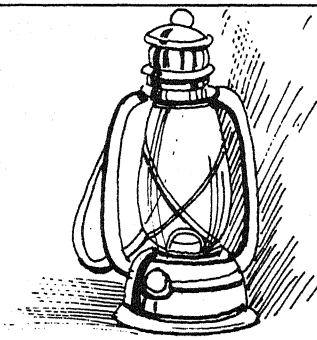
लारी | लालटेन | लालन
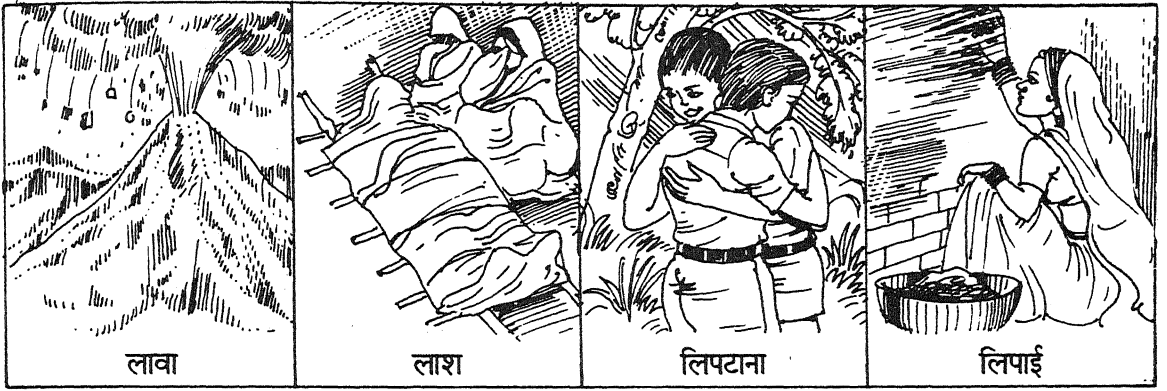
लालिमा – *स्त्री०* लाल होने का भाव, सुर्ख़ी, लाली, ललाई। *प्र०* सूर्यास्त के समय आकाश में लालिमा फैल जाती है।

लाली – *स्त्री०* दे० लालिमा।

लावा – *पु०* 1. ज्वालामुखी पर्वत के फटने पर निकलनेवाला तरल पदार्थ। 2. धान, मक्का, ज्वार आदि के भुजे हुए दाने।

लावारिस – *वि०* 1. जिसके घर-बार, परिवार आदि का पता न हो; जैसे – लावारिस लाश। 2. वह वस्तु या जानवर जिसके मालिक का पता न हो; जैसे – लावारिस कुत्ता।

लाश – *स्त्री०* मुर्दा, शव।

लिंग – *पु०* व्याकरण का वह अंग जो शब्दों को स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में बाँटे। *प्र०* 'घोड़ा' का लिंग पुल्लिंग और 'घोड़ी' का लिंग स्त्रीलिंग है।

लिखावट – *स्त्री०* लिखने का ढंग या तरीक़ा, लिखाई। *प्र०* सुधीर की लिखावट बहुत सुंदर है।

लिखित – *वि०* लिखा हुआ, लिखकर। *प्र०* सुमन ने बस-कंडक्टर के ख़िलाफ़ लिखित शिकायत की।

लिपटना – *क्रि०* 1. चिपकना, सट जाना। *प्र०* पेड़ से लिपटा हुआ अजगर देखकर मैं डर गई। 2. गले लगाना, आलिंगन करना। *प्र०* डरा हुआ बच्चा माँ से लिपट गया।

लिपटाना – *क्रि०* सटाना, गले लगाना, आलिंगन करना।

लिपाई – *स्त्री०* लीपने का काम, किसी तरल वस्तु से लेप करने का काम। *प्र०* कच्चे घरों की लिपाई गोबर से होती है।

लिपापुता – *वि०* 1. अच्छी तरह से लीपा हुआ। 2. साफ़-सुथरा; जैसे – लिपापुता घर।

लिपि – *स्त्री०* किसी भाषा की ध्वनियों को लिखने की पद्धति। *प्र०* हिंदी की लिपि देवनागरी है।

लिप्सा – *स्त्री०* पाने की चाह, इच्छा।

लिहाज़ – *पु०* 1. व्यवहार में किसी बात या व्यक्ति का रखा जानेवाला ख़ास ध्यान या ख़याल, इज़्ज़त, आदर, अदब। *प्र०* सबा बड़े-छोटे का ख़ूब लिहाज़ करती है। 2. विचार, दृष्टि, नज़रिया। *प्र०* शिक्षा के लिहाज़ से भारत में केरल का स्थान सबसे ऊँचा है।

लीक – *पु०* 1. रेखा, लकीर। 2. लोगों, बैलगाड़ियों आदि के आने-जाने से कच्ची ज़मीन पर बना हुआ पगडंडी का निशान। 3. रिवाज, परंपरा। *मु० लीक पीटना* – कुछ नया करने के बजाय पुरानी रस्में

निभाते रहना। प्र० स्कूली शिक्षा में अभी भी अंग्रेज़ों के ज़माने की लीक पीटी जा रही है।

लीची – *स्त्री०* सफ़ेद रंग का छोटा, रसीला फल जिसके लाल छिलके पर कटावदार दाने उभरे रहते हैं।

लीद – *स्त्री०* घोड़े, गधे, हाथी आदि कुछ पशुओं का मल।

लीन – *वि०* जो किसी विचार या काम में डूबा हुआ हो, मग्न, तल्लीन, तन्मय। प्र० संन्यासी साधना में लीन था।

लीपना – *क्रि०* पोतना, किसी गाढ़ी, तरल वस्तु का लेप करना।

लीला – *स्त्री०* 1. मनबहलाव के लिए खेला जानेवाला खेल, क्रीड़ा; जैसे – पार्क में दौड़ते-भागते बच्चों की बाल-लीलाएँ। 2. अवतारों, देवताओं के जीवन को नाटक के रूप में खेला जाना; जैसे – रामलीला। 3. रहस्यमय काम जिसे समझ पाना मुश्किल हो। प्र० राजनेताओं की लीला को समझना आसान नहीं है।

लुंगी – *स्त्री०* टखनों तक लटकनेवाली छोटी धोती जिसे कमर में बाँधा जाता है, तहमद।

लुका-छिपी – *स्त्री०* बच्चों का एक खेल जिसमें सब बच्चे छिप जाते हैं और एक बच्चा उन्हें ढूँढ़ता है।

लुकाट, लुकाठ – *पु०* एक पेड़ या उसका खट्टा-मीठा फल।

लुगदी – *स्त्री०* किसी पीसी हुई गीली चीज़ का पिंड या गोला। प्र० भारत के कई राज्यों में काग़ज़ की लुगदी से मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।

लुटाना – *क्रि०* बेकार का ख़र्चा करना, बर्बाद करना। प्र० सुबोध ने अपने महीने-भर की आमदनी तीन ही दिन में लुटा दी।

लुटेरा – *पु०* लोगों का पैसा और सामान लूटनेवाला, डाकू। प्र० पुलिस ने कल तीन लुटेरों को पकड़ा।

लुढ़कना – *क्रि०* चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना या गिरना, ढुलकना। प्र० गेंद लुढ़कते हुए नाली में जा गिरी।

लुढ़काना – *क्रि०* किसी चीज़ को ऐसे ढकेलना या फेंकना कि वह लुढ़क जाए, ढुलकाना।

लुप्त – *वि०* 1. ग़ायब, जो छिप गया हो, अदृश्य। प्र० देखते ही देखते बादल आकाश से लुप्त हो गए। 2. जो समाप्त हो गया हो, नष्ट, मगन। प्र० ज्वालामुखी फटने से गाँव के गाँव लुप्त हो जाते हैं।
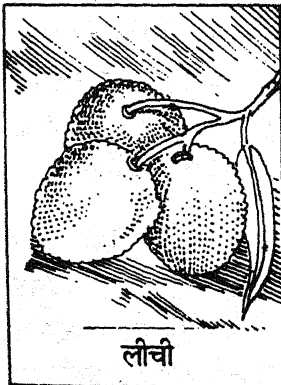
लीची लुंगी लुकाट लुढ़काना
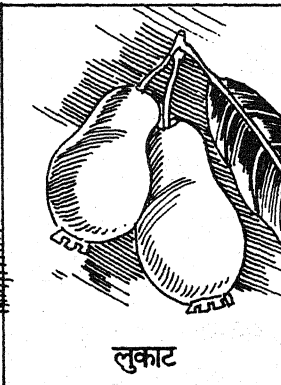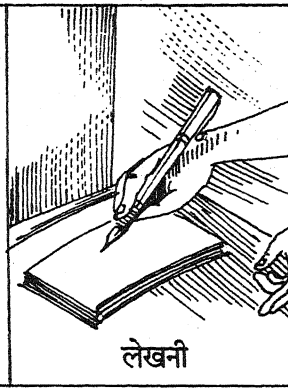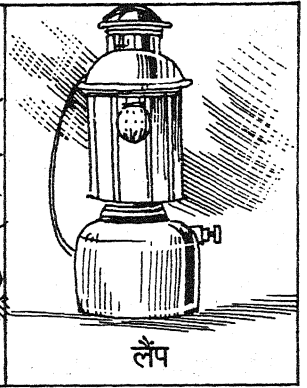
लुभाना – *क्रि०* 1. किसी के मन में किसी वस्तु या बात के लिए लालच पैदा करना, ललचाना, बहकाना। *प्र०* दूरदर्शन पर दिखाए जानेवाले विज्ञापनों का उद्देश्य दर्शकों को लुभाना होता है। 2. ध्यान आकर्षित करना, मोहित करना। *प्र०* समुद्र की लहरें राधा को बहुत लुभाती हैं।

लुभावना – *वि०* लुभानेवाला, मोहित करनेवाला।

लुहार – *पु०* लोहे की चीज़ें बनानेवाला।

लू – *स्त्री०* गर्मी के दिनों में चलनेवाली तेज़, गर्म हवा।

लूटना – *क्रि०* 1. डराकर या हमला करके पैसा, सामान आदि छीन लेना। 2. किसी चीज़ का बहुत अधिक दाम वसूलना। *प्र०* दो सौ रुपए में यह पैंट बेचकर दूकानदार ने तुम्हें लूट लिया।

लूटपाट – *स्त्री०* लोगों को मार-पीटकर उनका धन छीन लेना। *प्र०* सन् 1984 के दंगों में देश के कई भागों में लूटपाट और हत्याएँ हुईं।

लूला – *वि०* जिसका एक या दोनों हाथ न हों।

लेई – *स्त्री०* घोलकर पकाया गया आटा जो चिपकाने के काम आता है।

लेख – *पु०* 1. निबंध। 2. लिखावट, लिखाई। *प्र०* उदय के चार लेख अख़बार में छप चुके हैं।

लेखक – *पु०* अख़बार-पत्रिकाओं में लिखनेवाला, किताबें लिखनेवाला।

लेखन – *पु०* लिखने का काम। *प्र०* लेखन से श्रीकांत को डेढ़ हज़ार रुपए महीने की आमदनी हो जाती है।

लेखनी – *स्त्री०* क़लम।

लेन-देन – *पु०* 1. लेना-देना, आदान-प्रदान, विवाह आदि में उपहार और धन लेने-देने का काम। 2. ऋण लेने और देने का काम, महाजनी।

लेना – *क्रि०* 1. पकड़ना, प्राप्त करना। *प्र०* मैंने गेंद हाथ में ली। 2. ख़रीदना। *प्र०* मैंने यह किताब चार सौ रुपए में ली। 3. खाना, पीना, सेवन करना। *प्र०* मैं रोज़ नीबू का पानी लेती हूँ। 4. उधार लेना। *प्र०* मैंने गीता से दस रुपए लिए।

लेप – *पु०* कोई गीली और गाढ़ी वस्तु जो लीपने-पोतने के काम आए।

लेश –*वि०* थोड़ा, ज़रा-सा, अल्प। *प्र०* इला को लेशमात्र भी अनुमान नहीं था कि मीना उसे धोखा देगी।

लैंप – *पु०* मिट्टी के तेल, गैस या बिजली के ज़रिए रोशनी देनेवाली कोई भी चीज़; जैसे – ढिबरी,

लालटेन, बल्ब आदि।

लैस – *वि॰* तैयार, किसी काम के लिए ज़रूरी चीज़ों का इंतज़ाम करके। *प्र॰* नेताजी के भाषण में दंगा करनेवालों का गुट पत्थरों, बोतलों से लैस होकर गया था।

लोक – *पु॰* 1. संसार, जगत्; जैसे – मृत्युलोक, परलोक। 2. लोग, समाज, आमजन; जैसे – लोक-कल्याण, लोक-भाषा।

लोकगीत – *पु॰* साधारण जनता में प्रचलित गीत जो प्रायः बोलचाल की भाषा में होते हैं; जैसे – भोजपुरी लोकगीत, मराठी लोकगीत।

लोकतंत्र – *पु॰* जनता या जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों का शासन, जनतंत्र, प्रजातंत्र।

लोकप्रिय –*वि॰* जो बहुत-से लोगों को प्रिय हो, जो लोगों में प्रचलित हो।

लोकसभा – *स्त्री॰* भारतीय संसद के दो सदनों में से एक सदन जिसके सदस्यों का चुनाव जनता करती है।

लोकोक्ति – *स्त्री॰* लोगों में प्रचलित बात या उक्ति, वह छोटा वाक्य जिसमें थोड़े शब्दों में कोई गहरी बात कही गई हो, कहावत। *प्र॰* 'ताली एक हाथ से नहीं बजती'–इस लोकोक्ति का अर्थ यह है कि किसी झगड़े में दोष एक व्यक्ति का नहीं, दोनों तरफ़ का होता है।

लोच – *स्त्री॰* लचक, लचकीलापन।

लोचन – *पु॰* आँख, नेत्र।

लोटना – *क्रि॰* पीठ के बल इधर-उधर लुढ़कना। *प्र॰* बच्चा खिलौने की ज़िद में सड़क पर लोटने लगा।

लोटा – *पु॰* धातु का एक छोटा गोल बरतन जो पानी, चाय आदि तरल चीज़ें रखने के काम आता है।

लोप – *पु॰* ग़ायब, अदृश्य या नष्ट होना। *प्र॰* पुराणों में बताई हुई सरस्वती नदी का लोप हो चुका है।

लोबिया – *पु॰* एक पौधा जिसकी कच्ची फली की सब्ज़ी और सफ़ेद सूखे बीज की दाल बनती है।

लोभ – *पु॰* किसी चीज़ को लेने की प्रबल इच्छा, लालच। *प्र॰* कुछ लोग धन के लोभ में बेईमान हो जाते हैं।

लोमड़ी – *स्त्री॰* गीदड़ की जाति का एक चतुर जानवर।

लोरी – *स्त्री॰* बच्चों को बहलाने-सुलाने के लिए गाया जानेवाला गीत।

लोचन | लोटा | लोबिया | लोमड़ी

लौंग | लौकी | वंदना | वक़ील

लोलुप – *वि॰* लालची, लोभी।

लोहा – *पु॰* हथियार, मशीनें आदि बनाने के काम आनेवाला काले-से रंग की एक धातु। *मु॰ लोहा मानना* – किसी की श्रेष्ठता स्वीकार करना। *लोहे के चने चबाना*–बहुत मुश्किल काम करना। *प्र॰* हल्दी घाटी के युद्ध में अकबर को लोहे के चने चबाने पड़े।

लौंग – *पु॰* गहरे भूरे रंग की एक फूल की कली जिसे सुखाकर मसाले, दवा के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

लौंड़ा – *पु॰* लड़का।

लौ – *स्त्री॰* 1. आग की लपट, ज्वाला। 2. किसी बात की लगन या धुन।

लौकी – *स्त्री॰* हल्के हरे रंग की एक सब्ज़ी, घीया।

लौह-युग – *पु॰* मानव-इतिहास का वह युग जब मनुष्य ने लोहे का इस्तेमाल करना सीख लिया था।

व – हिंदी का एक अर्धस्वर।

वंचित – *वि॰* 1. जो मिलना चाहिए वह न मिला हो, हीन, रहित; जैसे – अधिकार से वंचित। 2. जिसे ठग लिया गया हो, धोखा खाया हुआ।

वंदना – *स्त्री॰* 1. पूजा, स्तुति; जैसे – ईश्वर-वंदना। 2. स्तुतिगीत।

वंश – *पु॰* ख़ानदान, कुल, परिवार, किसी एक पूर्वज की पुत्र-परंपरा। *प्र॰* चंद्रगुप्त गुप्त वंश का राजा था।

वक़ालत – *स्त्री॰* 1. वक़ील का काम, पेशा। *प्र॰* नईम को वक़ालत से अच्छी आमदनी हो जाती है। 2. वक़ील का काम करने की पढ़ाई, क़ानूनी पढ़ाई। *प्र॰* सुधा वक़ालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड गई। 3. पक्ष लेना, तरफ़दारी। *प्र॰* जब माँ रामू को डाँटने लगी, तो सोहन उसकी वक़ालत करने लगा।

वक़ील – *पु॰* वह व्यक्ति जिसने वक़ालत की परीक्षा पास की हो तथा जो अदालत में लोगों का मुक़दमा लड़े।

वक़्त – *पु॰* समय। *प्र॰* वक़्त न मिलने के कारण मैं आपके घर नहीं आ सका।

वक्तव्य – *पु॰* किसी विषय/मुद्दे पर कही गई बात या दिया गया बयान, कथन, वचन, स्टेटमेंट। *प्र॰* बोफोर्स कांड पर कांग्रेस सरकार का वक्तव्य पूरी तरह सच नहीं था।

वक्ता – *वि०* बोलनेवाला, भाषण देनेवाला। *प्र०* सभा में भाग लेनेवाले वक्ताओं को फूलमालाएँ पहनाई गईं।

वक्र – *वि०* 1. टेढ़ा; जैसे – वक्र रेखा। 2. झुका हुआ, तिरछा। 3. बेईमान, कुटिल।

वक्ष – *पु०* पेट और गले के बीच का हिस्सा, छाती।

वचन – *पु०* 1. कहना, कथन, वाणी। *प्र०* नेहा के मीठे वचन सुनकर माँ का क्रोध शांत हो गया। 2. वायदा, प्रतिज्ञा, प्रण। *प्र०* बेटे ने माँ को वचन दिया कि वह विदेश जाकर शराब नहीं पिएगा। 3. व्याकरण का वह अंग जो संज्ञा की संख्या के बारे में बताता है। *प्र०* 'किताब' एकवचन है और 'किताबें' बहुवचन है।

वचनबद्ध – *वि०* जो अपने वचन से बँधा हो, जिसने कोई वायदा किया हो। *प्र०* भीष्म अपने पिता शांतनु से वचनबद्ध थे।

वज़नी – *वि०* भारी, जिसका बोझ या वज़न ज़्यादा हो।

वजह – *स्त्री०* कारण। *प्र०* बारिश की वजह से कपड़े नहीं सूख पाए।

वज़ीफ़ा – *पु०* किसी भी क़िस्म का मासिक भत्ता, छात्रवृत्ति, स्कॉलरशिप, पेंशन।

वज़ीर – *पु०* 1. मंत्री, सचिव। 2. शतरंज का एक मोहरा।

वज्रपात – *पु०* 1. बिजली गिरना। 2. भारी विपत्ति, संकट, मुसीबत। *प्र०* पति की मृत्यु से हुए वज्रपात ने मीना की हिम्मत तोड़ दी।

वटवृक्ष – *पु०* बरगद का पेड़।

वतन – *पु०* अपना देश, स्वदेश।

वत्स – *पु०* बेटा, पुत्र।

वध – *पु०* हत्या।

वधिक – *पु०* दे० बधिक।

वधू – *स्त्री०* बहू, दूल्हन, पत्नी।

वन – *पु०* जंगल।

वनमानुष – *पु०* बिना पूँछ का बंदर जो आदमी से मिलता-जुलता होता है।

वनवास – *पु०* वन में रहना; जैसे – पांडवों का वनवास।

वनस्पति – *स्त्री०* पेड़-पौधे, झाड़ियाँ, लताएँ आदि।

वन्य – *वि०* वन का, जंगली; जैसे – वन्य-जीवन।

वमन | वर | वर्ग | वर्ण
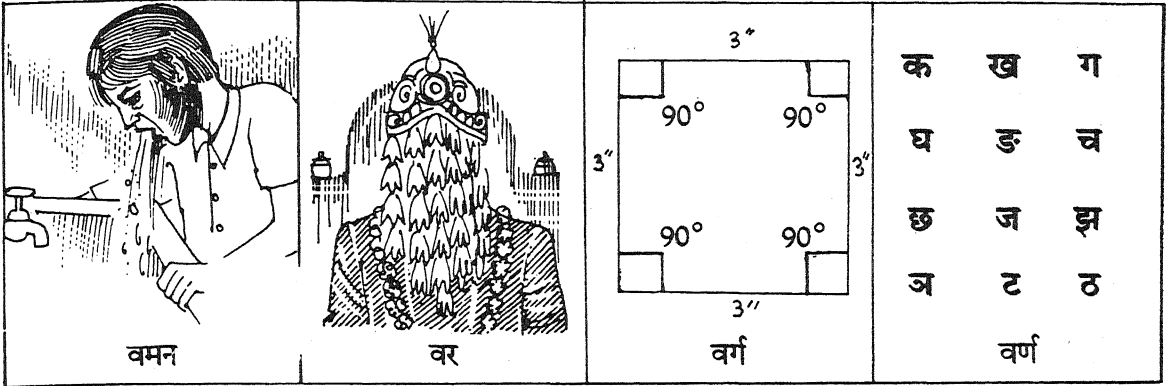
वमन – पु० उल्टी, कै। प्र० बस के धुएँ से कई लोगों को वमन की शिकायत हो जाती है।

वयस्क – पु० जिसकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक हो, बालिग़, सयाना।

वर – पु० 1. दूल्हा। 2. दे० वरदान।

वरदान – पु० 1. कोई अच्छी चीज़ या शक्ति जो किसी देवता या महापुरुष से प्रसाद के रूप में माँगी जाए। 2. कोई अच्छी चीज़ या शक्ति जो देवता या महापुरुष किसी पर प्रसन्न होकर उसे दें। प्र० भीम को वरदान मिला था कि मल्ल-युद्ध में उससे कोई नहीं जीत पाएगा।

वरदी, वर्दी – स्त्री० किसी दफ़्तर या कारख़ाने के कर्मचारियों के लिए एक ही रंग के कपड़े।

वरन् – अ० बल्कि, इसके विपरीत। प्र० सफ़दर की मृत्यु से माला हताश नहीं हुई वरन् दुगुनी शक्ति से अधूरे काम को पूरा करने में लग गई।

वरिष्ठ – वि० आयु, पद और प्रतिष्ठा में बड़ा या ऊँचा, सीनियर; जैसे – वरिष्ठ नेता, वरिष्ठ अध्यापक।

वर्ग – पु० 1. अंकगणित में किसी संख्या को उसी से गुणा करने पर प्राप्त संख्या; जैसे – 4 का वर्ग 16 (4 × 4)। 2. ज्यामिति में ऐसा चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ बराबर हों और चारों कोण समकोण हों। 3. उन लोगों का समूह जो एक ही धर्म के हों या जिनकी आर्थिक स्थिति एक-सी हो, कोटि, श्रेणी; जैसे – ब्राह्मण-वर्ग, मज़दूर-वर्ग।

वर्गीकरण – पु० समानताओं के आधार पर वस्तुओं को अलग-अलग वर्गों में बाँटना; जैसे – विषय के आधार पर पुस्तकों का वर्गीकरण।

वर्चस्व – पु० प्रतिभा के अनुरूप कीर्ति, प्रतिष्ठा; जैसे – क्रिकेट के क्षेत्र में गावस्कर का वर्चस्व।

वर्जित – वि० किसी बात या काम को करने की इज़ाज़त न होना, मना, निषिद्ध। प्र० बसों में सिगरेट पीना वर्जित होता है।

वर्ण – पु० 1. रंग। 2. मनुष्य की त्वचा का रंग। प्र० सतवीर गौर वर्ण की लड़की से विवाह करना चाहता है। 3. काम के आधार पर बाँटी गई हिंदू जातियाँ; जैसे – वैश्य वर्ण, क्षत्रिय वर्ण। 4. अक्षर।

वर्णन – पु० किसी वस्तु, घटना या बात को विस्तार से समझाते हुए कहना, बयान, विवरण। प्र० अख़बार में रेल-दुर्घटना का वर्णन रोंगटे खड़े कर देनेवाला था।

वर्णमाला – स्त्री० (व्याकरण में) स्वरों और व्यंजनों

सहित अक्षरों की सूची जिसका एक निश्चित क्रम होता है। *प्र०* अंग्रेज़ी वर्णमाला 'ए' से शुरू होकर 'ज़ेड' पर ख़त्म होती है।

वर्तमान – 1. *वि०* जो इस समय है, अभी का, मौजूदा; जैसे – वर्तमान प्रधानमंत्री। 2. *पु०* अभी चल रहा समय, चालू वक़्त। *प्र०* भविष्य की चिंता में अपना वर्तमान क्यों बिगाड़ते हो?

वर्तिका – *स्त्री०* 1. सलाई। 2. काग़ज़ या स्लेट पर लिखने की पेंसिल, स्लेटी। 3. लैंप की बत्ती।

वर्ष – *पु०* साल।

वर्षगाँठ – *स्त्री०* हर साल आनेवाला वह दिन जब जन्म, विवाह आदि जैसी कोई महत्त्वपूर्ण घटना हुई हो, सालगिरह; जैसे – शादी की वर्षगाँठ।

वश – *पु०* क़ाबू, अधिकार, नियंत्रण। *प्र०* नाराज़ हाथी को पीलवान वश में नहीं कर सका।

वशीभूत – *वि०* किसी के वश में हुआ या मोह में बँधा हुआ, अधीन। *प्र०* जादूगर के जादू के वशीभूत होकर मनोज उसकी सब बातें मान गया।

वसंत – *पु०* छः ऋतुओं में से एक ऋतु जो ग्रीष्म ऋतु से पहले पड़ती है।

वसा – *स्त्री०* 1. घी, तेल आदि से मिलनेवाली चिकनाई। 2. वह चिकना पदार्थ जो मनुष्य, पशु और मछली के शरीर में पाया जाता है।

वसीयत – *स्त्री०* किसी व्यक्ति की ओर से यह लिखित घोषणा कि उसके मरने के बाद उसकी संपत्ति पर किन-किन लोगों का हक़ होगा।

वसुधा – *स्त्री०* पृथ्वी।

वसूलना – *क्रि०* दूसरे से बक़ाया पैसा लेना, उगाही करना। *प्र०* मैंने मोहन जैसे कंजूस आदमी से भी सारा पैसा वसूल लिया।

वस्तु – *स्त्री०* पदार्थ, चीज़।

वस्तुतः – *अ०* असल में, वास्तव में। *प्र०* वस्तुतः मैं बीमार पड़ जाने के कारण परीक्षा न दे सका।

वस्त्र – *पु०* कपड़ा।

वांछित – *वि०* इच्छित, चाहा हुआ। *प्र०* वांछित खिलौना मिल जाने पर बच्चा प्रसन्न हो गया।

वाक्य – *पु०* शब्दों का वह समूह जो कोई बात या विचार प्रकट करे।

वाचनालय – *प्र०* वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए अख़बार, पत्रिकाएँ आदि रखी जाती हों।

वाचाल – *वि०* बहुत बोलनेवाला, वाक्पटु। *प्र०* मेरा पड़ोसी बहुत वाचाल है।
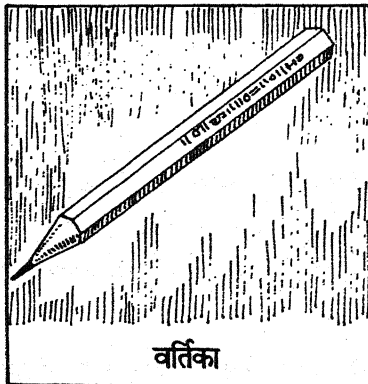
वर्तिका | वसुधा | वाचनालय
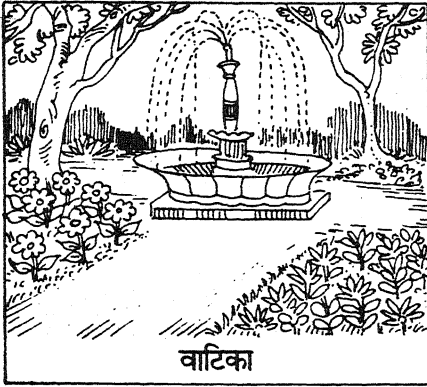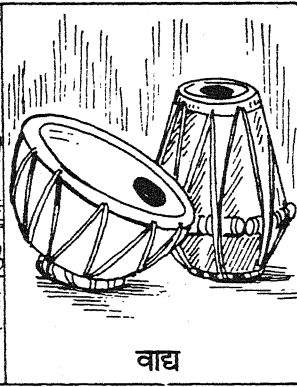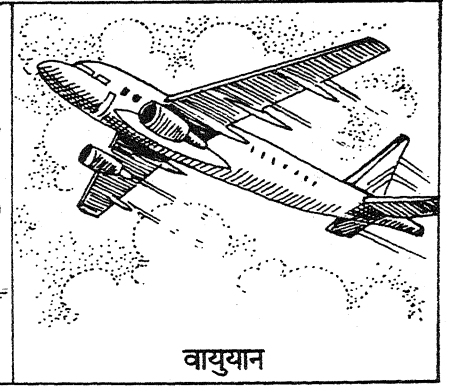
वाटिका
वाद्य
वायुयान

वाटिका – *स्त्री०* छोटा बाग़, बगीचा, उद्यान।

वाणी – *स्त्री०* 1. मुँह से निकली हुई आवाज़, बोली, स्वर। *प्र०* लता मंगेशकर की मधुर वाणी के लाखों प्रशंसक हैं। 2. जीभ। 3. बात, वचन, कथन; जैसे – भविष्यवाणी। 4. विद्या की देवी सरस्वती।

वातावरण – *पु०* 1. आसपास के लोगों और समाज के रहन-सहन, सोचने के ढंग आदि से बननेवाली परिस्थिति, माहौल, परिवेश। *प्र०* इंदिरा गांधी को बचपन से ही घर में राजनीतिक वातावरण मिला। 2. प्राकृतिक माहौल, पर्यावरण। *प्र०* छोटी पहाड़ी जगहों का वातावरण साफ़ और शांत होता है। 3. पृथ्वी को चारों ओर से घेरे रहनेवाली वायु, वायुमंडल।

वात्सल्य – *पु०* बच्चों के लिए माँ-बाप के मन में प्यार की भावना, स्नेह।

वादविवाद – *पु०* भिन्न-भिन्न लोगों द्वारा किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलना, बहस, तर्क-वितर्क, डिबेट। *प्र०* हमारे स्कूल में 'छुट्टियों में होमवर्क नहीं दिया जाना चाहिए' विषय पर वादविवाद प्रतियोगिता हुई।

वाद्य – *पु०* बाजा। *प्र०* विभा दो वाद्य बजा सकती है।

वानर – *पु०* बंदर।

वापस – *वि०* लौटा हुआ। *प्र०* घर में ताला बंद देखकर वह वापस आ गया।

वापसी – 1. *स्त्री०* वापस होने या करने का भाव। *प्र०* बाज़ार से वापसी में कुछ फल भी लेते आना। 2. *वि०* लौटा हुआ, लौटने का, जवाबी; जैसे – रेल का वापसी टिकट।

वाम – *वि०* 1. बायाँ, उल्टा, विपरीत, प्रतिकूल। 2. बुरा, दुष्ट।

वामावर्त्त – *वि०* घड़ी की सूई के दाईं ओर से बाईं ओर घूमने की क्रिया अर्थात् घड़ी की सूई का 12 से 9, 6 आदि पर जाना, एंटी-क्लॉकवाइज़।

वायु – *स्त्री०* हवा, पवन।

वायुमंडल – *पु०* 1. पृथ्वी के चारों ओर फैला हुआ वायु का आवरण या घेरा। 2. वातावरण। *प्र०* पेट्रोल से चलनेवाले वाहनों के कारण शहरों के वायुमंडल में ज़हर घुल रहा है।

वायुयान – *पु०* हवा में उड़नेवाला यान या जहाज़, हवाई जहाज़।

वायुवेग – *पु०* हवा की गति।

वार – *पु०* 1. हमला, आक्रमण, प्रहार। *प्र०* चोरों ने बूढ़ी औरत पर वार करके उसे बेहोश कर दिया।

2. सप्ताह का एक दिन; जैसे – बुधवार, शनिवार।

वारिस – पु॰ वह जिसे किसी रिश्तेदार की मृत्यु के बाद उसकी जायदाद में से हिस्सा मिले, उत्तराधिकारी। प्र॰ आजकल लड़कियाँ भी अपने माता-पिता की संपत्ति की वारिस होती हैं।

वार्त्ता – *स्त्री॰* 1. दो गुटों के बीच किसी मुद्दे पर बातचीत; जैसे – मिल-मालिकों और मज़दूरों के बीच वार्त्ता। 2. किसी ख़ास विषय की जानकारी देने के लिए विस्तार से बोलना, टाक। प्र॰ आज मैंने रेडियो पर 'पंजाब-समस्या' पर एक वार्त्ता सुनी।

वार्त्तालाप – पु॰ कई लोगों के बीच आपस में बातचीत, गपशप, संवाद।

वार्षिक – *वि॰* जो हर साल होता हो, सालाना; जैसे – वार्षिक उत्सव, वार्षिक मेला।

वाष्प – पु॰ भाप।

वाष्पीकरण – *स्त्री॰* आग या सूर्य की किरणों की गर्मी के कारण पानी का भाप में बदलना।

वासी – पु॰ रहनेवाला, निवासी; जैसे – भारतवासी।

वास्तविक – *वि॰* असली, सही, यथार्थ। प्र॰ उस कहानी में गाँव के जीवन की वास्तविक झाँकी दी गई है।

वाहक – पु॰ ले जानेवाला, ढोनेवाला; जैसे – रिक्शावाहक, पत्रवाहक।

वाहन – पु॰ माल या यात्रियों को ढोने का साधन, सवारी। प्र॰ तुम्हारे पास कौन-सा वाहन है – गाड़ी या स्कूटर?

विकट – *वि॰* 1. मुश्किल, कठिन। 2. भयंकर, भीषण। प्र॰ सूखे के कारण पीने के पानी की विकट समस्या पैदा हो गई है।

विकराल – *वि॰* 1. भीषण, भयंकर। प्र॰ इलाज न हो पाने के कारण उसकी बीमारी ने विकराल रूप धारण कर लिया। 2. डरावना, भयानक। प्र॰ मैंने सपने में विकराल राक्षस देखा।

विकल – *वि॰* परेशान, बेचैन, व्याकुल।

विकलांग – *वि॰* जिसका कोई अंग टूट गया हो या ख़राब हो गया हो। प्र॰ सरकार विकलांगों को नौकरी में आरक्षण दे रही है।

विकल्प – पु॰ कोई चीज़ जिसे किसी दूसरी चीज़ के स्थान पर चुना जा सकता हो। प्र॰ 1. चाय का विकल्प कॉफ़ी है। 2. उसके सामने घर लौटने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

विकसित – *वि॰* 1. जिसका विकास हुआ हो या

वाहक | वाहन | विकलांग
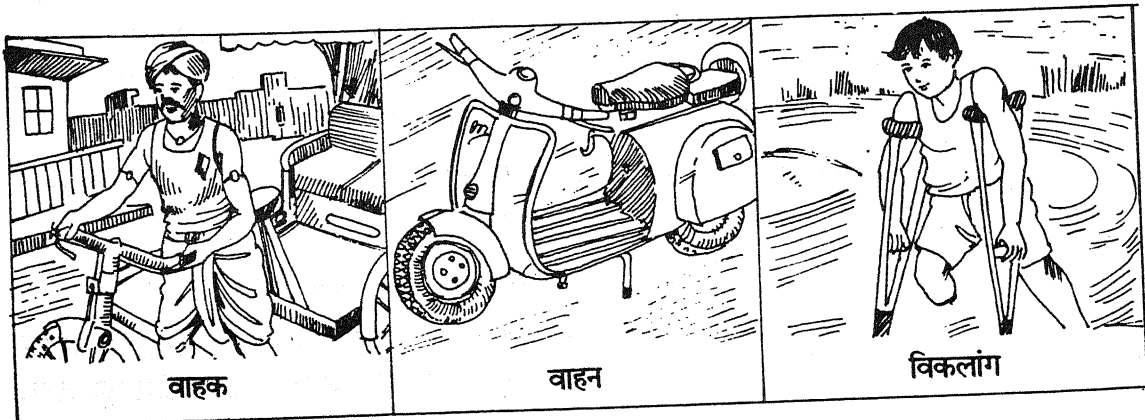
विक्रेता
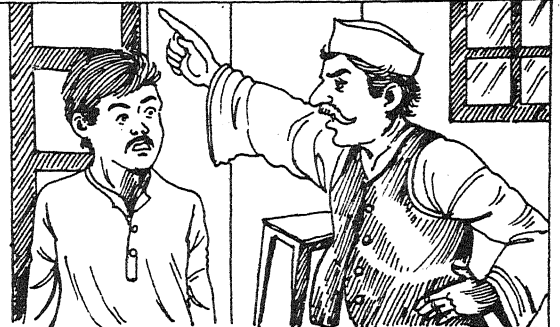
विचलित

किया गया हो; जैसे – विकसित समाज। 2. खिला हुआ; जैसे – विकसित फूल।

विकार – *पु॰* ख़राबी, दोष, बिगाड़। *प्र॰* शरीर में विकार से कई भयंकर रोग हो जाते हैं।

विकास – *पु॰* किसी वस्तु या व्यक्ति के फैलने, बढ़ने, प्रगति या उन्नति करने की क्रिया; जैसे – सभ्यता का विकास, मानसिक विकास।

विकीर्ण – *वि॰* चारों ओर फैला या बिखरा हुआ।

विकृत – *वि॰* 1. विकारयुक्त, जिसका रूप या आकार बिगड़ गया हो, भद्दा। *प्र॰* चार दिन से पड़ी होने के कारण लाश विकृत हो गई थी। 2. बुरा, ख़राब, दूषित; जैसे – विकृत समाज, विकृत विचार।

विक्रय-मूल्य – *पु॰* वह मूल्य जिस पर कोई वस्तु बेची जाती है।

विक्रेता – *पु॰* बेचनेवाला; जैसे – साइकल-विक्रेता, घड़ी-विक्रेता।

विक्षोभ – *पु॰* मन में अशांति, क्रोध और दुख का मिला-जुला भाव। *प्र॰* भाई के स्वार्थपूर्ण व्यवहार ने विमल का मन विक्षोभ से भर दिया।

विख्यात – *वि॰* मशहूर; प्रसिद्ध; जैसे – विख्यात गणितज्ञ आर्यभट्ट।

विगत – *वि॰* जो बीत चुका हो, अतीत; जैसे – विगत स्मृतियाँ, विगत बातें।

विघ्न – *पु॰* बाधा, अड़चन, कठिनाई। *प्र॰* पिता की मृत्यु के बाद उसकी पढ़ाई में विघ्न आ गया।

विचलित – *वि॰* 1. बेचैन, परेशान। *प्र॰* अपनी नौकरी छूटने की बात सुनकर श्याम विचलित हो उठा। 2. अपनी बात या प्रतिज्ञा से हटा हुआ। *प्र॰* वायदा करके विचलित होना उसकी आदत है।

विचार – *पु॰* 1. मन में सोची हुई बात, ख़्याल। *प्र॰* मेरे मन में एक विचार आया है। 2. किसी विषय पर गंभीरता से सोचना, चिंतन, मनन; जैसे – छुआछूत की समस्या पर गांधीजी के विचार। 3. कोई काम करने का इरादा या योजना। *प्र॰* इस वर्ष बच्चों के लिए दो पुस्तकें लिखने का मेरा विचार है।

विचारणीय – *वि॰* जिस विषय पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो, विचार करने योग्य; जैसे – विचारणीय प्रश्न।

विचारवान् – *वि॰* सोच-विचार करनेवाला, समझदार; जैसे – विचारवान् युवक।

विचार-विमर्श – पु० किसी विषय पर दूसरों की सहायता लेते हुए सोच-विचार करना।

विचित्र – *वि०* अजीब, अनोखा, चकित कर देनेवाला, अद्‌भुत; जैसे – विचित्र बात, विचित्र व्यक्ति।

विजय – *स्त्री०* जीत। *प्र०* भगवान् राम ने रावण पर विजय प्राप्त की।

विजयादशमी – *स्त्री०* दशहरा। *प्र०* विजयादशमी को हमने शस्त्र-पूजन किया।

विजातीय – *वि०* 1. गणित में बटावाली वे संख्याएँ जिनमें ऊपर और नीचे की संख्याएँ (हर) असमान हों; जैसे – $^2/_5$, $^7/_4$ आदि। 2. भिन्न जाति का। *प्र०* करीम ने एक विजातीय लड़की से विवाह किया।

विजेता – पु० विजय पानेवाला, जीतनेवाला। *प्र०* विजेता टीम को इनाम दिया गया।

विज्ञान – पु० किसी विषय का जाँच-परख पर आधारित व्यवस्थित अध्ययन।

विज्ञापन – पु० किसी चीज़ की बिक्री बढ़ाने के लिए अख़बार, पत्रिकाओं, टी०वी०, रेडियो, पोस्टर आदि के माध्यम से उसकी जानकारी देना।

वितरण – पु० किसी चीज़ को लोगों में बाँटना; जैसे – राशन का वितरण।

विदा – *स्त्री०* किसी के पास से रवाना होना या किसी को रवाना करना, प्रस्थान। *प्र०* बारात विदा हो गई है।

विदुषी – *स्त्री०* विद्वान् स्त्री।

विदूषक – पु० नाटक में ऐसा पात्र जो अपनी वेशभूषा, बातों आदि से लोगों को हँसाए, मसख़रा, जोकर।

विदेश – पु० अपने देश को छोड़कर कोई अन्य देश, परदेश। *प्र०* विदेश ही जाना चाहते हो तो जर्मनी जाओ।

विद्यमान – *वि०* मौजूद, उपस्थित। *प्र०* खून में विद्यमान सफ़ेद कण रोगों से लड़कर शरीर को बचाते हैं।

विद्या – *स्त्री०* 1. पढ़ाई, शिक्षा। *प्र०* विद्या की शुरुआत स्कूल में होती है। 2. विशेष ज्ञान; जैसे – शस्त्र-विद्या, ठग-विद्या।

विद्यार्थी – पु० छात्र, शिष्य।

विद्युत् - *स्त्री०* बिजली।

विद्रोह – पु० परिवार, समाज या देश में मुखिया/
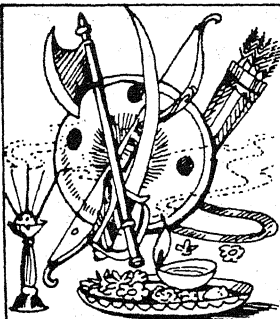
विजयादशमी | विदा | विदूषक | विद्युत्

विधाता | विनती | विनाश
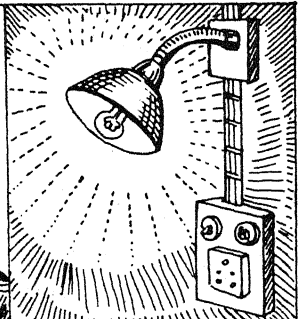
शासन करनेवाले से असंतुष्ट होकर उसके विरोध में किया जानेवाला काम, बग़ावत; जैसे – सैनिक-विद्रोह, संतान का माँ-बाप के प्रति विद्रोह।

विद्वत्ता – *स्त्री॰* विद्वान् होने का भाव, पांडित्य।

विद्वान् – *पु॰* जिसने बहुत विद्या प्राप्त की हो, किसी विषय को गहराई से जाननेवाला, पंडित, ज्ञानी। *प्र॰* राजनीति में पहले डॉ॰ राधाकृष्णन् जैसे विद्वान् भी होते थे।

विधवा – *स्त्री॰* वह स्त्री जिसके पति की मृत्यु हो गई हो। (*विलोम* – सधवा)।

विधा – *स्त्री॰* प्रकार, रूप, तरीक़ा, शैली। *प्र॰* कला की कई विधाएँ हैं; जैसे – चित्रकला, संगीतकला, मूर्तिकला आदि।

विधाता – *पु॰* दुनिया को बनानेवाला, सृष्टि का रचयिता, ब्रह्मा।

विधान – *वि॰* 1. नियम, क़ानून। *प्र॰* पंचायत का काम उसके विधान से चलता है। 2. तरीक़ा, विधि। *प्र॰* हिंदू धर्म में दिन में चार बार पूजा करने का विधान है।

विधानसभा – *स्त्री॰* किसी राज्य या देश में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो राजकाज संबंधी महत्त्वपूर्ण फ़ैसले लेने और क़ानून बनाने का काम करती है।

विधि – 1. *स्त्री॰* (क) काम करने का ढंग, तरीक़ा; जैसे – खेती करने की विधि। (ख) क़ानून, नियम। 2. *पु॰* ब्रह्मा, विधाता।

विधिवत् – *क्रि॰ वि॰* विधि या नियम के अनुसार, औपचारिक रूप से, क़ायदे से, बाक़ायदा। *प्र॰* प्रेमा ने विधिवत् गुरुकुल में जाकर संस्कृत सीखी।

विनती – *स्त्री॰* प्रार्थना, नम्र निवेदन, अनुनय-विनय। *प्र॰* लाख विनती करने पर उमेश ने मोहन को पैसा उधार नहीं दिया।

विनम्र – *वि॰* जो नम्र या विनीत हो, जिसमें विनय हो, सुशील।

विनय – *स्त्री॰* 1. नम्रता। 2. प्रार्थना, विनती।

विनाश – *पु॰* बर्बादी, नाश, विध्वंस। *प्र॰* अंधाधुंध पेड़ काटकर हम वनों का विनाश करने में लगे हैं।

विनिमय – *पु॰* एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना, अदला-बदली, लेन-देन। *प्र॰* पैसे के चलने से पहले चीज़ों का विनिमय होता था।

विनीत – *वि॰* दे॰ विनम्र।

विनोद – पु॰ 1. हँसी-मज़ाक। 2. मनबहलाव, मनोरंजन।

विपक्ष – पु॰ 1. विरोधी पक्ष या दल। प्र॰ 1989 के लोकसभा चुनावों में विपक्ष के कई दल कांग्रेस के ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए। 2. विरोध में, ख़िलाफ़। प्र॰ दहेज लेने के पक्ष में चार और विपक्ष में सात लोग बोले। (*विलोम* – पक्ष)।

विपत्ति – स्त्री॰ मुसीबत, संकट, विपदा।

विपरीत – *वि॰* उल्टा, विरुद्ध, प्रतिकूल। प्र॰ नियम-क़ानून के विपरीत कोई काम करना अपराध माना जाता है।

विफल – *वि॰* 1. जिसे अपने काम का फल न मिल पाया हो, असफल; जैसे – विफल व्यक्ति। 2. बेकार, व्यर्थ, निरर्थक। प्र॰ अब्दुल की मेहनत विफल रही। (*विलोम* – सफल)।

विभक्त – *वि॰* हिस्सों में बँटा हुआ, अलग किया हुआ, विभाजित। प्र॰ गुप्ताजी की संपत्ति को चार हिस्सों में विभक्त कर दिया गया।

विभाग – पु॰ किसी चीज़ का अलग किया हुआ छोटा भाग, क्षेत्र या खंड; जैसे – दिल्ली प्रशासन का सिंचाई विभाग, पुलिस विभाग।

विभाजन – पु॰ टुकड़े करना, बाँटने की क्रिया, बँटवारा; जैसे – संपत्ति का विभाजन, देश का विभाजन।

विभिन्न – *वि॰* अलग-अलग, भिन्न-भिन्न, अनेक प्रकार का। प्र॰ भारत विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का देश है।

विमल – *वि॰* जिसमें मैल या गंदगी न हो, साफ़, निर्मल, शुद्ध।

विमान – पु॰ यान, हवाई जहाज़, वायुयान।

विमुख – *वि॰* जो किसी ओर से मुँह फेर ले, जिसमें किसी काम या व्यक्ति के प्रति रुचि न रह गई हो, उदासीन; जैसे – कर्तव्य से विमुख।

वियोग – पु॰ 1. बिछुड़ना, जुदाई। 2. बिछुड़ने का दुख, विरह। प्र॰ बेटी के वियोग में लीला उदास रहने लगी।

विरक्ति – स्त्री॰ मोह-माया, इच्छाओं का ख़त्म हो जाना, संसार से मन उचटना, उदासीनता। प्र॰ शव-यात्रा देखकर गौतम को संसार से विरक्ति हो गई।

विरल – *वि॰* जो घना न हो, जिसके बीच-बीच में दूरी हो, कम मिलनेवाला। प्र॰ पौधे ठीक से बढ़ें, इसके लिए उनका विरल होना आवश्यक है।

विराम – पु॰ 1. ठहराव, रुकना; जैसे– युद्ध-

विनोद | विभक्त | विरक्ति

विरोध विलय विलाप विवाद

विराम। 2. वाक्य के भीतर या अंत में वह स्थान जहाँ बोलते समय कुछ रुकना पड़ता हो।

विराम-चिह्न – पु० वाक्य में लगे होनेवाले निशान या चिह्न जो विराम का संकेत देते हैं; जैसे – पूर्णविराम (।), अर्धविराम (,)।

विरासत – स्त्री० माँ-बाप या पूर्वजों से मिली धन-संपत्ति या कोई गुण, उत्तराधिकार। प्र० 1. यह मकान मुझे विरासत में मिला। 2. लिखने की कला अमृत राय को मुंशी प्रेमचंद से विरासत में मिली।

विरुद्ध – वि० जिसका विरोध किया गया हो, ख़िलाफ़, प्रतिकूल। प्र० मैं टेलीविज़न पर अधिक फ़िल्में दिखाए जाने के विरुद्ध हूँ।

विरोध – पु० 1. सहमत न होना, ख़िलाफ़ होना; जैसे – पुलिस-अत्याचार का विरोध। 2. विपरीत, प्रतिकूल। प्र० मनीष की कथनी और करनी में हमेशा विरोध होता है।

विलंब – पु० वह स्थिति जब किसी काम में आवश्यकता या अंदाज़ से अधिक समय लगे, देर। प्र० बारात चलने में अभी थोड़ा विलंब है।

विलक्षण – वि० जिसमें विशेष लक्षण हों, असाधारण, अनोखा, अद्भुत। प्र० उस बच्ची में विलक्षण प्रतिभा है।

विलय – पु० एक चीज़ का दूसरी चीज़ में मिल जाना। प्र० चीनी का पानी में विलय हो जाता है।

विलाप – पु० किसी दुख या शोक के कारण ज़ोर-ज़ोर से रोना।

विलीन – वि० एक चीज़ का दूसरी चीज़ में गल, घुल या मिल जाना, विलय हो जाना। प्र० धुआँ हवा में विलीन हो जाता है।

विलेय – पु० वह ठोस पदार्थ जो द्रव्य में घुल जाता है। प्र० नमक विलेय होता है।

विलोम – वि० उल्टा, विपरीत। प्र० 'बड़ा' का विलोम 'छोटा' होता है।

विवरण – पु० किसी वस्तु या घटना के बारे में विस्तार से बताना, विस्तृत वर्णन, ब्योरा। प्र० इस लेख में रैन-बसेरों के जीवन का सजीव विवरण दिया गया है।

विवश – वि० जिसका वश न चले, जो अपने मन का कुछ कर सकने में असमर्थ हो, लाचार, मजबूर। प्र० अपने बेटे की ज़िद के आगे वह विवश हो गया।

विवाद – पु० 1. ज़बानी झगड़ा, बहस, कहा-सुनी। प्र० कंडक्टर और यात्री का विवाद इतना बढ़ गया

कि बस को पुलिस-थाने ले जाना पड़ा। 2. किसी विषय पर दो या अधिक लोगों का अलग-अलग ढंग से सोचना, मतभेद; जैसे – रामजन्मभूमि-बाबरी मस्ज़िद विवाद।

विविध – *वि०* कई तरह का, विभिन्न प्रकार का; जैसे – विविध फूल, विविध भाषाएँ।

विवेक – *पु०* भले-बुरे की समझ/पहचान, सद्बुद्धि। *प्र०* विवेक से काम लेना उसने अपने माँ-बाप से सीखा है।

विशाल – *वि०* बहुत बड़ा, लंबा-चौड़ा, विस्तृत। *प्र०* भारत एक विशाल देश है।

विशिष्ट – *वि०* 1. जिसमें कोई ख़ास विशेषता हो। *प्र०* इस टेलीविज़न में क्या विशिष्ट बात है? 2. जिसे औरों की तुलना में समाज में विशेष स्थान, आदर और मान प्राप्त हो। *प्र०* नेताजी के घर विवाह में शहर के सभी विशिष्ट व्यक्ति शामिल हुए।

विशेष – *पु०* ख़ास, साधारण से ज़्यादा अच्छा। *प्र०* नीता की अध्यापिका उसका विशेष ध्यान रखती हैं।

विशेषण – *पु०* व्याकरण में वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता या गुण बताए; जैसे – 'अच्छा बच्चा' में 'अच्छा' विशेषण है।

विशेषतः – *क्रि० वि०* ख़ासतौर से, विशेष रूप से। *प्र०* मैं विशेषतः तुम्हारे ही काम से यहाँ आया था।

विश्राम – *पु०* आराम, थकान दूर करना। *प्र०* यात्री विश्राम करने के लिए पेड़ के नीचे बैठ गया।

विश्व – *पु०* 1. दुनिया, संसार, जगत्। 2. ब्रह्मांड।

विश्वविद्यालय – *पु०* वह संस्था जहाँ बहुत-से विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती है, युनिवर्सिटी।

विश्वास – *पु०* 1. भरोसा, एतबार, यक़ीन। *प्र०* परीक्षा में अपने प्रथम आने की ख़बर सुनकर उमेश को विश्वास नहीं हुआ। 2. धर्म, ईश्वर, देवता आदि के होने को लेकर मन में बनी हुई धारणा, आस्था। *प्र०* सुधा को भगवान् पर पूरा विश्वास है।

विश्वासपात्र – *वि०* जिसका विश्वास किया जाता हो, जो विश्वास करने योग्य हो, विश्वसनीय, विश्वस्त। *प्र०* राजा अपने विश्वासपात्र व्यक्ति को ही ख़ज़ाने की चाभियाँ दिया करते थे।

विष – *पु०* ज़हर। (*विलोम* – अमृत)।

विषधर – *पु०* जिसमें विष हो, साँप, सर्प।

विषम – *वि०* 1. दो से पूरा-पूरा न बँटनेवाली संख्या (गणित)। 2. जो समतल न हो, असमान। 3. कठिन, विकट, जटिल। *प्र०* अपने बेटे को पढ़ाने
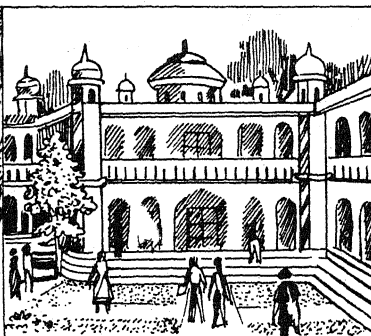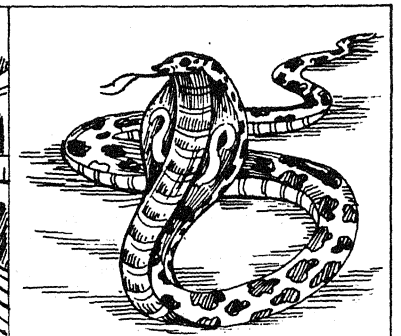
विश्राम | विश्वविद्यालय | विषधर
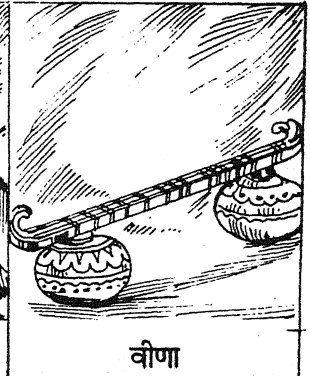
विसर्जन विस्मित विहग वीणा

के लिए सलमा को बहुत विषम परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा।

विषय – *पु॰* कोई ऐसी चीज़ या बात जिसके संबंध में कुछ कहा, किया या सोचा जाए; जैसे – बातचीत का विषय, पुस्तक का विषय।

विषाक्त – *वि॰* विष मिला हुआ, ज़हरीला, विषैला; जैसे– विषाक्त भोजन।

विष्ठा – *स्त्री॰* पाख़ाना, मल, पक्षी की बीट।

विसर्जन – *पु॰* किसी धार्मिक उत्सव में पूजा के बाद देवी-देवता की मूर्ति पानी में बहाया जाना, प्रवाहित करना; जैसे – दुर्गा की मूर्ति का गंगा में विसर्जन।

विस्तार – *पु॰* 1. फैलाव, लंबा-चौड़ा। *प्र॰* आजकल स्कूलों का विस्तार करने के लिए बच्चों से चंदा माँगा जाता है। 2. किसी घटना या विषय के हर पहलू की बात करना। *प्र॰* पी॰टी॰ के अध्यापक ने क्रिकेट के बारे में विस्तार से बताया।

विस्तृत – *वि॰* 1. बड़ा, फैला हुआ; जैसे – विस्तृत मैदान। 2. विस्तारपूर्वक, लंबा; जैसे – विस्तृत बातचीत, विस्तृत वर्णन।

विस्फोटक – *पु॰* बम जैसे पदार्थ जो गर्मी, रासायनिक क्रिया या बिजली के कारण भारी आवाज़ के साथ फट जाएँ। *प्र॰* विस्फोटक पदार्थ लेकर रेलगाड़ी में यात्रा करना अपराध है।

विस्मय – *पु॰* हैरानी, आश्चर्य। *प्र॰* मोहन की करतूत से मुझे बहुत विस्मय हुआ।

विस्मित – *वि॰* जिसे किसी बात पर विस्मय हो, हैरान, आश्चर्यचकित।

विहग – *पु॰* चिड़िया, पक्षी।

विहीन – *वि॰* बग़ैर, बिना, रहित; जैसे – रसविहीन।

विह्वल – *वि॰* घबराया हुआ, व्याकुल, बेचैन। *प्र॰* अशोक एक ग़रीब को ठंड से ठिठुरते देखकर विह्वल हो उठा।

वीणा – *स्त्री॰* सितार जैसा एक बाजा, जिसके दोनों सिरों पर तुंबा लगा होता है।

वीर – *पु॰* बहादुर, शूर।

वीरगति – *स्त्री॰* युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ते-लड़ते हो जानेवाली मृत्यु। *प्र॰* 1966 के युद्ध में हज़ारों सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए।

वीरान – *वि॰* 1. जहाँ लोग न हों, सुनसान, निर्जन; जैसे – वीरान जंगल, वीरान सड़क। 2. बर्बाद, उजड़ा हुआ, तबाह; जैसे – वीरान शहर।

वृंत – पु० पौधे का तना, डंठल।

वृक्ष – पु० पेड़।

वृत्त – पु० 1. गोला, गोल घेरा। 2. ज्यामिति में वह घेरा जिसकी परिधि का हरेक बिंदु घेरे के बीच के केंद्र-बिंदु से समान दूरी पर हो।

वृद्ध – पु० बूढ़ा व्यक्ति, बुड्ढा।

वृद्धि – *स्त्री०* बढ़ने की क्रिया या भाव, बढ़ोतरी; जैसे – जनसंख्या-वृद्धि, वेतन में वृद्धि।

वेग – पु० चाल या गति की तेज़ी, तीव्रता। *प्र०* कल की आँधी काफ़ी वेग से आई थी।

वेणी – *स्त्री०* बालों की चोटी।

वेतन – पु० काम करने के बदले किसी को नियमित रूप से मिलता रहनेवाला पैसा, तनख़्वाह, पगार। *प्र०* बलजीत का वेतन 1,500 रुपए मासिक है।

वेताल – पु० भूत, प्रेत।

वेद – पु० हिंदुओं के चार प्राचीनतम् और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

वेदना – *स्त्री०* 1. बहुत तेज़ शारीरिक कष्ट, पीड़ा। 2. तीव्र मानसिक व्यथा, दुख। *प्र०* बेटी के विधवा हो जाने से सुरेश को बहुत मानसिक वेदना हुई।

वेधशाला – *स्त्री०* वह स्थान जहाँ ग्रह-नक्षत्र आदि की गति को देखने के यंत्र रखे हों।

वेश – पु० 1. पोशाक, पहनावा, वस्त्र। 2. किसी ख़ास क़िस्म के लोगों जैसा दिखाने के लिए पहने जानेवाले उनकी तरह के कपड़े, भेस, बाहरी रूप। *प्र०* लुटेरा सिपाही के वेश में आया और यात्री को लूटकर चला गया।

वैकुंठ – पु० स्वर्ग।

वैज्ञानिक – 1. पु० जिसे विज्ञान का ज्ञान हो, विज्ञान-संबंधी काम करनेवाला। *प्र०* मदन बड़ा होकर वैज्ञानिक बनना चाहता है। 2. *वि०* (क) विज्ञान से संबंधित; जैसे – वैज्ञानिक खोज। (ख) जाँच-परखकर व्यवस्थित और सिलसिलेवार ढंग से किया हुआ; जैसे – वैज्ञानिक ढंग से किया हुआ काम।

वैदिक – *वि०* वेदों का, वेदों से संबंधित; जैसे – वैदिक युग, वैदिक साहित्य।

वैद्य – पु० आयुर्वेद जाननेवाला और उसके हिसाब से रोगियों का इलाज करनेवाला।

वैभव – पु० धन-दौलत, ऐश्वर्य, शान-शौक़त। *प्र०* गायत्री के पास वैभव की कोई कमी नहीं है।
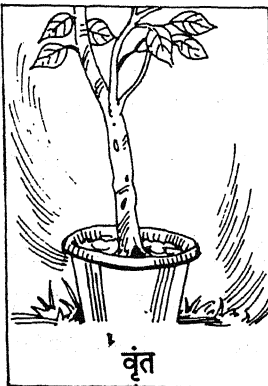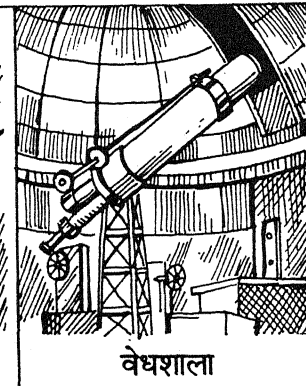
वृंत | वृक्ष | वेणी | वेधशाला
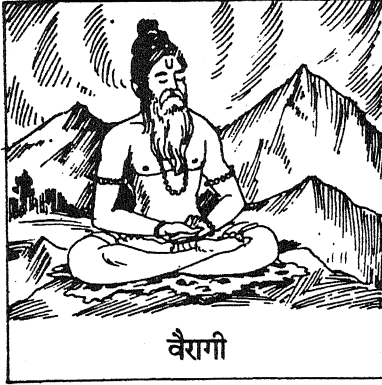
वैरागी व्यंजन व्यवसाय

वैमनस्य – पु० मनमुटाव, दुश्मनी।

वैर– पु० दुश्मनी, शत्रुता।

वैरागी – पु० संसार के सुख-दुख से उदासीन, विरक्त, वीतराग, साधु।

वैशाख – पु० भारतीय पंचांग के हिसाब से दूसरा महीना जो चैत्र के बाद और ज्येष्ठ के पहले पड़ता है।

वैश्य – पु० हिंदुओं में तीसरी जाति। इस वर्ण के लोगों का मुख्य काम खेती और व्यापार होता था।

व्यंजन – पु० 1. पकी हुई खाने की चीज़, पकवान। 2. वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण मुँह में किसी ख़ास स्थान पर मुख के दो अंगों के मिलने से होता है, जैसे – 'प' के उच्चारण में ऊपर और नीचे के होंठ तथा 'द' के उच्चारण में जीभ और दाँत मिलते हैं।

व्यक्त – *वि*० सामने लाना, कहना, ज़ाहिर करना, प्रकट। प्र० विमल ने दिल्ली घूमने की इच्छा व्यक्त की।

व्यक्ति – *स्त्री*० आदमी, मनुष्य।

व्यतीत – *वि*० गुज़रा या बीता हुआ। प्र० संतोष अनाथालय में काम करके अपना समय व्यतीत करती है।

व्यथा – *स्त्री*० मानसिक या शारीरिक पीड़ा, कष्ट। प्र० विमला अपने मन की व्यथा किसी से नहीं कहती।

व्यय – पु० ख़र्च; जैसे – डाक-व्यय। (*विलोम* – आय)।

व्यर्थ – *वि*० 1. बेकार, बेमतलब, फ़िज़ूल, जिसका कोई उपयोग न हो। प्र० तुम व्यर्थ ही झगड़ा मोल ले रहे हो। 2. जिसका कोई लाभ या फल न मिले। प्र० मेरी सारी मेहनत व्यर्थ गई।

व्यवसाय – पु० काम-धंधा, व्यापार। प्र० मणिपुर के लोगों का मुख्य व्यवसाय कपड़ा बुनना है।

व्यवस्था – *स्त्री*० इंतज़ाम, प्रबंध। प्र० अनाथ बच्चों के रहने की व्यवस्था अनाथालय में होती है।

व्यवहार – पु० 1. बर्ताव, आचरण। प्र० अपने अच्छे व्यवहार से सुधा ने सबका मन जीत लिया। 2. काम में लाना, प्रयोग। प्र० यह प्रेस व्यवहार में लाने लायक़ नहीं है।

व्यस्त – *वि*० जिसके पास फ़ुर्सत या समय न हो, काम में लगा हुआ। प्र० वह आजकल एक किताब लिखने में व्यस्त है।

व्याकरण – पु० वह शास्त्र जो ध्वनि, शब्द, वाक्य

आदि भाषा के विभिन्न पक्षों और उनके प्रयोग के नियमों के बारे में बताए।

व्याकुल – *वि॰* बेचैन, घबराया हुआ, परेशान।

व्याख्या – *स्त्री॰* किसी वाक्य, विषय या साहित्य के अंश में छिपे हुए अर्थ को स्पष्ट करके समझाना; जैसे – दोहे की व्याख्या।

व्यापार – *पु॰* काम-धंधा, कारोबार, व्यवसाय।

व्यायाम – *पु॰* कसरत।

व्यूह – *पु॰* युद्ध में सैनिक तैनात करने का कौशलपूर्ण तरीक़ा।

व्रत – *पु॰* 1. किसी धार्मिक भावना से दिन-भर के लिए कुछ न खाना, उपवास; जैसे – जन्माष्टमी का व्रत। 2. प्रतिज्ञा, संकल्प, निश्चय। *प्र॰* उसने जीवन-भर अपनी माँ की सेवा करने के लिए अविवाहित रहने का व्रत लिया।

श – हिंदी वर्णमाला का एक व्यंज़न।

शंका – *स्त्री॰* 1. किसी बुरी बात या घटना के होने का अंदाज़ लगने पर मन में उठनेवाला चिंता और डर का मिलाजुला भाव, शक, अँदेशा, आशंका। *प्र॰* मुझे शुरू से शंका थी कि वह घर से भाग जाएगा। 2. किसी बात या व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी न होने से उस पर विश्वास न होना, संदेह, संशय। *प्र॰* किसी शब्द के अर्थ के बारे में शंका हो, तो तुरंत शब्दकोश देखो।

शंकालु – *वि॰* जिसकी शंका करने की आदत हो, शक्की; जैसे – शंकालु व्यक्ति।

शंकु – *पु॰* कोई नुकीली वस्तु; जैसे – कील, भाला आदि।

शंख – *पु॰* 1. समुद्र में मिलनेवाले एक घोंघे का सफ़ेद रंग का खोल जिसे पूजा, युद्ध आदि के समय शुभ मानकर फूँककर बजाया जाता है। *प्र॰* कृष्ण के शंख का नाम पांचजन्य था। 2. एक लाख करोड़ की संख्या। *मु॰ शंख फूँकना* – व्यक्ति, समाज, देश के लोगों में किसी बड़े काम के लिए उत्साह की भावना पैदा करना। *प्र॰* गांधीजी ने सारे देश में आज़ादी का शंख फूँक दिया था।

शक – *पु॰* पूरी तरह विश्वास न होना, संदेह, शुबहा। *प्र॰* हत्या के उस मामले में पुलिस को रमेश पर शक है।

शकरकंद – *पु॰* ज़मीन के भीतर पैदा होनेवाला एक मीठा कंद।

व्यायाम	शंकु	शंख	शकरकंद

शक्तिशाली | शतरंज | शपथ | शयनकक्ष
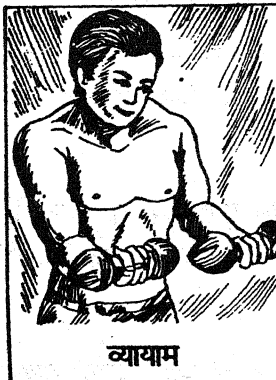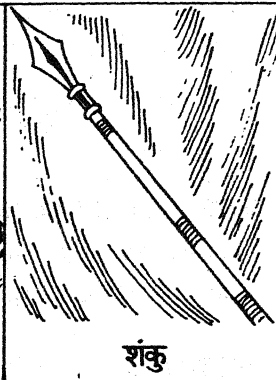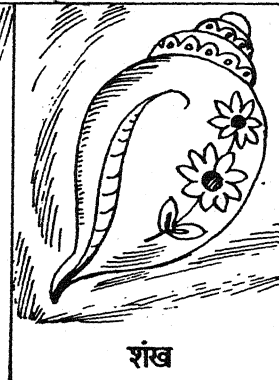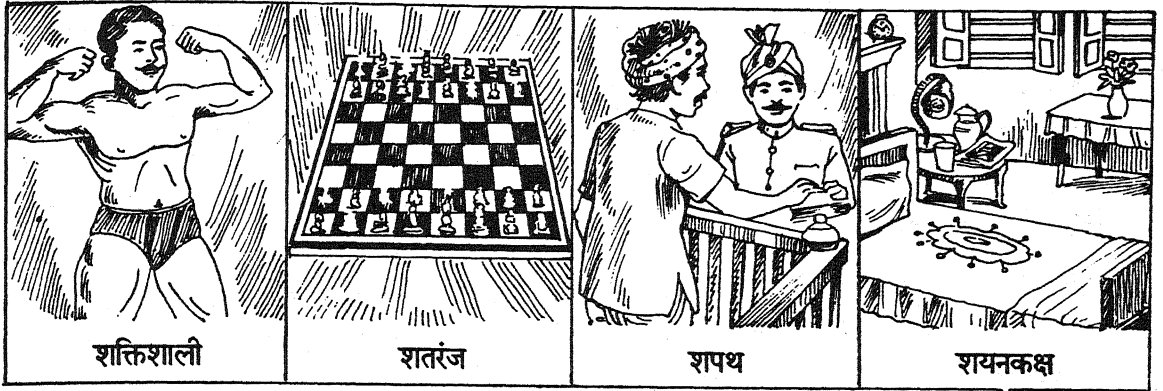
शक्कर – पु० चीनी। मु० *शक्कर से मुँह भरना, मुँह में घी-शक्कर* – खुशख़बरी सुनानेवाले को मिठाई खिलाना। प्र० आपने शुभ सूचना सुनाई, आपके मुँह में घी-शक्कर।

शक्ति – स्त्री० ताक़त, ज़ोर, बल, सामर्थ्य।

शक्तिप्रद – वि० शक्ति देनेवाला।

शक्तिशाली – वि० जिसमें खूब ताक़त या बल हो, बलवान्, बलिष्ठ, ताक़तवर। प्र० हाथी बहुत शक्तिशाली जानवर होता है।

शक्ल – स्त्री० 1. चेहरा, रूप, नैन-नक़्श, चेहरे की बनावट। 2. (किसी चीज़ की) बनावट, ढाँचा। प्र० वक़ील ने अपने बरामदे को दफ़्तर की शक्ल दे दी। मु० *शक्ल देखते रह जाना* – हैरान, चकित हो जाना। प्र० नन्हे बच्चे की इतनी बड़ी बातें सुनकर मैं उसकी शक्ल देखती रह गई। *शक्ल न दिखाना* – मुँह छिपाना। प्र० रुपए लौटाने के डर से ज्ञान अब इधर शक्ल नहीं दिखाता।

शत – वि० सौ।

शतक – पु० एक ही तरह की या एक व्यक्ति की सौ चीज़ों का समूह; जैसे – क्रिकेट में एक व्यक्ति द्वारा बनाए जानेवाले सौ रन।

शतरंज – स्त्री० बिसात और मोहरों की मदद से खेला जानेवाला एक खेल।

शतांश – पु० सौ का एक हिस्सा, सौवाँ हिस्सा, 1/100।

शताब्दी – स्त्री० सौ साल का समय, सदी, शती; जैसे – इक्कीसवीं शताब्दी।

शत्रु – पु० दुश्मन, वैरी।

शनि – पु० 1. सौरमंडल के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। 2. सप्ताह का अंतिम दिन, शनिवार।

शपथ – स्त्री० क़सम, सौगंध। प्र० राष्ट्रपति ने नए संसद सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

शब्द – पु० 1. अक्षरों का ऐसा समूह जिससे कोई अर्थ प्रकट होता हो। 2. आवाज़, ध्वनि, स्वर। प्र० घोड़े की टाप का शब्द सुनकर पहरेदार चौकन्ना हो गया।

शब्दकोश – पु० वह ग्रंथ जिसमें वर्णमाला के क्रम से शब्द, उनके अर्थ और प्रयोग बताए गए होते हैं। प्र० इस समय तुम्हारे हाथ में शब्दकोश है।

शयनकक्ष – पु० सोने का कमरा, शयनागार।

शय्या – *स्त्री०* पलंग, बिस्तर।

शरण – *स्त्री०* संकट या ज़रूरत के समय में जहाँ या जिसके पास बचने की जगह मिले, आसरा, पनाह, आश्रय। *प्र०* बारिश तेज़ हो जाने पर विनोद ने एक मंदिर में शरण ली।

शरणार्थी – 1. *वि०* शरण चाहनेवाला, शरण लेनेवाला। 2. *पु०* जो संकट के समय में एक देश से उखड़कर दूसरे देश में पनाह ले; जैसे – भारत में बाँगलादेश के शरणार्थी।

शरत् – *स्त्री०* छः ऋतुओं में से एक जो वर्षा के बाद और हेमंत के पहले पड़ती है, हल्की ठंड का मौसम। *प्र०* शरत् पूर्णिमा को लोग पवित्र नदियों में स्नान करते हैं।

शराफ़त – *स्त्री०* शरीफ़ होने का भाव, भलमनसाहत, नेकी, भद्रता, शिष्टता।

शराब – *स्त्री०* ऐसी पीने की चीज़ जिससे नशा चढ़े, मदिरा, मद्य।

शरारत – *स्त्री०* शैतानी, नटखटपना, ऊधम।

शरीफ़ – *वि०* भला, नेक, शिष्ट, सभ्य, सुशील।

शरीर – *पु०* बदन, तन, देह।

शर्करा – *स्त्री०* शक्कर, चीनी, खाँड।

शर्त – *स्त्री०* 1. किसी बात, घटना आदि के सच होने को लेकर अलग राय रखनेवाले दो पक्षों के बीच यह तय होना कि हारा हुआ पक्ष निश्चित पैसा या चीज़ देगा। *प्र०* भारत-इंग्लैंड मैच में भारत की जीत पर सोनू ने मोनू से दो चॉकलेट की शर्त लगाई। 2. किसी चीज़ के नियम; जैसे – प्रतियोगिता की शर्तें। 3. किसी बात या काम को किए जाने का आधार। *प्र०* मैं तुम्हें कैमरा इसी शर्त पर दूँगा कि तुम उसे लौटा दोगे।

शर्म – *स्त्री०* लज्जा, संकोच। *मु०* *शर्म से गड़ जाना*– अपने किसी काम के कारण लज्जित होना। *प्र०* चोरी करते हुए पकड़े जाने पर ओम का सिर शर्म से गड़ गया।

शर्मिंदा – *वि०* शरमाया हुआ, झेंपा हुआ, लज्जित। *प्र०* मैं समय पर आपका पैसा न लौटा पाने के लिए शर्मिंदा हूँ।

शर्मीला – *वि०* जिसका शरमाने का स्वभाव हो, शरमानेवाला, लज्जाशील; जैसे – शर्मीला बच्चा।

शलग़म, शलजम – *पु०* धरती के अंदर पैदा होनेवाला एक कंद जो सफ़ेद-बैंगनी रंग का होता है।

शल्य-चिकित्सा – *स्त्री०* चीरफाड़ करके डॉक्टरों द्वारा
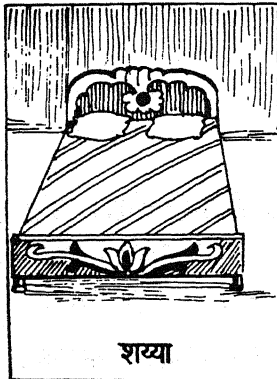
शय्या | शरीर | शलग़म | शल्य-चिकित्सा

शस्त्र | शहतीर | शहनाई | शाक
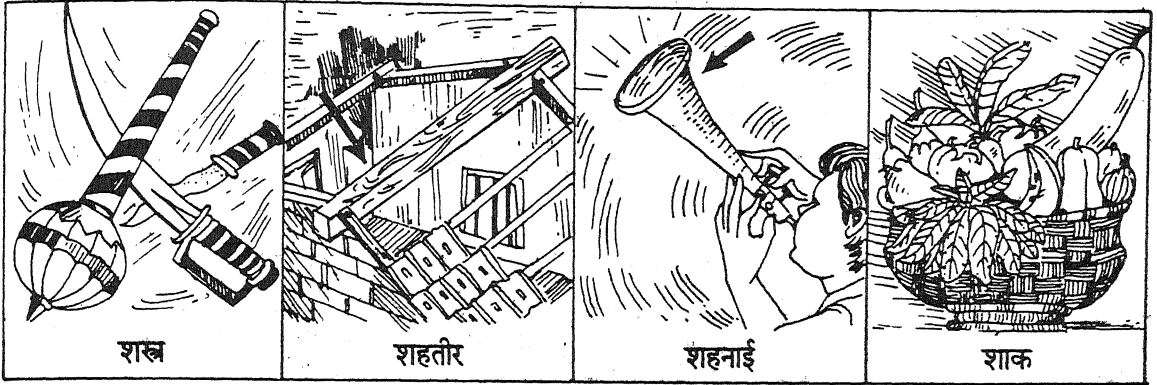
किया जानेवाला इलाज, ऑपरेशन, सर्जरी।

शव – पु॰ मरा हुआ शरीर, मुर्दा, लाश।

शशि – पु॰ चाँद, चंद्रमा।

शस्त्र – पु॰ लड़ाई या युद्ध के समय दुश्मन पर हमला करने के लिए हाथ में पकड़कर इस्तेमाल होनेवाला औज़ार, हथियार; जैसे – तलवार, गदा, बंदूक आदि।

शहतीर – पु॰ लकड़ी का बड़ा और लंबा लट्ठा।

शहतूत – पु॰ एक पेड़ जिसके पत्ते रेशम के कीड़ों के और मीठे मुलायम फल आदमियों के खाने के काम आते हैं।

शहद – पु॰ खाने के काम आनेवाला गाढ़ा, मीठा, तरल पदार्थ जिसे मधुमक्खियाँ फूलों के रस से अपने छत्ते में तैयार करती हैं, मधु। मु॰ *कानों में शहद घोलना*– बहुत मीठी और अच्छी लगनेवाली बातें कहना।

शहनाई – स्त्री॰ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला धातु का एक बाजा।

शहीद – पु॰ देश, धर्म या किसी आदर्श के लिए लड़ते हुए प्राण न्योछावर करनेवाला। प्र॰ 1942 के आंदोलन में देश की आज़ादी के लिए हज़ारों लोग शहीद हुए।

शांत – *वि॰* 1. जो जल्दी क्रोधित, परेशान या विचलित न होता हो, जिसका मन चंचल न हो, स्थिरमना। प्र॰ रमा बहुत शांत स्वभाव की है। 2. चुप, मौन। प्र॰ बच्चा बिल्कुल शांत बैठा था। 3. जहाँ शोर या कोलाहल न हो। प्र॰ यह जगह कितनी शांत है!

शांति – स्त्री॰ 1. कोई परेशानी, दंगा या तनाव न होने की स्थिति। प्र॰ 1. कर्फ़्यू लगने के बाद से शहर में शांति है। 2. मन की शांति के लिए योग-साधना अच्छी चीज़ है। 2. शोर न होने की स्थिति, चुप्पी। प्र॰ बच्चों के न होने से घर में शांति है।

शाक – पु॰ साग, सब्ज़ी, तरकारी।

शाकाहारी – पु॰ केवल शाक खानेवाला, मांस न खानेवाला। प्र॰ जैन समाज शाकाहारी है।

शाखा – स्त्री॰ 1. पेड़ की टहनी, डाल। 2. किसी चीज़ का हिस्सा, भाग या भेद; जैसे – दफ़्तर की शाखा, धार्मिक संप्रदाय की शाखा, बैंक की शाखा।

शान – स्त्री॰ 1. बड़प्पन, गौरव, गर्व। प्र॰ सुमन के लिए ये शान की बात थी कि उसका बेटा सारे कॉलेज में प्रथम आया। 2. इज़्ज़त, प्रतिष्ठा।

3. ठाठ-बाट, तड़क-भड़क। प्र॰ रियासतें ख़त्म हो जाने से राजाओं की शान पहले जैसी नहीं रही। मु॰ *शान में बट्टा लगना* –इज़्ज़त घटना। प्र॰ अशोक सोचता है कि शारीरिक परिश्रम करने से उसकी शान में बट्टा लग जाएगा।

शानदार – *वि॰* बढ़िया, भव्य, तड़क-भड़कवाला; जैसे – शानदार इमारत, शानदार दावत।

शाप – पु॰ किसी का बुरा चाहते हुए कही जानेवाली बात, बद्दुआ। प्र॰ राजा सगर के साठ हज़ार पुत्रों को शाप देकर ऋषि ने भस्म कर दिया।

शाबाश – *अ॰* कोई अच्छा काम करने पर किसी की तारीफ़ करने और हौसला बढ़ाने के लिए कहा जानेवाला शब्द, वाहवाह। प्र॰ शाबाश बेटा, उस ग़रीब की मदद करके तुमने अच्छा किया।

शामियाना – पु॰ बाँस और रस्सी की सहायता से टाँगा जानेवाला तंबू।

शामिल – *वि॰* 1. शरीक़, उपस्थित, सम्मिलित। प्र॰ शहर से बाहर होने के कारण सोहन अपने दोस्त की शादी में शामिल न हो सका। 2. मिला हुआ, संबद्ध, जोड़ना। प्र॰ 1. वह कांग्रेस छोड़कर जनता दल में शामिल हो गया। 2. ख़रीदारी की लिस्ट में एकाध चीज़ें और शामिल कर लो।

शारीरिक – *वि॰* शरीर से संबंधित; जैसे – शारीरिक रोग।

शाल – स्त्री॰ ओढ़नेवाली ऊनी या रेशमी चादर, दुशाला।

शाला – स्त्री॰ किसी ख़ास काम के लिए बना हुआ कमरा या इमारत, स्थान, घर; जैसे – प्रयोगशाला, पाठशाला, नृत्यशाला।

शालीन – *वि॰* तमीज़दार, शरीफ़, शिष्ट, विनम्र; जैसे – शालीन व्यवहार, शालीन लड़की।

शाश्वत – *वि॰* जो कभी न समाप्त हो, अमर, सतत। प्र॰ सूर्य पूर्व में निकलता है, यह शाश्वत सत्य है।

शासक – पु॰ शासन करनेवाला, राजा।

शासन – पु॰ 1. किसी प्रांत या देश पर राजा या सरकार का राज, हुकूमत, आधिपत्य। प्र॰ भारत पर मुग़लों ने लगभग चार सौ साल तक शासन किया। 2. नियंत्रण, देख-रेख, संचालन। प्र॰ मोहन के घर पर उसकी माँ का ही शासन चलता है।

शास्त्र – पु॰ 1. पवित्र माने जानेवाले वे प्राचीन धर्मग्रंथ जिनमें आचार, नीति आदि से संबंधित नियम बताए गए हों; जैसे – वेद, पुराण आदि। 2. ऐसा ग्रंथ जिसमें विज्ञान, साहित्य, कला आदि किसी भी विषय की विस्तारपूर्वक वैज्ञानिक ढंग से चर्चा की गई हो; जैसे – दर्शनशास्त्र, भाषाशास्त्र।

शामियाना | शाल | शासक

शिखर | शिरा | शिला | शिल्प
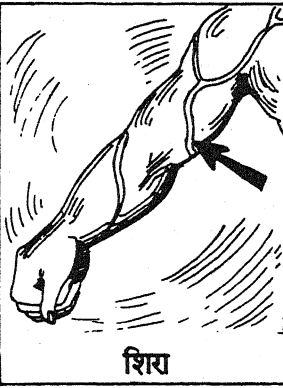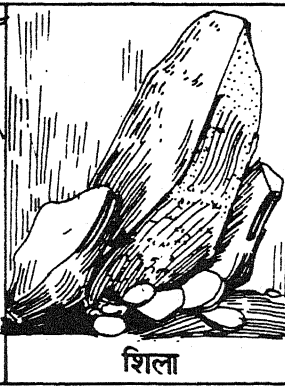
शिखर – पु॰ 1. पहाड़ की चोटी। 2. किसी चीज़ का सबसे ऊँचा भाग या सिरा। प्र॰ पर्वत-शिखर पर जमी हुई बर्फ़ सुंदर लगती है।

शिथिल – *वि॰* कमज़ोर, थका हुआ, निढाल। प्र॰ दिनभर की मेहनत के बाद वह शिथिल महसूस कर रहा था।

शिरा – स्त्री॰ शरीर में स्थित नाड़ियाँ जो शरीर के ख़ून को हृदय की ओर ले जाती हैं।

शिरीष – पु॰ एक पेड़ और उसके सफ़ेद रंग के फूल, सिरिस।

शिला – स्त्री॰ बड़ा पत्थर, चट्टान, पाषाण।

शिलालेख – पु॰ 1. पुराने ज़माने में राजाओं द्वारा पत्थर पर खुदवाए जानेवाले महत्त्वपूर्ण आदेश, बातें; जैसे – चंद्रगुप्त मौर्य के शिलालेख। 2. पत्थर पर खुदा हुआ लेख। प्र॰ इस शिलालेख में पुराने क़िले के इतिहास के बारे में बताया गया है।

शिल्प – पु॰ कला, हुनर, कारीगरी; जैसे – मिट्टी से मूर्ति बनाने का शिल्प।

शिविर – पु॰ डेरा, ख़ेमा, पड़ाव, कैंप। प्र॰ हमारे मुहल्ले में आजकल समाजसेवकों का एक शिविर लगा है।

शिशिर – पु॰ छः ऋतुओं में से एक जो हेमंत के बाद और वसंत से पहले पड़ती है, सर्दी का मौसम।

शिशु – पु॰ छोटा बच्चा। प्र॰ शिशु पालने में खेल रहा है।

शिष्ट – *वि॰* शरीफ़, सभ्य, तहज़ीबवाला।

शिष्टाचार – पु॰ तमीज़, तहज़ीब, सभ्य व्यवहार।

शिष्य – पु॰ छात्र, विद्यार्थी, चेला।

शीघ्र – *क्रि॰ वि॰* जल्दी, तुरंत, अविलंब। प्र॰ मेरे पत्र का उत्तर शीघ्र भेजें।

शीत – पु॰ ठंड, जाड़ा, सर्दी।

शीतल – *वि॰* ठंडा; जैसे – शीतल जल।

शीर्ष – पु॰ 1. माथा, मस्तक, सिर। 2. किसी वस्तु का सबसे ऊपरी हिस्सा। 3. वह बिंदु जिस पर दो ओर से दो रेखाएँ आकर मिलती हों (रेखागणित)।

शीर्षक – पु॰ किसी कविता, निबंध, किताब आदि के विषय का परिचय देनेवाले एक या एक से अधिक शब्द, नाम। प्र॰ प्रेमचंद की एक कहानी का शीर्षक है – ईदगाह।

शील – पु॰ 1. चालचलन, चरित्र, आचरण। 2. संकोच, विनम्रता, सज्जनता।

शीश – पु० सिर।

शीशम – पु० एक पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है।

शुक्र – पु० 1. सौरमंडल के नौ ग्रहों में से एक ग्रह। 2. सात दिनों में से एक दिन, शुक्रवार।

शुक्रिया – पु० किसी के प्रति आभार या एहसान प्रकट करने के लिए कहा जानेवाला शब्द, धन्यवाद।

शुक्ल – *वि०* 1. सफ़ेद, उजला। 2. अमावस्या और पूर्णिमा के बीच का पखवाड़ा जब चंद्रमा बढ़ रहा होता है, शुक्ल पक्ष।

शुतुरमुर्ग – पु० सलेटी रंग का एक बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट जैसी लंबी होती है।

शुद्ध – *वि०* 1. पवित्र, साफ़, स्वच्छ; जैसे – शुद्ध जल, शुद्ध आत्मा। 2. जिसमें मिलावट न हो, ख़ालिस; जैसे – शुद्ध घी, शुद्ध सोना। 3. सही, ठीक, नियम के अनुसार; जैसे – शुद्ध उच्चारण, शुद्ध गायन।

शुद्धि – *स्त्री०* 1. शुद्ध करने का काम, सफ़ाई। 2. पवित्र करना; जैसे – गंगाजल से किसी चीज़ की शुद्धि। 3. ग़लती ठीक करना।

शुभ – *वि०* मंगलमय, कल्याणकारी, अच्छा; जैसे – शुभ दिन, शुभ काम।

शुभकामना – *स्त्री०* किसी के कल्याण या भले की कामना; जैसे – नए साल की शुभकामनाएँ।

शुभचिंतक – *वि०* किसी का भला चाहनेवाला, हितैषी।

शुल्क – पु० चंदा, फ़ीस, सरकार द्वारा लिया जानेवाला कर; जैसे – पत्रिका का वार्षिक शुल्क, चिकित्सा-शुल्क, सीमा-शुल्क।

शुष्क – *वि०* 1. सूखा, जिसमें गीलापन न हो; जैसे – शुष्क धरती। 2. उबाऊ, नीरस। प्र० गणित मेरे लिए बहुत शुष्क विषय है। 3. जिसमें मोह-ममता न हो, निर्दय; जैसे – शुष्क व्यक्ति।

शूद्र – पु० चार हिंदू वर्णों में से चौथा वर्ण, हरिजन।

शून्य – पु० 1. सिफ़र, ज़ीरो (गणित)। 2. ख़ाली, रहित; जैसे – भावनाशून्य व्यक्ति।

शूर – *वि०* बहादुर, वीर।

शृंखला – *स्त्री०* 1. कड़ी, लड़ी; जैसे – मोतियों की शृंखला। 2. चीज़ों, घटनाओं, बातों का एक ख़ास क्रम में होना या रखा जाना। प्र० उसने बैडमिंटन पर एक टी०वी० शृंखला तैयार की है।

शीश | शीशम | शुतुरमुर्ग

शेरवानी श्यामपट श्रद्धालु
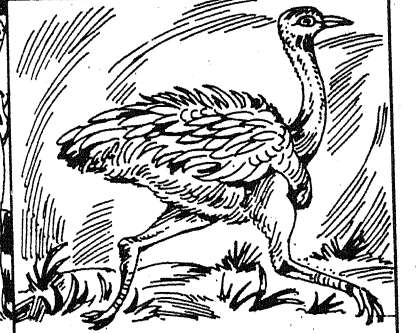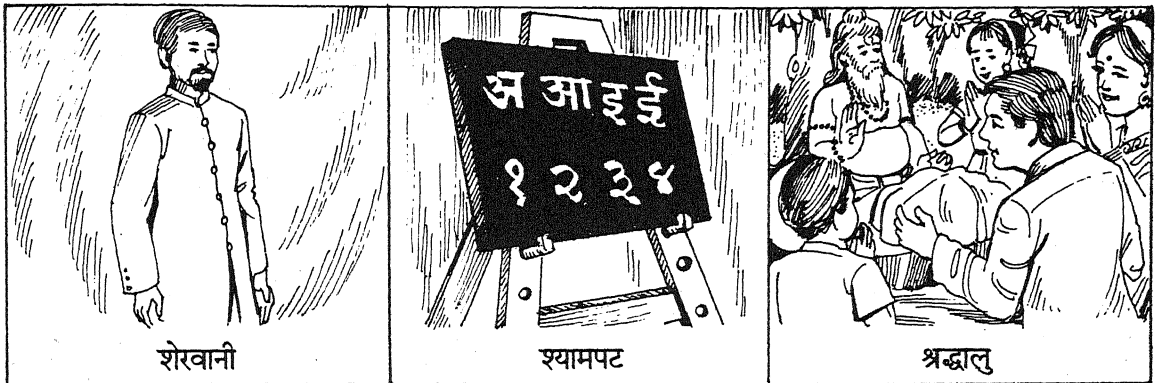
शृंगार – पु० सजना-सँवरना, सिंगार। प्र० दूल्हन का शृंगार पूरा हो गया।

शेरवानी – स्त्री० घुटनों से नीचे तक का बंद गले का कोट, अचकन।

शेष – वि० बाक़ी, बचा हुआ। प्र० उपन्यास का शेष भाग पत्रिका के अगले अंक में छपेगा।

शैक्षणिक – वि० शिक्षा से संबंधित।

शैल – पु० 1. पहाड़, पर्वत। 2. चट्टान।

शैली – स्त्री० कोई काम करने का ढंग, तरीक़ा, रीति। प्र० चार्ली चैपलिन की अभिनय-शैली के लाखों प्रशंसक हैं।

शैशव – पु० शिशु की अवस्था, बचपन। प्र० शैशव में ही उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी।

शोक – पु० प्रिय व्यक्ति की मृत्यु पर होनेवाला गहरा दुख, व्यथा।

शोभा – स्त्री० 1. सुंदरता, चमक, छवि, छटा। प्र० पूरा चाँद रात की शोभा को बढ़ा रहा था। 2. परंपरा और मर्यादा के अनुकूल होने के कारण अच्छा लगनेवाला। प्र० ऐसा ओछा व्यवहार उन्हें शोभा नहीं देता।

शोला – पु० आग की लपट, ज्वाला।

शोषण – पु० 1. किसी चीज़ के तरल अंश को सोखना। 2. किसी की मेहनत का ग़लत ढंग से फ़ायदा उठाना; जैसे – ज़मींदारों द्वारा मज़दूरों का शोषण।

शौक़ीन – पु० 1. जिसे किसी चीज़ का शौक़ या चाव हो; जैसे – पान का शौक़ीन, फ़िल्मों का शौक़ीन। 2. ठाठ-बाट और बनाव-शृंगार पसंद करनेवाला।

शौचालय – पु० टट्टी-पेशाब के लिए बनी हुई जगह।

शौर्य – पु० शूरता, बहादुरी, वीरता।

श्मशान – पु० वह जगह जहाँ शव जलाए जाते हैं।

श्यामपट – पु० ब्लैक-बोर्ड।

श्रद्धांजलि – स्त्री० किसी मृत व्यक्ति के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करने के लिए कुछ कहना, करना या फूल अर्पित करना। प्र० इंदिरा गांधी की मृत्यु पर करोड़ों लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धा – स्त्री० प्रेम और भक्ति का मिला-जुला भाव, आस्था, गहरा विश्वास। प्र० महात्मा गांधी के प्रति लाखों लोगों के मन में श्रद्धा का भाव है।

श्रद्धालु – वि० श्रद्धा का भाव रखनेवाला। प्र० साधु बाबा श्रद्धालुओं से घिरे हुए थे।

श्रद्धेय – *वि०* जो श्रद्धा के योग्य हो, पूजनीय। प्र० श्रद्धेय पिताजी, सादर नमस्ते।

श्रम – पु० मेहनत, परिश्रम।

श्रमिक – पु० श्रम करनेवाला, मज़दूर, मेहनतकश।

श्रवण – पु० 1. सुनने की इंद्रिय, कान। 2. सुनने की क्रिया।

श्राद्ध – पु० पितरों या परिवार के मृत लोगों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए दिया जानेवाला ब्राह्मण-भोज, अन्न-वस्त्र दान आदि।

श्रावण – पु० भारतीय पंचांग के अनुसार आषाढ़ के बाद और भादों से पहले आनेवाला वर्ष का पाँचवाँ महीना।

श्री – 1. पु० पुरुषों के नाम से पहले जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द, श्रीमान; जैसे –श्री सुब्रह्मण्यम भारती। (*विलोम* – श्रीमती)। 2. स्त्री० शोभा, सौंदर्य। प्र० विधवा होने के बाद से कस्तूरी पूरी तरह श्रीहीन हो गई है।

श्रीमती – स्त्री० 1. स्त्रियों के नाम से पहले इस्तेमाल होनेवाला आदरसूचक शब्द; जैसे – श्रीमती इला भट्ट। (*विलोम* – श्री)। 2. बीवी, पत्नी।

श्रीमान् – पु० दे० श्री।

श्रेणी – स्त्री० 1. पंक्ति, क़तार, लाइन, शृंखला। प्र० सब बच्चों को दो श्रेणियों में खड़ा कर दो। 2. विशेषताओं, गुणों के आधार पर वस्तुओं या व्यक्तियों का बनाया गया वर्ग, दर्जा। प्र० गांधीजी रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में कभी यात्रा नहीं करते थे।

श्रेय – पु० किसी व्यक्ति के कारण संभव हो पाए अच्छे काम के लिए मिलनेवाला यश और प्रशंसा। प्र० प्रकृति को बचाने के लिए चिपको आंदोलन शुरू करने का श्रेय श्री चंडीप्रसाद भट्ट को जाता है।

श्रेष्ठ – *वि०* 1. सबसे अच्छा, उत्तम; जैसे – श्रेष्ठ गायक। 2. ऊँचे मानवीय गुणोंवाला। प्र० श्रेष्ठ व्यक्ति का आदर सब लोग करते हैं।

श्रोता – पु० सुननेवाला। प्र० श्रोता बहुत ध्यान से पंडितजी का भाषण सुन रहे थे।

श्लोक – पु० संस्कृत का कोई पद्य या पद।

श्वसुर – पु० पति या पत्नी का पिता, ससुर।

श्वास – पु० साँस।

श्वेत – पु० सफ़ेद, उज्ज्वल, जैसे – श्वेत वस्त्र।

श्रमिक | श्रवण | श्रोता | श्वास

षोडशी | सँकरा | संकेत

ष– हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन।

षट – *वि॰* छः, छह।

षटकोण – *वि॰* छः कोणों/कोनोंवाला (रेखागणित)।

षड्ज – *पु॰* भारतीय संगीत के सात सुरों में से चौथा सुर।

षड्यंत्र – *पु॰* किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने के लिए चोरी-छिपे उसके ख़िलाफ़ कुछ करने की योजना, साज़िश; जैसे – आतंकवादियों द्वारा बैंक लूटने का षड्यंत्र।

षष्टि – *स्त्री॰* साठ की संख्या।

षष्ठ – *वि॰* छठा।

षोडश – *वि॰* सोलह।

षोडशी – *स्त्री॰* सोलह वर्ष की लड़की।

★

स– देवनागरी वर्णमाला का एक व्यंजन।

संकट – *पु॰* मुसीबत, विपत्ति, मुश्किल, कठिनाई। *प्र॰* संकट में भी जो धैर्य न खोए वही सच्चा मनुष्य है।

संकर – *पु॰* दो अलग-अलग जातियों के मेल से बना हुआ या उत्पन्न; जैसे – (क) प्रयोगशाला में तैयार संकर पौधा; (ख) नीना हिंदू-ईसाई माँ-बाप की संकर संतान है।

सँकरा – *वि॰* जो बहुत कम चौड़ा हो, पतला और तंग; जैसे – सँकरी गली।

संकलन – *पु॰* चुनकर इकट्ठा करना, एकत्र करना, संग्रह। *प्र॰* उसके पास तरह-तरह की सीपियों का सुंदर संकलन है।

संकल्प – *पु॰* 1. पक्का इरादा, दृढ़ निश्चय। *प्र॰* विमला ने जीवन-भर मदर टेरेसा की संस्था में काम करने का संकल्प किया। 2. कोई धार्मिक या सामाजिक काम करने की प्रतिज्ञा। *प्र॰* सेठजी ने गाँव में कुआँ बनवाने का संकल्प किया।

संकीर्ण – *वि॰* (किसी व्यक्ति के सोचने और काम करने का) पुराना ढंग, घिसे-पिटे रिवाजों के अनुसार, तंग, संकुचित। *प्र॰* रमा के संकीर्ण विचारोंवाले माँ-बाप ने उसे पढ़ने के लिए शहर नहीं भेजा।

संकुचित – *वि॰* 1. सिकुड़ा हुआ। 2. *दे॰* संकीर्ण।

संकेत – *पु॰* 1. इशारा। *प्र॰* मोहन ने उसे भाग जाने का संकेत किया। 2. निशान, चिह्न।

प्र॰ ट्रैफ़िक-संकेत सड़क से संबंधित नियम बताते हैं।

संकेत चिह्न – पु॰ किसी शब्द का छोटा या संक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग संकेत की तरह किया जाता है; जैसे – उ॰ प्र॰: उत्तर प्रदेश, पु॰: पुल्लिंग।

संकोच – पु॰ झिझक, हिचकिचाहट। प्र॰ उसे कोई भी चीज़ माँगने में संकोच नहीं होता।

संक्रमण – पु॰ 1. कीटाणुओं का फैलना। 2. किसी रोग के कीटाणुओं के फैलने से उस रोग का एक व्यक्ति से दूसरे को लगना; जैसे – हैज़े का संक्रमण।

संक्रांति – स्त्री॰ 1. सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने का समय। 2. ऐसे समय में मनाया जानेवाला हिंदुओं का एक त्योहार जो माघ (जनवरी) के महीने में पड़ता है।

संक्रामक – वि॰ छूत से फैलनेवाला, एक से दूसरे को लगनेवाला। प्र॰ एड्स एक संक्रामक रोग है।

संक्षिप्त – वि॰ जो संक्षेप में हो, छोटा किया हुआ; जैसे – संक्षिप्त बात, संक्षिप्त लेख।

संक्षेप – पु॰ थोड़ा, छोटा रूप। प्र॰ उनके भाषण का संक्षेप अख़बार में छपा था।

संख्या – स्त्री॰ 1. गिनती, तादाद। प्र॰ राजघाट पर रोज़ भारी संख्या में देश-भर से लोग आते हैं। 2. विशेष संख्या; जैसे – 7, 9, 25 आदि (गणित)।

संग – पु॰ 1. साथ, सोहबत, संगत, संसर्ग। प्र॰ बुरे लोगों का संग ठीक नहीं। 2. के साथ, सहित। प्र॰ अचार के संग रोटी खा लो।

संगठन – पु॰ 1. एक जैसा काम करनेवाले या समान ढंग से सोचनेवाले लोगों की बनी हुई संस्था; जैसे – रिक्शा चलानेवालों का संगठन, भ्रष्टाचार विरोधी संगठन। 2. अनेक लोगों के इकट्ठा और व्यवस्थित होने का काम। प्र॰ दयानंद सरस्वती ने सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए आर्यसमाज का संगठन किया।

संगति – स्त्री॰ दे॰ संग।

संगम – पु॰ 1. मिलन, मिलाप, मेल। 2. दो या दो से अधिक नदियों का एक स्थान पर आकर मिलना; जैसे – प्रयाग में गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम।

संगमरमर – पु॰ एक चिकना और सफ़ेद पत्थर।

संगीत – पु॰ गाने और बजाने की विद्या। प्र॰ मैंने दस साल तक संगीत की शिक्षा ली।

संकेत चिह्न | संगठन | संगम

संग्रहालय | संग्राम | सँड़सी

संगीतज्ञ – संगीत जाननेवाला, संगीत की कला में निपुण।

संग्रह – पु० 1. जमा करना, इकट्ठा करना, एकत्र करना, संचय। प्र० दीपक आजकल पक्षियों के पंखों का संग्रह करने में लगा है। 2. इकट्ठी की हुई चीज़ों का समूह या ढेर, संकलन; जैसे – टिकट-संग्रह, निबंध-संग्रह।

संग्रहालय – पु० वह स्थान जहाँ कला, विज्ञान और इतिहास से संबद्ध महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह हो। प्र० लंदन का एल्बर्ट संग्रहालय दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय है।

संग्राम – पु० लड़ाई, युद्ध।

संघ – पु० समूह, संगठन; जैसे – मज़दूर संघ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

संघर्ष – पु० 1. मुश्किलों का सामना करते हुए लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश, जूझना। प्र० विनोद ने डॉक्टर बनने के लिए बहुत संघर्ष किए। 2. दो गुटों के बीच हिंसात्मक झगड़ा। प्र० गाँव में ज़मींदारों और हरिजनों के बीच संघर्ष में कई लोग घायल हुए। 3. दो चीज़ों का आपस में रगड़ खाना।

संचय – पु० 1. चुनकर इकट्ठी की हुई वस्तुओं का ढेर या समूह। 2. चुनकर इकट्ठा करना। प्र० मधुमक्खियाँ छत्ते में शहद का संचय करती हैं।

संचार – पु० 1. किसी संदेश को दूर तक या बहुत-से लोगों तक पहुँचाने की क्रिया या प्रणाली, कम्यूनिकेशन। प्र० टेलीफ़ोन, टेलीविज़न, सेटेलाइट आदि संचार के माध्यमों से दुनिया आज छोटी हो गई है। 2. किसी चीज़ का प्रवाह, चलना, फैलना; जैसे – शरीर में रक्त का संचार, विद्युत् का संचार।

संचालक – पु० संचालन करनेवाला, चलानेवाला, देख-रेख करनेवाला; जैसे – अनाथालय का संचालक।

संचालन – पु० किसी संस्था, सभा आदि को चलाने का काम।

संचित – वि० संचय किया हुआ, जमा किया हुआ; जैसे – संचित कोष, संचित धन।

सँजोना – क्रि० किसी चीज़ को सँभाल और बचाकर रखना। प्र० रीता को पुरानी चीज़ें सँजोकर रखने का बहुत शौक़ है।

संज्ञा – स्त्री० वह शब्द जो किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान के नाम या किसी भाव के बारे में बताए; जैसे – कुर्सी, राधा, जंगल, दया आदि।

सँड़सी – स्त्री० कैंची की तरह का दो छड़ों से बना

हुआ चिमटा जो गरम बरतन पकड़ने के काम आता है।

संडास – *पु॰* पाख़ाना, शौचालय।

संत – *पु॰* साधु, महात्मा; जैसे – संत कबीर।

संतरी – *पु॰* पहरेदार, प्रहरी, द्वारपाल।

संतान – *स्त्री॰* बाल-बच्चे, औलाद। *प्र॰* विभा की दो संतानें हैं – एक लड़की और एक लड़का।

संताप – *पु॰* 1. गहरा दुख, कष्ट, पीड़ा। 2. पछतावा, प्रायश्चित। *प्र॰* लखन को बुढ़ापे में अपने बुरे कामों का संताप होने लगा।

संतुलन – *पु॰* 1. तौलते समय दोनों पलड़ों के वज़न का बराबर होना। 2. वह स्थिति जिसमें एक से अधिक वस्तुओं की मात्रा या महत्त्व बराबर का हो। *प्र॰* मोटरगाड़ियों के धुएँ के कारण शहरों की हवा में ऑक्सीजन का संतुलन बिगड़ गया है। 3. विभिन्न प्रकार के दबावों, लालच और शक्तियों की परवाह न करते हुए स्थिर बने रहने की स्थिति, संयम। *प्र॰* वीना को ससुराल में इतना सताया गया कि वह दिमाग़ी संतुलन खो बैठी।

संतुलित – *वि॰* 1. जिसमें संतुलन हो, जहाँ हर चीज़ का अनुपात बराबर हो; जैसे – संतुलित भोजन। 2. जहाँ किसी विषय/चीज़ के विभिन्न पहलुओं को बराबर का महत्त्व दिया जाए; जैसे – संतुलित विचार, संतुलित भाषण। 3. बिना किसी तरफ़दारी या पक्षपात के, संयमित। *प्र॰* मोहन ने अपनी बात इतने संतुलित ढंग से कही कि किसी को भी बुरी न लगे।

संतुष्ट – *वि॰* जिसे संतोष हो गया हो, तृप्त। *प्र॰* खाना खाकर वह पूरी तरह संतुष्ट हो गया।

संतोष – *पु॰* 1. मन की इच्छा पूरी होने पर महसूस होनेवाली ख़ुशी, तसल्ली, संतुष्टि, तृप्ति। *प्र॰* बेटी के डॉक्टर बन जाने पर माँ को बहुत संतोष हुआ। 2. सब्र, धैर्य। *प्र॰* संतोष करो, बुरे दिन हमेशा नहीं रहते।

संतोषी – *वि॰* थोड़ा मिलने पर भी ख़ुश रहनेवाला, सब्र करनेवाला। *प्र॰* संतोषी लोग सदा सुखी रहते हैं।

संदर्भ – *पु॰* वस्तु, व्यक्ति या घटना के आगे-पीछे और आसपास की चीज़ें, माहौल आदि जो उसे प्रभावित करती हैं, प्रसंग, परिवेश। *प्र॰* 1. 'रामचरितमानस' की इस चौपाई का संदर्भ क्या है? 2. भारत में फैली हुई ग़रीबी के संदर्भ में देखा जाए तो रंगीन टेलीविज़न हमारे लिए आवश्यक नहीं है।

संत | संतरी | संतुलन

संदूक संधि संपत्ति
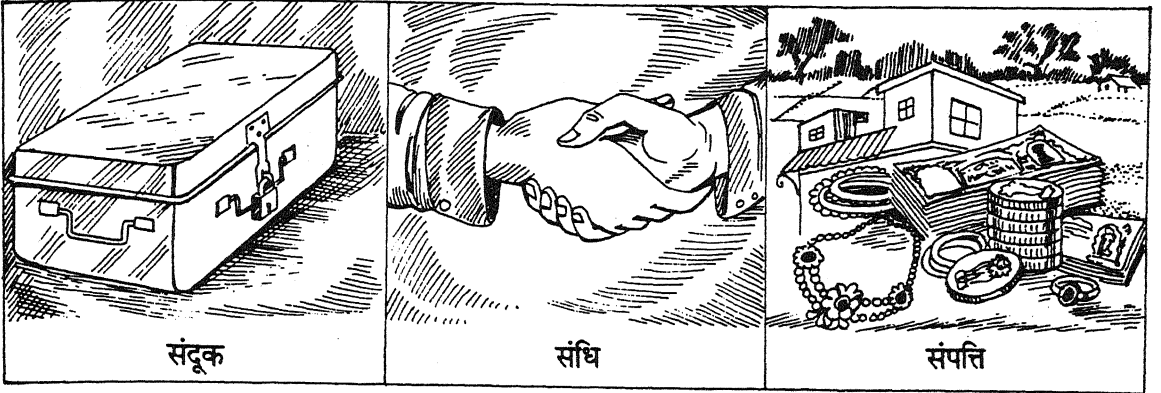
संदिग्ध – *वि०* जिसके बारे में या जिस पर संदेह, शक या भ्रम हो। प्र० पुलिस ने संदिग्ध व्यक्ति को तुरंत पकड़ लिया।

संदूक – पु० लकड़ी या लोहे का बक्सा, पेटी।

संदेश – पु० 1. लिखकर या मुँहज़बानी दी जानेवाली कोई ख़बर। प्र० 1. विभा ने चिट्ठी में मुझे इलाहाबाद आने का संदेश भेजा। 2. मैंने तुम्हारा संदेश पिताजी को फ़ोन पर दे दिया। 2. पनीर से बननेवाली एक बंगाली मिठाई।

संदेह – पु० शक, भरोसा न होना। प्र० मीना को राम के पढ़े-लिखे होने पर संदेह है।

संधि – स्त्री० 1. दो देशों या प्रांतों के बीच होनेवाला समझौता, सुलह; जैसे – भारत-पाकिस्तान संधि। 2. जोड़, वह स्थान जहाँ एक चीज़ दूसरी से जुड़ी हो। प्र० घुटने पर दो हड्डियों की संधि होती है। 3. व्याकरण में दो शब्दों को जोड़ने पर होनेवाला अक्षर-परिवर्तन; जैसे – सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ = ओ)।

संध्या – स्त्री० 1. शाम, सायंकाल। 2. शाम के समय की जानेवाली पूजा-उपासना। प्र० मेरी नानी रोज़ संध्या करती हैं।

संन्यास – पु० हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम जिसका पालन करनेवाला व्यक्ति संसार से हर प्रकार के मोह-माया और संबंधों को तोड़ लेता है और हर काम बिना किसी लालच या स्वार्थ के करता है।

संन्यासी –पु० वह व्यक्ति जिसने संन्यास ले लिया हो, त्यागी और विरक्त व्यक्ति।

संपत्ति – स्त्री० धन-दौलत, ज़मीन-जायदाद। प्र० राजेश और मोहन में संपत्ति के बँटवारे को लेकर झगड़ा चल रहा है।

संपदा – स्त्री० 1. धन-दौलत, ऐश्वर्य, वैभव। 2. कोई बहुमूल्य वस्तु, संपत्ति या साधन; जैसे – वन-संपदा, जल-संपदा। प्र० मेरी विद्या ही मेरी संपदा है।

संपन्न – *वि०* 1. जिसके पास संपत्ति हो, दौलतमंद, समृद्ध। 2. पूरा किया हुआ; जैसे – काम संपन्न होना, विवाह संपन्न होना। 3. किसी गुण या विशेषता का होना। प्र० मीरा प्रतिभा-संपन्न लड़की है।

संपर्क – पु० 1. संगति, साथ, मेलजोल। प्र० तुम्हारे संपर्क में रहकर मुझे भी संगीत का शौक़ हो गया है। 2. फ़ोन, पत्र द्वारा या स्वयं जाकर किसी से मिलना। प्र० अपनी शिकायतों के लिए बड़े अफ़सर से संपर्क करें।

संपादक – पु० 1. लेख, किताब आदि को छाँटकर छपने योग्य बनाने के लिए उसमें सुधार करनेवाला। 2. अख़बार और पत्रिका में लेख, ख़बरें आदि छापने के विषय पर महत्त्वपूर्ण फ़ैसले लेनेवाला।

संपूर्ण – *वि०* 1. पूरा, सब, सारा; जैसे – संपूर्ण जीवन, संपूर्ण क्रांति। 2. समाप्त, ख़त्म। *प्र०* इस इमारत का काम संपूर्ण होने में एक साल लगेगा।

सँपेरा – पु० साँप को पकड़ने, पालने और उसका तमाशा दिखानेवाला।

संप्रदाय – पु० किसी विशेष धर्म या विचारधारा को माननेवालों का समूह; जैसे – कबीर को माननेवालों का संप्रदाय, राधास्वामी संप्रदाय।

संबंध – पु० 1. रिश्ता, नाता, ताल्लुक़। *प्र०* इस रोग का संबंध पेट की ख़राबी से है। 2. संपर्क, मेलजोल, वास्ता। *प्र०* उस आतंकवादी से मेरा कोई संबंध नहीं है। 3. व्याकरण में छठा कारक।

संबंधी – 1. पु० रिश्तेदार। 2. *वि०* संबंध का, से संबद्ध। *प्र०* खेल-संबंधी समाचार इस अख़बार के छठे पन्ने पर छपते हैं।

संबद्ध – *वि०* संबंधी, संबंधित।

संबोधन – पु० 1. (क) जिससे बात की जाए उसे पुकारने के लिए इस्तेमाल होनेवाला शब्द। (ख) जिसे पत्र लिखा जाए उसके लिए इस्तेमाल होनेवाला शब्द; जैसे – माताजी, लालाजी, ए लड़के! 2. व्याकरण में आठवाँ कारक।

सँभलना – *क्रि०* 1. अपनी बिगड़ती हुई हालत ठीक कर लेना। *प्र०* उदय बुरी संगत में पड़कर भी सँभल गया। 2. सावधान होना, सचेत होना, ध्यान से करना। *प्र०* 1. चौकीदार किसी की पैरों की आवाज़ सुनाई देने पर सँभल गया। 2. सँभलकर चलो, यहाँ कीचड़ है।

संभव – *वि०* जिसके होने या घटने की उम्मीद हो, मुमकिन। *प्र०* शादी में जाना मेरे लिए संभव नहीं है।

संभवतः – *अ०* हो सकता है, शायद। *प्र०* इस बार होली संभवतः 12 तारीख़ को है।

सँभालना – *क्रि०* 1. हिफ़ाज़त से रखना, सहेजकर रखना। *प्र०* ये पैसे सँभालकर रख लो। 2. किसी चीज़ की देख-रेख करना, इंतज़ाम देखना; जैसे – घर सँभालना, कारोबार सँभालना। 3. रक्षा करना, पालना। *प्र०* पति के न रहने पर उसने बच्चों को अच्छी तरह सँभाला।

संभावना – *स्त्री०* संभव होने की स्थिति, आसार। *प्र०* आज बारिश की कोई संभावना नहीं है।
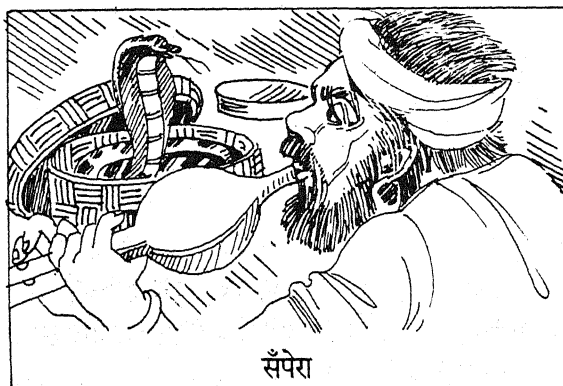
सँपेरा | संबंधी
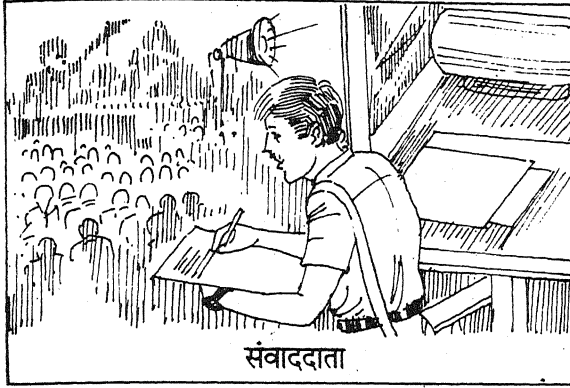
संवाददाता सँवारना

संभ्रांत – *वि॰* इज़्ज़तदार और पैसेवाला, प्रतिष्ठित और संपन्न। *प्र॰* नेहरूजी का जन्म इलाहाबाद के एक संभ्रांत परिवार में हुआ था।

संयत – *वि॰* मन और भावनाओं को दबाना या वश में रखना, मर्यादा की सीमाओं के भीतर। *प्र॰* ग़ुस्से पर क़ाबू पाते हुए वह संयत स्वर में बोला।

संयम – *पु॰* मन को वश में रखते हुए नियम से रहना। *प्र॰* महात्मा गांधी बहुत संयम का जीवन जीते थे।

संयुक्त – *वि॰* 1. मिला हुआ, जुड़ा हुआ, इकट्ठा; जैसे – संयुक्त परिवार। 2. दो या दो से अधिक चीज़ों/हिस्सों से मिलकर बना हुआ; जैसे – संयुक्त सरकार, संयुक्त वाक्य। 3. किसी के साथ मिलकर काम करनेवाला; जैसे – संयुक्त संपादक।

संयोग – *पु॰* 1. कोई ऐसी घटना जिसके बारे में पहले से कुछ भी जानकारी न हो, इत्तफ़ाक़। *प्र॰* संयोग से मुझे दफ़्तर से जल्दी छुट्टी मिल गई। 2. मेल, मिश्रण। *प्र॰* 'ज' और 'ञ' के संयोग से 'ज्ञ' बनता है।

संरक्षण – *पु॰* सुरक्षा, देख-रेख, हिफ़ाज़त। *प्र॰* ऐतिहासिक इमारतों के संरक्षण का काम पुरातत्व विभाग देखता है।

संलग्न – *वि॰* लगा हुआ, जुड़ा हुआ। *प्र॰* पचास रुपए का एक चेक इस पत्र के साथ संलग्न है।

संवाद – *पु॰* बातचीत, वार्त्तालाप, डायलॉग। *प्र॰* टी॰वी॰ धारावाहिक 'महाभारत' के संवाद डॉ॰ राही मासूम रज़ा ने लिखे हैं।

संवाददाता – *पु॰* अख़बार, पत्रिकाओं आदि को समाचार भेजने का काम करनेवाला, रिपोर्टर। *प्र॰* प्रधानमंत्री ने संवाददाता सम्मेलन में मंत्रिपरिषद् के गठन की घोषणा की।

सँवारना – *क्रि॰* 1. सजाना। 2. ठीक करना, दुरुस्त करना, व्यवस्थित करना; जैसे – घर सँवारना।

संविधान – *पु॰* किसी देश या संस्था को चलाने के लिखित या अलिखित नियम-क़ानून। *प्र॰* भारत के संविधान ने दुनिया में सबसे पहले औरतों को चुनाव में वोट देने का अधिकार दिया था।

संवेदना – *स्त्री॰* 1. किसी चीज़ या घटना के असर से मन में पैदा होनेवाली भावनाएँ, अनुभूति। *प्र॰* शवयात्रा देखकर पैदा हुई संवेदनाओं ने सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध बना दिया। 2. किसी के लिए प्रकट की गई हमदर्दी, दुख, सहानुभूति। *प्र॰* राम की बहन की मृत्यु हो जाने पर हम उसके घर संवेदना प्रकट करने गए।

संशय – *पु०* शक, संदेह।

संशोधन – *वि०* 1. साफ़ करना, शुद्ध करना। *प्र०* बड़े शहरों में नलों में पहुँचाने से पहले पानी का संशोधन किया जाता है। 2. ग़लती सुधारना, फेरबदल करना। *प्र०* इस निबंध में काफ़ी संशोधन करने की ज़रूरत है।

संश्लिष्ट – *वि०* विभिन्न तत्त्वों के मेल से बना हुआ, सिंथेटिक।

संसद – *स्त्री०* देश की जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों की सभा जिसका काम जनता की समस्याओं पर विचार करना, सरकारी राजकाज पर नज़र रखना और शासन, क़ानून संबंधी महत्त्वपूर्ण फ़ैसले लेना होता है, पार्लियामेंट।

संसाधन – *पु०* 1. वे साधन जो किसी काम को शुरू करने या पूरा करने के लिए आवश्यक हों; जैसे – व्यापार के लिए संसाधन। 2. किसी देश की प्राकृतिक संपदा जिसका इस्तेमाल देश के विकास के लिए होता हो; जैसे – कोयला, लोहा, पानी, वन, मिट्टी आदि।

संसार – *पु०* दुनिया, जगत्।

संस्करण – *पु०* किसी किताब की एक बार की छपाई, आवृत्ति। *प्र०* ईसप की कथाओं के हज़ारों संस्करण बिक चुके हैं।

संस्कार – *पु०* 1. परिवार और समाज के माहौल, शिक्षा आदि का किसी व्यक्ति के व्यवहार और सोचने के ढंग पर पड़नेवाला प्रभाव। *प्र०* मुझे बचपन से ही अपना काम खुद करने का संस्कार मिला। 2. हिंदू धर्म में जन्म से मृत्यु तक मनाई जानेवाली सोलह रस्में; जैसे – नामकरण-संस्कार, विवाह-संस्कार, दाह-संस्कार।

संस्कृत – *स्त्री०* भारत की एक प्राचीन भाषा।

संस्कृति – *स्त्री०* रहन-सहन, अच्छे-बुरे की समझ, सोचने का ढंग, रीति-रिवाज आदि जिनसे किसी समाज की पहचान होती है। *प्र०* आजकल भारत में पश्चिमी संस्कृति को अपनाने की होड़ लगी है।

संस्था – *स्त्री०* किसी ख़ास उद्देश्य से या कोई ख़ास सामाजिक काम करने के लिए इकट्ठा हुआ लोगों का समूह, संगठन, समुदाय। *प्र०* 'बाल सहयोग' ग़रीब बच्चों की देख-भाल के लिए बनाई गई एक संस्था है।

संस्थापक – *पु०* किसी संस्था आदि को स्थापित करनेवाला, शुरू करनेवाला। *प्र०* संत विवेकानंद रामकृष्ण मिशन के संस्थापक थे।

संहार – *पु०* नाश, वध, अंत। *प्र०* भगवान् कृष्ण ने

संसद संहार
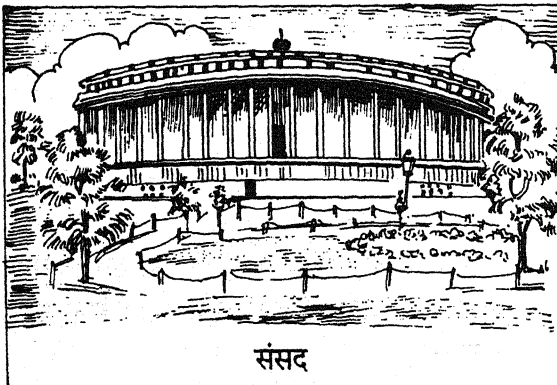
सकपकाना सकुचाना सचेत

कंस का संहार किया।

सकपकाना – *क्रि॰* कोई अटपटा या अनुचित काम करते हुए देख लिए जाने पर हड़बड़ा जाना, शर्मिंदा होने और घबराहट का मिला-जुला भाव। *प्र॰* मास्टरजी के कमरे में घुसते ही ब्लैकबोर्ड पर मास्टरजी की तस्वीर बनाता बच्चा सकपका गया।

सकुचाना – *क्रि॰* संकोच करना, झिझकना, हिचकना। *प्र॰* कृष्ण के आलीशान महल में पहुँचकर सुदामा चावल की पोटली उन्हें देने में सकुचा रहे थे।

सक्रिय – *वि॰* काम में लगे रहना, चुस्त, फुर्तीला। *प्र॰* 1. इस बुढ़ापे में भी वह काफ़ी सक्रिय है। 2. उमेश ने सक्रिय रूप से स्वतंत्रता-आंदोलन में हिस्सा लिया। (*विलोम* – निष्क्रिय)।

सक्षम – *वि॰* जिसमें क्षमता हो, समर्थ, क़ाबिल। *प्र॰* यह तोप 200 कि॰मी॰ तक गोला फेंकने में सक्षम है।

सखी – *स्त्री॰* सहेली, मित्र।

सख़्त – *वि॰* 1. कड़ा कठोर; जैसे– सख़्त लकड़ी, सख़्त बात। 2. तेज़, तीखा; जैसे सख़्त धूप। 3. मुश्किल, कठिन; जैसे– सख़्त पढ़ाई।

सख़्ती – *स्त्री॰* व्यवहार की कठोरता। *प्र॰* पुलिस की सख़्ती से दूकानदार बहुत परेशान हैं।

सगा – *वि॰* एक ही माँ से उत्पन्न हुआ, सहोदर; जैसे – सगा भाई, सगी मौसी।

सघन – *वि॰* घना; जैसे – सघन वन।

सचित्र – *वि॰* तस्वीरों के साथ, जिसमें चित्र हों; जैसे– सचित्र पुस्तक। *प्र॰* यह शब्दकोश सचित्र है।

सचिव – *पु॰* 1. सरकार या प्रशासन में उच्च अधिकारी जो महत्त्वपूर्ण फ़ैसले और नीतियाँ तय करने का काम करता हो; जैसे– गृह सचिव, रक्षा सचिव। 2. किसी अफ़सर के दफ़्तरी काम-काज की फ़ाइलें सँभालने, पत्र-व्यवहार आदि देखने का काम करनेवाला सहायक। 3. किसी संस्था, संगठन आदि को चलानेवाला व्यक्ति; जैसे – क्रिकेट क्लब का सचिव।

सचिवालय – *पु॰* मंत्रिमंडल से जुड़े हुए मंत्रियों और सचिवों का दफ़्तर। *प्र॰* केंद्रीय सचिवालय साउथ ब्लॉक और नॉर्थ ब्लॉक में हैं।

सचेत – *वि॰* सावधान, चौकन्ना, सजग, सतर्क। *प्र॰* शहर में आतंकवादियों के घुस आने की ख़बर पाकर पुलिस सचेत हो गई।

सच्चरित्र (सत् + चरित्र) – *वि०* अच्छे चरित्रवाला। (*विलोम* – दुश्चरित्र)।

सजग – *वि०* दे० सचेत।

सजधज – *स्त्री०* 1. सजावट। *प्र०* कृष्ण-जन्माष्टमी पर मंदिरों की सजधज सुंदर होती है। 2. सजना, बनाव-शृंगार। *प्र०* ईद पर बच्चे सजधजकर बाज़ार में घूमने निकले।

सजावट – *स्त्री०* सजाने का काम। *प्र०* दीपावली पर चाँदनी चौक की सजावट देखने लायक़ होती है।

सजीला – *वि०* 1. सजधज से रहनेवाला, बन-ठनकर रहनेवाला। 2. सुंदर, आकर्षक; जैसे – सजीला युवक।

सजीव – *वि०* 1. जिसमें जीवन या प्राण हो, ज़िंदा, जीवित। *प्र०* सजीव पक्षी को मत मारो। 2. असली ज़िंदगी जैसा, यथार्थ, वास्तविक। *प्र०* 'सलाम बांबे' फ़िल्म में पटरी पर रहनेवाले बच्चों का सजीव चित्रण हुआ है। (*विलोम* – निर्जीव)।

सज्जन – *पु०* 1. भला आदमी, शरीफ़। *प्र०* कमाल जैसा सज्जन व्यक्ति आज के ज़माने में मिलना मुश्किल है। 2. किसी अनजान आदमी के लिए आदर के नाते इस्तेमाल होनेवाला शब्द। *प्र०* आज तुमसे मिलने एक सज्जन आए थे।

सज्जा – *स्त्री०* सजावट; जैसे – दूल्हन की सज्जा, कमरे की सज्जा।

सटना – *क्रि०* 1. दो चीज़ों का पास-पास होना, एक-दूसरे के बग़ल में होना। *प्र०* मेरा घर पार्क से सटा हुआ है। 2. चिपकना। *प्र०* चुंबक लोहे के बरतन से सट गया।

सटाना – *क्रि०* 1. दो चीज़ों को पास-पास रखना, मिलाना। *प्र०* चारपाई को दीवार से सटाकर रख दो। 2. जोड़ना, चिपकाना। *प्र०* इस लिफ़ाफ़े को गोंद से सटा दो।

सड़ना – *क्रि०* किसी चीज़ का ख़राब होना या गलना जिससे उसमें से बदबू आए; जैसे – केले का सड़ना, लाश का सड़ना, कूड़े का सड़ना।

सड़ियल – *वि०* जो चिड़चिड़ा या गुस्सेवाला हो, जिसका खुश रहने का स्वभाव न हो; जैसे – सड़ियल पड़ोसी, सड़ियल टीचर।

सतत – *वि०* लगातार, निरंतर; जैसे – सतत प्रयत्न।

सतर्क – *वि०* दे० सचेत।

सतलुज – *स्त्री०* पंजाब में बहनेवाली एक मुख्य नदी, शतद्रु।

सतह – *स्त्री०* किसी चीज़ का ऊपरी हिस्सा। *प्र०* झील

सजावट | सटाना | संडना

सताना | सत्याग्रह

में पानी की सतह पर कमल के फूल खिले हुए थे।

सतही – *वि॰* 1. सतह का, ऊपरी। 2. जिसमें गहराई न हो, उथला। *प्र॰* विजय का अपने विषय का ज्ञान इतना सतही है कि वह इस किताब को नहीं लिख पाएगा।

सताना – *क्रि॰* तंग करना, परेशान करना, कष्ट देना। *प्र॰* बच्चे उस पागल आदमी को पत्थर मारकर सता रहे थे।

सती – *स्त्री॰* 1. अपने पति के शव के साथ जलकर मर जानेवाली स्त्री। *प्र॰* पुराने ज़माने में राजस्थान में सती-प्रथा बहुत प्रचलित थी। 2. पति में श्रद्धा रखनेवाली, पतिव्रता स्त्री।

सत् – *वि॰* अच्छा, नेक, उचित, पवित्र; जैसे– सत्कर्म, सत्संग।

सत्कार – *पु॰* आवभगत, आदर-सम्मान। *प्र॰* गुरप्रीत मेहमानों का सत्कार बहुत प्रेम से करती है।

सत्ता – 1. *स्त्री॰* शासन, शक्ति, प्रभुत्व; जैसे – गाँवों में ज़मींदारों की सत्ता, राजनीतिक सत्ता, धार्मिक सत्ता। 2. *पु॰* ताश का एक पत्ता।

सत्तू, सतुआ – *पु॰* जौ, चना आदि भुने हुए अनाज का आटा।

सत्य – 1. *पु॰* सच, वास्तविकता। *प्र॰* राजा हरिश्चंद्र सत्य बोलने के लिए प्रसिद्ध थे। 2. *वि॰* सच्चा, सही, वास्तविक; जैसे – सत्य वचन।

सत्यवादी – *वि॰* सत्य बोलनेवाला।

सत्याग्रह – *पु॰* किसी सच्चे उद्देश्य और न्याय को पाने के लिए की जानेवाली शांतिपूर्ण लड़ाई या विरोध, अनशन; जैसे – गांधीजी का नमक-सत्याग्रह।

सत्र – *पु॰* किसी स्कूल, सभा, संस्था आदि का वह समय जब कुछ हफ़्तों या महीनों तक उसका काम-काज लगातार और पूरी तरह चलता हो; जैसे – लोकसभा का मानसून सत्र, कॉलेज का पहला सत्र।

सत्संग – *पु॰* 1. अच्छी संगति, भले लोगों का साथ। *प्र॰* सत्संग से आदमी बहुत कुछ सीखता है। 2. भजन-कीर्तन और धर्म-संबंधी चर्चा के लिए बुलाई गई सभा। *प्र॰* हमारे मुहल्ले में हर महीने सत्संग होता है।

सदन – *पु॰* 1. घर, मकान। 2. वह स्थान जहाँ संसद या विधानसभा की कार्रवाई चलती हो; जैसे – लोकसभा।

सदमा – *पु॰* किसी गहरे दुख के कारण मन को

लगनेवाला धक्का, चोट, आघात। *प्र०* व्यापार में घाटा हो जाने से मदन सेठ को बहुत सदमा लगा।

सदर – 1. *वि०* मुख्य; जैसे – सदर बाज़ार, सदर अदालत। 2. *पु०* किसी संस्था, सभा आदि का सभापति, प्रधान, प्रमुख।

सदरी – *स्त्री०* बिना बाँहों की एक बंडी, मिरज़ई, फतुही।

सदस्य – *पु०* किसी सभा, दल, संस्था आदि में शामिल व्यक्ति। *प्र०* 1. मैं दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी का सदस्य हूँ। 2. तुम्हारे परिवार में कितने सदस्य हैं?

सदा – *अ०* हमेशा। *प्र०* बड़े लोग बच्चों को सदा सच बोलने के लिए कहते हैं।

सदाचार (सत् + आचार) – *पु०* अच्छा आचरण, नेक चालचलन, पवित्र व्यवहार। *प्र०* युधिष्ठिर अपने सदाचार के कारण पांडवों में सबसे अधिक सम्मानित थे। (*विलोम* – दुराचार)।

सदाबहार – 1. *पु०* एक पौधा या उसका गुलाबी रंग का फूल जो हर मौसम में खिलता है। 2. *वि०* (क) हमेशा हरा-भरा रहनेवाला; जैसे – सदाबहार पेड़। (ख) हमेशा ख़ुश रहनेवाला; जैसे– सदाबहार आदमी। (ग) जिसका रिवाज या प्रचलन हमेशा रहे। *प्र०* इस कपड़े का फ़ैशन तो सदाबहार है।

सदुपयोग (सत् + उपयोग) – *पु०* उचित उपयोग, अच्छे काम में लगाया जाना; जैसे – समय का सदुपयोग, पैसे का सदुपयोग। (*विलोम* – दुरुपयोग)।

सदैव – *अ०* हमेशा ही, सदा ही।

सद्गुण (सत् + गुण) – *पु०* अच्छे गुण, अच्छाई। *प्र०* रीता में ईमानदारी, सादगी, उदारता जैसे कई सद्गुण हैं। (*विलोम* – दुर्गुण)।

सद्भाव (सत् + भाव) – *पु०* अच्छी भावना, एक-दूसरे के लिए भलाई या हित की भावना। *प्र०* हमारे मुहल्ले में हिंदू-मुसलमान-सिख सभी सद्भाव से रहते हैं। (*विलोम* – दुर्भाव)।

सधना – *क्रि०* 1. काम बन जाना, काम पूरा होना। *प्र०* काम सध जाने पर मोहन ने यहाँ आना ही बंद कर दिया। 2. किसी काम को करने का अभ्यास हो जाना, माहिर होना, निपुण होना। *प्र०* केवल पाँच दिन सीखकर ही उसका हाथ टाइपराइटर पर सध गया है।

सन – *पु०* एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से टाट, रस्सी आदि बनाते हैं, पटसन, जूट।

सनना – *क्रि०* 1. लथपथ होना, किसी तरल चीज़ में

सदरी सद्गुण सन
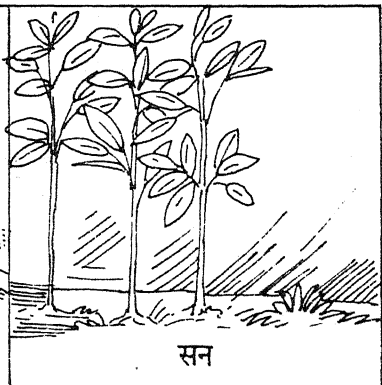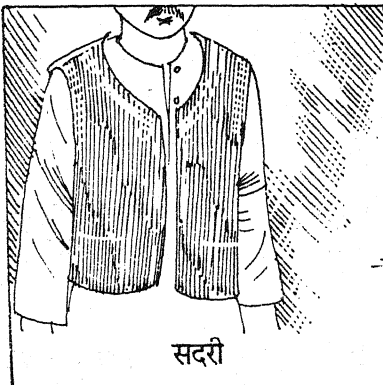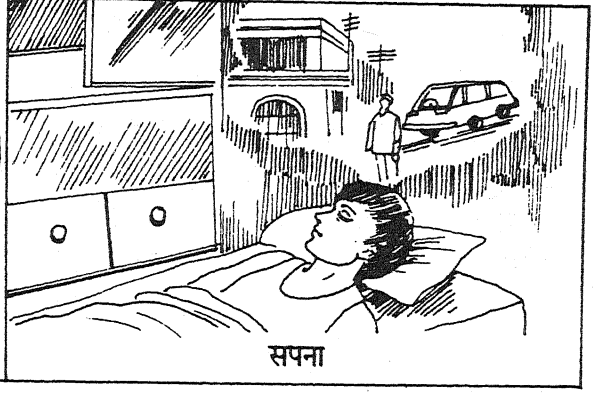
सनसनी

सपना

लिपट जाना। प्र० फिसल जाने से बच्चा कीचड़ में सन गया। 2. गुँधना। प्र० आटा सन गया हो तो रोटी बना दो।

सनसनाहट – स्त्री० किसी सँकरी जगह से हवा या पानी के गुज़रने पर होनेवाली आवाज़, साँय-साँय; जैसे – जंगल में हवा की सनसनाहट, पहाड़ी नाले की सनसनाहट।

सनसनी – स्त्री० कई लोगों के मन में एक साथ बैठ जानेवाला डर, आश्चर्य और चौंकने का मिला-जुला भाव। प्र० मुहर्रम पर दंगा भड़कते ही शहर में सनसनी फैल गई।

सन्नाटा – पु० वातावरण में कोई शोर या आवाज़ न होना, चुप्पी, निस्तब्धता, नीरवता। प्र० लू भरी दोपहर में गली-मुहल्लों में सन्नाटा छा जाता है। मु० *सन्नाटे में आना* – अचंभित होकर चुप रह जाना, भौंचक या स्तब्ध हो जाना। प्र० बेटे के अपमानित करने पर पिता सन्नाटे में आ गए।

सन्मति (सत् + मति) – स्त्री० अच्छी बुद्धि, सद्बुद्धि, अच्छे-बुरे की पहचान और समझ।

सपना – पु० 1. नींद में दिखाई देनेवाली घटनाएँ, स्थितियाँ आदि, स्वप्न। 2. किसी चीज़ के लिए या कुछ करने के लिए मन में लंबे समय तक बनी रहनेवाली इच्छा, कल्पना। प्र० असलम का डॉक्टर बनने का सपना आख़िर पूरा हो ही गया। मु० *सपनों में जीना* – असंभव चीज़ों को पाने की इच्छा और आशा करना। प्र० सपनों में जीने से कुछ नहीं मिलता।

सपाट – वि० जिसकी सतह ऊबड़-खाबड़ न हो, बराबर, समतल; जैसे – सपाट मैदान, सपाट छत।

सपूत – पु० अच्छा बेटा, योग्य पुत्र, सुपुत्र। (*विलोम* – कपूत)।

सात – 1. वि० सात। 2. पु० सात की संख्या।

सप्तर्षि – पु० आकाश की उत्तर दिशा में दिखाई देनेवाला सात तारों का समूह।

सप्ताह – पु० रविवार से लेकर शनिवार तक सात दिन का समय, हफ़्ता।

सप्लाई – स्त्री० कई जगहों या लोगों में किसी चीज़ का बाँटा जाना; जैसे – बिजली की सप्लाई, राशन की सप्लाई।

सफल – वि० किसी काम का मनचाहा फल पा लेना, कामयाब; जैसे – सफल यात्रा, सफल जीवन, सफल व्यक्ति। (*विलोम* – असफल)।

सफलता – स्त्री० कामयाबी। प्र० रमेश के परीक्षा में

सफलता प्राप्त करने पर हमने उसे बधाई दी।

सफ़ाई – *स्त्री०* 1. साफ़ होना, स्वच्छता। *प्र०* उमा बहुत सफ़ाई से रहती है। 2. साफ़ करने का काम। *प्र०* घर की सफ़ाई मैं खुद करती हूँ। 3. अपने बचाव के लिए कही गई बात। *प्र०* बच्चे ने देर से स्कूल पहुँचने पर मास्टरजी को सफ़ाई दी। *मु० हाथ में सफ़ाई होना* – किसी काम को कुशलता/निपुणता से कर पाना। *प्र०* उस कुम्हार के हाथ में बहुत सफ़ाई है।

सफ़ाया – *पु०* ख़त्म होना, नष्ट हो जाना, नाश। *प्र०* 1. बच्चे घर की सारी मिठाई का सफ़ाया कर गए। 2. भारतीय जवानों ने दुश्मनों का सफ़ाया कर दिया।

सफ़ेदा – *पु०* 1. एक तरह का आम। 2. एक पेड़ जिसका तना सफ़ेद होता है, युकलिप्टस।

सफ़ेदी – *स्त्री०* 1. सफ़ेद होना। 2. दीवार आदि पर चूने से की जानेवाली पुताई।

सबक़ – *पु०* 1. किताब का उतना हिस्सा जितना एक बार में पढ़ा जाए, पाठ। *प्र०* मन्नू ने अपना आज का सबक़ याद कर लिया है। 2. सीख, नसीहत, ग़लती करने पर चेतावनी के रूप में मिलनेवाली सज़ा। *प्र०* 1. इस कहानी का सबक़ यह है कि लालच नहीं करना चाहिए। 2. मैं तुम्हें ऐसा सबक़ सिखाऊँगा कि तुम ज़िंदगी-भर याद रखोगे।

सबल – *वि०* जिसमें बल हो, ताक़तवर, शक्तिशाली; जैसे – सेना के सबल जवान।

सब्ज़ – *वि०* हरा, हरे रंग का। *मु० सब्ज़ बाग़ दिखाना* – झूठी आशाएँ और लालच दिखाकर ठगना। *प्र०* उस आदमी का काम नौकरी के सब्ज़ बाग़ दिखाकर लोगों को लूटना है।

सब्र – *पु०* 1. बर्दाश्त, सहन। *प्र०* हम उसकी ज़्यादतियों को अब और सब्र नहीं कर सकते। 2. धीरज, धैर्य। *प्र०* सब्र करो, बारी आने पर ही तुम्हारा काम होगा।

सभा – *स्त्री०* 1. बैठक, मीटिंग, गोष्ठी; जैसे – पत्रकारों की सभा, राज्यपालों की सभा, आम सभा। 2. संस्था, संगठन, परिषद्; जैसे – हिंदू महासभा, नागरी प्रचारिणी सभा।

सभापति – *पु०* सभा का मुखिया या प्रधान।

सभ्य – *पु०* शरीफ़, शिष्ट, अच्छे व्यवहारवाला; जैसे – सभ्य परिवार, सभ्य व्यवहार। (*विलोम* – असभ्य)।

सभ्यता – *स्त्री०* 1. सभ्य होने का भाव, शराफ़त,

सफ़ेदा | सबल

समकोण समर्थन समर्पण
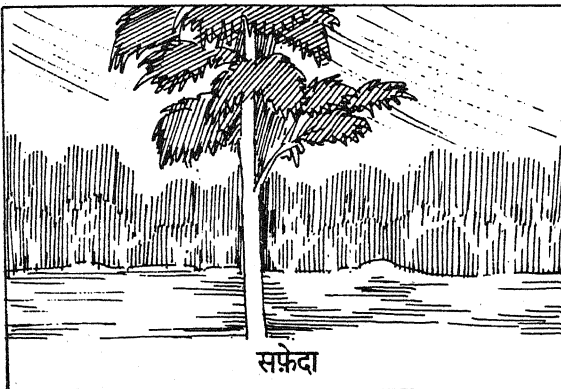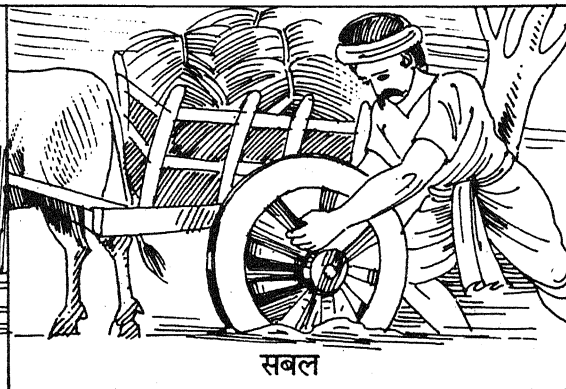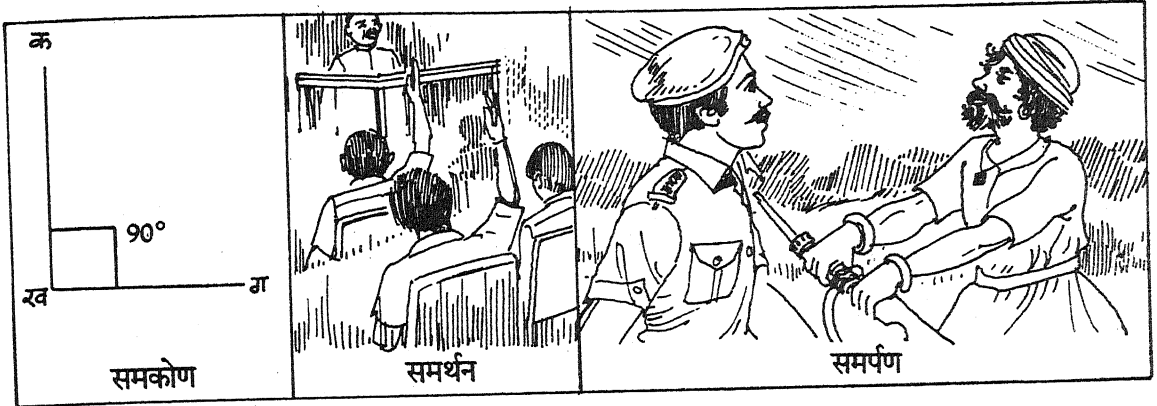
शिष्टता। 2. ऐसा समाज जिसके सांस्कृतिक तौर-तरीक़े, रहन-सहन और राजकाज के ढंग तय हो चुके हों; जैसे – सिंधु घाटी की सभ्यता, मिस्री सभ्यता।

सम – *वि०* 1. एक जैसा, बराबर; जैसे – समकालीन, समकोण। 2. वह संख्या जो दो से पूरी तरह बँट जाए; जैसे – 4, 10, 24 (गणित)। (*विलोम* – विषम)।

समकोण – *वि०* 90 अंश का कोण।

समक्ष – *अ०* आँखों के सामने, सामने, सम्मुख। *प्र०* मेरे समक्ष इस समय तीन समस्याएँ हैं।

समझौता – *पु०* दो लोगों या पक्षों के बीच कुछ शर्तों पर होनेवाला फ़ैसला, राज़ीनामा, सुलह, मेल। *प्र०* हड़ताल करनेवाले डॉक्टरों और सरकार के बीच समझौता हो गया है।

समतल – *वि०* जिसकी सतह ऊबड़-खाबड़ न हो, बराबर सतह का; जैसे – समतल मैदान।

समता – *स्त्री०* समान होने का भाव, बराबरी का भाव। *प्र०* नारी-समता के पक्ष में आजकल कई संगठन आवाज़ उठा रहे हैं।

समधी – *पु०* बेटी या बेटे का ससुर।

समय – *पु०* वक़्त, काल।

समर – *पु०* लड़ाई, युद्ध।

समर्थ – *वि०* जिसमें कोई काम करने की क्षमता हो, योग्य। *प्र०* अगर वह समर्थ है तो उसे सफलता ज़रूर मिलेगी। (*विलोम* – असमर्थ)।

समर्थक – *वि०* समर्थन करनेवाला, किसी व्यक्ति या बात का पक्ष लेनेवाला, साथ देनेवाला। *प्र०* डॉ० राममनोहर लोहिया औरतों को बराबर का हक़ दिए जाने के समर्थक थे।

समर्थन – *पु०* किसी बात या व्यक्ति की तरफ़दारी करना, हिमायत करना, साथ देना। *प्र०* परिवार के समर्थन के बिना इब्राहिम ये काम नहीं कर सकता।

समर्पण – *पु०* 1. आदर के साथ भेंट करना, अर्पित करना; जैसे – पुस्तक का समर्पण। 2. बाग़ियों या विद्रोहियों द्वारा अपने को क़ानून के हवाले करना, सुपुर्द करना; जैसे – आतंकवादियों द्वारा समर्पण।

समर्पित – *वि०* समर्पण किया हुआ, सौंपा हुआ, भेंट किया हुआ। *प्र०* विमल ने अपनी लिखी हुई पहली किताब अपनी माँ को समर्पित की।

समस्त – *वि०* सारा, संपूर्ण, समूचा। *प्र०* समस्त संसार आज परमाणु हथियारों के ख़तरे से त्रस्त है।

समस्या – *स्त्री०* 1. कोई मुश्किल प्रश्न, बात या स्थिति; जैसे – बेरोज़गारी की समस्या, प्रदूषण की समस्या। 2. दिक़्क़त, कठिनाई। प्र० अमरीक को बुढ़ापे के कारण अख़बार पढ़ने में समस्या होती है।

समाचार – पु० 1. देश-विदेश की ख़बर। प्र० सलमा रेडियो पर रोज़ समाचार सुनती है। 2. किसी व्यक्ति का हाल-चाल, ख़बर। प्र० बहुत दिनों से मेरे चाचा का कोई समाचार नहीं मिला।

समाचार-पत्र – पु० रोज़ या हर हफ़्ते छपनेवाला पत्र जिसमें दुनिया-भर के समाचार, लेख आदि छपते हों, अख़बार।

समाज – पु० 1. लोगों का समूह जिनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, नियम-क़ानून, सोचने के ढंग में कहीं-न-कहीं समानता हो; जैसे– कश्मीरी समाज, जैन समाज, भारतीय समाज। 2. कई लोगों द्वारा किसी ख़ास उद्देश्य से मिलकर बनाई गई संस्था; जैसे – भारत सेवक समाज।

समाजवाद – *पु०* एक सिद्धांत जिसके अनुसार समाज के हर व्यक्ति को बराबर अधिकार, अवसर और लाभ मिलने चाहिए।

समाधान – *पु०* किसी मुश्किल चीज़ का हल निकालना, उपाय ढूँढ़ना, सुलझाना; जैसे – समस्या का समाधान।

समाधि – *स्त्री०* वह स्थान जहाँ किसी महान् व्यक्ति का दाह-संस्कार किया गया हो और उस पर स्मारक बनाया गया हो; जैसे – महात्मा गांधी की समाधि, तानसेन की समाधि।

समान – *वि०* बराबर, एक जैसा। प्र० सतविंदर सौतेले बेटे को भी अपने बच्चे के समान प्यार करती है।

समानता – *स्त्री०* समान होने का भाव, बराबरी। प्र० इन दोनों तस्वीरों में क्या समानता है ? (*विलोम* – असमानता)।

समानांतर – *वि०* ज्यामिति में वे रेखाएँ जिनके बीच की दूरी हमेशा बराबर रहती है और वे कभी नहीं मिलतीं।

समाना – *क्रि०* किसी चीज़ के भीतर आना, अँटना। प्र० 1. बारिश का कुछ पानी धरती में समा जाता है। 2. इतने सारे लोग इस कमरे में कैसे समाएँगे ?

समानार्थक – *वि०* वे शब्द जिनका अर्थ एक ही जैसा हो, पर्यायवाची। प्र० घोड़ा और अश्व समानार्थक शब्द हैं।

समाप्त – *वि०* 1. पूरा किया हुआ, जिसका अंत हो
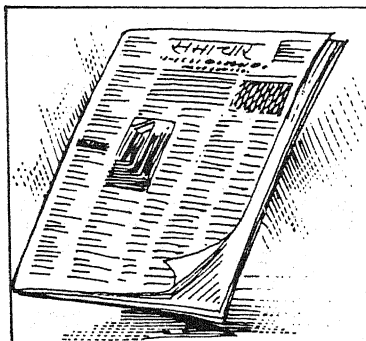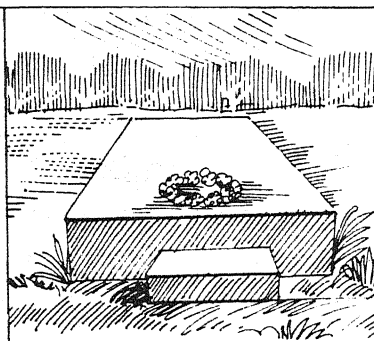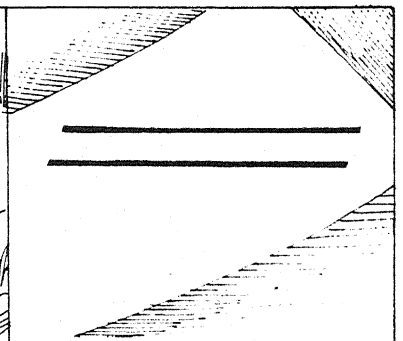
समाचार-पत्र | समाधि | समानांतर
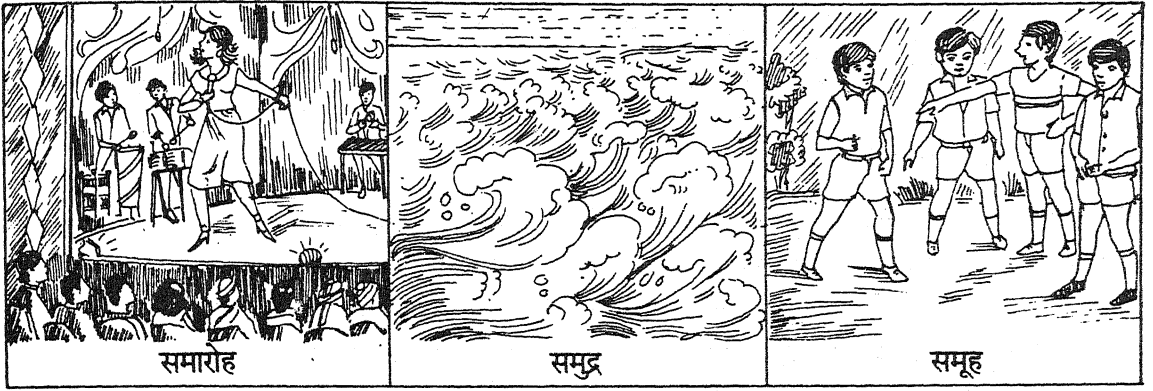
समारोह समुद्र समूह

गया हो, ख़त्म। प्र॰ 1. मेरा काम अभी समाप्त नहीं हुआ। 2. घर का राशन समाप्त हो गया है।

समारोह – पु॰ 1. जलसा, उत्सव। प्र॰ हमारे शहर में आजकल एक संगीत-समारोह चल रहा है। 2. धूमधाम। प्र॰ फ्रांस के प्रधानमंत्री को समारोहपूर्वक विदाई दी गई।

समास – पु॰ दो या अधिक शब्दों के मेल से बना हुआ शब्द; जैसे – डाक + घर = डाकघर, चार + राह = चौराहा।

समिति – स्त्री॰ किसी ख़ास उद्देश्य से बनाया गया लोगों का संगठन, संस्था; जैसे – कुंभ समिति, दहेज-विरोधी समिति।

समीकरण – पु॰ 1. दी हुई राशि से अज्ञात राशि का मूल्य/मान निकालना; जैसे – 4 × अ = 24, तो अ का मूल्य 6 है। 2. दो बराबर की राशियों का दिखाना; जैसे – 12 ÷ 3 = 4।

समीप – वि॰ पास, नज़दीक, निकट। प्र॰ बाज़ार मेरे घर के समीप ही है।

समुच्चय – पु॰ राशि, समूह, ढेर, सेट; जैसे – सम संख्याओं का समुच्चय (2 , 4, 8, 12), विषम संख्याओं का समुच्चय (1, 3, 9, 7)।

समुदाय – पु॰ एक जगह पर इकट्ठा होकर रह रहे लोगों का समूह। प्र॰ इस गली में पारसी समुदाय की एक बस्ती है।

समुद्र – पु॰ वह खारा पानी जिससे पृथ्वी का तीन-चौथाई हिस्सा घिरा हुआ है, सागर।

समूचा – वि॰ सारा, पूरा का पूरा। प्र॰ गांधीजी की हत्या होने पर समूचा देश दुख में डूब गया।

समूह – पु॰ झुंड, दल; जैसे – भेड़ों का समूह, बच्चों का समूह।

समृद्ध – वि॰ अमीर, संपन्न, धनवान्; जैसे – समृद्ध व्यक्ति, समृद्ध समाज।

समृद्धि – स्त्री॰ संपन्नता, ऐश्वर्य। प्र॰ विमल के परिवार में समृद्धि आ जाने पर उसके बच्चे बिगड़ने लगे।

समेटना – क्रि॰ बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना, किसी काम को पूरा या ख़त्म करना; जैसे – बिस्तर समेटना, काम समेटना।

समेत – वि॰ के साथ, सहित। प्र॰ गुरप्रीत सेब को छिलके समेत नहीं खाता।

सम्मान – पु॰ इज़्ज़त, मान, आदर।

सम्मिलित – वि॰ 1. साथ मिला हुआ, युक्त।

प्र० राजधानी एक्सप्रेस गाड़ी में खाने का पैसा टिकट के किराए में ही सम्मिलित होता है। 2. शामिल, उपस्थित। प्र० सबा की शादी में उसकी सभी सहेलियाँ सम्मिलित हुईं।

सम्मिश्रण – पु० 1. एक से अधिक चीज़ों को मिलाना। प्र० सफ़ेदी करने के लिए चूने में नील का सम्मिश्रण किया जाता है। 2. एक से अधिक चीज़ों के मिलने से तैयार वस्तु। प्र० हमारी बोलचाल की भाषा हिंदी और अंग्रेज़ी का अटपटा सम्मिश्रण हो गई है।

सम्मुख – *अ०* चेहरे के सामने, सामने। प्र० सितारा देवी ने दर्शकों के सम्मुख तीन घंटे तक कत्थक किया।

सम्मेलन – पु० किसी ख़ास विषय पर सोच-विचार करने के लिए लोगों का इकट्ठा होना, समागम, कांफ्रेंस; जैसे – किसानों का सम्मेलन।

सम्राज्ञी – *स्त्री०* महारानी, सम्राट् की पत्नी।

सम्राट् – पु० राजाओं के राजा, महाराजा; जैसे – सम्राट् अशोक।

सयाना – 1. पु० बड़ा-बूढ़ा आदमी, अधिक उम्रवाला। प्र० श्याम हर ज़रूरी काम में घर के सयानों की सलाह लेता है। 2. *वि०* (क) समझदार, बुद्धिमान, होशियार; जैसे – सयाना बच्चा। (ख) बालिग़, वयस्क। प्र० अब तुम सयाने हो गए हो, खुद कमाने की सोचो।

सर – पु० सिर। *मु० सर पर पैर रखकर भागना* – घबराकर या डरकर भागना। प्र० फल चुराता हुआ बच्चा माली को देखकर सर पर पैर रखकर भाग गया। *सर कटाना* – शहीद होना। प्र० भारत माँ के कितने ही सपूतों ने देश की आज़ादी की ख़ातिर सर कटा दिए।

सरकना – *क्रि०* 1. ज़मीन या किसी सतह से सटकर किसी तरफ़ धीरे-धीरे बढ़ना, खिसकना। प्र० 1. बच्चा सरक रहा है। 2. मोहन ने सरककर मुझे बैठने की जगह दी। 3. धरती, पहाड़, नदी आदि का अपनी जगह से हटना। प्र० पिछले दो सौ सालों में यमुना नदी सरकते-सरकते लाल क़िले से दूर हो गई है।

सरकार – *स्त्री०* किसी राज्य या देश का राजकाज चलानेवाला संगठन, हुकूमत, शासन।

सरग़ना – पु० किसी गिरोह का मुखिया; जैसे – डाकुओं का सरग़ना।

सरगम – पु० संगीत के सात स्वर (सा रे ग म प ध नि) या इन स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम।

सर सरकना

सरदार सराय सरीसृप
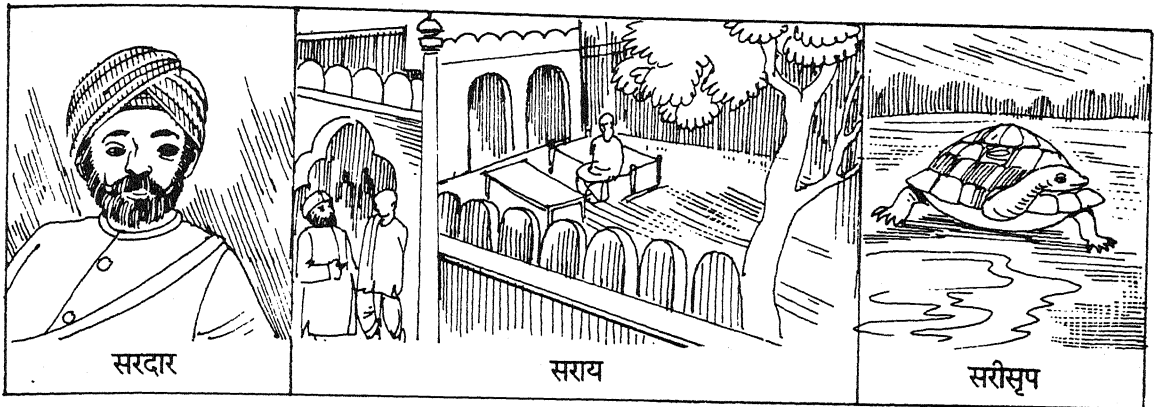
सरदार – *पु॰* 1. किसी क़बीले या गुट का मुखिया, प्रधान, अगुआ; जैसे – ठगों का सरदार, गाड़िए लुहारों का सरदार। 2. सिख जाति का पुरुष।

सरपंच – *पु॰* पंचों का प्रधान, पंचायत का मुखिया। *प्र॰* कुम्हार ने गाँव के सरपंच से अपने पड़ोसी की शिकायत की।

सरपट – *अ॰* तेज़ चाल (दौड़ते वक़्त)। *प्र॰* धोबी का डंडा खाकर गधा सरपट भागने लगा।

सरयू – *स्त्री॰* एक प्रसिद्ध नदी जिसके किनारे अयोध्या नगर बसा हुआ है।

सरल – *वि॰* 1. जो टेढ़ा न हो, सीधा। *प्र॰* इस काग़ज़ पर एक सरल रेखा खींचो। 2. सीधे स्वभाव का, निश्छल। *प्र॰* गायत्री बहुत सरल स्वभाव की है। (*विलोम* – कुटिल)। 3. आसान; जैसे – सरल काम। (*विलोम* – कठिन)।

सरस – *वि॰* 1. जो रस से भरा हो, रसीला। 2. जिसे पढ़ने में मज़ा आए, जो रोचक हो। *प्र॰* एनिड ब्लीटन की किताबें बहुत सरस होती हैं।

सरसों – *स्त्री॰* पीले फूलोंवाला एक पौधा जिसके पत्तों को साग के रूप में खाया जाता है और बीजों से तेल निकाला जाता है। *मु॰ हथेली पर सरसों उगाना* – असंभव काम करने की कोशिश करना। *प्र॰* जगन को गणित सिखाना हथेली पर सरसों उगाने के समान है।

सरस्वती – *स्त्री॰* 1. प्रयाग में त्रिवेणी संगम की तीन नदियों में से एक नदी जो हज़ारों साल पहले ग़ायब हो चुकी थी। 2. विद्या और वाणी की देवी।

सराबोर – *वि॰* भीगा हुआ, तरबतर। *प्र॰* होली पर मुहल्ले के बच्चों ने मिलकर मुझे रंग से सराबोर कर दिया।

सराय – *स्त्री॰* यात्रियों के ठहरने का स्थान, मुसाफ़िरख़ाना, धर्मशाला।

सरासर – *वि॰* बिल्कुल, पूरी तरह, एकदम। *प्र॰* यह ख़बर सरासर ग़लत है।

सराहना – 1. *स्त्री॰* तारीफ़, प्रशंसा, बड़ाई। *प्र॰* राष्ट्रपति ने बहादुर बच्चों की हिम्मत की सराहना की। 2. *क्रि॰* बड़ाई करना, प्रशंसा करना। *प्र॰* विजय अमृतराज ने बच्चे के टेनिस खेलने के ढंग को ख़ूब सराहा।

सराहनीय – *वि॰* सराहना के योग्य, तारीफ़ के लायक़।

सरिता – *स्त्री॰* नदी।

सरीसृप – पु॰ रेंगनेवाले जतु; जैसे – कछुआ,

गिरगिट, साँप, कनखजूरा आदि।

सरोकार – पु० वास्ता, ताल्लुक़, संबंध। प्र० 1. उस जैसे बदमाश से मेरा कोई सरोकार नहीं है। 2. आज हमारा सरोकार नदियों के अंधाधुंध इस्तेमाल से है, उन्हें साफ़ रखने से नहीं।

सरोद – पु० सितार की तरह का एक बाजा।

सरोवर – पु० तालाब; जैसे – सरदार सरोवर।

सरौता – पु० सुपारी काटने का औज़ार।

सर्कस – पु० जानवरों और इंसानों के करतब का प्रदर्शन।

सर्जन – पु० ऑपरेशन करनेवाला डॉक्टर, शल्य-चिकित्सक।

सर्द – *वि०* ठंडा; जैसे – सर्द ज़मीन।

सर्दी – *स्त्री०* ठंड, जाड़ा, शीत। प्र० 1. आज सर्दी है। 2. मुझे सर्दी लग गई है।

सर्प – पु० साँप।

सर्राफ़ – पु० सोने-चाँदी का व्यापारी।

सर्व – *वि०* सब, सारा, समस्त; जैसे – सर्वप्रथम।

सर्वज्ञ – *वि०* सब कुछ जाननेवाला। प्र० भगवान् कृष्ण सर्वज्ञ थे।

सर्वत्र – *अ०* सब जगह। प्र० आश्रम में सर्वत्र शांति थी।

सर्वथा – *अ०* सब तरह से, हर दृष्टि से, बिल्कुल।

सर्वदा – *अ०* हमेशा, सदा।

सर्वनाम – पु० व्याकरण में संज्ञा की जगह इस्तेमाल होनेवाला शब्द; जैसे – हम, उस, आप।

सर्वनाश – पु० बर्बादी, तबाही, विनाश। प्र० अणुबम से हिरोशिमा और नागासाकी शहरों का सर्वनाश हो गया था।

सर्वश्रेष्ठ – *वि०* सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया। प्र० अंजलि को सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार मिला।

सर्वाधिक (सर्व + अधिक) – *वि०* सबसे अधिक। प्र० मैच में सर्वाधिक रन संजय मांजरेकर ने बनाए।

सर्वेसर्वा – *वि०* जिसे किसी मामले में सब कुछ करने का अधिकार हो; जैसे– संस्था का सर्वेसर्वा, कारख़ाने का सर्वेसर्वा।

सर्वोच्च (सर्व + उच्च) – *वि०* सबसे ऊँचा, सबसे बड़ा। प्र० भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार भारत-रत्न है।

सर्वोत्तम (सर्व + उत्तम) – *वि०* सबसे बढ़िया, सबसे उत्तम; जैसे – सर्वोत्तम खिलाड़ी।

सरोद सरौता सर्कस

सलवार सलाख़ सलाम सलीब
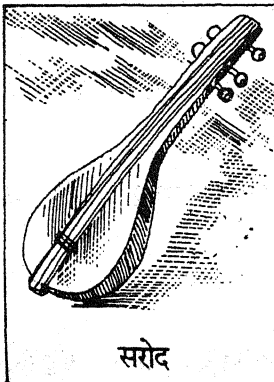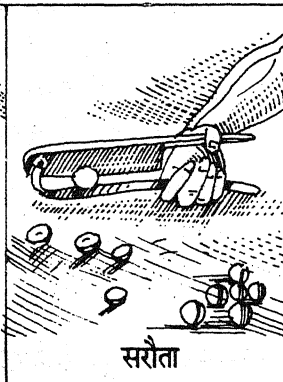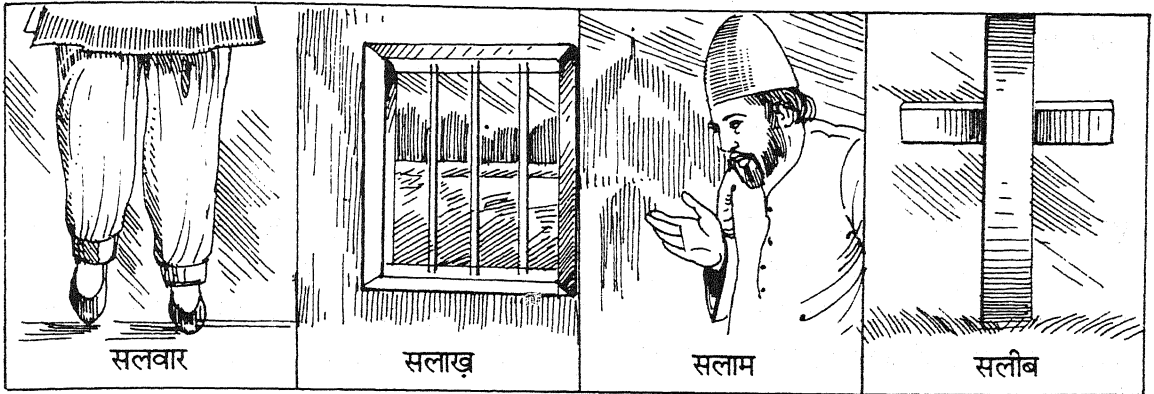
सलवार – *स्त्री॰* नीचे से तंग मोहरीवाला ढीले पायजामे जैसा पहनावा, जिसे कमीज़ के साथ पहना जाता है।

सलाई – *स्त्री॰* धातु, प्लास्टिक, लकड़ी आदि से बनी पतली लंबी तीली; जैसे – काजल लगाने की सलाई, स्वेटर बुनने की सलाई, दियासलाई।

सलाख़ – *स्त्री॰* लोहे आदि धातु की बनी लंबी छड़, सलाई।

सलाद – *पु॰* कटी हुई सब्ज़ियों या फलों का कच्चा या अधपका मिश्रण।

सलाम – *पु॰* नमस्ते करने का मुस्लिम तरीक़ा, जो ग़ैर-मुस्लिम लोगों में भी अब काफ़ी चलता है, आदाब।

सलामी – *स्त्री॰* सलाम करने की एक रस्म जिसमें हथियार उठाकर या तोप, बंदूक दागकर किसी बड़े देशी-विदेशी नेता को सलाम किया जाता है। *प्र॰* 26 जनवरी पर राष्ट्रपति को 21 तोपों की सलामी दी जाती है।

सलाह – *स्त्री॰* किसी बात या मामले में किसी दूसरे आदमी के सोचने का ढंग, राय, परामर्श, मत। *प्र॰* अम्माँ की बीमारी में बाबूजी ने कई डॉक्टरों से सलाह ली।

सलाहकार – *पु॰* सलाह देनेवाला, परामर्शदाता। *प्र॰* नीना हमारे कॉलेज की क़ानूनी सलाहकार है।

सलीक़ा – *पु॰* 1. किसी काम को अच्छी तरह और सफ़ाई से करने का ढंग, तरीक़ा। *प्र॰* शाहिदा अपना काम हमेशा सलीक़े से करती है। 2. तमीज़, शऊर, शिष्टता। *प्र॰* वेंकट को बड़े-बूढ़ों से बात करने का सलीक़ा आता है।

सलीब – *स्त्री॰* लकड़ी की सूली जिस पर पुराने ज़माने में लोगों को मौत की सज़ा दी जाती थी, क्रॉस।

सलोना – *वि॰* सुंदर, कोमलताभरा, लावण्य से भरा हुआ। *प्र॰* बच्चे के सलोने चेहरे ने सबका मन मोह लिया।

सल्तनत – *स्त्री॰* शासन, साम्राज्य, हुकूमत; जैसे – मुग़ल सल्तनत।

सवारी – *स्त्री॰* 1. कहीं आने-जाने के लिए जिस पर चढ़ा जाए; जैसे – हाथी की सवारी, रिक्शा की सवारी आदि। 2. सफ़र करनेवाला, यात्री। *प्र॰* सब सवारियाँ बस में बैठ गई हैं। 3. जुलूस या शोभा-यात्रा की झाँकियाँ। *प्र॰* रामलीला की सवारियाँ कब निकलेंगी?

सह – *अ॰* साथ, सहित; जैसे – सहगान, सहपाठी।

सहकारिता – *स्त्री॰* साथ मिलकर या साझे तौर पर काम करने का तरीक़ा। *प्र॰* बुनकरों को सहकारिता से कपड़े बुनने और बेचने में ज़्यादा फायदा होता है।

सहज – *वि॰* 1. जिसमें दिखावा या बनावटीपन न हो, सीधा; जैसे – सहज स्वभाव। 2. जिसके पीछे कुछ बुरा या अनुचित न हो, स्वाभाविक, प्राकृतिक। *प्र॰* 1. बच्चा सहज ही बोल पड़ा कि उसके पिता घर में ही हैं। 2. इतना नुक़सान हो जाने पर उसका दुखी होना सहज ही है। 3. जिसे मन में कोई घबराहट न हो, निश्चिंत। *प्र॰* वह जब भी मंच पर नाटक करने जाता है, सहज होने में उसे काफ़ी देर लगती है। 4. आसानी से, सरलता से। *प्र॰* भगवान् राम ने जनक के भारी धनुष को सहज ही उठा लिया।

सहन – *पु॰* 1. आँगन। *प्र॰* सहन में गेहूँ धोकर सुखाया हुआ था। 2. बरदाश्त। *प्र॰* अपनी माँ पर अत्याचार उमा से सहन नहीं हुआ।

सहनशील – *वि॰* जो सब कुछ सहन कर सके, धैर्यवान्, बरदाश्त करनेवाला। *प्र॰* मोहन बहुत सहनशील लड़का है।

सहपाठी – *पु॰* स्कूल, कॉलेज आदि में साथ पढ़नेवाला। *प्र॰* तेजवीर मेरा सहपाठी रहा है।

सहमत – *वि॰* 1. एक-जैसी राय रखनेवाले, एकमत। *प्र॰* मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ। 2. राज़ी। *प्र॰* गणेश मेरा काम करने के लिए सहमत हो गया है।

सहमति – *स्त्री॰* 1. एक-जैसे ढंग से सोचना। *प्र॰* रामजन्मभूमि-बाबरी मस्ज़िद के मामले पर हिंदुओं और मुस्लिमों में सहमति नहीं है। 2. किसी बात के लिए मान जाना, स्वीकृति। *प्र॰* शंमा ने एक बाल फिल्म तैयार करने के लिए अपनी सहमति दे दी है।

सहमना – *क्रि॰* डर जाना, भयभीत होना। *प्र॰* डाकुओं के आ जाने से गाँववाले सहम गए।

सहयोग – *पु॰* 1. किसी का साथ देना, मदद, सहायता। *प्र॰* घर ढूँढ़ने में विमला ने मुझे बहुत सहयोग दिया। 2. साथ मिलकर काम करना। *प्र॰* यह फ़िल्म यूनिसेफ़ के सहयोग से बनाई गई है।

सहयोगी – *पु॰* सहयोग करनेवाला, मददगार, साथ काम करनेवाला। *प्र॰* कमल को उसके दफ़्तर के सहयोगियों ने एक तोहफ़ा दिया।

सहलाना – *क्रि॰* धीरे-धीरे हाथ फेरना। *प्र॰* बच्चे ने अपने ख़रगोश को प्यार से सहलाया।

सहनशील | सहमना | सहलाना
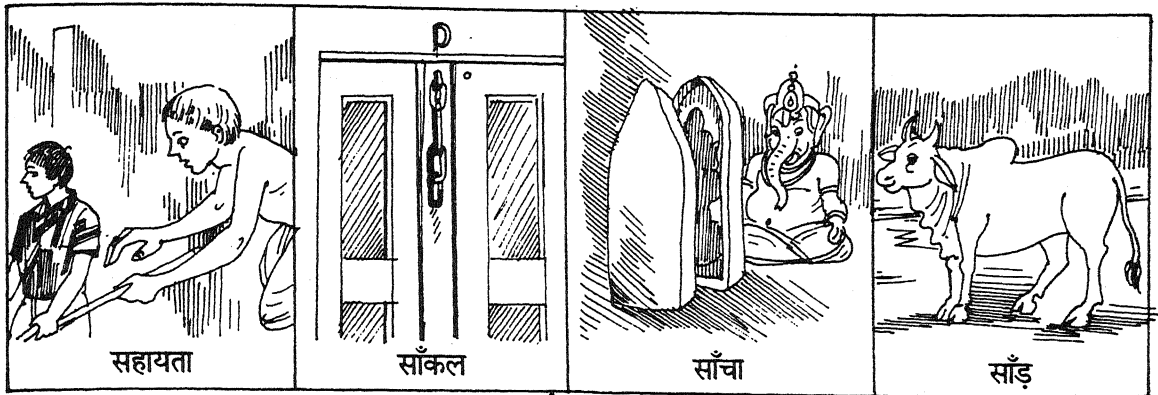
सहसा – *अ०* अचानक, एकाएक। *प्र०* सहसा ज़ोरों से बादल गरजने लगे।

सहस्र – पु० हज़ार। *प्र०* 'विष्णु सहस्रनाम' में भगवान् विष्णु के एक सहस्र नाम दिए गए हैं।

सहानुभूति – *स्त्री०* किसी के दुख में दुखी होना या दुख प्रकट करना। *प्र०* सरकार को हड़ताल कर रहे लोगों के साथ कोई सहानुभूति नहीं है।

सहायक – *वि०* 1. सहायता करनेवाला, मददगार। 2. किसी के अधीन रहकर किसी काम में सहायता करना; जैसे – सहायक चुनाव अधिकारी, सहायक निदेशक।

सहायता – *स्त्री०* मदद।

सहारा – *पु०* 1. ज़रूरत या मुसीबत पड़ने पर किसी से मिलनेवाली मदद, भरोसा, आश्रय। *प्र०* उस अंधे और बूढ़े आदमी को गाँववालों का बहुत सहारा है। 2. किसी चीज़ से सटकर या उस पर अपना वज़न डालते हुए, टेक। *प्र०* वह लड़की दीवार के सहारे खड़ी है।

सहित – *अ०* के साथ, समेत। *प्र०* पौधे को जड़ सहित मत उखाड़ो।

सही – *स्त्री०* 1. जो ग़लत न हो, ठीक। *प्र०* यह सवाल सही नहीं है। 2. जो झूठ न हो, सच। *प्र०* यह ख़बर सही नहीं है।

सहेजना – *क्रि०* सँभालना, ठीक से रखना। *प्र०* माँ ने अपनी शादी की बधाइयाँ अभी तक सहेजकर रखी हुई हैं।

सहोदर – *वि०* सगा, एक ही माँ से पैदा हुआ। *प्र०* अमृत मेरा सहोदर भाई है और अरविंद मेरा सौतेला भाई है।

सह्य – *वि०* जो सहा जा सके, बरदाश्त या सहन करने योग्य; जैसे – सह्य दर्द, सह्य दुख। (*विलोम* – असह्य)।

साँकल – *स्त्री०* ज़ंजीर, सिकड़ी; जैसे – दरवाज़े की साँकल, पशुओं के गले की साँकल।

सांख्यिकी – *स्त्री०* गणित की एक शाखा जिसमें संख्याओं या आँकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं, स्टैटिसटिक्स।

साँचा – *पु०* वह ढाँचा जिसमें मोम, धातु आदि को गीले, गाढ़े रूप में डालने पर ढाँचे की शक्ल की चीज़ तैयार हो जाती है; जैसे – साँचे में ढली हुई मूर्ति, साँचे में ढली हुई अटैची।

साँझ – *स्त्री०* शाम, संध्या, सायंकाल।

साँड़ – *पु०* नर गाय। *मु० साँड़ की तरह डकराना* –

ज़ोर से चिल्लाना। प्र० साँड़ की तरह क्यों डकरा रहे हो, शांति से बात करो।

सांत्वना – *स्त्री०* दुखी व्यक्ति को दिलासा, ढाढ़स, तसल्ली। प्र० आग में सब कुछ जल जाने पर पवन को उसके पड़ोसियों ने सांत्वना दी।

साँप – पु० रेंगनेवाला एक ज़हरीला जंतु, सर्प। *मु० साँप को दूध पिलाना* – दुश्मन को आसरा और बढ़ावा देना। प्र० तुम मोहन जैसे आदमी की मदद करके साँप को दूध पिलाने का काम कर रहे हो। *साँप सूँघ जाना* – बहुत ज़यादा डर या सहम जाना। प्र० मास्टरजी को बग़ल में खड़ा देखकर नक़ल करते बच्चे को साँप सूँघ गया।

सांप्रदायिक – *वि०* समाज के विभिन्न संप्रदायों या धर्मों के बीच भेदभाव करना; जैसे – सांप्रदायिक दंगा, सांप्रदायिक सोच।

सांप्रदायिकता – *स्त्री०* अपने संप्रदाय या धार्मिक गुट को ही अच्छा मानते हुए दूसरे संप्रदाय की इज़्ज़त न करना। प्र० लोगों के मन में सांप्रदायिकता की भावना पैदा करके नेताओं ने पंजाब को बर्बाद कर दिया है।

साँवला – *वि०* जिसके शरीर का रंग कालेपन के नज़दीक हो; जैसे – साँवले कृष्ण।

साँस – *स्त्री०* नाक या मुँह से हवा को अंदर खींचकर फेफड़े तक पहुँचाने और फिर उसे बाहर निकालने की क्रिया। *मु० साँस फूलना* – हाँफना, साँस चढ़ना। प्र० इतनी सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते सुखराम की साँस फूल गई। *साँस छूटना* – मर जाना। प्र० उस बीमार आदमी की साँस रात में छूटी।

सांस्कृतिक – *वि०* 1. संस्कृति से संबंधित। प्र० हमें अपने सांस्कृतिक इतिहास पर गर्व है। 2. गाना, नाच, नाटक आदि जैसे मनोरंजनों से संबंधित। प्र० दीपावली पर हमारे मुहल्ले के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम किया।

सा – *अ०* के बराबर, जैसा, समान; जैसे – मोटा-सा बच्चा, शेर-सा बहादुर, अच्छा-सा नाम।

साइनबोर्ड – पु० सड़क के किनारे, स्टेशन आदि पर लगा बोर्ड जो आसपास की जगहों की जानकारी देता है; जैसे – होटल का साइनबोर्ड, स्टेशन के नाम का साइनबोर्ड।

साईस – पु० जिसका काम घोड़े की देख-भाल करना हो।

साकार – *वि०* जिसका कोई आकार, रूप या ठोस शक्ल हो। प्र० बहुत-से-लोग साकार भगवान् में विश्वास नहीं रखते। 2. विमल का फ़िल्मों में काम

साँप साँस साइनबोर्ड साइस
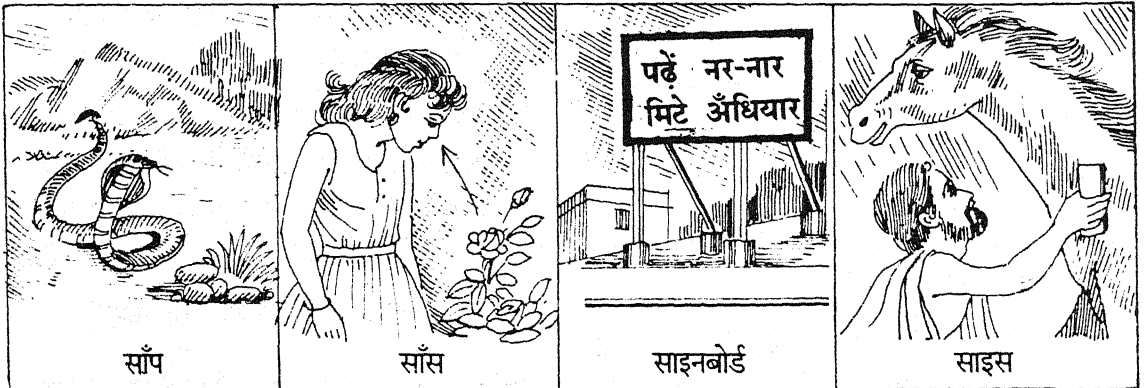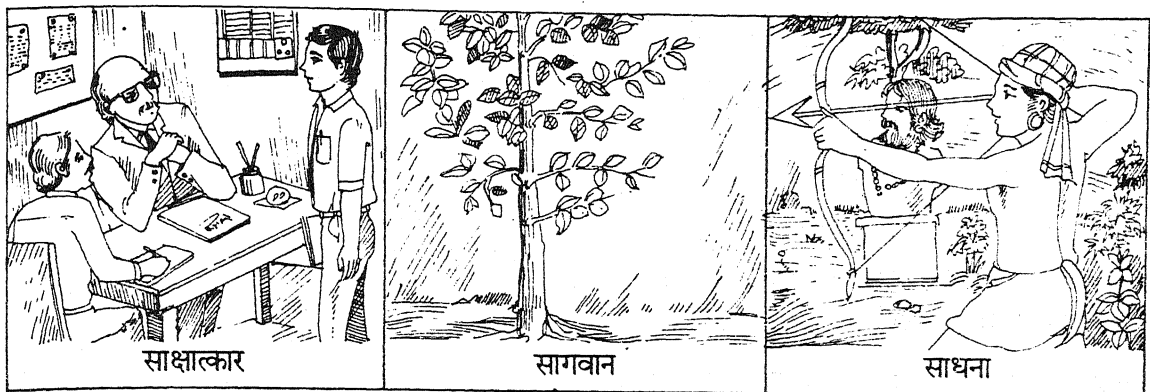
साक्षात्कार | सागवान | साधना

करने का सपना साकार हो गया।

साक्षात् – *अ०* आँखों के सामने, हूबहू, प्रत्यक्ष। *प्र०* मोहन मास्टरजी के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक उसने मास्टरजी को साक्षात् खड़े देखा।

साक्षात्कार – *पु०* मुलाक़ात, भेंट, इंटरव्यू। *प्र०* कॉलेज में दाख़िले के लिए आज मेरा साक्षात्कार है।

साक्षी – *वि०* जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो, गवाह। *प्र०* मैं इस बात की साक्षी हूँ कि विनय ने यह चोरी नहीं की है।

सागर – *पु०* दे० समुद्र।

सागवान – *पु०* चौड़े पत्तोंवाला एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज़-कुर्सी, दरवाज़े आदि बनाने के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है, टीक, सागौन।

साज़िश – *स्त्री०* किसी, को नुक़सान पहुँचाने के लिए एक से ज़्यादा लोगों का चोरी-छिपे मिलकर योजना बनाना। *प्र०* पुलिस ने गाड़ी लूटने की साज़िश करनेवाले लोगों को गिरफ़्तार कर लिया।

साझा – *पु०* जिसमें एक से अधिक लोगों का हिस्सा हो, भागीदारी, हिस्सेदारी; जैसे – साझा व्यापार, साझा मकान।

साथी – *पु०* साथ रहनेवाला, संगी, दोस्त, मित्र।

सादगी – *स्त्री०* जिसमें दिखावा या तड़क-भड़क न हो, सादापन। *प्र०* गीता की सादगी सबका मन मोह लेती है।

सादर – *अ०* आदर के साथ; जैसे – सादर प्रणाम, सादर भेंट।

सादा – *वि०* 1. जिसमें सजावट, तड़क-भड़क या बनावटीपन न हो, सादगी-भरा; जैसे – सादा जीवन, सादा खाना, सादा स्वभाव। 2. जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा; जैसे – सादा काग़ज़।

साध – *स्त्री०* ज़बरदस्त इच्छा, कामना। *प्र०* मेरी माँ की बहुत साध है कि मैं इंजीनियर बनूँ।

साधन – *पु०* वह चीज़ या तरक़ीब जिससे कोई काम बने या पूरा हो। *प्र०* 1. सुषमा के गाँव पहुँचने के लिए बैलगाड़ी ही इकलौता साधन है। 2. श्याम को सबक़ सिखाने के लिए धमकियों के अलावा और कोई साधन नहीं है।

साधना – 1. *स्त्री०* किसी काम को पूरा करने के लिए त्याग, मेहनत और लगन से जुटे रहना, तपस्या। *प्र०* एकलव्य ने अपनी साधना के बल पर ही धनुष-विद्या में महारथ हासिल की।

2. *क्रि०* (क) किसी काम या विद्या में माहिर। *प्र०* बढ़िया गाना गाने के लिए सुरों को साधना ज़रूरी है। (ख) निशाना लगाना। *प्र०* अर्जुन ने चिड़िया की आँख को देखकर निशाना साधा।

साधारण – *वि०* जिसमें कोई ख़ास बात न हो, आम, मामूली, सामान्य; जैसे – साधारण आदमी, साधारण बात। (विलोम – असाधारण)।

साधारणतया – *अ०* आमतौर पर, सामान्यतः, प्रायः, साधारणतः। *प्र०* बच्चों का बड़ों से बहस करना साधारणतया अच्छा नहीं समझा जाता।

साधु – *पु०* संत, महात्मा, मुनि।

सानंद (स + आनंद) – *अ०* आनंद के साथ, प्रसन्नतापूर्वक।

सानना – *क्रि०* किसी सूखी, चूरा चीज़ को पानी या और कोई तरल चीज़ मिलाकर गूँधना, माँड़ना; जैसे – सत्तू सानना, आटा सानना।

सानी – 1. *स्त्री०* पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जानेवाला चारा। 2. *वि०* बराबरी करनेवाला, जोड़ का।

साप्ताहिक – *वि०* हर हफ़्ते होनेवाला; जैसे – साप्ताहिक अख़बार, साप्ताहिक बैठक।

साफ़ – *वि०* 1. जो गंदा या मैला न हो, स्वच्छ; जैसे – साफ़ पानी। 2. जिसके बारे में किसी प्रकार का शक़ या भ्रम न रह जाए, ज़ाहिर, स्पष्ट। *प्र०* गणेश की बातों से यह साफ़ है कि वह पैसा नहीं लौटाएगा। 3. जिसमें छल-कपट न हो; जैसे – साफ़ दिल का आदमी। *मु० हाथ साफ़ करना* – चोरी से कोई चीज़ उठा लेना। *प्र०* मौक़ा मिलते ही वह मिठाई पर हाथ साफ़ कर गया। *हिसाब साफ़ करना* – पैसे का लेन-देन निपटाना। *प्र०* फ़सल के बिकते ही किसान साहूकारों से हिसाब साफ़ कर लेते हैं।

साफ़ा – *पु०* सिर पर बाँधने का पगड़ी की तरह का एक लंबा कपड़ा।

साबित – *वि०* जिसका सबूत मिल चुका हो, प्रमाणित, सिद्ध। *प्र०* गैलीलियो ने साबित किया था कि पृथ्वी गोल है।

साबुत – *वि०* जो टुकड़ों में न हो, पूरा, समूचा। *प्र०* बच्चों की क्रिकेट की गेंद से मुहल्ले का एक भी शीशा साबुत नहीं बचा।

साबूदाना – *पु०* सागू नाम के पेड़ के तने से निकले दूध से बने हुए सफ़ेद रंग के छोटे दाने जो खाने के काम आते हैं।

साधु | सानना | साफ़ा
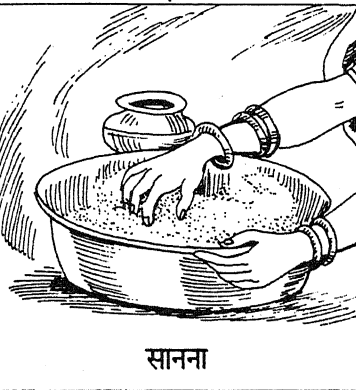
सामंजस्य – *पु॰* किसी चीज़ के विभिन्न हिस्सों का एक-दूसरे से सही तालमेल। *प्र॰* 1. खेल और पढ़ाई के उचित सामंजस्य से ही बच्चों का सही विकास हो सकता है। 2. उस परिवार के लोगों में सही सामंजस्य न होने के कारण अक्सर उन लोगों में झगड़े होते रहते हैं।

सामंत – *पु॰* बड़े ज़मींदार या सरदार जिनके हाथ में गाँव की अधिकांश ज़मीन और शक्ति होती है।

सामग्री – *स्त्री॰* सामान, चीज़ें, वस्तुएँ; जैसे – पूजा की सामग्री, खाने की सामग्री।

सामना – *पु॰* 1. मुक़ाबला, मुठभेड़, भिड़ंत; जैसे – दुश्मन का सामना करना। 2. किसी के सामने जाकर मिलना। *प्र॰* नसीम से बिना वजह लड़ने के बाद रशीद की हिम्मत नहीं हुई कि उसका सामना कर सके।

सामर्थ्य – *पु॰* कुछ कर सकने की शक्ति, योग्यता। *प्र॰* अमर में इतना सामर्थ्य नहीं है कि वह चार-चार बच्चों को पढ़ा सके।

सामाजिक – *वि॰* समाज से संबंधित; जैसे – सामाजिक समस्या, सामाजिक काम, सामाजिक प्रथा।

सामान्य – *वि॰* 1. मामूली, साधारण; जैसे – सामान्य आदमी, सामान्य बात। 2. किसी क़िस्म की गड़बड़ के बाद की स्वाभाविक स्थिति, ठीक हालत। *प्र॰* 1. उस हादसे के बाद वह अभी तक सामान्य नहीं हो पाया है। 2. कर्फ़्यू लग जाने के बाद से शहर में स्थिति सामान्य है।

सामान्यतया – *अ॰* दे॰ साधारणतया।

सामूहिक – *वि॰* समूह से संबंध रखनेवाला, समूह द्वारा किया जानेवाला। *प्र॰* सरकार के बारह मंत्रियों ने सामूहिक रूप से इस्तीफ़ा दे दिया।

सामवेद – *पु॰* चार वेदों में से तीसरा वेद जिसमें यज्ञ के समय गाए जानेवाले मंत्र दिए गए हैं।

साम्य – *पु॰* एक से ज़्यादा लोगों या चीज़ों के बीच मिलती-जुलती बातें, समानता। *प्र॰* इन दोनों चित्रों में बहुत साम्य है।

साम्राज्य – *पु॰* 1. वह बड़ा राज्य जिसके अधीन कई प्रदेश हों और जहाँ किसी सम्राट् का शासन हो। *प्र॰* अशोक का साम्राज्य पेशावर से बंगाल तक फैला हुआ था। 2. हुकूमत, राज, शासन, आधिपत्य; जैसे – ब्रिटिश साम्राज्य, मुग़ल साम्राज्य।

सायंकाल – *पु॰* शाम का वक़्त, संध्या। *प्र॰* नए पुल का उद्‌घाटन सायंकाल पाँच बजे है।

साया – पु० 1. परछाई, छाया; जैसे – पेड़ का साया। 2. औरतों का साड़ी के नीचे पहनने का एक वस्त्र, पेटीकोट।

सारंगी – स्त्री० तारों का एक बाजा जिसे कमान से बजाया जाता है।

सार – पु० किसी चीज़ की मुख्य बातें, हिस्से या अंश, थोड़े शब्दों में कही गई पूरी बात, संक्षेप। प्र० इस कहानी का सार अपने शब्दों में लिखो।

सारणी – स्त्री० सूची, तालिका। प्र० रेलवे की समय-सारणी में रेलगाड़ियों के आने-जाने के समय और स्टेशनों के बारे में बताया गया होता है।

सारथि, सारथी – पु० रथ चलानेवाला। प्र० अर्जुन के सारथि भगवान् कृष्ण ने उन्हें गीता का उपदेश दिया।

सारस – पु० लंबे पैरों और लंबी चोंचवाला हंस की तरह का एक पक्षी।

सारांश – पु० सार, मुख्य बात, संक्षेप। प्र० पूरी घटना का सारांश यह है कि चोरी कमल ने ही की।

सारिका – स्त्री० मैना पक्षी।

सार्थक – वि० 1. जिसका कुछ अर्थ हो; जैसे – सार्थक वाक्य, सार्थक शब्द। 2. जिससे कोई उद्देश्य पूरा हो या कोई फल निकले। प्र० फ़ैज़ को कोई नौकरी मिल जाने से उसके पिता की दौड़-धूप सार्थक हो गई।

सार्वजनिक – वि० 1. जो सबके लिए हो; जैसे – सार्वजनिक कुआँ, सार्वजनिक शौचालय। 2. सब लोगों से संबंधित; जैसे – सार्वजनिक समस्या, सार्वजनिक सभा। 3. जो सब लोगों के सामने हो। प्र० अख़बार ने ग़लत समाचार छापने के लिए सार्वजनिक माफ़ी माँगी।

सालाना – वि० हर साल होनेवाला, वार्षिक; जैसे – सालाना आमदनी, सालाना जलसा।

सावधान – वि० किसी चीज़ या घटना को झेलने के लिए पहले से तैयार, चौकन्ना, सचेत, सतर्क। प्र० बाढ़ का अँदेशा देखकर रेडियो द्वारा लोगों को पहले से ही सावधान कर दिया गया।

सावधानी – वि० ध्यान से, होशियारी, सतर्कता। प्र० सावधानी से स्कूटर चलाया करो।

सावन – पु० भारतीय पंचांग के हिसाब से पाँचवाँ महीना जो आषाढ़ के बाद और भादों के पहले पड़ता है, श्रावण।

साहस – पु० हिम्मत, हौसला, निडरता।
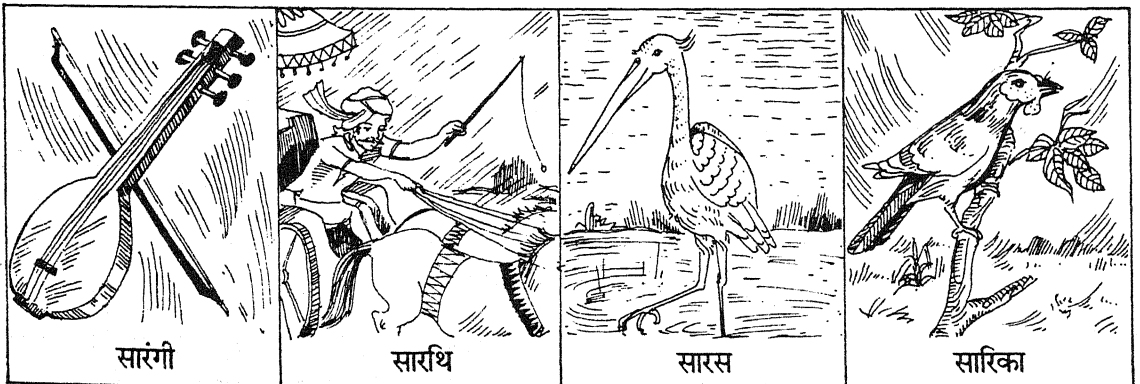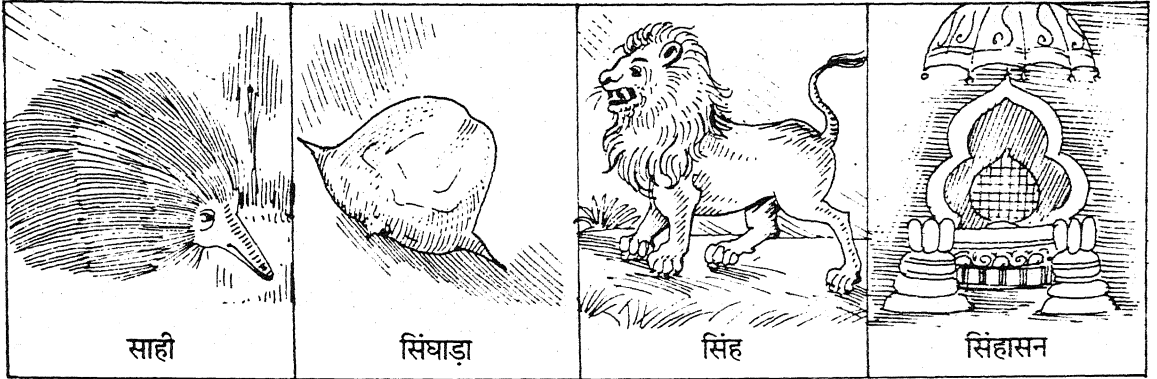
साहसिक – *वि॰* साहस का, हिम्मत का। *प्र॰* उस बच्चे को अपने साहसिक कार्यों के लिए राष्ट्रपति से पुरस्कार मिला।

साहित्य – *पु॰* ज़िंदगी के विभिन्न रंगों और पक्षों को कविता, कहानी, नाटक आदि के रूप में उभारना।

साहित्यिक – *वि॰* साहित्य का, साहित्य से संबंधित; जैसे – साहित्यिक सभा, साहित्यिक रुचि।

साही – *स्त्री॰* एक छोटा जानवर जिसके सारे शरीर पर लंबे-लंबे काँटे होते हैं।

साहूकार – *पु॰* पैसे उधार देने का काम करनेवाला, महाजन।

सिंगारदान – *पु॰* सजने-सँवरने का सामान रखने का डिब्बा, शृंगारदान।

सिंघाड़ा – *पु॰* पानी में होनेवाला तिकोना फल जिसके ऊपर मोटा काँटेदार छिलका होता है।

सिँचाई – *स्त्री॰* पेड़-पौधे या खेत में पानी डालने का काम, सींचना।

सिंदूर – *पु॰* नारंगी या लाल रंग का एक चूरा जिसे शादीशुदा औरतें अपनी माँग में भरती हैं, ईंगुर।

सिंधु – *पु॰* 1. जम्मू-कश्मीर में बहनेवाली एक नदी। 2. सिंधु नदी के किनारे की सभ्यता जो दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है।

सिंह – *पु॰* 1. शेर। 2. बारह राशियों में से एक राशि।

सिंहनाद – *पु॰* शेर के गरजने या दहाड़ने की आवाज़।

सिंहनी – *स्त्री॰* शेरनी, सिंही।

सिंहासन – *पु॰* राजा, देवता के बैठने का आसन जहाँ बैठकर वह राज-काज चलाता है, राजगद्दी।

सिकड़ी – *स्त्री॰* ज़ंजीर, साँकल।

सिकुड़ना – *क्रि॰* 1. किसी चीज़ का सिमटकर आकार में छोटा हो जाना। *प्र॰* धोने पर यह कपड़ा सिकुड़ जाएगा। 2. सिलवट या शिकन पड़ना, मुड़ जाना। *प्र॰* सिकुड़े हुए कपड़े पहनकर स्कूल मत जाओ।

सिकोड़ना – *क्रि॰* समेटना, मोड़ना, कम जगह घेरना। *प्र॰* भिखारी पैर सिकोड़कर गाड़ी के कोने में बैठा हुआ था।

सिकोरा – *पु॰* मिट्टी का कटोरा, कुल्हड़, कसोरा। *प्र॰* स्टेशन पर सिकोरों में गरम-गरम चाय मिल रही थी।

सिक्ख, सिख – *पु॰* 1. गुरु नानक द्वारा चलाया गया

एक पंथ जो अब एक अलग धर्म और जाति बन गया है। 2. इस धर्म को माननेवाला।

सिग्नल – *पु॰* रेल की पटरी के किनारे लगा हुआ एक यंत्र जो गाड़ी चलानेवाले को रुकने या आगे बढ़ने का इशारा देता है।

सिटकनी, सिटकिनी – *स्त्री॰* दरवाज़े या खिड़की को बंद करने के लिए उसमें लगी हुई धातु की छोटी, पतली छड़।

सिटपिटाना – *क्रि॰* घबराने, सहमने और झेंपने का मिला-जुला भाव। *प्र॰* मालिक को आते देखकर कुर्सी पर पैर फैलाकर बैठी नौकरानी सिटपिटा गई।

सितार – *पु॰* सात तारोंवाला एक बाजा।

सितारा – *पु॰* तारा, नक्षत्र।

सिद्ध – 1. *वि॰* (क) सबूत, प्रमाण और तर्क द्वारा जिसकी सचाई साबित हो चुकी हो, प्रमाणित। *प्र॰* यह सिद्ध हो गया है कि अपराधी किशोर ही है। (ख) किसी काम का पूरा या सफल होना, संपन्न। *प्र॰* कार्य सिद्ध हो जाने पर सेठजी ने मंदिर में मूर्ति लगवाने का निश्चय किया। 2. *पु॰* ज्ञानी, ऋषि, योगी; जैसे – सिद्ध पुरुष।

सिद्धांत – *पु॰* 1. ज़िंदगी, समाज और आचार-व्यवहार से संबंधित मान्यता, उसूल, विश्वास। *प्र॰* आज के ज़माने में बाबा आमटे जैसे सिद्धांतों पर चलनेवाले मुश्किल से मिलते हैं। 2. किसी ख़ास क्षेत्र में विद्वानों द्वारा सोच-समझकर और जाँच-परखकर तय किए गए नियम; जैसे – डार्विन का मनुष्य के विकास से संबंधित सिद्धांत, गणित के सिद्धांत।

सिधारना – *क्रि॰* जाना, प्रस्थान करना, मर जाना; जैसे – स्वर्ग सिधारना।

सिनकना – *क्रि॰* बहती नाक को ज़ोर से साँस छोड़कर बाहर निकालना।

सिनेमा – *पु॰* सिनेमाघरों या टेलीविज़न में दिखाई जानेवाली फ़िल्म, चलचित्र, छायाचित्र।

सिफ़र – 1. *पु॰* ज़ीरो, शून्य। *प्र॰* 4 के आगे शून्य लिख देने पर 40 हो जाता है। 2. *वि॰* बेकार, अयोग्य। *प्र॰* महेश पढ़ने-लिखने में एकदम सिफ़र है।

सिफ़ारिश – *स्त्री॰* 1. किसी की तरफ़दारी करना या पक्ष लेना। *प्र॰* मुहल्लेवालों की सिफ़ारिश पर युगल की सज़ा कम कर दी गई। 2. किसी के फ़ायदे के लिए उसकी प्रशंसा करना। *प्र॰* उसे यह नौकरी मंत्री की सिफ़ारिश से मिली है।
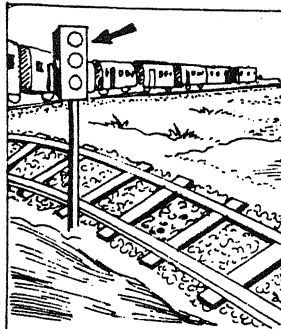
सिग्नल | सिटकनी | सितार | सिनकना

सियार सिरहाना सिल सिल्ली
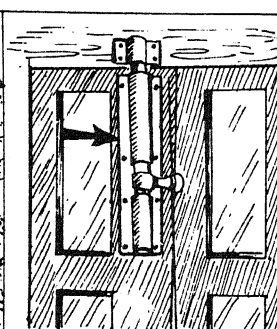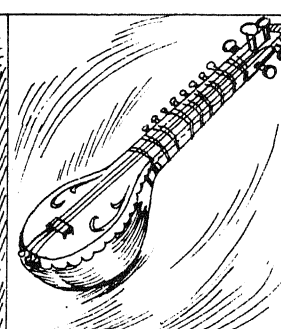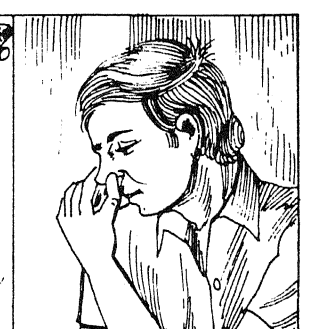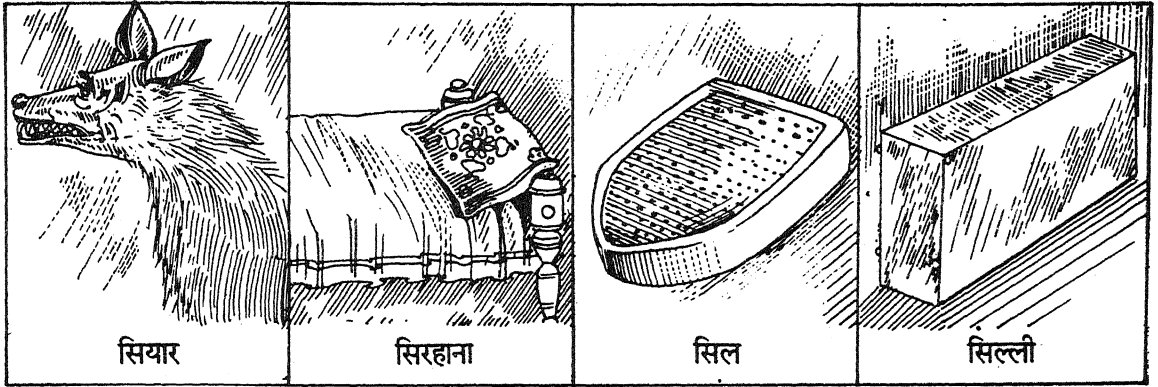
सिमटना – *क्रि०* सिकुड़ना थोड़ी-सी जगह में फैला होना, फैलाव कम होना। *प्र०* तेज़ गर्मी पड़ने पर नदी का पाट सिमट जाता है।

सियार – पु० गीदड़, शृगाल।

सियासत – *स्त्री०* राजनीति।

सिर – *पु०* चेहरे के ऊपर और पीछे का भाग, खोपड़ी, कपाल। *मु० सिर-आँखों पर बैठाना*– बहुत इज़्ज़त और ख़ातिरदारी करना। *प्र०* रशीद जैसे नेक आदमी को सभी लोग सिर-आँखों पर बैठाते हैं। *सिर पर भूत सवार होना*– किसी बात की धुन या चस्का होना। *प्र०* मनकू के सिर पर आजकल गिल्ली-डंडे का भूत सवार है।

सिरका – *पु०* गन्ना, अंगूर, जामुन आदि का रस जिसे धूप में पकाकर खट्टा किया जाता है।

सिरहाना – *पु०* 1. चारपाई का वह हिस्सा जिधर सिर करके सोया जाता है। *प्र०* मरीज़ की दवा उसके सिरहाने रखी है। 2. तकिया।

सिरा – *पु०* किसी चीज़ का किनारे का हिस्सा, छोर। *प्र०* 1. रस्सी के दोनों सिरों पर गाँठ बाँध दो। 2. गली के सिरे पर पानवाले की दूकान है।

सिल – *स्त्री०* 1. चट्टान, पत्थर। 2. मसाला आदि पीसने के लिए पत्थर का चौड़ा, चपटा टुकड़ा।

सिलवट – *स्त्री०* कपड़े के मुड़ने से उस पर पड़े हुए निशान, शिकन, सिकुड़न। *प्र०* प्रेस करने से कपड़े की सिलवटें दूर हो जाएँगी।

सिलसिला – *पु०* 1. एक के बाद एक चलता रहनेवाला क्रम, ताँता, कड़ी; जैसे – आने-जानेवालों का सिलसिला, बातों का सिलसिला। 2. संबंध। *प्र०* मनोज अपने काम के सिलसिले में लखनऊ गया है।

सिलाई – *स्त्री०* 1. सीने या सिलने का काम। *प्र०* शमीम ने मोची से जूते की सिलाई करवाई। 2. सीने या सिलने की मज़दूरी। *प्र०* इस कमीज़ की सिलाई तीस रुपए है।

सिल्क – *पु०* रेशम; जैसे – सिल्क का कपड़ा।

सिल्ली – *स्त्री०* मोटा, चौकोर टुकड़ा; जैसे – बर्फ़ की सिल्ली, चाँदी की सिल्ली।

सिवाय – *क्रि० वि०* अलावा, छोड़कर, अतिरिक्त। *प्र०* इस काम को तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं कर सकता।

सिसकना – *क्रि०* दबी आवाज़ से रोना, खुलकर न रोना।

सिसकी – *स्त्री०* सिसकने की आवाज़।

सिहरना – *क्रि०* ठंड या डर से बदन के रोएँ खड़े हो जाना, काँपना, दहल जाना। प्र० साँप की पूँछ पर पैर पड़ते ही मैं सिहर गया।

सींक – *स्त्री०* सूखी हुई घास आदि की पतली तीली; जैसे – सींकवाली झाड़ू।

सींखचा – पु० खिड़की, बड़े पिंजरे आदि में लगाई जानेवाली लोहे की पतली-लंबी छड़।

सींग – पु० जानवरों के सिर पर बाहर की ओर निकली हुई नुकीली हड्डियाँ। *मु० सींग समाना* – ठिकाना मिलना। प्र० ख़ानाबदोशों को जहाँ सींग समाने की जगह मिलती है, वहीं पड़ाव डाल देते हैं।

सींचना – *क्रि०* पेड़-पौधों में पानी देना, सिंचाई करना।

सीधा – *वि०* 1. जिसमें घुमाव या टेढ़ापन न हो; जैसे – सीधा रास्ता। 2. भोला, सरल; जैसे – सीधा बच्चा। 3. दायाँ; जैसे – सीधा हाथ। 4. बिना कहीं ठहरे या रुके प्रत्यक्ष रूप से। प्र० वह स्टेशन से सीधा मीटिंग में गया। (*विलोम* – टेढ़ा)।

सीना – पु० 1. छाती, वक्षस्थल। 2. सिलाई का काम।

सीप – पु०, स्त्री० समुद्र में पाए जानेवाले कीड़े का कड़ा और चमकीला खोल, सीपी।

सीमा – *स्त्री०* 1. हद, जिस किनारे या छोर तक कोई स्थान फैला हुआ हो। प्र० भारत की उत्तरी सीमा पर नेपाल है। 2. जिस बिंदु के आगे किसी काम का होना संभव न हो। प्र० रामलाल ने बेटी की शादी में अपनी सीमा के बाहर पैसा ख़र्च किया। 3. जिस बिंदु से आगे किसी काम का होना उचित न हो। प्र० मदन की शैतानियाँ जब सीमा के बाहर हो गई तो पड़ोसियों ने उसके घरवालों से शिकायत की।

सीमित – *वि०* सीमा में बँधा हुआ, कम, थोड़ा; जैसे – सीमित समय, सीमित पैसा, सीमित लोग। (*विलोम* – असीमित)।

सीमेंट – पु० चूने को पकाकर बनाया जानेवाला स्लेटी या सफ़ेद रंग का पाउडर जिसे रेत और पानी में मिलाकर इमारत बनाने के काम में लाया जाता है।

सीरियल – पु० 1. टेलीविज़न में कई हिस्सों में बाँटकर लगातार हर हफ़्ते दिखाए जानेवाले कार्यक्रम; जैसे – रामायण सीरियल, तेनालीराम

सींखचा सींग सीना सीप

सील सुग्गा सुड़कना सुडौल
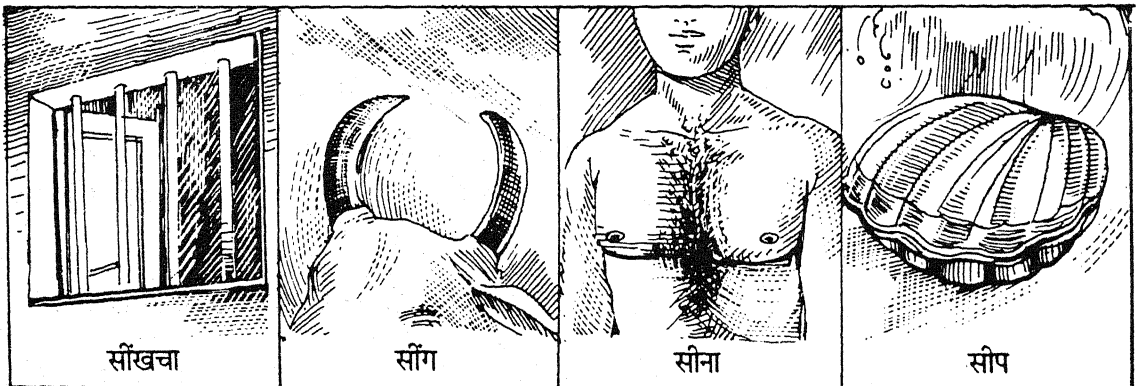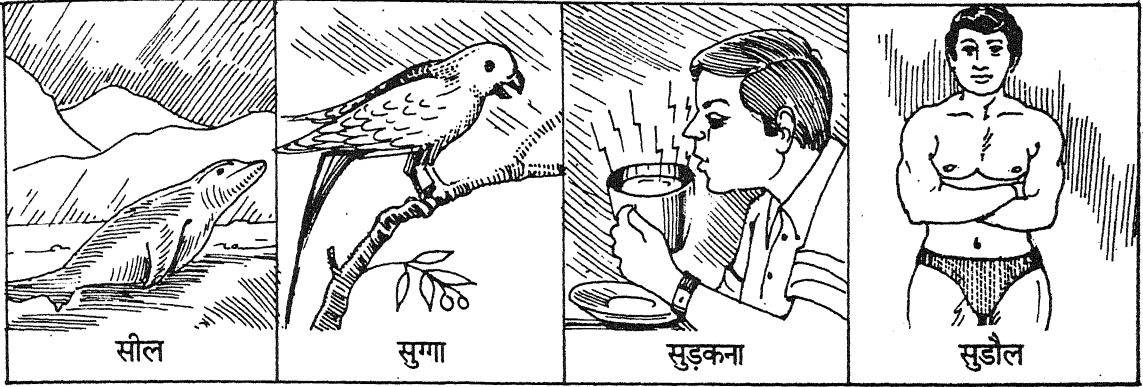
सीरियल। 2. अख़बार, पत्रिकाओं आदि में कई हिस्सों में बाँटकर छापी जानेवाली कहानियाँ, उपन्यास आदि।

सील – स्त्री० 1. मुहर, ठप्पा। प्र० इस चिट्ठी को लाख से सील कर दो। 2. नमी, सीलन। प्र० 1. सील से घर की दीवारें बदरँग हो गई हैं। 2. बरसात के दिनों में खाने की चीज़ें बहुत जल्दी सील जाती हैं।

सीसा – पु० गहरे स्लेटी रंग का भारी धातु।

सुकुमार – *वि०* जिसके अंग कोमल हों, नाज़ुक; जैसे – सुकुमार बच्चा।

सुख – पु० किसी क़िस्म की परेशानियाँ और चिंताएँ न होनें की स्थिति। प्र० श्याम का बुढ़ापा बहुत सुख से बीत रहा है। (*विलोम* – दुख)।

सुखद – *वि०* सुख देनेवाला, आनंद देनेवाला, सुखदायी; जैसे – सुखद समाचार; सुखद बात। (*विलोम* – दुखद)।

सुखदायी – पु० दे० सुखद। (*विलोम* – दुखदायी)।

सुखी – *वि०* जिसकी ज़िंदगी आराम और सुख से कट रही हो। (*विलोम* – दुखी)।

सुगंध– स्त्री० अच्छी गंध, खुशबू। (*विलोम* – दुर्गंध)।

सुगंधित – *वि०* अच्छी गंधवाला, ख़ुशबूदार; जैसे – सुगंधित साबुन।

सुगम – *वि०* जिसे समझना या करना मुश्किल न हो, सरल; जैसे – सुगम रास्ता, सुगम काम। (*विलोम* – दुर्गम)।

सुग्गा – पु० तोता।

सुघड़ – *वि०* 1. जिसकी बनावट सुंदर हो, अच्छी तरह गढ़ा हुआ; जैसे – सुघड़ मूर्ति, सुघड़ शरीर। 2. किसी काम में माहिर, निपुण; जैसे – सुघड़ गृहिणी, सुघड़ कारीगर।

सुचारु – *वि०* बढ़िया, व्यवस्थित; ठीक। प्र० अमर का काम सुचारु रूप से चल रहा है।

सुझाना – *क्रि०* सलाह देना, सुझाव देना, तरकीब बताना।

सुझाव – पु० सलाह। प्र० स्कूल में बाल-दिवस मनाए जाने को लेकर बच्चों ने अच्छे सुझाव दिए।

सुड़कना – *क्रि०* 1. बहती नाक को भीतर की ओर खींचना। 2. सुड़सुड़ की आवाज़ करके कोई चीज़ पीना; जैसे – चाय सुड़कना।

सुडौल – *वि०* शरीर की अच्छी बनावटवाला, अच्छे

डील-डौल का। *प्र०* सुडौल शरीर के लिए व्यायाम ज़रूरी है।

सुतली – *स्त्री०* सन के रेशों से बनी हुई पतली रस्सी, डोरी।

सुदूर – *वि०* बहुत दूर का; जैसे – सुदूर जंगल, सुदूर देश।

सुदृढ़ – *वि०* बहुत दृढ़, खूब मज़बूत, अटूट; जैसे – सुदृढ़ संबंध।

सुध – *स्त्री०* 1. होश। *प्र०* डॉक्टर के बेहोशी की दवा देते ही रमेश को कोई सुध न रही। 2. याद, ध्यान। *प्र०* सुनील अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि उसे घर जाने की भी सुध न रही। (*विलोम* – बेसुध)।

सुधरना – *क्रि०* 1. किसी ख़राब चीज़ का ठीक होना। *प्र०* सतबीर ने मशीन सुधर जाने पर कारीगर को पैसा दिया। 2. किसी व्यक्ति का बुरे काम छोड़कर सही रास्ते पर आना, बीमार आदमी की हालत ठीक होना। *प्र०* ख़राब दोस्तों का साथ छूट जाने पर रवि अब काफ़ी सुधर गया है।

सुधा – *स्त्री०* अमृत।

सुधार – *पु०* सुधरने की क्रिया, किसी चीज़ का बेहतर होना, संशोधन। *प्र०* 1. इस निबंध में सुधार की ज़रूरत है। 2. उस गाँव में बसों के आने-जाने में अब काफ़ी सुधार हो गया है।

सुधारक – *पु०* सुधार करनेवाला। *प्र०* राजा राममोहन राय बहुत बड़े समाज-सुधारक थे।

सुनवाई – *स्त्री०* 1. मुक़दमे का सुना जाना। *प्र०* मोहन के मुक़दमे की सुनवाई एक हफ़्ते के लिए टल गई। 2. शिकायत और प्रार्थना का सुना जाना। *प्र०* सूखे से पीड़ित किसानों की सरकार में कोई सुनवाई न हुई।

सुनसान – *वि०* जहाँ कोई न हो, वीरान, निर्जन; जैसे – सुनसान रास्ता, सुनसान जगह।

सुनहरा, सुनहला – *वि०* सोने के रंग का; जैसे – सुनहरा मुकुट।

सुनार – *पु०* सोने-चाँदी के गहने बनाने और बेचनेवाला, स्वर्णकार।

सुन्न – *वि०* 1. शरीर के किसी हिस्से का बेजान-सा हो जाना, निर्जीव, संवेदनहीन। *प्र०* 1. इतने शोर से उसके कान सुन्न पड़ गए। 2. ऑपरेशन से पहले डॉक्टर ने सूई लगाकर उसका हाथ सुन्न कर दिया। 2. भौंचक, स्तब्ध, जड़वत्। *प्र०* अपने दोस्त के मरने की ख़बर सुनकर गोपाल सुन्न हो गया।

सुनवाई सुनसान सुनार
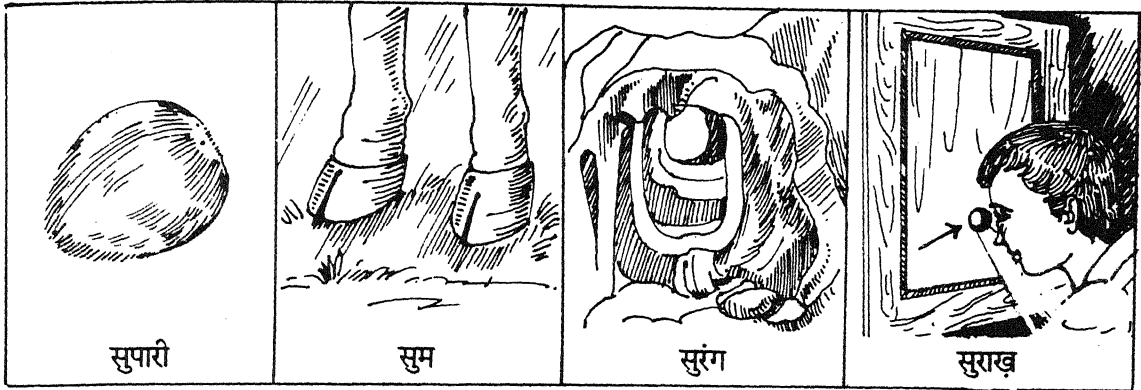
सुपाच्य – *वि॰* आसानी से पच जानेवाला या हज़म होनेवाला; जैसे – सुपाच्य भोजन।

सुपाठ्य – *वि॰* जिसे आसानी से पढ़ा और समझा जा सके; जैसे – सुपाठ्य पुस्तक।

सुपारी – *स्त्री॰* नारियल की जाति का एक पेड़ जिसके गोली जैसे छोटे, कड़े फल के टुकड़ों को पान के साथ या अलग से खाया जाता है।

सुपुत्र – *पु॰* अच्छा पुत्र, लायक़ बेटा, सपूत।

सुपुर्द – *वि॰* किसी को सौंपा हुआ, हवाले किया हुआ। *प्र॰* विदेश जाने से पहले शिखा ने अपना सामान पड़ोसी के सुपुर्द कर दिया।

सुप्त – *वि॰* 1. सोया हुआ। 2. छिपा हुआ, दबा हुआ; जैसे – सुप्त इच्छाएँ। (*विलोम* – जाग्रत्)।

सुबोध – *वि॰* जो आसानी से समझ में आए; जैसे – सुबोध पाठ।

सुम – *पु॰* गाय, बैल, घोड़े आदि का खुर।

सुमन – *पु॰* फूल।

सुरंग – *स्त्री॰* 1. ज़मीन के नीचे या पहाड़ के बीच से खोदकर बनाया गया रास्ता। 2. ज़मीन या समुद्र के नीचे बिछी हुई बारूद की छड़ें।

सुर – *पु॰* 1. स्वर, आवाज़। *प्र॰* उमा मधुर सुर में गा रही है। 2. संगीत की ध्वनियाँ। *प्र॰* दो साल संगीत सीखने के बाद उसे सुरों की पहचान हो गई है। 3. देवता।

सुरक्षा – *स्त्री॰* बचाव, रखवाली, हिफ़ाज़त। *प्र॰* अपने मुहल्ले की सुरक्षा के लिए लोगों ने दो चौकीदार तैनात किए हैं।

सुरक्षित – *वि॰* जिसकी अच्छी तरह से रक्षा या हिफ़ाज़त हो।

सुरभि – *स्त्री॰* खुशबू, सुगंध।

सुरमई – *वि॰* सुरमे के रंग का, हल्का स्लेटी। *प्र॰* आकाश में सुरमई बादल सुंदर लगते हैं।

सुरमा – *पु॰* एक खनिज पदार्थ जिसके बारीक चूरे को आँख में काजल की तरह से लगाया जाता है, अंजन।

सुरम्य – *वि॰* इतना सुंदर कि मन में रम जाए, मनोहर, रमणीक; जैसे – पहाड़ों का सुरम्य दृश्य।

सुरसुरी – *स्त्री॰* शरीर पर कीड़ा या चींटी के रेंगने-जैसा अनुभव।

सुरा – *स्त्री॰* शराब।

सुराख़ – *पु॰* छेद।

सुराग़ – पु॰ कोई ऐसा निशान या जानकारी जिससे किसी खोई हुई, छिपी हुई चीज़, आदमी या रहस्य के बारे में पता चल सके; जैसे – चोर का सुराग़, हीरे के हार का सुराग़।

सुराही – स्त्री॰ मिट्टी या धातु से बना हुआ छोटे मुँहवाला बरतन जो पानी रखने के काम आता है।

सुरीला – *वि॰* मीठे सुरवाला, जो सुनने में अच्छा लगे; जैसे – सुरीला गीत।

सुरुचि – स्त्री॰ अच्छी रुचि, अच्छी और नफ़ीस चीज़ों को पसंद करने का स्वभाव। प्र॰ शुभा की सुरुचि उसके घर की सजावट में साफ़ झलकती है।

सुर्ख़ – *वि॰* लाल।

सुलगना – *क्रि॰* 1. धीरे-धीरे जलना; जैसे – अँगीठी का सुलगना। 2. किसी चीज़ का इस तरह जलना कि सिर्फ़ धुआँ निकले, आग नहीं; जैसे – सिगरेट का सुलगना।

सुलगाना – *क्रि॰* 1. आग लगाना; जैसे – बीड़ी सुलगाना। 2. भड़काना, उकसाना, जैसे – दंगे की आग सुलगाना।

सुलझना – *क्रि॰* 1. किसी गाँठ या उलझी हुई चीज़ का ठीक होना; जैसे – बाल सुलझना। 2. बिगड़ी हुई बात का बन जाना, उलझन दूर होना। प्र॰ उन दोनों किसानों का झगड़ा पंचायत के पास जाने पर ही सुलझा।

सुलभ – *वि॰* जो आसानी से मिल सके। प्र॰ गर्मी के मौसम में आम ख़ूब सुलभ होता है। (*विलोम* – दुर्लभ)।

सुलह – स्त्री॰ झगड़ा ख़त्म होने के बाद किया जानेवाला समझौता, मेल। प्र॰ मुहल्लेवालों ने दोनों पड़ोसियों में सुलह करवाई।

सुलूक, सलूक – पु॰ बर्ताव, व्यवहार, आचरण। प्र॰ मोहिनी अपनी माँ के साथ अच्छा सुलूक नहीं करती।

सुलेख – पु॰ सुंदर लिखाई।

सुवास – स्त्री॰ खुशबू, सुगंध।

सुविधा – स्त्री॰ 1. आसानी, सहूलियत, सुभीता। प्र॰ मुझे घर से स्टेशन पहुँचने में ज़्यादा सुविधा होगी। 2. किसी चीज़ का आसानी से मिलना, ऐसा इंतज़ाम जिससे आराम रहे। प्र॰ इस क़स्बे में पानी की बहुत सुविधा है।

सुशिक्षित – *वि॰* जिसने अच्छी शिक्षा पाई हो, ख़ूब पढ़ा-लिखा।

सुराही | सुलगना | सुलह
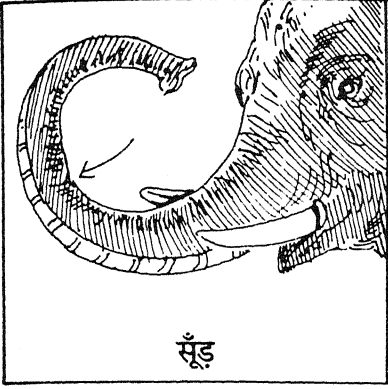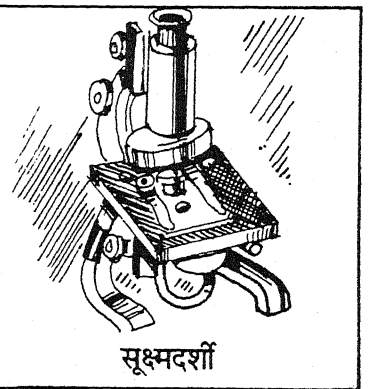
सुशील – *वि॰* अच्छे शीलवाला, सज्जन, सच्चरित्र।

सुशोभित – *वि॰* जिसकी खूब शोभा हो, बहुत सजने-फबनेवाला। *प्र॰* मंच पर सरस्वती की मूर्ति सुशोभित थी।

सुश्री – *वि॰* जिन महिलाओं की शादी न हुई हो उनके नाम के पहले आदर के लिए इस्तेमाल होनेवाला शब्द; जैसे – सुश्री शोभा पंत।

सुषमा – *स्त्री॰* सुंदरता, प्राकृतिक सौंदर्य।

सुसज्जित – *वि॰* अच्छी तरह सजा हुआ; जैसे – रामलीला की सुसज्जित झाँकी।

सुस्त – *वि॰* 1. आलसी, ढीला, धीमा; जैसे – सुस्त चाल से चलना, सुस्त आदमी। 2. उदास, उत्साहहीन। *प्र॰* पाँच हज़ार रुपए खो जाने की वजह से आज वह बहुत सुस्त है। (*विलोम* – चुस्त)।

सुस्ताना – *क्रि॰* थकावट दूर करने के लिए कुछ देर आराम करना। *प्र॰* राहगीर सुस्ताने के लिए पेड़ के नीचे लेट गया।

सुस्ती – *स्त्री॰* आलस, काम न करने की इच्छा। *प्र॰* नहाने से रमेश की सुस्ती दूर हो गई।

सुहाना – 1. *क्रि॰* मन को अच्छा लगना, पसंद आना। *प्र॰* नन्नू को बारिश में नहाना बहुत सुहाता है। 2. *वि॰* दे॰ सुहावना।

सुहावना – *वि॰* जो मन को भला लगे, सुहाना; जैसे – सुहावना मौसम।

सूँड़ – *स्त्री॰* हाथी की लंबी नाक जो ज़मीन तक लटकी रहती है।

सूअर – *पु॰* एक जानवर जो पालतू और जंगली दो तरह का होता है।

सूक्ति (सु + उक्ति) – *स्त्री॰* सुंदर उक्ति, सुंदर ढंग से कही हुई बढ़िया बात। *प्र॰* गांधीजी की एक उक्ति है – सत्य ही ईश्वर है।

सूक्ष्म – *वि॰* बहुत छोटा, जो बहुत बारीक होने के कारण आसानी से दिखाई न दे या आसानी से समझ में न आए; जैसे – रेत के सूक्ष्म कण, दो वस्तुओं में सूक्ष्म अंतर।

सूक्ष्मजीवी – *पु॰* छोटे-छोटे जीवाणु जिनको आँख से देख पाना संभव न हो।

सूक्ष्मदर्शी – 1. *पु॰* ऐसी मशीन जिससे कोई बहुत [बा]रीक चीज़ बड़ी शक्ल में देखी जा सके, खुर्दबीन, माइक्रोस्कोप। 2. *वि॰* बारीक से बारीक बात को समझनेवाला, कुशाग्र, बहुत बुद्धिमान्। *प्र॰* डॉ॰ अंबेडकर सूक्ष्मदर्शी थे।

सूखा – 1. *वि०* जिसका पानी, नमी या रस ख़त्म हो गया हो; जैसे – सूखा कपड़ा, सूखी नदी, सूखा फल। 2. *पु०* (क) काफ़ी समय तक बारिश न होना, अकाल, दुर्भिक्ष। *प्र०* सूखा पड़ने पर उस गाँव के ज़्यादातर लोग दूसरी जगह चले गए। (ख) बच्चों को होनेवाला एक रोग जिसमें उनकी हड्डियाँ नरम पड़ जाती हैं और शरीर सूख जाता है।

सूचक – *पु०* सूचना देनेवाला, किसी चीज़ के बारे में बतानेवाला, संकेत। *प्र०* आम के वृक्ष पर बौर का उगना वसंत का सूचक है।

सूचना – *स्त्री०* जानकारी, ख़बर। *प्र०* शमीम को कल होनेवाली मीटिंग की कोई सूचना नहीं है।

सूचित – *वि०* जिसे सूचना दी गई हो, जो सूचना दी गई हो, बताया हुआ। *प्र०* मनीष के माँ-बाप को उसके लापता होने के बारे में सूचित कर दिया गया है।

सूची – *स्त्री०* तालिका, फ़ेहरिस्त, लिस्ट; जैसे – पत्रिकाओं की सूची, स्कूल के बच्चों की सूची, ख़रीदे जानेवाले सामान की सूची।

सूजन – *स्त्री०* सूजने की स्थिति। *प्र०* झूले से गिर जाने पर रवि के हाथ में सूजन आ गई।

सूजना – *क्रि०* चोट या बीमारी के कारण शरीर के किसी हिस्से का फूलना या मोटा होना। *मु०* *मुँह सूजना* – किसी के चेहरे से नाराज़गी या अप्रसन्नता ज़ाहिर होना। *प्र०* गुरप्रीत से छोटे-से काम के लिए कहने पर उसका मुँह सूज गया।

सूजी – *स्त्री०* गेहूँ का दरदरा (दानेदार) आटा, रवा।

सूझना – *क्रि०* 1. ध्यान, दिमाग़ या ख़्याल में आना। *प्र०* शमा को यह बात सूझी ही नहीं कि गिरीश उसका काम करवा सकता है। 2. दिखाई देना। *प्र०* कमरे में इतना अँधेरा था कि कुछ नहीं सूझ पड़ रहा था।

सूट – *पु०* 1. कोट-पैंट का जोड़ा। 2. सलवार, कमीज़ और चुन्नी का जोड़ा।

सूटकेस – *पु०* सफ़र के वक़्त कपड़े आदि रखने का बक्स, अटैची।

सूत – *पु०* 1. रुई, रेशम आदि का काता हुआ धागा। 2. रुई का डोरा, मोटा धागा।

सूती – *वि०* रुई के सूत का बना हुआ; जैसे – सूती कपड़ा।

सूत्र – *पु०* 1. सूत, धागा। 2. थोड़े शब्दों के वाक्य में कही गई कोई महत्त्वपूर्ण और गहरी बात; जैसे – 'सब दिन होत न एक समान'। 3. गणित, भौतिकी आदि में संकेतों का वह समूह जो किसी सिद्धांत या

सूखा सूट सूटकेस

सूप | सूर्यग्रहण | सेंकना | सेंध
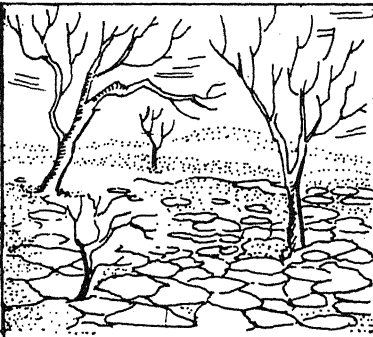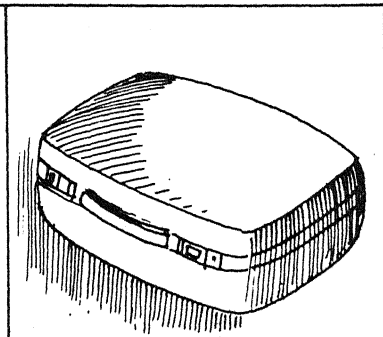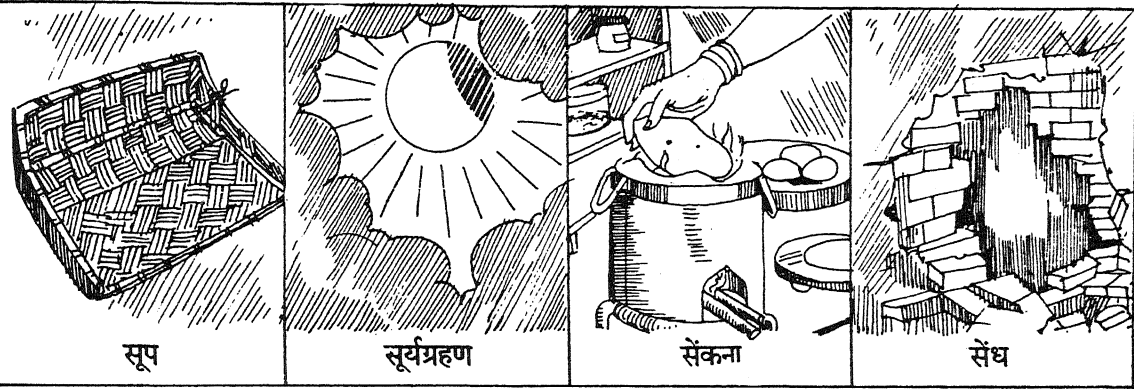
किसी प्रक्रिया के बारे में बताए; जैसे – गणित का एक सूत्र : (अ + ब)^2 = अ^2 + 2 अ ब + ब^2।

सूद – पु० उधार दिए गए रुपए पर मुनाफ़े या लाभ के रूप में मिलनेवाला पैसा, ब्याज।

सूना – *वि०* ख़ाली, सुनसान, निर्जन, जहाँ चहल-पहल और रौनक़ न हो; जैसे – सूना घर, सूनी सड़क।

सूप – पु० 1. बाँस के छिलके, सींक आदि से बनी हुई चीज़ जिसमें अनाज को फटककर उसका कूड़ा अलग किया जाता है, छाज। 2. पकी हुई सब्ज़ियों या दाल का रस; जैसे – टमाटर का सूप।

सूफ़ी – पु० 1. मुसलमानों का एक संप्रदाय। 2. इस संप्रदाय को माननेवाला। 3. संत।

सूबा – पु० वह प्रांत जिसमें कई ज़िले शामिल हों। प्र० हरियाणा पहले पंजाब के सूबे का हिस्सा हुआ करता था।

सूरत – पु० शक्ल, चेहरा, रूप।

सूरमा – पु० बहादुर, शूरवीर, योद्धा।

सूर्य – पु० सूरज।

सूर्यग्रहण – पु० पृथ्वी और सूर्य के बीच में चंद्रमा के आ जाने से सूर्य की किरणों का धरती पर न पड़ना।

सूर्यमुखी – पु० पीले रंग की पंखुड़ियोंवाला एक बड़ा फूल जिसके बीज से तेल निकाला जाता है, सूरजमुखी।

सूर्यास्त (सूर्य+अस्त) – पु० सूर्य का डूबना।

सूर्योदय (सूर्य + उदय) – पु० सूर्य का निकलना।

सूली – *स्त्री०* लोहे की नुकीली छड़ जिस पर बैठाकर अपराधी को मौत की सज़ा दी जाती थी। *मु० जान सूली पर होना* – बहुत परेशान होना। प्र० इम्तहान हो जाने के बाद जब तक नतीजा नहीं आता, बच्चों की जान सूली पर होती है।

सृष्टि – *स्त्री०* 1. मनुष्य, जानवर, पेड़-पौधों सहित यह सारा संसार, जगत्। 2. बनाना, निर्माण, रचना। प्र० यह कोई नहीं जानता कि मनुष्य की सृष्टि कब हुई।

सेंकना – *क्रि०* 1. आग पर रखकर पकाना, भूनना; जैसे – रोटी सेंकना, पापड़ सेंकना। 2. हल्का-हल्का ताप लेना, तापना; जैसे – अँगीठी पर हाथ सेंकना, धूप सेंकना। 3. शरीर के किसी हिस्से को गर्मी पहुँचाना; जैसे – कपड़े से चोट सेंकना।

सेंध – *स्त्री०* दीवार तोड़कर बनाया गया बड़ा-सा छेद या रास्ता जिसमें से चोर चोरी करने के लिए घुसते हैं।

सेंधा – पु॰ सिंधु नदी के पास निकलनेवाला खनिज नमक, लाहौरी नमक।

सेंवई – स्त्री॰ मैदे को सुखाकर बनाए हुए सूत जैसे लच्छे जिन्हें दूध में पकाकर खाया जाता है।

सेकिंड – पु॰ एक मिनट का साठवाँ भाग।

सेक्रेटरी – पु॰ दे॰ सचिव।

सेज – स्त्री॰ बिस्तर, बिछौना, शय्या।

सेट – पु॰ एक ही तरह की कई चीज़ों का समूह; जैसे – किताबों का सेट, सोफ़ासेट, बरतनों का सेट।

सेठ – पु॰ 1. साहूकार, महाजन। 2. धनी आदमी, व्यापारी।

सेतु – पु॰ पुल।

सेना – पु॰ फ़ौज, पलटन।

सेनाध्यक्ष – पु॰ सेनापति, सेना का अध्यक्ष।

सेनानी – पु॰ दे॰ सेनापति।

सेनापति – पु॰ सेना का मुखिया, सेनानी, सेनाध्यक्ष।

सेम – स्त्री॰ फलीवाली एक सब्ज़ी।

सेमल – पु॰ एक बड़ा पेड़ जिसके फलों से रुई निकलती है, शाल्मलि।

सेर – पु॰ सोलह छटाँक या अस्सी तोले के बराबर की एक तौल।

सेवक – पु॰ सेवा करनेवाला, नौकर।

सेवन – पु॰ इस्तेमाल, प्रयोग। प्र॰ सिगरेट और शराब का सेवन स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है।

सेवा – स्त्री॰ 1. किसी को आराम पहुँचाने के लिए किया जानेवाला उसका काम, ख़िदमत; जैसे – बड़ों की सेवा करना, रोगी की सेवा करना। 2. वह सुविधा जिसका इंतज़ाम सरकार द्वारा जनता के लिए किया गया हो; जैसे – रेलसेवा, डाक-तार सेवा।

सेविका – स्त्री॰ सेवा करनेवाली, दासी, नौकरानी।

सेह – पु॰ दे॰ साही।

सेहत – स्त्री॰ तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य। प्र॰ आपकी सेहत कैसी है?

सेहरा – पु॰ 1: गोटे-किनारी या फूलों की लड़ियों से बना हुआ मुकुट जिसे दूल्हा-दूल्हन पहनते हैं। 2. शादी के मौक़े पर ख़ास तौर से लिखा और गाया जानेवाला गीत। *मु॰ सेहरा बँधना* – किसी काम की सफलता की प्रशंसा करना। प्र॰ फुटबॉल के मैच में
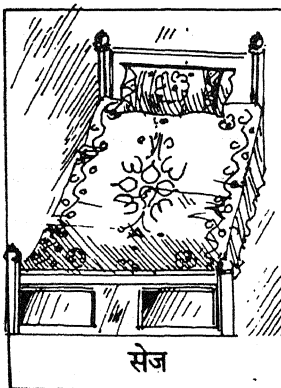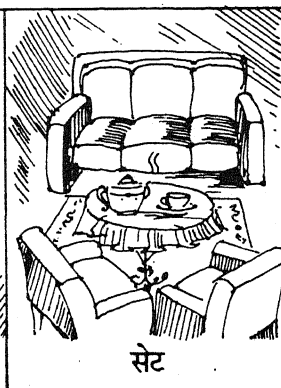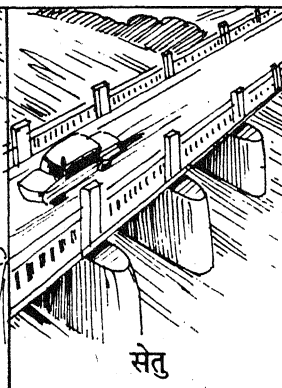
सेज | सेट | सेतु | सेहरा
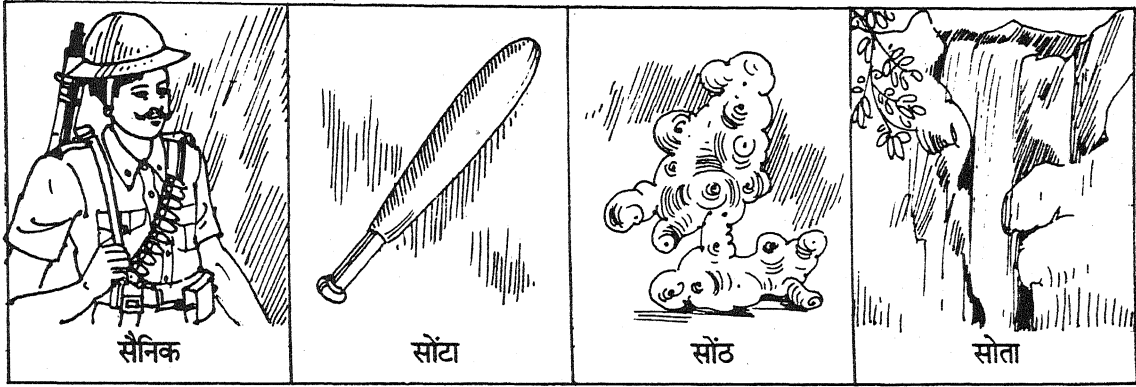
जीत का सेहरा गोलची के सिर बँधा।

सैकड़ा – पु० सौ का समूह।

सैनिक – 1. पु० फ़ौजी, सिपाही, योद्धा। 2. *वि०* सेना का, सेना संबंधी; जैसे – सैनिक अस्पताल।

सैर – *पु०* टहलना, मन बहलाने के लिए घूमना-फिरना।

सैलानी – *वि०* सैर करने का शौक़ीन, घुमक्कड़। *प्र०* गर्मियों में पहाड़ी जगहें सैलानियों से भरी होती हैं।

सोंटा – पु० लाठी, डंडा, मोटी छड़ी।

सोंठ – *स्त्री०* सुखाया हुआ अदरक।

सोंधा – *वि०* 1. ताज़ी खुशबू; जैसे – भूने जा रहे बेसन या चने की सोंधी महक। 2. तपती ज़मीन या मिट्टी में पानी पड़ने से उठनेवाली गंध। 3. ताज़गी और कुरकुरापन लिए हुए स्वाद; जैसे – सोंधा लड्डू, सोंधी कचौड़ी।

सोखना – *क्रि०* पानी या किसी तरल पदार्थ को चूस लेना, खींच लेना, जज़्ब कर लेना; जैसे – कपड़े में पानी सोखना, काग़ज़ में स्याही सोखना।

सोख़्ता – *पु०* एक प्रकार का खुरदुरा काग़ज़ जो स्याही सोख लेता है, स्याहीसोख, ब्लॉटिंग पेपर।

सोच – *पु०* 1. सोचने की क्रिया या ढंग। *प्र०* पढ़ा-लिखा होने पर भी उसका सोच एकदम पुराने ढंग का है। 2. फ़िक्र, चिंता। *प्र०* लड़केवालों ने जब दहेज में दो लाख रुपए माँगे तो जैन साहब सोच में पड़ गए।

सोचना – *क्रि०* 1. किसी विषय या वस्तु के बारे में मन में गहराई से समझना-परखना, विचार करना। *प्र०* काफ़ी सोचने पर भी वह इस समस्या का हल नहीं ढूँढ़ सका। 2. चिंता करना। *प्र०* तुम बच्चों के लिए इतना सोचोगे तो बीमार पड़ जाओगे। 3. कुछ नया करने की बात मन में होना। *प्र०* वह गाँव जाकर खेती-बाड़ी करने की सोच रहा है। 4. अंदाज़ लगाना, ग़लतफ़हमी में कुछ-का-कुछ समझना। *प्र०* मैंने सोचा कि ये काम मुझे नहीं, तुम्हें करना है।

सोता – *पु०* 1. झरना, चश्मा। 2. नदी, नाले आदि का स्रोत।

सोहबत – *स्त्री०* साथ, संगत। *प्र०* बुरी सोहबत में पड़कर उसने अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर ली।

सौंदर्य – *पु०* ख़ूबसूरती, सुंदरता। *प्र०* आयु बढ़ने के साथ-साथ लता का सौंदर्य भी निखर रहा है।

सौंपना – *क्रि०* कोई चीज़ किसी के सुपुर्द करना, हवाले करना, कोई काम किसी के ज़िम्मे लगाना;

जैसे – घर सौंपना, ज़िम्मेदारी सौंपना।

सौगंध – *स्त्री॰* क़सम, शपथ।

सौग़ात – *स्त्री॰* तोहफ़ा, भेंट, उपहार।

सौत – *स्त्री॰* पति की दूसरी पत्नी।

सौतेला – *वि॰* जिसका संबंध सौत से हो, सौत से पैदा हुआ; जैसे – सौतेली माँ, सौतेला भाई, सौतेला बेटा।

सौदा – *पु॰* 1. ख़रीदने-बेचने, लेन-देन की बातचीत या काम। *प्र॰* उस मकान का सौदा बारह लाख रुपए में तय हो गया है। 2. ख़रीद-फ़रोख़्त, बिकनेवाला माल, सामान। *प्र॰* उत्तर भारत के ज़्यादातर व्यापारी सौदा लेने दिल्ली आते हैं।

सौभाग्य – *पु॰* अच्छा भाग्य, खुशक़िस्मता। *प्र॰* यह उसका सौभाग्य है कि उसे पढ़ाई ख़त्म करते ही नौकरी मिल गई।

सौम्य – *वि॰* जो शांत, सुशील और कोमल हो, मृदु।

सौर – *वि॰* सूर्य-संबंधी, सूर्य का; जैसे – सौर-ऊर्जा, सौर-चूल्हा।

सौर-मंडल – *पु॰* सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों का समूह, सौर-जगत्।

स्टॉप – *पु॰* रुकने की जगह, पड़ाव; जैसे – बस स्टॉप।

स्टापू – *पु॰* ज़मीन पर चॉक से रेखाएँ खींचकर पत्थर की ठीकरी से खेला जानेवाला एक खेल।

स्टीमर – *पु॰* भाप से चलनेवाला पानी का छोटा जहाज़।

स्टूडियो – *पु॰* 1. फ़ोटो खींचने का कमरा। 2. वह कमरा जहाँ बैठकर कलाकार चित्र बनाए या मूर्तियाँ गढ़े। 3. फ़िल्म बनाने या रिकार्डिंग करने का कमरा।

स्टोव – *पु॰* मिट्टी के तेल या गैस से जलनेवाला खाना पकाने का चूल्हा।

स्तंभ – *पु॰* खंभा। *प्र॰* कुतुबमीनार के पास लौह-स्तंभ है।

स्तनपायी – *वि॰* वे जीव जो माँ के स्तन से दूध पीकर बड़े हों; जैसे – बिल्ली, कुत्ता, गाय का बछड़ा।

स्तब्ध – *वि॰* भौंचक, हैरानी और सदमे का मिला-जुला भाव। *प्र॰* इंदिरा गांधी की हत्या की ख़बर सुनकर सारा देश स्तब्ध रह गया।

स्तर – *पु॰* 1. दर्जा, श्रेणी। *प्र॰* इस शहर में शिक्षा का स्तर अच्छा नहीं है। 2. सतह, तल। *प्र॰* नदी में

सौरमंडल स्टॉप स्टीमर स्टोव

स्तुति स्तूप स्थापना
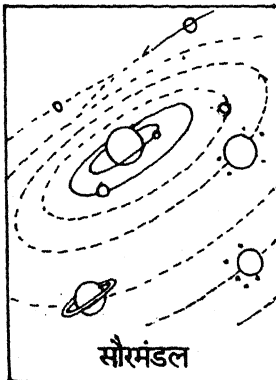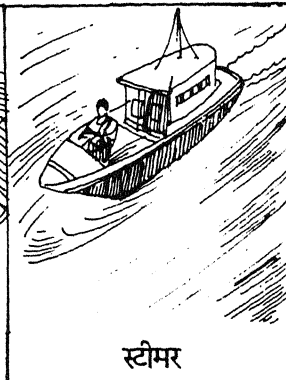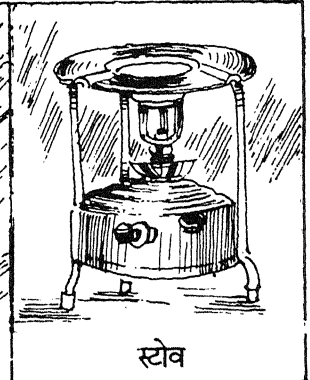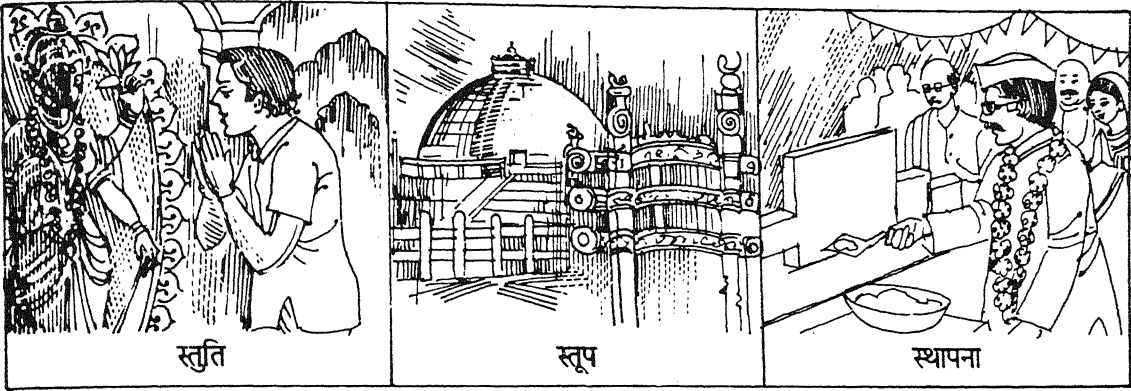
पानी का स्तर ख़तरे के निशान से ऊपर जाने पर लोगों को गाँव से बाहर जाना पड़ा। 3. परत या सतह का फैलाव, पैमाना। प्र० हमारे ज़िले में बड़े स्तर पर लोगों को मलेरिया के टीके लगाए जा रहे हैं।

स्तरीय – *वि०* ऊँचे स्तर का, बढ़िया दर्जे का, स्टैंडर्ड; जैसे – स्तरीय भाषा, स्तरीय वस्तु, स्तरीय रहन-सहन।

स्तुति – *स्त्री०* 1. आदर के साथ किया जानेवाला गुणगान; जैसे – देवी की स्तुति। 2. तारीफ़, प्रशंसा; जैसे – कलाकार या विद्वान् की स्तुति। 3. चापलूसी, खुशामद, चाटुकारिता ; जैसे – किसी लाभ के लिए राजा या नेता की स्तुति करना।

स्तूप – *पु०* 1. पत्थर, मिट्टी आदि का ऊँचा टीला, ढूह। 2. वह ऊँचा टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा के बाल, अस्थि, दाँत आदि यादगार के रूप में रखे गए हों।

स्त्री – *स्त्री०* 1. औरत, नारी। 2. पत्नी। (*विलोम* – पुरुष)।

स्त्रीलिंग – *पु०* व्याकरण में दो लिंगों में से एक जो शब्द की स्त्री जाति के बारे में बताता है; जैसे – मेज़ स्त्रीलिंग है (बड़ी मेज़) और कमरा स्त्रीलिंग नहीं है (बड़ा कमरा)।

स्थगित – *वि०* कुछ समय के लिए टाला या रोका हुआ, मुल्तवी। प्र० रीता ने जयपुर जाने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया है।

स्थल – *पु०* 1. ज़मीन, भूमि का वह हिस्सा जिस पर पानी न हो। 2. जगह, स्थान। प्र० जिस स्थल पर जलियाँवाला कांड हुआ था, वहाँ एक स्मारक बना हुआ है।

स्थान – *पु०* जगह; जैसे – जन्म-स्थान, निवास-स्थान।

स्थानीय – *वि०* किसी ख़ास स्थान या जगह का। प्र० 1. लखनऊ में मेरी कंपनी का स्थानीय दफ़्तर हज़रतगंज में है। 2. इस शहर की स्थानीय समस्याओं को वही समझ सकता है जो यहाँ रहता हो।

स्थापना – *स्त्री०* 1. रखना, जमाना; जैसे – मूर्ति की स्थापना। 2. नींव डालना; जैसे – मंदिर की स्थापना। 3. कोई नई संस्था शुरू करना। प्र० कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में हुई।

स्थापित – *वि०* जिसकी स्थापना की गई हो। प्र० दिलवाड़े के मंदिर में अनेक सुंदर मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं।

स्थायी – *वि०* हमेशा। प्र० पद्मिनी स्थायी रूप से

स्वीडन में बस गई है। (*विलोम* – अस्थायी)।

स्थित – *वि*० मौजूद। *प्र*० कुतुबमीनार भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है।

स्थिति – *स्त्री*० हालत, अवस्था, दशा; जैसे – बेरोज़गारी की स्थिति, मौसम की स्थिति, कुम्हारों की स्थिति।

स्थिर – *वि*० 1. जिसमें कोई हरकत या गति न हो। *प्र*० हवा न चलने के कारण पेड़ों के पत्ते स्थिर हैं। 2. अटल, दृढ़। *प्र*० घोर विरोध के बावजूद वह अपनी बात पर स्थिर रहा। 3. शांत, धीर-गंभीर। *प्र*० संकट पड़ने पर भी नीरा स्थिर रहती है।

स्थूल – *वि*० मोटा; जैसे – स्थूल शरीर।

स्नातक – *पु*० जिसने बी०ए० की डिग्री प्राप्त की हो, ग्रेजुएट।

स्नान – *पु*० नहाना।

स्नानागार – *पु*० स्नान करने की कोठरी, गुसलख़ाना, बाथरूम।

स्नायु – *स्त्री*० रग, नाड़ी, नस।

स्नायु-संस्थान – *पु*० नाड़ी-संस्थान, सुषुम्ना तथा उससे संबद्ध मस्तिष्क की और शरीर के अन्य भागों की नाड़ियों का समूह, नर्वस सिस्टम।

स्निग्ध – *वि*० 1. जिसमें नमी और चिकनाई हो, आर्द्र; जैसे – स्निग्ध त्वचा। 2. जो स्नेही और मृदु हो; जैसे – स्निग्ध व्यक्तित्व।

स्नेह – *पु*० प्यार, प्रेम। *प्र*० माँ ने बच्चे को स्नेह से सहलाया।

स्नेही – 1. *वि*० स्नेह करनेवाला, जिसके मन में स्नेह का भाव हो। 2. *पु*० मित्र।

स्पंज – *पु*० बहुत-से छेदोंवाला एक मुलायम टुकड़ा जो पानी को सोख लेता है और दबाने पर पानी छोड़ देता है।

स्पंदन – *पु*० कंपन, धड़कन, गति; जैसे – नाड़ियों में ख़ून के बहाव से होनेवाला स्पंदन।

स्पर्द्धा, स्पर्धा, – *पु*० साथ के लोगों से आगे बढ़ने की चाह, मुक़ाबला, होड़। *प्र*० नीता और सीता में हमेशा इम्तहान में ज़्यादा नंबर लेने की स्पर्धा रहती है।

स्पर्श – *पु*० छूना, छुअन। *प्र*० छुई-मुई नाम के पौधे की पत्तियाँ स्पर्श करते ही कुम्हला जाती हैं।

स्पष्ट – *वि*० 1. अच्छी तरह समझ में आनेवाला या दिखाई देनेवाला साफ़। *प्र*० 1. यह किताब बहुत स्पष्ट ढंग से लिखी गई है। 2. दूरबीन से दूर की
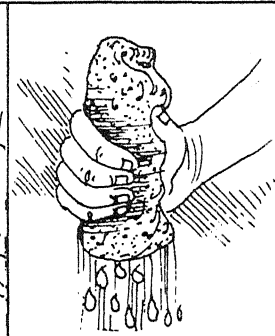
स्मारक स्राव स्रोत

चीज़ भी एकदम स्पष्ट दिखाई पड़ती है। 2. सीधा, प्रत्यक्ष, बिना घुमाए-फिराए। *प्र०* शोभा ने मेरा काम करने के लिए स्पष्ट मना कर दिया। (*विलोम* – अस्पष्ट)।

स्पष्टवादी – *वि०* सीधे और साफ़ ढंग से बोलनेवाला। *प्र०* अनीस इतना स्पष्टवादी है कि लोग उसकी बातों से नाराज़ भी हो जाते हैं।

स्पिरिट – *स्त्री०* एक तरल रसायन जो घाव आदि साफ़ करने और कुछ दवाओं में डालने के काम आता है।

स्फटिक – *पु०* सफ़ेद रंग का क़ीमती पत्थर जिससे मालाएँ, मूर्तियाँ आदि बनती हैं।

स्फूर्ति – *स्त्री०* चुस्ती, फुर्ती, तेज़ी। *प्र०* राम स्फूर्ति के लिए दिन में कई बार चाय पीने का आदी है।

स्मरण – *पु०* याद, स्मृति। *प्र०* उस दुर्घटना का स्मरण कर आज भी मेरा दिल दहल उठता है।

स्मारक – *पु०* किसी की यादगार के रूप में बनाया गया भवन, स्तूप, समाधि आदि।

स्मृति – *स्त्री०* याद, याददाश्त, स्मरण-शक्ति।

स्याह – *वि०* काला। (*विलोम* – सफेद)।

स्राव – *पु०* बहना, टपकना, रिसना; जैसे – घाव से रक्त-स्राव।

स्रोत – *पु०* 1. वह जगह जहाँ से पानी की धारा निकलती है, झरना, सोता। 2. ज़रिया, साधन। *प्र०* शुभा की आय का स्रोत क्या है?

स्वच्छ – *वि०* साफ़, निर्मल; जैसे – स्वच्छ जल, स्वच्छ आकाश।

स्वच्छता – *स्त्री०* सफ़ाई। *प्र०* अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता बहुत ज़रूरी है।

स्वतंत्र – *वि०* जिस पर किसी और का बंधन या शासन न हो, आज़ाद, स्वाधीन; जैसे – स्वतंत्र व्यक्ति, स्वतंत्र देश। (*विलोम* – परतंत्र)।

स्वतंत्रता – *पु०* आज़ादी, स्वाधीनता। *प्र०* 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है।

स्वदेश – *पु०* अपना देश, मातृभूमि।

स्वप्न – *पु०* सपना।

स्वभाव – *पु०* मनुष्य के व्यवहार में झलकनेवाले उसके मन के भाव, पसंद-नापसंद और सोचने-समझने का ढंग जो उसमें जन्म से ही होता है, मिज़ाज। *प्र०* ऋषि दुर्वासा क्रोधी स्वभाव के थे।

स्वयं – पु० खुद, अपने आप। प्र० सोहन को अपना काम स्वयं करने की आदत है।

स्वयंवर – पु० विवाह की एक पुरानी प्रथा जिसमें सभा में बुलाए गए व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति को लड़की स्वयं चुनकर उसके गले में जयमाला डाल देती थी।

स्वयंसेवक – पु० बिना पैसा लिए अपनी इच्छा से सामाजिक सेवा या ऐसा ही कोई काम करनेवाला। प्र० कुंभ के मेले की व्यवस्था स्वयंसेवकों के हाथ में होती है।

स्वर – पु० 1. आवाज़, ध्वनि। प्र० गगन की बहुत ऊँचे स्वर में बोलने की आदत है। 2. संगीत के सात सुरों में से कोई।

स्वराज, स्वराज्य – पु० अपना राज, जब किसी बाहरी शक्ति का शासन न हो। प्र० स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीजी ने हर भारतीय के मन में स्वराज की भावना लाने की कोशिश की।

स्वरूप – पु० किसी समस्या या वस्तु का आकार, बनावट, ढाँचा; जैसे – निबंध का स्वरूप, समस्या का स्वरूप, वाक्य का स्वरूप।

स्वर्ग – पु० धर्मशास्त्रों के अनुसार वह लोक जहाँ देवता रहते हैं और जहाँ अच्छे काम करनेवाले मनुष्य मरने के बाद जाते हैं, जन्नत, देवलोक। (*विलोम* – नरक)।

स्वर्गवास – पु० मृत्यु, स्वर्ग को जाना।

स्वर्गीय – *वि०* जो मर चुका हो, जो स्वर्ग सिधार गया हो; जैसे – स्वर्गीया माँ, स्वर्गीय लाला चरणदास।

स्वर्ण – पु० सोना।

स्वर्णकार – पु० सुनार।

स्वर्ण-जयंती – *स्त्री०* किसी महत्त्वपूर्ण घटना या संस्था के शुरू होने के पचास वर्ष पूरे होने पर मनाया जानेवाला समारोह।

स्वस्तिक – पु० शुभ माना जानेवाला एक चिह्न जिसे शुभ अवसर और शुभ स्थान पर बनाया जाता है।

स्वस्थ – *वि०* तंदुरुस्त, सेहतमंद, नीरोग। (*विलोम* – अस्वस्थ)।

स्वाँग – पु० हँसी-मज़ाक में या किसी को धोखा देने के लिए बदला जानेवाला रूप, धारण किया जानेवाला भेष। प्र० पुराने ज़माने में राजाओं का मन बहलाने के लिए भाँड तरह-तरह के स्वाँग रचते थे।

स्वागत – पु० किसी के आने पर उसका आदर-सत्कार करना, आवभगत।

स्वयंवर | स्वयंसेवक | स्वर्णकार | स्वस्तिक

स्वावलंबी स्वामी स्वाहा
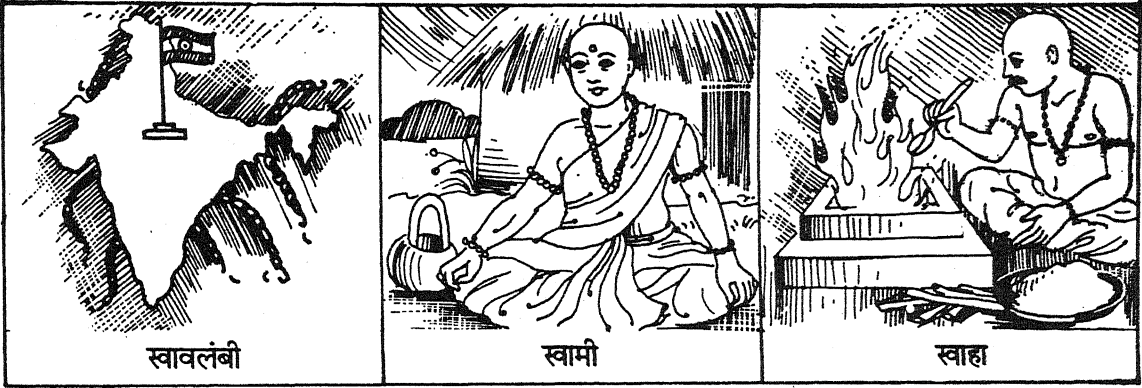
स्वाद – *पु०* किसी चीज़ को खाने-पीने से जीभ को होनेवाला अनुभव, ज़ायका।

स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ – *वि०* जिसका स्वाद अच्छा हो, स्वादवाला, ज़ायकेदार, सुस्वादु। *प्र०* भोजन बहुत स्वादिष्ट है।

स्वादेंद्रिय – *स्त्री०* वह इंद्रिय जिससे स्वाद का अनुभव हो, जीभ।

स्वाधीन – *वि०* दे० स्वतंत्र। (*विलोम* – पराधीन)।

स्वाभाविक – *वि०* जिसका होना अनोखा या अटपटा न हो, सहज, प्राकृतिक, स्वभाव के अनुकूल। *प्र०* 1. इतनी भयंकर दुर्घटना होने के बाद उसका डरना स्वाभाविक ही है। 2. संकोची व्यक्ति का कम बोलना स्वाभाविक है।

स्वाभिमान – *पु०* अपनी इज़्ज़त या प्रतिष्ठा का ख़्याल, आत्मसम्मान। *प्र०* ग़रीबी में भी दीपा का स्वाभिमान हमेशा बना रहा।

स्वामी – *पु०* 1. मालिक। 2. साधु-संन्यासियों के लिए इस्तेमाल होनेवाला शब्द; जैसे – स्वामी ओंकारानंद।

स्वार्थ – *पु०* अपना मतलब या अपना काम निकालने का स्वभाव या प्रकृति, ग़रज़। (*विलोम* – निस्वार्थ)।

स्वार्थी – *वि०* मतलबी, ख़ुदग़र्ज़।

स्वावलंबी – *वि०* दूसरों की सहायता न लेकर, अपने ही सहारे पर रहनेवाला, आत्मनिर्भर।

स्वास्थ्य – *पु०* सेहत। *प्र०* श्रीकांत का स्वास्थ्य आजकल ठीक नहीं है।

स्वाहा – 1. *अ०* हवन में आहुति देते समय बोला जानेवाला शब्द। 2. *वि०* जो जलकर नष्ट हो चुका हो। *प्र०* ज़मींदारों की लगाई आग से हरिजनों की बस्ती घंटे-भर में जलकर स्वाहा हो गई।

स्वीकार – *पु०* 1. मानना, क़बूल। *प्र०* हत्यारे ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। 2. मंज़ूर, मान जाना। *प्र०* प्रिंसिपल ने बच्चों का सुझाव स्वीकार कर लिया। 3. अपनाना, ग्रहण करना। *प्र०* रिश्तेदारों के विरोध के बावजूद प्रभुदयालजी ने सलमा को अपनी बहू के रूप में स्वीकार किया। (*विलोम* – अस्वीकार)।

स्वीकृति – *स्त्री०* स्वीकार करना, मंज़ूरी। *प्र०* ओमपुरी ने सईद मिर्ज़ा की नई फ़िल्म में काम करने की स्वीकृति दे दी।

स्वेच्छा (स्व + इच्छा) – *स्त्री०* अपनी इच्छा, मनमर्ज़ी। *प्र०* श्याम हर काम हमेशा स्वेच्छा से करता है।

स्वेद – *पु०* पसीना।

ह – देवनागरी वर्णमाला का अंतिम वर्ण।

हंगामा – पु॰ 1. हलचल, उपद्रव, दंगा, लड़ाई-झगड़ा। प्र॰ दो लोगों के बीच ज़रा-सी कहा-सुनी ने शहर में हंगामे का रूप ले लिया। 2. शोरगुल, हल्ला, हल्ला-गुल्ला, हुल्लड़। प्र॰ फ़ीस बढ़ाए जाने की ख़बर सुनकर छात्रों में हंगामा मच गया।

हंटर – पु॰ लंबा चाबुक, कोड़ा। मु॰ *हंटर जमाना* – हंटर मारना। प्र॰ कोतवाल ने चोर को चालीस हंटर जमाए।

हंडा – पु॰ 1. पानी आदि रखने के लिए ताँबा, पीतल या मिट्टी से बना घड़े जैसा बड़ा बरतन। 2. बत्तीवाले लैंप के ऊपर लगाया जानेवाला शीशे का गोल ढक्कन।

हँड़िया – स्त्री॰ खाना पकाने या मिठाई आदि रखने के लिए बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन।

हंस – पु॰ पानी में रहनेवाला बत्तख़ की तरह का सफ़ेद पक्षी।

हँसमुख – वि॰ हमेशा प्रसन्न रहनेवाला, खुशमिज़ाज। प्र॰ विमला बहुत हँसमुख लड़की है।

हँसिया – स्त्री॰ फ़सल काटने का एक औज़ार।

हँसी – स्त्री॰ हँसने की क्रिया। मु॰ *हँसी उड़ाना* – किसी के ऊपर हँसकर उसका अपमान करना, उपहास करना। प्र॰ सबकी हँसी उड़ाना अच्छी बात नहीं। *हँसी-खेल समझना* – किसी बात या काम को साधारण मानकर परवाह न करना। प्र॰ उस टीम से मैच खेलने को हँसी-खेल मत समझो।

हँसोड़ – वि॰ जिसकी हँसने-हँसाने की आदत हो, मज़ाक़िया।

हकला – वि॰ जो हकलाकर बोले।

हकलाना – क्रि॰ ज़बान की ख़राबी के कारण रुक-रुककर या अटककर बोलना।

हक़ीक़त – स्त्री॰ असलियत, सचाई, यथार्थ। प्र॰ हक़ीक़त तो यह है कि विमल स्कूल गया ही नहीं।

हकीम – पु॰ जो यूनानी चिकित्सा के अनुसार बीमारियों का इलाज करता हो।

हक्का-बक्का – वि॰ हैरान, दंग, चकित, भौंचक, स्तंभित।

हज – पु॰ मक्का-मदीना की तीर्थयात्रा जिसका मुसलमानों के यहाँ बहुत महत्त्व है।

हंटर | हंडा | हंस | हँसिया
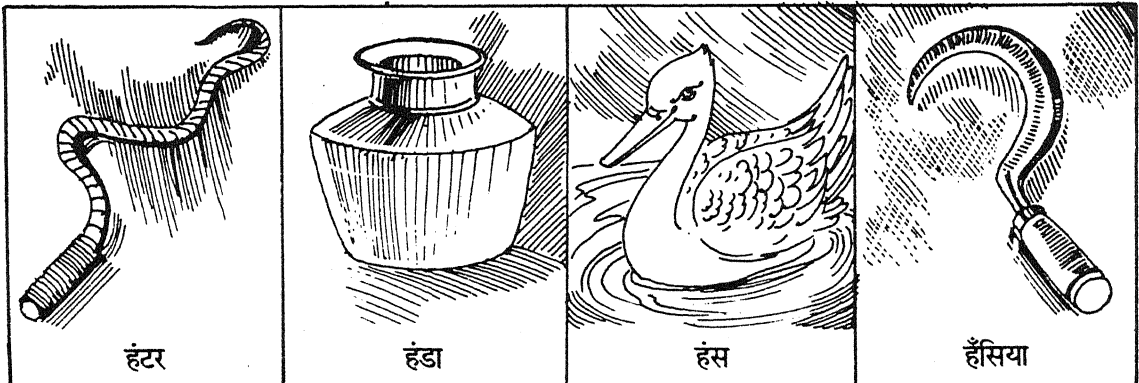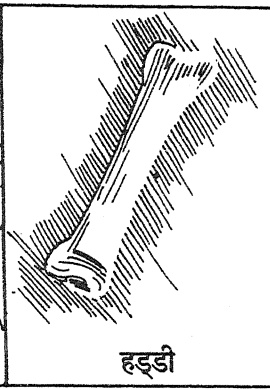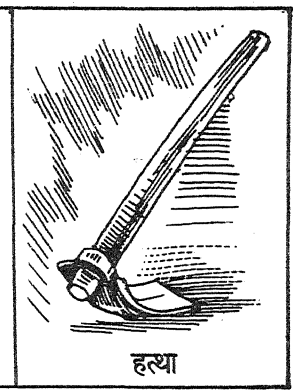
हज़रत – *पु०* किसी को इज़्ज़त देने के लिए इस्तेमाल होनेवाला शब्द; जैसे – आइए हज़रत, तशरीफ़ रखिए।

हजामत – *स्त्री०* सिर के बालों के कटने और दाढ़ी बनाए जाने का काम। *प्र०* पहले हजामत बनाने के लिए नाई खुद घर आया करते थे।

हठ – *पु०* किसी बात पर अड़ना, ज़िद, दुराग्रह। *प्र०* बच्चा माँ के साथ बाज़ार जाने के लिए हठ करने लगा।

हठी – *वि०* हठ करनेवाला, ज़िद्दी, हठीला।

हड़काना – *क्रि०* धमकाना, परेशान करना, फटकारना। *प्र०* 1. पुलिस आए दिन खोमचेवालों को हड़काती रहती है। 2. मंत्रीजी के हड़काने पर ही बिजली विभाग के काम-काज में चुस्ती आई।

हड़ताल – *स्त्री०* अपनी माँगें पूरी करवाने या किसी अन्याय का विरोध करने के लिए एक-जैसा काम करनेवाले लोगों के समूह द्वारा काम बंद करना; जैसे – डॉक्टरों की हड़ताल, रिक्शा चलानेवालों की हड़ताल।

हड़पना – *क्रि०* 1. किसी चीज़ को ग़लत तरीक़े से या ज़ोर-ज़बरदस्ती से ले लेना, छीन लेना। *प्र०* रमेश नितिन का सारा पैसा हड़प गया। 2. जल्दी-जल्दी खा जाना, निगलना। *प्र०* माँ की नज़र बचाकर बच्चा सारी मिठाई हड़प गया।

हड़बड़ी – *स्त्री०* जल्दबाज़ी, घबराहट। *प्र०* हड़बड़ी में शीला अपने घर की चाभियाँ दफ़्तर में ही भूल आई।

हड्डी – *स्त्री०* शरीर के भीतर के वे कड़े हिस्से जिनसे मिलकर शरीर का ढाँचा बनता है। *मु० हड्डियाँ निकल आना* – इतना दुबला हो जाना कि हड्डियाँ दिखाई देनी लगें। *प्र०* दो महीने की बीमारी में सुनील की हड्डियाँ निकल आई हैं।

हताश – *वि०* जिसकी आशा नष्ट हो गई हो, दुखी, निराश। *प्र०* नौकरी न मिलने से अमर हताश हो गया है।

हताहत (हत + आहत) – *वि०* मारे गए तथा घायल। *प्र०* रेल-दुर्घटना में एक सौ बीस लोग हताहत हुए।

हतोत्साह – *वि०* जिसका उत्साह टूट गया हो, जो हिम्मत हार बैठे।

हत्था – *पु०* किसी औज़ार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, मूठ, हैंडिल; जैसे – फावड़े का हत्था।

हत्या – *स्त्री०* जान से मार डालना, ख़ून, वध। *मु० हत्या टलना* – मुसीबत टलना। *प्र०* लाला वापस चला गया तो हत्या टल गई, नहीं तो आज वह रुपए लेकर ही जाता।

हत्यारा – *पु०* हत्या करनेवाला, ख़ूनी।

हथकड़ी – *स्त्री०* अपराधी या क़ैदी को भागने से रोकने के लिए दोनों हाथों में पहनाया जानेवाला कड़ा।

हथियाना – *क्रि०* किसी चीज़ को ज़बरदस्ती अपने कब्ज़े में कर लेना। *प्र०* ननकू ने अपने छोटे भाई की सारी पेंसिलें हथिया लीं।

हथियार – *पु०* लड़ाई के साधन, अस्त्र-शस्त्र; जैसे – भाला, बंदूक आदि।

हथेली – *स्त्री०* कलाई के आगे का गोरा, चौड़ा हिस्सा जिसमें मुट्ठी बंद होती है। *मु० हथेली पर सरसों जमाना* – कोई असंभव काम करने की कोशिश करना। *प्र०* रमेश को सुधारना हथेली पर सरसों जमाने के समान है।

हथौड़ा – *पु०* कील ठोंकने, कोई चीज़ तोड़ने या पीटने के काम आनेवाला औज़ार।

हद – *स्त्री०* 1. छोर, किनारा, सीमा; जैसे – शहर की हद। 2. *दे०* सीमा। *मु० हद कर देना*– व्यवहार या काम में ग़लत-सही की सीमा को पार कर जाना। *प्र०* प्रमोद ने बेईमानी की हद कर दी।

हमजोली – *वि०* साथी, दोस्त, मित्र।

हमदर्द – *वि०* मुसीबत या कष्ट में सहानुभूति रखनेवाला। *प्र०* मुसीबत पड़ने पर अच्छा पड़ोसी हमदर्द होता है।

हमला – *पु०* घायल करने या नुकसान पहुँचाने के लिए मारने को दौड़ना, वार। *प्र०* 1. सेनापति ने सैनिकों को दुश्मन पर हमला करने को कहा। 2. शेर ने हिरन पर हमला किया।

हर – 1. *पु०* (क) गणित में वह संख्या जिससे भाग दिया जाता है, भाजक। *प्र०* $^6/_2$ में 2 हर है। (ख) भिन्न में नीचेवाला अंक। *प्र०* $^1/_3$ में 3 हर है। 2. *वि०* एक-एक, हरेक। *प्र०* हर बच्चे को केला दे दो।

हरकत – *स्त्री०* 1. शरारत, ग़लत काम। *प्र०* मुन्ना की हरकतों से सारे पड़ोसी परेशान रहते हैं। 2. हिलना-डुलना, गति, स्पंदन। *प्र०* गुलेल का शिकार हुए पक्षी में थोड़ी-थोड़ी हरकत हो रही थी।

हरगिज़ – *अ०* कभी, किसी हालत में (केवल 'नहीं'

हथकड़ी | हथियार | हथेली | हथौड़ा

हरसिंगार | हल | हलचल
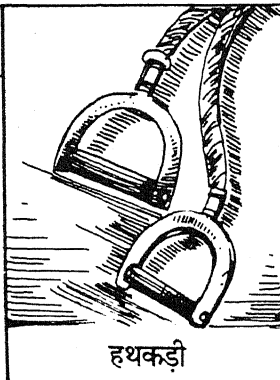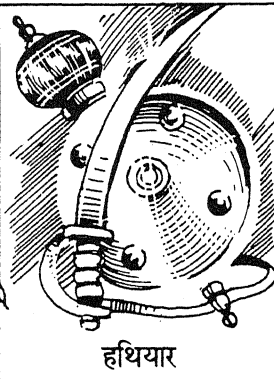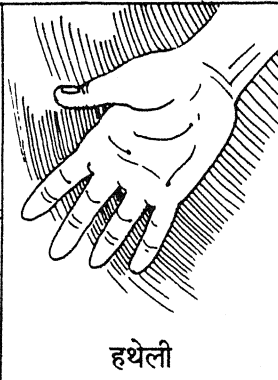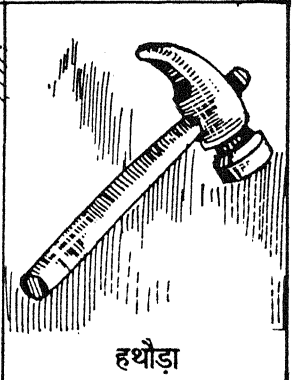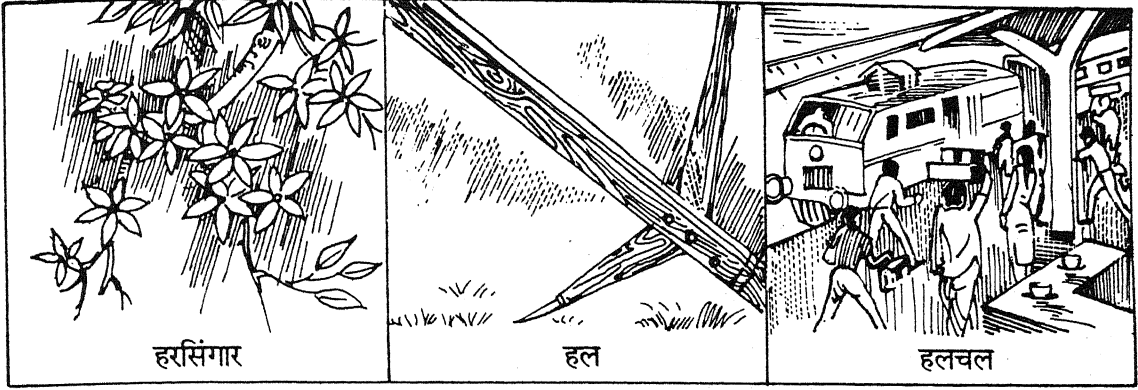
के साथ)। प्र० मीना मुझे हरगिज़ नहीं धोखा दे सकती।

हरण – पु० 1. भगा ले जाना, छीन लेना, चुरा लेना; जैसे – सीता-हरण। 2. दूर करना, नष्ट करना; जैसे – दुखों का हरण।

हरसिंगार – पु० एक पेड़ और उस पर खिलनेवाले सफ़ेद-नारंगी रंग के छोटे-छोटे फूल, पारिजात।

हरिजन – पु० हिंदुओं में अछूत मानी जानेवाली जाति के लोगों को गांधीजी द्वारा दिया गया नाम।

हरित – वि० हरा।

हरित-क्रांति – स्त्री० कुछ ख़ास योजनाओं की सहायता से खेती की पैदावार को अधिक से अधिक बढ़ाने का कार्यक्रम या अभियान जिसे भारत सरकार ने 1966 में शुरू किया था।

हर्जाना, हरजाना – पु० किसी का नुक़सान करने के बदले में दिया जानेवाला पैसा, क्षतिपूर्ति। प्र० लायब्रेरी की किताब खो जाने पर रमेश को उसका हर्जाना भरना पड़ा।

हर्ष – पु० खुशी, प्रसन्नता। प्र० कबड्डी में ट्रॉफ़ी जीतना टीम के लिए ही नहीं, सारे स्कूल के लिए हर्ष की बात थी।

हल – पु० 1. खेत जोतने का एक औज़ार। 2. गणित में किसी सवाल का उत्तर। 3. किसी समस्या को सुलझाने का उपाय, समाधान। प्र० बैंक के मैनेजर से मिलवाकर मदन ने मेरी पैसे की समस्या हल कर दी।

हलक़ – पु० गले की नली, कंठ। प्र० मोहसिन ने पानी हलक़ से नीचे उतारा।

हलका, हल्का – वि० 1. जो भारी न हो, कम वज़न का; जैसे – हल्का खाना, हल्का सामान। 2. जो तेज़ न हो, मंदे, धीमा; जैसे – हल्का बुख़ार, हल्की बारिश। 3. जो गहरा न हो; जैसे – हल्का रंग, हल्की चोट।

हलचल – स्त्री० 1. चहल-पहल, गहमागहमी, शोर-गुल। प्र० गाड़ी स्टेशन पर पहुँचते ही प्लेटफ़ार्म पर हलचल मच गई। 2. खलबली, अशांति, उत्तेजना। प्र० छात्र-नेता के गिरफ़्तार होने की ख़बर सुनकर छात्रों में हलचल मच मई।

हल्ला – पु० 1. बहुत-से लोगों के बातचीत करने से होनेवाला शोर, कोलाहल। प्र० आधी छुट्टी में बच्चों का हल्ला स्कूलों में गूँज उठता है। 2. हमला, धावा, आक्रमण; जैसे – सेना का दुश्मन पर हल्ला बोलना।

हवन – पु॰ मंत्र पढ़ते हुए किसी देवता के लिए अग्नि में दी जानेवाली घी, जौ, सामग्री आदि की आहुति, होम।

हवलदार – पु॰ फ़ौज या पुलिस में एक छोटा अफ़सर जिसके अधीन कुछ सिपाही होते हैं।

हवस – स्त्री॰ लालच, लालसा, तीव्र इच्छा। प्र॰ पैसे की हवस बुरी होती है।

हवा – स्त्री॰ ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि गैसों के मेल से बना तत्त्व जो सारी पृथ्वी पर फैला हुआ है, वायु, पवन। मु॰ *हवा का रुख़ देखना*– ज़माने के हाल देखते हुए काम करना। प्र॰ हवा का रुख़ देखकर रामलाल कांग्रेस छोड़कर जनता दल में चला गया। *हवा उड़ना* – कोई अफ़वाह फैलना। प्र॰ आतंकवादियों के गाँव में घुसने की हवा उड़ते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया।

हवाई अड्डा – पु॰ हवाई जहाज़ के आने और जाने की जगह। प्र॰ कलकत्ता के हवाई अड्डे का नाम दमदम है।

हवादार – वि॰ जहाँ चारों ओर से हवा आती हो; जैसे – हवादार कमरा।

हवालात – स्त्री॰ थाने का वह हिस्सा जहाँ मुक़दमे का फ़ैसला होने से पहले गिरफ़्तार आदमी को रखा जाता है, हिरासत।

हवेली – स्त्री॰ चारदीवारीवाला ऊँचा, हवादार पुराने ढंग का मकान।

हसरत – स्त्री॰ कुछ करने, पाने व बनने की ज़बरदस्त चाह, अरमान, लालसा। प्र॰ मंटू की हसरत फ़िल्मी हीरो बनने की है।

हस्त – पु॰ हाथ; जैसे – हस्तकला, हस्तरेखा (हथेली की रेखाएँ)।

हस्तक्षेप – पु॰ दूसरों की बात या काम में दख़ल देना। प्र॰ माधुरी को घरेलू मामलों में पड़ोसियों का हस्तक्षेप पसंद नहीं है।

हस्ताक्षर – पु॰ अपने हाथ से ख़ास ढंग से लिखा गया अपना नाम, दस्तख़त। प्र॰ बैंक के चेक में वह अपने हस्ताक्षर करना भूल गया।

हस्ती – स्त्री॰ ख़ास, महत्त्वपूर्ण या विशिष्ट आदमी, शख़्सियत। प्र॰ कुमार गंधर्व संगीत की दुनिया की बहुत बड़ी हस्ती हैं।

हाँकना – क्रि॰ 1. घोड़ा, बैल आदि जानवरों को चलने या आगे बढ़ने के लिए ऊँची आवाज़ में पुकारना; जैसे – बैलगाड़ी हाँकना, मवेशी हाँकना। 2. बहुत बढ़-चढ़कर या लंबी-चौड़ी बातें करना; जैसे – डींग हाँकना।

हवन | हवालात | हाँकना

हाँड़ी – *स्त्री॰* दे॰ हँड़िया।
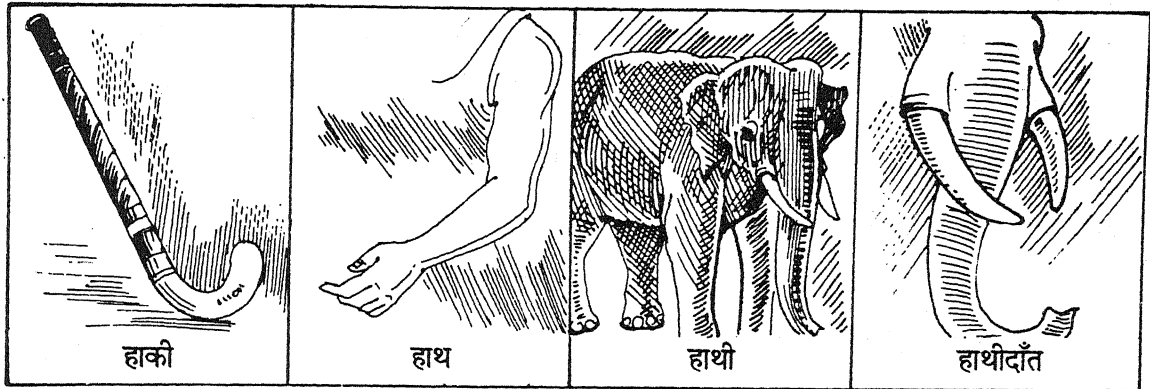
हाँफना – *क्रि॰* दौड़ने से थक जाने या किसी बीमारी के कारण जल्दी-जल्दी साँस लेना, साँस फूलना, साँस की गति तेज़ होना। प्र॰ पानी से बाहर आने के बाद तैराक हाँफ रहा था।

हाकी, हॉकी – *पु॰* मुड़ी हुई लकड़ी की छड़ी और गेंद की सहायता से खेला जानेवाला एक खेल जिसमें ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ियों की दो टीमें होती हैं।

हाज़मा – *पु॰* खाना पचाने या हज़म करने की ताक़त, पाचन-शक्ति। प्र॰ भारी खाना खाने से उसका हाज़मा ख़राब हो गया।

हाज़िर – *वि॰* जो सामने हो, मौजूद, उपस्थित। प्र॰ रमेश कल कक्षा में हाज़िर नहीं था।

हाज़िरजवाब – *वि॰* जो किसी मज़ाक या व्यंग्य-भरी बात का तुरंत जवाब देने में माहिर हो। प्र॰ बीरबल हाज़िरजवाब होने के कारण अकबर के चहेते थे।

हाज़िरी – *स्त्री॰* मौजूदगी, उपस्थिति। प्र॰ अध्यापक ने बच्चों की हाज़िरी ली। मु॰ *हाज़िरी बजाना* – किसी बड़े आदमी के पास रहकर उसकी ख़िदमत या सेवा करना। प्र॰ दुर्गाप्रसादजी जब मंत्री नहीं रहे तो बहुत से लोगों ने उनकी हाज़िरी बजाना छोड़ दिया।

हाट – *स्त्री॰* 1. किसी ख़ास जगह पर थोड़े-थोड़े दिन के अंतर पर लगनेवाला पटरी का बाज़ार। प्र॰ हर इतवार को हमारे मुहल्ले में हाट लगती है। 2. किसी गाँव या क़स्बे का छोटा स्थायी बाज़ार। मु॰ *हाट-बाज़ार करना*– ख़रीददारी करना। प्र॰ अलगू हाट-बाज़ार करने शहर गया है।

हाथ – *पु॰* 1. कंधे से उँगलियों तक का हिस्सा। 2. सिर्फ़ कलाई से आगे का हिस्सा। मु॰ *हाथ उठाना* – पीटना, मारना। प्र॰ पिता ने गुस्से में आकर बच्चे पर हाथ उठा दिया। *हाथ फैलाना* – कोई चीज़ माँगना, याचना करना। प्र॰ मनोहर की सबके सामने हाथ फैलाने की आदत है। *हाथ पीले करना* – शादी कर देना। प्र॰ बलराज ने अपनी दोनों बेटियों के हाथ पीले करके संन्यास ले लिया।

हाथापाई – *स्त्री॰* झगड़े में होनेवाली हल्की मारपीट।

हाथी – *पु॰* मोटी चमड़ीवाला, भारी बदन का एक चौपाया जानवर। मु॰ *हाथी के दाँत खाने के और, दिखने के और* – कहने और करने में फ़र्क़ होना; कहना कुछ, करना कुछ। *हाथी बाँधना* – बहुत संपन्न होना। प्र॰ वीना के ससुरालवालों की हैसियत तो हाथी बाँधने की है।

हाथीदाँत – *पु॰* हाथी की सूँड़ के दोनों तरफ़ निकले

बड़े-बड़े सफ़ेद दाँत और हड्डियाँ जिनसे क़ीमती गहने, सजावट की चीज़ें, दवाएँ आदि बनती हैं।

हादसा – *पु०* कुछ बुरा होना या घटना, दुर्घटना, विपदा। *प्र०* कल के हवाई हादसे में पचास लोग मर गए।

हानि – *स्त्री०* नुक़सान; जैसे – व्यापार में हानि, दुर्घटना में हानि। (विलोम – लाभ)।

हानिकारक – *वि०* जिससे कोई हानि हो, नुक़सानदेह, हानिकर। *प्र०* फ़सल पर छिड़की जानेवाली कीड़े मारने की दवाएँ हमारे लिए हानिकारक होती हैं।

हामी – *स्त्री०* किसी बात या काम के लिए 'हाँ' कहना, स्वीकृति। *प्र०* रामलीला में चंदा देने के लिए लालाजी ने हामी भर दी।

हारमोनियम – *पु०* पेटी के आकार का एक बाजा जिसमें लगी हुई चपटी कुंजियों को दबाने पर सुर निकलते हैं।

हार्दिक – *वि०* हृदय, दिल या मन से निकला हुआ, जिसमें कोई दिखावा, कपट या बनावटीपन न हो; जैसे – हार्दिक इच्छा, हार्दिक बधाई।

हाल – *पु०* 1. कुछ समय पहले। *प्र०* हाल में आर०के० नारायण की एक नई किताब छपी है। 2. हालत, दशा, अवस्था। *प्र०* तुम्हारा क्या हाल है? 3. किसी चीज़ के बारे में विस्तार से बताना, वर्णन, वृत्तांत; जैसे – 26 जनवरी के समारोह का आँखोंदेखा हाल।

हालत – *स्त्री०* हाल, स्थिति, दशा; जैसे – देश की हालत, मरीज़ की हालत, घर की हालत।

हासिल – *वि०* 1. पाया हुआ, प्राप्त। *प्र०* लड़ने-झगड़ने से नवीन को कुछ नहीं हासिल होगा। 2. गणित में दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने पर मिलनेवाली दहाई संख्या जिसे आगे जोड़ा जाता है। *प्र०* 28 और 19 में 8 तथा 9 को जोड़ने पर 1 हासिल आता है, जिसे 2 और 1 में जोड़ा जाता है। 3. गणित में किसी संख्या के पूरी तरह विभाजित न होने पर बचनेवाली संख्या। *प्र०* 19 को 5 से भाग देने पर 4 हासिल बचता है।

हास्य – *वि०* 1. जिसे देख-सुन-पढ़कर हँसी आए; जैसे – हास्य-फ़िल्म, हास्य-कथा। 2. जो हँसाने का काम करे; जैसे – हास्य-अभिनेता।

हाहाकार – *पु०* कष्ट, भय और घबराहट के कारण होनेवाली चीख़-पुकार। *प्र०* सन् 1984 के दंगों से देश-भर में हाहाकार मच गया।

हानि | हारमोनियम | हास्य

हिंडोला | हिमशैल | हिरण | हिलोर
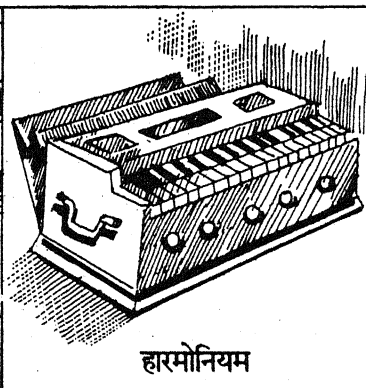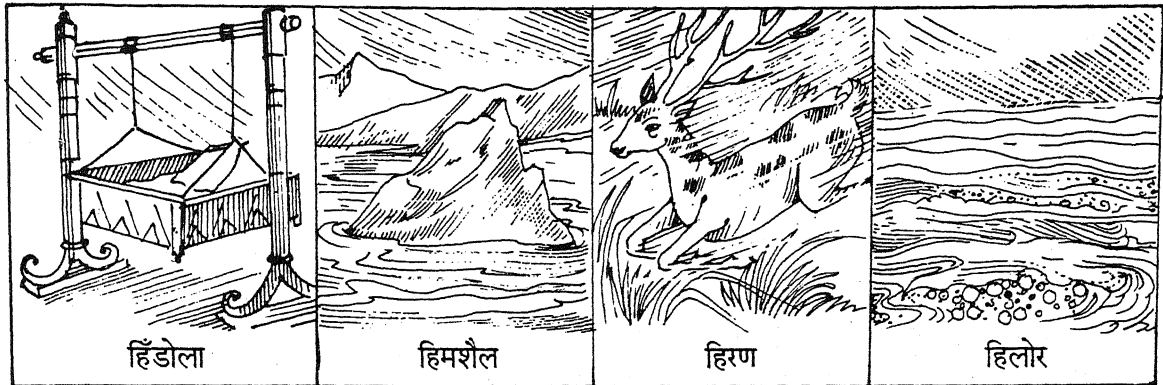
हिंडोला – *पु०* पालना, झूला, उड़नखटोला।

हिंदू – *पु०* 1. वेदों, उपनिषद् और भगवद्गीता की मान्यताओं पर आधारित आर्यों का धर्म। 2. इस धर्म को माननेवाला व्यक्ति।

हिंसक – *पु०* 1. जो पशुओं तथा जीवों को मारे। *प्र०* शेर हिंसक प्राणी है। 2. हिंसा करनेवाला। *प्र०* पुलिस अधिकारी को देखते ही भीड़ हिंसक हो उठी।

हिंसा – *स्त्री०* हत्या, मार डालना, किसी को मारना या शारीरिक कष्ट पहुँचाना। *प्र०* महात्मा गांधी हिंसा के सख़्त विरोधी थे।

हिचकना – *क्रि०* संकोच करना, झिझकना। *प्र०* फ़रीद मालिक से पैसा उधार माँगने में हिचक रहा था।

हिचकी – *स्त्री०* गले से उठनेवाली हिच-हिच की आवाज़ जिसका संबंध पाचन-प्रणाली से होता है।

हिजरी – *पु०* मुसलमानों का साल।

हिज्जे – *पु०* शब्द के अक्षर और मात्राएँ, वर्तनी, स्पेलिंग।

हित – *पु०* भलाई, कल्याण, फ़ायदा। *प्र०* प्रिंसिपल को नाराज़ करना तुम्हारे हित में नहीं है।

हितैषी – *वि०* किसी का भला चाहनेवाला, शुभचिंतक। *प्र०* रमन जैसे हितैषी आजकल कम ही मिलते हैं।

हिनहिनाना – *क्रि०* घोड़े का मुँह से आवाज़ करना।

हिफ़ाज़त – *स्त्री०* 1. सँभाल, देख-भाल, देख-रेख। *प्र०* मुनिया अपनी चीज़ों को हिफ़ाज़त से रखती है। 2. सुरक्षा। *प्र०* मंत्रीजी की हिफ़ाज़त के लिए उनके साथ हमेशा दो बंदूकधारी चलते हैं।

हिम – *पु०* बर्फ़।

हिमपात – *पु०* बर्फ़ का गिरना। *प्र०* शिमला में कल ज़बरदस्त हिमपात हुआ।

हिमशैल – *पु०* समुद्र में तैरती हुई बर्फ़ की पहाड़ी जिसका अधिकतर भाग पानी के भीतर होता है।

हिमांशु – *पु०* 1. चंद्रमा। 2. कपूर।

हिरण – *पु०* सींगवाला एक चौपाया जानवर जो बहुत तेज़ भागता है, हिरन, मृग।

हिलना – *क्रि०* 1. अपनी जगह से इधर-उधर होना; जैसे – हवा से पर्दे का हिलना। 2. घुल-मिल जाना, परिचित हो जाना। *प्र०* बच्चा पड़ोसियों से बहुत जल्दी हिल गया।

हिलोर – *स्त्री०* लहर, तरंग; जैसे – सागर की हिलोरें।

हिसाब – पु॰ 1. गणित का कोई सवाल। 2. कमाई और ख़र्चे का ब्यौरा या लेखा-जोखा। प्र॰ नौकर ने मालकिन को सौदे का हिसाब दिया।

हिस्सा – पु॰ किसी चीज़ के कई टुकड़ों में से एक, भाग, अंश; जैसे – शरीर का हिस्सा, शहर का हिस्सा. जायदाद में मोहन का हिस्सा।

हींग – स्त्री॰ एक पौधे से निकलनेवाला बहुत तेज़ महक का गोंद जिसका इस्तेमाल मसाले और दवाओं में होता है।

हीटर – पु॰ 1. बिजली का चूल्हा। 2. बिजली से गर्मी पाने का यंत्र। प्र॰ कमरे को हीटर जलाकर गर्म कर दो।

हीन – *वि॰* 1. कमज़ोर, दबा हुआ, गया-बीता, दीन। प्र॰ उस आदमी की हीन दशा देखकर अनूप का दिल पसीज गया। 2. किसी विशेषता या गुण का न होना; रहित; जैसे – धनहीन, बलहीन, चरित्रहीन।

हीरा – पु॰ सफ़ेद रंग का एक बहुत क़ीमती रत्न।

हुंकार – स्त्री॰ गरजना, गुर्राना, गर्जन; जैसे – शेर की हुंकार।

हुक – पु॰ मुड़ी हुई कील जिसमें या जिससे कोई चीज़ फँसाई जाती है; जैसे – कपड़े टाँगने का हुक, मछली फँसाने का हुक।

हुकूमत – स्त्री॰ राज, शासन, अधिकार; जैसे – मुग़लों की हुकूमत।

हुक़्क़ा – पु॰ चिलम और दो नलियोंवाला तंबाकू पीने का एक यंत्र।

हुक़्म – पु॰ हक़ और रौब के साथ किसी को कोई काम करने के लिए कहना, आज्ञा, आदेश। प्र॰ राजा ने सिपाही को शेर मारकर लाने का हुक़्म दिया। *मु॰ हुक़्म बजा लाना* – आज्ञा का पालन करना। प्र॰ मज़दूर ज़मींदार का हुक़्म बजा लाया।

हुज़ूर – पु॰ आदर का संबोधन, जनाब, श्रीमान्। प्र॰ हुज़ूर, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?

हुड़दंग – पु॰ शोरगुल और शरारत, ऊधम, हुल्लड़। प्र॰ लड़कों के हुड़दंग से सारा कॉलेज गूँज उठा।

हुदहुद – पु॰ एक चिड़िया जो अपनी लंबी, पतली चोंच से ज़मीन से कीड़े-मकोड़ों को निकालती है, कठफोड़वा।

हुनर – पु॰ किसी काम को सफ़ाई से कर पाने में माहिर होना, फ़न, निपुणता, दक्षता, कला; जैसे – मिट्टी के बरतन बनाने का हुनर, नक़्क़ाशी का हुनर।

हुलिया – पु॰ चेहरे की बनावट, शक्ल-सूरत, रंग-रूप। प्र॰ पुलिस ने डाकू का हुलिया सभी थानों
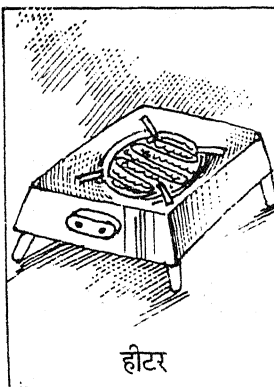
हीटर | हीरा | हुक़्क़ा | हुदहुद
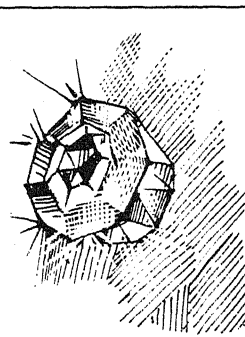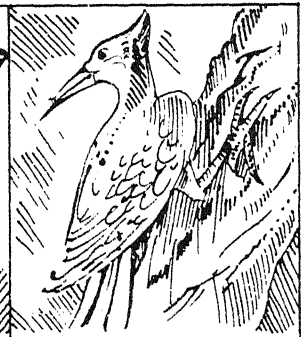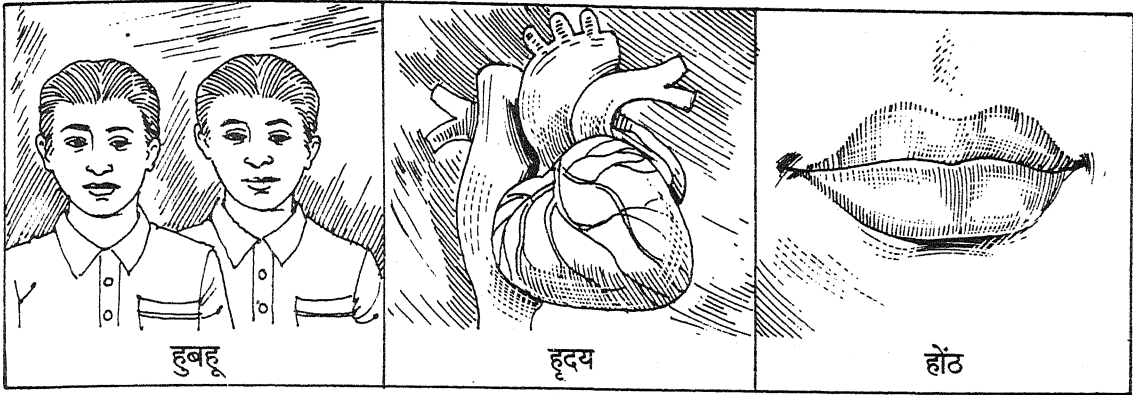
में भेज दिया। मु॰ *हुलिया बिगाड़ना* – बहुत परेशान करना, बुरी तरह मारना। प्र॰ 1. मास्टरजी ने इम्तहान में टेढ़े सवाल पूछ-पूछकर रमेश का हुलिया बिगाड़ दिया। 2. लोगों ने जेबकतरे को पीट-पीटकर उसका हुलिया बिगाड़ दिया।

हुल्लड़ – पु॰ दे॰ हुड़दंग।

हूबहू – *वि॰* एकदम वैसा ही, ज्यों-का-त्यों। प्र॰ 1. तुम्हारी शक्ल हूबहू मेरे पड़ोसी जैसी है। 2. सुनील ने हूबहू किताब में से नक़ल करके लेख लिख दिया था।

हृदय – पु॰ 1. दिल, कलेजा। प्र॰ कल सुमन के हृदय का ऑपरेशन है। 2. मन, अंतःकरण। प्र॰ सीतादेवी ने बच्चे को हृदय से आशीर्वाद दिया।

हृष्ट-पुष्ट – *वि॰* हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा, स्वस्थ।

हेकड़ी – *स्त्री॰* अकड़, ऐंठ। प्र॰ अध्यापक ने जब गोपाल को स्कूल की हॉकी टीम में शामिल नहीं किया तो उसकी सारी हेकड़ी निकल गई।

हेतु – पु॰ मक़सद, उद्देश्य, कारण। प्र॰ कृष्ण का जन्म कंस के विनाश हेतु हुआ था।

हेमंत – पु॰ छः ऋतुओं में से एक जो शरत् के बाद और शिशिर से पहले पड़ती है।

हेरफेर – पु॰ 1. अदल-बदल करना, परिवर्तन। प्र॰ इस लेख को थोड़ी-बहुत हेरफेर करने के बाद ही छापा जा सकता है। 2. चालबाज़ी, चालाकी से इधर की चीज़ उधर करना। प्र॰ मनीष की हेरफेर की आदत के कारण सब लोग उसे बेईमान मानते हैं।

हेराफेरी – *स्त्री॰* दे॰ हेरफेर।

हैज़ा – पु॰ दस्त और क़ै की भयंकर बीमारी जो महामारी का रूप भी ले लेती है।

हैरत – *स्त्री॰* हैरानी, आश्चर्य। प्र॰ फ़रीद को यह सुनकर हैरत हुई कि उसका बेटा पास हो गया।

हैवान – पु॰ 1. जानवर, पशु। 2. गँवार, उजड्ड। प्र॰ तुम हैवानों की तरह क्यों खा रहे हो?

हैसियत – *स्त्री॰* 1. औक़ात, दर्जा, सामर्थ्य। प्र॰ शादी में इतना पैसा ख़र्च करने की हैसियत मेरी नहीं है। 2. सामाजिक प्रतिष्ठा, इज़्ज़त। प्र॰ कालाबाज़ारी करते वक़्त विनय ने अपने पिता की हैसियत की भी परवाह न की। 3. दर्जा, ओहदा, पद। प्र॰ वह भारत सरकार में सेक्रेटरी की हैसियत से काम कर रहा है।

होंठ – पु॰ दाँतों को ढँकनेवाला ऊपर और नीचे का हिस्सा। मु॰ *होंठ सी लेना* – चुप या मौन हो जाना।

प्र० पिता से डाँट खाकर भी पुत्र ने होंठ सी लिए और कोई जवाब न दिया।

होड़ – *स्त्री०* किसी बात में एक-दूसरे से आगे निकल जाने की इच्छा, मुक़ाबला, स्पर्धा। *प्र०* गोपाल और महेश में हमेशा एक-दूसरे से अधिक रन बनाने की होड़ रहती है।

होनहार – 1. *पु०* जिस घटना या बात के भविष्य में होने की पूरी संभावना हो। *प्र०* होनहार को कोई नहीं रोक सकता। 2. *वि०* जिसके सफल होने या क़ाबिल बनने की पूरी उम्मीद हो। *प्र०* यह बच्चा बहुत होनहार है।

होना – *क्रि०* 1. किसी चीज़, बात या सचाई के मौजूद होने का भाव। *प्र०* 1. ताजमहल आगरा में है। 2. पृथ्वी गोल है। 2. कोई काम होने या कोई घटना घटने का भाव। *प्र०* 1. सोहन अब बड़ा हो गया है। 2. कल हमारे शहर में एक नाटक हुआ।

होम – *पु०* यज्ञ की अग्नि में घी, जौ, सामग्री आदि डालना, हवन। *मु० होम होना* – जलकर नष्ट होना, शहीद होना या त्याग करना। *प्र०* 1. उस आग की दुर्घटना में सेठजी की सारी संपत्ति होम हो गई। 2. देश की आज़ादी के लिए लाखों लोग होम हुए।

होली – *स्त्री०* फाल्गुन के अंतिम दिन मनाया जानेवाला हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जिसमें लोग एक-दूसरे पर रंग तथा अबीर डालते हैं।

होशियार – *वि०* 1. समझदार, चतुर, बुद्धिमान; जैसे – होशियार बच्चा। 2. सावधान, सचेत, चौकन्ना। *प्र०* आतंकवादियों की ख़बर मिलने पर खुफ़िया विभाग ने पुलिस को होशियार रहने को कहा।

हौआ – *पु०* एक काल्पनिक, डरावना प्राणी, हौवा।

हौज़ – *पु०* नहाने या पानी जमा करने का कुंड, हौदा, बड़ा टब।

हौसला – *पु०* 1. मन में कुछ करने की चाह और फुर्ती, उत्साह। *प्र०* अध्यापक से शाबाशी मिलने पर पढ़ने के लिए बच्चों का हौसला बढ़ गया। 2. हिम्मत, साहस, दुस्साहस। *प्र०* मुहल्ले के गुंडों के हौसले आजकल बहुत बढ़े हुए हैं।

ह्वेल – *स्त्री०* बहुत बड़े आकार का स्तनपायी जंतु।

☆ ☆ ☆

होम | हौज़ | ह्वेल